संदेश

पूजा, आत्मा का सुगम, सरल, शुद्ध, सनातन, ज्ञानमय नाद है, जिसकी ध्वनि प्रत्येक दिग्खण्ड में प्रतिपल प्रतिध्वनित होती रहती है।

आर्य पुरुषों ने वाणी का विशेष उपयोग सच्चिदानन्द की साधना में ही किया है और पूजा विचारात्मक साधना का भावपुंज है, अनादिकाल से इस देश की यह मर्यादा रही है कि श्वास श्वास में अर्चनामय विचार ईश के प्रति मुखरित होते रहें।

जैन वाङ्मय में विविध प्रकार की पूजाएं प्राप्त होती हैं, इन पूजाओं को समाज में जीवित रखने का प्रयास कतिपय कवियों ने ही किया है, यद्यपि प्राचीन युग में पूजा का प्रकार कुछ और था, किन्तु श्री वीरविजयजी आदि परमपरोपकारी मुनिवरों ने तत्कालीन जन-भाषा में प्रभुभक्ति के विचार व्यक्त किये और समाज को भक्ति मार्ग का संदेश दिया, जिसका प्रभाव आज भी विद्यमान है।

विचारात्मक साधना में पूजा प्रभु की समीपता का सुख देती है, परमपूज्य श्रद्धेय विश्ववंद्य राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने पावन विचारों को विभिन्न अर्चना विधियों में बिखेरा, उनको यह पुस्तक क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। इस ग्रन्थ में पंचकल्याणक, नवपद, द्वादशभावनादि विविध पूजाओं का मार्ग मुखरित हो रहा है और म [illegible] का संगीतमय स्रोत वह रहा है।

इसके सम्पादकीय कार्य में 'साहित्यप्रेमी' तथा प्रकाशन कार्य में श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन, भीलवाड़ा संस्था ने जो सक्रिय प्रयास किया है वैसा साहित्य सेवा अनवरत जीवन में जगमगाती रहे, यही हार्दिक मंगलमयी प्रेरणा है और आशा है।

इस पुस्तक से संसार का बालजीव प्रभु भक्ति में परायण बन श्री जिनेश्वर देव के निर्दिष्ट शासन में सदा सुसज्ज रहे यही अभिलाषा है, इस प्रकार सतत ज्ञान एवं पूजोपयोगी सामग्रियाँ जीवित रहें और इनको लक्ष्मीवान् प्रकाशित कर प्रभु भक्ति का लाभ लेते रहें -यही मनोकामना है। शुभम्।

दि. २६-८-६६
राजेन्द्र-भवन,
राजगढ़ (म.प्र.)

विजय विद्याचन्द्र सूरि

निवेदन

यत्र तत्र सर्वत्र संसार में दुःखों का ही दानावल धधक रहा है यह हमारी अपनी नासमझी का ही प्रतिफल है। यदि हम इस दुःखागार ससार से मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें ज्ञान और क्रिया से अनुप्राणित भक्ति योग का सर्व प्रथम अवलम्बन लेना होगा। क्योंकि भक्ति का उद्रेक जिस भावुक भक्त के अन्तः में सदा सर्वदा अस्खलित प्रवाह से प्रवाहित होता रहता है वह भावुक भक्त विभावदशा के हीन और निकृष्ट लबादे को उतार फेंकने को कटिबद्ध होता है, और धीरे धीरे वह स्वभाव दर्शन के लिए प्रगतिशील होता है। अन्ततोगत्वा अपनी सच्चिदानन्दमय स्थिति को पा लेता है। तब ही तो श्री जिनशासन में भक्तियोग स्वीकृत है और इसीलिये कहा भी गया है—

"भत्तीई जिणवराणं खिज्जंति पुव्व संचिया कम्मा"

भक्तियोग दर्शन का, ज्ञानयोग ज्ञान का, और क्रियायोग चारित्र का पर्याय माना जा सकता है अतः श्री जिनेन्द्रशासन में वही भक्तियोग स्वीकृत है कि जो अपने गर्भ में ज्ञान एवं कर्म को समाए हुए हो। ऐसे श्रेष्ठ भक्तियोग की सार्थकता तब सीमोल्लंघित हो जाती है कि जब भक्त मनसा वाचा कर्मणा भक्ति के लहराते रससागर में आकंठ मग्न होकर आत्मरमणता के आनंद को प्राप्त करने के लिये प्रयासरत होता है। तब उसकी वाणी आत्मानंद से अनुप्राणित होकर एक अपूर्व आनंद की प्रतिष्ठा करती है। श्रीनमस्कार महामंत्र, श्रीलोगस्स स्तव, श्रीनमुत्थुणं तथा उवसग्गहादी भी तो भक्ति रस के आगार हैं। गागार में सागर है। वहाँ भक्त के अन्तर को झंकृत करने वाले भक्ति के रस का अजस्र प्रवाह

अनन्त काल से प्रवाहित हो रहा है। इस भक्तिरस का पान करके आज तक अनेकानेक पतित एवं दुराचारी और अत्याचारी भी अपने जीवन में से कालिख का नाश कर जीवन विकास की चरम सीमा को पागये हैं। राजा रावण, अर्जुनमाल, दृढप्रहारी और ग्वालपुत्रादि के जीवन एतदर्थ प्रस्तुत हैं। अत भक्तियोग हमारे जीवन विकास की सोपानमाला का प्रथम पत्थर है। तभी तो स्वीकृत है यह।

प्रस्तुत "श्री विविधपूजा सग्रह" भी भक्तियोग के अजस्रप्रवाह को प्रगतिशील रखने वाला सग्रह है। इस सग्रह से सग्रहित पूजाओं का प्रकाशन हिन्दी तथा गुजराती में अनेक सस्थाओं ने अनेक बार किया है। परन्तु सब प्रकाशनों से इस प्रकाशन की अपनी यह विशेषता है कि अन्य सब ही सस्करणों में प्रति पूजन की समाप्ति पर काव्य और मत्र नहीं होते, परन्तु प्रथम पूजा के अन्त में होते हैं, और सब पूजाओं के अन्त में उन्हें बोलने का निर्देश होता है, अत प्रत्येक बार बीच बीच में पन्ने उलटने का प्रपच भक्ति रस के वेग को अवरुद्धसा कर देता है, कुत्रेक चरणों के लिये यह अवरोध प्रस्तुत सस्करण मे कहीं भी नहीं रखा गया है। सर्वत्र काव्य और मत्र यथास्थान दिये गये हैं। पूजा के दस मडल रगीन दिये हैं, जो पूजाओं के मडल बनाने मे सुविधाप्रद हैं। भावना यह थी की सब ही पूजाओं के मडलों के चित्र दिये जायें किन्तु कई कारणों से यह कार्य सम्भव न हो सका। आगे के सस्करण में एतदर्थ प्रयास किया जावेगा।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन, भीलवाडा ने जो श्रम उठाया है, उसके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

समस्त अग्रिम ग्राहकों के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करता हूँ। आप सर्व के सहयोग से ही इस ग्रन्थ का शीघ्र ही प्रकाशन संभव हो सका।

जो कार्य करता है, उससे भूल होना स्वाभाविक है। अतः कहीं भी प्रमादवश कोई भूल रह गई हो तो पाठकगण उसे सुधार कर पढ़ें तथा मुझे सूचित करें जिससे की अगले संस्करण में सुधार किया जा सके।

दि. ७-९-६६ मुनि देवेन्द्रविजय 'साहित्यप्रेमी'
श्री राजेन्द्र भवन
राजगढ (म. प्र.)

आभार

जैन समाज में पूजा पढ़ाने और उसे श्रवण करने का महत्व अद्वितीय है। जैनाचार्यों एवं मुनिवरों ने जिन शासन देव की भक्ति करने हेतु समय समय पर श्रावक एवं श्राविकाओं को प्रेरित किया है जिससे कि उनका कुछ समय प्रभु की उपासना में व्यतीत हो सके। अनेक आचार्यों एवं मुनिवरों ने अनेक प्रकार की सरस प्रभु पूजाओं की रचना कर जैन साहित्य को समृद्ध किया है। अब तक रचित एवं प्राप्त समस्त पूजाओं का एक ग्रन्थ रूप में प्रकाशन सम्भवत नहीं हुआ है, किन्तु प्रयास जारी है। अनेक बहु प्रचलित पूजाओं के संग्रह अवश्य प्रकाशित होते रहे हैं किन्तु इन सब में प्रत्येक पूजा के प्रारम्भ में पूजा पढ़ाने की विधि, मंडल (मांडला) बनाने हेतु चित्र, यथा स्थान काव्य एवं मंत्र आदि अनेक कमियां रही हैं जिन्हें आज का परिवर्तनशील मानव जो कि क्रमबद्ध, सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित ज्ञान में विश्वास रखता है स्वीकार नहीं करता। जिस द्रुतगति से अन्य साहित्यिक पुस्तकों में परिवर्तन किये जा रहे हैं, उस गति से यदि आने वाली पीढ़ी को जैन साहित्य से परिचित रखना है तो पुस्तकों में आकर्षक परिवर्तन करने होंगे जिससे कि जैन साहित्य के प्रति और अधिक उदासीनता न बढ़े।

मुनिराज श्री देवेन्द्र विजयजी ने ऐसे ग्रन्थ का सम्पादन कर प्रत्येक जैनी के हृदय में पूजा की पुस्तक पढ़ने हेतु भावना जागृत की है। आपने इस ग्रन्थ समस्त मान्य एवं बहु प्रचलित पूजाओं का संग्रह निम्न आकर्षक परिवर्तनों के साथ कर जैन समाज को एक अनुपम ग्रन्थ भेंट किया है, जिसे श्री यतीन्द्र साहित्य-सदन, भीलवाड़ा प्रकाशित कर आपकेतथा जैन समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है।

इस ग्रन्थ में आप ने अब तक प्राप्त समस्त बहु प्रचलित पूजाओं का संग्रह किया है। पूजाओं के साथ प्रारम्भ में पूजा पढ़ाने की विधि तथा यथा स्थान मंडलों (मांडलों) के चित्र भी दिये हैं। साथ ही प्रत्येक पूजा में काव्य और मंत्र, दोहा, ढाल, आदि स्थान स्थान पर देकर पूजाओं को सरस बनाया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन अर्थाभाव से रुक न जाय इस हेतु अग्रिम ग्राहक बनाने हेतु प्रयास किया गया था। इस क्षेत्र में मुनिराज श्री का मैं अत्यन्त आभारी हूँ कि जिन्होंने अनेक शहरों के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लिखा कि वे इस ग्रन्थ के स्वयं अग्रिम ग्राहक बनें और अपने अन्य बन्धु बान्धवों को भी प्रेरित करें। मुनिराज श्री के प्रभाव से प्रभावित होकर मैं अग्रिम ग्राहक बनाने हेतु मद्रास, बेंगलौर, बम्बई, गुन्टूर, गुड़ीवाड़ा, ऐलूर, मदुराई तथा अनेक स्थानों पर गया। प्रत्येक शहर में मुझे वहाँ के सज्जनों ने जो सहयोग दिया वह अवर्णनीय है। वैसे तो समस्त अग्रिम ग्राहक आदर के पात्र हैं और उन सबके सहयोग का मैं आभारी हूँ किन्तु मद्रास के श्री लालचन्दजी, श्री जावन्तराजजी, श्री मिश्रीमलजी, श्री छगनलालजी, शा० सोनमल एन्ड सन्स, श्री धनराजजी, श्री पुखराजजी बेंगलौर के श्री तेजराजजी, श्री भवूतमलजी, श्री भंवरलालजी, बम्बई के श्री किशोरवर्धनजी, श्री जावन्तराजजी, श्री घमन्डीरामजी, श्री हस्तीमलजी, श्री सुमेरमलजी, गुन्टूर के श्री चंपालालजी, गुड़ीवाड़ा के शाह छोगमलजी जेठमलजी, ऐलूर के शाह प्रेमचन्दजी, जयरूपजी आदि का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। आप सज्जनों ने अपने दैनिक व्यापारिक व्यस्त कार्य-क्रम में से अमूल्य समय निकाल कर मेरे साथ जैन समाज के बन्धुओं के पास पधार कर उन्हें ग्रन्थ का महत्व समझाया और अग्रिम ग्राहक बनने हेतु प्रेरित किया।

पूज्यपाद् आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरि जी का मैं संस्था की ओर से हार्दिक आभार मानता हूँ। आप ने शीघ्र ही ग्रन्थ हेतु आत्मीय सदेश लिख कर भेज दिया।

ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर जो सुन्दर कलात्मक चित्र छपा है उसके निर्माता शा० इन्द्रमलजी, भगवानजी सागरा, मंडलों के चित्र मुद्रित करने हेतु ब्लाक प्रदाता श्री निहालचन्द जी जैन, मंत्री श्री राजेन्द्र-प्रवचन-कार्यालय-खुड़ाला, पूर्व प्रकाशित श्री विविध पूजा सग्रह की सामग्री का स्वेच्छानुसार उपयोग करने हेतु आदेश प्रदाता शा० उदयचन्द जी ओराजी, मत्री श्री भूपेन्द्रसूरि साहित्य समिति-आहोर तथा चित्रकार श्री दलसुख शाह—अहमदाबाद आदि के सहयोग हेतु मैं स्वय सपादक एव संस्था की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मैं इस ग्रन्थ के मुद्रक श्री शिरीशचन्द्र जी शिवहरे—अजमेर, का अत्यन्त आभारी हूँ कि जिन्होंने पुस्तक का मुद्रण ही नहीं करवाया बल्कि समय समय पर योग्य परामर्श देकर ग्रन्थ को सुन्दर बनाने मे सराहनीय योग दिया।

ग्रन्थ के प्रकाशन में यद्यपि विलम्ब कुछ अधिक हो गया है किन्तु फिर भी मैं समस्त अग्रिम ग्राहकों का आभारी हूँ कि जिन्होंने धैर्य धारण किया। ग्रन्थ के प्रकाशन मे पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु कहीं भी पाठकों को किसी प्रकार की भी अशुद्धि आभास हो तो निःसंकोच लिखें—जिससे कि अगले संस्करण में उसे संमार्जित किया जा सके।

मुनिश्री का सपादन प्रयास तथा संस्था का प्रकाशन प्रयास तब ही सफल होगा जब कि इस विविध पूजा सग्रह ग्रन्थ का जैन समाज मे अधिकाधिक प्रचार एवं प्रसार हो। इत्यलम्।

सरस्वती-विहार, फतहसिंह लोढ़ा
भीलवाड़ा (राजस्थान) (प्रबन्ध-संचालक)

श्री विविध पूजा संग्रह प्रथम एवं द्वितीय खण्ड

के

अग्रिम ग्राहकों की शुभनामावली

[ग्राहकों के नाम पुस्तक संख्या के आधार पर दिये गये हैं]

—प्रकाशक

श्री बेंगलौर

	नाम	प्रतियाँ
श्री	पेक्साल कारपोरेशन	२०
शा.	गुणेशमलजी तेजराजजी	१५
शा.	मिश्रीमलजी भबूतमलजी एण्ड० ब्रदर्स	१५
शा.	बस्तीमलजी भानाजी एण्ड० कं०	१०
शा.	नथमलजी साँकलचन्दजी	१०
शा.	मुता मुकनचन्दजी पारसमलजी एण्ड० कं०	१०
शा.	कुन्दनमलजी कुशलराजजी	१०
शा.	दीपचन्दजी चन्दनमलजी	१०
शा.	पुखराजजी पारसमलजी	१०
शा.	हरकचन्दजी तिलोकचन्दजी	१०
शा.	हेमराज एण्ड. ब्रदर्स	१०
शा.	समरथमलजी मादमलजी	१०
शा.	कुन्दनमलजी सांकलचन्दजी	१०
शा.	इन्द्रमलजी सुखराजजी	१०

शा.	पारसमलजी जुगराजजी एण्ड० कं०	१०
शा.	मिश्रीमलजी थमनाजी	१०
शा.	मेघराजजी सोनमलजी एण्ड० कं०	१०
शा.	भँवरलालजी सोलाजी	१०
शा.	मगनाजी मिश्रीमलजी	७
शा.	कस्तूरचन्दजी शिवराजजी	७
शा.	खेवरचन्दजी सुमेरमलजी	७
शा.	मुता जावन्तराजजी हजारीमलजी	५
शा.	समरथमलजी सुमेरमलजी एण्ड. सन्स	५
शा.	मुता चन्दनमलजी लालचन्दजी	५
शा.	मिश्रीमलजी चन्द्रराजजी एण्ड० कं०	५
शा	हीराचन्दजी बाबुलालजी एण्ड० कं०	५
शा.	मगराजजी सरेमलजी	५
श्री	किशोर स्टिल्स	५
शा	सांकलचन्दजी जोराजी	५
शा.	देवीचन्दजी टीकरजी	५
शा.	सरेमलजी हजारीमलजी	५
श्री	मोहन स्टील इम्पोरियम	५

श्री मद्रास

शा.	हंसराजजी अभयचन्दजी	१०
शा.	ऋषभदासजी भूरमलजी	५
शा.	भूरमलजी भभूतमलजी	५
शा.	छगनलाल एण्ड० कं०	५
शा.	मगाजी अमलदासजी	५
शा.	सागरमलजी मोहनलालजी कांकरिया	५

शा.	मुनिलालजी मुल्तानमलजी	५
शा.	मुताजी भगवानचन्दजी	५
शा.	मुता भभूतमलजी माँगीलालजी	५
श्री	कोठारी प्रोडक्टस्	५
शा.	मुल्तानमल एन्ड० कं०	५
शा.	बक्तावरमलजी सांकलचन्दजी	५
शा.	कुन्दणमलजी बसाजी हीराणी	५
शा.	धर्माजी जेठाजी	५
शा.	मिश्रीलालजी उकाजी	५
शा.	एस० नागराजजी	५
शा.	जी० घेवरचन्दजी	५
शा.	आर० जी० भंडरी	५
शा.	सोनमल एण्ड० सन्स	५
श्री	रमेश मेडिकल हॉल	५
शा.	एन० बी० शाह	५
शा.	सागरमलजी शंकरलालजी	५
शा.	फूलचन्दजी सुमेरमलजी	५
शा.	हीराचन्दजी अचलाजी	५
शा.	मीठालालजी भभूतमलजी	५
शा.	बस्तीमलजी नाथाजी	५
श्री	राजस्थान मेटल वर्क्स	५
शा.	जोधाजी मलयचन्दजी	५
शा.	बी० एम० शाह	५
शा.	गुलाबचन्दजी मोहनलालजी	५
शा.	बाबुलाल एण्ड० कं०	५
शा.	धर्मचन्दजी [illegible]	५

शा. बख्तावरमलजी नथमलजी	५
शा. जेठमलजी ज्ञानमलजी	५
शा. भेरचन्दजी त्रिलोकचन्दजी	५
शा. राजेन्द्रजी ताराजी गाँधी	३
शा. मिरेमलजी ज्ञानमलजी गाँधी	२

श्री बम्बई

शा. थानाजी परागजी	११
शा. घमन्डीरामजी केवलजी	१०
शा. एच० पी० शाह एण्ड कं०	१०
जावन्तराजजी केवलजी	१०
राजी जुहारमलजी	१०
फूलचन्दजी गिरधारीजी	१०
शा. सुमेरमलजी हजारीमलजी	१०
शा. हरकाजी एन्ड० सन्स	१०
शा. वीरचन्दजी आसुजी	१०
शा. अमरचन्दजी सेराजी	१०
शा. जावन्तराजजी सूरजमलजी	१०
शा. मिश्रीमलजी मनोहरमलजी	५
शा. ताराचन्दजी धनराजजी	५
शा. ताराजी मेघाजी	५
शा. हस्तीमल धनराजजी	५
शा. जेठमलजी सुधाजी	५
शा. कोलचन्दजी हस्तीमलजी	५
शा. माँगीलालजी मिश्रीमलजी	५

शा. गणेशमलजी सागरजी	५
शा. शिवराजजी भँवरलालजी	५
शा. घेवरचन्दजी लक्ष्मीचन्दजी	५
शा. मनोहरमलजी शिवदानजी	५
शा. सागरमलजी लीलाजी	५
शा. भंडारी घेवरचन्दजी मिश्रीमलजी	५
शा. बाबुलालजी भूराजी	५
शा. किशोरमलजी तेजराजजी	५
शा. पुखराजजी दुर्गाजी	५
शा. रासमलजी दरजमलजी	४
शा. सरदारमलजी छोटूजी	३
शा. कान्तीलालजी मिश्रीमलजी	३
शा. जसराजजी मिश्रीमलजी	३
शा. कपूरचन्दजी वरसाजी	२
शा. हजारीमलजी भूमरलालजी	२
शा. कालूचन्दजी हजारीमलजी	२
शा. मिश्रीमलजी जवाजी	२
शा. कुन्दनलालजी पारसमलजी	२
शा. चुनिलालजी जुहारमलजी	२

श्री गुन्टूर

शा. इन्द्रमलजी जुगराजजी	५
शा. छोगमलजी तेजराजजी एन्ड० कं०	५
शा. लालाजी किशनलालजी एन्ड० कं०	५
शा. साँकलचन्दजी शंकरलालजी एन्ड० कं०	५
शा. शान्तीलालजी कान्तीलालजी एन्ड० कं०	५

शा वच्छराजजी हजारीमलजी	५
शा खीमराजजी भूरमलजी एन्ड० कं०	५

श्रा गुडीवाड़ा

शा. गुलाबजी फूलचन्दजी	५
शा छोगमलजी जेठमलजी एन्ड० क०	३
शा सोभागमलजी मदनलालजी	३
शा खुमाजी मूलचन्दजी	३
शा. अखेराजजी बाबुलालजी	३
शा टीकमचन्दजी दीपाजी एन्ड० कं०	३
शा. देवीचन्दजी कृष्णाजी	३

श्री ऐलूर

शा प्रेमचन्दजी जयरूपचन्दजी	५
शा. जेठमल एन्ड क०	५
शा कपूरचन्दजी लखमाजी	३
शा मद्घाजी रतनचन्दजी एन्ड० क०	३

श्री मदुराई

शा सोनमलजी हरकाजी	२५
शा सधवी भाणाजी छगनराजजी	५

श्री पुडाल तीर्थ, श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर टेम्पल	९
श्री बडावदा श्रीसंघ, बडावदा	५
शा. पेराजमलजी नागराजजी, वाड़पत्री	२
श्री खुशालचन्दजी जैन, जालोर	१

स्थानकवासीमान्य-बत्तीससूत्रों के मूलपाठ में

जिनप्रतिमाओं की यात्रा, दर्शन और पूजा करने के अधिकार

१—विज्ञाचारणस्सणं भंते ! तिरियं केवइए गइविसए पराणत्ते ?, गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदित्ता वितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ। वंदित्ता तओ पड़िनियत्तइ, पड़िनियत्तइत्ता इहमागच्छइ, आगच्छइत्ता इहं चेइयाइं वंदइ।

—भगवन् ! विद्याचारणमुनि की तिर्छी गति का विषय कितना कहा है ?, गौतम ! विद्याचारणमुनि यहाँ से एक उत्पाद (डगल) से मानुषोत्तर पर्वत पर उतरते हैं, उतर के वहाँ रहे हुए जिनमन्दिरों को वंदन करते हैं। वंदन किये बाद वहाँ से द्वितीय उत्पाद से नन्दीश्वरद्वीप में उतरते हैं, उतर के वहाँ रहे हुए जिनमन्दिरों को वंदन करते हैं। वंदन किये बाद वहाँ से एक उत्पाद से यहाँ आते हैं और यहां के जिनचैत्यों (जिनालयों) को वंदन करते हैं।

विज्ञाचारणस्सणं भंते ! उढ्ढं केवइए गइविसए पराणत्ते?, गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेइ। करेइत्ता तहि चेइयाइं वंदइ, वंदित्ता वितिएणं उप्पा-

एण पडगवणे समोसरण, करेइ करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ। वंदित्ता तओ पडिनियत्तइ, पडिनियतइत्ता इहमागच्छइ, आगच्छइत्ता इह चेइयाइं वंदइ।

—भगवन्! विद्याचारणमुनि की ऊर्ध्वगति का विषय कितना कहा है?, गौतम! विद्याचारणमुनि यहाँ से एक उत्पाद से नन्दनवन मे उतरे हैं, उवर के वहाँ क जिनचैत्यों को वदन करत हैं। वदन करके द्वितीय उत्पाद स पडकवन में जात हैं, जाके यहाँ रहे हुए जिनमन्दिरों को वदन करत हैं। बाद में वहाँ से लौट कर एक उत्पाद से यहाँ आत हैं और यहाँ के जिनमन्दिरों को वदन करते हैं।

२-जघाचारणस्मणं मते! तिरिय केवइए गइविसए पराणत्ते?, गोयमा! से ण इओ एगेण उप्पाएण रुयगवरे दीवे समोसरण करेइ। क इत्ता तहिं चेइयाइ वंदइ, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे समोसरण करेइ, करित्ता तहिं चेइयाइ वंदइ। वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छइत्ता इह चेइयाइ वदइ।

जघाचारणस्सण मते! उढ्ड केवइए गइविसए पराणत्ते?, गोयमा! से ण इओ एगेण उप्पाएण पडगवणे समोसरण करेइ, करित्ता तहिं चेइयाइ वदइ। वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितीएण उप्पाएण नदणवणे समोसरण करेइ।

करित्ता तहिं चेइयाइं वंदइ। वदइत्ता, इहमाच्छइ, आच्छइत्ता इहं चेइयइं वंदइ।

—भगवन् ! जंघाचारणमुनि की तिर्छी गति का विषय कितना कहा है ?, गौतम ! जंघाचारणमुनि यहाँ से एक उत्पाद से रूचकवरद्वीप में उतरते हैं, उतरके वहां के जिनमन्दिरों को वंदन करते हैं। वहां से निकल के द्वितीय उत्पाद से नंदीश्वरद्वीप में जाते हैं और वहां रहे हुवे जिनमन्दिरों को वंदन करते हैं। वहां से एक उत्पाद से यहां आते हैं और यहां के जिनचैत्यों को वंदन करते हैं।

—भगवन् ! जंघाचारणमुनि की ऊर्ध्वगति का विषय कितना कहा है ?, गौतम ! जंघाचारणमुनि यहां से एक उत्पाद से पांडुकवन में जाते हैं और वहां के जिनचैत्यों को वंदन करते हैं। द्वितीय उत्पाद से नंदनवन में जाते हैं और वहां के जिन-चैत्यों को नमस्कार करते हैं। वहां से लौट कर एक उत्पाद से यहां आते हैं और यहां के जिन चैत्यों को वन्दन-नमस्कार करते हैं।

श्रीभगवतिसूत्र-मूलपाठ, २० वां शतक, ९ वां उद्देशा,
६८३-६८४सूत्र;

२-अंबडस्स णं णो कप्पइ अन्नउत्थिया वा, अरणउत्थि-यदेवयाणि वा, अरणउत्थियपरिग्गहियाणि वा चेइयाइं वंदित्तए वा, णमंसित्तए वा, जाव पज्जुवासित्तए णरणत्थ अरिहंते अरिहंतचेइयाणि वा।

—अंबड़परिव्राजक को नहीं कल्पे अरिहंत और अरिहंत प्रतिमा सिवाय अन्य मतावलम्बियों के देवों, अन्य मतिग्रहित जिन प्रतिमाओं और अन्यमत के श्रमणों का वदन करना, नमस्कार करना यावत् पूजा सेवा करना। अर्थात् अन्यमत को छोड़ कर अरिहंत और अरिहंत की प्रतिमा की स्तवन पूजा तथा वंदन करना कल्पे।

श्रीउववाइसूत्र-मूलपाठ पत्र ९७, अंबडाधिकार।

४—णो खलु मे भंते! कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थियदेवयाणि वा, अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा, वंदित्तए वा णमंसित्तए वा पुव्विं अणालवित्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा।

—हे भगवन्! आज से मुझे नहीं कल्पे अन्यतीर्थियों के देवों, तथा अन्यतीर्थियों की ग्रहण की हुई जिनप्रतिमा, और अन्यतीर्थिक श्रमणों को वंदन नमस्कार करना। इसी तरह अन्यतीर्थियों के बिना बोलाये उनके साथ एक या, अनेक बार बोलना भी नहीं कल्पे। अन्यमती के देव और अन्यमतिग्रहित जिनप्रतिमा के सिवाय अरिहंतदेव, उनकी प्रतिमा और उनके श्रमणों को वंदन, नमन करना कल्पता है।

श्रीउपासकदशाङ्गसूत्र-मूलपाठ आनन्दश्रावकाध्ययन।

५—णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाणि वा अणगारे वा भावियप्पणो निस्साए उड्ढं वा उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो (चमरेन्द्राधिकार)

—अरिहंत, अरिहंतचैत्य[1] और तपसंयम में भावित आत्मा-वाले अनगार (मुनि) इन तीनों को शरण लिये बिना असुर-कुमारेन्द्र यावत् सौधर्म देवलोक तक ऊर्ध्व गमन नहीं कर सकता। अर्थात् अरिहंतदेव, उनकी प्रतिमा और मुनिराज की निश्रा से वह ऊँचा जा सकता है।

श्रीभगवतिसूत्र—मूलपाठ ३ शतक, २ उद्देशा।

६—नो चेवणं समणोवासगं पच्छाकडं वहुस्सुयं वज्जागमं पासेज्जा, जत्थेव सम्मं भावियाइं चेइयाइं पासेज्जा, कप्पइ से तस्संतिए आलोइत्तए वा जाव पडिवज्जित्तए वा।

—जो साधु अयोग्यस्थान का आचरण करके उसकी शुद्धि के लिये आलोयणा लेना चाहे, तो उसको संयमपतित वहुत आगम का ज्ञाता श्रावक नहीं मिले, तो सुविहिताचार्य प्रतिष्टित चैत्य (जिनप्रतिमा) के पास आलोयणा यावत् प्रायश्चित लेना कल्पे।

श्रीव्यवहारसूत्र—मूमपाठ १ उद्देशा।

७—दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हायाकयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता

---

१. 'चैत्यं जिनौकस्तद्बिम्बं' जिनेन्द्र का मन्दिर और जिनेन्द्र की प्रतिमा को चैत्य कहते हैं, अनेकार्थसंग्रह श्लोक ३६६। 'चैत्यं विहारो जिनसद्मनि' चैत्यशब्द विहार और जिनमन्दिर इन दो अर्थ में हैं, अभिधानचिंतामणिकोश भूमिकांड ६० वां श्लोक।

सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवराइं परिहिया । मज्जण-घराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करइ, करित्ता लोमहत्थयं परामुसइ । एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं । जाव धूवं डहइ, धूवं डहित्ता वामं जाणुं अंचेइ, दाहिणुं धरणितलंसि णिवेसेइ । णिवेसित्ता तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि नमेइ । नमेइत्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता जिणघराओ, पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ।

—द्रौपदी राजवर कन्या जहाँ स्नान-घर था वहाँ आई, आकर स्नान किया, बलिकर्म किया, और कौतुक मंगलरूप प्रायश्चित्त किया । बाद में जिनघर में प्रवेश करने योग्य उत्सव-मंगलादि सूचक शुद्ध वस्त्र पहिर के मज्जनघर से बाहर निकल के जहाँ जिनमन्दिर था, वहाँ आई । जिनघर में प्रवेश करके जिनप्रतिमा को नमस्कार किया और मोरपींछ से जिन प्रतिमा का प्रमार्जन किया । इस प्रकार जैसे सूर्याभदेवने जिनप्रतिमा की पूजा की, उसी प्रकार द्रौपदी ने भी धूपोत्क्षेपण पर्यन्त पूजा की । बाद में डावा गोडा ऊँचा और जिमना गोडा जमीन पर स्थापन करके, तीन बार मस्तक नमा करके, किंचित् अवनत

आसन से हाथ जोड़ कर नमुत्थुणं० के पाठ से स्तवन, वंदन-नमस्कार किया। बाद में द्रौपदी राजकन्या[1] जिनघर (जिन-मन्दिर) से बाहर निकल के निज अन्तेउर (घर) में वापिस आई।

श्रीज्ञातासूत्र–मूलपाठ १६ अध्ययन, २१० पत्र।

८–तत्थणं बहवे भवणवइ–वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया देवा चाउम्मासियपडिवएसु संवच्छरिएसु वा अन्नेसु य बहुसु जिणजम्मण–निक्खमण–नाणुप्पत्ति–परिनिव्वाणमाइसु देवकज्जेसु य देवसमुदएसु य देवसमितिसु य देवसमवाएसु य देवपओयणेसु य एगंतओ सहिता समुवगता समाणा पमुदियपक्कीलिया अट्ठाहियारूवाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहं सुहेण विहरंति।

---

१. "ता दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मं ति कट्टु नो आढाति, नो परियाणए, नो अब्भुट्ठेति, नो पज्जुवासति।" द्रौपदी ने कच्छुल्लनारद को असंयति, अविरति, अपच्चक्खाणी जान कर आदर दिया नहीं, उसके आगमन को अच्छा जाना नहीं, सेवाभक्ति की नहीं और खड़ी हुई नहीं। (यह पाठ द्रौपदी के सम्यक्त्व की दृढ़ता का प्रतिपादक है।)

श्रीज्ञातासूत्र–मूलपाठ १६ अध्ययन २१२ पत्र।

—नंदीश्वरद्वीप में रहे हुए जिनमन्दिरों में भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक, एवं चार निकाय के देव चार्तिकी प्रमुख अट्ठाइयों में, पर्युषण महापर्व के दिवसों में, दूसरेभी जिनेश्वरों के जन्म, दीक्षा, केवल और मोक्ष कल्याणक दिवसों में देवकार्य के लिये इकट्ठे होते हैं और अतिशय आनन्दित और क्रीड़ापरायण हो करके अष्टाह्निका महोत्सव करते हुए सुखपूर्वक विचरते हैं।

श्रीजीवाभिगमसूत्र-मूलपाठ, ३ प्रतिपत्ति, २ उद्देशा।

इस प्रकार स्थानकवासियों के मान्य बत्तीस सूत्रों (आगमों) के मूलसूत्र (मूलपाठ) में जिनमन्दिरों की यात्रा, जिनप्रतिमाओं की विस्तार पूर्वक पूजा, दर्शन, अट्ठाई महोत्सव आदि धर्मकार्य करने का उल्लेख अनेक जगह मिलता है। इस ग्रन्थ में स्थानाभाव से दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। विशेष जिज्ञासुओं को बत्तीस सूत्रों का ही अवलोकन करके, जान लेना चाहिये।

—श्रीविजययतीन्द्रसूरि।

पूजाओं की विधि

आवश्यक सूचना

१ हरएक पूजा में प्रथम त्रिगड़ा (सिंहासन) रचकर उसके नीचे के बाजोट पर चावलों का स्वस्तिक बनाके, उसके ऊपर श्रीफल और रूपानाणा से स्थापना करना। त्रिगड़ में धातुमय चोवीशी अथवा पंचतीर्थी सिद्धचक्र-गट्टाजी सहित पधराना चाहिये।

२ पूजा के योग्य थाली, बाटका, लोटा, त्रांबाकुंडी, बाल्टी घड़ा, कलश कलशिया, कटोरी, तासक, रकाबी, आरती, मंगलदीपक आदि वर्तन शुद्ध जाड़े गल्ले में छाने हुए अचोट जल से माँज, धो और शाफ कर तैयार रखना चाहिये।

३ पूजा में वापर ने योग्य श्रीफल, पान, सोपारी, बादाम, इलायची, लोंग, मेवा, चाँवल, फल, कोपराबाटकी, खारक, अंगलूणा आदि सामान छाने हुए अचोट जल से धोकर साफ करना और श्रीफल तथा अंगलूणा पर केसर के स्वस्तिक करना चाहिये।

४ शुद्ध छाने हुए जल से विधि पूर्वक स्नान कराके, पूजा योग्य अबोट वस्त्र पहिरा के, उत्तरासग कराके, मुख-कोश बंधा के सभी स्नात्रियों के हाथ में मौली बंधा और केसर से स्वस्तिक करा के तैयार करना चाहिये ।

५ गाय, या भैंस के जलमिश्रित छाने हुए दूध में दहीं, घृत, मिश्री, कपूर, केसर मिला के, पंचामृत बना के उससे अभिषेक योग्य सभी छोटे कलश भरके तैयार रखना और सभी छोटे कलशों पर केसर के स्वस्तिक करना चाहिये ।

६ बिना बाल बच्चेवाली सधवा स्त्रियों या कन्याओं को स्नान मज्जन कराके, स्त्रियों के योग्य अबोट वस्त्राभूषण पहिरा के, मुखकोश बंधा के, हाथ में मौली बंधा के और लिलाट में केसरतिलक कराके स्नात्रिणियाँ तैयार करना चाहिये । जिस पूजा में स्नात्रिणियों की आवश्यकता हो उसी में स्नात्रिणियाँ बनाना चाहिये ।

७ पूजा में पहरने लायक धोती उत्तरासंग अबोट, सदस, धोये और धुपाये हुए सूत के सफेद ही काम में लेना चाहिये । रेशमी या रंगीन, फटे, बिना धोये और दूसरों के वापरे हुए वस्त्र पूजन में काम नहीं आ सकते । इसी प्रकार पूजा के अंदर अष्ट द्रव्य भी शुद्ध ही वापरना चाहिये ।

८ पूजा में फल और पुष्प विना सड़े हुए, कीटादि रहित पके हुए ही काम में लेना चाहिये। कच्चे फल, फूल और मालिनियों के लाये हुए फूल पूजा में वापरने से कर्मबन्ध होता है।

९ प्रति–पूजा के मंडल–चित्र प्रस्तुत पुस्तक में दर्ज हैं, धोए हुए चावलों से पहले उसी मुताबिक मंडल तैयार कर, पूजा भणाना प्रारम्भ करना चाहिये।

१० हरएक पूजा के आरंभ में प्रथम स्नात्रपूजा विधि-पूर्वक भणा करके ही पूजा भणाना आरंभ करना चाहिए जिस मंदिर में पूजा भणानी हो, उसमें यदि प्रातःकाल में स्नात्रपूजा भणा ली गई हो, तो फिर से स्नात्र भणाने की जरूरत नहीं है।

ग्रन्थ-दर्शन

प्रथम-खण्ड

द्वितीय–खण्ड

जय वीयराय

[प्रथम खण्ड]

श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज–सङ्कलिता–

—सविधिश्रीस्नात्रपूजा—

एक त्रिगड़ा रखना, उसके बीच के बाजोट पर कुंकुम का स्वस्तिक करना। त्रिगड़ा के आगे एक बाजोट रख कर उसके ऊपर एक बीच में और उसके चारों दिशा में एक एक कुंकुम का स्वस्तिक बना कर, उन पर चावलों की ढिगली करना। बीचवाले स्वस्तिक पर रूपानाणा सहित श्रीफल और शेष स्वस्तिकों के ऊपर पंचामृत से भरे हुए कलश रखना। फिर केसर का साथिया करके त्रिगड़ा में एक नवकार गिन कर धातुमय पंचतीर्थी या चौबीसी विराजमान करना, उसके दाहिने तरफ धूप–दीप रखना। बाद में स्नात्रियों को अपने जिमने हाथ में केसर का साथिया करके, प्रभुप्रतिमा की पूजा कर हाथ में थोड़ी कुसुमांजली लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' ऐसा बोल कर

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे।
शान्तिनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभुप्रतिमा पर उछालना और जिन-जानु की केशर से पूजा करना। फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' बोल कर—

(दोहा-ढाल)

केवलि हो उपदेश दे, उत्तम गुणभण्डार।
संशय भंजक नाथजी, मिथ्या भर्म विडार॥३॥

नाणे जाणे लोकालोकना, भाव प्रकाशक ज्ञानी है।
नहीं कामी नहीं क्रोधी कपटी, नहीं लोभी अभिमानी है॥
सुर रचना करे समवसरण की, सुणे हलुकर्मी प्राणी है।
बारह वर्षदा आगल प्रभुजी, भाषे निरवद्य वाणी है॥३॥

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे।
नेमिनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभु-प्रतिमा पर उछालना और प्रभु-हस्त की केशर से पूजा करना। फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' बोल कर—

(दोहा-ढाल)

सिद्ध अनन्ता तीर्थंकर, ज्योतिरूप भगवन्त।
भाव जागृति कारणे, जिनप्रतिमा प्रणमन्त॥४॥

दोहा—

चउवीसे जिनराजनी, प्रतिमा त्रिगड़े थाप ।
विधियुक्ते पूजा करी, टालो भव सन्ताप ॥१॥

ढाल १, राह राधेश्याम की —

जगजीवन जिनराज कृपालु, नितप्रति जिनगुण गावो रे ।
मिथ्यातिमिर विनाशक रवि सम, पूजी ध्यान लगावो रे ॥
उत्तम श्रीजिनवर की पूजन कर; वंछित फल पावो रे ।
जन्म जरा और मरण निवारी, आत्मिक लाभ कमावो रे ॥१॥
"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे।
आदिनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे" ।।टेर।।

कुसुमाञ्जलि प्रभुप्रतिमा पर उछालना और जिनचरण के अंगुष्ठ की केशर से पूजा करना। फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर "नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०" बोल कर—

(दोहा-ढाल)

जाणी आत्मस्वरूपने, निज कर्त्तव्य विचार ।
पुद्गल की ममता तजी, श्रीजिनवर जयकार ॥२॥
अतिशय वाणी गुण के धारक, तारक जग हितकारी हैं ।
दिव्यध्वनि चउमुख से भाषे, परमानन्द दातारी हैं ॥
अष्ट प्रतिहारज जस छाजे, तीर्थपति उपकारी हैं ।
परम उदार सुधारक जिनवर, अतुलबली अविकारी हैं ॥२॥

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे ।
शान्तिनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे ॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभुप्रतिमा पर उछालना और जिन-जानु की केशर से पूजा करना । फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' बोल कर—

(दोहा—ढाल)

केवलि हो उपदेश दे, उत्तम गुणभण्डार ।
संशय भंजक नाथजी, मिथ्या भर्म विडार ॥३॥

नाणे जाणे लोकालोकना, भाव प्रकाशक ज्ञानी है ।
नहीं कामी नहीं क्रोधी कपटी, नहीं लोभी अभिमानी है ॥
सुर रचना करे समवसरण की, सुणे हलुकर्मी प्राणी है ।
बारह वर्षदा आगल प्रभुजी, भाषे निरवद्य वाणी है ॥३॥

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे ।
नेमिनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे ॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभु-प्रतिमा पर उछालना और प्रभु-हस्त की केशर से पूजा करना । फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' बोल कर—

(दोहा—ढाल)

सिद्ध अनन्ता तीर्थंकर, ज्योतिरूप भगवन्त ।
भाव जागृति कारणे, जिनप्रतिमा प्रणमन्त ॥४॥

.. की किरिया अहनिश, साधक शुभ परिणामी है।
भावदया सागर जिनवरजी, गिरुआ गुण अभिरामी है॥
देशना अमृतसम वरसावे, प्रभुता में नहीं खामी है।
प्राणवल्लभ जगपति अतिनिर्मल, भविकजीव विसरामी है ॥४॥

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे।
पार्श्वनाथने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभुप्रतिमा पर उछालना और प्रभु-स्कन्धे केशर से पूजा करना। फिर थोड़ी कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' बोल कर—

(दोहा—ढाल)

समकित श्रद्धावन्तने, प्रभु-प्रतिमा आधार।
वन्दन पूजन ध्यान धर, करे निज आत्म उद्धार ॥५॥

संघ चतुर्विध स्थापी प्रभुजी, चउविह धर्म सुनाया है।
गणधर मुनिवर सुरपति नरपति, नर नारी मन भाया है॥
दया धर्म का मर्म दिखाई, शिवपुर पन्थ बताया है।
वीतराग जग त्याग मुनि बन, चउगति भ्रमण मिटाया है ॥५॥

"जनमन रंजन नाथ निरंजन, जिन चौवीसीने ध्यावो रे।
वीर प्रभुने पूजो भविजन, कुसुमांजलिये वधावो रे॥"

ऐसा कह कर कुसुमाञ्जलि प्रभुप्रतिमा पर उछालना और

प्रभु-मस्तके केशर से पूजा करना, बाद में चामर लेकर वींजना और हाथ में अक्षत (चावल) लेकर—

ढाल २, राह कड़खा की देशी—

तीर्थंकर सकलना पंच कल्याणके,
सुरपति चौसठ भक्ति सारे।
भूपति-वन्दित होय आनन्दित,
तात घर उत्सव बहु प्रकारे॥
जन्म उत्सव विधि भाषी सूत्रागमे,
संक्षेपथी वर्णवुं जेह धारे।
सफल नर जन्म करे ध्यान हृदये धरे,
पूजी जिनराज निज आत्म तारे॥ ती०॥ १॥

बीसस्थानकतप तीसरे भव करी,
शुद्ध सम्यक्त्व धरि जिन आराधे।
भावना शुद्ध करी कर्म हलका करे,
पन्थ अरिहंतनो जेह साधे॥
इन्द्रिय पांचोना विषय विकारने;
परिहरे गोत्र जिननाम बांधे।
जैन शासनतणा प्रेमी सब जीव हो,
भावना इणविध चित्तसमाधे॥ ती०॥ २॥

एक भव करीने पछि कर्मभूमि विषे,

तीर्थंकर श्रवतरे जगत्स्वामी।
स्वर्ग ने मर्त्य पाताल निहुँ लोकना,
नाथ कहेवाय बल अतुल पामी॥
तीन ज्ञानें करी मात कुखे रहे,
श्रीजिनराज प्रभु मोक्षगामी।
नाथ पुरुषोत्तम दीनबन्धु प्रभु,
जीत अड कर्म होय ध्रुव श्रारामी॥ ती० ॥ ३ ॥

ढाल ३, सुन्दर सावलिया—ए राह—

जिनवर जयकारी, जगजीवन उपकारी जिन०।
श्रानन्दानन्द कारी, जिनवर जयकारी ॥ टेर ॥

श्रावे प्रभु निज जननी कूखे, चउदे सपना मातनी देखे।
प्रमुदित चित्त विशेषे, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ १ ॥
पहिले सुपने उज्वल गजवर, बीजे दीठो वृषभ मनोहर।
त्रीजे मृगपति सुन्दर, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ २ ॥
तूर्ये लक्ष्मी महिमाशाली, पंचम माल दो फूलनी भाली।
शशिवर छट्ठे निहाली, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ३ ॥
उगतो दिनमणि सत्तम सोहे, इन्द्रधजा अट्ठम मन मोहे।
पूर्णकलश नवमो हे, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ४ ॥
पद्मसरोवर दशमे माता, देखे रत्नाकर लहराता।
ग्यारमें स्वप्न सुहाता, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ५ ॥

देवविमान भुवन सुपना में, देखे बारमे दुक निद्रा में ।
रत्नों की राशि पामे, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ६ ॥
निर्धूम अग्नि स्वप्न चउदमे, देखी जागे प्रफुल्लित मन में ।
आनन्द अतिही तन में, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ७ ॥
राणी रायने स्वप्न सुनावे, राय सुणीने फल दरसावे ।
सुणी राणी सुख पावे, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ८ ॥
पुत्ररत्न जगजन मन भावे, एहवो सुत तुझ कूंख सुहावे ।
देवाधिदेव कहावे, जिनवर जयकारी ॥ जग० ॥ ६ ॥

ढाल ४, भरतनी पाटे भूपति रे, ए राह—

शक्रेन्द्र आसन कांपियो रे, देखे अवधि नाण वाला ।
अगट्यो नाथ त्रिलोकनो रे, जगवल्लभ जगभाण वाला ॥१॥
जगतारण जिनराजजी रे, आतमना आधार वाला ।
हर्ष हिये न समावतो रे, आनंद को नहीं पार वाला ॥२॥
भवसागर तरवातणो रे, मलियो साधन एह वाला ।
उपकारी अरिहंतजी रे, जग परमेश्वर जेह वाला ॥३॥
शिव पथ गुण श्रेणी तणो रे, सांचो प्रभु सत्यवाह वाला ।
इन्द्रासन थी ऊठीयो रे, मन में अति उत्साह वाला ॥४॥
सुरपति कहे देवो ! सुणो रे, अवसर एह अमोल वाला ।
सार्थपति अरिहा प्रभु रे, रूप तणो नहीं तोल वाला ॥५॥

सात आठ पग सामुं आयने रे, जिण दिशा रह्या जिनराज वाला ।
शक्रस्तव विधि साचवे रे, हरि देव देवी समाज वाला ॥६॥

गीत संगीत रंभा नाचती रे, जिनगुण गावे रसाल वाला ।
सारी गमपधनी सुर साधती रे, धिता ता धि ता ता ताल वाला ॥७॥

भक्ति करे सुर मानवुं रे, वर्त्यो आनन्द अपार वाला ।
जन्म महोत्सव घड़ी ने गिणे रे, सफल गिणे अवतार वाला ॥८॥

इणविध नरलोक मांय में रे, घर घर होय आनन्द वाला ।
उत्सव माता पिता करे रे, जय जय जन्म्यो नन्द वाला ॥९॥

फागुन सोमाई वधाविया रे, मिल सुर नर समुदाय वाला ।
धरणिपति जन्म्या प्रभु रे, शुभ घड़ी श्रीजिनराय वाला ॥१०॥

इतना बोल कर 'जगचिन्तामणि' का चैत्यवन्दन, 'जयवीयराय' तक करना। फिर हाथ धो धूप खेव और एक नवकार गिन कर पंचामृत से भरे हुए कलश अंगलूहा से ढांक के हाथ में लेना। बाद में—

ढाल ४, चल गोरी मंदिरा पधारो पधारो, ए राह—

आनन्द मंगल घर घर होस्या,
जन्म्या श्रीजिन उपकारी ॥ टेर ॥
सुरां नरां पाताल विशेखे,
आनन्द मंगल सुखकारी ॥ आ० १ ॥

राय राणा सहु हर्ष भराणा,
नरखेत्रे सुखी नर नारी ॥ आ० २ ॥
छप्पन दिक्कुमरी सही अमरी,
अविधिये जाणे सुविचारी ॥ आ० ३ ॥
आवी जिनजननीने वंदे,
प्रमुदित अति आनंदकारी ॥ आ० ४ ॥
एक योजना प्रमाणे भूमि,
शुद्ध करे जल छटकारी ॥ आ० ५ ॥
सूतिगृह थापे ईशाने
अधोलोकनी रहनारी ॥ आ० ६ ॥
पुष्प सुगंधित जल छंटकावी,
गावे गीत न्यारी न्यारी ॥ आ० ७ ॥
कलशसुवर्ण सुगंधित जल भरी,
जिनजननीने न्हवरावे सारी ॥ आ० ८ ॥
दर्पण दीपक चंमर पंखा,
निज निज कृत्य करे भारी ॥ आ० ९ ॥
त्रण दिशि त्रण केलि घर करने,
मर्दन स्नान मंगल चारी ॥ आ० १० ॥
रक्षापोटली मात रु सुत के,
बांधे दिक्कुमरी प्यारी ॥ आ० ११ ॥

मात ! तुझ नंदन बहु जीवो,
यतीन्द्रप्रभु जन हितकारी ॥ आ० १२ ॥
वर आशीष देई दिक्कुमरी,
वंदी जावे परिवारी ॥ आ० १३ ॥

दर्पण (कांच) दिखाना, चामर वींजना, प्रभु-प्रतिमा के हाथ में मोली बांधना और दीपक करना । घंटा बजाते हुए ६–७वीं ढाल बोलना ।

ढाल ६, माच, सजिया सहु सिणगार वो दासी, ए राह–

इन्द्र चौसठना आसन चलिया, जाणे अवधि नाणे रे ।
श्रीजिनवरनो जन्म हुओ, हरि हर्ष हिया में आणे रे ॥टेर॥
सोहमपति सुर हरिणेगमेषिने, तेड़ी इम आदेशे रे
घंट सुघोषा नाद करावो, कार्य करो सुविशेषे रे ॥इ० ॥१॥
घंटानादे बत्तीस लख, वैमानिक सुर सावधाने रे ।
शंखनादे इम भवनपति, व्यंतर पडल सुणी काने रे ॥इ०॥२॥
सीयानादे ज्योतिषि सज्ज होय, देव सभी हरसावे रे ।
ईशानेन्द्रादिक सुरपति सह, घंटानाद करावे रे ॥इ०॥३॥
सुर सघला घंटानाद सुणिने, इन्द्रनी सेवा में आवे रे ।
प्रभु जन्मोत्सव जाणी देवो, आनंद हर्ष वधावे रे ॥इ०॥४॥
इन्द्र चौसठ चले सुर परिवारे, निज निज वाहने आनंदे रे ।

शक्रेन्द्र जिन जन्मस्थाने जइने, जिनजननीने वंदे रे ॥इ०॥५॥
हे माता ! थें जगपति जायो, तीन भुवननो नाथ रे ।
स्नात्र उत्सव करवा हुं आयो, कहुं छुं जोड़ी हाथ रे ॥इ०॥६॥
मातने अवस्वापिनी निद्रा दइ, प्रभु रूपी बीजो थापी रे ।
वैक्रिय से पंचरूप करी हरि, जय जय शब्द अलापी रे॥इ०॥७॥
करसंपुटे प्रभुने उपाड़े, आगल वज्र उछाले रे ।
चंमर ढाले नृत्य करे और, छत्र धरिने चाले रे ॥इ०॥८॥
भक्ति सहित मंदरगिरि आवे, इन्द्र चौसठ तिहां मलिया रे ।
जन्मोत्सव करवाना रसिया, मनरा मनोरथ फलिया रे ॥इ०॥९॥

ढाल ७, राह त्रिताल चोपांई—

मेरुगिरि पर प्रभुने लावे, पांडकवन में सुरपति आवे ।
पांडुकमला शिलाने ठाम, शाश्वत सिंहासन अभिराम ॥१॥
बैठ शक्रेन्द्र पूर्वदिशे रहिने, प्रभुने उत्संगे ग्रहीने ।
सुरपति कहे निज निज सुरने, लावो अड़जाती कलशा भरने ॥२॥
एक जातिना सहस्र रु आठ, सरवाले अड़ सहस्र चउसाठ ।
पुष्प चंगेरी दर्पण थाल, रत्नकरंडियादि रसाल ॥३॥
प्रत्येक सहस्र अठ अठ जाणो, उपकरण पूजाना वखाणो ।
मागध क्षीरोदधिना नीर, जइ पद्मद्रह गंगा तीर ॥४॥
पूर्णकलशा उदकना भरने, पुष्पमाला ऊपर धरने ।

मात ! तुझ नंदन बहु जीवो,
यतीन्द्रप्रभु जन हितकारी ॥ आ० १२ ॥

वर आशीष देई दिक्कुमरी,
वंदी जावे परिवारी ॥ आ० १३ ॥

दर्पण (काच) दिखाना, चामर वीजना, प्रभु-प्रतिमा के हाथ में मोली बाधना और दीपक करना। घंटा बजाते हुए ६-ठवीं ढाल बोलना।

ढाल ६, माच, सजिया सहु सिणगार वो दासी, ए राह-

इन्द्र चौसठना आसन चलिया, जाणे अवधि नाणे रे,।
श्रीजिनवरनो जन्म हुओ, हरि हर्ष हिया में आणे रे ॥टेर॥
सोहमपति सुर हरिणैगमेषिने, तेड़ी इम आदेशे रे
घंट सुघोषा नाद करावो, कार्य करो सुविशेषे रे ॥इ० ॥१॥
घंटानादे बत्तीस लख, वैमानिक सुर सावधाने रे।
शंखनादे इम भवनपति, व्यतर पडह सुणी काने रे ॥इ०॥२॥
सीघानादे ज्योतिषि सज्ज होय, देव सभी हरखावे रे।
ईशानेन्द्रादिक सुरपति सह, घंटानाद करावे रे ॥इ०॥३॥
सुर सघला घंटानाद सुणिने, इन्द्रनी सेवा में आवे रे।
प्रभु जन्मोत्सव जाणी देवो, आनंद हर्ष बधावे रे ॥इ०॥४॥
इन्द्र चौसठ चाले सुर परिवारे, निज निज वाहने आनंदे रे।

सहस्र चउसठ शत पंचसो बारा,
अभिषेक इमहिज भणिये रे ॥ सु० ३ ॥
गुणिये अढ़ीसो संगे एहने,
सघला होय अभिषेक रे ।
इकसठ लक्ख ने सहस्र अट्ठावीस,
ऊपर कोड़ी एक रे ॥ सु० ४॥
अनन्तबली वीतराग अनुपम,
महिमा को नहीं पार रे ।
सूरीश्वरराजेन्द्र प्रभुजी,
यतीन्द्र के आधार रे ॥ सु० ५ ॥

ढाल ६, अजब आनदि ज्ञान पद पूजा०, ए राह—

सोहमपति करे रूप वृषभनो, शृंगे कलशा ढोले रे ।
जगपति श्रीजिनवरने राखे, ईशानेन्द्र निज खोले रे ॥१॥
वस्त्रसुगंधित अंग लुहीने, करे विलेपन चन्दन रे ।
फूल अमूल आभरण सुशोभित, करे सुरवर प्रभु वन्दन रे ॥२॥
नृत्य करे वाजित्र वजावे, पूजे अष्ट प्रकारे रे ।
अष्ट-मंगल रूपेरी अक्षत, आलेखी गुण उच्चारे रे ॥३॥
आरति करे सुर चंमर ढाले, प्रभुगुण वर्णन एहवा रे ।
काव्य अपूर्व रचे अठलंतर, जय जय ध्वनि करे देवा रे ॥४॥

तूं जगतारक ! भवदुख-भंजक !, परम-ईश दीनबंधू रे ।
शिवपथनो साचो तुहिं साथी, जगदीश्वर गुणसिन्धू रे ॥५॥
मंदरगिरि करी स्नात्रमहोत्सव, आवे जननी आवासे रे ।
माता ! तुझ नन्दन सुखकंदन, वन्दनथी अघ नाशे रे ॥६॥
कुंडलयुगल ने देवदूष्य हरि, प्रभु-जननीने देई रे ।
रूडो सुवर्णदंडो रमवाने, मूके हरसित होइ रे ॥७॥
बत्तीस क्रोड सुवर्णनी वृष्टि, अमिय अंगुष्ठ प्रक्षेपे रे ।
अट्ठाइ महोत्सव इन्द्र चोसठ करे, आइ अट्ठम द्वीप रे ॥८॥
या विध जन्मोत्सव सुर करिने, निज निज स्थाने जावे रे ।
पूजे भवि यतीन्द्रपतिने परमानन्द पद पावे रे ॥९॥

कलश—

मनडो किमही न बाजे हो कुन्थु जिन, ए राह—

जिनपूजा सुखकारी हो, भवियण ! जिनपूजा सुखकारी ॥टेर॥
सुरपति चउसठ सेवा सारे, भक्ति त्रिविध प्रकारे ।
कल्याणक ओच्छव सुर करिने, आत्मिक काज सुधारे हो ॥भ०॥१॥
जिन चौवीसी हुई अनन्ती, होशे वार अनन्त ।
जिन प्रतिमा जिनसरिखी भाखी, विहरमान भगवन्त हो ॥भ०॥२॥
अष्ट सतर इकवीस रु चौसठ, पूजा विविध प्रकारी ।
सविधी जिनपूजा विरचावो, उत्तम फल देनारी हो ॥भ०॥३॥

सौधर्मपट्ट परम्पर सोहम, वड़तपागच्छ धारी ।
विजयराजेन्द्रसूरीश्वर जगमें, प्रगट्या पर उपकारीहो ॥भ०४॥
तास शिष्य गुरु आणा पालक, पाठकवर यतीन्द्र ।
मालवदेश संवाग्रहे विरची, नयन-निधि नव-चन्द्र हो॥भ०५॥
मधुपूनमतिथि चन्द्र सुवासर, खाचरोद नगर सुथान ।
पूर्ण करी प्रभुशान्ति पसाये, गावो चतुर सुजान हो ॥भ०६॥

कलश भणाकर जिन प्रतिमा को पखाल करा के, अंगलूहणा से साफ पूंछ के और फिर प्रतिमाजी को त्रिगड़ा में विराजमान करके जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत (चावल), नैवेद्य, फल; इन अष्ट द्रव्यों को क्रमशः लेते जाना और काव्य तथा मंत्र बोल कर चढ़ाते जाना। हरएक पूजा में 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' इतना कह कर काव्य-मंत्र बोलते जाना चाहिए।

१ जलपूजा, हरिगीत छन्दसि—

संसार के सब कर्म्म-मल अघ ताप हरने के लिये,
तारन तरन हैं जो सदा रखते विबुध जिसको हिये ।
पूजन करूं शुचि तीर्थजल से आज उन जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञानशक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणं श्रीजिनेश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

२ चन्दनपूजा—

समृद्धि अतिशय ज्ञान का जो है परमदाता खरा,
जो मुक्त सिद्ध स्वरूप उत्तम सब गुणों से है भरा।
कर्पूर चन्दन घिस करूं पूजन परम जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

३ पुष्पपूजा—

गुणराशि अविनाशी तथा श्रुतज्ञान रूप अनूप को,
फिर प्राप्त करने के लिये अपने अलौकिक रूप को।
पूजन करूं शुभ पुष्प से जगवंद्य श्रीजिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारण श्रीजिनेश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

४ धूपपूजा—

अज्ञान आदिक से हुए दुष्कर्म हरने के लिये,
अनुपम परम गुणराशि को निज प्रकट करने के लिये।

पूजन करूं शुचिधूप से अक्षय उन्हीं जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥४॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ।

५ दीपकपूजा

मिथ्यात्वतम को मेटने करने प्रकट सज्ज्ञान को,
करने नमन संसार के सब दोष के उत्थान को ।
पूजन करूं अब दीप से मैं, उन विमल जिनराज का ।
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥५॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय दीपकं यजामहे स्वाहा ।

६ अक्षतपूजा

गुण प्राप्त करने मेटने आवागमन संसार का,
कैवल्यज्ञानी शुष्ककर्त्ता विश्व पारावार का ।
पूजन करूं संपूर्ण अक्षत से सदा जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥६॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय पूर्णाक्षतं यजामहे स्वाहा ।

७ नैवेद्यपूजा

श्रीमोक्षपद को प्राप्त करने भूख हरने के लिये,
अद्‌भुत अलौकिक आदि जिसके नाम मुनियों ने दिये
नैवेद्य धर कर करू पूजन नित्यप्रति जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

८ सुपक्कफलपूजा

आनन्दकारी अरुज अविचल मोक्ष फल की प्राप्ति को,
ससार के सब भाति के सपूर्ण कष्ट समाप्ति को ।
पूजन फलों से अब करू निष्कर्म उन जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख-साज का ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय सुपक्कफलं यजामहे स्वाहा ।

अष्टद्रव्य (अर्घ्य) पूजा

सुखशान्ति कारक ईशवर करुणा निरन्तर कीजिये,
द्रव्याष्ट से दूं अर्घ्य यह सानन्द प्रभुवर ! लीजिये ।
हो प्राप्त पुण्य यतीन्द्र को इससे विनय है आज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख–साज का ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय स्वर्घ्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्ट द्रव्य एक थाली में लेकर, ऊपर का अर्घ्य काव्यमंत्र बोल कर केसर चन्दन से पूजा करना, फूल चढ़ाना, धूप उखेवना, दीप करना तथा अक्षत, नैवेद्य और फल सामने रखना । फिर आरती-मंगलदीप उतार कर सामान्य चैत्यवन्दन करके हाथ जोड़ कर "आज्ञा-हीनं क्रिया-हीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम् । क्षमस्व देव ! तत्सर्वं, प्रसीद परमेश्वर ! ।" बोल कर जयध्वनि करना ।

समाप्तमिति

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय पूर्णाक्षतं यजामहे स्वाहा ।

७ नैवेद्यपूजा

श्रीमोक्षपद को प्राप्त करने भूख हरने के लिये,
अद्भुत अलौकिक आदि जिसके नाम मुनियों ने दिये
नैवेद्य धर कर करूं पूजन नित्यप्रति जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख–साज का ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

८ सुपक्कफलपूजा

आनन्दकारी अरुज अविचल मोक्ष फल की प्राप्ति को,
संसार के सब भांति के सपूर्ण कष्ट समाप्ति को ।
पूजन फलों से अब करूं निष्कर्म उन जिनराज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख–साज का ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय सुपक्कफलं यजामहे स्वाहा ।

अष्टद्रव्य (अर्घ्य) पूजा

सुखशान्ति कारक ईश्वर करुणा निरन्तर कीजिये,
द्रव्याष्ट से दूं अर्घ्य यह सानन्द प्रभुवर ! लीजिये।
हो प्राप्त पुण्य यतीन्द्र को इससे विनय है आज का,
दाता विधाता पूर्ण जो त्रैलोक्य के सुख–साज का ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीँ परमेश्वराय परमानन्दसुखप्रदाय सदानन्तज्ञान-शक्तिधराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनेश्वराय स्वर्घ्यं यजामहे स्वाहा।

अष्ट द्रव्य एक थाली में लेकर, ऊपर का अर्घ्य काव्यमंत्र बोल कर केसर चन्दन से पूजा करना, फूल चढ़ाना, धूप उखेवना, दीप करना तथा अक्षत, नैवेद्य और फल सामने रखना। फिर आरती-मंगलदीप उतार कर सामान्य चैत्यवन्दन करके हाथ जोड़ कर "आज्ञा-हीनं क्रिया-हीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम्। क्षमस्व देव ! तत्सर्वं, प्रसीद परमेश्वर ! ।" बोल कर जयध्वनि करना।

पण्डित प्रवर-

श्रीमद्-देवचन्द्रजी रचित

सविधि श्रीस्नात्रपूजा

त्रिगडा रखकर, उसके नीचे के त्रिचल बाजोट पर कुंकुम का स्वस्तिक करना और उस त्रिगड़ा के आगे एक बाजोट पर कुंकुम के चार स्वस्तिक करके, उस पर चावल की ढिगली करके श्रीफल रखना। बीचके स्वस्तिक पर रूपानाणा मेलके, चारों स्वस्तिक ऊपर पंचामृत के भरे हुए कलश रखना। त्रिचले स्वस्तिक पर एक थाल रखके उसमें केशर का साथिया करके, नवकार गिनके, पच-तीर्थी प्रतिमा विराजमान करना और उसके जिमने भाग में अखंड दीपक धूप करना। बाद में स्नात्रियाओं को निज के दाहिने हाथ की हथेली में केशर का साथिया करके, प्रभु की पूजा करके, हाथ में थोड़ी कुसुमांजलि लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य' बोल कर—

चउतीशे अतिशय जुओ, वचनातिशय जुत्त।
सो परमेसर देखि भवि, सिंहासण संपत्त॥ १॥

सिंहासन बेठा जगभाण, देखी भविक जन गुणमणि खाण। जे दीठे तुज निर्मल नाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिणंदा, तोरा चरण कमल सेवे चोसठ इंदा,,चोवीश वैरागी, चौवीश सोभागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥ १ ॥

ऐसा बोल के कुसुमांजलि प्रभु पर उछालना और जिन-चरणांगुष्ठ की केशर से पूजा करना। थोड़ी कुसुमांजलि ले कर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सि०'—

जे नियगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगंत ।
सुह पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥ १ ॥

जो निज आतम गुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी।
जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रमणो भव्य अदीन ॥
कुसुमांजलि मेलो शान्तिजिणंदा तोरा० ॥ कु० ॥ २ ॥

ऐसा बोल के कुसुमांजलि उछालना और जिनजानु की पूजा करना। थोड़ी कुसुमांजलि लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०'—

निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न ।
निम्मल धम्मोवएस कर, सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥

लोकाऽलोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी

वाणी । परमानंदतणी निसाणी, तसु भगते मुज मतिय ठराणी ॥ कुसुमाजलि मेलो नेमिजिणिंदा तोरा० ॥कु०॥३॥

ऐसा बोल के कुसुमांजलि उछालना और जिनहस्त की केशर से पूजा करना। थोडी कुसुमाजलि लेकर 'नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हसिद्धा०'—

जे सिज्झा सिज्झति जे, सिज्झिस्सति अनत ।
जसु आलवण ठविय मण, सो सेवो अरिहत ॥ १ ॥

शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमाजलि मेलो पासजिणिंदा तोरा० ॥कु०॥४॥

ऐसा बोल के कुसुमाजलि उछालना और जिनस्कध की केशर से पूजा करना। थोडी कुसुमाजलि लेकर 'नमो अरिहताण, नमोऽर्हसिद्धा०'—

सम्मदिट्ठि देश जय, साहु साहुणी सार ।
आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ १ ॥

चउविह सघे जे मन धार्यु, मोक्षतणु कारण निरधार्यु ।
विविह कुसुम वर जाति गहेवि, तसु चरणे पणमत ठवेवि ॥
कुसुमाजलि मेलो वीरजिणिंदा तोरा च०॥ कु० ॥ ५ ॥

ऐसा कहकर कुसुमांजलि उछालना और प्रभु मस्तके केशर से पूजा करना, बाद हाथ में चामर ले कर वींजना और अक्षत लेकर—

वस्तु छन्द—

सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मन रंग, कल्याणकविहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त । सुन्दर सय इग सित्तरि तित्थंकर, इग समय विहरंति महियल, चवण समय इगवीस जिण, जम्म समय इगवीस । भत्तिय भावे पूजीया, करो संघ सुजगीस ॥१॥

ढाल २, एक दिन अचिरा हुलरावती, ए राह—

भव त्रीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या । तजि इन्द्रिय सुख आशंसना, करी स्थानक वीशनी सेवना ॥१॥

अतिराग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी भावता । सवि जीव करु शासनरसी, इसी भाव दया मन उल्लसी ॥२॥

लही परिणाम एहवु भलु, निपजावी जिनपद निर्मलु । आयुबंध विचे एक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥

त्यांथी चविय लहे नरभव उदार, भरते तेम एरावतेज

वाणी । परमानंदतणी निमाणी, तसु भगते मुज मतिय ठगाणी ॥ कुसुमाजलि मेलो नेमिजिणिंदा तोरा० ॥कु०॥३॥

ऐसा बोल के कुसुमाजलि, पखालना और जिनहस्त की केशर से पूजा करना। थोड़ी कुसुमाजलि लेकर 'नमो अरिहताणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०'—

जे सिज्भा सिज्भंति जे, सिज्भिस्सति अनत ।
जसु आलवरण ठविय मरण, सो सेवो अरिहत ॥ १ ॥

शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमाजलि मेलो पासजिणिंदा तोरा० ॥कु०॥४॥

ऐसा बोल के कुसुमाजलि पखालना और जिनस्कध की केशर से पूजा करना। थोड़ी कुसुमाजलि लेकर 'नमो अरिहताण, नमोऽर्हत्सिद्धा०'—

सम्मदिट्ठि देश जय, साहु साहुणी सार ।
आचारिज उवभाय मुणि, जो निम्मल आचार ॥ १ ॥

चउविह सघे जे मन धार्यु, मोक्षतणुं कारण निरधार्यु ।
विविह कुसुम वर जाति गहेवि, तसु चरणे पणमंत ठवेवि ॥
कुसुमाजलि मेलो वीरजिणिंदा तोरा च० ॥ कु० ॥ ५ ॥

रयणी समे, देखी सुपन हरखंती जागीय । सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो सोभागीय । त्रिभुवनतिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान । इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विधान ।

ढाल ४, चंद्रावलानी राह—

सोहमपति आसन कंपीयो, देइ अवधि मन आनंदीयो । निज आतम निर्मल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥

भव अटवी पारग सत्थवाह, केवलनाणाइय गुण अगाह । शिव साधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आषाढ़ी मेह ॥ २ ॥

हरखे विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय । सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनदकद ॥ ३ ॥

सग अड पय सामो आवी तत्थ, करी अंजलिय प्रणमिय मत्थ । मुखे भासे ए क्षण आज सार, तियलोयपहु दीठो उदार ॥ ४ ॥

रे रे सुणो सुरलोयदेव !, विषयानल तापित तुम सवेव । तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुड—वान ॥ ५ ॥

सार । महाविदेहे विजये वर प्रधान, मध्यखडे अवतरे जिना निधान ॥४॥

ढाल ३ (प्रभु के ऊपर अक्षत उछालना)—

पुण्ये सुपनह देखे, मन मांहे हर्ष विशेषे । गजवर उज्ज्वल सुन्दर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥१॥

निर्भय केसरिसिंह, लक्ष्मी अतिही अनीह । अनुपम फूलनी माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥२॥

तेजे तरणी अति दीपे, इन्द्रध्वजा जग पूरण झीपे । पूरणकलश पडूर, पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥

अग्यार मे रयणायर, देखे माता गुण सायर । बारमे भुवन विमान, तेरमे अनुपम रत्न निधान ॥ ४ ॥

अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम । हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥

जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर । इन्द्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

वस्तु छन्द—

पुण्य उदय पुण्य उदय उपना जिननाह । माता तव

रयणी समे, देखी सुपन हरखंती जागीय। सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो सोभागीय। त्रिभुवनतिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान। इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विधान।

ढाल ४, चंद्रावलानी राह—

सोहमपति आसन कंपीयो, देइ अवधि मन आनंदीयो। निज आतम निर्मल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥

भव अटवी पारग सत्थवाह, केवलनाणाइय गुण अगाह। शिव साधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आषाढ़ी मेह ॥ २ ॥

हरखे विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय। सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनदकद ॥ ३ ॥

सग अड पय सामो आवी तत्थ, करी अंजलिय प्रणमिय मत्थ। मुखे भासे ए क्षण आज सार, तियलोयपहु दीठो उदार ॥ ४ ॥

रे रे सुणो सुरलोयदेव !, विषयानल तापित तुम सवेव। तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुड—वान ॥ ५ ॥

ते देव सकल तारण समरथ, प्रगट्यो तम प्रणमी हुवो सनाथ। एम जपी शक्रस्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥

गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हुवो मङ्गल निधान। नरक्षेत्रे आरिय वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥७॥

पिता माता घरे उत्सव अशेष, जिनशासन मङ्गल अति विशेष। सुरपति देवादिक हर्ष सङ्ग, संयम अर्थी जनने उमङ्ग ॥ ८ ॥

शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जन्म्या इन्द्रादिक हर्ष साथ। सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थइ अतीव ॥६॥

इतना बोल कर जगचिंतामणि का चैत्यवंदन, जयवीयराय आभवमखंडा तक करना। फिर हाथ धो पूंछ के और एक नवकार गिनके पंचामृतभृत कलश अंगलूणा से ढांक के हाथ में लेना। बाद—

ढाल ६, हरिगीतछन्दनी ए राह—

श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन, गाइए सुखकार। नरखित्त मंडण दुहविहंडण, भविक मन आधार ॥ तिहाँ राय राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार। दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥

मिल अमर अमरी सङ्ग कुमरी, गावती गुण छन्द । जिन जननी पासे आवी पहोती, गहगहती आणंद । हे माय ! तें जिनराज जायो, शुचि वधायो रम्म ॥ अम जम्म निम्मल करण कारण, करीश सुइकम्म ॥ २ ॥

तिहां भूमि शोधन दीप दर्पण, वाय वींजण धार । तिहां करिय कदली गेह जिनवर, जननी मज्जनकार ॥ वर राखडी जिन पाणी बांधी, दीये एम आशीष । जुग कोडा कोडी चिरंजीवो, धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥

(दर्पण दिखाना, चामर वींजना, प्रभु के हाथ से मौली बांधना और दीपक करना)

ढाल ६, इकवीसानी राह—

जिन रयणीजी, दश दिशि उज्ज्वलता धरे । शुभ लगनेजी, ज्योतिष चक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्याजी, जेणे अवसर माता घरे । तेणे अवसरजी, इन्द्रासन पण थरहरे ॥ १ ॥

"थरहरे आसन इन्द्र चिंते, कोण अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उत्सव काल जाणी, अतही आनंद ऊपन्यो ॥ निज सिद्धि संपति हेतु जिनवर, जाणी भक्ते उम्मह्यो । विकसित वदन प्रमोद वधते; देव नायक गहगह्यो ॥ २ ॥"

ते देव सफल तारण समत्थ, प्रगट्यो तम प्रणमी हुवो सनाथ। एम जपी शमस्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुखेवि ॥ ६ ॥

गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हुवो मङ्गल निधान। नरक्षेत्रे आरिय वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥७॥

पिता माता घरे उत्सव अशेष, जिनशासन मङ्गल अति विशेष। सुरपति देवादिक हर्ष मङ्ग, संयम अर्थी जनने उमङ्ग ॥ ८ ॥

शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जन्म्या इन्द्रादिक हर्ष साथ। सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थइ अतीव ॥९॥

इतना बोल कर जगचिंतामणि का चैत्यवंदन, जयवीयराय आभवमखंडा तक करना। फिर हाथ धो धूंध के और एक नवकार गिनके पंचामृतमृत कलश अंगलूहणा से ढांक के हाथ में लेना। बाद—

ढाल ६, हरिगीतछन्दनी ए राह—

श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन, गाइए सुखकार। नरखित्त मंडण दुहविहंडण, भविक मन आधार ॥ तिहाँ राय राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार। दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥

"सुर कोडाकोडी नाचती वली, नाथ शुचि गुण गावती । अप्सरा कोडी हाथ जोडी, हाव भाव देखावती ॥ जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु, एम दे आशीष ए । अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥ ८ ॥"

सुरगिरिवरजी, पांडुक वनमें चिहुं दिशे । गिरि शिला परजी, सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या ॥ चउहट्ठेजी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ ९ ॥

"आविया सुरपति सर्व भक्ते, कलश श्रेणी बनावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधी, सर्व वस्तु अणावए ॥ अच्चु-यपति तिहां हुक्म कीनो, देव कोडा कोडीने । जिन मज्ज-नारथ नीर लावो, सर्वे सुर कर जोडीने ॥१०॥"

ढाल ७, शांति ने कारणे इन्द्र कलशा भरे, ए राह——

आत्मा साधन रसी, देव कोड़ी हसी । उलसीने धसी, क्षीरसागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह, गंग पमुहा नइ । तीर्थ जल अमल, लेवा भणी ते गइ ॥ १ ॥

जाति अड कलश करी, सहस अठोतरा । छत्र चामर, सिंहासण शुभतरा ॥ उपगरण पुष्फ, चंगेरी पमुहा सवे । आगमे भाखीया, तेम आणी ठवे ॥ २ ॥

तीर्थजल भरिय कर, कलश करी देवता । गावता भावता,

(घंटानाद वजाते और पचामृतभृत कलदाधारा प्रभु के ऊपर ढालते हुए)

तव सुरपतिजी, घटानाद करावए । सुरलोकेजी घोषण एह देवरावए ॥ नरक्षेत्रेजी, जिनवर जन्म हुओ अछे । तसु भगतेजी, सुरपति मंदरगिरि गछे ॥ ३ ॥

"गच्छेति मदर शिखर ऊपर, भुवन जीवन जिनतणो ।
जिन जन्म उत्सव करण कारण, आवजो सवि सुरगणो ॥
तम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवाधिदेव निहालता ।
आपणा पातिक सर्व जाशे, नाथ चरण पखालता ॥ ४ ॥"

एम साभलीजी, सुरवर कोडी बहु मली । जिन वदनजी, मदरगिरि सामा चली ॥ सोहमपतिजी, जिन जननी घर आवीया । जिन माताजी, वदी स्वामि वधावीया ॥ ५ ॥

"वधानिया जिन हर्ष बहुले, धन्य हु कृतपुण्यए ।
त्रैलोक्य नायक देव दीठो, मुज समो कोण अन्य ए ॥ हे जगत जननी ! पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन वर करी । उत्सग तुमचे वलिय थापिस, यातमा पुण्ये भरी ॥ ६ ॥"

सुर नायकजी, जिन निज करकमले ठव्या । पच रूपेजी, अतिशे महिमाए स्तव्या ॥ नाटक विधिजी, तव बत्रीश आगल वहे । सुर कोडीजी, जिन दर्शनने ऊमहे ॥ ७ ॥

"सुर कोडाकोडी नाचती वली, नाथ शुचि गुण गावती। अप्सरा कोडी हाथ जोडी, हाव भाव देखावती ॥ जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु, एम दे आशीष ए। अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥ ८ ॥"

सुरगिरिवरजी, पांडुक वनमें चिहुं दिशे। गिरि शिला परजी, सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या ॥ चउहट्ठेजी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ ९ ॥

"आविया सुरपति सर्व भक्ते, कलश श्रेणी बनावए। सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधी, सर्व वस्तु अणावए ॥ अच्चु-यपति तिहां हुक्म कीनो, देव कोडा कोडीने। जिन मज्ज-नारथ नीर लावो, सर्वे सुर कर जोड़ीने ॥१०॥"

ढाल ७, शांति ने कारणे इन्द्र कलशा भरे, ए राह--

आत्मा साधन रसी, देव कोड़ी हसी। उलसीने धसी, क्षीरसागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह, गंग पमुहा नइ। तीर्थ जल अमल, लेवा भणी ते गइ ॥ १ ॥

जाति अड कलश करी; सहस अठोतरा। छत्र चामर, सिंहासण शुभतरा ॥ उपगरण पुष्फ, चंगेरी पमुहा सवे। आगमे भाखीया, तेम आणी ठवे ॥ २ ॥

तीर्थजल भरिय कर, कलश करी देवता। गावता भावता,

धर्म उन्नति रता । तिरिय नर अमरने, हर्ष उपजावता । ध
श्रम शक्ति, शुचि भक्ति एम भावता ॥ ३ ॥

समकित बीज निज, आत्म आरोपता । कलश भार
मिषे भक्तिजल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे, सर्व आव्या वही
शक्र उत्संग जिन, देखी मन गहगही ॥ ४ ॥

वस्तुछंद—

हं हो देवा ! हं हो देवा !! अणाइकालो, अदिट्ठपुव्वं
तिलोयतारणो, तिलोयबंधु, मिच्छत्तमोहविद्धंसणो, अण
तिण्हा विणासणो, देवाहिदेवो दिट्ठोहियकामेहिं ॥ ५

एम पभणत वणभवणजोइसरा, देव वेमाणिया भ
धम्मायरा । केवि कप्पठिया, केवि मित्ताणुगा, केवि वरर
णिवयणेण अइउच्छंगा ॥ ६ ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इंद आदेस, "कर जोड़ी स
देवगण, लेय कलस आदेस पामिय । अद्भुतरूप स्वर
लुए, कवण एह उत्संगे सामिय । इन्द्र कहे जगतारणो, पा
श्रम परमेस । नायग दायग धम्मनिहि, करिय तसु अ
सेस ॥ ७ ॥

ढाल ८, तीर्थकमलदल उदक भरीने, ए राह—

पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामे

आतम निर्मल भाव करंता, वधते शुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥

गाहा—

तव ईसाणसुरिंदो, सक्कं पभणेइ करइ सुपसाओ ।
तुम अंके मह्नाहो, पणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ १ ॥
ता सक्किंदो पभणेइ, साहम्मिवच्छलम्मि बहुलाहो ।
आणा एवं तेणं, गिरिहयव्वो उक्कयत्थाओ ॥ २ ॥

ढाल ६, पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, ए राह—

सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभु अंग । करिय विलेवण पुप्फमाल ठवि, वर आभरण अभंग ।। तव सुरवर बहु जय जयरव करी, नाचे धरी आणंद । मोक्षमार्ग सारथपति पाम्यो, भांजशुं हवे भव फंद ॥ १ ॥

कोडि बत्रीश सोवन उवारी, वाजंते वर नादे । सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुनी, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी वापी एव पयंते, अम निस्तरिया आज । पुत्र तमारो धणी हमारो, तारण तरण जहाज ॥ २ ॥

मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ।

धर्मे उन्नति रता । तिरिय नर अमरने, हर्ष उपजावता । धन्य अम शक्ति, शुचि भक्ति एम भावता ॥ ३ ॥

समकित बीज निज, आतम आरोपता । कलश पाणी मिषे भक्तिजल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे, सर्व आव्या वही । शक्र उत्संग जिन, देखी मन गहगही ॥ ४ ॥

वस्तुछंद—

हं हो देवा ! हं हो देवा !! अणाइकालो, अदिट्ठपुव्वो, तिलोयतारणो, तिलोयबंधु, मिच्छत्तमोहविद्धंसणो, अणाइ तिएहा विणासणो, देवाहिदेवो दिट्ठोहियकामेहिं ॥ ५ ॥

एम पभणंत वणभवणजोइसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पठिया, केवि मित्ताणुगा, केवि वरस्मणिवयणेण अइउच्छंगा ॥ ६ ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इंद आदेस, कर जोडी सवि देवगण, लेय कलस आदेस पामिय । अद्भुतरूप स्वरूप जुग, कवण एह उत्संगे सामिय । इन्द्र कहे जगतारणा, पारग अम परमेस । नायग दायग धम्मनिहि, करिय तसु अभिसेस ॥ ७ ॥

ढाल ८, तीर्थकमलदल उदक भरीने, ए राह—

· पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामे ।

आतम निर्मल भाव करंता, वधते शुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥

गाहा—

तव ईसाणसुरिंदो, सक्कं पभणेइ करइ सुपसाओ ।
तुम अंके मह्नाहो, पणमित्त अम्ह अप्पेह ॥ १ ॥
ता सक्किंदो पभणेइ, साहम्मिवच्छलम्मि बहुलाहो ।
आणा एवं तेणं, गिण्हियच्चो उच्छयत्थाओ ॥ २ ॥

ढाल ६, पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, ए राह—

सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभु अंग । करिय विलेवण पुष्फमाल ठवि, वर आभरण अभंग ॥ तव सुरवर बहु जय जयरव करी, नाचे धरी आणंद । मोक्षमार्ग सारथपति पाम्यो, भांजशुं हवे भव फंद ॥ १ ॥

कोडि बत्रीश सोवन उवारी, वाजंते वर नादे । सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुनी, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी वापी एव पयंते, अम निस्तरिया आज । पुत्र तमारो धणी हमारो, तारण तरण जहाज ॥ २ ॥

मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥

सुरपति भक्ति सहित नदीसर, करे जिनभक्ति उदार ॥ नि
निय कप्प गया सवि निर्जर, कहेतां प्रभुगुण सार । दीक्ष
केवलज्ञान कल्याणक, इच्छा चित्त मझार ॥ ३ ॥

खरतरगच्छ जिन आणा रगी, राजसागर उवझाय । ज्ञा
धर्म दीपचद सुपाठक, सुकुरुनणे सुपसाय । देवचन्द्र जिन
भक्ते गायो, जन्म महोत्सव छद । बोधिबीज अकुरो उलस्यो
सघ सकल आनद ॥ ४ ॥

कलश, वेलावल—

एम पूजा भगते करो, आतम हित काज । तजिया विभा
निज भावमा, रमता शिवराज ॥ ए० ॥ १ ॥

काल अनंते जे हुआ, होशे जेह जिणिंद । सपइ सीमध
प्रभु, केवलनाण दिणिंद ॥ ए० ॥ २ ॥

जन्म महोत्सव इणिपरे, श्रावक रुचिवत । विरचे जि
प्रतिमातणी, अनुमोदन खत ॥ ए० ॥ ३ ॥

देवचन्द्र जिनपूजना, करता भव पार । जिनपडिमा जि
सारखी, कही सूत्र मझार ॥ ए० ॥ ४ ॥

बाद में प्रतिमाजी को पखाल कराके, अंगलूहणा से सा
करके और प्रतिमाजी को सिंहासन में विराजमान करके अष्टप्रक
पूजा नीचे मुताबिक भणाना ।

१ जलपूजा, दोहा—

गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार ।
कुसुमे वासित शुचिजले, करी निज स्नात्र उदार ॥ १ ॥

मणि कनकादिक अडविध करी, भरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमे, तसु नहीं दुरित प्रचार ॥ मेरु-शिखर जिम सुरवर, जिनवर न्हवण अमान । करता वरेता निजगुण, समकित वृद्धि निधान ॥ १ ॥

चाल—

हर्ष भरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे । जिहाँ लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अमतणा नाथ जीवो तुं जीवो ॥ २ ॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणम् ।
जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

२ चन्दनपूजा, दोहा—

बावना चंदन कुंकुमा, मृगमद ने घनसार ।
जिनतनु लेपे तसु टले, मोह सन्ताप विकार ॥ १ ॥

सकल संताप निवारण, ठारण सहु भवि चित्त। परम अनीहा अरिहा, तसु चरचो भवि नित्त ॥ निजरूपे उपयोगी, धारी जिनगुण गेह। भाव चंदन सुह भावथी, टाले दुरित अछेह ॥ १ ॥

चाल—

जिनतनु चरचता सकल नाकी, कहे कुग्रह उष्णता आज थाकी। सकल अनिमेषता आज म्हाकी, भव्यता अमतणी आज पाकी ॥ २ ॥

सकलमोहतमिस्रविनाशनं, परमशीतलभावयुतं जिनम्।
विनयकुंकुमदर्शनचंदनैः, सहजतत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

३ पुष्पपूजा, दोहा—

शतपत्री वर मोगरा, चंपक जाइ गुलाब।
केतकि दमणो बोलसिरी, पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥

अमल अखंडित विकसित, शुभ सुमनी घणी जाति। लाखीणो टोडर ठवो, अंगी रची बहु भांति ॥ गुण कुसुमे

निज आतम, मंडित करवा भव्य । गुणरागी जड़त्यागी, पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ १ ॥

चाल—

जगधणी पूजतां विविध फूले, सुरवरा ते गणे क्षण अमूले । क्षांति धरि मानवा जिनप पूजे, तसु तणां पाप संताप धूजे ॥ २ ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै—र्विशदचेतनभावसमुद्भवैः ।
सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

४ धूपपूजा, दोहा—

कृष्णागर मृगमद तगर, अंबर तुरुक लोबान ।
मेलि सुगंध घनसार घण, करो जिनने धूपधान ॥ १ ॥

धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातिक वृंद । अरति अनादिनी जावे, पावे मन आनंद ॥ जे जिन पूजे धूपे, भवकूपे फिरि तेह । नावे पावे ध्रुव घर, आवे सुक्ख अछेह ॥ १ ॥

ढाल—

जिनघर वासता धूपपूरे, मिच्छत्त दुर्गंधता जाइ दूरे। धूप जिम सहज ऊर्ध्वग स्वभावे, कारका उध्वगति भाव पावे ॥ २ ॥

सकलकर्ममहेन्धनदाहन, विमलसंवरभावसुधूपनम् ।
अशुभपुद्गलमङ्गविवर्जितं, जिनपतेः परतोऽस्तु सुहर्षतः ॥१॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये- जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

५ दीपकपूजा, दोहा—

मणिमय रजत ताम्र प्रमुख, पात्र करी घृत पूर ।
वत्ती सूत्र कौसुंमनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

मंगलदीप चवावो गावो, जिनगुण गीत । दीपतणी जिम आलिका, मालिका मगल नीत् ॥ दीपतणी शुभ ज्योति द्योती, जिन मुख चंद । निरखी हरखो भविजन, जिम लहो पूर्णानंद ॥ १ ॥

चाल—

जिनगृहे दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासे ।

निज घटे ज्ञान ज्योति विकासे, तेहथी जगतना भाव भासे ॥ २ ॥

भविकनिर्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनम् ।
सुगुणरागविशुद्धिसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

६ अक्षतपूजा, दोहा—

अक्षत अक्षत पूरशु, जे जिन आगे सार ।
स्वस्तिक रचतां विस्तरे, निजगुण भर विस्तार ॥ १ ॥

उज्ज्वल अमल अखंडित, मंडित अक्षत चंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक, आस्तिक भावे रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख, उन्मुख भावे जेह । ज्ञानादिक गुण ठावे, भावे स्वस्तिक एह ॥ १ ॥

चाल

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागे । जन्म जरा मरणादि अशुभ भांगे, नियत शिवशर्म रहे तसु आगे ॥ २ ॥

ढाल—

जिनघर वासता धूपपूरे, मिच्छत्त दुगधता जाइ दूरे। धूप जिम सहज ऊर्ध्वग स्वभावे, कारका उच्चगति भाव पावे ॥ २ ॥

सकलकर्ममहेन्धनदाहन, विमलसवरभावसुधूपनम् ।
अशुभपुद्गलसङ्गविवर्जितं, जिनपते परतोऽस्तु सुहर्षतं ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ।

५ दीपकपूजा, दोहा—

मणिमय रजत ताम्र प्रमुख, पात्र करी घृत पूर ।
वत्ती सूत्र कौसुमनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

मंगलदीप वधावो गावो, जिनगुण गीत । दीपतणी जिम आलिका, मालिका मगल नीत् ॥ दीपतणी शुभ ज्योति द्योती, जिन मुख चद । निरखी हरखो भविजन, जिम लहो पूर्णानद ॥ १ ॥

चाल—

जिनगृहे दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नाशे ।

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

८ फलपूजा, दोहा—

पक्क विजोरु जिनकरे, ठवतां शिवपद देइ ।
सरस मधुर शुभ फल घणां, दइ जिन भेट करेइ ॥ १ ॥

श्रीफल कदली सुरंगी, नारंगी आंवा सार । जंवीर अंजीर दाडिम, करणा पट्वीज सफार ॥ मधुर सुस्वादुक उत्तम, लोके आनंदित जेह । वरण गंधादिक रमणिक, वहु फल ढोवे तेह ॥ १ ॥

चाल—

फलभरे पूजतां जगतस्वामी, मनुजगति वेलि होय सफल पामी । सकल मुनि ध्येयगत भेद रंगे, ध्यावता फल समा-प्ति प्रसंगे ॥ २ ॥

कटुककर्णविपाकविनाशनं, सरसपक्कफलं व्रजढोकनम् ।
विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥

सकल [मंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावमयं जिनम् ।
श्रयतभव्यजना इति दर्शयत्, दधतु नाथ पुरोऽक्षतस्वस्तिकम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

नैवेद्यपूजा, दोहा—

सरस शुचि पकवान भर, शाल दाल घृत पूर ।
धरे नैवेद्य जिन आगले, क्षुधा दोष तस दूर ॥ १ ॥

लपनश्री वर घेवर, मृदुतर मोती चूर ।–सिंहकेसरिया सेवैया, दलिया मोदक पूर ॥ शाकर द्राख सिंघोडा, भक्त व्यंजन घृत सद्य । करो नैवेद्य जिन आगले, जिम मिले सुख अनवद्य ॥ १ ॥

चाल—

ढोवतां भोज्य परभाव त्यागे, भविजना निजगुण भोज्य मांगे । अम्हमणी अम्हतणो सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगत पूज्य ॥ २ ॥

सकलपुद्गलसंगविवर्जनं, सहजचेतनभावविलासकम् ।
सरसभोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

८ फलपूजा, दोहा—

पक्क विजोरु जिनकरे, ठवतां शिवपद देइ ।
सरस मधुर शुभ फल घणां, दइ जिन भेट करेइ ॥ १ ॥

श्रीफल कदली सुरंगी, नारंगी आंबा सार । जंबीर अंजीर दाडिम, करणा षट्वीज सफार ॥ मधुर सुस्वादुक उत्तम, लोके आनंदित जेह । वरण गंधादिक रमणिक, बहु फल ढोवे तेह ॥ १ ॥

चाल—

फलभरे पूजतां जगतस्वामी, मनुजगति वेलि होय सफल धामी । सकल मुनि ध्येयगत भेद रंगे, ध्यावता फल समा-प्ति प्रसंगे ॥ २ ॥

कटुककर्णविपाकविनाशनं, सरसपक्कफलं व्रजढोकनम् ।
विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥

अर्घपूजा, दोहा—

इम अडविध जिनपूजना, विरचे जे थिरचित्त ।
मानव भव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥

अगणित गुणमणि आगर, नागर वदित-पाय । श्रुतधारी उपगारी, ज्ञानसागर उवज्झाय । तासु चरणकज सेवक, मधुकर परे लयलीन ॥ श्रीजिनपूजा गाइ, जिनवाणी रस-पीन ॥ १ ॥

चाल—

संवत् गुण युग अचल इन्दु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेन्दु । तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहे ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥ २ ॥

इति जिनवरवृन्द भक्तितः पूजयन्ति, परमसुखनिधानं देवचन्द्र स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्त तत्त्वमुद्भासयन्ति, परम-सहजरूप मोक्षसौख्य श्रयन्ति ॥ १ ॥

॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ।

स्नात्राष्टप्रकारी पूजा भणाये वाद वस्त्राभरण लेकर—

शक्रोयथा जिनपत्तेः सुरशैलचूला,
सिंहासनोपरिगतः स्नपनावसाने ।
दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः,
कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजाम् ॥ १ ॥

तद्वच्छ्रावकवर्ग एव विधिनालङ्कारवस्त्रादिकां,
पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः ।
नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः,
स्वस्याऽन्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकाङ्क्षया ॥२॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्राभरणं यजामहे स्वाहा ।

ऐसा कहके प्रभुको वस्त्राभरण चढ़ाना, फिर एक तासक में थोड़ा निमक (लूण) लेकर :—

लूण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जल धारा मन रंगे ॥ १ ॥ जिम जिम तड तड लूणज फूटे, तिम तिम अशुभ कर्म बंध त्रूटे ॥ लू० ॥ २ ॥ नयन सलूणां श्रीजि-नजीनां, अनुपम रूप दयारस भीनां ॥ लू० ॥ ३ ॥ रूप सलूणु जिनजीनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ॥ लू० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देई जल धारा, जलण खेपवीये

अर्घपूजा, दोहा—

इम अडविध जिनपूजना, विरचे जे थिरचित्त ।
मानव भव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥

अगणित गुणमणि आगर, नागर वंदित पाय । श्रुतधारी उपगारी, ज्ञानसागर उवझाय । तासु चरणकज सेवक, मधुकर परे लयलीन ॥ श्रीजिनपूजा गाइ, जिनवाणी रसपीन ॥ १ ॥

ढाल—

संवत् गुण युग अचल इन्दु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेन्दु । तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहे ज्ञान उद्योत घन शिव निसाणी ॥ २ ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, परमसुखनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्त्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ।

स्नात्राष्टप्रकारी पूजा भणाये बाद वस्त्राभरण लेकर—

शक्रोयथा जिनपत्तेः सुरशैलचूला,
सिंहासनोपरिगतः स्नपनावसाने ।
दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः,
कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजाम् ॥ १ ॥

तद्वच्छ्रावकवर्ग एव विधिनालङ्कारवस्त्रादिकां,
पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः ।
नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः,
स्वस्याऽन्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकाङ्क्षया ॥२॥

ॐ ह्रीँ परमपरमात्मनेऽनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्राभरणं यजामहे स्वाहा ।

ऐसा कहके प्रभुको वस्त्राभरण चढ़ाना, फिर एक तासक में थोड़ा निमक (लूण) लेकर :—

लूण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जल धारा मन रंगे ॥ १ ॥ जिम जिम तड तड लूणज फूटे, तिम तिम अशुभ कर्म बंध त्रूटे ॥ लू० ॥ २ ॥ नयन सलूणां श्रीजि-नजीनां, अनुपम रूप दयारस भीनां ॥ लू० ॥ ३ ॥ रूप सलूणुं जिनजीनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ॥ लू० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देई जल धारा, जलण खेपवीये

लूण उदारा ॥ लू० ॥ ५ ॥ जे जिन ऊपर दुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्यु पाणी ॥ लू० ॥ ६ ॥ अगर कृष्णा-गरु कुदरु सगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे ॥ लू० ॥ ७ ॥

ऐसा बोल कर आरती के समान लूण उतारणा। बाद में मंगलमय आरती और मंगलदीपक उतार के, चैत्यवंदन करके और फल नैवेद्य चढ़ाके "आज्ञाहीन क्रियाहीन, मन्त्रहीन च यत्कृतम्। तत्सर्वं क्षमया देव, क्षमस्व परमेश्वर !" इस श्लोक को पढ़ कर जयध्वनि करना।

पण्डित श्री वीरविजयजी कृत

(३) श्री स्नात्र पूजा

काव्य

सरसशान्तिसुधारससागरम् ।
शुचितरं गुणरत्नमहागरम् ॥
भविकपंकजवोधदिवाकरम् ।
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम् ॥१॥

दोहा

कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक ।
मज्जनपीठे थापीने, करीए जल अभिषेक ॥२॥

यहाँ प्रतिमाजी के दाहिने अंगुठे पर पखाल और अंगलूंछण करके पूजा करना ।

गाथा (आर्यागीति)

जिणजम्मसमए, मेरुसिहरे रयणकणयकलसेहिं ।
देवासुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि ॥३॥

कुसुमांजलि लेकर खड़े रहना

कुसुमांजलि-ढाल—

निर्मल जल कलशे न्हवरावे, वस्त्र अमुलक अंग धरावे,
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा; सिद्धस्वरूपी अंग परवाली,
आतम निर्मल हुई सुकुमाली कुसु० ॥४॥

यहाँ प्रभु के दाहिने अंगुठे पर कुसुमांजलि चढ़ाना

गाथा (आर्या गीति)

मचकुंदचंपमालइकमलाई पुप्फपंचवएणाइं ।
जगनाहण्हवणसमए, देवा कुसुमांजलि दिंति ॥५॥
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

कुसुमांजलि-ढाल—

रयणसिंहासन जिन थापीजे, कुसुमांजलि प्रभुचरणे दीजे,
कुसुमांजलि मेलो, शान्ति जिणंदा ॥६॥

दोहा

जिण तिहु कालय सिद्धनी, पडिमा गुणभंडार ।
तसु चरणे कुसुमाजलि, भविक दुरित हरनार ॥७॥
नमोऽर्हत् ०

कुसुमांजलि-ढाल

कृष्णागुरु वर धूप धरीजे, सुगंधवर कुसुमांजलि दीजे,
कुसुमांजलि मेलो जिणंदा ॥ ८

गाथा (आर्या)

जसु परिमलबलदहदिसि, महुयरझंकारसदसंगीया,
जिणचरणोवरि मुक्का, सुरनर कुसुमांजलि सिद्धा ॥ ९ ॥
नमोऽर्हत्०

कुसुमांजलि ढाल—

पास जिनेसर जगजयकारी, जल थल फूल उदक करधारी,
कुसुमांजलि मेलो, पार्श्व जिनंदा ॥ १० ॥

दोहा

मूके कुसुमांजलि सुरा, वीर चरण सुकुमाल ।
ते कुसुमांजलि भविकना, पाप हरे त्रण काल ॥ ११ ॥
नमोऽर्हत् ०

कुसुमांजलि ढाल—

विविध कुसुमावर जाती गहेवी, जिणचरणे पणमंत ठवेवी,
कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ १२ ॥

वस्तु छंद

न्हवणकाले, न्हवणकाले, देवदाणव समुच्चिय ।
कुसुमांजलितहिंसंठविय, पसरंतदिसिपरिमलसुगंधिय ॥

जिणपयकमले निवडई, विग्घहर जस नाममंतो ।
अनंत चउवीस जिन, वासव मलीय असेस ॥
सा कुसुमांजलि सुहकरो चउविह संघ विसेस ।
कुसुमांजलि मेलो, चउवीस जिणंदा ॥ १३ ॥
नमोऽर्हत् ०

कुसुमांजलि ढाल—

अनंत चउवीसी जिनजी जुहारू, वर्तमान चउवीसी संभारू । कुसुमाजलि, मेलो चौवीस जिणंदा ॥ १४ ॥

दोहा

महाविदेहे संप्रति, विहरमान जिन वीस ।
भक्ति भरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश ॥ १५ ॥
नमोऽर्हत् ०

कुसुमांजलि ढाल—

अपच्छरमंडलि गीत उच्चारा, सिरी सुभवीरविजय जय कारा ।
कुसुमाजलि मेलो सर्व जिणंदा ॥ १६ ॥

॥ इति कुसुमांजलय ॥

बाद में स्नात्रकर्त्ता तीन खमासमण देकर जगचिंतामणि का चैत्यवन्दन कर के नमुत्थुणं कही सम्पूर्ण जयवीयराये पर्यन्त कहे ।

पश्चात् हाथ धोकर मुखकोश बांध कर कलश लेकर खड़ा रह कर कहे :—

कलश

दोहा

सयल जिनेसर पाय नमी, कल्याणकविधि तास ।
वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूरो आश ॥ १ ॥

ढाल

समकित गुणठाणे परिणम्या, वली व्रतधर संयम सुख रम्या ।
वीशस्थानक विधिए तपकरी, एसी भावदया दील मां धरी ॥१॥
जो होवे मुज शक्ति इसी, सविजीव करु शासनरसी ।
शुचि रस ढलते तिहां बांधतां, तीर्थंकर नाम निकाचता ॥२॥
सराग थी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भवकरी ।
च्यवी पन्नर क्षेत्र अवतरे, मध्य खंडे पण राजवी कुले ॥३॥
पटराणी कुंखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हंसलो ।
सुख सय्याए रजनी शेषे, उतरतां चौद सुपन देखे ॥४॥

ढाल—स्वप्न की

पहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइट्ठो, त्रिजे केशरीसिंह, चौथे लक्ष्मी अबीर ॥१॥ पांचमे फूलनी माला, छट्ठे चन्द्र विशाला, रवि रातो ध्वज महोटो, पूरण कलश नहीं छोटो ॥२॥ दशमे पद्म सरोवर, इग्यारमे, रत्नाकर, भुवन विमान

-खगजी, अग्निशिखा धूमवर्जी ॥ ३ ॥ स्वप्न लही जई
-रायने भाषे, राजा अर्थ प्रकाशे, पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे,
-सकल मनोरथ फलशे ॥ ४ ॥

वस्तु छन्द

अवधिनाणे अवधिनाणे, उपना जिनराज,
जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजंतु सुखकार ।
मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्म उदय परभात सुन्दर,
माता पण आनंदिया, जागती धर्म विधान,
जाणति जग-तिलक समो, होशे पुत्र प्रधान ॥ १ ॥

दोहा

शुभ लग्ने जिन जनमीया, नारकीमा सुख ज्योत ।
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत ॥१॥

ढाल (कडखा राग)

सामलो कलश जिन-महोत्सवनो इहां, छप्पन कुमरीदिशी, विदिशि, आवे तिहा माय सुत नमीय, आनंद अधिकोधरे, अष्ट सवर्त वायुथी कचरो हरे ॥१॥ वृष्टि गंधोदके, अष्ट कुमरी करे, अष्ट कलशा भरी, अष्ट दर्पण धरे, अष्ट चामर धरे, अष्ट पखा लही, चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही ॥२॥

घर करी केलनां माय सुत लावती, करण शुचिकर्म, जल कलशे न्हवरावती, कुसुम पूजी अलंकार पहेरावती, राखड़ी बांधी जइ, शयन पधरावती ॥३॥ नमीय कहे माय ! तुम, चाल लीलावती, मेरु रविचन्द्र लगे, जीवजो जगपति, स्वामि गुण गावती, निज घर जावती, तिण समे इन्द्रसिंहासन कंपती ॥ ४ ॥

ढाल (इक्कीसे की राग)

जिन जनम्या जी, जिण वेला जननी घरे, तिण वेलाजी, इन्द्रसिंहासन थरहरे, हाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा, दिशिनायकजी, सोहम ईशान विहुंतदा ॥ १ ॥ तूटकः— तदा चिंते इन्द्र मनमां कोण अवसर ए वन्यो, जिन जन्म अवधिनाणे जाणी, हर्ष आनन्द ऊपन्यो, सुघोष आदे घंट नादे घोषणा सुर मां करे, सवि देवी देवा जन्ममहोच्छवे, आवजो सुखगरिवरे ॥२॥

(यहाँ घंटा बजाना)

ढाल—

एम सांभली जी, सुखर कोड़ी आवी मले, जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले, सोहमपतिजी, वहु परिवा आवीया, माय जिननेजी, वांदी प्रभुने वधावीया ॥३॥

यहाँ प्रभुको चांवल से वधाना

तूटक– यथावी बोले हे रत्न कुक्षीधारिणी ? तुझ सुततणो, हु शक्र सोहम नामे करशु , जन्म महोत्सव अतिघणो, इम कही जिन-प्रतिबिंब स्थापी, पचरूपे प्रभु ग्रही, देव देवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही ॥४॥ ढाल.—मेरु ऊपरजी पाडुकवन में चिहु दिशे, शिला ऊपरजी, सिंहासन मन उल्लसे, तिहा बेसीजी शक्र जिन खोले धर्या, हरि त्रेसठजी, बीजा तिहा आवी मल्या ॥५॥ तूटक—मल्या चौसठ सुर पति तिहाँ, करे कलश अड जातिना, मागधादि- जल तीर्थ ओषधि, धूप वली बहु भातिना; अच्युतपतिए, हुक्म किनो, साभलो देवा सवे, क्षीर जलधि गगा नीर लावो, झटिति जिन महोत्सवे ॥६॥

ढाल (विवाहले की राग)

सुर साभली ने सचरिया, मागध वरदामे चलिया, पद्मद्रह गगा आवे, निर्मल जल कलश भरावे ॥ १ ॥
तीरथ जल ओषधी लेता, वली क्षीर समुद्रे जाता, जल कलशा बहुल भरावे, फूल चगेरी थाला लावे ॥ २ ॥
सिंहासन चामर धारी, धूप धाणा रकेबी सारी, सिद्धान्ते भाष्या जेह, उपकरण मिलावे तेह ॥ ३ ॥
ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनद पावे, कलशादिक सहु तिहाँ ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे ॥ ४ ॥

ढाल (धन्नाश्री राग)

आतमभक्ति मल्या केई देवा, केता मित्तनु जाई, नारी प्रेर्या वली निज कुलवट, धर्मी धर्म सखाई, जोइस व्यंतर भुवनपतिना, वैमानिक सुर आवे, अच्युतपति हुकमे धरी कलशा, अरिहाने न्हवरावे ॥ आतम० ॥ १ ॥ अड़जाति कलशा प्रत्येके, आठ आट सहस प्रमाणो, चउसठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसें गुणाकरी जणो, साठलाख उपर इक कोड़ी, कलशा नो अधिकार, बाँसठ इन्द्रतणा तिहाँ बाँसट, लोकपालना चार ॥ आतम० ॥ २ ॥ चन्द्रनी पंक्ति छांसठ, छांसठ, रविसेणि नरलोको, गुरु सुरकेरा अेकज,, सामानिक नो एको, सोहमपति इशानपतिनी, इन्द्राणिना सोल, असुरनी दश इन्द्राणी नागनी, वार करे कल्लोल ॥ आतम० ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यंतर इन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको, कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको; परचुरण सुरनो एक छेलो, ए अढ़ीसे अभिषेको, इशान इन्द्र कहे मुझ ने आपो, प्रभु ने क्षण अतिरेको ॥ आतम० ॥ ४ ॥ तत्र तस खोले ठवी अरिहाने, सोहमपति मन रंग, वृषभ रूप करी शृंगे जल भरी, नवरावे प्रभु अंगे; पुष्पादिक पूजी ने छांटे, करी केशर रंगरोले, मंगल दीवो आरति करता, सुरवर जय जय बोले ॥ आतम० ॥ ५ ॥ भेरी भूङ्गल ताल बजावत, वलिया जिन कर धारी, जननी घर माता ने सोंपी; इणिपरे

तूटक– ववावी वोले हे रत्न कुक्षीधारिणी ? तुभ सुततणो, हु शक्र सोहम नामे करशु , जन्म महोत्सव अतिघणो, इम कही जिन प्रतिबिंब स्थापी, पचरूपे प्रभु ग्रही, देव देवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही ॥४॥ ढाल —मेरु ऊपरजी पाडुकवन में चिहु दिशे, शिला ऊपरजी, सिंहासन मन उल्लसे, तिहा वेसीजी शक्र जिन खोले धर्या, हरि त्रेसठजी, नीजा तिहा आवी मल्या ॥५॥ तूटक—मल्या चौसठ सुर पति तिहाँ, करे कलश अड जातिना, मागधादि-जल तीर्थ औषधि, धूप वली वह भातिना, अच्युतपतिए, हुकम किनो, साभलो देवा सवे, क्षीर जलधि गगा नीर लावो, झटिति जिन महोत्सवे ॥६॥

ढाल (विवाहले की राग)

सुर साभली ने सचरिया, मागध वरदामे चलिया, पद्मद्रह गगा आवे, निर्मल जल कलश भरावे ॥ १ ॥
तीरथ जल औषधी लेता, वली क्षीर समुद्रे जाता, जल कलशा वहुल भरावे, फूल चगेरी थाला लावे ॥ २ ॥
सिंहासन चामर धारी, धूप धाणा रकेबी सारी, सिद्धान्ते भाख्या जेह, उपकरण मिलावे तेह ॥ ३ ॥
ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनद पावे, कलशादिक सहु तिहाँ ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे ॥ ४ ॥

ढाल (धन्नाश्री राग)

आतमभक्ति मल्या केई देवा, केता मित्तनु जाई, नारी प्रेर्या वली निज कुलवट, धर्मी धर्म सखाई, जोइस व्यंतर भुवनपतिना, वैमानिक सुर आवे, अच्युतपति हुकमे धरी कलशा, अरिहाने न्हवरावे ॥ आतम० ॥ १ ॥ अड़जाति कलशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो, चउसठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसें गुणाकरी जणो, साठलाख उपर इक कोड़ी, कलशा नो अधिकार, बाँसठ इन्द्रतणा तिहाँ बाँसट, लोकपालना चार ॥ आतम० ॥ २ ॥ चन्द्रनी पंक्ति छांसठ, छांसठ, रविसेणि नरलोको, गुरु सुरकेरो अेकज,, सामानिक नो एको, सोहमपति इशानपतिनी, इन्द्राणिना सोल, असुरनी दश इन्द्राणी नागनी, बार करे कलोल ॥ आतम० ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यंतर इन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको, कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको; परचुरण सुरनो एक छेलो, ए अढ़ीसे अभिषेको, इशान इन्द्र कहे मुझ ने आपो, प्रभु ने क्षण अतिरेको ॥ आतम० ॥ ४ ॥ तव तस खोले ठवी अरिहाने, सोहमपति मन रंगे, वृषभ रूप करी शृंगे जल भरी, नवरावे प्रभु अंगे; पुष्पादिक पूजी ने छांटे, करी केशर रंगरोले, मंगल दीवो आरति करता, सुरवर जय जय बोले ॥ आतम० ॥ ५ ॥ भेरी भूङ्गल ताल बजावत, वलिया जिन कर धारी जननी घर माता ने सोंपी, इणिपरे

वचन उचारी, पुन तमारो स्वामि अमारो, अम सेवक आधार, पच धावी रंभादिक थायी; प्रभु खेलावण हार ॥ आतम० ॥ ६ ॥ बत्रीस कोडी कनकमणि माणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे, पूरण हर्ष करेवा कारण, दीप नंदसर जावे, करीय अट्ठाई उत्सव देवा, निज निज कल्प सिधावे, दीक्षा केवलने अभिलाषे, नित नित जिन गुण गावे ॥ आतम० ॥ ७ ॥ तपगच्छ ईश्वर सिंह सूरीसर, केरा शिष्य वडेरा, सत्यविजय पन्यास तणेपद, कपूरविजय गंभीरा, खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्रीशुभवीरविजय सवाया, पंडित वीर विजय तस शिष्ये, जिन जन्म महोच्छव गाया ॥आतम० ॥ ८ ॥ उत्कृष्टा एकसो ने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश, अतीत अनागत काले अनंता, तीर्थंकर जगदीश, साधारण ए कलश जे गावे, श्री शुभ वीर सवाई, मंगललीला सुख भर पावे, घर घर हर्ष वधाई ॥ आतम० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री पण्डित श्री वीरविजयजी कृत स्नात्र पूजा ॥

यहाँ कलशाभिषेक करके, पंचामृत का प्रक्षाल करना, पश्चात पूजा करना, पुष्प चढाना, लूण उतारना, आरती करना। प्रतिमाजी को परदा करके स्नात्रकर्त्ता अपने शरीर पर कुंकुम के नव तिलक करे फिर प्रतिमाजी पर से परदा हटाकर मंगल दीपक उतारना। यदि स्नात्र पूजन के समाप्त होते ही शान्तिकलश पढाना हो तो लूण उतारणादि शान्तिकलश पढाने के बाद करना।

श्री सिद्धचक्र (नवपद) पूजा विधि
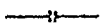
सिंहासन (त्रिगड़े) के सामने धोए हुए शुद्ध चोरस बाजोट पर नौ कोठेंवाला गोलाकार एक नव पद मंडल मांडना और उसको स्व स्व वर्णानुक्रम से शुद्ध चावलों से पूर्ण करना। सिंहासन (त्रिगड़े) में पंचतीर्थी अथवा चौवीसी विराजमान करने से पहले उसमें केशर-चंदन से स्वस्तिक करके "ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय षट्पञ्चाशद्दिक्कुमारिपरिपूजिताय चतुष्पष्टीन्द्रमहिताय सर्वजनहिताय देवाधिदेवाय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥" इस मन्त्र को बोल कर पंचतीर्थी या चौवीसीजी विराजमान करना। नौ स्नात्रियां तैयार करना और नौ श्रीफल, नौ श्रीफलों के गोले, नौ अंगलुछने, नौ फल तथा नौ कलश साफ धोकर उन पर केशर से साथिए करके मौली बांधना। फिर श्री अरिहंतपद की पूजा के लिए एक थाली में चाँवल, श्रीफल, पान, गोला, अष्ट द्रव्य सुपारी, इलायची, फल, फूल और सफेद छोटी ध्वजा रख कर एक स्नात्रिया हाथ में लेकर खड़ा रहे, एक दीपक लेवे, एक धूप लेवे, और शेष स्नात्रिए पंचामृत के भरे हुए कलश लेकर खड़े रहें। अरिहन्त पद की पूजा भणाने के बाद काव्य और मन्त्र बोलकर ॥ ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ॥ ऐसा बोलकर श्री प्रतिमाजी पर पंचामृत के कलश ढोना और थाली की सभी वस्तुएँ अरिहन्त पद के कोठे पर चढ़ाना केशर से श्रीप्रतिमाजी की पूजा करना। गेहूँ श्रीफलादि वस्तुएँ फिर से थाली में भरके

और पचामृत के कलश भर के प्रथम पूजावत् खड़े रहना। श्री सिद्धपद की पूजा और काव्य तथा मन्त्र बोलने के बाद "ॐ ह्रीं नमो सिद्धम्म" कह के पूर्ववत् कलश ढोना और सिद्धपद के कोठे में थाली की चीजें चढ़ाना। चने की दाल, श्रीफल प्रमुख और कराश श्री आचार्यपद का पूजा, काव्य और मन्त्र बोले फिर "ॐ ह्रीं नमो आयरियाण' बोलने के बाद कलश ढोना और आचार्य पद के कोठे में थाली की चीजें चढ़ाना। मूग, श्रीफलादि वस्तु श्री उपाध्यायपद की पूजा काव्य और मन्त्र बोलने के पश्चात् "ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण" कहके कलश ढोना और उपाध्यायपद के कोठे में वस्तु चढ़ाना। उड़द श्रीफलादि साधुपद की पूजा काव्य और मन्त्र भणाण बाद "ॐ ह्रीं नमो सव्व साहूण" कहके कलश ढोना और साधु पद के कोठे में सब वस्तुएँ चढ़ाना। इसी प्रकार दर्शनपद, ज्ञानपद, चारित्रपद, और तपपद की जुदी जुदी पूजा और काव्य मन्त्र भणाण बाद "ॐ ह्रीं नमो दसणस्स' "ॐ ह्रीं नमो नाणस्स' "ॐ ह्रीं नमो-चारित्तस्स" "ॐ ह्रीं नमो तवस्स" ऐसा क्रमश कहके पचामृत के कलश ढोना और चॉवल श्रीफलादि चढ़ाना। फिर अन्तिम कलश बोल कर आरती मगल दीपक उतारना।

---
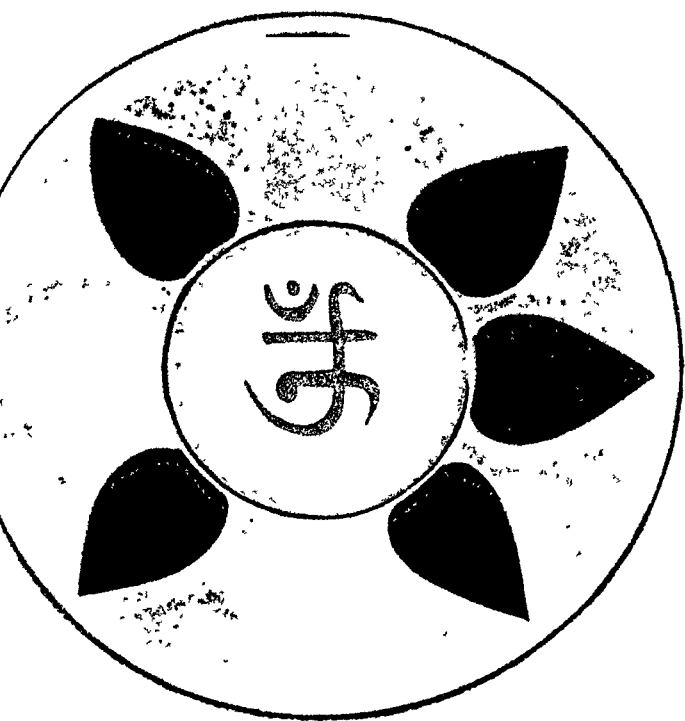
१ श्रीनवपद (सिद्धचक्र) पूजा–मंडल.
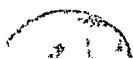
श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी–रचित—

श्रीसिद्धचक्र (नवपद) पूजा ।
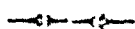
प्रथमपदपूजा–दोहा—

सिद्धचक्र सिद्धान्त में, यन्त्र सकल शिरताज ।
पूजो भविजन प्रेमसुं, जिम लहो सिद्धि समाज ॥ १ ॥
अरिहंत देव धुरे अछे, उपगारी तसु हेत ।
अष्टद्रव्य करि पूजतां, शिवसंपति भवि लेत ॥ २ ॥

भुजंगप्रयात—छन्दसि—

तित्थयरं नाम पसिद्धिजायं, णरामरेहिं पणयं हि पायं ।
संपुण्णनाणं पयडं विसुद्धं, नमामि सोऽहं अरिहंत बुद्धं ॥१॥

भव्वाणबोहे उवएस जस्स, विवाग सो अत्थि सुकम्मगस्स ।
रागो ण दोसो ण विकार तस्स, णमो णमो हो उसहाइयस्स ॥२॥

ढाल–तीरथपति अरिहा नमो, ए राह—

तीर्थङ्करपदने धरा, अरिहंता जग ईशाजी ।
भविपंकज बोधन परा, प्रणमी तेह दमीशाजी ॥ १ ॥

हरिगीत—छन्दसि—

चउ घाति करम विकार हणिने, प्रातिहारज धारका ।
चउतीस अतिशय वाणि गुण, पणतीस त्रिभुवन तारका ॥
जस नाम जपताँ सर्वसपति, पामिये जग जस सही ।
तेह अरिहंत भविक प्रणमो, दोष जेहमें को नहीं ॥ १ ॥

ढाल १, अवधु सो योगी गुरु मेरा, ए राह—

भवियाँ ! अर्हन् पदकुं जपलो,
एही आतम अन्दर रखलो ॥ भ० ॥ टेर ॥

गगन मंडल के मध्य रहत है, जगत भासक अविनाशी ।
सर्व भविकुं बोध करत हैं, अतर सर्व प्रकाशी ॥ भ० ॥ १ ॥
समय एक एक के अतर, किरिया विगम रहे जाके ।
आवरण मोह विना सयोगी, दोष नहीं कोइ वाके ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रातिहार्यादिक बाह्य विभूति, तीर्थंकर पद पाके । केवल दोनु का अनत उजाला, तिनकुं कोउ नही ढाके ॥ भ० ॥ ३ ॥

ढाल २, साहिबा शातिजिनेश्वर देव के, ए राह—

भविका—अरिहत पद अविकार के, पूजो हित धरी रे लो । भ०—अनंतगुणी वीतराग के, परतिख केवली रे लो ॥ भ०—कनकपकज पर पॉव के, ठवता संयती रे लो ।

भ०—धर्मचक्र जिनराज के, दुन्दुभी गाजती रे लो ॥ भ०, अ० ॥ १ ॥ भ०—इन्द्र चोसठ करे सेव के, इन्द्राणी नचे रे लो । भ०—महिमा कही नवि जाय के, त्रिगड़ो सुर रचे रे लो ॥ भ०—परिषद् बार मझार के, राजे जगपति रे लो । भ०—चउमुख भाखे चार के, धर्मनी संपति रे लो । भ०, अ० ॥ २ ॥ भ०—वीसथानक तप पुन्य के, परगट जस थयो रे लो । भ०—अनुकंपा लही अंग के, दान तिणें दियो रे लो ॥ भ०—केई भवि पडिबोह के, तारक जे थयो रे लो । भ०—पद ए प्रथमने पूज के, तीर्थप नृप थयो रे लो ॥ भ०, अ० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र—

नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहुपूजयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय प्रथमपदे श्री अर्हतेऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ १ ॥

द्वितीयपदपूजा—दोहा—

करम आठ जिण क्षय कर्यां, सीझा जस सहु काज ।
ते सिद्ध पूजा दूसरी, वरो ज्युं शिवपुर राज ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात-छन्दसि—

-कम्मठ्ठचित्रा समएणमेग, वगाह आगासपएसवेग ।
-आगं तिग देहसमग्गहिचा, मनी भवि सिद्ध सया सुणिचा ॥१॥

को जस्स सुक्ख भणणेहि सूरो, भवोदहि णत्थि सणाण पूरो ।
-आलजण मुक्खपहस्स सुद्ध , णमामि सिद्ध सरण पसिद्ध ॥२॥

ढाल—तीरथपति अरिहा नमो—ए राह—

करम आठने जे हणी, अखय अनत अरूपीजी । अव्या-
बाध सुखना धणी, भवि णमो सिद्ध सरूपीजी ॥ क० ॥१॥

हरिगीत-छन्सि—

अड करम सतति नाश करीने, सकल लोक ऊपर रहे ।
भवतीन जाली कार्य टाली, समय एक शिव सगहे ॥
शैलेशीकरणे सर्व सवर, धारिने तुम्नक परे ।
भव बध छेदी जगत वेदी, सिद्ध थया ते सुख करे ॥ १ ॥

ढाल ३, कुनचाने जादु डारा, ए राह—

सिद्धजीकु पूज प्यारा,
-एतो शिवसपति करनारा रे ॥ सि० ॥ टेर ॥

लोक ऊरध के अंत विराजे, आतम ऋद्धि अपारा। अफ़ समान गति समय एक की, करम आठ परजारा रे॥ सि०॥ १॥ दो उपयोग भाव दो धारी, अजरामर अविकारा। पंचदश भेद हैं सब ही सरिखा, अनाकार अजुआरा रे॥ सि०॥ २॥ सुख अनंत कोउ कहिय न सके, लौकिक सुख से न्यारा। जो इस पदकुं आतम समझे, सो सिद्ध सद्दश धारा रे॥ सि०॥ ३॥

ढाल ४, मोहन मेरो मुगति से जाय मल्यो, ए राह—

आतम मेरो सिद्धसुं रंग कल्यो, सुमता संग भल्यो रे आ०। समय आठ के अंतर सहजे, शैलेशीकरण धर्यो रे॥ आ०॥ १॥ भवोपग्राही करम खपावा, उद्यम एह कर्यो रे आ०। बादर काय योग करी बादर, मनोयोग चार हर्यो रे॥ आ०॥ २॥ इम अनुकरमे योगने रूंधी, सिद्धि वधूने वर्यो रे आ०। आठ गुणें करी सादि अनंत है, भव सगति से टर्यो रे॥ आ०॥ ३॥

काव्य और मन्त्र—

"नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम्। शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्; भविक यो विधिना बहुपजयेत॥ १॥

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय द्वितीयपदे सिद्धायाऽष्टद्रव्यैं पूजयामि स्वाहा ॥ २ ॥

तृतीयपदपूजा । दोहा—

जे आचारे निज रमे, भावाचारिज तेह ।
पूजो भवि पद तीसरे, भजो ज्ञान गुणगेह ॥ १ ॥

भुजगप्रयात-छन्दसि—

जिणाण आणम्मि मण हि जस्स, णमो णमो सूरिदिवायरस्स । छत्तीसवग्गेण गुणायरस्स, आयारमग्ग सुपयासयस्स ॥ १ ॥

सुविरा तित्थयरा सरीसा, जिणिन्दमग्ग मिणयति सिस्सा । सुत्तत्थ भाणाए सम पयासी, मम मणसि वसिओ णिरासी ॥ २ ॥

ढाल—वीरयपति अरिहा नमो, ए राह—

आचारज मुणिवड गुणी, जिनशासन में रायाजी । शुभ आचारने भापता, सुरवर नमे जसु पायाजी ॥ आ० ॥ २ ॥

हरिगीत-छन्दसि—

वर चरण धारी विषय वारी, जैनशासन शोभता । -

परवादि भंजन कुमतिखंडन, शुद्ध मारग रोपता ॥
नहिं कोइ ममता वरजी विकथा, सूरि शासन सेहरो ।
आचार्य तेहिज भजो भविका, जेम शिवसुख संवरो ॥ १ ॥

ढाल ५, जिनराज नाम तेरा, ए राह—

गणधार सूरिराजे, परमार्थ कार्य काजे, सम सूत्र अर्थ साजे, हो साजे रे सोहमगण रंगमें; रंगमें रंगमें रंगमें हो साजे रे सोहमगण रंगमें ॥ १ ॥ आचार पंच पाले, वादी कुलिंग टाले, जिन योग युक्ति झाले, हो झाले रे सुमता रस अंगमें; अंगमें अंगमें अंगमें हो झाले रे सुमता रस अंगमें ॥ २ ॥ शिष्योंने मार्ग आणे, पंच पीठ मंत्र जाणे, कषाय चित्त नाणे, हो नाणे रे कुमत मत घटमें; घटमें घटमें घटमें हो नाणे रे कुमत मत घटमें ॥ ग० ॥ ३ ॥ जिन आण अंग धारी, विकथा कुसंग वारी, सरधा सुशुद्धकारी, हो शुद्धकारी जिनेश्वर मतमें; मतमें मतमें मतमें हो शुद्धकारी जिनेश्वर मतमें ॥ ग० ॥ ४ ॥

ढाल ६, मनड़ो मोह्यो रे मन मोहनजी, ए राग—

आचारिज पद पूजिये मन मोहनजी, शासननो सिणगार मनड़े वसिया रे मन मोहनजी । सारण वारण चोयणा म०, पडिचोयण उपकार मनड़े वसिया रे म० ॥ १ ॥ मेढीभूत

गरण में कह्या म०, षट्द्रव्य वाणी रसाल मनडे वसियारे म० । हेउ उयारण दाखवी म०, काढे अनादि कुचाल मनड़े वसिया रे म० ॥ २ ॥ जिगशासन उजवालता म०, तीर्थङ्कर सम जेह मनडे वसिया रे म० । महानिशीथे मुनीश्वरा म०, छेद ज्ञायक गुणगेह मनडे वसिया रे म० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र—

"नवपदं प्रणमामि सुसादर, प्रवरयन्त्रमिद हि गुणाकरम् । शिवसुख लनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहुपूजयेत् ॥ १ ॥"

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय तृतीयपदे आचार्यायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ २ ॥

चतुर्थपदपूजा । दोहा—

सर्व उपाधि जे हर, स्वाध्याये लय लीन ।
उपाध्याय पद पूजिये, तत्त्व प्रकाशे तीन ॥ १ ॥

भुजगप्रयात-छन्दसि—

सुत्ताण पाठ सुपरपराओ, जहागयं तं भविणं चिराओ ।
जे साहगा ते उवज्झायराया, नमो नमो तस्स पदस्स पाया ॥ १ ॥

गीयत्थता जस्स अवस्स अत्थि, विहार जेसिं सुयवज्जणत्थि ।
उस्सग्गियरेण समग्गभासी, दिंतु सुहं वायगणाण रासी ॥२॥

ढाल—तीरथपति अरिहा नमो, ए राह—

वायगपद भवि पूजिये, जिनभाषित श्रुत जाणेजी ।
भणे भणावे श्रमणने, मनमें खेद न आणेजी ॥ वा० ॥ १ ॥

हरिगीत-छन्दसि—

उपधान तपने जेह जाणे, जोग विधि जे जिन कही ।
विकथा निवारे सूत्रधारे, उवझाय तारक ते सही ॥
गच्छमांहिं रमता छांडि ममता, साधुजन मन रंजता ।
वर बोध करता भविक चित्त, भ्रम समय न्याये भंजता ॥ १ ॥

ढाल ७, सहसफना मोरे साहिवा, ए राह—

पाठक पद को पूजले,
एतो द्वादश अंगना धारी रे ॥ पा० ॥ टेर ॥

जाके संगसे ज्ञान भजे भवि, उपाधि दूर निवारी रे पा० ।
पाठन पठनादिक गुण जाने, पंच महाव्रत धारी रे पा० ॥१॥
सूरिपद के योग्य ए जानो, गीतारथ उपगारी रे पा० ।
नीलवरण नित ज्ञान लहिर में, गुण पचवीस विचारी रे
॥ पा० ॥ २ ॥ शिष्यों को आचार की शिक्षा, देवे भव

निस्तारी रे पा० । जैनागमकुं पाट परंपर, राखे प्रमोद विहारीरे ॥ पा० ॥ ३ ॥

ढाल ८, राग पनिहारी—

उपाध्याय पद वन्दिये, भवि प्राणि रे लो । जिनमत में जयकार ज्ञानी रे लो ॥ योग वही सूत्र आदरे, तप धारी रे लो । वरजे विषय प्रचार, ध्यानी रे लो ॥ उ० ॥ १ ॥ अंगे न श्रुतमद आदरे अकषायी रे लो । असमाधि दूर निवार, सुज्ञानी रे लो ॥ असखलितादिक गुणे करी, जस वाणी रे लो । अमृत जिम अविकार, साची रे लो ॥उ०॥२॥ चोथो पद चितमें धरी, जे प्राणी रे लो । आराधे उवझाय, सुज्ञानी रे लो ॥ तो ते वाचक पद वरे, सुखकारी रे लो । पापते दूर पलाय, यूं जाणी रे लो ॥ उ० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहुपूजयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय चतुर्थपदे उपाध्यायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ ४ ॥

पंचमपदपूजा—दोहा

मुक्ति मारगने साधता, वारता विषय कषाय ।
ते साधु मुझ मन वस्या, इन्द्र नमे जसु पाय ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात–छन्दसि

संसार छंडी दृढ मुक्ति मंडी, कुपक्ष मोड़ी भवपास तोड़ी ।
निग्गंथ भावे जसु चित्त अत्थि, णमो भवि ते साहु जणत्थि ॥१॥
जे साहगा मुक्खपहे दमीणं, णमो णमो हो भवि ते मुणीणं ।
मोहे नहीं जेह पडंति धीरा, मुणीण मज्झे गुणवंत वीरा ॥२॥

ढाल–तीर्थंपति अरिहा नमो, ए राह

ज्ञान सहित किरिया करे, संयम में जे रत्ताजी । जिन आणा शिर धारता, जसु मन सम—रिपु मित्ताजी ज्ञा० ॥ १ ॥

हरिगीत–छन्दसि

शुभ ध्यान ध्यावे तन तपावे, पाप किरिया परिहरे ।
गुणवंत संत अनंत ज्ञानी, तास संगति नित करे ॥१॥
गणधार आणा आप अंगे, चित्त चंगे जे धरे ।
तेह मुनिपद पूजतां भवि, सिद्धि सुखने संवरे ॥ २ ॥

ढाल ६, शासनपति वीरजिणंदा रे, ए राह

साधुपद पूजो प्राणी रे, मन सरधा सांची आणी रे,

एतो साधक मोक्षना जाणी, सोभागी ! मुनिवर चरणने वंदो रे । एतो अनुभव रसनो कंदो सोभागी ॥ मु० ॥ १ ॥ जे पंच महाव्रत पाले रे, वली दोष धयालिम टाले रे, एनो सुमति गुपति में चाले सोभागी ॥ मु० ॥ २ ॥ मुनि परिसह फोज में शूरा रे, दोय पक्ष में वरते पूरा रे, अतिचार थकी रहे दूरा सोभागी ॥ मु० ॥ ३ ॥ मुधा दाई ने मुधा ग्राही रे, ज्यांरे लालच लोभ न कांई रे, धर्मध्याने लयने लगाई सोभागी ॥ मु० ॥ ४ ॥

ढाल १०, आज हमारे रतनचिंतामणि, ए राह

पुन्य दशा जो जागे हमारी,
तो ऐसे मुनिजन आन मिलेरी ॥ टेर ॥

रमता समता नारी के संगमें, आण जिणंद की अग धरे री । षट्काय के रिछपाल कृपाला, निरख निरख के पाँव ठवे री ॥ पु० ॥ १ ॥ चरण करण सित्तर की चरचा, नित्यप्रते सूत्रकुं याद करे री । पासत्थादिक संगकुं वर्जी, सूरि आणा शिर आप धरे री ॥ पु० ॥ २ ॥ साधक मोक्ष मारग के पूरा, कूडा कथन तो नाहीं कहेरी । ज्ञानक्रिया व्यवहार न छंडे सो जिन शासन साधु खरे री ॥ पु० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना वहु पूजयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय पंचमपदे साधवेऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ ५ ॥

षष्टपदपूजा—दोहा

छठ्ठो पद दर्शन तणो, पूजो भवि हितकार ।
जेहने समकित मन वस्यो, पामे ते भवपार ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात-छन्दसि

तत्ताणसद्धा शुभचित्त भासे, भवाभिलाषा सवली विणासे ।
अप्पा अने पुग्गल भेय कत्ता, वदे तेह सम्मत्त जे शुद्धवत्ता ॥१॥
निवाण लाहो नहि जस्स कोई, विनाही सम्मत्त जे जीव कोई ।
अहो भवि सेविये सत्य भावे, कुरोग सोगा सवि दूर जावे ॥२॥

ढाल—तीरथपति अरिहा नमो, ए राह

दरिसण पद नित पूजिये, लीजिये शिवपद लीलाजी ।
भव भय ताप चढ़े नहीं, करमतणी टले पीलाजी ॥द०॥१॥

एतो साधक मोक्षना जाणी, सोभागी ! मुनिवर चरणने वंदो रे । एतो अनुभव रसनो कंदो सोभागी ॥ मु० ॥ १ ॥ जे पंच महाव्रत पाले रे, वली दोप बयालिस टाले रे, एतो सुमति गुपति में चाले सोभागी ॥ मु० ॥ २ ॥ मुनि परिसह फोज में शूरा रे, दोय पक्ष में वरते पूरा रे, अतिचार थकी रहे दूरा सोभागी ॥ मु० ॥ ३ ॥ मुधा दाई ने मुधा आही रे, ज्यारे लालच लोभ न कांई रे, धर्मध्याने लयने लगाई सोभागी ॥ मु० ॥ ४ ॥

ढाल १०, आज हमारे रतनचिंतामणि, ए राह

पुन्य दशा जो जागे हमारी,
तो ऐसे मुनिजन आन मिलेरी ॥ टेर ॥

रमता समता नारी के संगमें, आण जिणंद की अंग धरे री । षट्काय के रिछपाल कृपाला, निरख निरख के पाँव ठवे री ॥ पु० ॥ १ ॥ चरण करण सित्तर की चरचा, नित्यप्रते सूत्रकुं याद करे री । पासत्यादिक संगकुं वर्जी, सरि आणा शिर आप धरे री ॥ पु० ॥ २ ॥ साधक मोक्ष मारग के पूरा, कूडा कथन तो नाहीं कहेरी । ज्ञानक्रिया व्यवहार न छंडे सो जिन शासन साधु खरे री ॥ पु० ॥ ३ ॥

सुगुरु सुदेव न जाने, कुगुरु कुदेव न माने रे, ए आण दया विण भाई ॥ जी० ॥ १ ॥ जो सरधा सांची आवे, भव त्रीजे मोक्ष सिधावे रे, सरधा रहित नहिं कांई ॥ जी० ॥ २ ॥ निज आतम रंगे राचो, मत पक्ष माहीं मत मांचो रे, ए पद पूजो सुखदाई ॥ जी० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बुहु-पूजयेत् ॥ १ ॥"

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय षष्ठपदे श्रीदर्शनायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ २ ॥

सप्तमपदपूजा—दोहा

पूजा करो भवि ज्ञाननी, सप्तमपद श्रीकार ।
एह विना नवि मोक्ष छे, भाषे जिन जयकार ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात–छन्दसि

लोयं अलोयं पयडंकरस्स, णमो णमो नाण तमोहरस्स ।
स्याद्वादवादेन सुलंछियस्स, कुवायपक्खं विखंडणस्स ॥ १ ॥
भक्खं अभक्खं असुहं सुहं वा, अकज्जकज्जं पियमप्पियं वा
जो जाणइ जेण निणा विभावा, भजो जणा णाणने चित्स्वभावा॥२॥

हरिगीत-छन्दसि

यह करम कोडी भविक तोडी, करण तीन जे अनुभवे ।
तम एह पदनो भाव प्रगटे, द्रव्य तो वलि संभवे ॥ १ ॥
निसर्ग अभिगम दोय भेदे, दश रुचि दरिसण करे ।
सो लहे प्राणी मुगतिपुरने, शाश्वता सुख संवरे ॥ २ ॥

ढाल ११, सिद्धचक्र वंदो रे भविका, ए राह

नवतत्व षट्द्रव्य सांचो जाणे, शंका कंखा न आणे ।
ते दरिसण पद पूजो भविका, वरते चोथे ठाणे रे ॥ १ ॥
भवियाँ ! समकित सांचो धारो, ए आतम आधारो रे
भवियाँ ।' ॥ स० ॥ टेर ॥ एह विना ज्ञान चरण छे झूठा,
पूठा भवमें पाड़े । ए विण किरिया वादी न होवे, कृष्णपक्ष
ए ताणे रे भवियाँ ॥ स० ॥ २ ॥ कोई कहे ज्ञान किम छे
झूठो, तेहने एहवो कहिये । समकित विण अज्ञान परूप्यो,
नन्दीसूत्रे लहिये रे भवियाँ ॥ स० ॥ ३ ॥ अंतर आतम
एहिज जाणो, मोह छाग गइ नासी । अनंत भवोनी फांसी
तूटी, अप्पा बोध प्रकाशी रे भवियाँ ॥ स० ॥ ४ ॥

ढाल १२, राग-वणझारा

समकित सखा विण सांई,
जीव भमे गति चउ मांई ॥ टेर ॥

द्रव्यथकी अभवि पण पामे, ग्रैवेयक सुख भारी । भविने भावे होय अतिसुंदर, तातें लहे शिवनारी ॥ पू० ॥ १ ॥
पांच भेद ए अनुयोगद्वारे, नंदीसूत्र लो धारी । ए विण मोक्ष लहे नहीं आतम, अंग पंचम अधिकारी ॥ पू० ॥२॥
ज्ञान विना किरिया सब झूंठी, आवश्यक अनुसारी । एक पक्ष ए कबुअ न धारे, संशय सर्व विडारी ॥ पू० ॥ ३ ॥
कषाय रहे नहीं जाके उदये, किरणोत्तम हरनारी । सबही में श्रुतज्ञान है तीखो आतम पर उपगारी ॥ पू० ॥ ४ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपद प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहु-पूजयेत् ॥ १ ॥"

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय सप्तमपदे ज्ञानायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥

अष्टमपदपूजा—दोहा

अष्टमपद चारित्रनो, जीवतणो आधार ।
शुभ परिणामे पूजतां, ऊतारे भव पार ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात–छन्दसि

णाणस्स सारं जिणराय भासे, भव्वाणभीति सहु दूर नाशे ।
अप्पा अखोभे अणवज्ज भावे, भजो भवि संवर दुक्ख नावे ॥१॥

ढाल–तीरथपति अरिहा नमो, ए राह

भवि पूजो जिण नाणने, सकल प्रकाशे सूरोजी। सत्त नये जे शोभतो, समतारस भरपूरोजी ॥ म० ॥

हरिगीत–छन्दसि

वरतत्व भासे कुमत नाशे, जस विकाशे जगत में।
शिवपथ,ए विण साधि न सके तत्व संपति नवि गमे ॥ १ ॥
न लहे हेय ने ज्ञेय आतम, उपादेय किरिया वली।
अपच्चक्खाण तेहना अशुद्ध जाणो, एम भाषे केवली ॥ २ ॥

ढाल १३, राग पील्

भजलो प्रकाश्यो ज्ञान सहि यो जिणंदराय, भव्य भवोदधि पार परनकुं ॥ भ० ॥ टेर ॥ और कोउ कारण नहिं है तारण, धारो तो यो ही है मोक्ष कारणकुं ॥ भ० ॥ १ ॥ भक्ष्याऽभक्ष्य विनाण न होवे, श्रद्धा सुजाणको दृढ़ता रख णकुं ॥ भ० ॥ २ ॥ स्यादवाद लंछित पाप दुगुंछित, निक्षेपा नय भंग धरणकुं ॥ भ० ॥ ३ ॥

ढाल १४, कैसे तेने जबूको मेरु कंपायो, ए राह

पूजो भवि सप्तमपद सुखकारी।
एतो ज्ञान भलो जयकारी ॥ पू० ॥ टेर ॥

द्रव्यथकी अभवि पण पामे, ग्रैवेयक सुख भारी। भविने भावे होय अतिसुंदर, तातें लहे शिवनारी ॥ पू० ॥ १ ॥ पांच भेद ए अनुयोगद्वारे, नंदीसूत्र लो धारी। ए विण मोक्ष लहे नहीं आतम, अंग पंचम अधिकारी ॥ पू० ॥२॥ ज्ञान विना किरिया सब झूठी, आवश्यक अनुसारी। एक पक्ष ए कछुअ न धारे, संशय सर्व विडारी ॥ पू० ॥ ३ ॥ कषाय रहे नहीं जाके उदये, किरणोत्तम हरनारी। सबही में श्रुतज्ञान है तीखो आतम पर उपगारी ॥ पू० ॥ ४ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपद प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम्। शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहु-पूजयेत् ॥ १ ॥"

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय सप्तमपदे ज्ञानायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥

अष्टमपदपूजा—दोहा

अष्टमपद चारित्रनो, जीवतणो आधार।
शुभ परिणामे पूजतां, ऊतारे भव पार ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात-छन्दसि

नाणस्स सारं जिणराय भासे, भव्वाणभीति सहु दूर नाशे।
अप्पा अखोभे अणवज्ज भावे, भजो भवि संवर दुक्ख नावे ॥१॥

चारित्रभावे रहे जेह अप्पा, विभाव भावे नहीं अत्यथप्पा।
ध्यावे सदा सुक्कझाणं सुयोगे, रहे भवि सिद्धिनारी सुभोगे ॥२॥

ढाल—१५, तीरथपति अरिहा नमा, ए राह

खंति अज्जव मद्दवा, तव संजम सुत मुत्ताजी। सत्यं शौच्य अकिंचना धंम रहे जे जुत्ताजी ॥ १ ॥

हरिगीत-छन्दसि

जे रमे निजगुण लहे न परगुण, शुद्ध परिणति में सदा।
न कषाय कलुषित नित्य विकसित, न मोह संगे ते कदा ॥१॥
भव अब्धि तारण करम वारण, जहाज सम ए जाणिये।
चरणसित्तरी करणसित्तरी, भेद सहु इहाँ आणिये ॥ २ ॥

ढाल—१६, ऐसी विध तोने पाई रे, ए राह

चारित्रपदकुं पूजोरे, भवि भाव धरीने ॥ चा० ॥ टेर ॥

दो चारित ही पंचम आरे, निग्रंथ दोय वखाणो रे—
पंचम अंग लहीने ॥ चा० ॥१॥ निग्रंथ चारित्र पंच प्रकारे,
सत्तर भेद प्रमाणो रे—थिर चेतन करीने ॥ चा० ॥ २ ॥
चारित्र मोहक्षये कर क्षायक, क्षय उपशम त्रय मानो रे—
उपशम एक धरीने ॥ चा० ॥ ३ ॥ पंचम छट्ठे देश सर्वथी,
जाव अजोगी गुणठाणो रे—चेतन भाव वरीने ॥ चा० ॥ ४ ॥

रंक सरिखा ए पद धारी, वंदिग सुर नर राणो रे—भवभव ताप हरीने ॥ चा० ॥ ५ ॥

ढाल १७, मोरा सामी बोलोने व्हाला, ए राह

मेरे मन चारित्रपद जचियो, हुँतो शिवरमणीनो थयो रसियो ॥ मे० ॥ टेर ॥

चेतन थिर भावे आवे, आशा आतमनी पावे, परगुण ममता तें जावे ॥ मे० ॥ १ ॥ व्यवहार निश्चे रहे वाला परपरणतिना तजे चाला, तेहिज शिववधु के लाला ॥ मे० ॥ २ ॥ वे मुनि कर्मथकी खसिया, ज्ञानानंद में ते वसिया, नहीं विषयादिकना ते रसिया ॥ मे० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

"नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहु पूजयेत् ॥ १ ॥"

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय अष्टमपदे चारित्रायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ।

नवमपदपूजा । दोहा

कर्मदहन अगनि समो, ध्यान अनिल अतिपूर ।
नवमो तपपद पूजिये, दुःख हरे सवि दूर ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात-छन्दसि—

इच्छा तजे चित्तविरत्तभावे, निदान छंडी निरवद्य भावे ।
भाषे जिनेन्द्रा तप ए समाधी,पूजो जना सर्व छोडो उपाधी॥१॥

सयलगुणविशुद्धं सिद्धचक्कं पसिद्धं,
नवपयपरमिठ्ठं लद्धिसिद्धिविसिट्ठं ।
जिणसमयसुसारं कम्मपीडापयारं,
तिजयविजयकारं भावओऽहं नमामि ॥२॥

निकाचिता कर्म कर्या प्रजाले, सिनातकी होय सिद्धि निहाले ।
वरे भवि सिद्धिसीमंतनीने, नमो ते तपः शुद्धभावे करीने ॥३॥

इति नवपदयंत्रं भक्तितो ये स्तुवन्ति ।
शिववधुसुखभार सीघ्रतस्ते लभन्ति ॥
त्रिभुवनजनसेव्यां सूरिराजेन्द्रलक्ष्मीं,
इह जगति च भुक्त्वा सेव्यमानां दमीन्द्रैः ॥ ४ ॥

ढाल-१८, तीरथपति अरिहा नमो, ए राह

सर्व लब्धि संपद वरे, तप जे साधे निराशीजी । कर्म-
निकंदन ते करी, भवि होय शिवपुर वासीजी ॥ स० ॥ १ ॥

हरिगीत-छन्दसि

करि भाव निरमल जगति जिम, जल करम कपमल टालवा ।

तप तेज करतो गर्व हरतो, काम मदने मालवा ॥ १ ॥
संवर सुराजे ज्ञान काजे, जे करे तपने भवि ।
ते लहे 'सूरिराजेन्द्र' संपति, सकल सुर नर संथवी ॥ २ ॥

ढाल १९, केसरियाने जहाज को, ए राह

साजन मोरे जीव वली जगरायो ॥ टेर ॥

मोटी मोटी मोहनी सेना हठाई, अति तप तोर दिखायो। इच्छारोधनी तोप बनाई, करम कोटकुं उडायो ॥ सा० ॥ १ ॥ तीखे तीखे बारह बाण चलाई, कषाय सुभट हरायो। मार मार करतो राग सिपाई, शमरस खडगे डरायो ॥ सा० ॥ २ ॥ सांचो सांचो संवर मंत्री सखाई, तस पण तेव सवायो। धौं धौं ध्यान नगारा बजावी, मुगति नगर सिधायो ॥ सा० ॥ ३ ॥

ढाल २०, श्याम प्रभुजीने जोग लिया, ए राह

तारण तपपद जाण लिया, तुम पूजो ए पद भाव लिया। कर्मप्रजाली कष्ट मिटाये, जिनवर नामकुं धार लिया ॥ ता० ॥ १ ॥ षट अभ्यन्तर भेद बताये, षट् बाहिर परमाण किया। इस पद सेवक धन्ना प्रमुख के, जिनपति वीर वखाण किया ॥ ता० ॥२॥ भारतादिक सब तप परभावे,

षट्खंड सुर नर साध लिया । सूरि राजेन्द्रे पण ए तप भावे, श्राय सहित जिन धार लिया ॥ ता० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

नवपदं प्रणमामि सुसादरं, प्रवरयंत्रमिदं हि गुणाकरम् । शिवसुखं त्वनघं भवि सो लभेद्, भविक यो विधिना बहुपूजयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राय महामहिमाय नवपदयुताय नवमतपः पदायाऽष्टद्रव्यैः पूजयामि स्वाहा ॥ ६ ॥

कलश, राग धन्याश्री

पूजो पूजो रे, भवि नवपद मंडल पूजो ॥ टेर ॥

सकल यंत्र शिरताज शिरोमणि, नवपद मन्त्र सुहायो । चौद पूर्वनो सार वखाणयो, महानिशीथे गणायो रे ॥ पू० ॥ १ ॥ मन इच्छा पूरण सुरतरु सम, चिंतामणि समुदायो । कामकुंभादिक सबही विनाशी, ए अविनाशी कहायो रे ॥ पू० ॥ २ ॥ श्रीश्रीपाल ने मयणा प्रमुख भवि, ध्येय ध्याने जसु ध्यायो । नरभव सुरसुख उत्तम अनुभवि, परमातम पद पायो रे ॥ पू० ॥ ३ ॥ सोहमतपगण परंपरा मुनि, ध्याने कोटि गण थायो । तास

परंपर रत्न रयणसम, सूरिवर तेज सवायो रे ॥ पू० ॥ ४ ॥
पूरण[०] बाण[५] निधि[९] शशी[१] वर्षे, प्रमोद प्रताप वधायो ।
'सूरि राजेन्द्र' नवपद गुण गाई, जग जस पड़ह वजायो रे
॥ पू० ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर पंचकल्याणक पूजाविधि

अष्ट द्रव्य और पुष्पविमान थाली में पंचामृत भरा कलश सहित लेकर खडे रहना। च्यवन कल्याणक की पूजा, काव्य मंत्र भणा कर प्रभु प्रतिमा पर कलश ढोना, पुष्प विमान सामने रखना और श्रीफलादि द्रव्य च्यवन कल्याणक के कोठे में चढाना।

सवासेर चावल, एक सौ आठ नाली वाला कलश अथवा नहीं हो तो छोटे बारह कलश पंचामृत से भरकर, श्रीफलादि द्रव्य लेकर खडे रहना, जन्मकल्याणक की पूजा, काव्य मंत्र भणाकर कलश ढोना, चावल के आठ स्वस्तिक करना और श्रीफलादि द्रव्य जन्म कल्याणक के कोठे में चढाना

केशर चन्दन और बरास पिसा हुआ कटोरी में लेकर श्रीफलादि द्रव्य थाली में लेकर खडे रहना, दीक्षा कल्याणक की पूजा, काव्य मंत्र भणा ने के बाद केशरादि से प्रभुप्रतिमाजी के लेप करना, श्रीफलादि दीक्षा कल्याणक के कोठे में चढाना।

खडी बत्ती का एक तथा पांच बत्ती का एक दीपक और श्रीफलादि द्रव्य थाली में लेकर खडे रहना, केवल कल्याणक की पूजा, काव्य मंत्र पढ़ा कर, दीपक और श्रीफलादि द्रव्य केवल कल्याणक के कोठे में चढाना।

सवासेर का मोदक और श्रीफलादि सामग्री थाली में लेकर खड़े रहना। निर्वाण कल्याणक की पूजा, काव्य मंत्र भणाने के बाद निर्वाण कल्याणक के कोठे में मोदक श्रीफलादि चढ़ाना।

अन्त में कलश पढ़ा कर आरती मंगल दीपक उतारना।
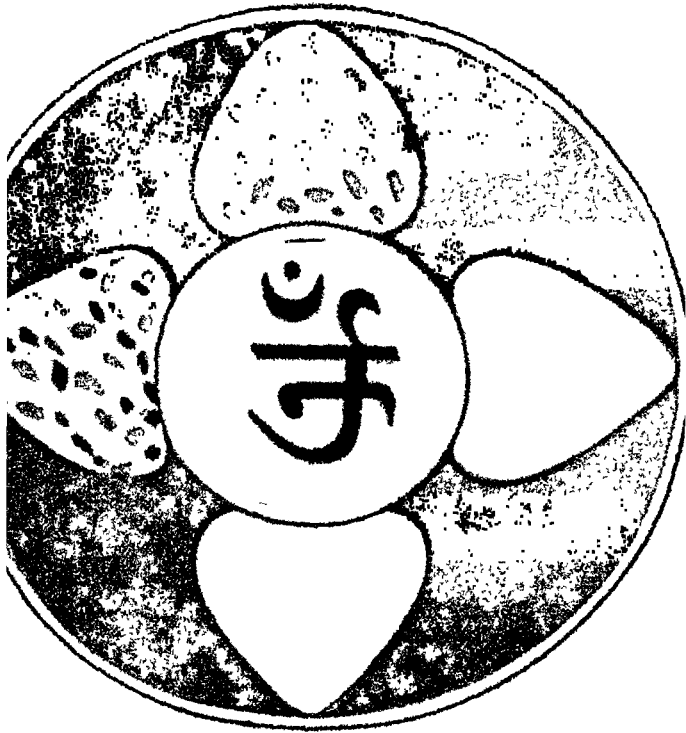
२ श्रीपंचकल्याणकपूजा—मंडल.

प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म० रचित

श्रीमहावीर पंचकल्याणक पूजा

च्यवनकल्याणक पूजा

दोहा

परमातम पद प्रगटियो, मिट गयो मिथ्या भाव ।
तीर्थ करी तरिया तिके, वंदु शीष नमाव ॥ १ ॥
सेव्या थानिक वीसने, वाव्यो जिनवर बीच ।
पंच कल्याणक प्रगटिया, चेतन अनुपम चीज ॥ २ ॥
च्यवन जन्म दीक्षा चरण, केवल क्रम से मुक्ति ।
पंचकल्याणक पूजतां तप तपिये भलि युक्ति ॥ ३ ॥
पांचुकल्याणके करी, पूजो जिनवरो वीर ।
तीर्थंकर चोवीसमो, मेटे भव भय पीर ॥ ४ ॥
तीर्थंकर सेवे तिके, तीर्थपति पद पाम ।
सिद्धिवधु वरते हुए, जपे जगत सहु नाम ॥ ५ ॥

ढाल १, (हांडा-श्रीसिद्धाचलगिरिसिद्धक्षेत्रे तर्ज)

वीर जिणंद ने सेवो भवियाँ, शासनपति सुखकारी रे ।
पंचकल्याणक ज्योति प्रगटे, जगजीवां जयकारी रे ॥ १ ॥

"भवियण पूजो रे, भवियण पूजो पंचकल्याणक, भाव भगति मन धारी रे भ० ॥ टेर ॥' ग्रीष्मऋतुनो चोथो मासो, आषाढ छठ पख बीजो रे। पुण्डोत्तरपुंडरीक विमानथी, देवलोक दशमो लीजो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ देवमरस्थिति पूर्ण करीने, वीस सागरने अंते रे। जंबूद्वीपना भरते प्रभुजी, ब्राह्मणकुंडे संते रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ऋषभदत्त ब्राह्मण छे वेदी, कोडालगोत्री तेहने रे। देवानंदा गोत्र जालधर, सिन्ना सूति जेहने रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिननी चवी कूखे अवतरिया, हस्थुत्तर चंद जोगे रे। चौद स्वप्न देखीने जागी, गत निद्रा गत सोगे रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ स्वप्न अर्थ ने पतिने पूछे, ते कहे तुज सुत रूडो रे। चार वेद ब्राह्मण नय धारक, "सूरिराजेन्द्र' न कूडो रे ॥ भ० ६ ॥

दोहा

लक्षण व्यंजन गुणनिधि, चौदे विद्या निधान ।
पारगत पूराणनो, रूपे देव समान ॥ १ ॥

ढाल २, आजनो दहाडो रे गजनी, ए राह

आनन्द उमग्यो रे अंगे,
स्वप्न अर्थ लहे ते मन चंगे ॥ आ० ॥ टेर ॥
धन सुख तननो रे होशे, पूरण माशे पुत्र तुं जोशे ।

फल ए सुणिने रे हर्षे, रोम रोम में अमृत वरसे ॥ आ० ॥ १ ॥ निरखे इंदो रे अवधि, दीठा प्रभुने ज्ञाननी लवधि। वंदी चिंते रे मनमें, अचरिज पाम्यो अतही तन में ॥ आ० ॥ २ ॥ नीचा कुल में रे आवे, पण उत्तम पुरुषां जन्म न पावे। जिनपति चक्री रे देवा, सुरपति साधे एहनी सेवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ तो हवे माहरू रे काम, हरिण-गमेषीने तेड़े ताम। देवानंदा रे कूंख थी लेइ, त्रिशला कूंखे आणा देइ ॥ आ० ॥ ४ ॥ पूरव भवने रे जोगे, संहरी मेली भयो देवलोगे। रात्रि व्यासी रे वसिया, त्रिशला उदरे व्यासीमी धसिया ॥ आ० ॥ ५ ॥ उत्तम सुपना चौदे निरखे, त्रिशला जागी मनमें हर्षे। प्रथम कल्याणक रे गायो। 'सूरिराजेन्द्र' ने सुखमें ध्यायो ॥ आ० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका। भवि सदा शुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्यैरर्चयामि स्वाहा ॥ १ ॥

जन्मकल्याणकपूजा—दोहा

द्वितीय कल्याणक पूजतां, प्रगटे जग उद्योत।
पुत्र प्रमुख ऋद्धि लहे, भवि भावे भल होत ॥ १ ॥

ढाल ३, राह छुलानी

जिनारे त्रिशला जागी, चितमें ध्यावे सुपना रे-अति हर्ष प्रसग, त्रिशला, श्रीकार ॥ १ ॥ जिनारे हसगति करी, चालती विलब न करती रे-गइ निज पति धाम, हस०-विचार ॥ २ ॥ जिनारे वोहे नृपति, आणा लईने बेठी रे-कही निज चित वात-वोहे०, आनद ॥ ३ ॥ जिनारे सिद्धारथ पण, सुपन सुणीने हरखे रे-कहे अर्थ श्रीकार-सिद्धा०, आधार ॥ ४ ॥ जिनारे सपति कारण, शूरो गुणगण पूरो रे-होशे पुन आधार-सपति०, सुसाच ॥ ५ ॥ जिनारे सूरज उदये, मल्लयुद्ध करी राजा रे-करे स्नान सिणगार-सूरज०, विशाल ॥ ६ ॥ जिनारे सभा करीने, सुपनपाठकने तेडे रे-पूछी सुपन विचार-सभा०, सुजाण ॥ ७ ॥ जिनारे त्रीश महा, सुपनातर चौदे सुपना रे-अति सुखना दातार-त्रीश०, जयकार ॥ ८ ॥ जिनारे इण सुपना से, 'सूरिराजेन्द्र' सुत होशे रे-शिवसुख देनार-इण०, उदार ॥ ९ ॥

दोहा

सुपनपाठक कहे नरपति, सुपनानो फल सार ।
चक्री तीर्थपति तथा, होशे सुत सुकुमार ॥ १ ॥

ढाल ४, साहिबा शांतिजिनेश्वर देवके, ए राह.

सुखकर—सुपन अरथ श्रीकार के, त्रिशला हर्षमें रे लो। सु०—गर्भतणी प्रतिपाल के, करे ऋतु वर्ष में रे लो॥ सु०—अनुकंपा करी नाथ के, निश्चल तनु करे रे लो। सु०—त्रिशला शोक अपार के, गर्भ गले मरे रे लो॥ सु०॥ १॥ सु०—सखी मुख सुणी नरनाथ के, वाजित्र वरजीया रे लो। सु०—आणी दया दिल चंग के, अंग संचालिया रे लो॥ सु०—नाण तीन करी युक्त के, अभिग्रह जिन करे रे लो। सु०—गरभ सातमें मास के, नियुक्ति इम वरे रे लो॥ सु०॥ २॥ सु०—दोहला उपजे जेह के, शक्रेन्द्र पूरवे रे लो। सु०—ग्रीष्मनो पहेलो मास के, संकट सहु हरे रे लो॥ सु०—मधुसुदि तेरस रात के, प्रमुदित मेदिनी रे लो॥ सु०—शुभवायु घडी श्रीकार के, उत्तराफाल्गुनी रे लो॥ सु०॥ ३॥ सु०—चंद्रयोगे जिनजन्म के, हुआे जीव सुख लहे रे लो। सु०—नारकी क्षण सुख थाय के, आवश्यक कहे रे लो॥ सु०—दिग्कुमारी करे जन्म के ओच्छव हर्षसुं रे लो। सु०—'सूरिराजेन्द्र' नी भक्ति के, सुर करे भावसुं रे लो॥ सु०॥ ४॥

काव्य और मन्त्र.

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका

भवि सदा शुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने जन्मकल्याणके अष्टद्रव्यैरर्चयामि स्वाहा ॥ २ ॥

दीक्षाकल्याणकपूजा—दोहा

जन्म समे आसन चले, चोसठ इन्द्र समग्ग।
सुरगिरि महोच्छव कारणे, आवे छोड़ी सग्ग ॥ १ ॥

ढाल ५, रसीला राज कुमार रे, ए राह

मिलिया इन्द्र समाज रे,
प्यारा प्रभुने लइने । मि० ॥ टेर ॥

क्षीरोदक सहु तीर्थ जले करी, नवरावे जिनराज रे ॥ प्या० ॥ १ ॥ इन्द्राणयों कहे जुग जुग जीवो, जन्म सफल अम आज रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ जननी पासे थापी नंदीश्वर, करे अठाई ठाट रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सिद्धारथ वधाई दइने, करे दशोदण ठाट रे ॥ प्या० ॥ ४ ॥ सर्व-प्रकारे वृद्धि लहीने, नाम दियो वर्द्धमान रे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ आमलकी-क्रीड़ा लेखशाले वली, पूरण विद्या निधान रे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ परणी भोगावली भोग भोगव्या, तीस वरस गया ताम रे ॥ ॥ प्या० ॥ ७ ॥ लोकान्तिक सुर बोधे

ज़िनजी, जय जय नंदा स्वाम रे ॥ प्या० ॥ ८ ॥ भोगकर्म क्षय जाणी पोते, दिये संवच्छरी दान रे ॥ प्या० ॥ ९ ॥ तीनसो क्रोड़ अठ्यासी क्रोड़, लाख असी परमान रे ॥ प्या० ॥ १० ॥ नंदीवर्द्धन वर वरिया घोषणा, भोजन वंछित पूर रे ॥ प्या० ॥ ११ ॥ दीक्षा ओच्छव हवे कहुँ प्यारे, 'सूरिराजेन्द्र' दुःख दूर रे ॥ प्या० ॥ १२ ॥

दोहा

इन्द्र चोसठों आविया, दीक्षा समयने देख ।
चंदप्पह नामा सीविया, निरयुक्ति में लेख ॥ १ ॥

ढाल ६, गिरनारी जावां, ए राह

दीक्षा ओच्छव धार लीजो हे संहिया ! मोरी वीर प्रभुनो आज दीक्षा० ॥ टेर ॥ दीक्षा कल्याणक पूजजो हे माय, संहिया मोरी तीरथपति शिरताज—आडंबर देख लीजो हे, आ०, सं०—वी० ॥ १ ॥ वाजा छत्रीश वाजिया हे माय, सं०—क्षत्रियकुंड मझार—आवो सखी भाल लीजो हे, आवो० ॥ सं० वी० दी० ॥ २ ॥ अष्टमंगल आगे वहे हे माय, सं—पालखी बेठा वीर—धीर तुमे जोय लीजो हे, धीर० सं०—वी दी० ॥ ३ ॥ जय जय नंदा बोलता हे माय, सं०—क्षत्रीवर वृषभ समान—हाथ तुमे जोड़ लीजे हे, हाथ०

सं० वी० दी०॥४॥ ज्ञातक्षत्री वनखंड में हे माय, सं०-अशोक वृक्ष तल आय-संयम दिल मांहीं, भींजो हे, संयम०॥ सं० वी० दी० ॥ ५ ॥ पंचमुष्ठि करे लोचने हे माय, सं०-सामायिक चोथो नाण-वंदन जिन जाय कीधो हे, वंदन० ॥ सं० वी० दी० ॥ ६ ॥ मृगसिरवदि दशमी दिने हे माय, सं०-'सूरिराजेन्द्र' छद्मस्थत्रीजो ए मान लीजो हे, त्रीजो० ॥ सं० वी० दी ॥ ७ ॥

काव्य और मंत्र

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका । भवि सदा शुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने दीक्षाकल्याणके अष्टद्रव्यैरर्चयामि स्वाहा ॥ ३ ॥

केवलकल्याणकपूजा—दोहा

दीक्षा लईने वीरजिन, त्यांथी कर्यो विहार ।
नंदीवर्द्धनने कही, कुमारगामने वहार ॥ १ ॥

ढाल ७, राह नानडियानी

तुमे ज्ञान चरित्रनां दरिया, प्रभु भवसागर सेजे तरिया, माहरे आंगणे गोचरी वहोरेण आवे रे जिनवरिया ॥ टेर ॥ कोल्लाग सन्निवेशमां रे, घर बाहुल ब्राह्मण आय रे जि०

छट्ठ पारणो क्षीरनो रे, करे कांसीपात्र सुहाय रे जि० । तु० ॥ १ ॥ पंच दिव्य प्रगटे तिहाँ रे, थयो दिव्यध्वनिनो नाद रे जि० । गोपादिक उपसर्ग में रे, प्रभु विचरे तजिने प्रमाद रे जि० ॥ तु० ॥ २ ॥ शूलपाणी संगमतणा रे, उपसर्ग सहे बहु जेह रे जि० । खीला कानमें घालीया रे, तिहाँ नवि चलिया गुण गेह रे जि० ॥ तु० ॥ ३ ॥ वरस साढी चारे रह्या रे, प्रभु छउमत्थ तप कर्यो तंत रे जि० । साढ़ी तीन शत पारणा रे, जिणें कीधा धरी मन खंत रे जि० ॥ तु ॥ ४ ॥ जंभियागामने वारणे रे, उजुवालिया नदीने तीर रे जि० । गोदुह आसन ध्यानमां रे, रहे 'सूरिराजेन्द्र' वड़वीर रे जि० ॥ ५ ॥

दोहा

वैशाखसुदि दशमी दिने, केवलज्ञान प्रकाश ।
कल्याणक चोथो थयो, पूजो धरी उल्लास ॥ १ ॥

ढाल ८, गोपीचंद लडका, ए राह

है आनंद वधाई, केवल उपन्यो रे वीरजिणंदने ॥ टेर ॥
लोकालोकना भाव प्रकाशे, षट् द्रव्यना पर्याय । छानो न रह्यो भाव जगतमें, आतम ऋद्धि दिखाय ॥ है० ॥ १ ॥ साल पादपना हेठे बैठां, चौसठ इंदर आय । ओच्छव कीधो

ज्ञाननोजी कांइ, त्रिगड़ो रत्न रचाय ॥हे० ॥ २ ॥ चार निकायना देव मिल्या पण, मानव कोइ न आयो। देशना खाली गइ वीरनी, अचरिज मनमें लायो ॥ हे० ॥ ३ ॥ तिहाँथी राते विहार करीने, पावापुरी प्रभु आया। आगम विहारी छंदे विचरे, लेख सूत्रमें पाया ॥ हे० ॥ ४ ॥ समवसरणनी करी सजाई, चउ निकायना देव। प्रातिहार्य करी 'सूरिराजेन्द्र' नी, सेवा करे नितमेव ॥ हे० ॥ ५ ॥

काव्य और मंत्र

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका। भवि सदा शुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने केवलकल्याणके अष्टद्रव्यैर्यजामि स्वाहा ॥ ४ ॥

निर्वाणकल्याणकपूजा—दोहा

मोक्षकल्याणक पांचमो, पूजो भवि गुणदाय।
आतम संपति संपजे, जन्म मरण मिट जाय ॥ १ ॥

ढाल ९, नेम गिरनार गये रे, ए राह

अमृतरस वरसे रे,- अरे हां अमृतरस वरसे—वीरवचन सुनी थरके अ० ॥ टेर ॥ इन्द्रभूति अभिमान ऋद्धि धर, चल आवे जाली समभके रे। केवलज्ञानी आप विराजे,

झले भामंडल झलके—गोयम देखी हरखे रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ १ ॥ माय तजी वरे सांचो संयम, महाव्रत पंच आदरके रे। इम इग्यारे गणधार हुवा, जाणो गच्छ नव तरके—शास्त्रभेद धरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ २ ॥ चौद सहस मुनि जिनवर केरा, पूर्वादिकने गणके रे। छत्रीश सहस वर साधवी संख्या, श्रावक श्राविका भणके—संघ सहु तरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ३ ॥ सातसो मुनिवर मुक्ते पहुँता, श्रेणिक्षपकने चढ़के रे साधवी चौदेसो सिद्धि पहुँती, भावना शक्ति वढ़के—सौख्यपद वरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वलि समणे भगवं, महावीर गुण भरके रे। 'सूरिराजेन्द्र' देशना दइने, अनंत जीव भव हरके—कर्मक्षय करके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ५ ॥

दोहा

ध्यान अनल जाग्रत करी, कर्मेन्धनने ज्वाल।
सिद्धिपदने पामवा, वीर थया उजमाल ॥ १ ॥
पावापुरी नगरी विषे, हस्तिपाल राजान।
सभा में देशना कही, लीनो मुक्तिनुं ठान ॥ २ ॥

ढाल १०, सोरठ राग गिरनारो

वीरजी मोक्ष सिधाया रे मेरे को छोड़ी ॥ टेर ॥ पाप पुन्य फल दर्शक पणपन्न, शुभ अध्ययन सुणाया रे मे० ॥

ज्ञाननोजी कांइ, त्रिगड़ो रत्न रचाय ॥हे० ॥ २ ॥ चार निकायना देव मिल्या पण, मानव कोइ न आयो । देशना खाली गइ वीरनी, अचरिज मनमें लायो ॥ हे० ॥ ३ ॥ तिहाँथी राते विहार करीने, पावापुरी प्रभु आया । आगम विहारी छंदे विचरे, लेख सूत्रमें पाया ॥ हे० ॥ ४ ॥ समवसरणनी करी सजाई, चउ निकायना देव । प्रातिहार्य करी 'सूरिराजेन्द्र' नी, सेवा करे नितमेव ॥ हे० ॥ ५ ॥

काव्य और मंत्र

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका । भवि सदा शुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने केवलकल्याणके अष्टद्रव्यैर्यजामि स्वाहा ॥ ४ ॥

निर्वाणकल्याणकपूजा—दोहा

मोक्षकल्याणक पांचमो, पूजो भवि गुणदाय ।
आतम संपति संपजे, जन्म मरण मिट जाय ॥ १ ॥

ढाल ९, नेम गिरनार गये रे, ए राह

अमृतरस वरसे रे,- अरे हां अमृतरस वरसे—वीरवचन सुनी यरके अ० ॥ टेर ॥ इन्द्रभूति अभिमान ऋद्धि घर, चल आवे जाली समझके रे । केवलज्ञानी आप विराजे,

मले भामंडल झलके—गोयम देखी हरखे रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ १ ॥ माय तजी वरे सांचो संयम, महाव्रत पंच आदरके रे। इम इग्यारे गणधार हुवा, जाणो गच्छ नव तरके—शास्त्रभेद धरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ २ ॥ चौद सहस मुनि जिनवर केरा, पूर्वादिकने गणके रे। छत्रीश सहस वर साधवी संख्या, श्रावक श्राविका भणके—संघ सहु तरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ३ ॥ सातसो मुनिवर मुक्ते पहुँता, श्रेणिक्षपकने चढ़के रे साधवी चौदेसो सिद्धि पहुँती, भावना शक्ति चढ़के—सौख्यपद वरके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वलि समणे भगवं, महावीर गुण भरके रे। 'सूरिराजेन्द्र' देशना दइने, अनंत जीव भव हरके—कर्मक्षय करके रे ॥ वी० ॥ अ० ॥ ५ ॥

दोहा

ध्यान अनल जाग्रत करी, कर्मेन्धनने ज्वाल।
सिद्धिपदने पामवा, वीर थया उजमाल ॥ १ ॥
पावापुरी नगरी विषे, हस्तिपाल राजान।
सभा में देशना कही, लीनो मुक्तिनु ठान ॥ २ ॥

ढाल १०, सोरठ राग गिरनारो

वीरजी मोक्ष सिधाया रे मेरे को छोड़ी ॥ टेर ॥ पाप पुन्य फल दर्शक पणपन्न, शुभ अध्ययन सुणाया रे मे०

राजे अंढारनी राजसभा में, दुविहा भूमि धराया रे मे०
॥ वी० ॥ १ ॥ मोहवशे विलापात किये बहु, गौतमे इंर्षिपरे
मोया रे मे० । सूर्य विना ज्युं न सोहे कमलवन, तिम तुम
विन संघ छाया रे मे० ॥ वी० ॥ २ ॥ माछली जल विना
जिम अकुलावे, तिम सहु संघ अकुलाया रे मे० । हे गुण-
निधि ! जिनशासनस्वामिन् !, हे भव्यजीव ! सुग्वदाया रे मे०
॥ वी० ॥ ३ ॥ शासन के सिणगार कृपानिधि !, किम
प्रभु मोकुं तरसाया रे मे० । इत्यादि विलापात अनेका,
गौतमे वीरना गाया रे मे० ॥ वी० ॥ ४ ॥ कार्तिकवदि
अमावस रात्रि, अर्ध गये मोक्ष पाया रे मे० । भाव उद्योत
गये द्रव्य उद्योत में, दीवाली दीप जगाया रे मे० ॥ वी०
॥ ५ ॥ चोथो आरो तीन वरस वलि, अंडमास शेष कहाया
रे मे० । आयु बहोत्तर वर्ष पूरण करी, वीरनिर्वाण सुहाया रे
मे० ॥ वी० ॥ ६ ॥ कार्त्तिकसुदि एकमने प्रभाते, अनित्यादि
मन रमाया रे मे० । वैराग्यभावना थइ शुभ भावे, गौतमे
केवल उपाया रे मे० ॥ वी० ॥ ७ ॥ तीर्थ इकवीस हजार
वरस लग, चालशे संघ समुदाया रे मे० । वीरनिर्वाण पछे
लख्यो पुस्तक, नवसो एंसी वर्ष गिणाया रे मे० ॥ वी०
॥ ८ ॥ इणविधि मोक्ष कल्याणक गायो, कर्मरोगने जराया
रे मे० । 'सूरिविजयराजेन्द्र' गायने, भवसंताप मिटाया रे
मे० ॥ वी० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

"सकलसंपतिदायकनायका, जिनवरा भवभीतिविदारका। भवि सदा सुभभाव भजन्ति ये, सुरसुखं शिवशं च लभन्ति ते॥ १॥" ॐ ह्रीँ परमात्मने परमेष्ठिने मोक्षकल्याणके अष्टद्रव्यैरर्चयामि स्वाहा ॥ ५ ॥

कलश, राह पालणानी

मैं तो गाया गाया पंच कल्याणक वीरना, हरखे हरखे गावे संघ सहु सुख पाय। पूजा अष्टप्रकारी एक एकनी जे करे, तस घर मंगलमाला ऋद्धि वृद्धि बहु थाय॥ मैं० ॥ १॥ गणधर सोहमगण में तपा विरुदने धारता, वारता वारता विघन विशेषतणी जे राश। श्री जगच्चन्द्रसूरीश्वर सूर्य सरीखा दीपता, आहेडनगर में पूरी नरपतिनी आश॥ मैं० ॥ २ ॥ तास परंपर पट्ट रत्न क्षमा सूरिवरा, तदनु विजयदेवेन्द्र मुणीन्द्र विजय कल्याण। सूरिप्रमोद प्रतापी सुधा संवरी सोहता, थया जैन आगमना तत्त्वतणा ते जाण॥ मैं० ॥ ३॥ संवत त्रि[३] षट्[६] नंद[९] रसातल[१] क्रमसे जाणीए, आषाढसुदिनी दशमी स्वातिऋक्ष रविवार। 'सूरिराजेन्द्र' कल्याणक अधिके भावे पूजिये, वरत्या वरत्या मंगल जय जय जयकार॥ मैं०॥ ४॥

श्री समकित अष्टप्रकारी पूजा विधि

१ सुगंधी जल से कलश भर के, थाली में लेकर खड़े रहना और प्रथम पूजा काव्य एवं मंत्र पढाने के बाद प्रभु प्रतिमा को अभिषेक करके अंगलूहणा से पोछ कर केसर से पूजा करना। इसी प्रकार दूसरी पूजा में केसर, तीसरी पूजा में फूल, चौथी पूजा में धूप, पाचवीं पूजा में दीपक, छठी पूजा में अखंड अक्षत, सातवीं पूजा में नवेद्य, और आठवीं पूजा में फल लेकर खडे रहना तथा हरएक पूजा काव्य और मंत्र भणाए बाद प्रभु पूजा करना, दीपक और नैवेद्य तथा फल प्रभु के आगे चढाना, अक्षतों का स्वस्तिक करना। अन्त में कलश भणा कर आरती मंगल दीपक उतार कर के स्नात्रिऐं चैत्यवंदन करे।

विशिष्ट महोत्सव पूर्वक इस पूजा को भणाने की भावना हो, तो पहले दिन जलयात्रा का समारोह निकाल कर, जलाशय से सविधि जल के आठ कलश लाकर, पूजा पढाने के सुसज्जित स्थान पर चाँवल के आठ साथिए कर के उन कलशों की स्थापना। पूजा में पंचामृत के लिए यही जल वापरना। दूसरे दिन आठ थालियों में श्रीफल, मोदक, सोपारी, घृत और शक्कर से भरी कोपरावाटकी, फल प्रतिमाजी के क्रम से एक एक रखना। खारक, बादाम, और मिश्री आदि यथाभावना रखना, पंचामृत से भरे कलश और धूपधाणे आदि आठ आठ रखके पूजा पढाने वाले श्रावक के घर चन्द्रवा ढांक कर रखना। प्रति पूजा में घृत दीपक आठ, आठ जाति के धान्य के आठ ढिगले, चांवलों के आठ साथिए, आठ बत्ती का दीपक, आठ अंगलूहणे और आठ स्नात्रिए तथा आठ
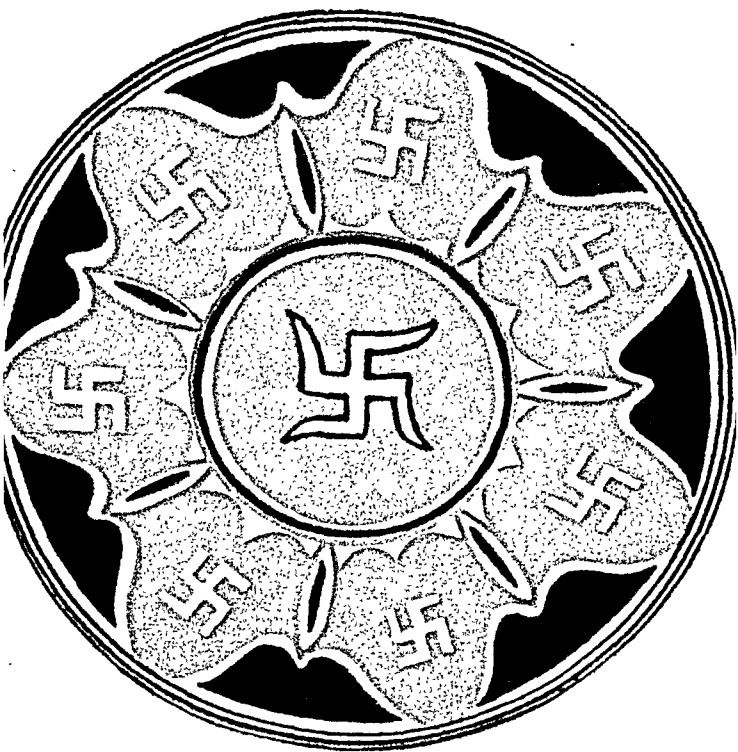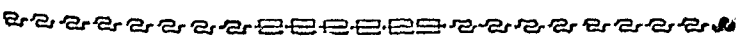
३ श्रीसमकिताष्टप्रकारीपूजा—मंडल.
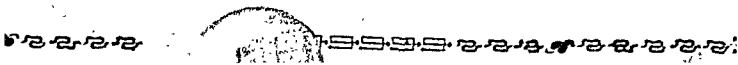
स्नात्रणियाँ बनाना। बाद में पूजा पढ़ाने वाले श्रावक के घर से बाजते गाजते प्रतिपूजा की थाली स्नात्रणियों से मंगवाना और पूजा, काव्य और मंत्र भणाने के बाद थाली की वस्तुएँ चढ़ाना !

पूजा समाप्त होने के बाद आरती मंगल दीपक उतार कर स्नात्रियों और स्नात्रणियों को चैत्यवंदन करना। पूजा भणाने वाले को यथाशक्ति प्रभावना तथा स्वामिवात्सल्य भी करना चाहिए।
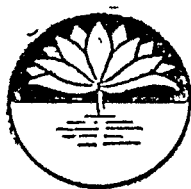
स्नात्रणियाँ बनाना। बाद में पूजा पढ़ाने वाले श्रावक के घर से बाजते गाजते प्रतिपूजा की थाली स्नात्रणियों से मंगवाना और पूजा, काव्य और मंत्र भणाने के बाद थाली की वस्तुएँ चढ़ाना !

पूजा समाप्त होने के बाद आरती मंगल दीपक उतार कर स्नात्रियों और स्नात्रणियों को चैत्यवंदन करना। पूजा भणाने वाले को यथाशक्ति प्रभावना तथा स्वामिवात्सल्य भी करना चाहिए।

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरीश्वरजी म० रचित

श्री समकित-अष्टप्रकारी पूजा

प्रथमपूजा—दोहा

सकल सिद्धि वर दायका, चोवीशे जिनचंद ।
विहरमान जिन विचरता, प्रणमुं धरी आनंद ॥ १ ॥
वंदु वीर जिणंद ने, जे शासन सिणगार ।
अपराधी पिण उद्धर्या, करी समकित उचार ॥ २ ॥
भावदया दिल में धरी, जन्म समे पिण तेण ।
चरण अंगूठे कंपावियो, मेरु महीधर जेण ॥ ३ ॥
तम पदपद्म पूजा रचे, अमर निकर मनुहार ।
समकित तरुवर सींचने, पामे भवजल पार ॥ ४ ॥
समकित शुद्धि कारणे, पूजा अष्ट प्रकार ।
द्रव्य भाव निहुँ भेदथी, विरचे भवि श्रीकार ॥ ५ ॥
न्हवण विलेपन सुमननी, धूप दीप जसकार ।
अक्षत-अखंड निवेदनी, अष्टमी फल मनुहार ॥ ६ ॥
समकितथी सुख संपजे, समकित शिवसुख मूल ।
इन्द्र नरेन्द्र पद तुम समा, जिनपदवी फल फूल ॥ ७ ॥

तिण कारण जिनराजनी, करतां भक्ति उदार ।
निश्चे पामे प्राणिया, सुलभबोधि संसार ॥ ८ ॥

ढाल १, हो धन्ना, ए राह

गंगा क्षीरसमुद्रना रे अप्पा, जल कलशा भरी सार । न्हवण करे जिनवीरने रे अप्पा, तरवा भव संसार रे ॥ 'सुज्ञानी अप्पा ए प्रभु ध्यावोने । ए प्रभु ध्यावो ध्यानमां रे अप्पा, जिम लहो समकित शुद्ध रे सु०' ॥ टेर ॥ इगविध द्विविधे त्रिविधे रे अप्पा, चउविध पंचविध जाण । दशविध वलि जिन दाखीयो रे अप्पा, समकित सुरतरु ठाण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ एकविध जिन आणा रुचि रे अप्पा, दुविहा द्रव्य ने भाव । निश्चे ने व्यवहारथी रे अप्पा, द्विविध भवजल नाव रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सद्दहणा शुचि सूत्रनी रे अप्पा, परमारथथी अयाण । समकित द्रव्यथकी कह्यो रे अप्पा, भावथी तत्त्व वखाण रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ मिथ्या पुद्गल शुद्धनुं रे अप्पा, वेदन समकित द्रव्य । भावथी तत्वरुचिपणु रे अप्पा, तत्त्वरुचि परभाव रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पुद्गलरूपी पुद्गली रे अप्पा, ए पिण द्विविध देख । क्षयोपशम वेदक पुद्गली रे अप्पा, शेप अपुद्गल लेख रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ ज्ञानादिक निज आत्मनुं रे अप्पा, निश्चय समकित नाम । अथवा समकित आत्मा रे अप्पा, गुणगुणी अभेदने ठाम

रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ पूज्यनी पूजा रचतां थकां रे अप्पा, जो हुवे साहिब महेर । 'धनमुनि' पद पामीए रे अप्पा, समकितनी लही लहेर रे ॥ सु० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रशमकान्तिविजृंभणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुबोधिमुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय विलेपन पूजा—दोहा

संवर मिथ्यात्वी तणो, त्यागादिक व्यवहार ।
निसर्ग अधिगम भेदथी, विहुँ भेदे वलि धार ॥ १ ॥
तिण तेहिज विध साधवा, केसरनो करि घोल ।
त्रिशलानंदन पूजतां, रंग अभ्यंतर चोल ॥ २ ॥

ढाल २, आचारज पद पूजिये रे मन मोहनजी

बीजी चंदन पूजना जग सोहनजी, करे भवि केसर घोल, मनने मोजे रे० ज० । लोकोत्तर फल पामवा ज०, समकितसुं रंगरोल म० ज० ॥ १ ॥ मारग भूल्यो पंथीयो ज०, भमतो

मारग ठाय म० । कोइक उपदेश योगथी ज०, कोइक थाग न पाय म० ज० ॥ २ ॥ ज्वर पिण औषध सहज थी ज०, जाये एक न जाय म० । मारग ज्वर दृष्टांतथी ज०, समकित प्राप्ति थाय म० ज० ॥ ३ ॥ जातिसमरण जोगथी ज०, पावे निसर्ग विचार म० । गुरु उपदेशथी आवियु ज०, ते अधिगम चित धार म० ज० ॥ ४ ॥ कारक रोचक भेदथी ज०, दीपक त्रिविध उदार म० । अथवा उपशम क्षय उपशमे ज०, क्षायक भेद प्रकार म० ज० ॥ ५ ॥ जिम प्रभु भाष्यु तिम करे ज०, तस कारक ते खास म० । धर्मरुचि रोचक कह्यो ज०, नहीं किरिया अभ्यास म० ज० ॥ ६ ॥ पोते मिथ्यादृष्टि थको ज०, धर्मकथा कही सार म० । दीपक परे पर दीपवे ज०, ते दीपक उपचार म० ज० ॥ ७ ॥ सेवक स्वामी भावथी ज०, होवे स्वामि-स्वरूप म० । श्रीजगनाथनी सेवना ज०, सारे 'धनमुनि' भूप म० ज० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

"प्रशमकान्तिविजृम्भणभास्करं दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुबोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय विलेपनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय—पुष्पपूजा, दोहा

ते समकितनी फरसना, जे जिन पामे जीव ।
प्रभु रचना ए वरणवु , अनुभव अमृत पीव ॥ १ ॥
मालति जाई फूलथी, जो पूजे जिनभाण ।
समकित शुद्धि ते लही, पामे पद निरवाण ॥ २ ॥

ढाल ३, ओरा ? आवा ? कहु एक वातलडी, ए राह

मन मोहन आवो रे, अम घर दो घडियाँ । तुज आगल कहिये रे, वीतक वातडीयाँ ॥ १ ॥ अव्यवहार नामे रे, नगरी एक वसी । आ लोक आकाशे रे, रह्यो हुँ अविनाशी ॥ म० ॥ २ ॥ तिहाँ गोलक नामे रे, असख्य प्रासाद अछे । ते काल अनादि रे, अनतनो वासव छे ॥ म० ॥ ३ ॥ एक एक प्रासादे रे, निगोद एवे नामे । असख्य ते ओरा रे, एक एकने ठामे ॥ म० ॥ ४ ॥ सम आहार निहारी रे, मिश्री लोक वसे । तिहाँ जीव अनता रे, अज्ञानने फास फसे ॥ म० ॥ ५ ॥ पुग्गलपरियट्टा रे, अनता तिहाँ कीधा । मूर्छितना प्याला रे, बहुला तिहाँ पीधा ॥ म० ॥ ६ ॥ ससारे भमतां रे, मिथ्या जोग मल्यो । पिण समकित दामक रे, साहिब नाहीं मल्यो ॥ म० ॥ ७ ॥ अरिहानी आणा रे, पूजा जो करिये । मिथ्यामत मेटी रे, 'धनमुनि' भव तरिये ॥ म० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

"प्रशमकान्तिविजृंभणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम्। समसुवोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थी धूपपूजा, दोहा

इम अव्यवहारनी राशि में, वसियो काल अनंत ।
सतरे भव भाभा किया, श्वासोच्छ्वास में तंत ॥ १ ॥
क्षुल्लकभवने निवर्त्तवा, धूपघटा धरी हाथ ।
समकित शुद्धि कारणे, पूजो श्रीजगनाथ ॥ २ ॥

ढाल-४, राह झूमखानी

परमातम पूजा रचे रे, अगर धूप धरी हाथ । जिनपद पूजीये रे, ए प्रभुनी पूजा विना रे, भमियो भवोदधि पाथ ॥ जि० ॥ १ ॥ कर्म परिणाम आदेशथी रे, तादृश भव्यता योग जि० । व्यवहार राशिए वस्यो रे, काल अनंत नियोग ॥जि० ॥ २ ॥ पृथिवी पाणी तेजमां रे, अनिल अने त्रस जंत जि० । काल असंख हुं तिहाँ वस्यो रे, तुम पाखे अरिहंत ॥ जि० ॥ ३ ॥ मनुष्य जन्म वलि पामियो रे,

मिथ्यामतने जोर जि० । हरि हर देव करी मानीया रे, सेव्या कुगुरु चोर ॥ जि० ॥ ४ ॥ छेदन भेदन ताडना रे, भूख तृषा गुरु भार जि० । जन्म जरा गर्भवासना रे, दुख बहुलां निरधार ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम भवचमतणां बहु रे, दुःख भोगवियां तास जि० । दीन दया करी दीजिये रे, तुम चरणे मुज वास ॥ जि० ॥ समरथ साहिब आगले रे, नाच नच्यो बहु भाँत जि० । रींझो तो शिवसुख दीजिये रे, नहीं तो वरजो नाथ ॥ जि० ॥ ७ ॥ सहजानंद घर में जइ रे, करस्युं साहेली रंग जि० । वीर चरण मन मोजमां रे, रहीशुं 'धनमुनि' संग ॥ जि० ॥ ८ ॥

काव्य और मंत्र

"प्रशमकान्तिविजृंभणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुनोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचमी दीपकपूजा, दोहा

मिथ्यातिमिर हठाववा, समकित सुकृत ज्योत ।
त्रिशलानंदन आगले, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥

चउगति भवदुख फरसियो, जीव अनंत अनाण ।
पुद्गल परावर्त्त एकनो, राखी स्थिति तिण ठाण ॥ २ ॥
मग्गानुसारीपणु' लहे, न्याय निभव संशुद्ध ।
मित्रादृष्टि अवसर लहे, पूजे जो भवि बुद्ध ॥ ३ ॥

ढाल ५, द्वेष न धरिये लालन द्वेष न धरिये—ए राह

दीपकपूजा चतुर रचावे, मिथ्यातिमिर ते दूर नशावे-भविका दूर नशावे । चिहुँ गति केरा दुखड़ा हठावे, ज्योति से ज्योति जिम मिलावे-भ० जि० ॥ १ ॥ भव्यपणादिकने परिपाके, गिरिसरि उपल न्यायने टांके-भ० न्या० । अध्यवसाय विशेष करण जे, अनाभोगथी थाये ते सहजे-भ० था० ॥ २ ॥ त्रिविधे पहिलु' कारण ते भाख्यु', यथाप्रवृत्ति नाम ए दाख्यु'-भ० ना० । बीजु' अपूर्व नामे ते कहिये, अनिवृत्ति ते त्रीजु' सद्दहिये-भ० त्री० ॥ ३ ॥ यथाप्रवृत्ति करणे आयु विण, साते कर्मस्थिति करे ते खीण भ० क० । इग पल असंख भागे स्थिति हीण, सागर कोडाकोडी शेष प्रवीण-भ० शे० ॥ ४ ॥ करकस निविड गंठि जग जाणो, भेदन दुक्कर तेहनो ठाणो-भ० ते० । राग दोष घन जीव परिणाम, कर्मजनित घन गंठीने ठाम-भ० गं० ॥ ५ ॥ ते ग्र'थी नवि भेदी प्राणी, प्रगट संसारनी एह निशाणी-भ० ए० । वार अनंती अभवि पिण आवे, ग्र'थी लगे पिण

भेद न थावे–भ० भे० ॥ ६ ॥ विण समकित तप जपनी किरिया, करता पिण मुनि भव भव रुलिया–भ० भ० । श्री जिनराजनी सेवना सारे, 'धनमुनि' दुखडा दूर निवारे–भ० दु० ॥ ७ ॥

काव्य और मंत्र

"प्रशमकान्तिविजृंभणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुबोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म–जरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा—दोहा

भव्य अभव्य ग्रंथी रहे, संख्य असंख्य ते काल ।
तीर्थंकर ऋद्धि देखके, संजम में उजमाल ॥ १ ॥
सामायिक द्रव्य श्रुत लहे, शेष लाभ नहीं तास ।
ग्रैवेयके जइ ऊपजे, पिण नहीं शिवपुर वास ॥ २ ॥
अक्षतपूजा जिनतणी, करण अपूर्व थाय ।
मिथ्याग्रंथी भेदता, अनिवृत्तिकरणे जाय ॥ ३ ॥

ढाल ६, पथडो निहालु रे बीजा जिनतणो रे—ए राह

सेवना तो कीजे रे, चरम जिनेशनी रे, चरमावर्तन हेत ।

अक्षतपूजा अक्षय आतमा रे, परमानंद समेत ॥ से० ॥ १ ॥ जिम ते निशित कुठार धारे करी रे, भेदे वल मनोहर । करण अपूर्व परम विशुद्धथी रे, तिम ते ग्रंथि प्रहार ॥ से० ॥ २ ॥ अंतमुहूर्त्त माहे भेदीने रे, अनिवृत्ति करणे ते जाय । पंथी तिहुं वलि चार दृष्टांतथी रे, करण प्रवेशे ते थाय ॥ से० ॥ ३ ॥ मिथ्यामोहनी स्थिति तेहनु रे, अंतर मुहूरत एक । उदय क्षण ऊपरे उलंघने रे, ते समरथ सुविचेक ॥ से० ॥ ४ ॥ ऊखरभूमि ठाम ते पामीने रे, वन दव सहज ओलाय । तिम मिथ्या दल वेदन दव समो रे, अंतरकरणथी थाय ॥ से० ॥ ५ ॥ अंतरकरण ते करतां मिथ्यात्वनी रे, थिति युग कहे जिनभाण । अंतरकरण थकी थिति हेठली रे, पहिली मुहूरत मान ॥ से० ॥६॥ ऊपरली थित बीजी तेहथी रे, तिहां प्रथम थिति जाण । मिथ्यादलिकनु वेदन तेहथी रे; मिथ्यादृष्टि वखाण ॥ से० ॥ ७ ॥ ते थिति अंतर मुहूरत नाशथी रे, नहीं मिथ्यादल वेद । प्रथम समय तिहाँ अंतरकरणने रे, लहे उपशम निरवेद ॥ से० ॥ ८ ॥ परमानंद मगन भट जिम हुवे रे, जीति कटक अशेष । तिम ते हरषे जीव सदागमे रे, समकित आगम देख ॥ से० ॥ ९ ॥ लीलविलासी सुखनो लाडलो रे, त्रिशलानंदन स्वाम । समकित मंत्री सदामम मेलवो रे, "धनमुनि' पद [illegible] ॥ १० ॥

काव्य और मंत्र

"प्रशमकान्तिविजृंमणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुबोधिसुसंवरकारण, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी नैवेद्यपूजा—दोहा

समकित सुखडी चाखवा, मेटवा मिथ्या जाल ।
त्रिशलासुत आगे ठवे, शुचि निवेदनो थाल ॥ १ ॥
दर्शन मोह विनाशथी, लही निर्मल गुणठाण ।
पंच प्रकारे प्राणिया, समकित लहे गुणखाण ॥ २ ॥

ढाल ७, आयो जमाई प्राहुणा—ए राह

मिथ्यामोहनी उपशमे मनमोहनजी, उपशम समकित ठाण जगसोहनजी । ग्रंथी भेदे धुर कह्यु म०, उपशमश्रेणी सुजाण ज० ॥ १ ॥ मिथ्यानाश उदीरणा म०, सम अनुदीरण ठाम ज० । उपशम क्षयथी ऊपजे म०, क्षय उपशम समकित नाम ज० ॥ २ ॥ शुद्ध अशुद्ध मिहुँ पुंजना म०, विपाक प्रदेशे वेद ज० । क्षय उपशम जिनजी कह्युं म०, उपशम कह्युं निर्वेद ज० ॥३॥ क्षायक त्रीजुं नीपजे म०,

त्रिविध मोह विनाश ज० । श्रेणि क्षपक चढ़तां थकां म०, पामे शिवपुर वास ज० ॥ ४ ॥ अण चउ दुग मिच्छा तणा म०, पुंज खपाव्या होय ज० । शुद्ध पुंज खपतां तिहाँ म०, अंतिम पुद्गल जोय ज० ॥ ५ ॥ तस वेदन तेहनुं कह्युं म०, वेदक चोथुं नाम ज० । वमतां उपशम पांचमुं म०, सास्वादन गुणधाम ज० ॥ ६ ॥ इम समकितनी भावना म०, पूजो जगत दयाल ज० । समकित सुखड़ी चाखीए म०, 'धनमुनि' ध्यान कृपाल ज० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

"प्रशमकान्तिविजृंभणभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् । समसुबोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी फलपूजा—दोहा

अनादि अनंत थिति मेटवा, सादि अनंत थिति काज ।
क्षायक फलने पामवा, फलपूजा जिनराज ॥ १ ॥
उपशम थिति जिन भणी, अंतमुहूर्त्त प्रमाण ।
सास्वादन षट् आवली, वेदक समयनी जाण ॥ २ ॥

क्षायक तेत्रीश सागरा, साधिक कहे जिनचंद ।
क्षय उपशम समकित थिति, छासठ अयर महिंद ॥ ३ ॥
साम्वादन उपशम हुवे भव भमतां पच वार ।
चार असख क्षय उपशमे, क्षायिक वेदक इक धार ॥ ४ ॥
चोथा गुणठाणा थकी, उपशम अड गुणठाण ।
चोथाथी ते चौदमे, क्षायक होय गुणखाण ॥ ५ ॥
चोथाथी गुण सातमे, क्षयोपशम वेदक होय ।
सास्वादन बीजे हुवे, अवर ठोर नवि जोय ॥ ६ ॥
हिवे समकित पाम्या पछे, विरति देश ने सर्व ।
क्षायक फल जव सपजे, पूजे जिन विण गर्व ॥ ७ ॥

ढाल ७, सांभल रे तु सजनी मोरी, ए राह

फल पूजा करे विधिशुत भावे, क्षायक फल ते पावेजी रे । सजी सिणगार नर नारी अनोपम, समकित फल गुण गावे ॥ १ ॥ जिनपद पूजोजी रे, जिनपद पूजो पापथी भ जो, मिथ्या मोहदल छीजो जि० ॥ टेर ॥ सागर कोडाकोडी हीणी, पलिय पहुत थिति खपता जी रे । दर्शनथी देशविरति थावे, प्रभु पूजा दिल लावे ॥ जि० ॥ २ ॥ सख्यात सागर तेमांथी ऊणी, करता चरण ते आवेजी रे । सख्यात सागर वलि हीणी करता, उपशमश्रेणे जावे ॥ जि० ॥ ३ ॥ सख्यात सागर तेथी ओछी करता, क्षपकश्रेणी पडिवजीएजी

रे । क्षायक भाव लही फल उत्तम, केवल कमला वरिये ॥ ॥ जि० ॥ ४ ॥ अंतर मुहुरत अंतर करीने, जघन थिति वलि थावेजी रे । उत्कृष्ट अर्द्ध पुग्गल परियट्टण, भमे संसार विभावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पवयण श्रुत गणधर, आचारिज ऋद्धिवंताजी रे । आसायण एहनी बहु करतां, दीर्घ संसार तस हुंता ॥ जि० ॥ ६ ॥ नाना जीव आश्रित नवि होवे, अंतर समकित लेशजी रे । आवश्यकवृत्ति में इम बोले, सूरिहरिभद्र विशेष ॥ जि० ॥ ७ ॥ सहज उपदेशथी दशविध होवे, उपशम आदि पंचजी रे । अथवा निसर्गरुच्यादिक भेदे, दशविध समकित संच ॥ जि० ॥ ८ ॥ निसर्ग उवेश आणारुचि सुंदर, सूत्र बीज रुची सारजी रे । अभिगम वित्थर किरिया रुचिवर, धर्म संखेव रुचि धार ॥ जि० ॥ ९ ॥ जाति समरण बुद्धि विनाणथी, जे जिनभाव ते दिट्ठजी रे । ते ते सहज स्वभावथी सद्दहे, निसग्गरुचि कहिये सिद्ध ॥ जि० ॥ १० ॥ जिन आगम भाषित जे भावा, गुरु उपदेशे जाणीजी रे । ते ते अवितथ भावे सद्दहे, उपदेशरुचि परमाणे ॥ जि० ॥ ११ ॥ त्रण दोष रहित परमातम, ते नवि झूठो बोलेजी रे । आज्ञारुचि गुरु आणे चरते, मासतुषने तोले ॥ जि० ॥ १२ ॥ सूत्रसिद्धांतनी श्रवणरुचि बहु, जिम जिम श्रुत अवगाहेजी रे । तिम तिम समकित पामे प्राणी, ... वाचक जिम चाहे ॥ जि०

॥ १३ ॥ एक पदार्थ गुरुमुख सुणिने, सर्वपदे विस्तारे जी रे। उदक तेल बिंदु दृष्टांते, बीजरुचि निस्तारे ॥ जि० ॥ १४ ॥ अंग उपांगादिक सवि श्रुत ने, अर्थ थकी अवधारे जी रे। गंभीर अर्थ अवधारण ईहा, अभिगम रुचि भव वारे ॥ जि० ॥ ॥ १५ ॥ गुणपर्याय द्रव्यनो जाणग, नय परिमाण प्रवेशे जी रे। स्याद्वाद सैलीनो रसियो, विस्थररुई निवेशे ॥ १६ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनये, सुमति गुप्ति बहु रंगजी रे। क्रियाभावमें चाह घणी तस; किरियारुचि अभंग ॥जि०॥१७॥ संक्षेपरुचि आगम अविशारद, सरलगुणे संयुत्त जी रे। कुमति कुदृष्टि कदाग्रह छंडे, जेम चिलातिपुत्त ॥ जि० ॥ १८ ॥ सूत्र धर्म अरु चारित्र धर्मने, बाह्य अंतर प्रकाशजी रे ॥ समाव विभाव स्वरूपने जाणे, धर्मरुचि कही तास ॥ जि० ॥ १९ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन अडवीसे, दर्शन दशविध एहजी रे। श्रीजिनराज महाराजे प्रकाश्युं, 'धनमुनि' चित धरे तेह ॥ जि० ॥ २० ॥

काव्य और मन्त्र

"प्रशमकान्तिविजृंभणाभास्करं, दुरितसन्ततिचारनिवारणम् समसुबोधिसुसंवरकारणं, जिनपतिं विमलं भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥" ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

अंतिमसर्वद्रव्यपूजा, दोहा

चउविध दशविध पंचविध, षडविध मिथ्या त्याग ।
समकित गुण भवि संपजे, जो पूजे वीतराग ॥ १ ॥
जेटली दुखनी जाति छे, तेटला दुखना हेतु ।
व्याधि मृत्यु दारिद्र पुनि, मिथ्या सेवन केतु ॥ २ ॥
कोप्यो दुश्मन राज पुनि, कोप्यो व्याल वैताल ।
जे नवि करे ते करी शके, मिथ्या सेवन व्याल ॥ ३ ॥
आत्म सुखार्थी जीवने, करवो, मिथ्या शोध ।
अडविधे प्रभु पूजतां, पामे अड गुण बोध ॥ ४ ॥

ढाल ९, तिरथनी आशातना—ए राह

समकित सुरतरु सेवना, भवि करिये । भवि करिये रे भ०, तेथी मोह मिथ्या दल हरिये, वरिये शिव नार ॥ स० ॥१॥ निःशंकित गुण मोटको चित धरिये, हां रे प्रभुपूजाए शंका न धरिये । जिन आगम भाव सद्दहिये, करी सूक्ष्म विचार ॥ स० ॥ २ ॥ अन्य दर्शननी उन्नति दुख खाणी, हां रे ते तो कांक्षदोषे गवाणी । तेना कष्टमंत्र गुण गाणी, वरजे समकित वंत ॥ स० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विहुं भेदथी पूजा कीधी, हां रे पिण फल प्राप्ति नवि सिद्धि । तजो धर्म संदेह फलसिद्धि, धरी शम दम भाव ॥ स० ॥ ४ ॥ सूक्ष्मविचार आगमतणा दिल धारो, हां रे तमे मूढदृष्टि दोष वारो । जिन

श्री समकित सतसठभेदी पूजा विधि—

प्रथम पूजा में जल कलश, दूसरी पूजा में बरास मिली घिसी हुई केसर, तीसरी पूजा में वासचेप, चौथी पूजा में फूलों की माला पांचवीं पूजा में फूल, छट्ठी पूजा में धूप, सातवीं पूजा में दीपक, आठवीं पूजा में आभूषण, नवमी पूजा में, दर्पण, दसवीं पूजा में ध्वजा और अक्षत, ग्यारहवीं पूजा में कुसुमगृह, बारहवीं पूजा में नैवेद्य का थाल, और तेरहवीं पूजा में विविध जाति के फलों से भरी थाली लेकर खड़े रहना। पूजा काव्य और मन्त्र भणाने के पश्चात् चढ़ाते जाना। पूजा समाप्त होने के बाद अन्त में "कलश" भणा कर आरती मंगल दीपक उतार के और चैत्यवन्दन करके जयध्वनि के साथ उठना।

इस पूजन को विशिष्ट महोत्सव के साथ पढ़ाना होवे तो समकित अष्टप्रकारी पूजा के समान ही इस पूजा की विशेष विधि है। परन्तु इस पूजा में हरएक वस्तु तेरह तेरह तथा स्नात्रिया और स्नात्रणियां भी तेरह तेरह समझना चाहिए। अन्त में पूजा पढ़ाने वाले श्रावक को प्रभावना और स्वामिवात्सल्य भी करना चाहिए।
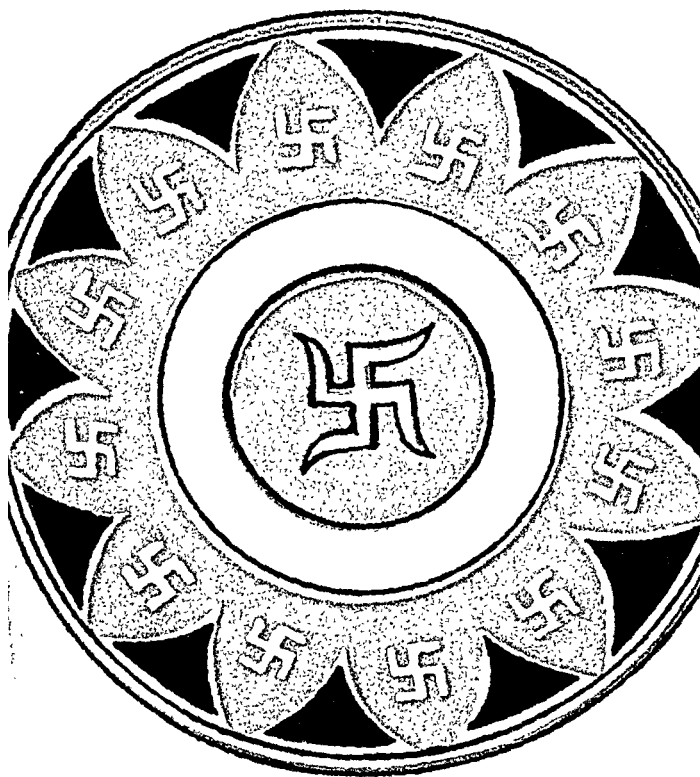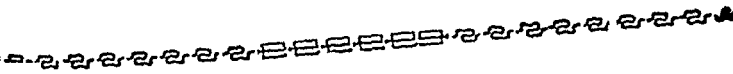
४ श्रीसमकितसतसठभेदीपूजा—मंडल.

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी रचित—

श्री समकितसतसठभेदी-पूजा

प्रथम जलपूजा—दोहा

कल्पवेल कविता तणी, सरस्वती भगवति जेह ।
अर्हन्मुखथी ऊपनी, हुं प्रणमुं धरी नेह ॥ १ ॥
चोवीसे जिनराजना, शासन माहीं सधीर ।
चौदेसो बावन भला, प्रणमुं तास वजीर ॥ २ ॥
वर्त्तमान वडवीरनुं, शासन वर्त्ते एह ।
सोहमपति सोहमतणो, गच्छ परंपर जेह ॥ ३ ॥
एहवा मुनि नित नित नमुं, जे निग्गंथ गीयत्थ ।
यानपात्र सम भवनिधि, तारण तरण समत्थ ॥ ४ ॥
ज्ञानदीपक दाता गुरु, गुरुगुण गहन गंभीर ।
तासु कृपा करी खोलिये, सूत्र अर्थ जंजीर ॥ ५ ॥
विण समकित भवि जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत ।
तप जप काया कष्टथी, नवि भांजे भव भीत ॥ ६ ॥
सकल धर्मनो सार ए, सकल क्रियानुं मूल ।
पण समकित विण नवि हुवे, चरण नाण फल फूल ॥ ७ ॥

द्रव्य भाव जिनराजनी, करता भक्ति उदार ।
शिवसुख षोधी दाखियो, अग उपांग मझार ॥ ८ ॥
ते कारण जिनराजनी, वर्णव मुझे अधिकार ।
समकित सतसठ भेदनी, रचशु रचना सार ॥ ९ ॥
न्हवण[१] विलेपन[२] वासनी[३] फूलमाल[४] वरफूल[५] ।
धूप[६] दीप[७] भूषण[८] तणी, पूजा रचन अमूल ॥ १० ॥
दरपण[९] ध्वज[१०]–अक्षत वलि, पुष्पघर[११] नैवेद्य[१२] ।
फल[१३] पूजा कर तेरमी, पामो सुख निरवेद ॥ ११ ॥

ढाल १, प्रथम पूर्व दिशे, ए राह

सुगुरु संयोगथी, विरमी सहु भोगथी, सफल साजन जना साथ लीजे ॥ १ ॥ रूप मनोहारिणी, गौरी गुण धारिणी, शीयल सिणगार मनुहार कीजे ॥ २ ॥ कोकिलकंठथी, मधुरध्वनि रगथी, राग आलाप कठे करीजे ॥ ३ ॥ हाथी रथ घोडले, पायदल जोडले, राज सिणगारना साजथी जे ॥ ४ ॥ अधिक आडंबरे, ढलत शुचि चामरे, सद्गुरु पादपद्मे पडीजे ॥ ५ ॥ लगन शुभ साजते, वरवधू नाचते, गाजते वाजते गुण थवीजे ॥ ६ ॥ विधि शुद्ध नादुजे, सुगुरु चरणांबुजे, समकित बीज आरोप दीजे ॥ ७ ॥ शासन सोहवा, परमत खोहवा, द्रव्य शुद्ध भाव पूजा रचीजे ॥ ८ ॥

चतुर सोभागिनी, 'धनमुनि' राजनी, ध्यान रटना नित नित रटीजे ॥ ६ ॥

दोहा

इणविध समकित उच्चरी, पंच तजी अतिचार ।
अरिहानी पूजा करो, जिम वरिये शिवनार ॥ १ ॥
समवसरण रचना रची, थापी जिनवर वीर ।
समकित दाता गुरुतणी, पूजा रचो सधीर ॥ २ ॥
भूमिशुद्धि विण नवि हुवे, बीजोद्गम गुणखाण ।
किम समकित विण जीवने, नवि हुवे विरति ठाण ॥ ३ ॥
आत्मशुद्धि करवा भणी, जल कलशा भरि सार ।
त्रि श ला नं द न पू ज ते, त रि ये भ व सं सा र ॥ ४ ॥

ढाल २, आवो हरि सासरिये वाला, ए राह

भूमिशुद्ध प्रथम करने, तीर्थोदक कलशा भरने, अरिहा, पूजा भव तरने ॥ १ ॥ धारो भवि समकित शुद्ध भावा, भवजल तारण ए नावा ॥ धा० ॥ टेर ॥ सांकेतिकपुरनो वासी, राय महाबल सुखराशी, करावे चित्रसभा अतही खासी ॥ धा० ॥ २ ॥ विमलप्रभास एवे नामे, चित्रकारक निज निज ठामे, करे चित्रकला वलि अभिरामे ॥ धा० ॥ ३ ॥ षट्मासे नरपति कोले, प्रभासतणी परिछद खोले, देखी चित्र विना चित्रित तोले ॥ धा० ॥ ४ ॥ सहु चित्र शिरोमणि

अधिकारो, करी राय दीये बहु सत्कारो; इवे उदाहरण उपनय चित्त धारो ॥ धा० ॥ ५ ॥ साकेतपुर सम संसारो, गीतारथ राय समा धारो, मनुजगति सभा श्रीकारो ॥ धा० ॥ ६ ॥ चित्रकारक भवि जीव दीठा, चित्रभूमि आतम पीठा, सस्कार सम्यक्त्व भजो रीठा ॥ धा० ॥ ७ ॥ चित्र समान धरम जाणो, नाना व्रत रूपे पिछाणो, नियमादिक पच वरण ठाणो ॥ धा० ॥ ८ ॥ इम द्रव्य भाव भूमि शोधी, जिनपूजा करो तुमे लद्दी बोधी थाशो 'धनमुनि' पाप-पडल रोधी ॥ धा० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्त्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्ठिभेदान्वितं,
स श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय विलेपन पूजा, दोहा

भवाभिनंदी दोष तज, करो समकित रंगरोल ।
चोवीस भेदे धारिये, सग्गा सुं सर री बोल ॥ १ ॥

चउ सरधा दिल धारिये, रंग मजीठ ज्युं चोल ।
त्रिशलानंदन पूजिये, भावना केसर घोल ॥ २ ॥

ढाल ३, ए व्रत जगमें दीवो मेरे प्यारे, ए राह

परमातम पद पूजा कीजे, सद्दहणा चित धार । परमारथ संथव तिहाँ पहेली, भाखी जगदाधार ॥ १ ॥ 'मेरे प्यारे समकित सुरतरु सेवो, शिवसुख साधन मेवो मेरे प्यारे स०' ॥ टेर ॥ जीवादिक नवतत्त्वनो परिचय, करिये नय परिमाण । पढम नाण पछे अहिंसा दाखी, दशवैकालिका ठाण ॥ मे० ॥ २ ॥ तत्त्व अतत्व विवेचन ठावे, खीर नीर जिम हंस । तत्वभूत करो अर्थनो परिचय, गीतारथ कुल वंश ॥ मे० ॥ ३ ॥ धारण बुद्धिए धरी राखे, न करे हठ परसंग । परमत खोभण चतुर कहावे, मंदुक भगवइ अंग ॥ मे० ॥ ४ ॥ परमारथज्ञातानुं सेवन, बीजीं सरधा धारो । कुमति कदाग्रह दूर करीने, पर दरिसण संग टारो ॥ ५ ॥ 'मेरे प्यारे गीतारथ गुरु वंदो, समकित सुरतरु कंदो मेरे प्यारे गी०' ॥ टेर ॥ सहज स्वभाव सुरंग सभा में, अनुभव अनहद तान । गीतारथ गुरु सेवन करतां, लहिये निर्मल ज्ञान ॥ मे० ॥ ६ ॥ गीतं ते जिनसूत्र कहीजे, अर्थ ते तास वखाण । सूत्र अर्थ बिहुंना जे पारग, ते गीतारथ ठाण ॥ मे० ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया बिहुं शुद्ध करे जे, न करे

झूंठ डफाण । मत एकांत विवाद न खचे, स्याद्वाद गुण जाण ॥ मे० ॥ ८ ॥ विष वलि गरल हीनाधिक वारे, तद्धेतु अमृत धारे । प्रीति भक्ति वचन असंगे, निज आतमकुं तारे ॥ मे० ॥ ९ ॥ परवादी गज घट मद भंजन, पंचानन सम सोहे । हय गय वृषभ रवि शशि ओपम, सुरपति सम जग बोहे ॥ मे० ॥ १० ॥ जंबू शीता नदी मेरु महीधर, वासुदेव नरदेवा । स्वयभूदधि ने रयणायर, भांडागार सरूवा मे० ॥ ११ ॥ इम सोले ओपम कही दाख्या, उत्तराध्ययन विशाल । गीतारथ गुणवंत गुरु परखी, सेवन कीजे रसाल ॥ मे० ॥ १२ ॥ गीतारथ विण उग्र विहारे, विचरे उद्य-मवंत । धर्मदासगणि इणिपरे बोले, कायकिलेश तस हुंत ॥ मे० ॥ १३ ॥ परमारथज्ञातानुं सेवन, विनय अने बहु-मान । पुष्पचूला परे कर्म खपावी, लहिये केवलज्ञान ॥ मे० ॥ १४ ॥ नाथ निहाली चरणे आव्यो, श्रद्धारुचि अम दीजे । त्रिशलानंदन जिनेश्वर साहिब, 'धनमुनि' आण वहीजे ॥ मे० ॥ १५ ॥

दोहा

वावन दर्शन संगती, छाडे भवियण जेह ।
परमारथ जइ सेवना, निश्चय पामे तेह ॥ १ ॥
निह्नव ने श्रद्धाछंदनो, कुत्सित दर्शन संगे ।
टालीने जिन पूजिये, श्रद्धायुत नव अंग ॥ २ ॥

ढाल ४, महावीर प्रभु घेर आवे, ए राह

केसर मृगमद लावे, रूडा रत्न कचोले ठावे। सहु साहेली मली आवे, जिनराजनी पूजा रचावे रे ॥ १ ॥ "मनमंदिर समकित दीवो, जेथी ज्ञान सुधारस पीवो रे म०॥' ॥ टेर ॥ जेह जिन सिद्धांते दाख्या, निन्हवना लक्षण आख्या। द्रव्य भाव पूजा जे खंडे, निज मन कल्पित थिति मंडे रे ॥ म० ॥ २ ॥ पासत्थादिक पांचेई, कह्या कुगुरु जिनागम तेई। पडिक्कमणु सांभ सवार, न करे आहार, सूवे ऊंघे सांभ सवार। न करे पचक्खाण सदीस, परमादी विश्वा वीस रे ॥ म० ॥ ४ ॥ घृत दूध दही नित खाय, विकथा करतां दिन जाय। नवि आहारा दोष ते टाले, घव घव घस मसतो चाले रे ॥ म० ॥ ५ ॥ सुविहित मारग नवि पाले, वलि वारिये देह पखाले। वस्त्रादिक शोभा बनावे, परिग्रह करी ममता चढ़ावे रे ॥ म० ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र न दरसी, अरचा रचना वंदावे हरसी। माठी करणी जे जे कहिये, ते सवि कुगुरु में लहिये रे ॥ म० ॥ ७ ॥ एहवा कुगुरु निन्हव आरंभी, कह्या महानिशीथे दंदी। तस वंदन नमन ते करिये, भव भव भवमांहे भमिये रे ॥ म० ॥ ८ ॥ कांजी संगे दूध विणास, काजल संगे वस्त्रनो नाश ॥ आंबा निंब हुवे पर संगे, तिम समकित

विणसे कुसंगे रे ॥ म० ॥ ९ ॥ पत्थरनी नावा तोले, भवसागरमें जे घोले । भद्रबाहु वचन समालो, भवि कुगुरु सग सही टालो रे ॥ म० ॥ १० ॥ चोथी थलि, सरधा धारो, सौगत पोष कुदर्शन वारो । मरडा भगत कुलिंगी चेह, तसु सगत तजो गुणगेह रे ॥ म० ॥ ११ ॥ क्रियावादी एंशी शत भेद, चुलसी भेद छे किरिया छेद । सडसठ भेद अनाणवादीना, तिम बतीस विनयवादीना रे ॥ म० ॥ १२ ॥ नैयायिक मीमासमति जे, किरियावादी तेह कहीजे । अकिरियावादी क्षणिक छे बोध, नास्तिक छे अनाणनो सौध रे ॥ म० ॥ १३ ॥ सारव्यमति ते वैनयिक दाख्या, त्रणसो त्रेसठ पाखंडी भाख्या । तेहनी जो सगत करिये, भव भव पापे पिंड भरिये रे ॥ म० ॥ १४ ॥ चोरनी सगे चोर कहावे, तेहवा दुखडा ते नर पावे । देखो जल घटिका चंई रगे, झल्लरी ताडन पामे प्रसगे रे ॥ म० ॥ १५ ॥ आवे रसियो लोह विणास, भोजन विगडे विष निवास । केसर विणसे लसुन निवासे, विद्या विणसे विण अभ्यासे रे ॥ म० ॥ १६ ॥ चित्र विगडे गुलीने रगे, समकित विगडे तिम कुढगे, सुण्यो नंदन नामे मणियारो, पाम्यो दर्दुर नो अवतारो रे ॥ म० ॥ १७ ॥ ते कारण भवि तुमे समजो, कुत्सित दर्शन संगत वरजो । 'धनमुनि' वर सरधा मिलावो, जेथी शिवसुंदरी वर थावो रे ॥ म० ॥ १८ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे, जीवादितत्त्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं, मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं, षट्षष्टिभेदान्वितं,
सःश्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय विलेपनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय वासक्षेपपूजा, दोहा

चतुराइ सब ही कला, लहिये जगत सुजाण ।
पण दुर्लभ समकित रतन, विधि रतन विज्ञान ॥ १ ॥
मिथ्यालिंग उच्छेदीने धरो समकित त्रिहुं लिंग ।
वास सुगंध में मेलवी, पूजो जिनवर अंग ॥ २ ॥

ढाल ५, जमुना में आइ पड्यो रे, बालक मेरो ज०—ए राह

जिनजीसे जाइ मिल्यो रे, जीवन मेरो जिनजी से जाइ मिल्यो । समकित कल्प फल्यो रे जीवन मेरो जि० ॥ टेर ॥
पहिलु लिंग धरी अरिहा पूजु, सुश्रुषा वास भल्यो रे जी० ।
सूत्र अर्थ परंपर आगम, सुणतां मोह टल्यो रे ॥ जी० ॥ १ ॥

जिम कोइ चतुर सुखी तथा रागी, जीवन जार भर्यो रे जी० । मदभर जोवन सुंदर बाला, कान्ता संग वर्यो रे ॥ जी० ॥ २ ॥ तो पण गीत संगीतने वंछे, देवगंधर्व कर्यो रे जी० । ते करतां पण अधिक वांछाथी, सूत्र श्रवण धर्यो रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ धर्मराग लिंग बीजु धरीने, प्रीति धर्म जर्यो रे जी० । क्षुधा करी थयु क्षीण तनु विप्र, मोटी अटवी तर्यो रे ॥ जी० ॥ ४ ॥ भोजन घृत वर कूर कपूरनी, पामी चित्त ठर्यो रे जी० । तिम समकित-धर चरणनी सेवा, इच्छु परभावे डर्यो रे ॥ जी० ॥ ५ ॥ काल कराले रंकने दुर्लभ, अशन संजोग पर्यो रे जी० । 'धनमुनि' वर तिम दुःषम काले, समकित रंग धर्यो रे ॥ जी० ॥ ६ ॥

दोहा

वेयावच्च नामे मालु, धारी त्रीजु लिंग ।
भावे जिनवर पूजिये, तो करिये शिवसंग ॥ १ ॥
धुएँ दीठे संपजे, अग्नितणो अनुमान ।
तिम समकितवत जीवने; लिंग थकी हुवे मान ॥ २ ॥

ढाल ६, साहिब शिव बसिया—ए राह

समवसरण जिनराजियो रे, त्रिशलानंद महेश साहिब सोभागी । बारे परखदा आगले रे, इणिपरे दे उपदेश साहिब

सोभागी ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष प्रणती तजी रे, पूजो श्रीजगदीश–सा० । वेयावच्च गुरुदेवनी रे, करिये नियम जगदीश–सा० ॥ स० ॥ २ ॥ चोंतीस अतिशय धारका रे, वीतराग जिनदेव–सा० । पूज्यनी पूजा कीजिये रे, करी वेयावच्च सेव–सा० ॥ स० ॥ ३ ॥ प्रभुरागे रागी थई रे, लहो वीतराग स्वभाव–सा० । दर्शनथी दर्शन हुवे रे, प्रगट आतम सहाव –सा० ॥ स० ॥ ४ ॥ धर्मतणा दाता गुरु रे, आचारिज उवज्झाय–सा० । तसु पूजन भक्ति थकी रे, समकित निर्मल थाय–सा० ॥ स० ॥ ५ ॥ जीमूतकेतु वेयावच्च रे, तीर्थंकर पद लीध–सा० । तिम जिनपूजन भावथी रे, 'धनमुनि' वर लहे सिद्ध–सा० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधो सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वासक्षे यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थी पुष्पमालपूजा, दोहा

दशविध विनयनी पूजना, करतां भवि उजमाल ।
शासननायक जिन तणे, कंठे ठवे फूलमाल ॥ १ ॥

ढाल ७, भरतना पाटे भूपति रे, ए राह

प्रथम विनय अरिहंतनो रे, विहरमाण भगवंत सलूणा ।
नाम आराधन कुणस्तवी रे, पूजो विनय करी संत सलूणा ॥ १ ॥ 'जिम जिम विनय आराधीये रे, तिम तिम प्रगटे नाण सलूणा' ॥ टेर ॥ रूपातीत पद ध्याइये रे, द्रव्य भाव करी सेव सलूणा । सिद्धविनय बीजो करी रे, हरिये मिथ्या टेव सलूणा ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रीजुं चैत्य विनय करी रे, विरचे जिनघर सार सलूणा । बिंबप्रतिष्ठा पूजा विधि रे, करे वलि जीर्णोद्धार सलूणा ॥ जि० ॥ ३ ॥ भणे भणावे श्रुत भणी रे, चोथुं विनयनुं ठाण सलूणा । लिखे लिखावे सांचवे रे, अग्नि जल भय थान सलूणा ॥ जि० ॥ ४ ॥ धर्मविनय पंचम कह्यु रे, देश सर्व जिनचंद सलूणा । तसु पालन परशंसथी रे, पामिये परमाणंद सलूणा ॥ जि० ॥ ५ ॥ वस्त्र पात्र अशनादिके रे, औषध भेषजकार सलूणा । छठ्ठो विनय मुनिवर्गनो रे, करिये विविध प्रकार सलूणा ॥ जि० ॥ ६ ॥ सप्तम विनये सेविये रे, आचारिज गुणवंत सलूणा ।

चंदन अभिगम सांचवी रे, कीजे भक्ति महंत सलूणा ॥ जि० ॥ ७ ॥ भणे भणावे सूत्रने रे, आचारिज पद जोग सलूणा। अष्टम विनय उवज्झायनो रे, करतां कटे भव सोग सलूणा ॥ जि० ॥ ८ ॥ प्रवचन विनय श्रीसंघनो रे, तवमे निंदा टाल सलूणा। अरिहा पण तेहने नमे रे, समवसरण भूपाल सलूणा ॥ जि० ॥ ६ ॥ दर्शनविनय दशमो भलो रे, दर्शनी दर्श अभेद सलूणा। तस भक्ति भूषण करी रे, करिये कर्मनो छेद सलूणा ॥ जि० ॥ १० ॥ विनय पदारथ पामवा रे, आव्यो हुं धरी आश सलूणा। 'धनमुनि' पद सेवथी रे, शिवमंदिर लहे वास सलूणा ॥ जि० ॥ ११ ॥

दोहा

भक्ति बहुमान वरण जणण, अवरणवाय परिहार।
आसायण परिहारथी, विणय संखेव विचार ॥ १ ॥

ढाल ८, रङ्ग रसिया रङ्ग रस बन्यो, ए राह

दिलरसिया प्रभु दिल बस्या मनमोहनजी। दर्शन दायक स्वाम, दिलडुं बींध्यो रे मनमोहनजी। निरागी प्रभु रींझीये–म०, विनय धरी प्रभु नाम–दि० ॥ १ ॥ ज्ञाता अंगे वखाणीयो–म०, विनय ते धर्मनुं मूल–दि०। अण-गारी आगारनो–म०, महाव्रत अणुव्रत थूलदि० ॥ २ ॥

अरिहादिक दश पद तणो-म०, विनय करे विधि धार-दि० । नित्य भोजी उपवासनुं-म०, फल लहे नित्य नर नार-दि० ॥ ३ ॥ भक्ति श्रुति बहुमानता-म०, आशातन परिहार-दि० । सांची भक्ते रीझवुं-म०, गुणस्तुति सत्कार-दि० ॥ ४ ॥ दश आशातना मोटकी-म०, टालुं जिन दरबार-दि० । तेत्रीस गुरु आशातना-म०, वर्जी लहुँ भव पार-दि० ॥ ५ ॥ गुरुविनय करी श्रुत लहे-म०, श्रुतथी दरिसण होय-दि० । चरण संवर तप निर्जरा-म०, अनुक्रमे शिवसुख होय-दि० ॥ ६ ॥ द्रव्य भाव विनय करी-म०, भुवनतिलक मुनिराय-दि० । केवल लही मुगते गया-म०, 'धनमुनि वंदे पाय-दि० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्व सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत्तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय पुष्पमालां यजामहे स्वाहा ।

पंचमी पुष्पपूजा, दोहा

फूल अमूलिक विविध वर, पंचाचार विशेष ।
समकित शुद्धि कारणे, पूजो श्रीजगदीश ॥ १ ॥

ढाल ९, घर आवो नेम वरणागीया, ए राह

हांरे वाला समकितशुद्धि धारीये, प्रभुपूजा रची दुःख वारिये जी रे । प्रेमे पूजो रे जगजीवना, हांरे वाला स्वामि सेवाथी पामिये, शिवसुंदरी भव दुःख वामिये जी रे ॥ प्रे० ॥ १ ॥ हांरे वाला केतकी जायना फूलथी, भवि पूजा रचे मन शुद्धिथी जी रे ॥प्रे०॥ जिन जिनमत जिनस्थित विना, नवि धारुं गुरुदेव इकमना जी रे ॥ प्रे० ॥ २ ॥ प्रभु देवाधिदेव ते दाखिया, दोष अढार रहित जिनराजिया जी रे ॥ प्रे० ॥ स्याद्वाद सहित जिणे दाखीयो, दयामूल धरम जग साखीयो जी रे ॥ प्रे० ॥ ३ ॥ जिनमारग धोरी मुनिवरा, वलि समकित धारी व्रतधरा जी रे ॥ प्रे० ॥ कही त्रणे वस्तु जग सार छे, तेथी बीजुं सर्वे असार छे जी रे ॥ प्रे० ॥ ४ ॥ त्रिहुँ शुद्धि करी प्रभु पूजीये, जो महिर नजर तुम लीजीये जी रे ॥ प्रे० ॥ लाडकवायो करी निज बालने, शुं जुवो छो पंच कालने जी रे ॥ प्रे० ॥ ५ ॥ तुज आणा खड्ग कर धारियो, तेथी मिथ्या मंत्रि दल

न्वारियो जी रे ॥ प्रे० ॥ प्रभु तारक नाम जो धारशो, 'धनमुनि' संसारथी तारशो जी रे ॥ प्रे० ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ दोहा

मन वचन काय शुद्धिथी, समकित साधन होय ।
वर्द्धमान जिन पूजता, तरिये भवनिधि तोय ॥ १ ॥

ढाल १०, मुने ससार सेरी वीसरी रे लो, ए राह

प्रभुपूजा रचुं मन शुद्धथी रे लो, जुओ साहिब सनमुख महिर जो । तुज सकित मंत्रीना जोरथी रे लो, निज दीठुं ते अनुभव शहेर जो ॥ १ ॥ 'मुने समकित सेरी सांभरी रे लो, त्रिण शुद्धितणी करी वाड जो, मेटुं मिथ्यामत मोहनी धाड जो मु०' ॥ टेर ॥ जिनधर्म ने जिनदेव सेवियें रे लो, तजी दरिसणना अतिचार जो । मनशुद्धि धारो नमुं नाथने रे लो, बीजुं जाणुं हुँ सघलुं असार जो ॥ मु० ॥ २ ॥ नरवरमा राजा लही स्वर्गने रे लो, लेशे शिववधु मनशुद्धि जोग जो । बीजी वचनशुद्धि दिल धारिये रे लो, तेथी जीये भवो भव सोग जो ॥ मु० ॥ ३ ॥ चिले मेरुतणी जो चूलिका रे लो, सूके मान सरोवर नीर जो । वलि पुढवी जो पासु पालटे रे लो, टले रत्नागरनो गंभीर जो ॥ मु० ॥ ४ ॥ अभव्य जीवातें समकित जो लहे रे लो, रहे रवि

शशि ऊगतां संसार जो। पण कीधां करम नवि पालटे रे लो, कह्यो आगमे एह अधिकार जो ॥ मु० ॥ ५ ॥ जिनदेवनी सेवथी नवि थयुं रे लो, कारजसिद्धि कर्म झकझोल जो। बीजा देवने जाचे तो शुं थशे रे लो, एवुं वचनशुद्धि बोलुं बोल जो ॥ मु० ॥ ६ ॥ काया छेदन भेदन पीडियो रे लो, शस्त्र अग्नि खवाडी विष जो। तोही जिनजी विना अन्य देवने रे लो, नवि नाथ नमावुं शीष जो ॥ मु० ॥ ७ ॥ राय वज्रकरण त्रिहुं शुद्धिने रे लो, पाली पहुंत स्वर्ग आवास जो। 'धनमुनि' भावे प्रभु पूजतां रे लो, पामे मंगल लीलाविलास जो ॥ मु० ॥ ८ ॥

काव्य और मंत्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

॥ ७ ॥ षष्ठी धूपपूजा, दोहा

शंका कंखा वारवा, पूजो जिनवर धूप।
ऊर्ध्वगति जिम धूपनी, तिम लहो गति चिद्रूप ॥ १ ॥

ढाल, ११, ए त्रीय तारु, ए राह ॥

त्रिशलानंदन भंदन कीजे, प्रेमी सुधारस पीजे रे जग जीवन तारु । छट्ठी धूपपूजा जो कीजे, पण गज दोप हरीजे रे ज० ॥ त्रि० ॥ १ ॥ अरिहा धर्मे संदेहनी बुद्धि, तसु शंका डायण लुद्धि रे ज० । तुज आगम सुणिया विण वंका देश सर्व हुवे शंका रे ज० ॥ त्रि० ॥ २ ॥ नया गम भग प्रमाणने निरखी, कुमति कदाग्रहे परखी रे ज० । तिष्यगुप्त शकाए चढियो, ते तो आत्मप्रवादे पड़ियो रे ज० ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ द्वदशा वर्ष सेव्यो इक तारी, सिद्ध पुरुष व्यवहारी रे ज० । पण शका करी कथा त्यागी, तो ते थयो दुख भागी रे ज० ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अमे तो कुटिला निकट न जाउ, जो महिर नजर प्रभु पाऊ रे ज० । तुमे तो निरागी नाम धरावो, शु रागीने ललचावो रे ज० ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ पण अमे कखा दोपे न भूलु, तुज समकित मूलथा भूलु रे ज० । मत मत मेदतणी अभिलाषा, देश सर्व कही कखा रे ज० ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ जीवादिक गुण अन्य में निरखी, कहे सांची जिनमत सरखी रे ज० । देश थकी इक दर्शन लागी, सर्वथी सर्व मत रागी रे ज० ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ बीजा दोप थकी विप्र नडियो, ते तो शिप्राएँ गयो तणियो रे ज० । जितशत्रु राय मरण मणी पाम्यो, वलि सुबुद्धि

दोषथी वाम्यो रे ज० ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ शंका कंखा दोष ए मोटा, ते अम लागे खोटा रे ज० । त्रिशलानंदन अब महे' करीजे, 'धनमुनि' दर्शन दीजे रे ज० ॥ त्रि० ॥ ६ ॥

दोहा

विचिकित्सा जिनधर्मना, फलनो करे संदेह ।
अहवा निंदा मुनि तणी, करतां भमे भवगेह ॥ १ ॥
सौगत भौतिक बोटिका, जैन वचन विपरीत ।
तसु परसंसथी पामिये, नरकगति भयभीत ॥ २ ॥
अन्यतीर्थी परिचयथकी, सद्दहणा भवि जाय ।
तेहनो परिचय टालीने, पूजो श्रीजिनराय ॥ ३ ॥

ढाल १२, अनिहांरे ज्ञान वड़ो श्रुतकेवली रे, ए राह

अनिहांरे परमातम पद पूजीने रे, करु' वितिगिच्छा परिहार । समकित सुरतरु छे वड़ो रे, अनिहां रे सुरतरु आगे सीमा गणी रे, कहो कीजिये कस्णाधार ॥ स० ॥ १ ॥ अनिहांरे कृष्णागर दशांगनी रे, स्याद्वादरूपी जलधार स० । अनिहांरे धूपघटा वरसे भली रे, मारा नाथतणे दरबार ॥ स० ॥ २ ॥ अनिहांरे समकितदायक गुरुतणो रे, किम विसरीये उपगार स० । अनिहांरे भव कोडा कोडी करी रे, नवि हुवे पच्चुवयार ॥ स० ॥ ३ ॥ अनिहांरे शंसव धर्मना

फलतणो रे, करे वितिगिच्छा आचार स०। अनिहांरे तजीने सुतरु परगडो रे, करे बंबूलथी व्यवहार ॥ स० ॥ ४ ॥ अनिहांरे नव मावे मुंडित थया रे, थया दशमा लोंचना संत स०। अनिहांरे तास दुगुंछा परिहरु रे, सुणी दुर्गंधा विरतंत ॥ स० ॥ ५ ॥ अनिहांरे मिथ्यामति गुण वर्णथी रे, होय मिथ्यामतनो पोप स०। अनिहांरे लक्ष्मणशेठ भवोदधि रे, रुल्यो चित्त चढ्यो चोथो दोप ॥ स० ॥ ६ ॥ अनिहांरे पंचम दोप मिथ्यामति रे, तसु परिचय संगति टाल स०। अनिहांरे सुंदर समकित उच्चरी रे, पालिये जिम धनपाल ॥ स० ॥ ७ ॥ अनिहांरे वालायी नथी वेगलो रे, मारे सहज सुंदरनो विलास स०। अनिहांरे त्रिशला-नंदन लाड़ला रे, दीजे 'धनमुनि' चरण निवास ॥स०॥८॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्ठिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

सप्तमी दीपकपूजा—दोहा

जिनशासन आकाशमें, चंद्र सूर्य सम तुल्य ।
जिनघर दीपक सारिखा, अष्ट प्रभाव अमूल्य ॥ १ ॥

ढाल १३, तेजे तरणीथी वडो रे, ए-राह

जगनायक जिन आगले रे, दीपकनो उद्योत । अष्ट प्रभावक मुनिवरो रे, करे जिनशासनने ज्योत ॥ १ ॥ 'हों जिनजी प्रेम शिखाये सिद्धलो रे, अष्ट प्रभावक दीवलो रे, झलके झगमग ज्योत' ॥ टेर ॥ पावयणी धुर जाणिये रे, वर्तमान श्रुत जाण । अर्थ अगोचर वस्तुनो रे, पार लहे गुणखाण ॥ हो० ॥ २ ॥ देवर्द्धिगणिये लिख्या रे, जैन पुस्तक इक कोड़ । प्रवचन प्रभावक एहवा रे, आर्यरक्षित सम जोड़ ॥ हो० ॥ ३ ॥ आक्षेपणी विक्षेपणी रे, संवेग निर्वेद रूप । धर्मकथक बीजो कह्यो रे, नंदीषेण सम भूप ॥ हो० ॥ ४ ॥ चार अंत सभातणा रे, वादे जीते जेह । निजपक्ष स्थापन निपुणता रे, जिन मते वादी तेह ॥ हो० ॥ ॥ ५ ॥ तर्कवाद वाचस्पति रे, मल्लवादी परे जेह । राज-सभाए जय वरे रे, गाजंतो जिम मेह ॥ हो० ॥ ६ ॥ लाभालाभ त्रिकालनो रे, परमत जीपण काज । निमित्त प्रकाशी यश लहे रे, भद्रबाहु गुरुराज ॥ हो० ॥ ७ ॥ अति

उग्र तपस्या करे रे, भेटे निजमन दंभ ॥ काकंदी धन्ना परे रे, जिनशासननो थंभ ॥ हो० ॥ ८ ॥ छट्ठो मंत्र विद्यावली रे, जिम श्रीवयर मुणिंद । सिद्ध प्रभावक सातमे रे, आर्यसुमति मुनिचंद ॥ हो० ॥ ९ ॥ कविप्रभावक आठमो रे, कुमुदचद्र सूरि थाय । नव नव वचननी चातुरी रे, बोध्या विक्रमराय ॥ हो० ॥ १० ॥ जो प्रभावक नवि हुवे रे, तो विधि पूर्व अनेक । यात्रा पूजा विधि रची रे, करे प्रभाव अनेक ॥ ११ ॥ राणी यशोदानो वालमो रे, चतुर मिले एकत । 'धनमुनि' मननी वातडी रे, प्रकाशुं हुं तत ॥ हो० ॥ १२ ॥

दोहा

देश काल उपयोगथी, प्रभावक मुनिचद ।
जिनगुण स्तुति दाखवी, टाले पर सुर फद ॥ १ ॥

ढाल-१४, एक जन श्रुतरसियो बोले रे, ए राह

सुण सुण निशलाना जाया रे, हो मन भान्या मोहनजी । अमे आश करीने आया रे हो०, हवे आश निराश न कीजे रे हो० । जरा महिर नजर निरखीजे रे हो० ॥ सु० ॥ १ ॥ अम सुखकर समकित दीजे रे हो०, तेथी दरिसण मोहनी छीजे रे हो० । तुज सरिखो नहीं कोई स्वामी रे हो०, अम आशाना विसरामी रे हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ बीजा देव धुतारा

दीठा रे हो० । रमे विषयारस में मीठा रे हो० । धनु तीर गदा खड्ग धारी रे हो०, तिणे सुमतानी गति हारी रे हो० ॥ सु० ॥ ३ ॥ अर्धाङ्गे राखे नारी रे हो०, मोहमंत्रीतणा अधिकारी रे हो० । मद मंसी महा विकराला रे हो०, करे द्रूप गजेन्द्रना चाला रे हो० ॥ सु० ॥ ४ ॥ एहवा देवने हुं नवि मानुं रे हो०, साचुं तुम समकित गुणठाणु रे हो० । तुज मूर्ति मोहनवेली रे हो०, पूजे अपछर सुर अलवेली रे हो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ तसु दीपकपूजा रचावे रे हो०, शिवसुंदरी सहजे रमावे रे हो० । जो तारक नाम धरावो रे हो०, तो फोगट शुं ललचावो रे हो० ॥ सु० ॥ ६ ॥ सूरिराजेन्द्र हइडे वसियो रे हो०, रंग चोल मजीठे कसियो रे हो० । अमे रागी थईने रहीशुं रे हो, धन्य 'धनमुनि' चरण निर्वहीशुं रे हो० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे, जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी आभूषणपूजा, दोहा

भूषण पूजामां रचे, आंगी विविध प्रकार।
विकसे मन अति उल्लासे, देखी जिन दीदार॥ १॥

१ दर हो जाने के कारण यदि यह पूजा दो दिन में भणानी हो तो यहा तक सात पूजा भणा के नीचे का कलश बोलकर और आरती मंगलदीपक उतार कर उठ जाना।

सेवो सेवो रे भवि समकित सुरतरु सेवो॥ टेर॥

सकल क्रियानु सेवन फल ए, शिवसुख साधन मेवो।
सरघा भासन रमण करणथी, जिनपूजी दुख छेवो रे॥भ० १॥

निजघट समकित भानु प्रकाश्यो, तो पामो भव छेवो।
नव योवनशिवनारीना संगम, आदि अनंत थित लेवो रे॥भ० २॥

श्रीविजयदेवसूरीश्वर पटधर, सिंहसूरि सिंह जेवो।
विजयप्रभ वर विनयरत्नसूरि, क्षमा देवेन्द्र गुरुदेवो रे॥भ० ३॥

विबुध कल्याणविजय प्रसादे, विनयराजेन्द्र सुख हेवो।
सतसठ भेद करी जिन रचना, मेटिय मिथ्या टेवो रे॥भ० ४॥

विजयदेवादिक स्तवति देवा, द्रव्य भाव करी सेवो।
धनविजय विमं समकित भावी, मंगल महोत्सव वरेवा रे॥भ० ५॥

१ दूसरे दिन प्रथमदिन की सातो पूजा के 'दोहे' बोल कर आठवीं पूजा से समाप्ति भणाना। यदि एक ही दिन मे सम्पूर्ण पूजा भणाना हो तो अंत में 'गायो गायो रे' यह एक ही कलश बोलना 'सेवो सेवो रे' इसको बोलने की जरूरत नहीं है।

ढाल १५, मनमोहन मेरे, ए राह

भूषण पूजा आठमी मनमोहन मेरे, पूजो जगत दयाल मनमोहन मेरे । विविध जाति वर कुसुमना म०, मुकुट भूषण वरमाल म० ॥ भू० ॥ १ ॥ जिनशासन कौशल्यता म०, प्रथम भूषण धरो अंग म० । क्रियाविधि पच्चक्खाणनी म०, धारो सद्गुरु संग म० ॥ भू० ॥ २ ॥ दंभ जाल सवि परिहरी म०, मेटी बालक चाल म० । राय उदायी परे सुख लहो म०, समकित किरिया विशाल म० ॥ भू० ॥३॥ जिनशासन अनुमोदना म०, जेहथी करे बहु लोक म० । कीजे तेवी प्रभावना म०, तन धन जाणी फोक म० ॥ भू० ॥ ४ ॥ त्रीजी तीरथ सेवना म०, द्रव्य भाव दोय भेद म० । पुंडरीकादिक द्रव्यथी म०, टाले भव भय खेद म० ॥ भू० ॥ ५ ॥ जंगम तीरथ मुनिवरा म०, भाव-तीरथ गुणखाण म० । तसु सेवनाथी पामिये म०, श्रवण नाण विन्नाण म० ॥ भू० ॥ ६ ॥ त्याग संयम अन्न नये फले म०, तव वोदाण सुजाण म० । योगनिरोध मन महेल में म० । पामे सिद्धि वखाण म० ॥ भू० ॥ ७ ॥ तीर्थ-सेवाथी पामियो म०, त्रिविक्रम भूपाल म० । शिवसजनी वर ते थयो म०, मेटी कर्म जंजाल म० ॥ ८ ॥ अमे पण भूषण धारीने म०, जाचिये वांछित दान म० । त्रिशलानंदन महेरथी म०, पामिये 'धनमुनि' ठान म० ॥ ६ ॥

दोहा

थिरता भूषण थी करो, जिनधर्मे दृढ राग ।
अथवा थिर कर परमणी, पूजो श्रीवीतराग ॥ १ ॥

ढाल १६, राह सजनीनी

हो सजनी रे आजनी भूजानो रे रूडो बन्यो मामलो,
हो०—मोहमहिपति मंत्रीनो आंग्यो आमलो ! हो०—समकित
सुरतरु रे अम घर मोरियो, हो०—त्रिशलाने जाये रे चितडो
चोरियो ॥ १ ॥ हो०—सुलसा सांची रे सजनी जाणने,
हो०—अंबड हाथे रे दीधो धर्मलामने । हो०—वार अढार रे
समकित वामियो, हो०—थिरता भूषण रे तिहाँ किण पामियो
॥ २ ॥ हो०—पूरब दिग द्वारे रे बन्यो कमलासनी,
हो०—सावित्री रूपे रे मोह्यो माननी । हो०—चौमुख मिथ्या
रे वेद प्रकाशतो, हो०—दुर्मति राणी रे हियडे मापतो
॥ ३ ॥ हो०—पीताम्बर पहेरी रे गरुडासन चढ्यो, हो०—
कंदर्प मार्यो रे कृष्ण कालो पड्यो। हो०—गोपी वाह्यो रे
माहे पासली। हो०—रुकमणी साथे रे झीमे तांसली ।
हो०—दक्षिण द्वारे रे लोक सहु छली, हो०—विष्णुरूपे रे
सुलसा ना चली। हो०—मनमथ दाभ्यो रे शिर गंगा धरे,
हो०—पार्वती साथे रे भोग लीला करे ॥ ४ ॥ हो०—भस्म

खगाइ रे भ्रम भूलो भमे, हो०—पश्चिम द्वारे रे लोक सहु नमे । हो०—वैक्रिय रूपे रे जिनवर ते थयो, हो०—दुन्दुभी नांदे रे गगन गाजी रह्यो ॥ ६ ॥ हो—आतम रूपे रे अंबड़ जब गयो, हो—सुलसा हइडे रे तब ते भावियो । हो० पंचम भक्ति रे भूषण आदरे, हो० प्रवचन संघनी रे शोभा ते वरे ॥ ७ ॥ हो० बाहु सुबाहु रे मुनि भक्ति करी, हो०—बाहुबल भरते रे त्रिहुँ पदवी वरी । हो० सिद्धरथ नंदो रे शम दमनो धणी, हो० 'धनमुनि' वाहलो रे शिववधु पद्मिनी ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकवीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय आभूषणं यजामहे स्वाहा ।

नवमी दर्पणपूजा दोहा

पंच राज चिन्हे करी, लखे लोक राजान ॥
तिम समकितवंत जीवने ; पेचान ॥ १ ॥

आदर्शें आदर्शता, जिम आतम दर्शाय ।
तिम दर्पणे प्रभु पूजतां, आतम दर्शित थाय ॥ २ ॥

ढाल १७, सामल हुं सजनी मोरी, ए राह

समकित करणी कीजे प्राणी, लक्षण पंच धरीजे जी रे ।
नाथ निहाली चरण पखाली, दरपणपूजा रचीजे ॥ १ ॥
अरिहा पूजा जी रे, अरिहा जो पापथी धूजो, ए सम देव
न दूजो ॥ अ० ॥ टेर ॥ क्रोधे क्रोड पूरवनुं संयम, क्षण में
खेरु थाये जी रे । फली फुली वनराय सहु बले, वायु
कुवायु जोवाये ॥ अ० ॥ २ ॥ दमयत ऋषीश्वर क्रोधतणे
वश, केवलज्ञान गमायो जी रे । क्रोधे अच्च कारी मद्दा, दुःख
बहुलो तिण पायो ॥ अ० ॥ ३ ॥ तिण कारण उपशम
लक्षणनु, अत्यादर कर लीजे जी रे । कुरगडु सम सममाव
रहीने, महा अपराधी खमीजे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सवेगरंग
तरंगनों दरियो, श्रद्धा सवेगे भरियो जी रे । हवे तो नाथजी
नजर लहीने, समकित सुरतरु फलियो ॥ अ० ॥ ५ ॥
सुरनर हित सवि इन्द्र नरेन्द्रना, पुन्यजनित पण सुखडों
जी रे । तुज समकित सहजानो रसियो, लागे अनिष्ट तसु
मनडा ॥ अ० ॥ ६ ॥ ठवण निक्षेप जिनने पूजी शुद्ध
सवेगे रमिये जी रे । अनाथी ऋषिराज तणी परे, भविजन
भवोदधि तरिये ॥ अ० ॥ ७ ॥ विधियुत जिननी पूजा

रतां, पातिक पुंज हठावे जी रे। शिवसुन्दरी मनमोहन
ाहिब, 'धनमुनि' हियडे ध्यावे ॥ अ० ॥ ८ ॥

दोहा

निर्वेद पुनि अनुकंपथी, आस्तिक पंचम जोय।
पंच लक्षणे प्रभु पूजतां, समकित निर्मल होय ॥ १ ॥

ढाल १८, आवो आवो यशोदाना कंत, ए राह

आवो आवो त्रिशलेय चिंत, रङ्ग मिलवो। अम देतां
वांछित दान, वार न लावो रे॥ अमे त्रिजुं लक्षण निर्वेद,
निश्चे धरिये रे। संसारना दुखड़ां अनिट्ठ, तेहथी डरिये रे॥
॥ आ० ॥ १ ॥ नर नारकी ने तिर्यंचवा, दुःख मोटां रे।
तुज आगम सुणी जिनराज, लागे ते खोटां रे॥ इम
दृढ़प्रहारी चोर, ए लक्षणे तरियो रे। वलि हरिवाहन भूपाल
शिववधु वरियो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तमे अनुकंपा दोय
भेद, आगम दाखी रे। दीन हीन भणी निरपक्ष, ठाणांग
साखी रे॥ करी अनुकंपा निज नाथ, सेवक तारो रे।
चंडकौशिक परे महाराज, भवदुख वारो रे ॥ अ० ॥ ३ ॥
जगआस्तिक लक्षण पंच, मो चित्त धारुं रे। आभव पर-
भव मुज नाथ, शरण ताहरु रे॥ संदेह विदग्ध जे लोक,
कुमत मत पड़िया रे। तुम दर्शन विन जग देव, भवोदधि

रड़ियां रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ लही आस्तिक लक्षण लक्षले जो लेखं रे । राय पद्म परे परतिक्ख सुर सुख देखुं रे तमेव ते सच्च निसंक, जे जिन दीठुं रे । 'धनमुनि' हियड़ा माहिं, लागे ते मीठुं रे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं पट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणा मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दर्पणं यजाम स्वाहा ।

दशमी ध्वजाक्षतपूजा—दोहा

सोवन थाल विशाल लइ, अक्षत अखंड आरोप ।
यतना पड़ह बजाड़वा, पूजो भवि महागोप ॥ १ ॥

ढाल १९, गिरिवर दरिसन विरला पावे, ए राह

जिनवर दरिसन जे भवि पावे, यतनाए जिनपूजा रचावे जि० । अक्षत अखंड अखय ध्यज रोपी, मोह महादल दूर

ाशावे ॥ जि० ॥ १ ॥ द्रव्यथकी परिव्राजक भौतिक, सुग-
ादि अन्यदर्शी कहावे जि० । हरि हर ब्रह्मा भेरु भवानी,
ारदर्शी देव जे जे गावे ॥ जि० ॥ २ ॥ शांत दांत
ीतरागने मेली हरि हर बंभ पुरन्दर ध्यावे जि० । ते पण
ायस सूकर सरिखा, सुगुरु तजी कुगुरु दिल लावे ॥ जि०
॥ ३ ॥ भावथकी निज मारग वासी, उलट पलट मार्ग
दर्शावे जि० । वेश धरी गुरु नाम धरावी, उदर भरण निज
काज करावे ॥ जि० ॥ ४ ॥ अन्यमति ग्रही जिननी पडिमा,
भावथकी परदेव बतावे जि० । द्रव्य भाव परतीर्थिक साथे,
षड्विध यातनाए संग मिटावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ नंदन नमन
आलाव संलावे, अशन दान गंध पुष्प नावे जि० ।
संग्रामसूर मुनि षट् यतना, सुरलोक सुख संपद पावे
॥ जि० ॥ ६ ॥

दोहा

षटविध यतनाए करे, जिनपूजा भवि लोक ।
षट यतनाए परिहरे, परतीर्थिक संग फोक ॥ १ ॥

ढाल २०, हो सुखकारी आ संसारथकी—ए राह

हो जायकारी यतना भक्ति जुक्ति अमने दीजिये, भव भय
ारी परमातम पूजानो लाहो लीजिये ॥ टेर ॥ जिनमूर्त्ति जग

मोहनवेली, तसु पूजे अपछर अलपेली, लही लघु ध्वजा कर नाचंती, जिन यतनाए गुण गावंती ॥ हो० ॥ १ ॥ वंदन ते वर थुति कहिये, नमन ते शीस नमी नमिये । शिर नमन पूजन आतम मोडी, कह्युं वंदन अर्थ ते कर जोडी ॥ हो० ॥ २ ॥ ईपदभापण ते आलाप, परिपरि भापण ते संलाप । परतीर्थिक नमन भापण करिये, तो समकित शुद्धिने हरिये ॥ हो० ॥ ३ ॥ नवि दिये अशनादिक दान, धर्मबुद्धि करीने बहुमान । अनुकंपा अने उचित थान, नवि वरजे दानतणुं ठाण ॥ हो० ॥ ४ ॥ दीन हीन अने दुःखी प्राणी, तसु अनुकंपा करे हित आणी । निज समकित लक्षण नवि छडे, टाली धर्मनिंदा समकित मंडे ॥ हो० ॥ ५ ॥ परतीर्थिक लोक तणा देव, तसु गंध पुष्पादिकनी सेव । ते तजे समकितवत भावे, नवि यात्रे स्नानादिक जावे ॥ हो० ॥ ६ ॥ इम समकित यतना परिवरियो, जुओ मत्री तिलक सुरसुख वरियो । तिहाँ अरिहा पूजा विरचावी, लेशे 'धनमुनि' पदवी भावी ॥ हो० ॥ ७ ॥

काव्य और मंत्र

श्रीजैने जिनराजभापितवरे क्षीवादित्वाकरे,
धर्मे येन धृत सदा सुखकरे मोक्षैकबीजे हृदि ।

सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्पष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधे सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय ध्वजाक्षतं यजामहे स्वाहा ।

एकादशमी कुसुमगृहपूजा, दोहा

विविध जातिवर कुसुमथी, तोरण जाल विशाल ।
कुसुम घरे ठवि भविजना, पूजो जगत दयाल ॥ १ ॥
आगारी अणगारना, मारग दरिसण हार ।
तसु पदपद्म पूजाथकी, पामे शिव आगार ॥ २ ॥

ढाल २१, करकुंडुने करुं वंदना हुं वारी, ए राह

जिनपूजा जुगते करी हुँ वारी, पामी समकित बुद्ध रे हुँ वारी लाल । कुसुम आगारे वीरने हुं वारी, पूजतां समकित (शुद्ध रे हुं० ॥ जि० ॥ १ ॥ समकित) सेवना चिहुं विधे हुं०, आगारी अणगार रे हुं०। विण आगारे उत्सर्गथी हुं०, अपवादे आगार रे हुं० ॥ जि० ॥ २ ॥ जे जे जिनसिद्धांत में हुं०, कारजनु निषेध रे हुं० । समकितवंत ते आचरे हुं०, राजाभियोगने भेद रे हुं० ॥ जि० ॥ ३ ॥ धर्म विघनने टालवा हुं०, कोशावेश्या जेम रे हुं० । राय आणा

मोहनवेली, तसु पूजे अपच्छर अलपेली, लही लघु ध्वजा कर नाचंती, जिन यतनाए गुण गावंती ॥ हो० ॥ १ ॥ वदन ते वर शुति कहिये, नमन ते शीस नमी नमिये। शिर नमन पूजन आतम मोडी, कद्य वंदन अर्थ तें कर जोडी ॥ हो० ॥ २ ॥ ईषद्भापण ते आलाप, परिपरि भापण ते सलाप। परतीर्थिक नमन भापण करिये, तो समकित शुद्धिने हरिये ॥ हो० ॥ ३ ॥ नवि दिये अशनादिक दान, धर्मबुद्धि करीने बहुमान। अनुकंपा अने उचित थान, नवि वरजे दानतणु ठाण ॥ हो० ॥ ४ ॥ दीन हीन अने दु खी प्राणी, तसु अनुकंपा करे हित आणी। निज समकित लक्षण नवि छंडे, टाली धर्मनिंदा समकित मंडे ॥ हो० ॥ ५ ॥ परतीर्थिक लोक तणा देव, तसु गंध पुष्पादिकनी सेव। ते तने समकितवत भावे, नवि यात्र स्नानादिक जावे ॥ हो० ॥ ६ ॥ इम समकित यतना परिवरियो, जुओ मंत्री तिलक सुरसुख वरियो। तिहाँ अरिहा पूजा विरचावी, लेशे 'धनमुनि' पदवी भावी ॥ हो० ॥ ७ ॥

काव्य और मंत्र

श्रीजैने जिनराजभापितवरें जीवादितत्त्वाकरे,
धर्मे येन धृत सदा सुखकरे मोक्षैकबीजं हृदि।

क्षेत्रपालादिक देव रे। समकित रक्षाने काजे कीजिये, तस हठवादनी टेव रे ॥ स० ॥ ४ ॥ कांतारवृत्ति रे दुर्लभ-जीविका, करतां अन्य आचार रे। समकितवंतने रे तेह दूषण नहीं, पंचम एह आगार रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मात पितादिक कुलाचारज गुरु, 'धर्म उपदेशना दाता रे। गुरु निग्रहे रे अन्य कारज करी, उपजावे सुखशाता रे ॥ स० ॥ ६ ॥ अल्पसत्वने रे एह आगारथी, 'धनमुनि' समकित दाखे रे। मृगांकलेखा रे अरणिक जेहवा, विण आगार ते भाखे रे ॥ स० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकवीजं हृदि।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय कुसुमगृहं यजामहे स्वाहा।

द्वादशमी नैवेद्यपूजा, दोहा

समकित भावना भाविये, भरी निवेदनु थाल।
त्रि श ला नं द न पूजतां, वरिये शिव वरमाल ॥ १ ॥

खंडे नहीं हुं०, विण अभिलाष निज क्षेम रे हुं० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जो में चरणनी सेवन हुं०, पूर्वे आदरी हुंत रे हुं० । कार्तिकसेठ ज्युं माविने हुं०, राय आणाये वर्हत हुं० ॥ जि० ॥ ५ ॥ गणाभियोग बीजो कह्यो हुं०, स्वजन कुटुंब समुदाय रे हुं० । तसु कथने जे कीजीये हुं०, समकित भंग न थाय हुं० ॥ जि० ॥ ६ ॥ विष्णुकुमारादिक परें हुं०, गणाभियोग विचार रे हुं० । जिनशासन शोभावीने हुं० 'धनमुनि' शिवसुखकार रे हुं० ॥ ७ ॥

दोहा

समकित भंजन रक्षका, समकित पडागार ।
सूत्र उपासक वर्णव्या, दश श्रावक अधिकार ॥ १ ॥

ढाल २२, अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, ए राह

समकित सेवा रे जगत सुहंकरू, दाखी श्रीजगदीश रे । सांची सेवा रे जिन अणगारनी, पूरण विश्वा वीश रे ॥ स० ॥ १ ॥ पण उत्सर्गनी रक्षा कारणे, करे अपवादनी वाड़ रे । आगारे करी समकित सेवना, मारे मोहनी धाड़ रे ॥ स० ॥ २ ॥ बलाभियोग ते त्रीजुं जानिये, बलवंत नर हठ योग रे । धर्म विघनने रे दूर करण करें, समकितवंत प्रयोग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सुराभियोग ते चोथो वलि कह्यो,

क्षेत्रपालादिक देव रे। समकित रक्षाने काजे कीजिये, तस हठवादनी टेव रे ॥ स० ॥ ४ ॥ कांतारवृत्ति रे दुर्लभ-जीविका, करतां अन्य आचार रे। समकितवंतने रे तेह दूषण नहीं, पंचम एह आगार रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मात पितादिक कुलाचारज गुरु, धर्म उपदेशना दाता रे। गुरु निग्रहे रे अन्य कारज करी, उपजावे सुखशाता रे ॥ स० ॥ ६ ॥ अल्पसत्वने रे एह आगारथी, 'धनमुनि' समकित दाखे रे। मृगांकलेखा रे अरणिक जेहवा, विण आगार ते भाखे रे ॥ स० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय कुसुमगृहं यजामहे स्वाहा ।

द्वादशमी नैवेद्यपूजा, दोहा

समकित भावना भाविये, भरी निवेदनु थाल ।
त्रि [illegible]

ढाल २३, पंचमी तप तमे करोरे, ए राह

दर्शन भावना भावो प्राणी, धर्मवृक्षनुं मूल रे । अणुव्र
गुणव्रत ने शिक्षाव्रत, चरणधर्म अनुकूल रे ॥ द० ॥ १ ।
मूल रहित जिम वायु प्रचंडे, वृक्ष पड़े तत्काल रे । धर्मत
तिम कुमत वायु करी, समकित विण आलमाल
॥ द० ॥ २ ॥ समकित मूल थया विण जे क्रिया, क
कुमत मन चाड रे । साल विहूणा खेतर थोले, वृथा वणा
वाड़ रे ॥ द० ॥ ३ ॥ बीजी भावनाए इम भावो, समकि
धर्मनुं द्वार रे । धर्मनगर परवेश करणकुं, मोटो, समकित वा
रे ॥ द० ॥ ४ ॥ धर्मपीठ दृढ़ त्रीजी भावना, भावे सम
कितवंत रे । खोटे पाये मंडाण न थोभे, सांचे पाये थोभंत
रे ॥ द० ॥ ५ ॥ समकितरूपी तिम दृढ़ पायो, धर्म
प्रासादे होय रे । तो निश्चल रहे धर्म महिल मन, नहीं तो
पडतो जोय रे ॥ द० ॥ ६ ॥ जिन दरिसन जिनपूजा
करतां, समकित शुद्धि थाय रे । पद्मराय परे भावना भावी,
'धनमुनि' शिवपुर राय रे ॥ द० ॥ ७ ॥

दोहा

जिनपूजा युक्त करे, शम दम भाव विचार ।
समकित चोथी भावना, भावे भवि मनोहार ॥ १ ॥

ढाल २४, निसदिन जोउं तोरी वाटड़ी—ए राह

समकित-भावना भाविये, चोथी रंगरोला। समकित गुणनो निधान छे, मेटन कर्म का झोला ॥ स० ॥ १ ॥ निधान विना नवि पामिये, माणक मोती अमोला। समकित निधि विण नवि लहे, मूलोत्तर गुण वहोला ॥ स० ॥ २ ॥ मिथ्या चोर भवोभवे, हरे रत्न छुटोला। दर्शभंडारे पूरिया, परे चोरने खोला ॥ स० ॥ ३ ॥ धर्मद्वार समकित भलुं, सहु जिनवर बोला। धर्मरूप जग धारवा, समकित भूतल तोला ॥ स० ॥ ४ ॥ समकित भाजन धर्मनुं, भावना छट्ठी तंबोला। विन भाजन ठेरे नहीं, दुग्ध अमृत घोला ॥ स० ॥ ५ ॥ चन्द्रलेखा भावी भावना, लहे केवल ककोला। 'धनमुनि' भावपूजा रची, वरे शिववधु डोला ॥ स० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्त्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकबीजं हृदि।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपदं षट्षष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥१॥

ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

ढाल २३, पंचमी तप तमे करोरे, ए राह

दर्शन भावना भावो प्राणी, धर्मवृक्षनुं मूल रे । अणुव्रत गुणव्रत ने शिक्षाव्रत, चरणधर्म अनुकूल रे ॥ द० ॥ १ ॥ मूल रहित जिम वायु प्रचंडे, वृक्ष पड़े तत्काल रे । धर्मतरु तिम कुमत वायु करी, समकित विण आलमाल रे ॥ द० ॥ २ ॥ समकित मूल यथा विण जे क्रिया, करे कुमत मन चाड रे । साल विहूणा खेतर श्रोले, वृथा वणाइ वाड रे ॥ द० ॥ ३ ॥ बीजी भावनाए इम भावो, समकित धर्मनु द्वार रे । धर्मनगर परवेश करणकु, मोटो, समकित धार रे ॥ द० ॥ ४ ॥ धर्मपीठ दृढ त्रीजी भावना, भावे समकितव्रत रे । खोटे पाये मडाण न थोभे, सांचे पाये थोभंत रे ॥ द० ॥ ५ ॥ समकितरूपी तिम दृढ पायो, धर्म प्रासादे होय रे । तो निश्चल रहे धर्म महिल मन, नहीं तो पडतो जोय रे ॥ द० ॥ ६ ॥ जिन दरिसन जिनपूजा, करता, समकित शुद्धि थाय रे । पद्मराय परे भावना भावी, 'धनमुनि' शिवपुर राय रे ॥ द० ॥ ७ ॥

दोहा

जिनपूजा जुक्ते करे, शम दम भाव विचार ।
समकित चोथी भावना, भावे भवि मनोहार ॥ १ ॥

दोहा

आत्मिक फल प्रगट कह्युं, त्रिशलानंदन वीर।
ते प्रभुपूजा फल थकी, फल पामो भव तीर ॥ १ ॥

ढाल २६, आवजो ३ रे, तमे वेला निशाले आ०—ए राह

भावजो भावजो भावजो रे भवि समकित स्थानक भावजो, जिनराजनी पूजा रचावजो रे भ० । छट्ठुं स्थानक मोक्षनुं साधन, संयम ज्ञान उपजावजो रे भ० ॥ भा० ॥ १ ॥ कारण योग कारज साधी, मुक्तिमारग दिपावजो रे भ० । ज्ञान विना किरिया जग झूंठी, करे ज्ञाननये ठेरावजो रे भ० ॥ भा० ॥ २ ॥ रूपुं छीप विहुं एक तोले, करे ज्ञान विना परठावजो रे भ० । क्रियावादी कहे किरिया विणुं ते, ज्ञान किशुं फलदावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ जल पेसी करपद न हलावे, तारु तरे न तरावजो रे भ० । समकितवंत ते विहुँ नयवासी, आगम वयण बतावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ॥ ४ ॥ नरसुंदर परे स्थानक भावी, शिवसुंदरी वर थावजो रे भ० । द्रव्य भावे जिनराजने पूजी, तन मन ध्यान मिलावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ५ ॥ सतसठ भेदे पूजा विरची, शासन सोह चढावजो रे भ० । त्रिशलानंदन वीरनी वाणी, "धनमुनि' घट में वधावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ६ ॥

त्रयोदशी फलपूजा—दोहा

अव्याबाध अनंत फल, जो पूजे जिनभाण।
समकित ठाण विचारतां, पामे अविचल ठाण ॥ १ ॥

ढाल ७५, काज सिद्धां सकल हवे सार—ए राह

ठरे समकित तेहिज थान, तेहना षड्विध कह्यां विज्ञान। पहिलुं स्थानक चेतना लक्ष, स्वसंवेदन जाणो दक्ष ॥ १ ॥ खीर नीर परे थयो मिश्र, पुद्गल साथे पण छे अनिश्र। अनुभव हंसनी चंचु जो लागे, पुद्गल भावने जुदो त्यागे ॥ २ ॥ बीजुं स्थानक आतम नित, अनुभूति संभारो चित्त। पूरव अनुभव अनुसारे, स्तनपान बालक करे प्यारे ॥ ३ ॥ द्रव्यथी अचल अखंड कहाय, नर नरकादि अनित्य पर्याय। चेतन कर्त्ता स्थानक त्रीजुं, कर्मयोगे करे कर्म बीजुं ॥ ४ ॥ दंडचक्रादिकने उपाय, कुंभकारथी घटपणुं थाय। निश्चयथी निज गुणकर्त्ता, व्यवहारे छे कर्मनो धर्त्ता ॥ ५ ॥ चोथुं स्थानक चेतना भुत्ता, पुन्य पाप कर्यां फल जुत्ता। व्यवहार ने निश्चय अनुक्रमे, भुंजे परगुण निजगुण धर्मे ॥ ६ ॥ अव्याबाध अनंत सुखवास, पंचम स्थानक परमपद खास। आधि व्याधि टले मन पीड़ा, करे 'धनमुनि' शिवसुख क्रीड़ा ॥ ७ ॥

दोहा

आत्मिक फल प्रगट कह्युं, त्रिशलानंदन वीर।
ते प्रभुपूजा फल थकी, फल पामो भव तीर ॥ १ ॥

ढाल २६, आवजो ३ रे, तमे वेला निशाले आ०—ए राह

भावजो भावजो भावजो रे भवि समकित स्थानक भावजो, जिनराजनी पूजा रचावजो रे भ० । छट्ठुं स्थानक मोक्षनुं साधन, संयम ज्ञान उपजावजो रे भ० ॥ भा० ॥ १ ॥ कारण योग कारज साधी, मुक्तिमारग दिपावजो रे भ० । ज्ञान विना किरिया जग झूंठी, करे ज्ञाननये ठेरावजो रे भ० ॥ भा० ॥ २ ॥ रूपुं छीप बिहुं एक तोले, करे ज्ञान विना परठावजो रे भ० । क्रियावादी कहे किरिया विणुं ते, ज्ञान किशुं फलदावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ जल पेसी करपद न हलावे, तारु तरे न तरावजो रे भ० । समकितवंत ते बिहुं नयवासी, आगम वयण चतावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ॥ ४ ॥ नरसुंदर परे स्थानक भावी, शिवसुंदरी वर थावजो रे भ० । द्रव्य भावे जिनराजने पूजी, तन मन ध्यान मिलावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ५ ॥ सतसठ भेदे पूजा विरची, शासन सोह चढावजो रे भ० । त्रिशलानंदन वीरनी वाणी, "धनमुनि" घट में वधावजो रे भ० ॥ भा० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रीजैने जिनराजभाषितवरे जीवादितत्वाकरे,
धर्मे येन धृतं सदा सुखकरं मोक्षैकवीजं हृदि ।
सम्यक्त्वं सुरराजसेवितपद षट्पष्टिभेदान्वितं,
सः श्राद्धो जिनराजपूजनविधौ सम्यग् भवेत् तत्परः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय मिथ्यात्वोच्छेदकाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धनाश्री

गायो गायो रे जिन समकित सुरतरु गायो ॥ टेर ॥ सतसठ भेदे करी अलंकरियो, वरण नाण फलदायो । चौमुख रत्नसिंहासन बेसी, वीरजिनेश्वर गायो रे ॥ गा० ॥ १ ॥ विण दरिसण सव किरिया फोगट, गणधर-सूत्रे वतायो । दुविध धर्मनुं मूल ते दाख्यो, जिन दरिशन सुखदायो रे ॥ गा० ॥ २ ॥ दरिसण शुद्धि कारण पूजा, करे भवि हर्ष भरायो । जिनगुण गान करी निज आतम, शिवसुख लहे सुखदायो रे ॥ गा० ॥ ३ ॥ तपाविरुद सोहमगण में, विजयदेवसूरि रायो । विजयसिंह वर विजयप्रभ गुरु, विजयरत्न सोहायो रे ॥ गा० ॥ ४ ॥ क्षमा देवेन्द्र

कल्याण विबुधनो, विजय प्रमोद मन भायो । विजयराजेन्द्र-सूरीश्वर राज्ये, पूजानो भाव वनायो रे ॥ गा० ॥ ५ ॥ संवत शशि[१] युग[४] नवेन्दु[६ १] वर्षे, कार्त्तिक मास कहायो । राजनगर में रही चोमासुं, वीरजिणंद दिल ध्यायो रे ॥ गा० ॥ ६ ॥ विजयदेवसूरीश्वर सन्तति, मृगमद वास वसायो । लक्ष्मी लीला चरण चतुर चित, 'धनविजय' मुनि पायो रे ॥ गा० ॥ ७ ॥ जे पूजा भवि भणशे सुणशे, तस घर नवनिधि थायो पुत्र कलत्र सुर सुख लीला, लहशे शिवपद ठायो रे ॥ गा० ॥ ८ ॥
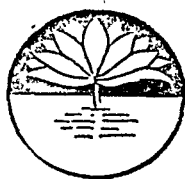
श्री द्वादशभावना पूजा विधि

त्रिगड़े के सामने बाजोट पर अखंड चांवलों के बारह साथियों वाला मंडल बना कर, उन पर एक एक श्रीफल रूपनाणा, बादाम, खारक, सुपारी, लौंग और इलायची आदि वस्तुएँ रख कर, प्रति पूजा में अष्ट द्रव्य लेकर खड़े रहना और प्रति पूजा काव्य-मंत्र पढ़ाने के बाद अष्टद्रव्य-चढ़ाते जाना अन्तिम कलश भणा कर आरती मंगल दीपक उतारना तथा यथाशक्ति प्रभावना बांटना। इस पूजा में स्नात्रिए १२, या ५ और इतनी ही स्नात्रणियां होनी चाहिए। प्रति पूजा के अन्त में स्नात्रणियों को कुसुमांजली उछालना चाहिए।
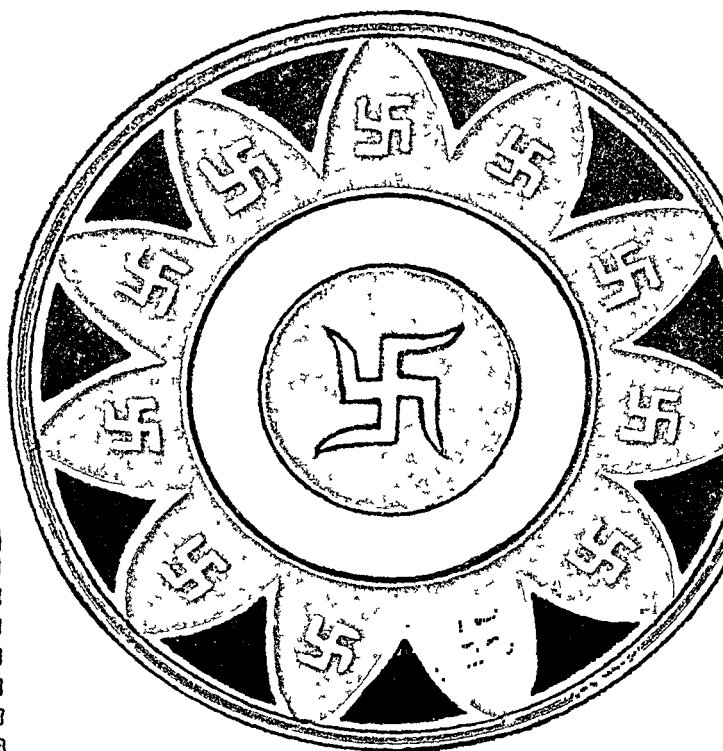
५ श्रीद्वादशभावनापूजा—मंडल.

श्रीमद्विजयवनचन्द्रसूरिजी-रचित

श्री द्वादशभावना-पूजा

—:०:—

प्रथम अनित्यभावनापूजा—दोहा

कुमति तिमिरदल खंडवा, हरवा मोह अन्नाण ।
शासननायक जग जयो, वर्द्धमान जिनभाण ॥ १ ॥
कर्मलता वितान गहन, प्रसर्यो मोह अंधार ।
भमता भवि भव कानने, जगगुरु तारणहार ॥ २ ॥
भावी आतम भावना, पामी केवल नाण ।
बेसी कनक सिंहासने, इणिपरे करे वखाण ॥ ३ ॥
दान शील तप भावना, धर्मना चार प्रकार ।
तेमां पण भवि देखीयो, भाव वड़ संसार ॥ ४ ॥
भावना भवदुखनाशिनी, भावना समकित मूल ।
धर्मवृक्षने सींचवा, भावना नीर अमूल ॥ ५ ॥
भावे भरतेश्वर तर्यो, भावे तर्यो भुयंग ।
भावे लंकापति तर्यो, भावे तर्यो कुरंग ॥ ६ ॥
दान शील तप नवि हुवे, तो निजशक्ति विचार ।
कपट रहित भवि भावियें, तो तरिये संसार ॥ ७ ॥

दत विनानो चाववो, गुरु विनानो ज्ञान ।
मन विनानो मेलव्युं, विना भावना ध्यान ॥ ८ ॥
भाव विना ते जाणिये, दानादिक शुभ ठाण ।
रस स्वाद फल नवि दिये, जेम अलूणो धाण ॥ ९ ॥
आतम भावना भावीने, पाम्या क्षायक ठाय ।
तस पदपद्मनी पूजना, कीजे भवि सुखदाय ॥१०॥
दुग तिग अड पण भेदथी, पूजा अनेक प्रकार ।
भावपूजा अधिकी कही, महानिशीथ मझार ॥११॥
तिण कारण पूजा रचु, भावना रस समुदाय ।
पूजा करता पूज्यनी, पूज्य ते पोते थाय ॥१२॥
अडविध वस्तु मेलवी, पूजा दीठ उदार ।
भावी पूजा भावना, पूजी जिनपद सार ॥१३॥

ढाल १, चंद्रप्रभु मुखचद सखि० ए राह

चरम तीर्थपति चन्द्रमा सखि पूजन दे । शिवसजनी वरराज, सखि मोय पूजन दे ॥ सादि अनत सुख लाडलो स०, तारण तरण जिहाज स० ॥ च० ॥ १ ॥ न्हवण विलेपन पुष्पथी स०, जिन पुर धूप प्रदीप स० । अक्षत नैवेद्य फल अडविधे स०, करी जिनराज समीप स० ॥ च० ॥ २ ॥ अनित्य भावना भाविये स०, पामवा नित्य स्वभाव स० । नित्य एक जिन सेवना स०, भवजल तारण

नाव स० ॥ च० ॥ ३ ॥ डाभ अणी जलबिंदु ज्युं स०, अनित्यपणुं संसार स० । उपनी वस्तु सवि कारमी स०, इन्द्रधनुष अनुसार स० ॥ च० ॥ ४ ॥ चंचल चपला जेम जाणिये स०, तन धन जोवन रंग स० । इन्द्रजाल जिम सोहिये स०, ए कृत्रिम सहु संग स० ॥ च० ॥ ५ ॥ सुख संपद संसारनी स०, जेवो जलधि कल्लोल स० । ठार नेह संध्यारंगसो स०, ए जोवन रंगरोल स० ॥ च० ॥ ६ ॥ जलतरंग सम जानिये स०, आयु अथिर संसार स० । तनु शोभा देखी कारमी स०, बूझ्यो सनतकुमार स० ॥ च० ॥ ७ ॥ जिनचक्री हरि बल जिस्या स०, थिर न रह्या जग कोय स० । राय कीर्त्तिधर समझियो स०, सूर्यग्रहणने जोय स० ॥ च० ॥ ८ ॥ वृषभ जराकुल देखके स०, बूझ्यो करकंडु भूप स० । भावी अरणिका सुत भावना स०, केवल कमला स्वरूप स० ॥ च० ॥ ९ ॥ प्रथम भावना भावी पूजिये स०, त्रिशलानंदन वीर स० । सूरिराजेन्द्र शिवसेज में स०, पोढे 'धनमुनि' धीर स० ॥ च० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् ।
विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम्

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मनेऽनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जला-द्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय अशरणभावनापूजा, दोहा

भवदीवो घटवट्टडी, आयु तेलाधार ।
जमरा पवन झकोल है, रहत केती वार ॥ १ ॥
काल अचानक गलग्रहे, मरण समे जिण वार ।
शरण एक जिनराज विण, कोइ न राखणहार ॥ २ ॥
एहवी अशरण भावना, भावी हृदय मझार ।
अष्टविधे प्रभु पूजिये, जिम तरिये संसार ॥ ३ ॥

ढाल २, राग काफी, राह झुमकडानी

अशरण भावना भाविये रे, बीजी भवि सुखकार जिनपद पूजिये रे । धर्मविना जग जीवने रे, कोइ न राखणहार जि० ॥ अ० ॥ १ ॥ मात पिता सुत बंधवा रे, नारी कुटुंब परिवार जि० । डग मग जोता जीवनें रे, काल करे संहार जि० अ० ॥ २ ॥ मरण भीतथी जीवडो रे, जो पेसे पाताल जि० । गिरि दरि जलधि वनमें वसे रे, तो पण हरे तिहा काल जि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हय गय रथ पायक खडा रे, राय राणा करे सेव जि० । चौदरत्न नवनिधि

धणी रे, काले खाधा देव जि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ कूडं कपट करी मेलव्यो रे, माल मुलक धन राज जि० । नंद ज्युं सोवन डूँगरी रे, आखिर नावे काज जि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ रायसुभूम षट्खंडे धणी रे, बूड्यो चरम जिहाज जि० । शरण न जातां नरकमां रे, देव गया सवि भाज जि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ दीपायन दही द्वारिका रे, मात पिता सुत धाम जि० । बलवंत हरि हलधर जिसा रे, राखी न शक्या ताम जि० ॥ अ० ॥ ७ ॥ जन्म जरा मरणादिके रे, अशरण शरण अनाथ जि० । धर्म एक जिनराजनो रे, अशरण शरण सनाथ जि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ त्रिशलानंदन वीरजी रे, चरण शरण सिणगार जि० । 'धनमुनि' शरणे राखिये रे, जिम वसुदत्त कुमार जि० ॥ अ० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं शमदमादिगुणावलिमंडनम् । विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जला-द्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

तृतीय संसारभावनापूजा, दोहा

जिनपूजा विण जीवड़े, सवि संसारना भाव ।
जन्म जरा दुःख अनुभव्या, चरण शरण विण नाव ॥१॥

भावी संसारनी भावना, तजी संसार विभाव ।
अष्टविधे प्रभु पूजतां, पामे सहज स्वभाव ॥ २ ॥

ढाल ३, बालपणे जोगी हुवा, माइ भिक्षा दो ने, ए राह

चौदराज के लोकमें, जिया खेलत बाजी । कर्म परिणाम भूपालतें, बहु होत है राजी ॥ १ ॥ कबहुक भू जल जलण में, वायु वन में वसियो । कबहुक नर्क निगोद में, दुःखपंजर फसियो ॥ २ ॥ बि ति चउरिंदी योनि में, बहुकाल ते भमियो । सर्प शियाल हरि करि तणा, भवतिर्यंच रमियो ॥ ३ ॥ मानव को भव पाय के, शूद्र मातंग सरज्यो । ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य में, जाति मान में गरज्यो ॥ ४ ॥ रूप कुरूप धनी निरधनी, सोभागी दुर्भागी । संयोग वियोग दुःख अनुभव्यां, थयो कामिनी रागी ॥ ५ ॥ देव भवे विनोद में, विषयारस रमियो । नारी चकोरा अप्सरा, मोहमत्त में कसियो ॥ ६ ॥ मात पिता मरीने हुओ, प्रिया पुत्र संबंध भाइ बहिन नर नारीना, कर्या बहुला प्रबंध ॥ ७ ॥ जाति योनि सवि अनुभव्या, कीधा सर्व आहार । सर्व तनु तन में वस्यो, कीधा सवि सिणगार ॥ ८ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, भेद बादर सुहुमें । पुग्गल परियट्ट अनतना, कीधा बहुला भव में ॥ ९ ॥ पापश्रुत भणी हरखियो, दीधा पापना दान । धर्मकाज पशुने हणी, कीधा यागना थान

॥ १० ॥ कुगुरु पाखंडीए भोलव्यो, निज मत में गरथ्यो ।
जिनपूजा द्रव्य भाव में, हिंसा धर्म ते सरध्यो ॥ ११ ॥
इम संसार स्वरूपनो, कहुं कहांलो विचार । भवनाटकथी
ऊभग्यो, आव्यो नाथ दुवार ॥ १२ ॥ त्रिशलानंदन
वीरजी, नेह नजरे निहालो । 'धनमुनि' वर संसारना, भव-
दुखडां टालो ॥ १३ ॥

काव्य और मंत्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं शमदमादिगुणावलिमंडनम् ।
विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम्
॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जला-
द्यद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थी एकत्वभावनापूजा, दोहा

चोथी एकत्व भावना, भावो आतमराय ।
अष्टविधे प्रभु पूजिये, अक्षय सुख जिम थाय ॥ १ ॥

ढाल ४, किसके चेले वे किसके पूत, ए राह

किसके साजन किसके पूत, जीव एकाकी तुं अवधूत जिन
पजले । अरिहा आतम सिद्धि काज जिन पूजले ॥ टेर ॥

साची एक जिनराज की सेव, अवर सबे परभाव की टेव जि० ॥ कि०॥ १ ॥ आया अकेला जायगा एक, माल मुलक सबे मूकी नेक जि० । मात पिता सुत सज्जन लोक, आप सवारथ मिलिया फोक जि० ॥ कि० ॥ २ ॥ सपद समे मेवे तुज पाय, विपद समे सय नाशी जाय जि० । दव बलतो देखी करे दोड़, जिम पंखी तरु वासकु छोड जि० ॥ कि० ॥ ३ ॥ हय गय रथ लख चुलसी जास, छिन्नुं क्रोड पायक दल खास जि० । चोसठ सहस्त्र वर पद्मिनी नार, छोड चले एकीला निरधार जि० ॥ कि० ॥ ४ ॥ तीन भुवन में कंटक थाए, मन में धरता गर्व गुमान जि० । नागा विए नागा गये कान, रावए सरिखे बहुत राजान जि० कि० ॥ ५ ॥ आंगए लगे निज नारी धाय, देहली लगे आवे भगिनी माय जि० । स्वजन कुटुंब श्मशाने वेराय, हंस अकेलो परलोके जाय जि० ॥ कि० ॥ ६ ॥ बहु मिले खट पट बहु थाय, नित्य एकाकी रहे सुखदाय जि०। एकलपणु भावी नमिराय, चरए शरए लही सिद्ध बुद्ध थाय जि० ॥ कि० ॥ ७ ॥ विधि पूर्वक भव जिन अंग, एकल भावे जीती अनंग जि० । मधुसूदन मझार, एकत्व भावना भावी अपार जि० ॥ कि० मे पए ते विध [illegible] ाज, जयणाए पूजिये

जिनराज जि० त्रिशलानंदन श्री महावीर, 'धनमुनि' तारजो भवोदधि तीर जि० ॥ कि० ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम्
विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥१॥
ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्ट द्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

पंचमी अन्यत्वभावनापूजा, दोहा

जो चाहो निज सुख भणी, तो पूजो अरिहंत ।
अन्यत्र भावना भाविये, जिम जलथी जलकंत ॥ १ ॥
निजस्वरूप वरवा भणी, छांडी मोह जंजाल ।
मनोहर आठे द्रव्यथी, पूजो जगत दयाल ॥ २ ॥

ढाल ५, सांभलजो मुनि संयम रागी, ए राह

जिनपूजा जुगते करो प्राणी, समकित गुण सहेलाणी रे । रायपसेणीए सुर सूरियामे, करी नाटिक पूजा गुणखाणी रे ॥ जि० ॥ १ ॥ योजन एकनु मंडल लेखी, गंधोदक वरसावे । जलना थलना पांचे वरणा, फूल पगर पथरावे

रे ॥ जि० ॥ २ ॥ रत्नपीठ रची कनक सिंहासन, तिहाँ बेसी सुर भावे रे । जिन अनुजाणी नाटिक विरचे, भवना पाप खपावे रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ दाहिण वाम भुजाथी प्रगटे रूपे अनंग जंपता रे । एकसो अडसठ कुमार कुमारी, सवि सिणगार सोहंता रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मादल मुंगल ताल तंबूरा, सार सतार सोहावे रे । धप मप धौं धौं धु धु कट धु धु कट, पखावजी भजावे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ तननन तननन रीरी रीरी ताने, ता थै तान मिलावे रे । राग रागिणी वीण वंसरी, स्वर संचारी गावे रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ ठमक ठमक पगला ठमकंती घुघरी छम छमकंती रे । बिच बिच इन्द्राणी वलि नाचे, सोवन चूड़ी खलकंती रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ हाव भाव करी अंग मोड़ंती, परि परि गात्र विलोती रे । घूंघटनो पट दूर करीने, वलि जिनमुख जोती रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ अन्यत्र भावना रागे गावे, जिनगुण गान मिलाई रे । आप सवारथ सहु जग मलियो, नहीं कोइ कोइनो सहाई रे ॥ जि० ॥ ९ ॥ पंथसिरे पंथी जिम मलिया, हाट मल्या हटवारी रे । रात पड़े पंखी वलि मलिया, उड़ी उड़ी जाय सवारी रे ॥ जि० ॥ १० ॥ निज निज स्वारथ सहुने वहालो, विन स्वारथ करे ख्वारी रे । रायप्रदेशी विष देइ मार्यो, जुओ सूरिकंता नारी रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ चलणीये निज अंगज हणियो, लाखनो घर निपजाई रे । भरत बाहु-

वली वेहुं लडिया, जुओ बांधवनी सगाई रे ॥ जि ॥ १२ ॥ कोणिक श्रेणिक बांधी मार्यो, जुओ जुओ पुत्र सनेहा रे । आतम भावथी जुजुआ सघही, पुद्गल भाव सब देहा रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ पंचमी भावना भावत सुंदर, मरुदेवा शिव व्यापी रे । त्रिशलानंदन गौतम शिष्यने, केवलकमला आपी रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ अमने तिम प्रभु रंग मिलावो, शिवसेजां विलसावो रे । कर जोड़ी सुर विनति करीने, करे सुरलोक सिधावो रे ॥ जि० ॥ १५ ॥ इणिपरे जे भवि भावना पूजा, भावी जिनपद फरसे रे । 'धनविजय' नर सुर सुख अनुभवी, सादि अनंत सुख विलसे रे ॥ जि० ॥ १६ ॥

काव्य और मंत्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् । विशदभावनाभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अशुचिभावनापूजा—दोहा

अशुचिभावने टालवा, मेलवा शुद्ध स्वभाव ।
अष्टविधे जि ज्ञ, तारक भवजल नाव ॥ १ ॥

ढाल ६, वमडानो वासी रे वसियो वेगलो—ए राह

जिनपडिमा पूजीने पातिक हरिये रे, भावना भावी रे सहजानंदनी। छट्ठी भावना अशुचि भरी आ काया रे, फोगट शी माया रे करवी असारनी ॥ १ ॥ वादलनी-छाया रे छेवट छारनी। स्थिर नहीं काया रे, त्रिविध विकारनी। चंचलतरु छाया रे, जीवन वारनी। सांची एक छाया रे, धर्मसहकारनी ॥ टेर ॥ मदिरा यंत्रने जोतां गंगानीरे रे, तो पण तास छिद्र रे शुद्ध हुवे नहीं। कपूरे वासित लसण न हुवे सुगंधी रे, दुर्जन ना लहे रे सज्जनता सही ॥ वा० ॥ ॥ २ ॥ तिम नर नारीनी दुर्गंधता भरी देही रे, गंधोदक माटी रे स्नान विलेपने। बावना चंदन सरस सुगंधे चरचे रे, तो पण दुर्गंधी रे सुगंधी ना बने ॥ वा० ॥ ३ ॥ दुर्गंध दूरथी देखी मुह मचकोड़े रे, पण नवि जाणे रे निज तनु ए मर्यो। नव-द्वादश नर. नारीना वहे द्वार रे, कफ मल मूत्र नगरना खालपरे वर्यो ॥ वा० ॥ ४ ॥ मांस रुधिर मेदा रस अस्थि मज्जा रे, नर बीजा कृमी वालादिके थोथली। चर्म जटित मोहरायना घरनी चेटी रे, रागादि पेटी रे कर्मनी कोथली ॥ वा० ॥ ५ ॥ इणविध गंदी काया देखी नाच्यो रे, माच्यो वलि रूपे रे निज परनारने। कनक पूतली भोजन भरी षटमास रे, मल्लि मित्र बूझ्या रे, देखी दुर्गंधने ॥ वा० ॥ ६ ॥ ऊंधे मस्तक झूल्यो गर्भावास रे, कृमिपरे

वसियो रे मल में जीवड़ो। वीर्यरुधिरनो कीधो प्रथम आहार रे, हवे मुनितनु देखी रे थाय दुगंछीयो ॥ वा० ॥ ॥ ७ ॥ पण जिनशासन वासन भावने पामी रे, आतम आरामी रे तजी परभावना। दर्शन देखत मगन भयो हवे नाथ रे, त्रिशलानंदन आगे र कीजे एक याचना ॥ वा० ॥ ॥ ८ ॥ काल अनादि अशुचि भावने टाली रे, सादि अनंत दीजे रे तुजपद वासना। 'धनमुनि' वर महानंद कुमार परे तारो रे, भवना दुःख वारो रे प्रभु निज दासना ॥ वा० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम्। विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा।

सप्तमी आश्रवभावनापूजा—दोहा

अशुभाश्रव त्यागन भणी, भजो शुभाश्रव जीव।
अरिहानी पूजा करो, अष्ट प्रकार सदीव ॥ १ ॥

ढाल ७, ओधव माधवने केजो—ए राह

अरिहा पूजा अलवेली, कामखुंभ चित्रावेली, शिवसजनी

ढाल ६, यमद्दानो वासी रे वसियो वेगलो—ए राह

जिनपडिमा पूजीने पातिक हरिये रे, भावना भावी रे सहजानंदनी। छट्ठी भावना अशुचि भरी आ काया रे, फोगट शी माया रे करवी असारनी ॥ १ ॥ वादलनी छाया रे छेवट छारनी। स्थिर नहीं काया रे, त्रिविध विकारनी। चंचलतरु छाया रे, जीवन वारनी। सांची एक छाया रे, धर्मसहकारनी ॥ टेर ॥ मदिरा यंत्रने जोतां गगानीरे रे, तो पण तास छिद्र रे शुद्ध हुवे नहीं। कपूरे वासित लसण न हुवे सुगंधी रे, दुर्जन ना लहे रे सज्जनता सही ॥ वा० ॥ ॥ २ ॥ तिम नर नारीनी दुर्गंधता भरी देही रे, गधोदक माटी रे स्नान विलेपने। बावना चदन सरस सुगधे चरचे रे, तो पण दुर्गंधी रे सुगंधी ना बने ॥ वा० ॥ ३ ॥ दुर्गंध दूरथी देखी मुह मचकोड़े रे, पण नवि जाणे रे निज तनु ए भर्यो। नव-द्वादस नर नारीना वहे द्वार रे, कफ मल मूत्र नगरना खालपरे वर्यो ॥ वा० ॥ ४ ॥ मास रुधिर मेदा रस अस्थि मज्जा रे, नर बीजा क्रमी वालादिके थोथली। चर्म जटित मोहरायना घरनी चेटी रे, रागादि पेटी रे कर्मनी कोथली ॥ वा० ॥ ५ ॥ इणविध गंदी काया देखी नाच्यो रे, माच्यो वलि रूपे रे निज परनारने। कनक पूतली भोजन भरी षटमास रे, मल्लि मित्र बूझ्या रे, देखी दुर्गंधने ॥ वा० ॥ ६ ॥ ऊंधे मस्तक झूल्यो गर्भावास रे, कृमिपरे

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्य-जामहे स्वाहा ।

अष्टमी संवरभावनापूजा, दोहा

पातिकपंक पखालवा, कर संवरनी पाल ।
अष्टद्रव्ये प्रभु पूजीने, मेटो भवदुःख जाल ॥ १ ॥

ढाल ८, सिद्धाचल सिखरे दीवों रे, ए राह

सजी सोल सुंदर सिणगारा रे, प्रभुपद पूजं अलबेला । मेटुं मिथ्या धाम अंधारा रे प्र०, करी संवर अंग पखाला रे प्र० । घसी केसर उपशम घोला रे प्र० ॥ स० ॥ १ ॥ पंचाचार कुसुमनी अंगी रे प्र०, धरुं ध्यान घटा धूप गी रे प्र० । यतना दीपक माल जगावुं रे प्र०, अक्षत आठवी भावना भावुं रे प्र० ॥ स० ॥ २ ॥ धरी समकित सुघड़ी थाल रे प्र०, भावुं भावना फल सुविशाल रे प्र० । प्रभु जन्म मरण दुःख मोटा रे प्र०, सही ते अम लागे खोटा रे प्र० ॥ स० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र मान अपमाने रे प्र०, लाभालाभ ते सुख दुख टाले रे प्र० । जो समभावे मन राखूं रे प्र० तो मोक्षतणा फल चाखूं रे प्र० ॥ स० ॥ ४ ॥ धन परि-ग्रह ममता छंडी रे प्र०, लेशुं संजम शम दम दंड रे प्र० । सहु आशा दासी वारी रे प्र०, थाशुं एकल मल्ल विहारी रे

क्रीड़ा केली रे चेतन चतुर चेतो चित में, निजगुण मोह वसे निगमे रे ॥ चे० ॥ १ ॥ आश्रव भावना संवरिये, जिन-पूजा जुगते वरिये, विनति प्रभु आगल करिये रे ॥ चे० ॥ ॥ २ ॥ हूंसे हिंसानो रसियो, परदुःख देखी हुं हसियो, पर अवगुण देखण धसियो रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ मिथ्या वयणे जन ठगिया, झूंठ भखी अवगुण लविया, धरमी धर्मगुरु हेलविया रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ परधन चोरी सपराणो, परनारी संग ललचाणो, परिग्रह पापथी मूंझाणो रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ महा आरम्भ परिग्रह मेल्या, कूड कपट करी छल खेल्या, पाप करी पर शिर ठेल्या रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ पांचे आश्रवनी पेटी, मोहराय घरनी चेटी, इंद्री पंच विषय भेटी रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ दशमे अंगे जिन भाष्या, पाचे आश्रव कही दाख्या. कटुक विपाकी फल आख्या रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ अव्रती लगे एकेंद-रिया, पाप थानक अढारे धरिया, भाषे भगवइ गणधरीया रे ॥ चे० ॥ ९ ॥ सुनंदसेठ जिम निस्तरियो, आश्रव भावथी तिम डरियो, में पण प्रभु शरणो धरियो रे ॥ चे० ॥ १० ॥ वंछितदान हवे दीजे, वीर प्रभु करुणा कीजे, 'धनमुनि' अरजी चित् दीजे रे ॥ चे० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् ।
विशदभावनाभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्य-जामहे स्वाहा ।

अष्टमी संवरभावनापूजा, दोहा

पातिकपंक पखालवा, कर संवरनी पाल ।
अष्टद्रव्ये प्रभु पूजीने, मेटों भवदुःख जाल ॥ १ ॥

ढाल ८, सिद्धाचल सिखरे दीवो रे, ए राह.

सजी सोल सुंदर सिणगारा रे, प्रभुपद पूजं अलवेला ।
मेटुं मिथ्या धाम अंधारा रे प्र०, करी संवर अंग पखाला रे प्र० । घसी केसर उपशम घोला रे प्र० ॥ स० ॥ १ ॥ पंचाचार कुसुमनी अंगी रे प्र०, धरु ध्यान घटा धूप गी रे प्र० । यतना दीपक माल जगावुं रे प्र०, अक्षत आठवी भावना भावुं रे प्र० ॥ स० ॥ २ ॥ धरी समकित सुखड़ी थाल रे प्र०, भावुं भावना फल सुविशाल रे प्र० । प्रभु जन्म मरण दुःख मोटा रे प्र०, सही ते अम लागे खोटा रे प्र० ॥ स० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र मान अपमाने रे प्र०, लाभालाभ ते सुख दुख टाले रे प्र० । जो समभावे मन राखूं रे प्र० तो मोक्षतणा फल चाखूं रे प्र० ॥ स० ॥ ४ ॥ धन परि-ग्रह ममता छंडी रे प्र०, लेशुं संजम शम दम दंड रे प्र० । सहु आशा दासी वारी रे प्र०, थाशुं एकल मल्ल विहारी रे

प्र० ॥ स० ॥ सवि जीवने हित चित खमशुं रे प्र०, चलि अलीक वचन नवि लवशुं रे प्र० । परहरशुं परना वित्त रे प्र० रहीशुं शत्रु मित्र समचित्त रे प्र० ॥ स० ॥ ६ ॥ हणशुं कामकटक दल पूरो रे प्र०, धरी शील सन्नाह सनूरो रे प्र० । करशुं परिग्रहनो परिहार रे प्र०, जिम कीधो श्री महावीर रे प्र० ॥ स० ॥ ७ ॥ इम भावी विजय नरिंदो रे प्र०, थयो शिवसुंदरीनो इंदो रे प्र० । अमने पण ते सुख वहालो रे प्र०, जो हाथ हवे प्रभु झालो रे ॥ प्र० ॥ स० ॥ ८ ॥ हाथी मुखथी दाणो निकले रे प्र०, सवि कीड़ी कुटुंबने पोषे रे प्र० । तिम नेह नजर टुंक निरखो रे प्र०, न्याय 'धनमुनि' तुज पद सरखो रे प्र० ॥ स० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् विशदमानवभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्-यजामहे स्वाहा ।

नवमी निर्जराभावनापूजा—दोहा

कंचन काटे आगे जले, मेण गले जिम ताप ।
अष्टविधे प्रभु पूजतां, तालिये भवदुःख पाप ॥ १ ॥

ढाल ९, हरि आवजो मंदरिये रंग मांडवा रे, ए राह

संहिया नवमी ते निर्जर भावना रे, भावी करिये प्रभुपद पूजना रे। गुरु आगल पाप आलोचना रे, करिये विनय वेयावच एकमना रे ॥ सं० ॥ १ ॥ तपसी कुल गण संघ साधर्मीनो रे, शिष्य दुर्बल घाल गिलाणनो रे। अरिहा आचारिज वाचक तणो रे, प्रवर्त्तक थिविर वृद्ध साधुनो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ चैत्य भक्ति करतां बहु निर्जरा रे, भाषे दशमे अंगे जिन गणधरा रे। दश दोश ते मुनि पडिया त्ररा रे, सिंहक्रीडित तप अति सुंदरा रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ कर्मसूडण तप कनकावली रे, गुणरयण संवत्सर आवली रे। योग उवधान वहिये मनवली रे, श्रुत आराधो श्रुत सांभली रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ खंधक मेघकुमार मुनिराजिया रे, चौद सहस अणगार बड़भागिया रे। धन्य धन्नो मुनि तप वासिया रे, स्वयंमुखे ते वीर प्रशंसिया रे ॥ सं० ॥ ५ ॥ इम भावना भक्ति अमे पूजिये रे, त्रिशलानंदन महेर कीजिये रे। जरा नेह नजर भर रींझिये रे, 'धनमुनि' ने शिवपद दीजिये रे ॥ सं० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम्।
विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम्

प्र० ॥ स० ॥ सवि जीवने हित चित खमशुं रे प्र०, चलि अलीक वचन नवि लवशुं रे प्र० । परहरशुं परना वित्त रे प्र० रहीशुं शत्रु मित्र समचित्त रे प्र० ॥स० ॥ ६ ॥ हणशुं कामकटक दल पूरो रे प्र०, धरी शील सन्नाह सनूरो रे प्र० । करशुं परिग्रहनो परिहार रे प्र०, जिम कीधो श्री महावीर रे प्र० ॥ स० ॥ ७ ॥ इम भावी विजय नरिंदो रे प्र०, थयो शिवसुंदरीनो इंदो रे प्र० । अमने पण ते सुख वहालो रे प्र०, जो हाथ हवे प्रभु झालो रे ॥ प्र० ॥ स० ॥ ८ ॥ हाथी मुखथी दाणो निकले रे प्र०, सवि कीड़ी कुटुंबने पोषे रे प्र० । तिम नेह नजर टुंक निरखो रे प्र०, थाय 'धनमुनि' तुज पद सरखो रे प्र० ॥ स० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम्
विशदमानवभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

नवमी निर्जराभावनापूजा—दोहा

कंचन काटे आगे जले, मेण गले जिम ताप ।
अष्टविधे प्रभु पूजतां, तालिये भवदुःख पाप ॥ १ ॥

जिनभावनी भजना ॥ स० ॥ ६ ॥ शुक परिव्राजक रे सिद्धो, अर्जुनमाली शिवपद लीधो । दशमी भावना रे रसियो, राय प्रदेशी सुरपद वसियो ॥ स० ॥ ७ ॥ धर्मसुधारस रे पीवा, त्रिशलानंदन पूजुं सदीवा । धर्मनी सेवा रे सारी, दुपसह लगे 'धनमुनि' भवतारी ॥ स० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् । विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनंताऽनंतशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जला-द्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

एकादशमी लोकस्वरूपभावनापूजा, दोहा

अष्टद्रव्य शुभ मेलवी, जो पूजे जिनभूप ।
ज्ञाननयन पामी करी, देखे लोक स्वरूप ॥ १ ॥

ढाल ११, प्रभुनी चाकरी रे, राह

त्रिशलानंदन सेविये रे, भापक लोकालोक स्वरूप, प्रभुपद पूजिये रे । ए प्रभुनी पूजा विना रे, भमिये चौदराज भव कूप प्र० ॥ त्रि० ॥ १ ॥ पग पहोला कटिकर धरी रे, सोहे

॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

दशमी धर्मभावनापूजा, दोहा

धर्मथी संवर निर्जरा, धर्मथी शिवपद सार ।
धर्मकारण जिनराजनी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ १ ॥

ढाल १०, आज ऊजम छे रे अधिको, ए राह

सहजानदपद रे नीको, धर्मधुरंधर श्रीजिनजीको । भवजल तारण रे नावा, भाख्यो दशविध सहज स्वभावा ॥ स० ॥ १ ॥ वाछित सुखनी रे दाता, सुरतरु सम जस छे अवदाता । दुरगति पडता रे धारे, धर्म ते कहिये चार प्रकारे ॥ स० ॥ २ ॥ सुकृत करणी रे खेत, शोधो करुणारस संकेत । मिथ्याशल्यने रे काडो, कुगुरु कंथेर कुमत कुश वाड़ो ॥ स० ॥ ३ ॥ सुमता खेड़े रे खड़िये, किरिया खातर क्षेत्रे भरिये । समकित बीजने रे वावो, धर्मतरु तिहाँ ऊगे सभावो ॥ स० ॥ ४ ॥ वाड संतोषनी रे कीजे, उपशम-नीरे मूल सींचिजे । क्रोध मानादिक रे चोरा, वारो वानर अंगना सोरा ॥ स० ॥ ५ ॥ अनुभव फुलड़े रे फूले, धर्मतरु शिवसुख फल झूले । ते फल चाखो रे सजना, जो पूजो

जिनभावनी भजना ॥ स० ॥ ६ ॥ शुक परिव्राजक रे सिद्धो, अर्जुनमाली शिवपद लीधो । दशमी भावना रे रसियो, राय प्रदेशी सुरपद वसियो ॥ स० ॥ ७ ॥ धर्मसुधारस रे पीवा, त्रिशलानंदन पूजुं सदीवा । धर्मनी सेवा रे सारी, दुपसह आगे 'धनमुनि' भवतारी ॥ स० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् । विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनंताऽनंतशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जला-द्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

एकादशमी लोकस्वरूपभावनापूजा, दोहा

अष्टद्रव्य शुभ मेलवी, जो पूजे जिनभूप ।
ज्ञाननयन पामी करी, देखे लोक स्वरूप ॥ १ ॥

ढाल ११, प्रभुनी चाकरी रे, राह

त्रिशलानंदन सेवियें रे, भाषक लोकालोक स्वरूप, प्रभुपद पूजिये रे । ए प्रभुनी पूजा विना रे, भमिये चौदराज भव कूप प्र० ॥ त्रि० ॥ १ ॥ पग पहोळा कटिकर धरी रे, सोहे

ऊर्ध्व पुरुष आकार प्र० । सात राज साधिक मली रे, तिरछो अधो लोक विस्तार प्र० ॥ त्रि० ॥ २ ॥ देश ऊण ऊर्ध्व लोकनो रे, माध्यो सात राजनो मान प्र० । चौदराज त्रसन दीनो रे, विस्तार एक राज प्रमान प्र० ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ धर्माऽधर्म आकाशना रे, पुद्गल जीवना देश प्रदेश प्र० ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ निरय भवण अधो लोक में रे, तिर्यक् नर तिरियच सुर दोय प्र० । ऊर्ध्व सुरालय सोहता रे, कल्प कल्पातीत भेदे होय प्र० ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सिद्धशिला शिर ऊजली रे, विस्तार लाख जोयण पणयाल प्र० । सिद्धजोयणने छेडले रे, सोहे सादि अनंत थित काल प्र० ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ केवलनाण दंसण धरा रे, शोभित अजर अमर अकलंक प्र० । अनंत चतुष्टय भोगनो रे, स्वादे शिववहु संग निशंक प्र० ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ सिद्धस्थानक जोवा भणी रे, साहिबा मुज मत हर्ष अपार प्र० । लोकस्वरूप इग्यारमी रे, भावुं भावना भक्ति उदार प्र० ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ वार अनंती जीवड़ो रे, फरस्यो छाली वाटक न्याय प्र० । भुवनभानु भव सांभली रे, बूझ्यो चन्द्रमौली महाराय प्र० ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ लोकांतिक थावा भणी रे, पूजुं प्रभुपद निज उछरंग प्र० । भक्तिवशे लेशुं अमे रे, 'धनमुनि' प्रभु पदवी अति चंग ॥ प्र० ॥ ॥ त्रि० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेलिनिकेतनं शमदमादिगुणावलिमंडनम् ।
विशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम्
॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्तानन्तशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

द्वादशमी बोधिदुर्लभभावनापूजा, दोहा

बोधिरत्न विण जीवड़ो, भमियो लोक मझार ।
बोधिरत्न काजे चतुर, पूजो जिनपद सार ॥ १ ॥

ढाल १२, कैसे तेने जंबुको मेरु कंपायो, ए राह

नाथ तेरो दरिशन दुर्लभ पायो, मोकुं नटारे नचायो ना० ॥ टेर ॥ भव भव भटकत दश दृष्टांते, दुल्लहो नर भव पायो । आर्यक्षेत्र उत्तम कुल जाति, दुल्लही निरोगी कायो ॥ ना० ॥ १ ॥ पांचो इन्द्री प्रवड़ी पामी, दुल्लहो धन संप्रदायो । सद्गुरु जोग सिद्धांत सांभलवुं, दुर्लभ चित्त समजायो ॥ ना० ॥ २ ॥ सद्दहणा शुद्धि जिनसूत्रनी, दुक्कर अंग धरायो । सामग्री सघली लही सुंदर, मूढ़ प्रमादे हरायो ॥ ना० ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म प्रसंगे, दुर्लभ बोध पठायो । रत्नचिंतामणि देवनो दीधो, जेम गमारे गमायो ॥ ना० ॥ ४ ॥ बोधिरयण विण हुँ बहु भटक्यो, हवे प्रभु

शरणे आयो । त्रिशलानंदन बोधि भावना, मागु हु शीष नमायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ हरि हर देव कुदेवथी उमगी, तुज सेवा मन भायो । करुणा नजर हवे प्रभुनी लहीने, सुगुरु सुदेव दिल ध्यायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ बोधिरयण देइ श्रेणि-कने प्रभु, निज गुणठाणे ठायो । दायक तेम दया करी दीजे, 'धनमुनि' दान सवायो ॥ ना० ॥ ७ ॥

ढाल १३, निशदिन जोउ तोरी वाटडी, ए राह

त्रिशलानंदन वीरजी, मन मंदिर आवो । भावना भक्तिथी विनवु, टुक नजर मिलावो ॥ १ ॥ मैत्री प्रमोद कारुण्यता, मध्यस्थ स्वभावो । हित चिंतन करी साहिवा, मैत्री भाव बतावो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ गुण गुणी पक्ष प्रमोदता, प्रभु तेह करावो । दुखियाना दुःख कापवा, जरा करुणा लावो ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र सम चिंतना, मध्यस्थ सहावो । दुष्टबुद्धि प्राणी ऊपरे, दुष्टना धरु दावो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ चौद राजना चोकमा, प्रभु आगल आवो । नाटिक नाच्यो नाथजी, रींझी मोज अपावो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ रींझो नहीं तो जगधणी, नाटिक वर्जावो । सहजानद विलासना, सुखडा दिखलावो ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ सूरिराजेन्द्र मन मोहना, दास आश पूरावो । 'धनमुनि' वर तारक प्रभु, साचो नाम धरावो ॥ त्रि० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलमंगलकेनिकेतनं, शमदमादिगुणावलिमंडनम् । वेशदभावनभाविनिजात्मनं, विमलमष्टविधैः प्रभुपूजनम् ।१॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमात्मनेऽनन्ताऽनन्तशक्तये न्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते वीरजिनेन्द्राय जलाद्यष्ट-व्यैर्यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धन्याश्री

गायो गायो रे प्रभु वीरजिनेश्वर गायो ॥ टेर ॥ भावना तरु पुष्पनी माला, गूंथी स्तवन सहायो । भावपूजाए कंठ ठवीने, मुज मन अति हरखायो रे ॥ गा० ॥ १ ॥ कवड़ीना अढ़ार फूलड़े, कुमारपाल नररायो । देश ढारनो राज लहीने, गणधर पदवी पायो रे ॥ गा० ॥ २ ॥ भव उपकार संभारी, मनोहर बिंब भरायो । मोहनी मूरत हनी सूरत, थिरपुर नगरे सोहायो रे ॥ गा० ॥ ३ ॥ पड़िमा जिनसरखी बोली, सकल सूत्र समुदायो । जे पडिमा लोपे पापी, नव दंडक में जायो रे ॥ गा० ॥ ४ ॥ आगम जिनपड़िमा पूजा, पंचमकाल सहायो । द्रव्य भवि भावना भावे, सांचो मुक्ति उपायो ॥ गा० ॥५॥ मगण में पाट परंपर, चारित्र पात्र कहायो । जगचन्द्र- जग चावो, तपाबिरुद धरायो रे ॥ गा० ॥ ६ ॥

तास परपर पाटे सोहे, देवसूरि दिनरायो । प्रभसूरि रत्नसूरीश्वर, क्षमा देवेन्द्र पटदायो रे ॥ गा० ॥ ७ ॥ च विबुध प्रमोद तरो पट, किरिया शुद्धि सवायो । विजय न्द्रसूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार रचायो रे ॥ गा० ॥ थिरपुर नगर में रही चोमासु, धर्मध्यान दिल ध्या साणंदसघना आग्रहे करीने, पूजानो भाव बनायो रे । ॥ ६ ॥ सवत गुण श्रुति ग्रह शशि वर्षे, मास श्र सुहायो । वदि दशमी दिन पूजा बनावी, पूर्णानन्द मङ्ग रे ॥ गा० ॥ १० ॥ विजयदेव परपर विबुधा, जि उजमायो । कृष्ण गंग भाव मोहन मृगमद, चतुर चर लायो रे गा० ॥ ११ ॥ भावना पूजा भवि भणशे तस पर नवनिध थायो । 'धनविजय' जिनशासन मगल पडह बजायो रे ॥ गा० ॥ १२ ॥

श्री जिनेन्द्रपंचकल्याणक पूजा विधि

त्रिगड़ा के नीचे चावलों के पांच स्वस्तिकवाला[1] मंडल बना कर उन पर एक एक श्रीफल आदि और रूपानाणा रख कर

"ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय षट्पञ्चाशद्दिक्कुमारिपरिपूजिताय चतुष्षष्टीन्द्रमहिताय सर्वजनहिताय देवाधिदेवाय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा"

इस मंत्र को बोल कर त्रिगड़ा में प्रभुपंचतीर्थी विराजमान करना। शुद्ध जल से एक घड़ा भरकर, उसके ऊपर श्रीफल रखकर लाल-धोले वस्त्र को मौली से बांधकर स्वस्तिक ऊपर स्थापन करना और नवग्रह तथा दश दिग्पाल को बलबाकुला देना। बाद पांच स्नात्रिया, पांच स्नात्रणीयाँ और पांच पंचामृतभृत कलश तैयार करना।

१ च्यवनकल्याणक पूजा की प्रथम ढाल में प्रभु को चावल से, द्वितीय ढाल में पुष्प से वधाना, तृतीय ढाल में सुगंधोदक से न्हवण कराके इत्र लगाना, चतुर्थ ढाल में पुष्पमाला चढ़ाना, पंचम ढाल में काव्य मन्त्र भणके अष्ट द्रव्य चढ़ाना। २ जन्मकल्याणक पूजा की प्रथम ढाल में अखंड चावल और पुष्प से वधाना, द्वितीय ढाल में गुलाबजल उछाल के इत्र लगाना, तृतीय ढाल में अंगी रचना और नाटक करना, चतुर्थ ढाल में स्नात्राभिषेक कराके ध्वजा फहरा कर प्रतिमाजी को त्रिगड़े में विराजमान करना और पंचम ढाल में काव्य मन्त्र भणके अष्टद्रव्य चढ़ाके अष्टमंगल की रचना करना। ३ दीक्षाकल्याणक पूजा की प्रथम ढाल में न्हवण, विलेपन, पुष्प, आभूषण चढ़ाना, द्वितीय

---

१ श्रीमहावीर पंचकल्याणक पूजा के मंडल के समान ही इस पूजा भी मंड

ढाल में प्रभु को पालणा में पधरा के हिलोचना, तृतीय ढाल में वासक्षेप, चतुर्थ ढाल में पुष्पमाला चढ़ाके दान देना, और पंचम ढाल में अष्टद्रव्य और सुकोमल वस्त्र चढाना। ४ केवलकल्याणक पूजा की प्रथम ढाल में न्हवण कराके कपूर, बरास, चंदन का विलेपन करना, द्वितीय ढाल में कुसुमांजली चढ़ाना, तृतीय ढाल में कस्तूरी केशर का विलेपन करना, चतुर्थ ढाल में सोना चांदी या पुष्पमय आभूषण चढ़ाना और पंचम ढाल में काव्य और मन्त्र भणाके अष्टद्रव्य और घी खांड से भरी पाँच कोपरावाटकी चढाना। ५ निर्वाणकल्याणक पूजा की प्रथम ढाल में पुष्पवृष्टि करके न्हवण विलेपन कर आभूषण चढ़ाना, द्वितीय ढाल में चौवीस लरीवाला पुष्पहार, इक्षुरस या गुड चढाना, तृतीय ढाल में सवासेर मोतीचूर का मोदक ध्वजा सहित चढ़ाना, चतुर्थ ढाल में पंचवर्णपुष्प और पंचम ढाल में काव्य और मंत्र भणानेके बाद अष्टद्रव्य चढ़ाना। अन्त में कलश बोल कर आरति मंगल दीपक उतार के प्रभावना बांटना और यथाशक्ति स्वामिवात्सल्यादि भक्ति करना चाहिये।

विशिष्ट महोत्सव के साथ यह पूजा भणाना हो, तो प्रथम सुंदर मंडप की रचना कर, उसके मध्य भाग में चोंतरावद्ध वेदिका चना कर, उसको रंगी चंगी करना। फिर जलयात्रा का वरघोडा निकाल कर जलाशय से अभिमन्त्रित जल के पांच कलश भर, उनके मुख पर श्रीफल रख, लाल धोला चोरस वटका मौली से बांध कर, उनको पांच स्नात्रणियों के ऊपर उपड़ा कर वाजते गाजते मंडप वेदिक में तंदुल स्वस्तिक के ऊपर स्थापन कर प्रतिकलश को पुष्पमाला पहिराना। बाद में मंडप के दोनों नाकों पर सामने क्षेत्रपाल की स्थापना कर, उन पर तल सिंदूर माली पन्ना चढा कर, नवग्रह दशदिग्पाल स्थापन करके बलबाकुलादि पूजा देना। तदनन्तर काष्ठमय माला और प्रभु का प्रतिबिंब मंडप के पास उच्चासन पर

तीन नवकार गिनके स्थापना और क्रम से चौदह स्वप्न उतारना। फिर रत्न, या रूपानाणा से च्यवनकल्याणक की स्थापना करके च्यवनकल्याणक पूजा भणाना।

द्वितीय दिन छप्पनदिगकुमारी महोत्सव, सुमेरु की रचना, इन्द्रादिक का अभिषेक, शृंगार, दर्पण, रत्नकरंडक, थाल, पुष्प-चंगेरी आदि उपकरण रचना, औषधिमिश्रित जलकलशों से अभिषेकोत्सव, गुलाबजल, पुष्प-रत्नवृष्टि किये बाद चोवीस सेर विविध नैवेद्य,२४ सेर गुड़ और २४ पुष्प चढ़ाकर, २४ सधवा स्त्रियों से २४ गुंहली कराना। बाद जन्मकल्याणक पूजा काव्य और मंत्र भणा के अष्टद्रव्य चढ़ा के आरति मंगलदीपक उतारना।

तीसरे दिन पालखी में प्रभु को पधरा कर, जुलुश के साथ वरघोड़ा चढ़ा कर बगीचे में अशोक, या आम्रादि उत्तम वृक्ष के नीचे सिंहासन पर प्रभु को स्थापन करना। फिर स्नात्रपूजा भणाके चोवीस गज उत्तम वस्त्र, चन्दुवा और वासक्षेप चढ़ा के दीक्षा-कल्याणक की पूजा मन्त्र भणा के अष्टद्रव्य ढोना और यथाशक्ति याचकदान, तथा स्वामिवात्सल्य करना।

चौथे दिन समवसरण (त्रिगड़ा) की रचना करके उसमें मुकुट कुंडलादि रत्नजटित आभूषण पहरा कर प्रभु को पधराना। पंचवर्ण सुगंधी पुष्पवृष्टि करना और साज, वाज, तथा नाटक के साथ केवलकल्याणक की पूजा भणा के काव्य और मन्त्र बोलकर अष्टद्रव्य ढोना।

पांचवें दिन विस्तार पूर्वक स्नात्रपूजा भणा के निर्वाण कल्याणक की पूजा भणाना तथा काव्य और मन्त्र बोल कर अष्टद्रव्य, २४ मोदक चढ़ा के आरति मंगलदीपक उतारना, यथाशक्ति स्वामिवात्सल्य, या नोकारसी करके पंच दिनावधिक पंचकल्याणकोत्सव की समाप्ति करना।

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी रचित—

श्री जिनेन्दपंचकल्याणक पूजा

च्यवन कल्याणक पूजा—दोहा

सकल करम दल दंडवा, सुकल सुक्ल अभिजात ।
प्रणमुं पंच कल्याण के, जग तारक जग तात ॥ १ ॥

ढाल १, सुदरी री सावुं आम सोभतु के वाह, ए राह

निरिख जिन इन्द्र चन्द्र, चन्द्र छवी वाह वाह ॥ टेर ॥ महोच्छवे कल्याण करी, नन्दीसरे संचरी । गीत नृत्य करीने हरी नमन करे वाह ॥ नि० ॥ १ ॥ ओच्छवे अट्ठाइ ठाय, पूजिने प्रभुजी पाय । इन्द्र चन्द्र आवी जाय, निज धाम वाह वाह ॥ नि० ॥ २ ॥ सरधाने सवेग धारी, काम क्रोध मोह मारी । ध्यावे जिनराज तारी, गुणमाला वाह वाह ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीवाभिगमादि जेम, पन्नति जंबू छे तेम । आपे गणधार एम, सूत्र वाणी वाह वाह ॥ नि० ॥ ४ ॥ इण विध श्राद्धशुद्ध, कल्याणक पंच बुद्ध । पूजा रचि भाव शुद्ध, 'धन्यमुनि' वाह वाह ॥ नि० ॥ ५ ॥

साखी

सुर नरक थी आय के, थाय देवाधिदेव ।
पंच कल्याणक तेहनी, कीजे अड़विध सेव ॥ १ ॥

ढाल २, श्री शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व जिनवरा, ए राह

जयति जय करा, प्रभु सयल जिनवरा । अनूप रूप भूप छो, स्वरूप सुखकरा ॥ टेर ॥ जिनवर नाम करम निकाची, सेवी वीश वर थान । शब्द रूप रस गंध सुफरसी, विलशे अमर विमान ॥ ज० ॥ १ ॥ अधिक प्रताप तेजस्वी सुरथी, दिव्य अमर सुख भोग । धारक कारक शुभ जोग वली, निरमल तर ओही योग ॥ ज० ॥ २ ॥ शाश्वत श्रीजिन चैत्य तणा नित्य, ओच्छव करत सुचंग । द्रव्य भाव पूजा करी प्रीते, हरस नव नव रंग ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिन शासन परभाव करी, भरे भारति पुन्य भंडार । सुद्धातम दरशन मय पावे, भावे चरण विचार ॥ ज० ॥ ४ ॥ सुरकुमरी नाटक करी नाचत, जाचत शुभ धरी भाव । 'धन्यमुनि' जिन चरणनी सेवा, पामे पुन्य प्रभाव ॥ ज० ॥ ५ ॥

साखी

प्रभुता पुन्यनी भोगवी, सुरनायक सुर ईश ।
च्यवण कल्याणक चरचिये, अडविध पूज जगीश ॥ १ ॥

ढाल ३, दर्शी मम सूरत मारी, मेघो सुमति सुखकारी, ए राह

छो जगजीवन जयकारी, अलबेला अम उपकारी ॥ टेर ॥
सुरलोक सुख जे रमिया, नवि चित्तमां वलभ वसिया । शुर
चवन चिह्न चित्त खसिया, उरधरी, समय शुभ वरी, चरम
भव करी, चवे सुखकारी ॥ अ० ॥ १ ॥ करी कर्म भूमि
परवेश, आरज क्षेत्रे आवेश । उत्तम कुल देश नरेश, परहरि,
तुच्छ कुल दरी, सुशील गुण करी, उदर अवतारी ॥ अ०
॥ २ ॥ अशिवादिक दूर पलाय, नारकने पिण सुख थाय ।
सहु सुर नर तिरि हरषाय; नति करी, हर्ष मन धरी, अवधि-
कर हरी, आनन्दित भारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ सुरपति आसनथी
ऊठी, जाणी माया जग झूंठी । तजी पादुका पंगूठी,
अडधरी, अभिमुख सरी, नमुथ्थुणं करी, नमे विध धारी
॥ अ० ॥ ४ ॥ शुभ घड़ी मुहूर्त शुभयोगे शुभग्रह दिवस
संयोगे । निजमात गर्भ गूढ योगे; अवतरी, सहज शुभ वरी,
मात सुख करी, 'मुनिधन्य' धारी ॥ अ० ॥ ५ ॥

साखी

परमातम पद पूजतां, पूजिते पोते थाय ।
पुत्र प्रिया प्रभुता लहे, जेम सुपन जिनमाय ॥ १ ॥

ढाल ४, शाणी सुण सजनी, दिवस ने रजनी, ए राह

राणीजी तो रजनी, सेजें सुतां सजनी सुपन सुमाली खुसीं, थाय थाय थाय ॥टेर॥ हस्ती[१] वृषभ[२] सिंह[३], लक्ष्मी[४] ने माला[५], शशि[६] रवि[७] देखे सुख दाय दाय दाय ॥ रा० ॥ १ ॥ ध्वजा[८] कलश[९] सर, पद्म[१०] ने सागर[११], अमर–विमान[१२] चित चाय चाय चाय ॥ रा० ॥ २ ॥ रत्नी राशिने[१३], निधुंम अगनी[१४], नजरे निहाली जागी, जाय जाय जाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ फरमावो फल मने, शुभ सुपननुं, प्रणमीने पूछे राणी, राय राय राय ॥ रा० ॥ ४ ॥ तारक त्रिभुवन, तन तुज थाशे, 'धन्यमुनि' नमे निज पाय पाय पाय ॥ रा० ॥ ५ ॥

साखी

सुपन पाठकना पठनथी, सुपन अर्थ विचार ।
नृपति घर जिन महोच्छवे, भरे धनद भंडार ॥ १ ॥

ढाल ५, प्रीति पातरनी करनार, सघला मुरखना सरदार, ए राह

सुणी अलबेली आ वाणी शाणी राणी हरषाणी । पूरा प्रेमथी परमाणी, फरी पूछे जाणी जाणी ॥ टेर ॥ पूछी प्रीते

आनंदथी, आप भुवनमां आवे । रजनी सजनी साथे जागी, मानूनी मंगल गावे ॥ सु० ॥ १ ॥ खारो खाटो आहार तर्जीने, अलबेली आनंदे । मंद हसीने मुख मलकावे, निहाल कीधी नंदे ॥ सु० ॥ २ ॥ मही मंडलमां महिमा मारो थाशे प्यारो पेखी । अबला पण हुं सबला थइ छुं, लाला तमने लेखी ॥ सु० ॥ ३ ॥ गंभीरताथी गर्भनुं रूडुं, पालण पोषण करती । जे रीते वल्लभ सुत रींझे, ए रीते अनुसरती ॥सु०॥ ॥ ४ ॥ चवन कल्याणक भवियण भावे, गावे रंग रसाले । 'धन्यमुनि' तारक त्रिभुवन, विरचे पंचम ढाले ॥ सु०॥ ५ ॥

काव्य और मंत्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्यतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव उद्योतका । परममोक्ष ए पंचकल्याणकं, रचत सिद्धि भजो सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय च्यवनकल्याणकेऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

२ जन्मकल्याणक पूजा साखी

जग जननी जिन जन्मतां, ओच्छव अधिक उच्छाह ।
अधम उधारण ऊधरे, जगबान्धव जगनाह ॥ १ ॥

ढाल ६, दिलखुश प्यारी राजकुमारी, केम रडे अहीं एकली,
ए राह

देव दीवाली आज में भाली, जनम्या जिन जग उजमाली ॥ टेर ॥ रजनी सजनी सुकृत्य भजनी, परमानंद आनंद भाली ॥ दे० ॥ १ ॥ सर्व दिशा शुभ शोभित थइ छे, फाली फूली हरी हरीयाली ॥ दे० ॥ २ ॥ शाली रसाली धान विशाली, मालती मोगर वन डाली ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन मन रंजन भव भय भंजन, नारक पण पीड़ा टाली ॥ दे० ॥ ४ ॥ 'धनमुनि' जिन जन्मने अवसर, अजर अमर करे दीवाली ॥ दे० ॥ ५ ॥

साखी

अवधिज्ञान अवलोकीने, दिग् कुमरी दिल खंत ।
ज़गजीवन जन्मोच्छवे, आवे हर्षे अनंत ॥ १ ॥

ढाल ७, पूनम चांदनी खीली पूरी अहीं रे, ए राह

रूड़ी आजनी रजनी रलीयामणी रे, आवो अलबेली साहेली रमीये आज; जनम्या जगजीवन मनमोहन प्यारा आणथी रे ॥ टेर ॥ "अड कुमरी अध लोकनी, प्रणमी जिन जिनमाय । अशुची टाली ईशानमां, सूतक सदन सोहाय ॥" आवे उछरंगे अड कुमरी ऊरध लोकनी रे, भावे वरसावे

सुगंधोदक वरसाद ॥ ज० ॥ १ ॥ "पूर्व रुचक अड वासनी, धर दरपण कर मांह्य। अड कलशाली ओपती, दक्षिण दिश दरशाय॥" आवे अड कुमरी पश्चिमनी पंखा धारती रे, लावे अमरी कुमरी चमरी उत्तर आठ ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ "करे दीपक चउ रुचकनी, चउ छेदे प्रभु नाल। रंभा घर माता ठवे, साथे दीन दयाल॥" मरदन स्नानथी अमरी अंग उजवालती रे, रूडी रक्षा पोटली बांधी प्रभुने हाथ ॥ ज० ॥ ३ ॥ "प्रभु मुख कमले प्रेमथी, अमरी भमरी आय। आवीने शुभी आशथी, प्रेमे प्रणमे पाय॥" ठमके ठमकंती भमकंती छप्पन सामटी रे, आवो अमरी कुमरी आपण रमिये राश ॥ ज० ॥ ४ ॥ "प्रभु माता जग मात तुं, जगदीपक तुज बाल। अज्ञान अंध उलेचवा, प्रगट्या ए प्रतिपाल॥" जनम्या जग वलभ तन मनथी त्रिभुवन तारवा रे, धन धन 'धन्यमुनि' ए जिनशासन सिणगार ॥ ज० ॥ ५ ॥

साखी

निज निज कृत्य करी हवे, दिगकुमरी दरसाव।
नाटक नाचे नेहथी, संगीत रगिव भाव ॥ १ ॥

ढाल ८, करुं सेवा दयालु ओ देवा, ए राह

आवी अलबेली सर्वे साहेली, चलके ज्युं चपला चमक

चमक चमक ॥ टेर ॥ हेमनी हाथे चूडीयो साथे, खमक छे घुघरी खमक । गावे चो ताले राग रसाले, छबीली चाले छमक छमक छमक ॥ आ० ॥ १ ॥ गाये संगीते प्रभूने प्रीते, झाँझ झुकावीने झमके । घुघरा घमके चतुरा चमके, नाचे छे ठमके ठमक ठमक ठमक ॥ आ० ॥ २ ॥ उछरंगे आवे वंसी वजावे, साथे सारंगिनी जमक । मधुरी वाजे सितार साजे, मृदंग गाजे गमक गमक गमक ॥ आ० ॥ ३ ॥ भूंगल गाजे नफेरी वाजे, पखाज वाजे छे पमक । सेवा सुधारी स्थाने पधारी, दिग्कुमारी दमक दमक दमक ॥ आ० ॥ ४ ॥ छे मने मालम आलमना वालम, तनमनथी तलखुं छुं तमक । कापीने पापो अलवेला आपो, 'धन्यमुनि' पद धमक धमक धमक ॥ आ० ॥ ५ ॥

साखी

हवे इंद्रादिक हर्षथी, जिन जन्मोच्छव जाण ।
घंटा घोप कराविने, प्रीते करे परियाण ॥ १ ॥

ढाल ९, सांभळ्ं सा वोलो तमारा राणी, ए राह

मुक्तिना मेवा लेवा तमारी सेवा ॥ टेर ॥ कइक हरी साथे कौतुक धारी, कइक साथे लावे मित्र ने नारी । कइक गरूड कइक नागनी स्वारी, धारी नारी सारी तमारी सेवा

॥ मु० ॥ १ ॥ सजि सिणगार सहु उच्छंगे आवे, मधुर स्वरथी मंगल गावे । जिन जिन मातने शीश नमावे, आवे गावे भावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच हरी मेरु प्रभुने लावे, मली चोसठ क्षीर नीर न्हवरावे । चंदन कुसुमे पूजीने पावे, लावे रावे पावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ३ ॥ सोंपी माताने रिद्धि वरसावे, गेड़ी दड़ो वस्त्र कुंडल ठावे । नंदीसरे जइ भावना भावे, सावे ठावे भावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ४ ॥ वाला छो वल्लभ तन मन मारुं, तेज तपो बहु अविचल तारुं । 'धन्यमुनि' पद ध्यानमां धारुं, मारुं तारुं धारुं तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ५ ॥

साखी

प्रातः थये प्रभु जन्मनी, वांटी वधाई तात ।
निजकुल कर्मागत करे, जन्मोच्छव निज जात ॥ १ ॥

ढाल १०, वारा जेवी तो ठगारी नारी करोड़ो निहाली,
ए राह

अति आनंद छे आजे, कर्यो हुकम महाराजे ॥ टेर ॥ झट छोड़ो बधा गुनेगार, पीड़ा तेनी करो पार । सेवक जनोने सार, दीजे दान दया धार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुं शहेरनी शोभानो पार, ज्यां जोइये त्यां जे जेकार । बीजी इंद्रपुरि

यार, वन्यो जोया जेवो वा'र । चंचल चतुरा नार, सोले सिणगार धार । देखुं शोभे द्वारो द्वार, गीत गावे ठारो ठार ॥ अ० ॥ २ ॥ रूड़ो जल छंटकाव करी, सुगंधिक फूल धरी । दश दिन खरे खरी, सृष्टि तो संतोष वरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ शहरने जमाडे लार, पिताजी पधारे द्वार । आनंद धरी अपार, नाम निरधारे सार ॥ अ० ॥ ४ ॥ वाला वल्लभ छो तन, हेते हरषे मन । तमे तारो त्रिभुवन, धन्य 'धन्यमुनि' धन । गावे संगीतना साजे, तेना सुधरे सुकाजे ॥ अ० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्यतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव उद्योतका । परममोक्ष ए पंचकल्याणकं, रचत सिद्धि भजो सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञान–शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जन्मकल्या–णकेऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

३ दीक्षाकल्याणक–पूजा, साखी

तीन ज्ञान त्रिभुवन तिलक, वाधे वधते रूप ।
सुर संग क्रीडा करे, जग नायक जग भूप ॥ १ ॥

ढाल ११, पावाते गढथी उतर्या महाकाली रे, ए राह

सजि सिणगारने संचरी साहेलड़ीयाँ, जइ निरखे नाजुक

॥ मु० ॥ १ ॥ सजि सिणगार सहु उच्छंगे आवे, मधुर स्वरथी मंगल गावे । जिन जिन मातने शीश नमावे, आवे गावे भावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच हरी मेरु प्रभुने लावे, भली चोसठ क्षीर नीर न्हवरावे । चंदन कुसुमे पूजीने पावे, लावे रावे पावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ३ ॥ सोंपी माताने रिद्धि वरसावे, गेडी दडो वस्त्र कुंडल ठावे । नंदीसरे जइ भावना भावे, सावे ठावे भावे तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ४ ॥ वाला छो वल्लभ तन मन मारुं, तेज तपो बहु अविचल तारुं । 'धन्यमुनि' पद ध्यानमां धारुं, मारुं तारुं धारुं तमारी सेवा ॥ मु० ॥ ५ ॥

साखी

प्रातः थये प्रभु जन्मनी, बांटी वधाई तात ।
निजकुल कर्मागत करे, जन्मोच्छव निज जात ॥ १ ॥

ढाल १०, तारा जेवी तो ठगारी नारी करोडो निहाली,
ए राह

अति आनंद छे आजे, कर्यो हुकम महाराजे ॥ टेर ॥ भट छोड़ो बधा गुनेगार, पीड़ा तेनी करो पार । सेवक जनोने सार, दीजे दान दया धार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुं शहेरनी शोभानो पार, ज्यां जोइये त्यां जे जेकार । बीजी इंद्रपुरि

यार, धन्यो जोया जेवो वा'र । चंचल चतुरा नार, सोले सिणगार धार । देखुं शोभे द्वारो द्वार, गीत गावे ठारो ठार ॥ अ० ॥ २ ॥ रूड़ो जल छंटकाव करी, सुगंधिक फूल धरी । दश दिन खरे खरी, सृष्टि तो संतोष वरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ शहरने जमाडे लार, पिताजी पधारे द्वार । आनंद धरी अपार, नाम निरधारे सार ॥ अ० ॥ ४ ॥ वाला वल्लभ छो तन, हेते हरषे मन । तमे तारो त्रिभुवन, धन्य 'धन्यमुनि' धन । गावे संगीतना साजे, तेना सुधरे सुकाजे ॥ अ० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्यतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव उद्योतका । परममोक्ष ए पंचकल्याणकं, रचत सिद्धि भजो सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञान–शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जन्मकल्या–णकेऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

३ दीक्षाकल्याणक–पूजा, साखी

तीन ज्ञान त्रिभुवन तिलक, वाधे वधते रूप ।
सुर संग क्रीडा करे, जग नायक जग भूप ॥ १ ॥

ढाल ११, पावाते गढथी उतर्या महाकाली रे, ए राह

सजि सिणगारने संचरी साहेलड़ीयाँ, जइ निरखे नाजुक

नद, जिनगुण वेलडीयाँ । कामिनी दामनी दामनी सोहेलडीयाँ । पेखे मुख पूनम चंद, जिनगुण वेलडीयाँ, ॥ १ ॥ शुक चचुक सम नासिका साहेलडीयाँ, छे सुंदर भाल विशाल, जिनगुण वेलडीयाँ । आखडी अम्बुज पाखडी साहेलडीयाँ, छे गौर गुलाबी गाल, जिनगुण वेलडीयाँ ॥ स० ॥ २ ॥ प्रेम प्रमोद प्रवीणता साहेलडीयाँ, छे अरुण अधर परवाल, जिनगुण वेलडीयाँ । दामड दाणा दत ए साहेलडीयाँ, छे कोकिल कठ रसाल, जिनगुण वेलडीयाँ ॥ स० ॥ ॥ वाहे बाजुबध चेरखा साहेलडीयाँ, उरे एकावलि हार, जिनगुण वेलडीयाँ । केडे कदोरो हेमनो साहेलडीयाँ, घणी घुघरीनो घमकार, जिनगुण वेलडीयाँ ॥ स० ॥ ४ ॥ कीधो कुकुम चादलो साहेलडीयाँ, अजन मन रजन सार, जिनगुण वेलडीयाँ । तन मनवालमां साहेलडीयाँ, धन्य 'धन्यमुनि' अवतार, जिनगुण वेलडीयाँ ॥ स० ॥ ५ ॥

साखी

पोढाडी प्रभुने पालणे, रेशम दोरी हाथ ।
हेते गावे हालरु, माता सैयर साथ ॥ १ ॥

ढाल १२, आई वसन्त बहार रे, प्रभु भेटे, ए राह

रसीला राजकुमार रे, प्यारा पोढ्या पारणीये ॥ टेर ॥

मन मोहन तन माता झुलावे, नंद आनंद अपार रे प्या० । पुत्र थई हुं पुन्य पनोती, गणुं सफल संसार रे ॥ प्या० ॥ ॥ १ ॥ को तो रंगीला रमते रमाडुं, आतमना आधार रे प्या० । को तो कोडीला जुगते जमाडुं, जगजीवन जयकार रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ रंग रसीला छेल छबीला, छो मम हैयाना हार रे प्या० । लाव्या रमकडां आंगला टोपी, अलबेली मामी अपार रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ भूप अनूप रूप कूप भर्यो छे, इंद ने चंद हजार रे प्या० । छो सुत मारा सदा संतोषी, भारति पूर भंडार रे ॥ प्या० ॥ ४ ॥ चतुर विचक्षण आवि चंचलता, क्यारे शिखी पाम्या पार रे प्या० । वल्लभ तन मन योवन पाम्या, 'धन्य मुनि' धन्य अवतार रे ॥ प्या०॥५॥

साखी

गुणकारी ग्रह वासना, भोगवे भोग महंत ।
राग रहित रतिपति समा, चातुर चित्त चहंत ॥ १ ॥

ढाल १३, वीरा वेश्याना यारी, ऊभा अटारी, ए राह

जागो बहु यशवाला, राज रसाला, भाग्य विशाला, आलम वालम आज । छोजी समृद्धिवाला, गुणमणिमाला, दीपो दयाला, सेवकना शिरताज ॥ टेर ॥ सारस्वत[१] आदित्य[२] वाह्नि[३] वरुण[४] ने, गुणवंत छे गर्दतोय[५] । तुषित[६] अव्याबाध[७]

ने अमी, अरिष्ट आवीने सोय रे ॥ जा० ॥ भारतिना भंडार छो स्वामी, तो पण यह मरजाद । नाण छतां जगजीवन जागो, दीननी सुणीने दाद रे ॥ जा० ॥ २ ॥ अविचल आप आ अवनिमां वर्तो, वाला वृषभ समान । नाथ निपुण छो न्याय नीतिमां, साहिब समृद्धि वान रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ बोध करो बहु बोध करो बहु, बूझो बूझो बलवंत । धर्म धुरंधर तीर्थ तमारुं, वर्तावो जग जयवंत रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ लोकांतिक एम विनती लेखी, आतमना आधार । धन धन 'धन्यमुनि' पदधारी, सारी वरो शिवनारी रे ॥ जा० ॥ ५ ॥

साखी

दीक्षा अवसर दक्षता, नाण थकी प्रभु जाण ।
दान संवच्छरी दाखवे, जिनवर जीत प्रमाण ॥ १ ॥

ढाल १४, एवीरे रंभा जाणी जावा केम दइये, ए राह

वालाजी वेंचे वार्षिक दान विचारी, ॥ टेर ॥ एंशी रत्ती सोनैयो सोहे, निज नामांकित जाणो । एक क्रोड़ ने अड लख आपे, दिन प्रत्ये परमाणो रे ॥ वा० ॥ १ ॥ शक्रेन्द्र आदेशे लावे, देव दिव्य करी माया । जेने जे जोइये ते आपे, निज हाथे हरी राया रे ॥ वा० ॥ २ ॥ भुवनपति वन भरत क्षेत्रनां, नेह धरीने लावे । वाणव्यंतर मूके वित्त

साधे, परमानंद पद पावे रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ वार्पिक दान वर्पा वरसावी, वैर विरोधने टाली। बार वरस आ मही-मंडलमां, दीपे देव दीवाली रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ दृष्टीने संतोषी सारी, निज आतमने तारी। वालम वरशे शिव नारीने, 'धन्यमुनि' पद धारी रे ॥ वा० ॥ ५ ॥

साखी

जिन दीक्षा महोच्छव समे, पायक कोड़ा कोड़।
हय गय रथ सुर नर तणी, गणती दीधी छोड़ ॥ १ ॥

ढाल १५, पाटणना नृप नथी तुम महेले पदमणी नारी,
ए राह

वरघोड़ो वालमानो जोवा, आलम सहु आवे। परमानंद पावे, सुरासुर इंद चंद्र चावे। दीक्षानो महोच्छव ए मोटो भविजनने भावे ॥ टेर ॥ शिविका सुवर्णमय सारी, हीरामणी माणकथी भारी। बेठा प्रभु मुख पूर्व धारी, पदमणी पंच गीत गावे ॥ व० ॥ आगे तो अष्ट मंगल चाले, शतक अड हय हाथी हाले। महेंद्र ध्वजा ध्वंज महाले, शतक योजन ऊंचो कहावे ॥ व० ॥ १ ॥ माडंबिक बाणग्रहा भारी, कौंडबिक कुंतग्रहा चारी। धनुर्धर गोफग्रहा धारी, खडगधर तीर ग्रहा ठावे ॥ व० ॥ २ ॥ [illegible] चार चोवी वाजे, वंसरी

सुणता सहु काजे । नीमरी धरी उलट साजे, नारी सहु नग
नणी भावे ॥ व० ॥ २ ॥ थयो महोच्छव मुहूर्त सारो
रूड़ी छे ऋतु मास न्यारो । पूरण छे पक्ष दिवस प्यारो
कतजी शिर वरवा जावे ॥ व० ॥ सहु आशीष दिये सारी
जीवनजी वरतो जयकारी । आवो प्रीते नर नारी, भविनें
तारी तरो भावे ॥ व० ॥ ३ ॥ फरीनें वरघोड़ो स्याने, आवे
सहु कानन उद्याने। देखी शुभ द्रुम शिबिकाने, ठवे त्यां
इंद नरिंद भावे ॥ व० ॥ तज्या आभूषण सहु नाथे, कियो
पंच मुष्टि लोच हाथे । सोहाव्युं मनपर्यव साथे, इंद त्यां
देवदूष्य लावे ॥ व० ॥ ४ ॥ वड़ेरी आभूषण राखे, दधी
क्षीर केश हरी नाखे । नाथजी नमो सिद्ध भाखे,प्रभु पद मंते
नहीं भावे ॥ व० ॥ तजी संसार सकल सिणगार, थया छो
धन्य धन्य अणगार । नमे नित्य नेह धरी नर नार, ललुता
तजि भक्ति भावे ॥ व० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्वतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव
उद्योतका । परमोक्ष ए पंचकल्याणकं, रचत सिद्धि मजो
सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्त ज्ञान-
शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दीक्षाकल्याण-
केऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

४ कंवलकल्याणक पूजा, साखी

जिन दीक्षा समये तज्या, राज ताजना साज ।
विहार करे करुणा निधि, पुहवी पावन काज ॥ १ ॥

ढाल १६, मेंदी रंग लाग्यो रे, ए राह

तजी शिणगारने नातजी. अलबेला बन्या अणगार रे;
शिव शुं रंग लाग्यो रे ॥ टेर ॥ चंदन चढ़ेलुं महोच्छवे,
रहे सुगंधी महा मनुहार रे शि० ॥ त० ॥ १ ॥ वालाजी
वनमां ध्यान धरे त्यां, भ्रमर करे गुंजार रे शि० ॥ त० ॥२॥
कामी आलिंगन कोड़थी, करे सुगंधी लेवा सार रे शि०
॥ त० ॥ ३ ॥ विश्वे अंगो अंग वासथी, सहु थाये सदा
सुखकार रे शि० ॥ त० ॥ ४ ॥ अचल भूतलमां आप छो,
धन्य 'धन्य मुनि' अवतार रे शि० ॥ त० ॥ ५ ॥

साखी

जे कोई जिनने उपजे, मरणांत कष्ट प्रयास ।
ते जिन जागे आविने, इंद्र करे अरदास ॥ १ ॥

ढाल १७, राजुल पोकारे नेम पिया ऐसी क्या करी, ए राह

आ इंद्रनी तो अर्ज छे, तुं साथ तारी ले । बनी नहीं
बने नहीं, वेग विचारी ले ॥ टेर ॥ विहार सांथ लार आवुं,

आपदा खले। दातार मारी अर्ज धारी, साय तारी ले ॥ आ० ॥ १ ॥ यया यशे घणाक, केवली आ भूतले। न राखे इंट आश, वात ध्यान धारी ले ॥ आ० ॥ २ ॥ आ उपद्रव जे यशे, ते मुजथी जशे। हे जाण केल्ला नाण शुद्धी साय तारी ले ॥ आ० ॥ ३ ॥ मुं क्रूर कर्म दूर, सुर साक्षयी यशे। शुं पंच नाण पामीने, ए शिव नारी ले ॥ ॥ जा० ॥ ४ ॥ आ श्रन्द छे सिद्धांत, तान वात जाणी में। न राखे अन्य आश, 'मुनि धन्य' धारी ले ॥ आ० ॥ ५ ॥

साखी

सुर असुर नर तिरितणा, अनुकूल जिने प्रतिकूल ।
सुमति गुपति धारीने, काटे दुःख जड़ मूल ॥ १ ॥

ढाल १८, खबर प्रथमथी पही न सुझने, ए राह

गाम नगर पुर पाटण फरतां, विचरतां जिन जयकारी। जीनी भीती रीती नीतीं, अजर अमर प्रीती तारी ॥ टेर ॥ सुर नर नरतां दुःख घहु करतां, तो पण ठरतां आलम आ। खरतां हरतां डरतां तरता, मर्त्ता भविजीव तणा भारी ॥ गा० ॥ १ ॥ तन मन मुंढि धर्म सुढुंडी, दढ जस दुंडी आ दुनिया। सुपति भूपवि सुमति दीपति, कुमति कुपति डरथी नारी ॥ गा० ॥ २ ॥ मंडित शासन पंडित चासन, मंडित-

आपन खंडित आ। मंडित छंडित खंडित फंडित, दंडित आगम अनुसारी ॥ गा० ॥ ३ ॥ भव भय हरणी करतां करणी, गउचरणी धरणी धारी आ। चरणी करणी धरणी तरणी, ए अनुसरणी आलम तारी ॥ गा० ॥ ४ ॥ भारति भरीया भव तिरे तरीया, शिव वित्त वरीया वालम आ। भरीया दरीया तरीया वरीया, खरीआ धन्य धाप मुनि धारी ॥ गा० ॥ ५ ॥

साखी

विध विधनी तपस्या तपी, कापे कर्मनो खार ।
पंच दिव्य प्रगट हुवे, जिणघर जिनवर आहार ॥ १ ॥

ढाल १७, कहु शं ! तनसीबे दुःखीयो कीधो छे, ए राह

तपस्याने पारणे तातजी प्यारा, पंचदिव्य तिहाँ प्रगट थनारा ॥ टेर ॥ वस्त्र ध्वजा अति ओपे आकाशे, आदि-युगलधरा अमृतधारा ॥ त० ॥ १ ॥ सृष्टी सुगंधिक फूलनी वृष्टी, तत्ववेदे बाजे वाजित्र प्यारा ॥ त० ॥ २ ॥ वाण अहो महोदान कहे क्यांइ, कोटी साड़ीबार सोनैया सारा ॥ त० ॥ ३ ॥ हरीपट्ट बावीश चेलक सोहे, आदि अंत अचेलक मुनि प्यारा ॥ त० ॥ ४ ॥ अनेक संकट सह्या सुर नर तिरी, 'धन्यमुनि' धन्य दर्श तमारा ॥ त० ॥ ५ ॥

साखी

घनघाती घन घोर घन, मेटए सुकल समीर ।
महा मोह मद मारीने, वरिया केवल वीर ॥ १ ॥

ढाल २०, मार मार तरवार, ऊभो जुवे छे शु, ए राह

वाह वाह वालो वारिया छे एवु ते शुं, एवु ते एवु ते एवुं ते शुं ? ॥ टेर ॥ अब्द अलोकिक मास मनोहर, पक्ष दिवस पण तेवो कहु ॥ वा० ॥ १ ॥ योग नक्षत्र योग शशीनो, मुहूर्त मागलिक चित्ते चहु ॥ वा० ॥ २ ॥ अद्‌भुत वास ने अद्‌भुत आसन, शुक्लध्याने सोहाव्युं सहु ॥ वा० ॥ ॥ ३ ॥ वल्लभ तन मन युक्ते जमाव्यु, माव्युं भोजन धन आव्युं के शुं ॥ वा० ॥ ४ ॥ 'धन्यमुनि' घन व्याघात हरिया, वरिया केवलज्ञान केवुं ते शु ? ॥ वा० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्यतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव उद्योतका । परममोक्ष ए पचकल्याणकं, रचत सिद्धि भजो सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमल्लिनेन्द्राय केवलकल्याणकेऽष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

५ निर्वाणकल्याणक पूजा, साखी

आसन कंप्या इंद्र तव, पंचम नाण प्रमाण ।
समवसरण रचना रचे, जगजीवन जिन जाण ॥ १ ॥

ढाल २१, मारो पावन करीयो पलंग, ए राह

आवी ओपावी छे आज, शोभा आसमवसरणनी, नाथ पाम्या पंचम नाण, सुर करे सेवा चरणनी । भक्ति छे आ भगवान, भव नीर तिर तरणनी । टाले छे ए जग तात, बीक आ जन्म मरणनी ॥ टेर ॥ सुगंधी जल वरसावीने, भूतल पावत कीध । फूल विछाव्या छे फावता, घणा जल थलना नवनीध ॥ शो० ॥ त्रिगडानी शोभा रची, जची भली भवि चित्त । कनक रतन करी पीठड़ी, एतो चोवीशे जिननी रीत ॥ शो० ॥ १ ॥ गढ़ रूड़ो रूपा तणो, कनक कांगरा कीध । कनकगढ़ रूड़ा रत्नथी, करी कांगराला वोतो लीध ॥ शो० ॥ रत्नगढ़े मणी कांगरा, इंदपुरी अनुसार । लंकपुरी लजवाइने, पेठी पाताले आवे न वार ॥ शो० ॥ ॥ २ ॥ द्वार चारना पावडां, अध लख त्रीश हजार । ओपित आयुध धारीने, दीपे देव खडा चार वार ॥ शो० ॥ सहस्र योजन ऊंची अती, चार ध्वजा मनुहार । तोरण चउ अड वावडी, आठ मंगल छे सुखकार ॥ शो० ॥ ३ ॥ सूरि आठ त्रीजे गढ़े, रत्नगढ़े चउ देव । वैर जाति सहु छंडीने

करे चरण कमल तुज सेव ॥ शो० ॥ अमर वरसावे फूलडा, रंगे थइ रलियात । पर्षद नार बेसे तिहां, एवी तदुलटीकाए घात ॥ शो० ॥ ४ ॥ अशोक ऊंचो एक छे, धनुष पत्रीश धार । धर्म चक्र अति ओपतु, एतो मिथ्यातिमिर हरनार ॥ शो० ॥ रची रचना हरी हेतथी, संगीत रंगित भाव । 'धन्यमुनि' पद धारीने, लाला लीधो लाखेणो तें लाव ॥ ४॥ शो० ॥ ५ ॥

साखी

अतिशय चोंत्रीश ओपता, गुण वाणी पात्रीश ।
जग दीपक जग जीतवा, तज्या राग ने रीष ॥ १ ॥

ढाल २२, लावणा-गुणवंत गुरुना गुण, ए राह

पाम्या प्रभु पंचम नाण, विघन जन वाम्या । साम्या तम मन संताप, जगतमां जाम्या ॥ टेर ॥ ओपे अतिशय चउत्रीश, कनक तन कान्ती । सुगंध सोहावी नाथ, साथ सहु शान्ती । छे गउ दूध मांस रुधिर, रहीत दुरगंदी । नहीं दृष्टे आहार निहार, अति आनंदी ॥ पा० ॥ १ ॥ सुगंधिक स्वासोच्छ्वास कमलना जेवो, आवे नहीं अंग परसेव, अतिशय एवो । हरी रचना महा मनुहार, भुवन तीन तेमां । वैरि सुर नर समजे, जिनवाणी जग मेमां ॥ पा० ॥ २ ॥

फरतो प्रभु कोश पचीस, रोग नहीं फावे। वली विषधर जंतु जीव, तिहाँ नहीं थावे। जिन दीक्षाथी नख केश, रोम नहीं आवे। प्रभु नव संख्याए, कनक कमल पद ठावे ॥ पा० ॥ ३ ॥ नहीं ओछी अधिकी वृष्टि, आनंद कारी। झलके भामंडल भाण, समो बहु भारी। सहचारी सिंहासन, रत्नमणी मय जाणो। शिर छत्र चमर वींजाय, प्रभु परमाणो ॥ पा० ॥ ४ ॥ जे हरी रचनाथी, दिव्यासन सुखकारी। दे चउ मुख त्यां उपदेश, जीवन जयकारी। करी अमृत वृष्टि, समर्थ सृष्टि सारी। तमे तन मनथी धन, 'धन्यमुनि' पद धारी ॥ पा० ॥ ५ ॥

साखी

भवि जीवने तारी तर्या, जग दीपक जगभाण।
बोध बहु विधि आपीने, नाथ लह्यो निरवाण ॥ १ ॥

ढाल २३, वेशरे उतारो राजा भरतरी, ए राह

सुणो भवि जीव भावशुं, वीतरागी वचनजी। ख्याल खोटो छे आ खलकनो, जेवो रंग पतंगजी 'चेतो चतुर नर चित्तमां' ॥ १ ॥ डाभ अणी जल बिंदुवो, टके केटली वारजी। तन धन योवन कारमां, चटको दिन च्यारजी ॥ चे० ॥ २ ॥ इंद्र धनुष आकाशमां, वलि वीज चमकार-

जी । संध्या समय रंग जाणज्यो, मूठो सकल संसारजी ॥ चे० ॥ ३ ॥ वाणी सुणावी वैराग्यनी, तारी तर्या अनेकजी । अनेक संकट वेठी शिव वर्या, धन्य धन्य तुज टेकजी ॥ चे० ॥ ४ ॥ अज्ञान अंध उलेचवा, प्रभु प्रगट्या जग माणजी । 'धन्यमुनि' पद धारीने, नाथ पाम्या निर्वाणजी ॥ चे० ॥ ५ ॥

साखी

आसन कंप्या एटले, थयुं इंद्रने जाण।
करवा आव्या कोड़थी, कल्याणक निर्वाण ॥ १ ॥

ढाल २४, अहो प्राणी पुन्य उदय दशा जागी रे, ए राह

आव्या हरी हेतथी थइ मेला रे, जगभाण निर्वाणनी वेला ॥ टेर ॥ निरखी भूमी निर्जीव सारी रे, चमरेन्द्र रचे चय धारी रे, बावना चंदने सुखकारी ॥ आ० ॥ १ ॥ मूक्यो अग्नि तो अग्निकुमारे रे, प्रजलता थाये नहीं वारे रे, वायु विकूर्व्यो वायुकुमारे ॥ आ० ॥ २ ॥ मेघकुमारे मेघ वरसावी रे, क्षीर नीरमां खाख नखावी रे, भली भक्ति सहु मन भावी ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रभुदाढ़ा पूजे प्यार धारी रे, लीधी सुधर्मे ऊपरली सारी रे, नीचली चमरेन्द्रने प्यारी ॥ आ० ॥ ४ ॥

सहु भली नंदीश्वर जावे रे, भली भक्ति ए भावना भावे रे,
धन्य 'धन्यमुनि' पद ध्यावे ॥ अ० ॥ ५ ॥

साखी

प्रभु शिवपुर सिधाविया, वरिया पंचम नार ।
शाश्वता सुख भोगवे, किंचित ए अधिकार ॥ १ ॥

ढाल २५, हुं गणुं प्राणथी प्यारुं, स्वरुं संभव समरण वारुं,
ए राह

करी खलक दीवानी खारी, प्रभु पाम्या पंचम नारी । नहीं जन्म मरणनो फेरो, नहीं रोग सोग अनेरो । नहीं भय पण त्यां कोइ केरो, नहीं भूंख, जरा नहीं दुःख, शाश्वता सुख, भोगवे भारी–शोभा शिवपुरनी सारी ॥ क० ॥ १ ॥
नहीं भोग वियोग जराये, त्यां वेर विरोध न थाये । नहीं सगो संबंधी कांये, नहीं रोष, जरा नहीं दोष, नहीं अपसोस, सदा सुखकारी–शोभा शिवपुरनी सारी ॥ क० ॥ २ ॥
नहीं कर्म मर्म के काया, नहीं लोभ ललुता माया । नहीं तड़को के नहीं छांया, नहीं आहार, नहीं निहार, अजब छे चार हवा हितकारी–शोभा शिवपुरनी सारी ॥ क० ॥ ३ ॥
नहीं ऊजड़ के नहीं वस्ती, नहीं वस्तु किम्मती सस्ती । नहीं मौन पणुं नहीं मस्ती, नहीं वात, नहीं एकांत, नहीं दिन

रात, अचंभो भारी–शोभा शिवपुरनी सारी ॥ क० ॥ ४ ॥
नहीं गंध रूप रस शब्द, नहीं निस्नेही नहीं लुब्ध । नहीं
वार तिथी के शब्द, करी सार, पाम्या भव पार, नमे नर
नार, 'मुनिधन्य' धारी-शोभा शिवपुरनी सारी ॥क०॥५॥

काव्य और मन्त्र

चवन–जनम–दीक्षा–द्रव्यतीर्थपा, विमलज्ञान–सुभाव
उद्योतका । परममोक्ष ए पंच कल्याणकं, रचत सिद्धि मजो
सुखदायकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञान-
शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय निर्वाण-
कल्याणकेऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धन्याश्री

सखी आजे मंगल महोदय पायो, प्रभु पूजा रचन मन
भायो ॥ टेर ॥ पंचकल्याणक पूज्यनी पूजा, पूजन भाव
बनायो ॥ श्रद्धा संवेग टोडर गुण गूंथी, सहु जिनकंठे
सोहायो ॥ स० ॥ १ ॥ सोहम तपगण किया सोभागी,
जगच्चन्द्र जग गायो । तास परंपर प्रगट प्रतापी, देवसूरि
दिनरायो ॥ स० ॥ २ ॥ तस पट पाटव प्रगट प्रभुता, प्रभ-
सूरि प्रगटायो । रत्नसूरि तस पट रतनाकर, क्षमा देवेन्द्र
सोहायो ॥ स० ॥ ३ ॥ तस पट कल्याण प्रमोद प्रबोधन,

सूरिराजेन्द्र कहायो । तस राज्ये रची पूजा रचना, कुमति कदाग्रह हटायो ॥ स० ॥ ४ ॥ नेत्र[२] बाण[५] निधि[९] शशि[१] शुभ वर्ष, चित चातुरमास चाह्यो । गढ़ जालोरे संघ गुरु भक्ति, पूजन ठाट मचायो ॥ स० ॥ ५ ॥ जसवंतराज पृथिराज आग्रहे, रचि पूजा रचनायो । लल्लु वल्यमसुत संगीत साजे, रंगित राग रचायो ॥ स० ॥ ६ ॥ नयर जावाले प्रतिष्ठा महोच्छव, जेसा सुरतिंग करायो । कल्याणक विधि पूजा भणावी, संघ सकल हरषायो ॥ स० ॥ ७ ॥ विजयदेव परंपर विबुधा, कृस्न गंग सुमनायो । भाव मोहन कस्तुर चतुर चित, लक्ष्मीनी लीला लखायो ॥ स० ॥ ८ ॥ कल्याणकविधि पूजा विरचे, सकल सूरिंद समुदायो । नंदीश्वर अठ्ठाइ महोच्छव, गणधर सूत्रे गुंथायो ॥ स० ॥ ९ ॥ तिम पूजा भवि भणशे गुणशे, तस घर क्रोड वधायो । 'धनविजय' जिनवाचक पूजी; जग जस पड़ह बजायो ॥ स० ॥ १० ॥

श्री समवसरण पूजाविधि

महामारी, मरकी, आदि उपद्रवों की शान्ति के लिये यह पूजा भणाई जाती है। इसमें प्रथम समवसरण रचकर उसमें क्रमवार अलंकार सहित चोवीस प्रतिमा स्थापन करना, अथवा एक त्रिगड़ा में धातुमय चोवीसी विराजमान करना। उसके आगे ऊपरा ऊपरी तीन बाजोट रखकर, उस पर पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापना करना। उसके आगे एक बाजोट पर चोवीस कोठे वाला गोलाकार मंडल बना के उनको जिनेश्वरों के वर्ण प्रमाणे वर्णवाले चावलों से पूर्ण करके आगे रखना और हर एक कोठे में पान, श्रीफल, घृतखांड से भरी कोपरावाटकी, रूपा नाणा, धजा, मोदक, मेवा आदि एक एक मेलना। बाद लघुस्नात्र भणा कर, तीर्थ कूप आदि के जल से आठ कलश भरना। फिर २४ स्नात्रिया और २४ स्नात्रणियाँ तैयार करके एक के हाथ में सोना चांदी या वस्त्र या कागद का बना अशोक वृक्ष, दो के हाथ में दुन्दुभी या शंख, शेष के हाथ में जलकलश और स्नात्रणियों के हाथ में कुसुमांजली देकर खड़े रखना। बाद प्रथम पूजा और काव्य, मंत्र, भणाये बाद अशोक-वृक्ष प्रभुप्रतिमा के पीछे स्थापन कर, न्हवण कराके पूजा करना।

इसी प्रकार द्वितीय पूजा—में दो जन शंख, एक छत्र, दो जने चामर, शेष कलश और घिसे हुए चंदन के प्याले, तृतीय पूजा-में एक जना आसन, एक भामंडल और शेष कलश, चंदन, पुष्प लेके खड़े रहना और पूजा काव्य, मंत्र भणाये बाद शंख बजावे और चामर वींजते हुए आसनभामंडल सामने रखना और न्हव-णादि कराके चंदनादि से पूजा करना। चोथी पूजा—में अखंड-
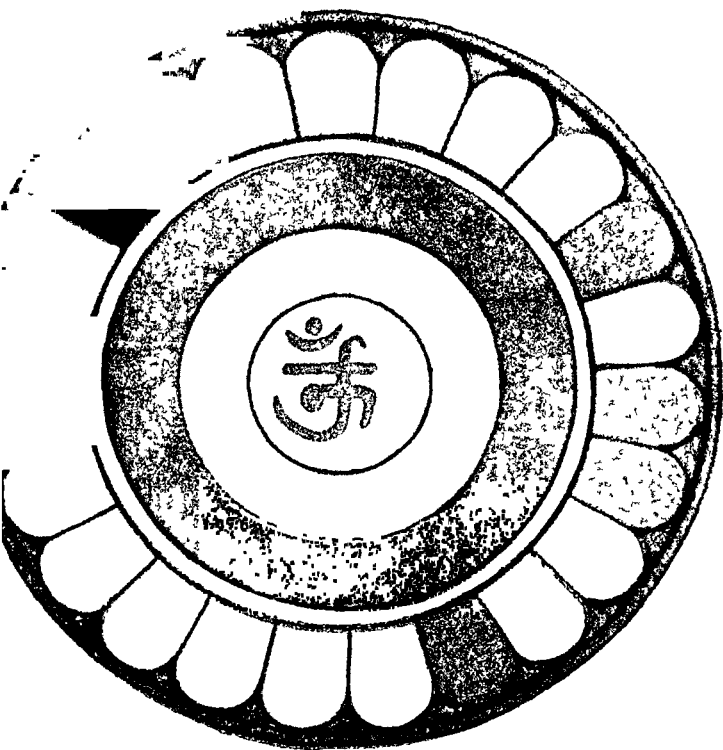
६ श्रीसमवसरणपूजा–मंडल.

क्षत की एक गुंहली थाल में करके, उसको स्नात्रणी को देके खड़ी रखना और स्नात्रियों को कलश, चंदन, पुष्प, धूप लेना और पूजा, काव्य, मंत्र भणाये बाद गुंहलीथाल, प्रभु के आगे रखना और न्हवण पूर्वक चंदनादि से पूजा करना। पांचवी पूजा— में बारह स्नात्रियों को एक एक दीपक और शेष को कलश, चंदन, पुष्प, धूप लेना और पूजा, काव्य मन्त्र भणाये बाद दीपक सामने रखना और न्हवण कराके चंदनादि से पूजा करना। छट्टी पूजा—में अष्टमंगल की थाली, जलकलश, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत फल लेना और पूजा, काव्य, मन्त्र भणाये बाद अष्टमंगल थाली सामने रखना और न्हवणादि पूजा करना। सातवीं पूजा—में सुगंधी जल, अंतर, पुष्प, कलश, चंदन, धूप, दीप, अक्षत, फल लेना और पूजा, काव्य, मन्त्र भणाये बाद सुगंधी जल का छिटकाव करना, न्हवण कराके अंतर प्रभु के लगाना तथा चंदनादि से पूजा करना आठवीं पूजा—में दो स्नात्रियों को पंखा, दो को दर्पण, दो को शंख, झालर तथा शेष को कलश, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, फल, नैवेद्य लेना और पूजा काव्य, मन्त्र भणाये पीछे पंखा वींजना, दर्पण दिखाना, शंख झालर बजाना, तथा न्हवण करा के पूजा करना। अन्त में सब खड़े होकर कलश भणा के, आरति मंगल दीपक उतारना। पूजा भणाने वाले को प्रति पूजा में निछरावल, यथाशक्ति श्रीफलादि की प्रभावना तथा स्वामिवात्सल्य करना चाहिये।

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी रचित

श्री समवसरण पूजा

—◆—

प्रथम पूजा, दोहा

णमो अरिहंत प्रथम पदे, समवसरण ना भूप ।
अमर विनिर्मित आठ गुण, प्रातिहार्य अनूप ॥ १ ॥
भाव सोग सवि टालवा, वखा भाव अशोक ।
अशोकवृक्ष फूल वृष्टि थी, पूजा रचे सुरलोक ॥ २ ॥

ढाल १, तपसुं रंग लाग्यो रे, ए राह

त्रीजे भव भावी प्रभु रे, वीश थानिकवर साज रे । अरिहा कर्म निकाची ने रे, थया जिनवर जिनराज ॥ १ ॥ भविजन वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे जिनवर जगनाथ पाप निकंदो रे ॥ टेर ॥ भाव अशोक गुण प्रगट थी रे, द्रव्यशोक गतरूप रे । तिणे सुरवर पूजा रचे रे, अशोकवृक्ष चिद्रूप ॥ म० ॥ १ ॥ स्फटिक मणिरत्नतणो रे, पीठ रची धनसार रे । जंबू सोवनमयी खंध रु शाखा, पड़िशाखा मनोहार ॥ म० ॥ ३ ॥ रक्त सोवनमयी कुंपला रे, नील छबी मयी

पान रे। फल्यो फूल्यो गह डंवरो रे, विगत शोक मेदान ॥ भ० ॥ ४ ॥ विविधि पताकाए शोभतो रे, किंकिणी युत शुभ वाय रे। मानुं सुरसरिता जले रे, नव नव नाटिक थाय ॥ भ० ॥ ५ ॥ अरिहा शरीर प्रमाणथी रे, चार गुणो होय ऊंठ रे। मनोहर शीतल छाया करतो रे, समवसरण भवि गूढ ॥ भ० ॥ ६ ॥ एणीपरे भवियण भावथी रे, पूजा अशोक रचे जेह रे। कुसुमश्री शिवसजनी वरी रे, 'धनमुनि' वर सिद्ध गेह ॥ भ० ॥ ७ ॥

दोहा

अणहुंते एक कोड में, निज निज जिनना यक्ष ।
जिनयक्षिणी परिवार सह, अहनिश सेव प्रत्यक्ष ॥ १ ॥
अशोकवृक्ष रचना पछी, कुसुमवृष्टिने काज ।
समवसरण रचना रचे, तरवा भवजल राज ॥ २ ॥

ढाल २, वटुवा गूंथने दे रे मिजाजिया, ए राह

रचना रचने दे रे संहिया मोरी रचना रचने दे, अहो मेरा, प्रभु का समवसरण की रचना रचने दे। रचना रचने दे रे मिजाजण रचना रचने दे, रचना रचने दे रे सोहागण रचना रचने दे, अहो मेरे प्यारे का समवसरण की रचना देखन दे। रचना देखन दे रे रचना देखन दे ॥टेर॥

अशोकतरु छाया योजन समवाया, भूपति वायुकुमार सवर्तवायु करी चारो दिशा फिर, भूमि शोधन करे सार ।। अहो० ।। १ ।। मेघकुमार मेघमालानी रचना, भरमर करी वरसाद । उडती रजरेणु भूमि समावा, सुगंधी जल छटकात ।। अ० ।। २ ।। पचवर्ण करी पुष्प वादलियो, जानु प्रमाण निष्पन्न । व्यतर सुर करे फूलनी वृष्टि, जल थलना उत्पन्न ।। अ० ।। ३ ।। जाइ जुइ वर कमल कुसुम वर, विविध जाति गुलाव । चपक केतकी कुद मचकुद वर, जासूद लाल गुलाब ।। अ० ।। ४ ।। मालती मोगर दमणो ने मरुवो, बोलसिरी वरराज । नाग पुनाग रू दावती सगे, कुसुमवृष्टि सुरराज ।। अ० ।। ५ ।। अधोवृ ति फूल पांखडी ऊपर, विविध रगी तरग । भाँति भाँति जुदी पुष्पनी रचना, नाना गलीचा चग ।। अ० ।। ६ ।। जाली ने माली आदेश टाली, तंदुलवृत्तिकार । योजन परिमित फूल बिछावे, कुसुमवृष्टि मनुहार ।। अ० ।। ७ ।। पूजा अतिशय प्रभु प्रतापे, फूल पीडा नवि थाय । सचित्त सघट्ट शंका न होवे, चउविह सघ समुदाय ।। अ० ।। ८ ।। प्रातिहार्य दूजो अरिहानी पूजो विविध भक्ति नर नार । कुसुमपाल परे 'धनमुनि' होवे, शिव सजनी भरतार ।। अ० ।। ९ ।।

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउहा मुयवागरा, सरसस‌तिसुद्दारससागरा ।

सकलरोगहरा भवि निश्चपा, समवसरणं जिना भवि ! पूजयेत् ॥१॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अशोकाय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

द्वितीयपूजा, दोहा

णमो अरिहंत प्रथमपदे, राग द्वेष अरि जीत ।
घनघाती अलगा करी, थया जिनवर जग जीत ॥ १ ॥
दिव्यध्वनि दरसाववा, समवसरण रचे देव ।
देवध्वनि पूजा रची, समवसरण करे सेव ॥ २ ॥

ढाल ३, नाथुडा नणदोइगी, ए राह

जीरे प्रभुजी समवसरण की रचना, प्रभु जगदीपक जग भजना रे, जगवाला जिनवरजी ॥ १ ॥ जी० समवसरण प्रभु पीठ, करे रत्नपीठ उकिट्ठ रेज गवाला जिनवरजी ॥२॥ जी० व्यंतरसुर करे सेवा, मांगे शिवसुख पदना मेवा रे जगवाला जिनवरजी ॥ ३ ॥ जी० भुवनाधिप सुर भावे, रूडो गढ रूपानो रचावे रे ज० ॥ ४ ॥ जी० सोवनगढ कोशीपां, मानु सुरगिरि शिखर सदीसां रे ज० ॥५॥ जी० चिहुं दिश चउ दरवाजा, सोहे अष्ट मंगल शिरताजा रे ज० ॥६॥ जी० नीलरतन पत्राला, सोहे तोरण झाके झमाला।

रे० ज० ॥७॥ धूप घटी सह ताका, ऊपर छत्र चामर पताका रे ज० ॥ ८ ॥ जी० ज्योतिषी देव रसाला, रचे जिनपूजा उजमाला रे ज० ॥ ६ ॥ जी० सोवनगढ़ सुरंगा, रचे रत्न कोशीष चंगा रे ज० ॥ १० ॥ जी० वैमानिक सुर आवे, त्रिगड़ानी शोभा सोहावे रे ज० ॥ ११ ॥ जी० रत्नगढ़े रढियाला, रचे कोशीषां सुरमणि वाला रे ज० ॥ १२ ॥ जी० चउ चउ गढ़ दरवाजा, सोहे शिवसंपत् सुर राजा रे ज० ॥ १३ ॥ जी० प्रतिद्वारे महकंती, भली फूलमाला लटकंती रे ज० ॥ १४ ॥ जी० मोती झूमणां झलके, वलि पचरंगी नेजा चलके रे ज० ॥ १५ ॥ जी० द्वार दीठ चउ वापी, भरी निर्मल जलमुं नापी रे ज० ॥ १६ ॥ जी० इम त्रिगड़ानी पूजा, सवि सुर साधारण कुजा रे ज० ॥ १७ ॥ जी० 'घनमुनि' ध्यान रसाले, भवि भवना पातिक गाले रे ज० ॥ १८ ॥

दोहा

ॐ ह्रीँ पद पदकजे, पूजित सुर नर इन्द ।
अरिहानी पूजा करी, टाले भव भय फन्द ॥ १ ॥

समवसरण रचना रचे, सुरवर कोडाकोड ।
देवध्वनि चामर तणी, पूजा होड़ा-होड़ ॥ २ ॥

ढाल ४, सरकार थांरो पचरंगी वागो, ए राह

जिनराज थांरो समवसरण मन मोहे माराराज, जिनराज हो शिव वसिया, महाराज हो मन वसिया ॥ टेर ॥ त्रयत्रि-शद्धनुपावली रे, बत्तिस अंगुल जोय । जि० त्रिहुं गढ़ भिंति पिंड प्रमाणो माराराज ॥ जि० ॥ १ ॥ ऊंचपणे धनु पांचसो रे, अंतर पण तिम होय । जि० बहुश्रुत सूर धनेश्वर जंपे माराराज ॥ जि० ॥ २ ॥ वृद्धवचन अनुसारथी रे, पावड़ी एंशी हजार । जि० शोभे समवसरण गुलजारी माराराज ॥ जि० ॥ ३ ॥ रत्नगढ़े रलियामणो रे, चैत्यवृक्ष अभिराम । जि० मनोहर व्यंतर सुर वर विरचे माराराज ॥ जि० ॥ ४ ॥ चैत्यवृक्ष अधो रचे रे, व्यंतर सुर धरी प्रेम । जि० रूडुं रत्नसिंहासन सोहे माराराज ॥ जि० ॥ ५ ॥ छत्र चामर आदे ऋद्धि रे, दिव्य देवछंद सार । जि० चोमुख कनक सिंहासन ओपे माराराज ॥ जि० ॥ ६ ॥ गाम नगर पुर विचरतां रे, जिनवर श्री जगदीश । जि० कोमल कनक कमल पग ठवता माराराज ॥ जि० ॥ ७ ॥ कनक कमल प्रदक्षिणा रे, सप्त नवे पद न्यास । जि० शेष कमल रहे सवि फिरता माराराज ॥ जि० ॥ ८ ॥ पृष्ठ कमल आगल ठवे रे, आगल ठवे वलि पृष्ट । जि० दो दो क्रमावर्ती सुर करता माराराज ॥ जि० ॥ ६ ॥ शुभविहायो गति विहरता रे, तोरण पूर्व प्रवेश । जि० सोहे रत्नपीठ मलकंता माराराज

रे० ज० ॥७॥ धूप घटी सह ताका, ऊपर छत्र चामर पताका रे ज० ॥ ८ ॥ जी० ज्योतिषी देव रसाला, रचे जिनपूजा उजमाला रे ज० ॥ ६ ॥ जी० सोवनगढ़ सुरंगा, रचे रत्न कोशीष चंगा रे ज० ॥ १० ॥ जी० वैमानिक सुर आवे, त्रिगड़ानी शोभा सोहावे रे ज० ॥ ११ ॥ जी० रत्नगढ़े रढियाला, रचे कोशीषां सुरमणि वाला रे ज० ॥ १२ ॥ जी० चउ चउ गढ़ दरवाजा, सोहे शिवसंपत् सुर राजा रे ज० ॥ १३ ॥ जी० प्रतिद्वारे महकंती, भली फूलमाला लटकंती रे ज० ॥ १४ ॥ जी० मोती झुमणां झलके, वलि पचरंगी नेजा चलके रे ज० ॥ १५ ॥ जी० द्वार दीठ चउ वापी, भरी निर्मल जलसुं नापी रे ज० ॥ १६ ॥ जी० इम त्रिगड़ानी पूजा, सवि सुर साधारण कुजा रे ज० ॥ १७ ॥ जी० 'धनमुनि' ध्यान रसाले, भवि भवना पातिक गाले रे ज० ॥ १८ ॥

दोहा

ॐ ह्रीँ पद पदकजे, पूजित सुर नर इन्द ।
अरिहानी पूजा करी, टाले भव भय फन्द ॥ १ ॥

समवसरण रचना रचे, सुरवर कोडाकोड ।
देवध्वनि चामर तणी, पूजा होड़ा-होड़ ॥ २ ॥

ढाल ४, सरकार थांरो पचरंगी बागो, ए राह

जिनराज थांरो समवसरण मन मोहे माराराज, जिनराज हो शिव वसिया, महाराज हो मन वसिया ॥ टेर ॥ त्रयत्रिशद्धनुपावली रे, वत्तिस अंगुल जोय । जि० त्रिहुं गढ़ भिंति पिंड प्रमाणो माराराज ॥ जि० ॥ १ ॥ ऊंचपणे धनु पांचसो रे, अंतर पण तिम होय । जि० बहुश्रुत सूर धनेश्वर जंपे माराराज ॥ जि० ॥ २ ॥ वृद्धवचन अनुसारथी रे, पावड़ी एंशी हज़ार । जि० शोभे समवसरण गुलजारी माराराज ॥ जि० ॥ ३ ॥ रत्नगढ़े रलियामणो रे, चैत्यवृक्ष अभिराम । जि० मनोहर व्यंतर सुर वर विरचे माराराज ॥ जि० ॥ ४ ॥ चैत्यवृक्ष अधो रचे रे, व्यंतर सुर धरी प्रेम । जि० रूडुं रत्नसिंहासन सोहे माराराज ॥ जि० ॥ ५ ॥ छत्र चामर आदे ऋद्धि रे, दिव्य देवछंद सार । जि० चोमुख कनक सिंहासन ओपे माराराज ॥ जि० ॥ ६ ॥ गाम नगर पुर विचरतां रे, जिनवर श्री जगदीश । जि० कोमल कनक कमल पग ठवता माराराज ॥ जि० ॥ ७ ॥ कनक कमल प्रदक्षिणा रे, सप्त नवे पद न्यास । जि० शेष कमल रहे सवि फिरता माराराज ॥ जि० ॥ ८ ॥ पृष्ठ कमल आगल ठवे रे, आगल ठवे वलि पृष्ट । जि० दो दो क्रमावर्ती सुर करता माराराज ॥ जि० ॥ ९ ॥ शुभविहायो गति विहरता रे, तोरण पूर्व प्रवेश । जि० सोहे रत्नपीठ मलकंता माराराज

॥ जि० ॥ १० ॥ चैत्यवृक्ष प्रदक्षिणा रे, करीने श्रीजगनाथ। जि० नमो तित्थायेति बोले माराराज ॥ जि० ॥ ११ ॥ पूर्वदिग् सिंहासने रे, पूर्वाभिमुख होय। जि० प्रभुजी मूलरूपे तिहाँ राजे माराराज ॥ जि० ॥ १२ ॥ भगवत्प्रति-रूपी रत्ननां रे, भगवत्प्रतिबिंब होय। जि० व्यन्तर सुर रचना करी थापे माराराज ॥ जि० ॥ १३ ॥ त्रिहुं दिश जिनबिंब अंगनी रे, अंगी महा मनोहार। जि० झगमग दीपक ज्योति दीपे माराराज ॥ जि० ॥ १४ ॥ देवध्वनि वाजा बजे रे, अणहुंते इक कोड़। जि० चामर-अण वीज्या विंजाये माराराज ॥ जि० ॥ १५ ॥ इणिपरे भवि भव्य भावसुं रे, पूजा रचे नर नार। जि० 'धनमुनि' शिवसजनी वर थावे माराराज ॥ जि० ॥ १६ ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउहा सुयवागरा, सरससंतिसुहारससागरा। सयलरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्णे जिना भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रो-पद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा।

तृतीयपूजा—दोहा

पूर्वाह्नी पोरिसी, अपराह्ने तिम होय।
समवसरणनी पजना, सुरनर मुनिवर दोय ॥ १ ॥

आसन भामंडल वलि, मकादीमि मनुहार ।
रत्नजटित सोनानणा, विचरै भाव उदार ॥ २ ॥

ढाल ५, मजनन्दा धेलावेगी, ए राह

समवसरण दिखावेरी, हांरी हांरी समवसरण दिखावेरी । मान थन चल सजनी सम०, मान तज चाल सखी स० ॥ टेर ॥ रत्नगढ़ चोमुख जिनपर्षद, विवरी बतलावेरी हांरी विवरी० मा० ॥ स० ॥ १ ॥ अग्निकोणे ज्येष्ठ गणधर, पर्षद पंजलि पुट सोहावेरी हांरी पंज० । करी प्रदक्षिणा तित्थस्स बोली, केवली पर्षद ठावेरी हांरी केव० मा० ॥ स० ॥ २ ॥ चउनाणी हीयमानी श्रुतज्ञानी, जाव इक पूर्वी पठावेरी हांरी जाव० । बहुश्रुत पाछल वैमानी देवी, अपछर सभा रचावेरी हांरी अप० मा० ॥ स० ॥ ३ ॥ दिव्य सिणगार ऊर्ध्व जानु ठाइ, प्रभुमंगल गावेरी हांरी प्र० । तिमही ऊढ जानु संजमी प्यारी, संयती सभा सोहावेरी हांरी सं० मा० ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्योतिष भुवन व्यंतर त्रिहुं देवी, जिनगुण गान कहावेरी हांरी जि० । अनुक्रम दक्षिण द्वार प्रवेशी, नैऋत सभा कहावेरी हांरी नै० मा० ॥ स० ॥ ५ ॥ तिमही अपर दिग् द्वार प्रवेशी, विविध वाजित्र वजावेरी हांरी वि० । ज्योति भुवन व्यंतर त्रिहुं देवा, वायव्य कोण वसावेरी हांरी वा० मा० ॥ स० ॥ ६ ॥

उत्तरदिग् द्वार प्रवेश करीने, जय जय नंद घोलावेरी हांरी ज० । वैमानिक देव मनुष्य मनुषी, ईशान कोणे रहावेरी हांरी ई० मा० ॥ सा० ॥ ७ ॥ समवसरण जिन पर्षद पूजा, जे भवि भावे भणावेरी हांरी जे० । संघपूजा भक्ति भाव करंता, 'धनमुनि' शिवसुख पावेरी हांरी शि० मा० बा स० ॥ ८ ॥

दोहा

उत्कट तेज ते सहरी, भगवत दर्शन काज ।
भामंडल भानु समो, विरचे व्यंतर राज ॥ १ ॥
रूप सोवनगढ़ अंतरे, नर सुन यान विमान ।
रत्न सोवनगढ़ अंतरे, तिर्यंच पर्षद ठान ॥ २ ॥
वैर विरोध टाली सवे, सिंहादिक मृग बाल ।
जिन वाणी श्रवणे सुणे, मेटी जग जंजाल ॥ ३ ॥

ढाल ६, प्रभु आ श्यो कर्यो तें कोप, ए राह

सखी समवसरण जिनराज, भामंडले भलकता । बेशी कनक सिंहासन नाथ, भविक पडिबोहता ॥ स० ॥ १ ॥ भवि जन्म जरा मृत्यु रूप, अगाध जले भयुं । जेमां दुःखरूपी आवर्त्त, किम जाये तयुं ॥ स० ॥ २ ॥ एवा संसार समुद्र मझार, कर्मरूप धीवरे । नांखी छे दारुण जाल,

कालरूप करिवरे ॥ स० ३ ॥ भवि आ संसार असार, सार नथी स्वप्न में । आ मोहनी माया जाल, फसावुं फंद में ॥ स० ॥ ४ ॥ भवि कारमो कुटुंब सनेह, स्वार्थ लगे आपणुं । मारुं मारुं करीने मूढ, आपणपणुं थापणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ भवि प्रीतम प्यारीना प्रेम, पलक में पलटणुं । करी कामक्रीड़ाना काम, भव मांहे भटकणुं ॥ स० ॥ ६ ॥ भवि क्षणभंगुर आ देह, काचो घट माटीनो । नवि लागे विणसतां वार, जलधि जल घाटीनो ॥ स० ॥ ॥ ७ ॥ भवि रमणी रंग पतंग, संध्यारंग सारीसो । तन धन जोवन वार, छिद्र घट वारीसो ॥ स० ॥ ८ ॥ भवि चल लक्ष्मी चल प्राण, चल जीव जोवनो । चलाचलेति संसार, अचल सुख धर्मनो ॥ स० ॥ ९ ॥ भवि दुलहो नरभव पाय, सहाय जिनधर्मनो । पामीने शुद्ध स्वभाव, करो अंत कर्मनो ॥ स० ॥ १० ॥ भवि समवसरण जिनवाणी, भावी भव्य भावना । करे कुमरनरिंद परे सार, कुसुमनी पूजना ॥ स० ॥ ११ ॥ भवि न्हवण विलेपन सुमनस, सुमनस पूजा करे । भवि गणधर पदवी पाय, 'धनमुनि' शिव वरे ॥ स० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउहा सुयवागरा, सरससंतिसुहारससागरा ।

सयलरोगहरा सवि तित्यणा, समवसर्ण जिना भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थपूजा, दोहा

प्रभु विहरे वा स्थित रहे, दिवस निशा अदृश्य ।
देवदुंदुभी नादे थवे, आकाशे जगदीश ॥ १ ॥
समवसरण जिन देशना, अंते भव्य विशाल ।
गुणगुंहली पूजा रचे, धूपाक्षत भरी थाल ॥ २ ॥

ढाल ७, चढ़ी असवारी जाय, ए राह

करी असवारी वरघोडो भारी, आनदकारी साज सजी सिणगार ॥ टेर ॥ राजा अमात्य ने सेठ सेनापति, ग्रामाधिपति नार । नवलिये खंड्या सबलिये छंड्या अखय अखंड्या, उज्ज्वल तंदुल सार ॥ क० ॥ १ ॥ रजत रकेबियो रत्नजटित वलि, सोवन थाल विशाल । मुख अणियालो सुगंधी शाली प्रेमरसाली, थाल भरे नर नार ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ चंदवदन मृगलोयणी सुन्दर, रूपे रति अवतार । कामनी केली गजगति गेली मोहन वेली, सोल सजी सिणगार ॥ क० ॥ ३ ॥ रयण सुखासण पालखी बेशी, सज्जन

साहेली साथ। राग आलावे कंठ मिलावे मंगल गावे, जोड़ी युगल निज हाथ ॥ क० ॥ ४ ॥ गज रथ घोड़ा ने पायक जोड़ी, सांबेला श्रीकार। पचरंग रेजा नवरंग नेजा झलके सतेजा, ध्वजातणो नहीं पार ॥ क० ॥ ५ ॥ डंका निसाण ने नोबत वाजे, वाजे मंगल तूर। ढोल नगारा दुंदुभिकारा मोहनगारा, वाजित्र वाजे सूर ॥ क० ॥ ६ ॥ वंदीजन विरुदावलि बोले, नाचंते वर पात्र। मुखने मटके लोचन लटके जिनगुण रटके, विरुद पठंते छात्र ॥ क० ॥ ७ ॥ समवसरण में अभिगम ठावी, करी प्रदक्षिणा सार। सुगंध छटावरी धूप घटा करी छत्र चामर धरी बोले जय जय कार ॥ क० ॥ ८ ॥ कुंकुम कंकावटी घोल फचोली, मौक्तिक स्वस्तिक पूर। घूंघट खोली वधावे भोली प्रभुगुण गहुंली, जोती प्रभु मुख नूर ॥ क० ॥ ९ ॥ इणविध समवसरणनी पूजा, पूजे श्रीजिनराज। 'धनमुनि' भाखी पाप पखाली वरे वरमाली, शिवसजनी शिव काज ॥ क० ॥ १० ॥

दोहा

अर्जुन सुवर्ण तारथी, गुंफित मौक्तिक जाल।
छत्रत्रयी आवृत वलि, दिव्य वस्त्र फुलमाल ॥ १ ॥
चतुप्रस्थ परिमिततणो, अखंड तंदुल आदाय।
ऊर्ध्व जानु वर्षावती, जिन तन्मुख सुखदाय ॥ २ ॥

सयलरोगहरा सवि तित्थणा, समवसर्ण जिना भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षु-द्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थपूजा, दोहा

प्रभु विहरे वा स्थित रहे, दिवस निशा अदृश्य ।
देवदुंदुभी नादे थवे, आकाशे जगदीश ॥ १ ॥
समवसरण जिन देशना, अंते भव्य विशाल ।
गुणगुंहली पूजा रचे, धूपाक्षत भरी थाल ॥ २ ॥

ढाल ७, चढ़ी असवारी जाय, ए राह

करी असवारी वरघोड़ो भारी, आनदकारी साज सजी सिणगार ॥ टेर ॥ राजा अमात्य ने सेठ सेनापति, ग्रामाधिपति नार । नवलिये खंड्या सवलिये छंड्या, अखय अखंड्या, उज्ज्वल तंदुल सार ॥ क० ॥ १ ॥ रजत रकेबियो रत्नजटित वलि, सोवन थाल विशाल । मुख अणियाली सुगंधी शाली प्रेमरसाली, थाल भरे नर नार ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ चंदवदन मृगलोयणी सुन्दर, रूपे रति अवतार । कामनी केली गजगति गेली मोहन वेली, सोल सजी सिणगार ॥ क० ॥ ३ ॥ रयण सुखासण पालखी बेशी, सज्जन

साहेली साथ। राग आलावे कंठ मिलावे मंगल गावे, जोड़ी युगल निज हाथ ॥ क० ॥ ४ ॥ गज रथ घोड़ा ने पायक जोड़ी, सांचेला श्रीकार। पचरंग रेजा नवरंग नेजा झलके सतेजा, ध्वजातणो नहीं पार ॥ क० ॥ ५ ॥ डंका निसाण ने नोबत बाजे, बाजे मंगल तूर। ढोल नगारा दुंदुभिकारा मोहनगारा, वाजित्र बाजे सूर ॥ क० ॥ ६ ॥ वंदीजन विरुदावलि बोले, नाचंते वर पात्र। मुखने मटके लोचन लटके जिनगुण रटके, विरुद पठंते छात्र ॥ क० ॥ ७ ॥ समवसरण में अभिगम ठावी, करी प्रदक्षिणा सार। सुगंध छटावरी धूप घटा करी छत्र चामर धरी बोले जय जय कार ॥ क० ॥ ८ ॥ कुंकुम कंकावटी घोल फचोली, मौक्तिक स्वस्तिक पूर। घूंघट खोली वधावे भोली प्रभुगुण गहुंली, जोती प्रभु मुख नूर ॥ क० ॥ ९ ॥ इणविध समवसरणनी पूजा, पूजे श्रीजिनराज। 'धनमुनि' भाली पाप पखाली वरे वरमाली, शिवसजनी शिव काज ॥ क० ॥ १० ॥

दोहा

अर्जुन सुवर्ण तारथी, गुंफित मौक्तिक जाल।
छत्रत्रयी आवृत वलि, दिव्य वस्त्र फुलमाल ॥ १ ॥
चतुप्रस्थ परिमिततणो, अखंड तंदुल आदाय।
ऊर्ध्व जानु वर्धावती, जिन तन्मुख सुखदाय ॥ २ ॥

कुसुमांजलि कुसुमे करी, वर्द्धापनने काज।
समवसरण पूजा करे, सुर नर मिली समाज ॥ ३ ॥

ढाल ८, ल्यो फूल जाली रे, ए राह

ल्यो फूल सजना रे, ल्यो फूल सजना ले लो, ले लो फूल सजना रे ॥ टेर ॥ कुसुमों की कुसुम चंगेली, जाइ जूइ फूल चबेली, सेंहरा सेवंत्री ले लो, ले लो फूल० ॥ १ ॥ चंपक केतकी वेली, जासुल मोगर गेली, सदा सोहागण ले लो, ले लो फू० ॥ २ ॥ दमणो ने मरुत्रो मेली, बोलसिरी मालती छेली, पचरंग पंकज ले लो, ले लो फू० ॥ ३ ॥ प्रियगु पुन्नाग नागेली, मचकुंद सूर पुष्प भेली, गजरा गुलावी ले लो, ले लो फू० ॥ ४ ॥ शुचि जल थलना फूल, तंदुल मेल अमूल, लो कुसुमाजलि ले लो, ले लो फू० ॥ ५ ॥ वधावती प्रभु अलवेली, पतंती अंजलि पहेली, अपहरी इन्द्रादिक ले लो, ले लो फू० ॥ ६ ॥ अर्द्ध पतंता झेले, नर वर कोपे मेले, पूजी आनंद पद ले लो, ले लो फू० ॥ ७ ॥ पट्मासी रोग हरावे, आगामी आमय जावे, पूजन फल भवि ले लो, ले लो फू० ॥ ८ ॥ समवसरण पूजा रंगीली, रचाओ छेल छबीली, 'धनमुनि' शिवसुख ले लो, ले लो फू० ॥९॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउद्दा सयवागरा, सरससंतिसहारससागरा।

भयजरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्ण जिना भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अशोकाय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

पंचमी पूजा, दोहा

ॐ अर्ह शांतिपदे, पूजंता प्रभु पाय ।
महा री रौ सहु दुख टले, सुखसंपत सवि थाय ॥ १ ॥
ज्ञानादिक चउ अइसया, प्रातिहार्य तो आठ ।
द्वादश गुण पूजन रचे, समवसरण शुभ ठाठ ॥ २ ॥

ढाल ९, प्रभु तारी गति न कलाय जरी, ए राह

प्रभु तारी छवी ज्ञान जोर जरी, दया दान वरी ॥ टेर ॥ मातुगर्भथी गृहस्थावासे प्रभु, ज्ञानत्रय युक्त नियमा करी प्र० । मनःपर्यव चोथुं नाण ते होवे, दीक्षा ग्रहणे छद्मस्थ तरी प्र० ॥ १ ॥ जिनपद प्राप्ति समये नियमा, केवल ज्ञान उद्योत वरी प्र० । ज्योतिष्क प्रभा सवि सूर्यप्रभा में, विगत विलय होय जाय परी प्र० ॥ २ ॥ चार ज्ञान तिम केवलप्रभा में, निलय होय प्रभा सघरी प्र० । लोकालोक प्रकाशक प्रभुजी, ज्ञानानंद आनंद वरी प्र० ॥ ३ ॥ केवलदर्शन एक समयनुं, तास विवक्षा करीने हरी प्र० । ज्ञानातिशये जिनपद पजित

भनना पातिक जाय खरी प्र० ॥ ४ ॥ समवसरण पूजा ठाठ मचावी, भविक मणावे भक्ति भरी प्र० । 'धनमुनि' वर सुर सपद भोगी, शिवसजनी वर थाय फरी प्र० ॥ ५ ॥

दोहा

देव निरयथी आवीने, हुवे त्रिहु ज्ञान सयुक्त ।
अवधि विषय जे स्थाननो, तेटलो तेमने हुत ॥ १ ॥
भवप्रत्ययी सहु तीर्थपा, ज्ञानातिशय हुत ।
तस पदपद्मे पूजिये, न्हवणादि दीपक युक्त ॥ २ ॥

ढाल १०, जगतनी घटना छे बहु न्यारी, ए राह

देवदीवाली सखि रचना भाली, समवसरण आली लट काली ॥ टेर ॥ रत्नारसाली सोवन साली, विच विच झगमग दीपक माली ॥ दे० ॥ १ ॥ मति श्रुत अवधि नाणनी जाली, मणपज्जव केवलनाण विचाली दे० । प्रथम आवरण भेद प्रजाली, मति अठ्ठावीस भेदे निहाली ॥ दे० ॥ २ ॥ श्रुतावरण श्रुत दूरे टाली, चौद वीस भेदे श्रुत उजवाली दे० । अवध्यावर्ण अवकाश निकाली, अवधि असख्य छो भेदे दयाली ॥ दे० ॥ ३ ॥ मनपर्यव आवर्ण विगताली बिहु भेदे अढी दीपकमाली दे० । केवलावर्ण तज एक भेदाली लोकालोक प्रकाश दीपाली ॥दे० ॥ ४ ॥ ज्ञानातिशये झाक

झमाली, केवलज्ञान सकल गुणवाली दे० । निद्रा शयन जागर दशा टाली, चोथी उजागर दशा संभाली ॥ दे० ॥ ॥ ५ ॥ घनघाती चउ कर्मने घाली, गुणथानक तेरमे पग थाली दे० । छती पर्याय निज ज्ञाननी नाली, ज्ञेय अनंतनी वर्त्तनी झाली ॥ दे० ॥ ६ ॥ ज्ञानातिशय अरिहा पुण्य-शाली, दोष अढारनी कापी डाली दे० । 'धनमुनि' अजर अमर पदवाली, सादि अनंत थिति करे दीवाली ॥ दे० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहं चउहा सुयवागरा, सुरससंतिसुहारससागरा । सयलरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्ण जिना भावि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-क्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी पूजा, दोहा

पूजातिशये चउ अतिशया, उगणीस देवना कीध ।
कर्म खप्याथी इग्यार इम, समवायांग प्रसिद्ध ॥ १ ॥
न्हवणादिक अक्षत करी, मंगल अष्ट प्रकार ।
पूजा रचो अरिहा तणी, जिम पामो भवपार ॥ २ ॥

ढाल ११, वटसावित्री व्रत आज पूरण करीए रे, ए राह

समवसरण जिनराज, पूजन करिये रे शिवसुंदरी सहजानंद,

सुख तो वरिये रे । लेइ अक्षत अखय अखड, मंगल रचना रे । भरी अष्ट मंगलनो थाल, पूजो सजना रे ॥

जिनपूजा विधि जिन सेवियें अमो, जाचिये जिन जयकार रे । "अमने ते शिवसुख आपजो तमो, पूरा प्रेमथी प्रभुगुण गाइये अमो । नित्य पामिये मगल माल रे, अमने ते शिव-सुख आपजो तमो" ॥ टेर ॥

'चाल'

रूप स्वरूप अनत तुमारो, अनुत्तरसुरथी मोहनगारो । एक सहस अड लक्षण धारो, प्रस्वेद मलिन रागादिके न्यारो । शोभन सुगंध शरीर प्रथम अतिशे वखाणु ॥ स० ॥ १ ॥ रुधिर आमिष बे उज्ज्वल तमारा, जाणिये गोदुग्धफेण रे अमने० । दुर्गन्ध रहित सुगधित होवे, बीजे अतिशय सेण रे अ० ।

'चाल'

आहार, निहार अदृश्य रसालो, त्रीजो अतिशय एह निहालो। श्वासोछ्वास सुगधी गंधालो, कमलपुष्प सम भाव संभालो । सहजातिशये चार, चोथो अतिशय जाणु ॥ स० ॥ २ ॥ घनघाती कर्मना क्षयथी तें होवे, अतिशय जिनने इग्यार रे

अ० । योजन परिमित क्षेत्रे समावे, भुवनत्रयी नर नार रे अ० ।

'चाल'

जिनवाणी धर्म बोधक गमजे, निज निज भाषा सहु समजे ।
प्रथम बीजो अतिशय ग्रहीजे, त्रीजो अतिशय हवे तो कहीजे ।
पचवीश जोजन चोफेर पूर्वोपन्न रोग समीजे ॥ स० ॥ ३ ॥
चोथो अतिशय जिनजी ज्यां विचरे, वैरभाव मिट जाय रे अ० । पांचमो दुर्भिक्ष दुष्काल न थाय, स्वपर चक्र भय जाय रे अ० ।

'चाल'

सातमो मारी मरकी न थाय, आठमे ईति उपद्रव जाय ।
नवमो ते अतिवृष्टि न होय, दशमो ते अनावृष्टि न जोय ।
इग्यार में प्रभुने पूंठ भामंडल झलहल झलके ॥ स० ॥ ४ ॥

समवसरणपूजा अतिशे पजे, अपछर वृंद उजमाल रे अ० ।
त्रिभुवनपतिनी भावना भावे, नाटिक गीत रसाल रे अ० ।

'चाल'

घूघरनो घमकार हमारो; घूंघटपट मुख जोइये तमारो ।
भावना भक्ति हाव ' अमारो, मुखनो मटको वाह

सुख तो वरिये रे । लेइ अक्षत अखय अखंड, मंगल रचना रे । भरी अष्ट मंगलनो थाल, पूजो सजना रे ॥

जिनपूजा विधि जिन सेविये अमो, जाचिये जिनजयकार रे । "अमने ते शिवसुख आपजो तमो, पूरा प्रेमथी प्रभुगुण गाइये अमो । नित्य पामिये मंगल माल रे, अमने ते शिव-सुख आपजो तमो" ॥ टेर ॥

'चाल'

रूप स्वरूप अनंत तुमारो, अनुत्तरसुरथी मोहनगारो । एक सहस अड लक्षण धारो, प्रस्वेद मलिन रागादिके न्यारो । शोभन सुगंध शरीर प्रथम अतिशे वखाणु ॥ स० ॥ १ ॥ रुधिर आमिष बे उज्ज्वल तमारा, जाणिये गोदुग्धफेण रे अमने० । दुर्गन्ध रहित सुगंधित होवे, बीजे अतिशय सेण रे अ० ।

'चाल'

आहार, निहार अदृश्य रसालो, त्रीजो अतिशय एह निहालो । श्वासोछ्वास सुगंधी गंधालो, कमलपुष्प सम भाव संभालो । सहजातिशये चार, चोथो अतिशय जाणु ॥ स० ॥ २ ॥ घनघाती कर्मना क्षयथी ते होवे, अतिशय जिनने इग्यार रे

अ० । योजन परिमित क्षेत्रे समावे, भुवनत्रयी नर नार
रे अ० ।

'चाल'

जिनवाणी धर्म बोधक गमजे, निज निज भाषा सहु समजे ।
प्रथम बीजो अतिशय ग्रहीजे, त्रीजो अतिशय हवे तो कहीजे ।
पचवीश जोजन चोफेर पूर्वोपन्न रोग समीजे ॥ स० ॥ ३ ॥
चोथो अतिशय जिनजी ज्यां विचरे, वैरभाव मिट जाय रे
अ० । पांचमो दुर्भिक्ष दुष्काल न थाय, स्वपर चक्र भय जाय
रे अ० ।

'चाल'

सातमो मारी मरकी न थाय, आठमे ईति उपद्रव जाय ।
नवमो ते अतिवृष्टि न होय, दशमो ते अनावृष्टि न जोय ।
इग्यार में प्रभुने पूंठ भामंडल झलहल झलके ॥ स० ॥ ४ ॥

समवसरणपूजा अतिशे पजे, अपछर वृंद उजमाल रे अ० ।
त्रिभुवनपतिनी भावना भावे, नाटिक गीत रसाल रे अ० ।

'चाल'

घूघरनो घमकार हमारो, घूंघटपट मुख जोइयें तमारो ।
भावना भक्ति हाव अमारो, मुखनो मटको वाह

चटको तमारो । लटके मोधा इन्द्र 'धनमुनि' पार उतारो ॥ स० ॥ ५ ॥

दोहा

ॐ अर्हं कुरु कुरु भवि, जपतां जय जयकार ।
आ भव सुख संपत मिले, परभव उतरे पार ॥ १ ॥
उगणीस अतिशय देवकृत, होवे ज ग दा नं द ।
न्हवणादि अक्षत पूजतां, पामे प र मा नं द ॥ २ ॥

ढाल १७, ममता मूरख मूक, ए राह

समवसरण जिनराज, सुर नर पूजे रे, करी जतना भक्ति उदार, पापथी धूजे रे । अष्ट मंगल आलेख, सहु नर नारी रे; करी अक्षतपूजा इष्ट, भव निस्तारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ मणिरत्नमयी मनोहर, सिंहासन धारी रे, प्रथमातिशय जिनराज, पूजे सुर नारी रे । त्रण छत्र सहित जिनराज, मस्तक सोहे रे, बीजे अतिशय महाराज, मनड़ो मोहे रे ॥स०॥२॥ महेन्द्रध्वजा महाराज, आगल चाले रे, त्रीजे त्रिभुवन लोक, धर्म संभाले रे । अणवायाँ वींजाय, चामर रूडां रे, ए चोथे अतिशय नाथ, नहीं ते कूड़ां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ धर्मचक्र भयचक्र, पांचम टाले रे, रूडी अशोकनी शीतल छांय, छट्ठे म्हाले रे । चोमुख चौ प्रकार, देशना आपे रे, मणिकनक

रजत गढ तीन, आठमे व्यापे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ कनक कमल महाराज, पगलां ठवतां रे, कंटक अधोमुख होय, दशमे चलतां रे । दीक्षार्थी नख केश, रोम न वाधे रे, एकादश अतिशय एह, निज पद साधे रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इन्द्रिय अर्थ मनोज्ञ, बारमे पांचे रे, छे सर्व ऋतु सुखदाय, तेरमे मांचे रे । चौदमे सुगंधी वारि, वृष्टि थाय रे, पन्नरमे पचरंग फूल, जल पथराये रे ॥स० ॥ ६ ॥ सोलमे पक्षी सर्व, प्रदक्षिणा देतां रे, वायु वाये सानुकूल, आनंद लेतां रे । अढार में वनवृक्ष, प्रभुने प्रणमे रे, वाजे देवदुदुंभि आकाश, क्रोड़ गगन में रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इम देवकृत उगणीस, अतिशय पूजा रे, छे समवसरण जिनराज, भवियण कुज्जा रे । फलथी फल लहे मोक्ष, सहज दिवाजा रे, 'धनमुनि' वर महाराज, लहे सुख ताजा रे ॥ स० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउहा सुयसागरा, सरससंतिसुहारससागरा । सयखरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्ण जिना भवि ! पूजयेत् ॥१॥
ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाधष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी पूजा, दोहा

वचनातिशय जिनतणा, स्याद्वाद जल धार ।
वचनामृतना पानथी, पामे भवजल पार ॥ १ ॥

न्हवणादिक फल पूजना, समवसरण जिनभूप ।
फलपूजाथी फल लहे, सहजानंद चिद्रूप ॥ २ ॥

ढाल १३, सैयर सुखकर संसार शीयल, ए राह

सैयर शुभ सजी सिणगार, समवसरण जइये । सुणी चन्द्रमुखी जिनवाण, तन मन सुख पइये ॥ टेर ॥ वाणी गुण पांत्रीश वखाणे, श्रीजिनवर जगदीश रे । अमृतरसथी अधिकी मीठी, सुणिये विस्वावीश ॥ स० ॥ १ ॥ प्रथम स्थानके जे जे देशनी, भाषानो परचार रे । अर्थ मग्ध सह भाषा बोले, जिनवर श्रीजयकार ॥ स० ॥ २ ॥ बीजे गुण उचस्वर देशना, समवसरण परमाण रे । आदि अंत सहु सरखी सुणीने, बूझे जाण अजाण ॥ स० ॥ ३ ॥ त्रीजे ग्रामिक तुच्छ भाषा तज, बोले भाषा प्रौढ रे । चौथे मेघ गर्जारव सम ते, गंभीर वाणी गूढ ॥ स० ॥ ४ ॥ पांचमे शब्दोपेत ते वाणी, पडछंदा सह बोले रे । सांभलनार भविने हृदये, भिन्न भिन्न शब्दे खोले ॥ स० ॥ ५ ॥ छट्ठे सांभलनार भविने, संतोषकारक होय रे । मान सहित सरला युत वाणी, सुणतां शिवसुख जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ सातमे बहुमान उपन्न वलि, भाषा बोले नाथ रे । अमने उद्देशी नाथजी बोले, निज निज हृदय सनाथ ॥ स० ॥ ७ ॥ आठमे पुष्ट विस्तार अर्थ सह, नवमे मिलतो अर्थ रे । पूर्वापर

अविरोधी भाषा, भाषे अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ८ ॥ दशमे शिष्टवचन करी बोले, अभिमत आगम अर्थ रे । महत् पुरुष विण बोली न शके, एवा अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ९ ॥ इग्यार में स्पष्ट वचन इम बोले, जेथी संदेह न होय रे । बारमे प्रभुना व्याख्या अर्थने, दोषी न शके कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तेरमे सूक्ष्म कठिण विषय जे, तेमां एम बोलाय रे । सांभलतां सहु हृदयकमल में, तुरत ते परगमी जाय ॥ स० ॥ ११ ॥ चौदमे प्रस्तावोचित वाणी, कहेवा योग्य कहेवाय रे । मांहो मांहे अर्थ मेलवी, बोलवा योग्य बोलाय ॥ स० ॥ १२ ॥ प्रभुने जे जे वस्तु विवक्षित, ते सिद्धांत लेइ भाषे रे । सोलमो विषय संबंध प्रयोजन, अधिकारी सहवासे ॥ स० ॥ १३ ॥ सत्तरमे पद रचन अपेक्षा, लेइने बोले चंग रे ॥ अढारमे षट्-द्रव्य नवतत्त्व, बोले पटुता रंग ॥ स० ॥ १४ ॥ स्निग्ध मधुर बोल उगणीसे, अमृत सम प्रभु वाण रे । 'धनमुनि' समवसरणनी पूजा, करतां शिव सोपान ॥ स० ॥ १५ ॥

दोहा

ॐ अरिहं प्रभु पदपंकजे, स्वाहा शुभ पद सेव ।
शांति मंत्र प्रभावथी, दृष्टे देखीस देव ॥ १ ॥
अक्षय फल पद पामवा, फलपूजा फल होय ।
जिनवाणी गुणगागथी, फलथी फलपत जोय ॥ २ ॥

न्हवणादिक फल पूजना, समवसरण जिनभूप ।
फलपूजाथी फल लहे, सहजानंद चिद्रूप ॥ २ ॥

ढाल १३, मैयर सुखकर संसार शीयल, ए राह

सैयर शुभ सजी सिणगार, समवसरण जइये । सुणी चन्द्रमुखी जिनवाण, तन मन सुख पइये ॥ टेर ॥ वाणी गुण पांत्रीश वखाणे, श्रीजिनवर जगदीश रे । अमृतरसथी अधिकी मीठी, सुणिये विस्वावीश ॥ स० ॥ १ ॥ प्रथम स्यानके जे जे देशनी, भापानो परचार रे । अर्ध मगध सह भापा बोले, जिनवर श्रीजयकार ॥ स० ॥ २ ॥ बीजे गुण उच्चस्वर देशना, समवसरण परमाण रे । आदि अंत सहु सरखी सुणीने, बूझे जाण अजाण ॥ स० ॥ ३ ॥ त्रीजे ग्रामिक तुच्छ भापा तज, बोले भाषा प्रौढ रे । चोथे मेघ गर्जारव सम ते, गंभीर वाणी गूढ ॥ स० ॥ ४ ॥ पांचमे शब्दोपेत ते वाणी, पडछंदा सह बोले रे । सांभलनार भविने हृदये, भिन्न भिन्न शब्दे खोले ॥ स० ॥ ५ ॥ छट्ठे सांभलनार भविने, संतोषकारक होय रे । मान सहित सरला युत वाणी, सुणतां शिवसुख जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ सातमे बहुमान उपन्न वलि, भापा बोले नाथ रे । अमने उद्देशी नाथजी बोले, निज निज हृदय सनाथ ॥ स० ॥ ७ ॥ आठमे पुष्ट विस्तार अर्थ सह, नवमे मिलतो अर्थ रे । पूर्वापर

अविरोधी भाषा, भापे अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ८ ॥ दशमे शिष्टवचन करी वोले, अभिमत आगम अर्थ रे । महत् पुरुष विण वोली न शके, एवा अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ६ ॥ इग्यार में स्पष्ट वचन इम वोले, जेथी संदेह न होय रे । वारमे प्रभुना व्याख्या अर्थने, दोषी न शके कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तेरमे सूक्ष्म कठिण विषय जे, तेमां एम वोलाय रे । सांभलतां सहु हृदयकमल में, तुरत ते परगमी जाय ॥ स० ॥ ११ ॥ चौदमे प्रस्तावोचित वाणी, कहेवा योग्य कहेवाय रे । मांहो मांहे अर्थ मेलवी, वोलवा योग्य वोलाय ॥ स० ॥ १२ ॥ प्रभुने जे जे वस्तु विवक्षित, ते सिद्धांत लेइ भापे रे । सोलमो विषय संवंध प्रयोजन, अधिकारी सहवासे ॥ स० ॥ १३ ॥ सत्तरमे पद रचन अपेक्षा, लेइने वोले चंग रे ॥ अढारमे षट्-द्रव्य नवतत्व, वोले पटुता रंग ॥ स० ॥ १४ ॥ स्निग्ध मधुर वोल उगणीसे, अमृत सम प्रभु वाण रे । 'धनमुनि' समव-सरणनी पूजा, करतां शिव सोपान ॥ स० ॥ १५ ॥

दोहा

ॐ अरिहं प्रभु पदपंकजे, स्वाहा शुभ पद सेव ।
शांति मंत्र प्रभावथी, दृष्टे देखीस देव ॥ १ ॥
अक्षय फल पद पामवा, फलपूजा फल होय ।
जिनवाणी गुणवागथी, फलथी फलपत जोय ॥ २ ॥

न्हवणादिक फल पूजना, समवसरण जिनभूप ।
फलपूजाथी फल लहे, सहजानंद चिद्रूप ॥ २ ॥

ढाल १३, सैयर सुखकर संसार शीयल, ए राह

सैयर शुभ सजी सिणगार, समवसरण जइये । सुणी चन्द्रमुखी जिनवाण, तन मन सुख पइये ॥ टेर ॥ वाणी गुण पांत्रीश वखाणे, श्रीजिनवर जगदीश रे । अमृतरसथी अधिकी मीठी, सुणिये विस्वावीश ॥ स० ॥ १ ॥ प्रथम स्थानके जे जे देशनी, भाषानो परचार रे । अर्थ मग्ध सह भाषा बोले, जिनवर श्रीजयकार ॥ स० ॥ २ ॥ बीजे गुण उचस्वर देशना, समवसरण परमाण रे । आदि अंत सहु सरखी सुणीने, बूझे जाण अजाण ॥ स० ॥ ३ ॥ त्रीजे ग्रामिक तुच्छ भाषा तज, बोले भाषा प्रौढ रे । चोथे मेघ गर्जारव सम ते, गंभीर वाणी गूढ ॥ स० ॥ ४ ॥ पांचमे शब्दोपेत ते वाणी, पडछंदा सह बोले रे । सांभलनार भविने हृदये, भिन्न भिन्न शब्दे खोले ॥ स० ॥ ५ ॥ छट्टे सांभलनार भविने, संतोषकारक होय रे । मान सहित सरला श्रुत वाणी, सुणतां शिवसुख जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ सातमे बहुमान उपन्न वलि, भाषा बोले नाथ रे । अमने उद्देशी नाथजी बोले, निज निज हृदय सनाथ ॥ स० ॥ ७ ॥ आठमे पुष्ट विस्तार अर्थ सह, नवमे मिलतो अर्थ रे । पूर्वापर

अविरोधी भाषा, भाषे अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ८ ॥ दशमे शिष्टवचन करी बोले, अभिमत आगम अर्थ रे । महत् पुरुष विण बोली न शके, एवा अर्थ समर्थ ॥ स० ॥ ९ ॥ इग्यार में स्पष्ट वचन इम बोले, जेथी संदेह न होय रे । बारमे प्रभुना व्याख्या अर्थने, दोषी न शके कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तेरमे सूक्ष्म कठिण विषय जे, तेमां एम बोलाय रे । सांभलतां सहु हृदयकमल में, तुरत ते परगमी जाय ॥ स० ॥ ११ ॥ चौदमे प्रस्तावोचित वाणी, कहेवा योग्य कहेवाय रे । मांहो मांहे अर्थ मेलवी, बोलवा योग्य बोलाय ॥ स० ॥ १२ ॥ प्रभुने जे जे वस्तु विवक्षित, ते सिद्धांत लेइ भाषे रे । सोलमो विषय संबंध प्रयोजन, अधिकारी सहवासे ॥ स० ॥ १३ ॥ सत्तरमे पद रचन अपेक्षा, लेइने बोले चंग रे ॥ अढारमे षट्-द्रव्य नवतत्व, बोले पटुता रंग ॥ स० ॥ १४ ॥ स्निग्ध मधुर बोल उगणीसे, अमृत सम प्रभु वाण रे । 'धनमुनि' समव-सरणनी पूजा, करतां शिव सोपान ॥ स० ॥ १५ ॥

दोहा

ॐ अरिहं प्रभु पदपंकजे, स्वाहा शुभ पद सेव ।
शांति मंत्र प्रभावथी, दृष्टे देखीस देव ॥ १ ॥
अक्षय फल पद पामवा, फलपूजा फल होय ।
जिनवाणी गुणवागथी, फलथी फलपत जोय ॥ २ ॥

ढाल १४, ओलूंडी थांरी आवे हो, ए गाह

ओलूंडी थांरी आवे हो शिवसुखरा लोभी, ओलूंडी थांरी आवे हो शमदमरा लोभी ॥ टेर ॥ वीसमे गुण चतुराइथी प्रभु, परममदि न जणाय । धर्म अर्थ प्रतिबद्धथी बोले, एकवीसमो कहेवाय रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ १ ॥ बावीसमे उदारपणे प्रभु, बोले अर्थ विकास । दीपक जेवो प्रकाशज कारी, सुणनां हृदय उल्लास रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ २ ॥ परनिंदा निज मोटाइ प्रभु, दीठामां नवि आवे । त्रेवीसमे सौभाग्य वचन कही, सहु जीवने समभावे रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ ३ ॥ सर्वगुण संपन्न चोवीसमो प्रभु, बोलतां मामन थाय । कर्त्ता कर्म क्रियादिक वचने, पचवीसमो गुण कहेवाय रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ ४ ॥ सामलनार ने आश्चर्यकारी प्रभु, छव्वीसमो गुण संत । अतिधीरता सहित स्वस्थ चित्ते, सत्तावीसमो गुण कहंत रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ ५ ॥ अठ्ठावीसमो विलंब रहित प्रभु, बोल बोल सुबोल । मननी भ्रांति रहित वलि बोले, उगणतीसमो गुण अमोल रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ ६ ॥ भुवन वैमानिक मनुष्यादिक प्रभु, निज निज भाषा समजाय । ए गुण तीसमा हवे एकत्रीशमो, विशेष शिष्य बुद्धि थाय रे, शिवसुखरा लोभी ॥ओ०॥७॥

पदार्थविशेप आरोपण करी प्रभु, बत्रीसमो गुण बोल । तेंत्रीसमे सत्त्व प्रधानपणाथी, बोल साहसिक तोल रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ ८ ॥ चोंत्रीशमे पुनरुक्ति दोष रहित प्रभु, पांत्रीशमों गुण शोध । खेद श्रम नवि उपजे सांभलतां, आपे भविकने बोध रे, शिवसुखरा लोभी ॥ओ०॥ ॥ ९ ॥ समवसरण जगदीशनी प्रभु, वचनातिशय कीजे । नरपद सुरपद अनुभवी, 'धनमुनि' पद लीजे रे, शिवसुखरा लोभी ॥ ओ० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउहा सुयवागरा, सरससंतिसुहारससागरा । सयलरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्ण जिना भवि ! पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुपाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षुद्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी पूजा, दोहा

अपायापगम अतिशय थकी, अपाय अपगम होय ।
समवसरण पूजा रच्यां, अपाय रहे नहीं कोय ॥ १ ॥
तिण कारण जिनराजनी, न्हवणादिक नैवेद ।
पूज्य–पूजा करतां थकां, फल पामे निर्वेद ॥ २ ॥

ढाल १५, प्राणप्रिया सुण पुत्र, ए राह

समवसरण की सुन्दर रचना, निरखित नयनानद । भव्य-जीव सुख सपद पावे, पामे परमानद ॥ स० ॥ १ ॥ पापी अभव्य ते नजरे न देखे, भाव सहित भगवत । समवसरण जिनचन्द्र की शोभा, भव्य लहे भव अत ॥ स० ॥ २ ॥ योजन परिमित क्षेत्रे होवे, कीटाकोटी समाम । वैर विरोध सकीर्णता बाधा, सर्व उपद्रव होय नाश ॥ स० ॥ ३ ॥ कोश शत शत चारो दिशा मे, ऊर्ध्व अधो पचास । कोश पाचसो पट् सुदिशा में, नवि होय वैराभ्यास ॥ स० ॥ ४ ॥ शलभ मूषक आदिकनो उपद्रव, रोग वायु नवि वाय । मारी पडे नहीं अतिवृष्टि नहीं, वर्षा अभाव न थाय ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ स्वचम परचमतणो भय, दुर्भिक्ष पात न होय । कटक अधोमुख होय विहारे, अपायापगम सवि जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ अपायापगम अतिशय पूजा, द्रव्य भाव करे जेह । 'धनमुनि' सुर नर सुख विलसी, अजर अमर वरे तेह ॥ स० ॥ ७ ॥

दोहा

श्रीसुख सपत्कारणे, जो श्रीजिनचद ।
पूज्याथी प्रभुता वधे, पामे परमानद ॥ १ ॥

नानाविध पकवान्न बहु, षट्रस भोजन पाक ।
समवसरण जिन पूजतां, भव्य लहे सुरनाक ॥ २ ॥

ढाल १६, माता मोरादेवीना नंद, ए राह

मोहन समवसरणना भूप, अलबेला तुम नगरी जोइ पामे शुद्ध स्वरूप मो० ॥ टेर ॥ अढीद्वीपना पन्नर क्षेत्र में, समवसरण पुर सोहे । अढार कोडाकोडी सागर अंतर, भरतक्षेत्र पुर होवे ॥ मो० ॥ १ ॥ चार जोयण अंत एक जोयणनो, इन्द्रादिक सुर अरचे । त्रिहुं गढ़ कोटतणे दरवाजे, नाना कौतुक विरचे ॥ मो० ॥ २ ॥ कांगरे कांगरे रत्न ज्योतनी, दीपमाला जिम चलके । जानु प्रमाणे फूल गलीचा, विविध भाँति करी झलके ॥ मो० ॥ ३ ॥ सेठ सेनापति सुर नर मुनिवर कोटाकोटी आवासे । संख्य असंख्य तिर्यंच समाना, नगरे वासज वासे ॥ मो० ॥ ४ ॥ त्रिहुँ गढ विच सिंहासन राजे, छत्रत्रय शिर झलके । तीन भुवनो नरवर न्यायी, न्याय हुक्म दिल करके ॥ मो० ॥ ५ ॥ दश वीश वत्तीस सुरपति सोहे वलि दोय चंद ने सूर । विहुँ कर जोड़ी ऊभा आगे, हाले हुक्म हजूर ॥ मो० ॥ ६ ॥ चामर जोड़ा चोवीश छाजे, भामंडल भलकंत । गगने गाजे देवदुंदुभी, वाजित वाजें अनंत ॥ मो० ॥ ७ ॥ धर्मचक्र वलि धर्मचक्रपुर आतिहार्यज आठ । कनक कमल पदन्यासे रचना, पुष्प वर्षा-

पन ठाउ ॥ मो० ॥ ८ ॥ अनुकूल वायु शकुन प्रदक्षिणा, सुगंध पुष्प वर्षाय । चौमुख सुर कोटी करे सेवा, पूजातिशय कहाय ॥ मो० ॥ ९ ॥ वचनातिशय पात्रीश वाणी, अन्योन्य प्रतिकूल । अपायापगम अतिशये अंतर, ज्ञानातिशय प्रतिकूल ॥ मो० ॥ १० ॥ अपायापगम करवा भवियण, समवसरण जिन पूजे । सकट कष्ट टले सवि उपद्रव, पातिक मल सवि धूजे ॥ मो० ॥ ११ ॥ मारी मरकी तणा जे उपद्रव, शात भाव सवि थावे । समवसरण जिनपूजा भणतां; 'धनमुनि' शिवपद पावे ॥ मो० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

चउमुहे चउद्दा सुयवागरा, सरससत्तिसुद्दारसमागरा । सयलरोगहरा सवि तित्थपा, समवसर्ण जिना भवि ? पूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युक्षु-द्रोपद्रवनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धन्याश्री

गायो गायो रे जिन समवसरण प्रभु गायो ॥ टेर ॥ अरिहा अनत थया जे थाशे, वर्तमान समवायो । समवसरण पूजा विरचावी, पहोंच्या शिवपुर ठायो रे ॥ गा० ॥ १ ॥

आवश्यकसूत्र उवाइ उपांगे, समवायांग सहायो । समवसरण जिन पूजानो विधि, गणधर सूत्रे गुंथायो रे ॥ गा० ॥ २ ॥ युगप्रधान सूरि त्रेवीस उदये भद्रबाहु गुरुरायो । दोय हजार चउ पट्टपरंपर, दुष्षमपाहुडो रचायो रे ॥ गा० ॥ ३ ॥ सोहमगण में पट्टपरंपर, उदय त्रीजे वरतायो । अट्ठावन में श्रीवीरने पाटे, वर्त्ते दम्मिल्लसूरि रायो रे ॥ गा० ॥ ४ ॥ युगप्रधानसूरि आण रंगी, महानिशीथे वंचायो । उत्तम मध्यम जघन्य आचार्य, पंचम आरे थायो रे ॥ गा० ॥ ५ ॥ सोहमगण सूरि तपाविरुद धर, जगच्चन्द्रसूरि जायो । तास परंपर श्रीदेवसूरीश्वर, वचन सिद्धि जग गायो रे ॥ गा० ॥ ॥ ६ ॥ तस पदपंकज श्रीप्रभसूरिवर, रत्नसूरि रतिरायो । क्षमा देवेन्द्र तस पाट परंपर चरणरागी गच्छरायो रे ॥गा०॥ ॥ ७ ॥ विजयदेवसूरि पाट परंपर, वाचकवृंद सोहायो । कृष्ण गंग भाव मोहन मृगमद, लक्ष्मी लीला लखायो रे ॥ गा० ॥ ८ ॥ न्यायचक्रवर्त्ती विरुदनो धारक, श्रीयशोविजय उवज्झायो । प्रेम पवित्र विश्वासनो भाजन वाचक कृष्ण कहायो रे ॥ गा० ॥ ९ ॥ तास परंपर चरण चतुर वर, लक्ष्मी लाभ कमायो । सूरिराजेन्द्र गुरु दम्मिलनी शिक्षा, वाचनाचार्य पद पायो रे ॥ गा० ॥ १० ॥ संवत नेन[३] रस[६] नव[९] शशि[१] वर्षे, विहरंतो सुखदायो । वाचनाचार्यपद 'धन-

विनय' मुनि, नगर मडवारिये आयो रे ॥ मा० ॥ ११ ॥
सघ सकल मिल विनति करीने, चातुर्मास चित चायो ।
जा प्रभावना धर्मध्यानादिक, अधिको ठाठ मचायो रे
॥ गा० ॥ १२ ॥ सघ उजमणा विधिनो मुहूरत, मागसर
सुदि त्रीजे ठायो । वाचक वरश्रीने उपदेशे, समवसरण
विरचावो रे ॥ गा० ॥ १३ ॥ देवविमान सम मडप रचना,
झगमग ज्योति जगायो सिद्धाचल गिरनारनी रचना, सुरगिरी
सम समझायो रे ॥ गा० ॥ १४ ॥ आठ दिवस अठाइ
महोत्सव, करे बहु हर्ष भरायो । समवसरण विधि पूजा
भणावी, मगलमाल सोहायो रे ॥ गा० ॥ १५ ॥ नाना
विध आगीनी रचना, दीपकमाल रचायो । सजी सिणगार
अपछर सम वाला, रुमझुम नाच नचायो रे ॥ गा० ॥
१६ ॥ नव नवरगी अग्रेजी वाजा, वाजित्र सवायो ।
धप मप मादलने धौंकारे, गाधर्व नाटिक थाया रे ॥ गा०
॥ १७ ॥ विविध वरघोडाना ठाठ मचाया, राग रग रस
लायो । पूजा प्रभावना स्वामिवच्छल, भक्तिभाव मन मां
रे ॥ गा० ॥ १८ ॥ नवकारसी दोय स्वामिवच्छल
सघभक्ति उजमायो । दान सन्मान बहु जाचकने देइ, क
स्तभ रोपायो रे ॥ गा० ॥ १९ ॥ खूमाजी सुत
डाह्याजी, पद्माजी त्रिहुँ मायो । हिन्दु अमरिंग दोलाजी
वनो, देव जगरूप कहायो रे ॥ गा० ॥ २० ॥ का०

संघना आग्रहथी यह, पूजानो भाव रचावो । वाचनाचार्य 'धनमुनि' राजे, जग जस पड़ह वजायो रे ॥ गा० ॥ २१ ॥
समवसरण पूजा भणशे सुणशे, तस घर कोडि वधायो ।
रंग अभंग सुर नर सुख विलसी, सादि अनंत सुखदायो रे ॥ गा० ॥ २२ ॥
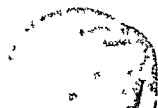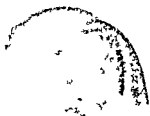
श्री विंशतिस्थानकपद पूजा विधि

शुभ मुहूर्त में पवित्र पाट, या वेदिका ऊपर सालकार बीस जिनप्रतिमा स्थापन कर, उनके आगे ऊपरा ऊपरी तीन बाजोट, या त्रिगड़ा रख कर, उनमें चउतीर्थी प्रतिमा विराजमान करना। तीर्थस्थल, वापिका आदि २० कुए का जल मंगा के रखना और बीस स्नात्रिया, बीस स्नात्रणियाँ तैयार करना। पूजा भणानेवाले गृहस्थ के घर, या पूजा स्थान में बीस थाल में एक एक श्रीफल, मोदक, नारियल-गोला, घीखाण्डभृत-खोपरा, पेड़ा, बरफी, खारक, बदाम, मिंगोडा, कमलकाकड़ी, केला, नारंगी, आमफल, आम, सोपारी, लौंग, इलायची, मेवा, केसरपुड़ी, मीठी-पूडी, खाजा, अंगलूणा, पान, कपूर, बरास, चंदनमूठिया, केसर-कटोरी, धूपधाणा, आरती, मंगलदीपक, माला, ज्ञानपुस्तक आदि वस्तु भरके, उनको रूमाल, या चन्द्रुवा से ढक के रखना।

एक चौरस बड़े बाजोट पर सदस श्वेतवस्त्र बिछाके उसके ऊपर बीस कोठेवाला गोलाकार चावल का मंडल बनाना और उसके हरएक कोठे को बीसस्थानकपदों के वर्णप्रमाणे वर्णवाले चावलो से पूर्ण करना।

बादमें पचामृत से बीस छोटे कलश भरके, स्नात्रपूजा भणाये बाद एक स्नात्रिया को २० कलशों की थाली, एक को पुष्पमाला, एक को घिसी केशर का प्याला, एक को शख, एक को मालर और शेष को फल, धूप, नैवेद्यादि सामग्री देकर खड़े रखना। पूजा भणानेवाले के घर से बाजते गाजते स्नात्रणियों से प्रथम थाल मंगा के अरिहंतपद की पूजा काव्य मंत्र भणाये बाद प्रतिमाजी
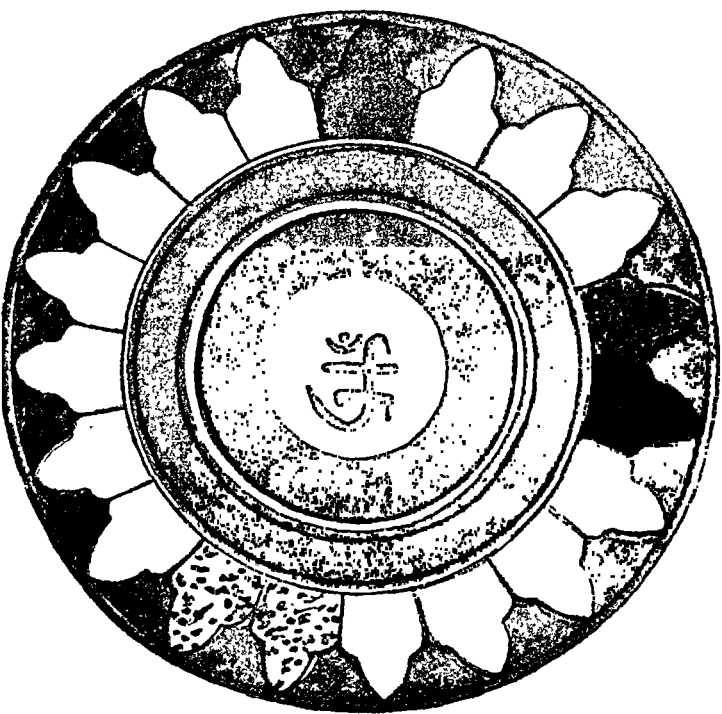
७ श्रीविंशतिस्थानकपदपूजा—मंडल.

पर कलशा ढोना, उस समय एक स्नात्रिया को अंगलूणा, एक को पूजन करना और एक को पुष्पमाला चढ़ाना तथा प्रतिमा के सामने एक पाट पर चावल के बारह स्वस्तिक करना और मंडल के प्रथम कोठे में थाल की फलादि सब चीजें चढ़ाना। इसी प्रकार प्रत्येक पूजा में थाल मंगाते जाना और पूजा, काव्य, मंत्र भणाये बाद प्रथम पूजा के मुताबिक विधि करते जाना। परन्तु दूसरी पूजा में चावल के स्वस्तिक आठ, तीसरी में ४५, चोथी में ३६, पांचवीं में १०, छट्ठी में २५, सातवीं में २७, आठवीं में ५, नवमी में ६७, दशवीं में १०, ग्यारहवीं में ७०, बारहवीं में ९, तेरहवीं में २५, चौदहवीं में १२, पंद्रहवीं में २८, सोलहवीं में २४, सत्रहवीं में १७, अठारहवीं में ५१, उन्नीशवीं में ४५ और बीशवीं में ५, स्वस्तिक करके फलादि वस्तु चढ़ाना चाहिये। हरएक पूजा में पंचामृत से भरे छोटे बीश बीश कलशों से प्रतिमाओं में से क्रमवार एक एक प्रतिमाजी पर अभिषेक करना। बीसों पूजा भणाने के बाद कलश भणा के, आरति मंगलदीपक उतार के जयध्वनि के साथ उठना। पूजा पढाने वालों को श्रीफलादि की प्रभावना, स्वामिवात्सल्य यथाशक्ति करना चाहिए।

विशेष खर्च की शक्ति नहीं होवे तो और संक्षेप से यह पूजा पढ़ाना होवे तो सामान्य रूप से अष्ट द्रव्य, प्रतिपूजा में एक एक श्रीफल और अंगलूणा प्रतिपद की पूजा, काव्य, मंत्र भणाकर मंडल के प्रति कोठे में चढ़ाते जाना और अन्त में कलश कहके आरति, मंगलदीपक उतारना चाहिए।

श्रीमद्‌विजयधनचन्द्रसूरिजी कृत

श्रीविंशतिस्थानकपदपूजा

—•—•

१ श्रीअरिहंतपदपूजा—दोहा

सिद्ध श्री सोमित सदा, सिद्धा सिद्धपद ठाण ।
परमानंद परमेसरु, प्रणमुं श्रीजिनमाण ॥ १ ॥
दान शील तप भावना, भाव विना अनुष्ठान ।
तप जप फल पामे नहीं, जेम अलूणो धान ॥ २ ॥
भावसहित भवि तप तपे विंशति थानक जेह ।
परमातम पदवी लही, पामे शिवसुख गेह ॥ ३ ॥
तपथी सवि संपति हुवे, तपथी कोड कल्याण ।
ऋद्धि सिद्धि तपथी लही, पामे पद निर्वाण ॥ ४ ॥
प्रथम चरम जिन फरसिया, विंशति थानक सर्व ।
एकादिक सर्व आचरे, मज्झिम जिनप निगर्व ॥ ५ ॥
वीस थानक शुभ तप तपी, ऊजमणा विधि सार ।
वीस थानक करी पूजना, पामो भवजलपार ॥ ६ ॥
पीठरचन त्रिगडोपरि, ठवणा जिन चउवीस ।
पूजोपगरण मेलवी, पूजिये श्री जगदीस ॥ ७ ॥

अड कलसा अड जातिना, बीस अभिषेक उदार ।
वस्तु मिलाय विश वीशथी, पूजो अष्ट प्रकार ॥ ८ ॥

ढाल १, रंगीली झूमखावाली हे, ए राह

अरिहंतपद पूजन प्यारी हे, सुमतिसखी रंगकी क्यारी हे, रुमझुम सज सणगारी हे, रंगिलि रचे पूजना भारी हे ॥ अ० ॥ टेक ॥ विघ्नउपसामनी अभ्युदय साधनी, त्रीजी निवृत्तिकार । विघ्नसमे अंग पूजनसेती, अद्भुत अभ्युदयकार ॥ अ० ॥ १ ॥ निवृत्तिपद लहे अरिहंत पूजी, त्रिविध पूंजी सुखदाय । अंग अग्र वली भावपूजाथी, पामे शिवपद ठाय ॥ अ० ॥ २ ॥ पंच उपचार ने अड उपचारनी, सर्व उपचारनी सार । त्रिविध अरिहंतपद इम पूजी, थाओ मुक्तिवधु भरतार ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुसुम अक्षत चंदन केरी, धूप दीप मनोहार । पंचोपचारपूजा करी जिननी, पामो भवोदधि पार ॥ अ० ॥ ४ ॥ कुसुम अक्षत गंध दीपनी पूजा, धूप नैवेद्य फल नीर । अष्टोपचार इम पूजा विरची, मावो अरिहंतपद धीर ॥ अ० ॥ ५ ॥ न्हवण चंदन वस्त्र भूषण फल वली, दीपक नाटिक गीत । अनोपम आरति सर्वोपचारी, पूजा रचो सुविनीत ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तरभेद इकवीश प्रकारनी, अठोत्तरशो भेद । इम पूजा वहुभेद विचारी, अरिहंतपद पूजो उसेद ॥ अ० ॥ ७ ॥ एम अनेक प्रकारकी पूजन, शक्तिछते

भवि होय । अक्षत दीपक पूजा निरंतर, पंचवस्तुक में जोय ॥ अ० ॥ ८ ॥ द्विविधभक्ति वधारवा सुन्दर, प्रथम स्थान शुभ साज । देवपाल परे तीर्थंकर पद, "धनचन्द्रसूरि" शिवराज ॥ अ० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतिल्करे जयकेतनं, कुरुत विशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमदर्हते जलादिकं यामहे स्वाहा ।

सिद्धपदपूजा, दोहा

ध्यानानलना जोरथी, अष्टकर्म कृत नाश ।
अरिहंत पण तेहने नमे, नमो नमो सिद्ध उल्लास ॥ १ ॥

ढाल २, सुनंदी आनंदी बोलव नंदी०, ए राह

नमो नमो सिद्ध महासुखकंदी, चिदानन्द शाश्वत सुखनन्दी ॥ टेक ॥ सकलकर्म मल दूर करीने, लोकाग्रे रह्या जगदानंदी । मुक्तिमहेल छेल थई रसिया, अनंतचतुष्टयी सादी आनंदी ॥ नमो० ॥ १ ॥ गुण इकवीस सिद्धपदे भोगी, चिदानंद स्वरूपानदी । जन्ममरण दुःख जहाँ नहीं लेसी,

अव्याबाध सुख सहजानंदी ॥ नमो० ॥ २ ॥ पन्नरभेदे हुवे सिद्ध अनूप, आठ गुणे वली गुण आनंदी । सिद्धतणी भक्तिना रागी, पुंडरीक आदि तीर्थानंदी ॥ नमो० ॥ ३ ॥ ऋषभ यथा अष्टापद सिद्धी, चंपा वासुपूज्य परमानंदी । उज्जित पावा नेमी वीरजी सिद्धा, सम्मेतशिखर वीश सिद्धानंदी ॥ नमो० ॥ ४ ॥ पाँच कोडीसुं पुंडरीक गणधर, शत्रुंजय सिद्धा जगदानन्दी । कांकरे कांकरे सिद्ध अनंता, सिद्धाचल सिद्धक्षेत्रानंदी ॥ नमो० ॥ ५ ॥ सिद्धतणा थानिक भवि फरसत, सिद्धवधू वरमालानंदी । अन्य तीर्थ यात्रा फल होवे, सहसगुणी सिद्ध यात्रानंदी ॥नमो०॥६॥ अन्यतीर्थ कोडीवर्ष जो कीजे, दान दया तप जप आनंदी । एक मुहूर्त्त सिद्धक्षेत्रे करतां, पुण्य लहे भवि पुण्यानंदी ॥ नमो० ॥ ७ ॥ भवकोडीना पाप खपावे पग पग पावे ऋद्धि अमंदी । सिद्ध थानिक थापी श्रीजिनबिंबने, सिद्धध्यान करे जो वंदी ॥ नमो० ॥ ८ ॥ नमो सिद्धाणं जाप जपीने, तीर्थंकरपद भोगानंदी । 'श्रीधनचन्द्रसूरि' सिद्धपद ध्याने, हस्तिपालनृप सिद्धानंदी ॥ नमो० ॥ ९ ॥

काव्य और मंत्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ॥
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीसिद्धाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

३ प्रवचनपदपूजा, दोहा

प्रवचनपद त्रीजो नमुं, जैनदर्शन संघ रूप।
अरिहा पण तेहने नमे, समवसरणना भूप ॥ १ ॥
चार भेद प्रवचन तणा, श्रवण संघ निज शक्ति।
कपट कदाग्रह छोडिने, करवी प्रवचन भक्ति ॥ २ ॥
तीर्थंकर पदवी तणो, मूल बीज छे एह।
प्रवचनभक्ते बहु भविक, तीर्थंकर थाय जेह ॥ ३ ॥

ढाल ३, गिरिवर दरिशन दोरला पावे, ए राह

प्रवचन भक्ति करो नर नारी, तरण तारण नावा भवोदधि वारी ॥ टेर ॥ संघ चतुर्विध शास्त्रमां भास्यो, जिन सरिखो जिनराज विचारी। प्रथम भक्ति जिम जेहनी कीजे, ते सुणज्यो भवि शुभ अधिकारी ॥ प्रव० ॥ १ ॥ द्रव्य भाव परिग्रह निःसंगी, साधु धरम दशविधना धोरी। अंतःकरण निर्मल अति उज्जवल, निर्वद्य जसु व्यापार तिजोरी ॥ प्रव० ॥ २ ॥ आचरणा पण जेहनी उज्ज्वल, कपट रहित शुद्ध निरतिचारी। त्रिकरणशुद्ध चारित्र जे पाले, गुण सगवीस सुमता भंडारी ॥ प्रव० ॥३॥ दोष बेतालिस टालि

सोभागी, त्रीजे पहुरे हुवे गोचरी चारी । पंच मंडल का दोषकुं टाली, भोजन करे अप्रतिबंध विहारी ॥ प्रव ॥ ४ ॥ सुविहित साधु तणी समाचारी, कालोकाल जे किरिया कारी । साधु साध्वी एहवा सोभागी, तेहनी भक्ति कालोचित धारी ॥ प्रव० ॥ ५ ॥ न्यायागत अशनादिक देई, धर्मविष्टंभ करे बड़भारी । जिनशासन प्रभावना कीजे, तजि दंभ ग्रही अदंभ किनारी ॥ प्रव० ॥ ६ ॥ श्रीजिनगृह जिनप्रतिमा करावो, बिंब प्रतिष्ठा अतिमनोहारी । तीर्थयात्रा विधि ज्ञान भंडारे, खरचे द्रव्य निज शक्ति अनुसारी ॥ प्रव० ॥ ७ ॥ आचार्यादिक पद ओच्छव करीने, पुन्य भंडार भरे नर नारी । गुण इकवीश विराजत सुन्दर, द्वादशव्रत धारक धर्मधारी ॥ प्रव० ॥ ८ ॥ सामायिक पोसह विधि अनुसारी, पडिक्कमणा करे सांज सवारी । जीवादिक नवतत्त्वना जाण, चउद चतुरपणे नियम संभारी ॥ प्रव० ॥ ६ ॥ जिनवर आण प्रमाण करीने, गुरु आणा वहे व्रत ब्रह्मचारी । एहवा श्रावक तणि जे भक्ति, दान मान बहुमान देनारी ॥ प्रव० ॥ १० ॥ विविधभाँति भोजन करी भक्ति, वस्त्राभूषण दिये शोभा कारी । साहमीवच्छल बहुभाँति करीने, चन्दन कुसुम पूजा सत्कारी ॥ प्रव० ॥ ११ ॥ सीदाता साहमी भणि देखी, करे सहाय साहमी उपगारी । साहमीना सगपण विण बीजुं, सगपण जाणे अथिर संसारी ॥ प्रव० ॥ १२ ॥ प्रवचनपूजा

इणिपरे करीने, तीर्थंकरपद जिनदत्त धारी । 'सूरि धनचन्द्र' प्रवचन करि भक्ति, भव्य होवे मुक्तिसुख संचारी ॥ प्रव० ॥ १३ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतिलकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिस्थपदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री प्रवचनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

आचार्यपद पूजा, दोहा

मुक्तिसाधन सारथपति, भावाचार्य अद्भुत ।
राजधानी सहु सुखतणी, शुद्ध धर्मनो दूत ॥ १ ॥
थानक चोथुं सेविये, मंत्रसिद्धनो बीज ।
पं च प्र स्था ने आ त मा, आचारज हुवे बीज ॥ २ ॥

ढाल ४, शांतिवदनकज देख नेन, मधुकर मन लीनो रे–
आज मधु०, ए राह

गुरुगच्छपति गुन गान वेन, मधुकर मन लीनो रे-आज मधुकर० ॥ टेर ॥ श्रीजिनके सिद्धान्त वेन, जिन वचनामृत पान धेन । सवि सुखके साधन सेन एन, स्याद्वाद रस भीनो रे-आज स्या० ॥ गु० ॥ १ ॥ युगप्रधानसम भाव

आचारज, भावे भावना पंचाचारज । त्रिहुं काल जिनवन्दन कारज, करे शम दम गुन चीनो रे—आज सम० ॥ गु० ॥२॥ चार शिक्षा करी जन पडिबोहे, आठ प्रमाद तजे क्षण कोहे । विकथा चार निवारक सोहे, भेद भवभय छीनो रे—आज भे० ॥ गु० ॥ ३ ॥ पडिरूवादि चउद गुणधारी, क्षांत्यादिक दश धर्मना कारी । बार भावना भावित ब्रह्मचारी, छत्तीस गुण तिन्नो रे—आज छत्ती० ॥ गु० ॥ ४ ॥ नमो आयरिय मुख्य जपीजे, दानादिक उत्तम तसु दीजे । गुरुभक्ते सही मुक्ति लहीजे, प्रेम—रस शांति नगीनो रे—आज प्रेम० ॥ गु० ॥ ५ ॥ गुरु गिरुआ गणधर महंता, दोय हजार ने चार सोहंता । तेवीश उदय ज़स जयवंता, सेव तस शिव-पद दीनो रे—आज सेव० ॥ गु० ॥ ६ ॥ पुरुषोत्तम-नृप ए पद साधी, जिनवरपद लहे तजी उपाधी । 'श्री-धनचन्द्रसूरीस' समाधी, मंत्र-जप सूरि आधीनो रे—आज मंत्र० ॥ गु० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री आचार्याय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

५ स्थविरपद पूजा, दोहा

निजस्वरूप की रमणता, परपरिणत सब त्याग ।
निज परने थिरता करे, नमो थिविर पदभाग ॥ १ ॥

ढाल ५, समकित सरवा विण सांई, जीव ...... राग

सेवो पंचमपद सुखकारी, थाओ पंचमगति अधिकारी ''टेर॥ लोक लोकोत्तर छेद, कर्या थिविर तणा दोय भेद रे-कह्या लौकिक मात पितारी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ लौकिक सर्वने तजिये, वलि लोकोत्तरने भजिये रे-सेवो थिविर महाव्रत धारी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ संयमयोगे सीदाता; बाल-ग्लानादिक विख्याता रे-तसु सहायक थिरता कारी ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ वीश वर्ष थकी पर्याय, जसु साठ वर्षनी याय रे-चोथा अग ऊपर श्रुत धारी ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ थिविर महागुणवन्ता, जे रत्नत्रयादिक खन्ता रे-कह्या ठाणांगे दश थिविरारी ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ तप विवेक श्रुत-ज्ञानी, वली संयम यम धृत ध्यानी रे-तिहुं भेदे थिविर व्रतधारी ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ अन्न पान वस्त्रादिक देई, थिविर भक्ति करो गुणगेही रे-करो विनय उपासना भारी ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र कालादिक पामी, करो भक्ति सदा शिवगामी रे-मन वचन काया निरधारी ॥ सेवो० ॥ ८ ॥

तीर्थंकरपदवी रसाल, लहे पद्मोत्तर भूपाल रे—थया शिव-संजनी भरतारी ॥ सेवो० ॥ ९ ॥ थिविर भक्ति जो कीजे, तो थिरता अनन्त सुख लीजे रे—'धनचन्द्रसूरि' उपगारी ॥ सेवो० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं; सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीस्थविराय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

उपाध्यायपदपूजा, दोहा

भणे भणावे सूत्रने, पाठक गुण गम्भीर ।
पुष्करमेघ ज्यों वर्षता, सूत्र अर्थ जंजीर ॥ १ ॥

ढाल ६, पाठक पद को पूजले, ए तो द्वादश……, ए राह

श्रीउवभायपद पूजले, तेरो जन्म सफल होय जावे रे । मूरख शिष्य महापंडित करीने, पहाणने पलव ठावे रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ द्वादश अंग जे बद्ध कहीजे, निशीथादिक सूत्र अबद्ध रे । बद्ध अबद्ध विहुं सूत्रना पारग, सूत्र अर्थ विहुँ लद्ध रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ अर्थ सूत्रना दान विभागथी,

५ स्थविरपद पूजा, दोहा

निजस्वरूप की रमणता, परपरिणत सब त्याग ।
निज परने थिरता करे, नमो थिविर बड़भाग ॥ १ ॥

ढाल ५, समकित सरवा बिण साईं, जीव ― ― राग

सेवो पचमपद सुखकारी, थाओ पचमगति अधिकारी
प्यारे॥ लोक लोकोत्तर छेद, कर्या थिविर तणा दोय भेद रे–कह्या लौकिक मात पितारी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ लौकिक सर्वने तजिये, वलि लोकोत्तरने भजिये रे–सेवो थिविर महाव्रत धारी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ सयमयोगे सीदाता; बाल-ग्लानादिक विख्याता रे–तसु सहायक थिरता कारी ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ वीश वर्ष थकी पर्याय, जसु साठ वर्षनी थाय रे–चोथा अंग ऊपर श्रुत धारी ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ थिविर महागुणवन्ता, जे रत्नत्रयादिक रन्ता रे–कह्या ठाणागे दश थिविरारी ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ तप विवेक श्रुत-ज्ञानी, वली सयम यम धृत ध्यानी रे–तिहु भेदे थिविर व्रतचारी ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ अन्न पान वस्त्रादिक देई, थिविर भक्ति करो गुणगेही रे–करो विनय उपासना भारी ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र कालादिक पामी, करो भक्ति सदा शिवगामी रे–मन वचन काया निरधारी ॥ सेवो० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीपाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

७ साधुपदपूजा, दोहा

सप्तम थानिक सेविये, दुस्तर तपी अणगार ।
कर्म निर्जरा कारणे, करवुं गौरव सार ॥ १ ॥
तपसी मुनि पूजा करे, विनय प्रमाण सतकार ।
निविड़कर्म ढीला करे, कृष्ण परे सुविचार ॥ २ ॥

ढाल ७, राग सोरठ, सिद्धजी को पूजो प्यारा......., ए राह

सप्तमपद पूजा प्यारा, ज्युं होवे भव निस्तारा रे ॥ टेर ॥ बाह्याऽऽभ्यन्तर भेदथी सुन्दर, तपना दोय प्रकारा । कर्म निकाचित निर्जरा जेहथी, पामे भव्य अपारा रे ॥ स० ॥ १ ॥ अणसण ऊणोदरी वृत्तिसंक्षेप पुनी, रसत्याग करनारा । कायक्लेश संलीनता तप ए, बाह्यथकी निर्धारा रे ॥ स० ॥ २ ॥ पायच्छित्त विनय ने वेयावच्च, सिज्झाय ध्यान धरनारा । उत्सर्ग षट् ए अभ्यन्तर दु भेदे, तपे वाचंयम अणगारा रे ॥ स० ॥ ३ ॥ एवंविध द्वादशतप धारी, मुनि तपसी ऋषि सारा । विरमी सकल उपाधी आतमगुण, सत्तावीश उजारा रे ॥ स० ॥ ४ ॥ उदयाचल सम तपसी तेजी, जीवो जे चिरकाला । जिहाँ लग द्वादश तप रवि

आचरज उवझाय रे। भव त्रीजे लहे शिवसुख संपद, राजकुंवर ते राजने ठाय रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उद्देश समुद्देश अनुज्ञा ज्ञानथी, अहण आसेवन शिक्षा देई रे। चौद दोष टाली अविनीत शिष्यने, करे पनरगुणे गुणगेही रे ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ अंग अनंग कालिक उत्कालिक, आवस्यक ने व्यतिरित्ता रे। आवस्यक पचवीश वन्दन केरा, कर पचवीश भाव विदित्ता रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ किया पचवीश त्यागी बड़भागी, शुभ पचवीश गुणना रागी रे। दक्षिणावर्तशंख दूध भरयो सोहे, तिम नयगम भंगना भागी रे ॥ श्री० ॥ ॥ ६ ॥ परवादी अभिमान निवारण, हय गय पंचानन सरिखा रे। वृषभ धोरि वासुदेव नरदेवा, सुरपति ओपम परिखा रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ रवि शशि भंडारी रूप दिपन्ता, जंबू सीता नदी महन्ता रे। मेरु महीधर स्वयंभु उदधि, रत्नागर खाण भदन्ता रे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ बहुश्रुतकुं सोल ओपमा ओपित, कहे उत्तराध्ययने जिणिन्दा रे। महेन्द्रपाल वाचकपद सेवत, होवे 'धनचन्द्रसूरि' महिन्दा रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीसाधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा।

८ ज्ञानपदपूजा, दोहा

आतमतत्व विचारणा, सम्यग् ज्ञान संयोग।
दुर्जय कर्मतणो सही, ततखिण होय वियोग ॥ १ ॥
सदनुष्ठान संपूर्ण फल, तासु प्रदायक एह।
तेह निरन्तर भावसुं, ज्ञानोपयोग करेह ॥ २ ॥
जिनवर उक्त क्रिया विषे, ज्ञानतणो उपयोग।
भणो भणावो ज्ञानने, करो ज्ञान तणो संयोग ॥ ३ ॥

ढाल ८, मधुकर माधवने कहेज्यो०, ए राह

अजब आनन्दी ज्ञानपद पूजा, पूजत भव दुःख जाय सहीरी। योग अध्यातम ग्रन्थ चिन्तना, क्रिया नाण पहाण कहीरी ॥ अ० ॥ १ ॥ तेह ज्ञान श्रीजिनवर भाख्यो, पाँच एकावन भेद सोभागी। मति श्रुत अवधी ने मनःपर्यव, केवलज्ञान उदार वड़भागी ॥ अ० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार कहावे। दोय भेद मनःपर्यव केवल, एक भेद एकावन सहावे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जड़ता जननी उच्छेद करीने, सम्यग् ज्ञान कह्यो जिनराजे। भक्ष्याऽभक्ष्य विवेचन परगट, खीर नीर जिमि

आतम, तिम तिम करे विसराला रे ॥ स० ॥ ५ ॥ नवनिध भाव लोच करो संयमी, दशमो केश लुचारा। आमोसहि विप्पोसहि आदि, लब्धी लहे विस्तारा रे ॥ स० ॥ ६ ॥ एगुणतीस पासत्थ दोष निवारे, शोक सन्ताप निवारा। दोष सुड़तालीस आहारना वारी, अतिक्रमे नहीं आचारा रे ॥ स० ॥ ७ ॥ खीरासव मदुआसव लब्धी, संभिन्नश्रोत जाणनारा। जंघाविद्या चारण मुनिवर, तप महिमा गुणगारा रे ॥ स० ॥ ८ ॥ मुनिने अर्थे समारे मन्दिर, वर्जे एह आचारा। अतिक्रमादिक दोषने वर्जे, न करे मुनि अनाचारा रे ॥ स० ॥ ९ ॥ कर फरसे क्षुधादिक जावे, उपद्रव सवि हरनारा। ले दीक्षा शिक्षा दिये वर्जी, नरना दोष अढारा रे ॥ स० ॥ १० ॥ मोटो रूप करे लख जोयण, लघु कुन्थू आकारा। चैत्य जुहारे जेह शास्वत, तप महिमा तरनारा रे ॥ स० ॥ ११ ॥ कोडी सहस नव साधु संयम, थवे जेह भववारा। 'सुरधनचन्द्र' वीरभद्र तणी परे, तीर्थपति पद-धारा रे ॥ स० ॥ १२ ॥ सुर नर जेहनी सेवा सारे, वासुदेव चक्रधारा। पुण्य पाप पुद्गल देय रूपी, समभावे मुक्ति संसारा रे ॥ स० ॥ १३ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्।
जिनपक्तिवकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीसाधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा।

८ ज्ञानपदपूजा, दोहा

आतमतत्व विचारणा, सम्यग् ज्ञान संयोग।
दुर्जय कर्मतणो सही, ततखिण होय वियोग ॥ १ ॥
सदनुष्ठान संपूर्ण फल, तासु प्रदायक एह।
तेह निरन्तर भावसुं, ज्ञानोपयोग करेह ॥ २ ॥
जिनवर उक्त क्रिया विषे, ज्ञानतणो उपयोग।
भणो भणावो ज्ञानने, करो ज्ञान तणो संयोग ॥ ३ ॥

ढाल ८, मधुकर माधवने कहेज्यो०, ए राह

अजब आनन्दी ज्ञानपद पूजा, पूजत भव दुःख जाय सहीरी। योग अध्यातम ग्रन्थ चिन्तना, क्रिया नाण पहाण कहीरी ॥ अ० ॥ १ ॥ तेह ज्ञान श्रीजिनवर भाख्यो, पाँच एकावन भेद सोभागी। मति श्रुत अवधी ने मनःपर्यव, केवलज्ञान उदार वड़भागी ॥ अ० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार कहावे। दोय भेद मनःपर्यव केवल, एक भेद एकावन सहावे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जड़ता जननी उच्छेद करीने, सम्यग् ज्ञान कह्यो जिनराजे। भक्ष्याऽभक्ष्य विवेचन परगट, खीर नीर जिमि

'हंस विराजे ॥ अ० ॥ ४ ॥ भाग अनन्तमो एक अक्षरनो सदा अप्रतिपाती प्रकाश्यो । प्रथम ज्ञान ने पछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते इम जिन भाष्यो ॥ अ० ॥ ५ ॥ कुंभकरणविधि जे नवि जाणे, तेहथी कदापि न कुंभ होवे रे । कंचन नाणुं लोचनवन्त परखे, अंधो अंध किम जोवे रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ एकान्तवादी तत्त्व न पाँमे, लहे स्याद्वाद समुदाये रे । ज्ञानानन्दी तरे भवसिन्धु ज्ञान सकल गुणदाये रे ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ अल्पागम मुनि उग्र विहारी, विचरे उद्यमवन्ता रे । ज्ञान तणी परिणती विण न लहे, कायक्लेश मन भ्रन्ता रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ ज्ञानाराधन जयवन्त भूपति, तीर्थंकर पद पावे रे । 'धनचन्द्रसूरि' ज्ञान उपगारी, रवि शशि मेहपरे थावे रे ॥ अ० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतिस्वकरे जयकेतनः कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीज्ञानाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

९ सम्यग्दर्शनपदपूजा, दोहा

अरिहन्तदेव सुसाधु गुरु, केवलि भाषित धर्म ।
त्रण तत्त्व ए सद्दहे, ते सम्यक्त्व अकर्म ॥ १ ॥

देवगुरु धर्मने विषे, सम्यग् श्रद्धा जेह ।
दर्शन मोह विनाशथी, नमो नमो दर्शन तेह ॥ २ ॥

ढाल ९, पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी, ए राह

श्रीदर्शनपद पूजो प्राणी, पामो समकित शुद्ध रे । केवली दीठुं ते मीठुं माने, परिणाम विशेषे शुद्ध रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इग दु तिविहा चउविह पंचविह, दशविह समकित श्रेणी रे । धर्मतत्त्वरुचि एकविध जाणो, दुविहा निसर्ग उवएसेणी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ क्षायक क्षयोपशम उपशम तिविहा, सास्वादन युक्त चार रे । वेदकसम्यक्त्व युक्ते थाए, पंचविध पंचप्रकारे रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दशप्रकार समकित हवे सुणिये, निसर्ग उपदेशरुची जाणो रे । आज्ञा सूत्ररुचि बीज अभिगम, विस्तार ने किरिया वखाणो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ संक्षेप धर्म रुची नवमी दशमी, गंठी भेदे जोवे रे । मिथ्यापुद्गल आत्म विघटे, शुद्ध समकित तस होवे रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ वस्तुगते जे वस्तुनो लक्षण, तेहिज समकित दक्ष रे । जिन-प्रतिमा दर्शन तस होवे, समकित जास प्रत्यक्ष रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दोविध जिनदर्शन कह्युं शास्त्रे, निश्चय ने व्यवहार रे । जे जिनदर्शन नयणे जोवे, ते द्रव्यदर्शन निर्धार रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ योगदृष्टिसमुच्चय मांहे दाख्यो, धर्मबीज सुखकार रे । जिनवन्दन पूजन नमनादिक, सूरिहरिभद्र शुविचार रे ॥

श्री० ॥ ८ ॥ यद्यपि समल नहीं छे तो पण, आत्महितकर एह रे। सिज्झंभगादि व्यवहार जोगथी, भावदर्शन करे जेह रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सकल धर्मनो आश्रय दर्शन, षट् उपमान छे एहना रे। उत्तराध्ययने दर्शन विण कह्या, धर्मक्रिया फल जहन्ना रे ॥ श्री० ॥ १० ॥ *जिम मींडा लेखे नवी आवे,* एकादिक विण अंक रे। तिम दर्शन विण क्रिया न लेखे, जिम कुसंगे नहीं निकलंक रे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ जिणे दर्शन अन्तर मुहूर्त्त, पुद्गल परियट्ट तस अद्ध रे। निश्चय संसार रह्यो जस बाँकी, समकित गुण फल लद्ध रे ॥ श्री० ॥१२॥ *पूर्वबद्ध आयुगत समकित विण, विशेषावश्यक कहन्त रे।* विण वैमानिक आयु न बांधे, समकितवन्त गुणवन्त रे। ॥ श्री० ॥ १३ ॥ दर्शनपदना भेद अनेक छे, सतसठ भेद उदारा रे। हरिविक्रम इण पद सेवनथी, जिनपद लहे निस्तारा रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ जन्म मरण दुःख जलगंभीरा, संसार जलधि दुत्तारा रे। 'धनचन्द्रसूरि' होय समकितवन्ता, दुत्तर भवोदधि पारा रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्। जिनपतिल्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीदर्शनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

१० विनयपद पूजा, दोहा

विनय धर्मनो मूल छे, विनय धर्मनो सार ।
विनय घर गुणगणतणो, वन्दो विनय विचार ॥ १ ॥
सर्वश्रेयनो मूल छे, करवो विनय विशेष ।
पंचभेद सामान्यथी, विनय करो सुविवेक ॥ २ ॥

ढाल १०, मिलिया इन्द्र समाज रे प्यारा प्रभु ने लइने, ए राह

विनयपदकुं पूज रे, भवि भाव धरीने ॥ वि० ॥ आँकणी ॥
अरिहन्ता जिहाँ मुख्य विराजे, दशविह तेर प्रकार रे भ० ।
बावनभेद सिद्धांते गाया, छासठ भेद विस्तार रे भ० ॥ वि० ॥ १ ॥ पंच भेद सामान्ये दाख्या, लोकोपचार भणी काम रे भ० । भव्य निमित्त तिम मोक्षनो विनय, पंच भेद गुणठाम रे भ० ॥ वि० ॥ २ ॥ आदर अंजली आसण बेसण, दान विभवे अतिपूज रे भ० । लोकोपचार समान ते जाणो, जिन मुनि वन्दन कुंज रे भ० ॥ वि० ॥ ३ ॥ सिश्रवचन छन्दे तस चालण, वितरण–अभ्युत्थान रे भ० । अंजलि आसन वासन देवूं, अर्थविनय सुप्रधान रे भ० ॥ वि० ॥४॥ कामविनय भव्य इणि परे जाणो, पंच भेदे मोक्ष वखाण रे भ० । दंसण नाण चारित्र तव उपचारे, पंच भेद पहेचान रे भ० ॥ वि० ॥ ५ ॥ द्रव्य तणा सहु भाव जे भाख्या, श्रीअरिहन्त भगवन्त रे भ० । ते साँचा करी सद्दहे सुन्दर,

दंसणविनय कहन्त रे भ० ॥ वि० ॥ ६ ॥ भणे भणावे लिखे लिखावे, ज्ञानभक्ति सुविचार रे भ० । ज्ञानविनयें ज्ञानी कार्य करे पिण, नहीं नव कर्म संचार रे । भव ॥ वि० ॥ ७ ॥ अनादि निधन आठ कर्मनो संचय, रिक्त करे जयमान रे भ० । अन्य नवा बांधे नहीं सुविहित, चारित्र विनय वखान, रे भ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ तपे करी तम आप भविजन, निज आतमने धीर रे भ० । स्वर्ग मोक्ष सन्मुख हुवे जेहथी, तपविनयथी कहे वीर रे भ० ॥ वि० ॥ ९ ॥ दुविध विनय उपचारे क्रमण हुवे, सघला गुणनो आधार रे भ० । प्रतिरूप आणासायण निर्लेपे, योग प्रयुंजणा सार रे भ० ॥ वि० ॥ १० ॥ प्रतिरूप विनय निश्चय करी आतम, काय वचन मन योग रे भ० । अष्ट चार दो भेदसुं भविजन सुणे देई उपयोग रे भ० ॥ वि० ॥ ११ ॥ तित्थयरादिक तेरस विनयना, चउगुण होय बावन्न रे भ० । शमदमादिक गुण सवि साँचा, राख्या जे विनय वचन्न रे भ० ॥ वि० ॥ १२ ॥ भावप्रशस्ते अरिहादिकनो, विधियुत विनय करन्त- रे भ० । नित्याहारी उपवास तणो फल, निरन्तर लहे अनुसरन्त रे भ० ॥ वि० ॥ १३ ॥ देववन्दनविधी दोय हजार ने, चिहुंतर बोल विचार रे भ० । चारशो बाणुं बोलनी सीमा, गुरुवन्दन निरधार रे भ० ॥ वि० ॥ १४ ॥ रत्नत्रयी पावे संवर निर्जर, गुरुविन . गुणवन्त रे भ० ।

भाववन्दन पंच वंदनमां ते, शुभ उपयोगे लहे सन्त रे भ
॥ वि० ॥ १५ ॥ द्रव्य भाव करी विनयनी पूजा, धन्नो
पद सेवन्त रे भ० । 'धनचन्द्रसूरि' तीर्थपद भोगी, शिवसु
लहे जयवन्त रे भ० ॥ वि० ॥ १६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारण
श्रीविनयाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

११ चारित्रपदपूजा, दोहा

पंचाश्रव त्यागन करी, इन्द्रि विषय तजी पंच ।
चार कषाय निरोधिने, त्रिहुं दंड वर्जे खंच ॥ १
इणिपरे सतर प्रकारथी, चारित्रपद सुविचार ।
आराधन कर जिनमुनि, पामे भवजल पार ॥ २ ।

ढाल ११, राग रेखता

चारित्रपद सेव तुं प्यारा, होय तेरा भव का निस्तारा
चारित्र-मोह अभाव के द्वारा, देश सर्व संयम का चा
॥ १ ॥ कषाय अष्टसे हुवे न्यारा, लहे दश चरण शर
हों सर्वगु

प्रगटे ॥ चा० ॥ २ ॥ अनन्तगुण देशविशुद्धि, चरण सर्व अनन्त की रिद्धि । चरण गुणठाण विण फारस्यां, रहे भवि तत्वरमण तरसां ॥ चा० ॥ ३ ॥ वर्ष एक पर्याये रमता, अनुत्तर सुख को अतिक्रमता । शुक्ल शुक्ल परिणामथी जोता, संयमसे क्षण में सिद्ध होता ॥ चा० ॥ ४ ॥ संवर सर्वसयम लही ताजा, अरिहा होवे मुक्ति के राजा । अनन्तर मुक्ति का कारण, मुनिजन चरण शरण धारण ॥ चा० ॥ ५ ॥ आणा विण संयम अनुसरता, खडयतुसमय मंडण करता । अरण्य शून्य मालपुण रोवे, पाखरगज खरपे नवि शोभे ॥ चा० ॥ ६ ॥ सित्तरभेद चरण के सांई, सित्तरभेद आगम के मांही । वरुणदेव तीरथपद पाया, नमे 'धनचन्द्र-सूरि' राया ॥ चा० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतिलकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीचारित्रपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१२ ब्रह्मचर्यपदपूजा, दोहा

जिम चिन्तामणी कल्पद्रुम, चि त्रा वे ल ज गी श ।

कामधेनु सुरघट समो, नमो नमो शील सदीश ॥ १ ॥
नृप–चक्री–इन्द्र–देवमां, ग्रहगण माहें निशेन्द्र ।
व्रतमाहें तिम ब्रह्मव्रत, मोटो कह्यो जिनेन्द्र ॥ २ ॥

ढाल १२, हुंतो रहि छुं मनाय मनाय, थंको राजा नहीं माने
माराराज०, ए राह

पूजो पूजो ब्रह्मपद सार, जगत शिरो मणी मारा राज ।
व्रतमाहें मुगट समान चारित्र सोहन दिनमणी मारा राज ।
॥ पू० ॥ १ ॥ टेर ॥ सदाचार पहेलो सुरंग, शील जर
दीसरो मारा राज । बीजो सहस्र अढार अणगुप्तिसुं तीसरो
मारा राज ॥ पू० ॥ २ ॥ दिव्य उदारिक काम, कृत
कारित अनुमति मारा राज । त्रिकरण योगे परिहार, धरे
शील महाव्रति मारा राज ॥ पू० ॥ ३ ॥ निज नारीसुं नेह,
गृहवासी करे मारा राज । इत्वर अपरिग्रहिता नार, विधवा
वेश्या परिहरे मारा राज ॥ पू० ॥ ४ ॥ निज नारीनो त्याग,
पर्वादिक अनुसरे मारा राज । तजी तीव्र अभिलाप, जावजीव
व्रत धरे मारा राज ॥ पू० ॥ ५ ॥ दश अवस्था काम,
त्रेवीश विषय हरे मारा राज । शीलांगरथ सहस–अढार, बेठा
मुनी संचरे मारा राज ॥ पू० ॥ ६ ॥ चार दारा परिहार,
आदरे द्रव्यथी मारा राज । पर परिणतीनो त्याग, करे मुनी
भावथी मारा राज ॥ पू० ॥ ७ ॥ तजी असमाधि ठाण

समाधि दश सेवन मारा राज । तीस अबंभ मयाग, टाली शील सेवना मारा राज ॥ पू० ॥ ८ ॥ कनक भुवन जिन-राज, निपावे अभिनवो मारा राज । दिये कनक तणी कई कोड, शील अधिको हवो मारा राज ॥ पू० ॥ ९ ॥ सहस चोरासी मुनि दान, तणे फल संपजे मारा राज । करण योगे शील, पाले गृही जो भजे मारा राज ॥ पू० ॥ १० ॥ दशमे अंगे शील, तणो महातम कह्यो मारा राज । चन्द्रवर्मा नरेन्द्र, तीरथपद संग्रह्यो मारा राज ॥ पू० ॥ ११ ॥ ब्रह्मचर्य पदनी सेव, पूजन भवी आदरे मारा राज । 'धनचन्द्रसूरि' महाराज, शिव सहेजां पाथरे मारा राज ॥ पू० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीब्रह्मचर्यपदराय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१३ क्रियापदपूजा, दोहा

ध्यान क्रिया ध्यावो अमल, शमरस जलधि समान ।
क्रियामग्न मन मुनिवरा, ध्याय ध्येय शुभ ध्यान ॥ १ ॥
तजी प्रमाद दुर्ध्यानने, आतम सुमता रोप ।
क्षण क्षण माहें ध्याववुं, हृदयकमल मन गोप ॥ २ ॥

ढाल १३, आज आपें चालो सहियां, सिद्धाचलगिरि जइये रे०, ए राह

ध्यानक्रिया भजो निसदिन प्राणी, धर्मशुक्ल ध्यायीजे रे। धर्मशुक्ल ध्यायीजे वारि वारि, परमातम पद लीजे रे ॥ ध्यान० ॥ टेर ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान तजीने, शुभकरणी भवि कीजे। आर्त्त रौद्रना कारण क्रिया, पंचवीसने वरजीजे रे ॥ ध्या० ॥ ॥ १ ॥ जिनमुनि वन्दन ने गुणकीर्त्तन, विनय शील सम्पन्न। संयम सूत्रसुं रक्त मन सज, धर्मध्यान धन धन्न रे ॥ ध्या० ॥ ॥ २ ॥ खंती मुत्ति मद्दव अज्जव, जिनमतमांहि प्रधान। इत्यादिक आलम्बन लेईने, चढ़े सदा शुक्लध्यान रे। ॥ ध्या० ॥ ॥ ३ ॥ पिंडस्थादिक चार प्रकारे, कपट रहित मुनि भावे। सुमतासागर में गुणवन्ता, भवो भव कोडी खपावे रे ॥ ध्या० ॥ ॥ ४ ॥ देह रह्यो गतकर्म निजातम, चन्द्रप्रभा सम निरखे। आतम ऐश्वर्य जेह निहाले, पिंडस्थध्याने हर्षे रे ॥ ध्या० ॥ ॥ ५ ॥ योगीश्वर गुरुने उपदेशे, पदस्थध्यानने ध्यावे। हृदयकमल मन्त्राक्षर थापी, परमेष्ठी पद ठावे रे ॥ ध्या० ॥ ॥ ६ ॥ क्रियाठाण तेरने वरजी, तेर काठिया तजिये। करणसित्तरी आगल करीने, योग समाधि भजिये रे ॥ ध्या० ॥ ॥ ७ ॥ अरिहंत चार सिद्ध तिम दोय ए, एक ॐकार कहीजे। पांत्रीश शोल अने षट् पंचथी, मन्त्राक्षर ए लीजे रे ॥ ध्या० ॥ ॥ ८ ॥ अहवा लोकालोक प्रमाणे, कनक कांती मन आण।

सर्वशान्ति कर माल ठिकाणे, ध्यानो प्रवर गुणखाण रे ॥ध्या०॥
॥ ९ ॥ प्रातिहार्य आठ सहित प्रभु, समवसरण जिनचन्दा ।
तसु प्रतिमा आरोपी ध्यावे, रूपस्थध्याने मुणिंदा रे ॥ध्या०॥
॥१०॥ प्रीति भक्ति वचन असंगे, आतम परिणति सुधारो ।
विष गरल हीनादिक वरजी, तद्धेतु अमृत धारो रे ॥ध्या०॥
॥११॥ परमानन्दमयी निज आतम, सिद्धनिरंजन ध्यावो ।
रूपातीत ध्यान लय लावी, परमातमपद पावो रे ॥ध्या०॥
॥१२॥ प्रच्छन्न पाप रोगादिक शुद्धि, ध्यानपदस्थयी होवे ।
ज्ञानगीतार्थ समृद्धि वृद्धि, पिंडस्थध्याने जोवे रे ॥ध्या०॥
॥१३॥ रूपस्थध्यान लीनातम योगी, कर्म कठिण दल जीपे ।
रूपातीत ध्यान लही आतम, चिदानन्दमयी दीपे रे ॥ध्या०॥
॥१४॥ हरिवाहननृप ए पद सेवी, तीर्थंकरपद वरियो ।
'धनचन्द्रसूरि' ध्यान समाधे, ज्ञानामृत रस दरियो ॥ध्या०॥
॥१५॥

काव्य और मंत्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
'जिनपतिलकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिमत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय
श्रीक्रियापदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१४ तपःपदपूजा, दोहा

ऋद्धि वृद्धि जेहथी हुवे, करे कर्मनी हाण ।
प्रगट करे कल्याणने, तपपद पूज सुजाण ।। १ ।।
कर्म निकाचित खेपवे, लब्धि तणो भण्डार ।
गणधर आगम उपदिश्यो, तप महिमा श्रीकार ।। २ ।।

ढाल १४, त्रिताल पंजाबी, ठेका दीपचन्दी

तपपदकुं पूजो भवि प्राणी, छेदन कर्मकठिण किरपाणी ।। तप० ।। टेर ।। जेहथी विघ्न परम्परा जाये, कामतणुं बल उपशम थाये । इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र गुण गाये 'भूल' क्षमा सहसार, करे नर नार, पाहे भवपार, कर्मदल दूर हरेरी । ।। तप० ।। १ ।। सर्व मंगलमां मंगल पेलुं वर्णव गणधर ग्रन्थे कहेलुं । कर्म निकाचित पीलण केलुं 'भूल' उपशम-रस वात्र, भवतारण नाव, मुक्तिपद ठाव, थिरतापद आप वरेरी ।। तप० ।। २ ।। ते भव मुक्ति जाणे जिणन्दा, त्रण चउ ज्ञाने नियमा सुखकन्दा । ते पण आदरे कर्म खपन्दा 'भूल' तपगुणकार, जाणो निरधार, आतम हितकार, आदर तम मुक्ति करेरी ।। तप० ।। ३ ।। पूर्व-भव श्रीमल्लि जिनेश्वर, पीठ अने महापीठ मुनीसर । साधवी खखमणा तप तपी सुन्दर 'भूल' मननो दम्भ, गयो नहीं

सम्भ, किनो तप रम्भ, फल्यो नहीं साहस करेरी ॥ तप० ।
॥ ४ ॥ चउत्थभक्त मुनि कर्म खपावे, छट्ठ अट्ठम करी का
जलावे, दशम करी मुनि कर्म हठावे 'भूल' वर्ष हजार
लख कोड विचार, कोडाकोडी धार, नरक दुखक्षमन
टरेरी ॥ तप० ॥ ५ ॥ अग्यार लाख ने अस्सी हजार
पाचशो पाँच दिन ऊणा निरधार । नन्दनऋषि मासखमर
विचार 'भूल' तपी तपधाम, कीधा निज काम, पूर
अभिराम, महिमा विस्तार खरेरी ॥ तप० ॥ ६ ॥ खध
क्षमाना दरिया सुहकर, तप तापया गुणरत्न संवत्सर । घ
धन्नो अणगार दमीसर 'भूल' चउद हजार, मुनि मध्य सार
प्रशसा कार, भगवन्त मुख आप धरेरी ॥ तप० ॥ ७ ।
कर्म मर्म भजणने काज, द्विरदोपम भाख्यो जिनराज । बाह
अभ्यन्तर तप करी साज 'भूल' तजी परमाद उपशम वरसाद
अध्यातम नाद, भवि सुकठ भरेरी ॥ तप० ॥ ८ ।
तीर्थंकरपद अनुभव साधी, कनककेतु ए पद आराधी । टाले
सघली भवनी उपाधी, 'भूल' भवसतति छेद, तजी सहु खेद
आणी उमेद, 'धनचन्द्रसूरि' धुवेरी ॥ तप० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरं जयकेतन, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीतपःपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१५ गोयमपदपूजा, दोहा

दानमूल सहु धर्मनो, महिमा केरु स्थान ।
दान बीज कीर्त्ति तणो, लक्ष्मीनो फलदान ॥ १ ॥
पात्रदान शिरोमणी, गुणमणि गुणनो धाम ।
गोयमपद भवि पूजतां, लहिये अविचल ठाम ॥ २ ॥

ढाल १५, पुन्य दशा जो जागे हमारी तो ऐसे, ए राह

दान सुपात्रे दीजे प्राणी, द्रव्य भाव दोय भेद विचारी । रत्न कनक रूपा तणा भाजन, उत्कृष्ट पात्र कह्या व्यवहारी ॥ दा० ॥ १ ॥ ताम्रादिकना धातुपात्र वली, मध्यमजन भाजन गुणकारी । लोहादिक धातुना घर घर, जहन्न पात्र जघन्य हितकारी ॥ दा० ॥ २ ॥ मृणमयादिक अन्य-गृहिना, भाजन नाना भेद कहारी । कुपात्र पात्र रूपे हुवे प्राप्ति, व्याप्ति ज्ञान प्रमाण निहारी ॥ दा० ॥ ३ ॥ भावपात्र कह्या श्रीजिनशासन, विधियुत दान दिये जो भवी री । संख्य असंख्य अनन्ते फ़ल पावे, पात्रभक्ति लहे पात्र थवीरी ॥ दा० ॥ ४ ॥ यथाख्यात क्षीणमोह मुनीसर, रत्नपात्र समा गुणधारी । कनकपात्र सम अवर सवे मुनी, सम्यग् ज्ञान क्रिया अनुसारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ रजतना

श्रावक समकिती श्रांघा, लोह मट्टी सम मार्गानुसारी।
मिथ्यादृष्टि सहु मदादि पात्र सम, अवर अपात्र कह्या निर-धारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ उत्तमपात्र कह्या साधु सोभागी,
मज्झिमपात्र श्रावक घडत्यागी। अव्रति सम्यगदृष्टी जाणो,
जद्दन्नपात्र कह्या संवेग रागी ॥ दा० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्वी
सहश्रयी एक अणुव्रती, अणुव्रती सहसथी महाव्रति जाणे।
महाव्रति सहसथी गणधर जिनवर, अधिक अधिक गुणगण
पहेचाणो ॥ दा० ॥ ८ ॥ गणेश गणपति महामंगलपद,
गोयम विण नवि कोई दूजो। चौदेशो बावन गणधर
वन्दन, ए पद अन्तरयामी पूजो ॥ दा० ॥ ६ ॥ दान सर्व
में दो दान ए मोटा, अमय सुपात्र मुक्तिपद ईशा। हरि-वाहननृप ए पद सेवनथी, 'धनचन्द्रसूरि' जिनेन्द्र जगीशा
॥ दा० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्।
जिनपतित्वकरं जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय
श्रीगौतमपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

१६, जिनपदपूजा, दोहा

जिनपद पूजो भविजना, जिनपद सुगती काज।
दोष अढार रहित प्रभू, नमो नमो श्री जिनराज ॥ १ ॥

अरिहंतादिक दश तणी, वेयावच्च धरी अंग ।
निर्मल निज आतम करी, जितपद पूजो चंग ॥ २ ॥

ढाल १६, तुमे ज्ञान चारित्रना दरिया, प्रभु भवसागर....
ए राह

जो जिनपद गुणकरो वसिया, तो जिनपद पूजो रसिया । निज आं–ग–ण शम दम बाग लगाव रे गुण रसिया ॥ टेर ॥ शोल कषाय तजी जिनवरा रे, थया गुणगण अनन्त उजास रे गुण० । श्रुत ओही मनपज्जवा रे, कह्या छउमत्था जिन खास रे गु० ॥ जो० ॥ १ ॥ वीतरागभावे वध्या रे, जिनकेवली महिमावन्त रे गु० । श्रद्धाभानु रमणथी रे, श्रुतकेवली जग जयवन्त रे गु० ॥ जो० ॥ २ ॥ जिनवर सूरि वाचक मुनी रे, बाल थिविर ने गिलाण रे गु० । तपसि चैत्य श्रमण संघ तणी रे, करो वेयावच गुणखाण रे गु० ॥ जो० ॥ ३ ॥ उत्तम गुणधारी तणो रे, करे वेयावच्च सुखदाय रे गु० । पडिवाई बीजो सहु रे, पण वेयावच नहीं जाय रे गु० ॥ जो० ॥ ४ ॥ भागो पड्यो समयथकी रे, नाशे तसु चारित्र रे गु० । सुत नाशे अव– गुण थकी रे, पण वेयावच्च पवित्र रे गु० ॥ जो० ॥ ५ ॥ नीच गोत्र बांधे नहीं रे, करे ऊंच गोत्रनो बंध रे गु० । गाढकर्म शिथिला हुवे रे, कहे उत्तराध्ययने प्रबन्ध रे गु०

श्रावक समकिती पांचा, लोह मट्टी समा मार्गानुसारी । मिथ्यादृष्टि सहु मदादि पात्र सम, श्रवर श्रपात्र कह्या निरधारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ उत्तमपात्र कह्या साधु सोभागी, मज्झिमपात्र श्रावक षडत्यागी । अव्रति सम्यगद्दष्टी जाणो, जहन्नपात्र कह्या सवेग रागी ॥ दा० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्वी सहश्रयी एक श्रणुव्रती, श्रणुव्रती सहसथी महाव्रति जाणो । महाव्रति सहसथी गणधर जिनवर, अधिक अधिक गुणगण पहेचाणो ॥ दा० ॥ ८ ॥ गणेश गणपति महामंगलपद, गोयम विण नवि कोई दूजो । चौदेशो पावन गणधर वन्दन, ए पद अन्तरयामी पूजो ॥ दा० ॥ ६ ॥ दान सर्व में दो दान ए मोटा, श्रभय सुपात्र मुक्तिपद ईशा । हरिवाहननृप ए पद सेवनथी, 'धनचन्द्रसूरि' जिनेन्द्र जगीशा ॥ दा० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीगौतमपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

१६, जिनपदपूजा, दोहा

जिनपद पूजो भविजना, जिनपद सुगती काज ।
दोष अढार रहित प्रभू, नमो नमो श्री जिनराज ॥ १ ॥

अरिहंतादिक दश तणी, वेयावच्च धरी अंग ।
निर्मल निज आतम करी, जितपद पूजो चंग ॥ २ ॥

ढाल १६, तुमे ज्ञान चारित्रना दरिया, प्रभु भवसागर····
ए राह

जो जिनपद गुणकरो वसिया, तो जिनपद पूजो रसिया ।
निज आं-ग-ण शम दम बाग लगाव रे गुण रसिया ॥ टेर ॥ शोल कषाय तजी जिनवरा रे, थया गुणगण अनन्त उजास रे गुण० । श्रुत ओही मनपज्जवा रे, कह्या छउमत्था जिन खास रे गु० ॥ जो० ॥ १ ॥ वीतरागभावे वध्या रे, जिनकेवली महिमावन्त रे गु० । श्रद्धाभानु रमणथी रे, श्रुतकेवली जग जयवन्त रे गु० ॥ जो० ॥ २ ॥ जिनवर सूरि वाचक मुनी रे, बाल थिविर ने गिलाण रे गु० । तपसि चैत्य श्रमण संघ तणी रे, करो वेयावच गुणखाण रे गु० ॥ जो० ॥ ३ ॥ उत्तम गुणधारी तणो रे, करे वेयावच्च सुखदाय रे गु० । पडिवाई बीजो सहु रे, पण वेयावच नहीं जाय रे गु० ॥ जो० ॥ ४ ॥ भागो पड्यो समयथकी रे, नाशे तसु चारित्र रे गु० । सुत नाशे अव-गुण थकी रे, पण वेयावच्च पवित्र रे गु० ॥ जो० ॥ ५ ॥ नीच गोत्र बांधे नहीं रे, करे ऊंच गोत्रनो बंध रे गु० । गाढकर्म शिथिला हुवे रे, कहे उत्तराध्ययने प्रबन्ध रे गु०

ग। जो० ॥ ६ ॥ जिनवर मुख्य दश पद तणी रे, करी वेयावच मनशुद्ध रे गु० । जीमूतकेतु जिनपद लही रे, 'धनचन्द्रसूरि' सिव बुद्ध रे गु० ॥ जो० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतिल्करे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीजिनपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१७, श्रीसंयमपद पूजा, दोहा

भक्ति सहित श्री संघने, उपजावी सुसमाध ।
श्रीजिनोक्त वच युक्त अति, चउविह धर्म आराध ॥१॥
तजि इन्द्रिय आशंसना, भजी सन्तोष समाध ।
द्रव्य भाव थी पूजिये, संयमगुणे अगाध ॥२॥

ढाल १७, शीतल अन्तरजामी, ए राह

सयमपद पूजो सुखकारी, पूजो सुखकारी, पूजो सुखकारी ॥ सं० ॥ टेर ॥ असमाधिदोष जे वीश निवारी, प्रगटे गुण सन्तोष श्रीकारी सं० । दुखिया दीनादिक अनुकंपा, द्रव्यसमाधि कही जयकारी ॥ सं० ॥ १ ॥ सारणादिक कही

धर्ममां जोड़े, भावसमाधि कही निरधारी सं० । मुनिना महाव्रत श्रावकना व्रत, द्रव्य भाव धरो संयम विचारी ॥ सं० ॥ २ ॥ सप्तभंगी सप्त नय की रचना, चार निक्षेप कारण संभारी सं० । षटद्रव्य नवतत्त्व चार प्रमाणे, ज्ञेयादिक त्रय पद अवधारी ॥ सं० ॥ ३ ॥ सामायिक नवद्वारे विचारी, षट् आवश्यक करो नर नारी सं० । आगम भाषित चार सामायिक, पांच भेद संयम अविकारी ॥ सं० ॥ ४ ॥ सुख-शीला स्वछन्दाचारी, आणा भ्रष्ट मुक्तिपंथ संहारी सं० । बहुजन समचा संघ ना कहिये, संघ ते कहिये आणा अंगी-कारी ॥ सं० ॥ ५ ॥ निर्मल नाण दंसण करी संयुत, निर्मल चारित्र गुणना धारी सं० । जेहने तीर्थपति पण प्रणमे, ते संघ कहिये सकल गुण धारी ॥ सं० ॥ ६ ॥ जगपूजित श्रीसंघसमाधि, द्रव्य भाव करिये भवतारी सं० । पुरन्दरराय ए पद आराधी, 'धनचन्द्रसूरि' तीरथ अधिकारी ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीसंयमपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१८ अभिनवज्ञानपदपूजा, दोहा

अपूर्वश्रुत ग्राही करे, अपूर्व ज्ञान की सेव ।
अपूर्व आदर्शन कारणे, पूज अपूरव देव ॥ १ ॥
भवसमुद्र तारण मणी, ज्ञान यान गुणपूर ।
ज्ञानवन्धु कारण विना, ज्ञान महातम सूर ॥ २ ॥

ढाल १८, राग कल्याण-मैंने देखी नौवि रीवि०, ए राह

निरखी मैंने मक्ति युक्ति, अपूरव ज्ञान की ॥ टेर ॥ अंग अनंग सुन्दर भेद की, अंगी चंगी घनी दान की ॥ नि० ॥ १ ॥ अंग आचारंगादिक श्रुत की, अनंग पूरव आसान की ॥ नि० ॥ २ ॥ आवश्यक उत्तराध्ययनादिक की, उपांग कहिये श्रुतनाण की ॥ ३ ॥ बुद्धि के आठ गुण फूल अमूल की, माला रचो शुम घ्यान की ॥ नि०॥ ४ ॥ देशाराधक क्रिया कही मुनि की, सर्वाराधक ज्ञान की ॥ नि० ॥ ५ ॥ मुहूर्त्तकाल कही है क्रिया की, निरन्तर अनुभव मान की ॥ नि० ॥ ६ ॥ ज्ञानरहित क्रिया अज्ञान की, ज्ञान क्रिया विनु अघ ठाण की ॥ नि० ॥ ७ ॥ षोडश माहें ज्ञान क्रिया की, अन्तर खजुआ रवि मान की ॥ नि० ॥ ८ ॥ अज्ञानीसे शुद्ध क्रिया की, अनन्तगुणी ज्ञानवान की ॥ नि० ॥ ९ ॥ ज्ञानवन्त झूठ क्रिया अरोच

की, परखे निज निज स्थान की ॥ नि० ॥ १० ॥ पांच प्रकारे ज्ञान आराध की, सागरचन्द्र जिम जान की ॥ नि० ॥ ११ ॥ 'धनचन्द्रसूरि' अभिनवज्ञान की, भुवनानन्द महान की ॥ नि० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीज्ञानपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

१९ श्रुतपद पूजा, दोहा

श्रुतपद पूज्यार्थी हुवे, श्रुतपदवी श्रुत धार ।
सकल श्रेय कारण भणी, निज पर ने उपगार ॥ १ ॥
आश्रय करी श्रुत ज्ञाननो, टाली अविधि अशुद्ध ।
श्रुत अनुभवरस पीजिये, लिजीये श्रुत समृद्ध ॥ २ ॥

ढाल १९, आनन्द वधाई केवल उपन्यो रे वीर जिणंद ने, ए राह

सुणो सजन सनेहा, श्रुतपद पूजो रे प्यारा भाव से ॥ टेर ॥ अर्थथकी अरिहंतजी भाखे, सूत्र रचे गणधार ।

सूत्र कहीजे तेहने सो कांई, संघभणी उपगारजी ॥ सु० ॥ १ ॥ सूत्र रच्या गणधरतणा सो कांई, प्रत्येकबुद्ध उत्पन्न । रच्या सूत्र श्रुतकेवली सो कांई, दशपूर्वेण-अभिन्न जी ॥ सु० ॥ २ ॥ दोष बत्तीस रहित प्रभु आगम, आठ गुणे सोहन्त । सूत्र राजा सम अर्थ प्रधान छे, अनुयोग चार महन्तजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ बद्धाऽबद्ध भेदे करी सुन्दर, दोय प्रकार अनंग । द्वादशांगी महानिशीथा, बद्ध अबद्ध सुचंग जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रुतना अक्षर भणावे जेटला, तेटला वर्ष हजार । विलसी अनन्ता स्वर्गतणा सुख, भवनिधि पामे पारजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रुतज्ञाने श्रुतज्ञानी जाणे, केवली जेम पदत्थ । वाचकता माटे केवलथी, छे श्रुत ज्ञान समत्थ जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते कारण आगमनी भक्ति, द्विधा कही जिनदेव । लिखे लिखावे भणे भणावे, द्रव्य भाव करे सेव जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ सूत्रे ज्ञानाचार छे अडविध, काल विनयादिक सार । विनय न सेवे श्रुतज्ञानीनो, तो होवे अतिचार जी ॥ सु० ॥ ८ ॥ द्रव्य भाव श्रुत पदनी पूजा, कीजे भाव उदार । 'धनचन्द्रसूरि' रत्नचूड परे, तीर्थंकर पद धार जी ॥ सु० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् । जिनपतिन्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीश्रुतपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

२० तीर्थपदपूजा, दोहा

सकल जन्तु आनन्द कर, दर्शन निरमल काज ।
जिनशासन प्रभाववा, जय जय तीरथ राज ॥ १ ॥
तीर्थभणी यात्रा करे, जिनगृह प्रतिष्ठाकार ।
आचार्यादिक पद तणा, करे महोत्सव सार ॥ ॥ २ ॥

ढाल २०, वन वन ढूँढ फिरू में रन में, ए राह

तीरथपद पूजो भवि घट में, जलदघटा ध्यान रटन में ॥ ती० ॥ टेर ॥ जिनसे तरिये सो तीरथ जग में, तीरथ यात्रा करो छिन छिन में ॥ ती० ॥ १ ॥ अरिहंत गणधर तीरथ निश्चे, चउविह संघ तीरथ जगजन में ॥ ती० ॥ २ ॥ तीर्थ लौकिक अडसठ तजिये, भजिये लोकोत्तर सहजानन में ॥ ती० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव भेदे लोकोत्तर, थावर जंगम रखो जानन में ॥ ती० ॥ ४ ॥ सिद्धक्षेत्रादिक पांचे तीरथ, पांच प्रकार चैत्य चिदघन में ॥ ती० ॥ ५ ॥ उक्त ये थावर तीर्थ कहीजे, तीर्थप्रभाव करो कानन में ॥ ती० ॥ ६ ॥ जीर्ण जिनौक उद्धार करीजे, तीर्थ अमृतरस पीवो पानन में ॥ ती० ॥ ७ ॥ विहरमान जिन जंगम तीरथ, सुख संपद लहे भवि

सूत्र कहीजे तेहने सो कांई, संघभणी उपगारजी ॥ सु० ॥ १ ॥ सूत्र रच्या गणधरतणा सो कांई, प्रत्येकबुद्ध उत्पन्न। रच्या सूत्र श्रुतकेवली सो कांई, दशपूर्वेण अभिन्न जी ॥ सु० ॥ २ ॥ दोष बत्तीस रहित प्रभु आगम, आठ गुणे सोहन्त। सूत्र राजा सम अर्थ प्रधान छे. अनुयोग चार महन्तजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ बद्धाऽबद्ध भेदे करी सुन्दर, दोय प्रकार अनंग। द्वादशांगी महानिशीथा, बद्ध अनद्ध सुचंग जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रुतना अक्षर भणावे जेटला, तेटला वर्ष हजार। विलसी अनन्ता स्वर्गतणा सुख, भवनिधि पामे पारजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रुतज्ञाने श्रुतज्ञानी जाणे, केवली जेम पदत्थ। वाचकता माटे केवलथी, छे श्रुत ज्ञान समत्थ जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते कारण आगमनी भक्ति, द्विधा कही जिनदेव। लिखे लिखावे भणे भणावे, द्रव्य भाव करे सेव जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ सूत्रे ज्ञानाचार छे अडविध, काल विनयादिक सार। विनय न सेवे श्रुतज्ञानीनो, तो होवे अतिचार जी ॥ सु० ॥ ८ ॥ द्रव्य भाव श्रुत पदनी पूजा, कीजे भाव उदार। 'धनचन्द्रसूरि' रत्नचूड परे, तीर्थंकर पद धार जी ॥ सु० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम्।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसत्पदसेवनम् ॥ १ ॥

सुन्दर आ'दरी, कीजे उजमणुं वली तपफल वढ़वा काज । एथी आभव परभव नर सुर सुखपद अनु'भवी, लेश्यो मंगल महोदय सादि अनन्त सुखरा'ज ॥ में० ॥ ३ ॥ श्रीसोहमगण में तपा विरुद्धर रा'जीया, श्रीजगच्चन्द्रसूरि पाट परंपर धा'र । श्रीदेवसूरगच्छ दिव्य रत्नत्रयी धा'रका, श्रीरत्नसूरि वर गुरुगच्छ गुण सिणगा'र ॥ में० ॥ ४ ॥ तस पाट परंपर क्षमा देवेन्द्र कल्या'णना, सोहे सूरि गणधारी प्रमोदविजय प्रधा'न । तस पट पदपंकज क्रियोद्धार करता गुणी, श्रीविजयराजेन्द्रसूरि गुरुगच्छ गुणनी खा'ण ॥ में० ॥ ५ ॥ तस पदकज पाटे क्रियाशुध्युपका'रका, राजे गाजे विजये 'धनचन्द्रसूरि' राज । श्रीखाचरोद नगरे संघ तणे आग्रहे करी विरची पूजा पामी मंगलमाल सम्राज ॥ में० ॥ ६ ॥

सम्वत् सुमति[५] पद्म[६] ने सुविधि[९] ऋषभ[१] जिणेश'ना, चरणकमल में रसिया वसिया चारो मास । श्रीसिद्धचक्रनी भक्ति मासनी पूनमें, पूर्ण भाव पूजा रची मन पाम्यो हुल्लास ॥ में० ॥७॥ जे भवि विंशति पूजा भणशे सुणशे गावशे, तस घर कोड़ वधायो वढ़शे सवि सुख साज । इणभव परभव स्वर्गतणा सुख भोगवी, लेशे अविचल पदवी सादि अनादि राज ॥ में० ॥ ८ ॥

तानन में ॥ ती० ॥ ८ ॥ चउविह संघ कह्यो जंगम तीरथ, अष्ट प्रभाविक कह्यो शासन में ॥ ती० ॥ ६ ॥ गुण अड़ता-लीश जाणी गुणवन्ता, तीर्थपति नमे समवसरन में ॥ ती० ॥ १० ॥ पंचरंगी रयणना थाल भरावो, तीर्थ वधावो गुण गानन में ॥ ती० ॥ ११ ॥ मेरुप्रभ हुवो तीर्थंकर, 'धन-चन्द्रसूरि' तीरथ ध्यानन में ॥ ती० ॥ १२ ॥

काव्य और मंत्र

सकलकर्मगिरीन्द्रविदारकं, सदनुभावमहोदयकारकम् ।
जिनपतित्वकरे जयकेतनं, कुरुत विंशतिसुपदसेवनम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीतीर्थपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

कलश, माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे०, ए राह

में तो गाया गाया वीशथानकपद भा'वसुं, जेथी प्रगट्यो प्रगट्यो पुण्योदय परभा'त । वाजा वाज्या ओच्छव आनन्द रंग वधा'मणा, आंगण बूठ्यो बूठ्यो अमिरस नो वरसा'त ॥ में० ॥ १ ॥ हुवा चोवीश जिनपति वर्त्तमान वलि था'यसे, ते ते सम्यग्भावे वीशथानकपद सा'ध । बेसी कनक सिंहा-सन समवसरण दिये दे'शना सेवो वीशथानकपद भविजन गुणह अगा'ध ॥ में० ॥ २ ॥ सहु तपमां मोटुं तप ए

सुन्दर आ'दरी, कीजे उजमणु' वली तपफल वढ़वा काज । एथी आभव परभव नर सुर सुखपद अनु'भवी, लेश्यो मंगल महोदय सादि अनन्त सुखरा'ज ॥ मैं० ॥ ३ ॥ श्रीसोहमगण में तपा बिरुदधर रा'जीया, श्रीजगच्चन्द्रसूरि पाट परंपर धा'र । श्रीदेवसूरगच्छ दिव्य रत्नत्रयी धा'रका, श्रीरत्नसूरि वर गुरुगच्छ गुण सिणगा'र ॥ मैं० ॥ ४ ॥ तस पाट परंपर क्षमा देवेन्द्र कल्या'णना, सोहे सूरि गणधारी प्रमोदविजय प्रधा'न । तस पट पदपंकज क्रियोद्धार करता गुणी, श्रीविजयराजेन्द्रसूरि गुरुगच्छ गुणनी खा'ण ॥ मैं० ॥ ५ ॥ तस पदकज पाटे क्रियाशुध्युपका'रका, राजे गाजे विजये 'धनचन्द्रसूरि' राज । श्रीखाचरोद नगरे संघ तणे आग्रहे करी विरची पूजा पामी मंगलमाल सम्राज ॥ मैं० ॥ ६ ॥ सम्वत् सुमति[५] पद्म[६] ने सुविधि[९] ऋषभ[१] जिणेश'ना, चरणकमल में रसिया वसिया चारो मास । श्रीसिद्धचक्रनी भक्ति मासनी पूनमें, पूर्ण भाव पूजा रची मन पाम्यो हुल्लास ॥ मैं० ॥७॥ जे भवि विंशति पूजा भणशे सुणशे गावशे, तस घर कोड़ वधायो वढ़शे सवि सुख साज । इणभव परभव स्वर्गतणा सुख भोगवी, लेशे अविचल पदवी सादि अनादि राज ॥ मैं० ॥ ८ ॥

श्री अष्टप्रवचन माता पूजा विधि—

त्रिगडा और उसके दहिने, बाये तथा सामने तीन बाजोट रखना। तीनों बाजोट ऊपर मध्य भाग में कुंकुम का स्वस्तिक करके, बाजोट के पायो से मौली बाधके, बगल के बाजोट पर श्रीफल और सामने के बाजोट पर अष्टमंगल स्थापन करना। फिर एक बड़े पाट पर सदस श्वेतवस्त्र बांध कर अखंड चावल से ८, या २४ स्वस्तिक वाला मंडल बनाना और धूप दीप करना। बाद त्रिगडा में केसर का स्वस्तिक करके अखंडाक्षत, सोपारी और रूपानाणा मेलकर धातुमय पंचतीर्थी, या चोवीसी तथा उसके सामने सिद्ध-चक्र गट्टा स्थापन करना, उसके जिमने भाग में अखंड दीपक, धूप रखना। जलयात्रा की विधि से स्नान मज्जन और शुद्ध वस्त्र पहिरी हुई पांच कन्या, या चार मावितरवाली स्त्रियों से पांच कलश जलाशय से भराकर मंगा के पंचामृत तैयार करना।

स्नात्रपूजा भणाये बाद आठ स्नात्रियाओं को प्रथमपूजा— में पंचामृतभृत आठ कलश, द्वितीयपूजा–में घिसे हुए केसर, चंदन की आठ कटोरियाँ, तृतीयपूजा—में सुगंधी फूल, चतुर्थपूजा— में धूप, पंचमपूजा—में आठ दीपक, षष्ठपूजा—में चावल से भरी हुई आठ रकेबियाँ, सप्तमपूजा—में नैवेद्य से भरी हुई आठ थालियाँ और अष्टमपूजा—में विविध फलों की आठ छाबें लेकर खड़े रहना। प्रतिपूजा में ढाल और काव्य-मंत्र कहे बाद क्रमशः १ कलश ढोना, २ केशर चंदन से पूजा करना, ३ सुगंधी फूल चढाना, ४ धूप उखेवना, ५ दीपक रखना, ६ चावलों के आठ स्वस्तिक करना, ७ नैवेद्य चढ़ाना, और ८ फल ढोवना। अन्त में बाजते गाजते
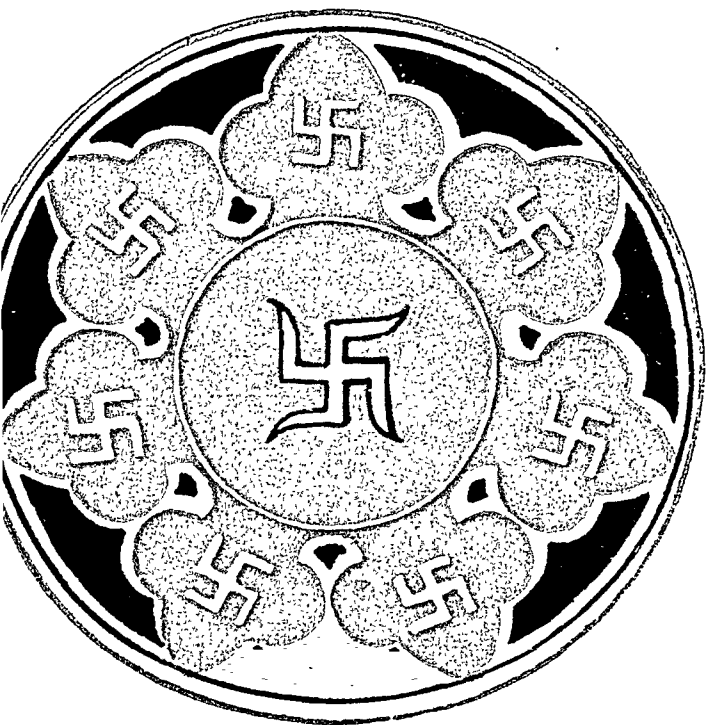
८ श्रीअष्टप्रवचनमातापूजा—मंडल.

अष्टमंगल की थाली पूजा भणाने वाले के घर ले जाके, वापिस लाके, प्रभु के जिमने तरफ रखके और पूजाकलश भणाकर, आरति मंगल दीपक उतारना। पूजा भणानेवाले को प्रतिपूजा में निछरावल करना और पूजा समाप्त होने बाद श्रीफलादि प्रभावना और स्वामिवात्सल्य यथाशक्ति करना चाहिये।

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी चरित

श्रीअष्टप्रवचन माता पूजा

१ इर्यासमितिपूजा, दोहा

प्रणमुं संखेश्वर प्रभु, प्रणमुं व्हाला वीर ।
प्रणमुं प्रवचन मातने, तरवा भवजल नीर ॥ १ ॥
समिति गुप्ति समभवा, विरच्या राग रसाल ।
प्रवचन पूजा प्रेम थी, भणतां मंगलमाल ॥ २ ॥
ईरिया भाषा एषणा, आदान पारिठ पेख ।
मन वच काया अष्ट ए, प्रवचन माता लेख ॥ ३ ॥
अर्हत आनन ओपती, नमतां नित नवनिद्ध ।
गणधर गूंथे ग्रन्थमां, लेवा समकित ऋद्ध ॥ ४ ॥
पूर्व चौदनो मात ए, आगम अगम अगाह ।
पद्मद्रहथी जिम वहे, गंग तरंग प्रवाह ॥ ५ ॥
समिति पांचे संग्रही, काज करे अणगार ।
काज विना मुनिराजने, गुप्ति गणो सिणगार ॥ ६ ॥
सुखदायक नायकनीलो, खायक श्रीमहावीर ।
अष्ट प्रकारे अरचिये, ध्वजा सहित धरी धीर ॥ ७ ॥

न्हवण[1] विलेपन[2] सुमन[3] ने, धूप[4] दीप[5] अक्षत[6] सार ।
नैवेद्य[7] फल[8] जिन जानिये, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ८ ॥
भावे भवि भणावशे, प्रवचन पूजा आज ।
सूरिधनचन्द्र सुधारशे, सर्व काज जिनराज ॥ ६ ॥
ईरियासमिति ओपता, सूरि वाचक मुनि ईश ।
श्राद्ध करे पंचामृते, जलपूजा जगदीश ॥ १० ॥

ढाल १, सुन्दर सौभागी नाम जपीश, ए राह

ईरिया समिति धारी, जिनजी जयकारी । प्रीते पूजा तारी, सहुने सुखकारी ॥ टेर ॥ सर्व सिद्धान्त समास विचारो, ईरिया समिति जे अणगारो । षट् निक्षेपा ने कारण चारो, शुद्ध करी निज आतम तारो, आचारांग अधिकारो ॥ जि० ॥ प्री० ॥ १ ॥ आडी अवली नजर निवारी, धूंसर मापे चालवुं धारी । पंचेन्द्रिय वध संपरायनी टारी, कही किरिया इरियावहि सारी, भगवती भेदे भारी ॥ जि० प्री० ॥ २ ॥ वरदत्त मुनिवर सुमति सारी, इन्द्र वखाण करे भवि भारी । ए मुनि नित्य नमो नर नारी, पर्व पर्युषणे वातज प्यारी 'सूरिधनचन्द्र' जितारी ॥ जि० प्री० ॥ ३ ॥

ढाल २, अजर अमर अरिहंत आणा, ए राह

वीरजिनेश्वर वचन रचन गुरु गौतम गणिये । ईरिया समितिए चरण करण भवि भावथी भणिये ॥ टेर ॥ 'हीँच'—

गौतम गोचरी आविया रे लोल, यति एमंत मन भाविया रे लोल। भला भोजन वहोराविया रे लोल, साथे साथे सिधाविया रे लोल ॥ १ ॥ 'ठेका-हिंच'—

गुरुजी प्रीते पकडुं भार के, किरपा कीजिये रे लोल।
बालक ए नहीं श्रम आचार के, दीक्षा लीजिये रे लोल॥
गुरुजी आपो दीक्षा सार के, रंकने रीझिये रे लोल।
बालक वीरवाणी धरी प्यार के, प्रीते पीजिये रे लोल॥ २॥
'साखी'—

दीक्षा लीधी दीपती, तजी सकल संसार।
वीरे वड़ो वखाणियो, अइमुत्तो अणगार॥ १॥

छठ्ठे वरस करी आतुरी रे लोल, वीर वचन वड़ी चातुरी र लोल। पाणीमें तारी पातरी रे लोल। पाणीमें तारी पातरी रे लोल, मुक्ति वर्या खरी खातरी रे लोल ॥ ३॥
'ठेका-हींच'—

भवियाँ अइमुत्तो अणगार के, सार गवेखिये रे लोल।
श्रावक इरियासमिति आज के, प्रीते देखिये रे लोल॥
भवियों धव धव चाले चाल के, लंपट लेखिये रे लोल।
श्रावक दसवैकालिक साख के, दृष्टे देखिये रे लोल॥ ३॥
'चलत'—

सेवा सुरतरु सभी संसारे फली फली, 'सूरिधनचन्द्र' नमो नेहथी लली लली ॥ वीरजिनेश्वर वचन रचन गुरु गौतम गणिये । इरिया समितिए चरण भरण भवि भावथी भणिये ॥ ५ ॥

ढाल ३, लेइश संजम गृहस्थपणा में, ए राह

छो रंग रसिया अलवेला अणगार जो, संसारे छांड़ी रे कंचन कामनी । पर उपकारी सुमतिना सिणगार जो, जप-माला जपंता रे जिनवर नामनी ॥ छो० ॥ १ ॥ छो मनमोहन मुनिवर हैया हारजो, सेवा तो सांची रे सुन्दर स्वामनी । वीर वेशे वरजी तें विकथा चार जो, तृष्णा तें त्रोड़ी रे तन धन धामनी ॥ छो० ॥ २ ॥ वावीश वलिया जीत्या महा भुंझार जो, बलिहारी तारी रे तारी हामनी । इरिया समिति आवश्यक में अधिकार जो, मौनपणे मारगड़े वरजे जामनी ॥ छो० ॥ ३ ॥ स्नेहे सुणतां श्रावक समझे सार जो, इरिया समिति अर्चा ठरवा ठामनी । 'सूरिधनचन्द्र' सुबोध सदा सुखकार जो, पहेली आ पूजा रे गाई शिव-गामनी ॥ छो० ॥ ४ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातसुखाकरं, चरणसंवरसुनुगुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो—रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

२ भाषासमितिपूजा, दोहा

भाषासमिति मुनिवरा, बोले वचन विचार ।
जिनवर केसर चंदने, दूजे श्रावक सार ॥ १ ॥

ढाल ४, सूरि शिव वरिया रे, सूरि शिव०, ए राह

मुनि मन वसिया रे मुनि मन वसिया, संसार छोडीने थया शिव रसिया ॥ टेर ॥ प्रश्नव्याकरण प्रीते पेखो, भाषासमिति वान । अशि तरहना झूंठ निवार्या, विश्वविषे विख्यात ॥ मु० ॥ १ ॥ मोह मान अरु माया वरजे, वरजे विकथा हास । क्रोध लोभ ने भय पण वरजे, वरजे वनितावास ॥ मु० ॥ २ ॥ उपयोगथी अवसर देखी, बोले वचन विचार । कालो काल कही छे किरिया, उत्तराध्ययन अधिकार ॥ मु० ॥ ३ ॥ तपस्याये तन खूब तपावी, तज्या राग ने रीष । मुनिवर तारी जाउं बलिहारी, छे तुज चरणे शीश ॥ मु० ॥ ४ ॥ दिन में भाषा दोष पीलरी, दशवैकालिक देख । 'सूरिधनचन्द्र' वर्या शिवनारी, प्रीते आगम पेख ॥ मु० ॥ ५ ॥

ढाल ५, माता मोरादेवीना नन्द, ए राह

वाह वाह व्हाला वीरजिणंद, जाउं वारी शिवं प्यारी

सारी तुमे वर्याजी । धन्य धन्य धारु धन्य मुणिंद, व्रतधारी नर नारी तारी तुमे तर्याजी ॥ टेर ॥ काम न क्रोध न मोह न लोभ न, राग न द्वेष न नाम । एवा मुनिवर भावे भेटी, मूको मननी माम ॥ वा० ॥ १ ॥ हरखी हैये सनमुख जइए, धारी गुरु गुण धाम । सुबोध लइये पावन थइये, सुधरे आतम काम ॥ वा० ॥ २ ॥ भाषा चार भणे मुनि कारण, हइये राखी हाम । आराधक महावीरे आख्या, पन्नवणा अभिराम ॥ वा० ॥ ३ ॥ संयम धारी समिति सेवत, रहेवत गुप्ति गाम । बेठत उठत खावत पीवत, शोधत सिद्धपुर ठाम ॥ वा० ॥ ४ ॥ त्रिशलानंदन त्रिजगवन्दन, सोहम शिववधु स्वाम । पाटे पूज्य थया थाशे ते, जग जनने विश्राम ॥ वा० ॥ ५ ॥ निग्रंथ नयने निरखी नहीं ले, निशियाभाषा नाम । 'सूरिधनचन्द्र' सुभगवति भाषे, दीक्षित सांचा दाम ॥ वा० ॥ ६ ॥

ढाल ६, कहो तो गोरि तने कद़लां घड़ावुं, ए राह

भाखी भाषासमिति सारी रे, मुनिवर नित्य नमो नर नारी ॥ टेर ॥ आवी शुं एवी भाषा तो भारी, सारथीने कही सारी रे ॥ भा० ॥ १ ॥ रायपसेणी जिन सूत्रमां सारी, केशी गणधर कहे धारी रे ॥ भा० ॥ २ ॥ सावद्य वाणी तो वीरे निवारी, भगवति भेदे भारी रे ॥ भा० ॥ ३ ॥

महाशतकजी श्रानके सारी, लीधी श्रालोयण धारी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ कड़वा कथननी कथा अकारी, सूत्र उपासके सारी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ व्यवहार भाषा कड़वी अकारी, काम पड्या मणे भारी रे ॥ ६ ॥ संगतमुनिनी वात विस्तारी, पर्व पर्युषणे प्यारी रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ 'धनचन्द्रसूरि' सुभाषानी सारी, बीजी पूजा बलिहारी रे ॥ मा० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातसुखाकरं, चरणसंवरसूनुगुणाकरम् ।
'जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो–रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

३ एषणासमितिपूजा, दोहा

निरखो समिति एषणा, पिंडादिक पण चार ।
जिनवर पूजी फलथी, श्रावक लहे भव पार ॥ १ ॥

ढाल ७, रंजन मन गंजन, ए राह

दोष दाखव्या छे एमां आहारना अति, वीरनी वाटे पूज्यने पाटे मुनिने माटे त्रीजी सुमति । दोष दाखव्या छे

एमां आहारना अति, प्रीते रीते नित्ये दंभ ने दमाम तजीने तमाम । करे शुभ काम साधे सुगति, दोष दाखव्या छे एमां आहारना अति ॥ १ ॥ साखी-गोरीने गुणवान गणिये, गंदकीनो गाडवो । साधुने सेवीने लेवो, मोक्ष मोटको लाड़वो ॥ २ ॥ आधाकर्मी आहार साधु, खंत लेवो खालिये । कर्म बांधे आठ लेत्ता, भगवतिमां भालिये ॥ ३ ॥

एषणा समिति भेदे त्रणथी थती, गवेषणाए ग्रहणेषणा बे, भोगेषणा ते पिंडनिर्युक्ति, दोष दाखव्या छे एमां आहारना अति । वस्त्रे पात्रे पेखो उपधि सज्भाय देखो दोष जाय, साधु सुखी थाय भालो भगवति । दोष दाखव्या छे एमां आहारना अति ॥ ४ ॥ साखी-उद्‌गम ए उत्पादन, देनार ने लेनारना । गवेषणा बत्रीस गणिये, दोष एतो आहारना ॥ ५ ॥ ग्रहणेषणा दश दोष मिश्र, पंच परिभोगेषणा । साधु ने सुडताली टाली, आहार लेवो एषणा ॥ ६ ॥

'धनचन्द्रसूरि' धन्य धारो अवनि पर यति, दोष दाखव्या छे एमां आहारना अति ॥ ७ ॥

ढाल ८, थया छो रे अम सफल दिवस, ए राह

थया छो रे पति मुनिवर मारा; मुक्तिवधु वरवा ॥ टेर ॥ दुगुंछ कुलना गोचरी वरजी, निशीथ नयन निहाल । वीतरागे. कह्युं सागे, चित्त लागे, मुनि आगे, वीर वचन

मुनि जाण तुमारे अवर नथी परवा ॥ थ० ॥ १ ॥ पूर्व अने पश्चा कर्म वरजे, आचारांग अधिकार । ध्यानी धारे, मद मारे, चित वारे, तरी तारे आ ससारे मुनिवर मारग आव्या अनुसरवा ॥ थ० ॥ २ ॥ चलिता रहने धातुर वरजे, प्रवचन सारोद्धार । शिरताजे, जिनराजे, कह्युं आजे, मुनि काजे, एवा मुनिना चरण कमलमां दुख दूरे करवा ॥ थ० ॥ ३ ॥ अविचल आठे प्रवचनमाता, जे पूजे नर नार । अष्ट सिद्धि, नव निद्धि, पूजा किद्धि, तिणे लिद्धि, 'सूरिधनचन्द्र' गणो गुरु नावा भवदरिये वधु वरवा ॥ थ० ॥ ४ ॥

ढाल ९, बाणु लक्ष मालवाना छो स्वामी, ए राह

आज दाखलो साधुने सूरिजी देवो, मुनिढढण मुक्तिनो मेवो रे ॥ टेर ॥ पहेलो घेवरियो साधु पकाये, लीधो क्रोधेथी पिंड कहेवाये; सारा साधुथी केम सहेवाये रे ॥ आ० ॥ १ ॥ बीजो सेवइयो साधु संभारो, अभिमानें लीधो पिंड प्यारो, खरा साधुने लागे ए खारो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ त्रीजो अषाढभूति अणगारो, सज्या मायापिंडे सिण-गारो; एथी निग्रथनो पथ न्यारो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ चोथो केसरियो साधु कहेवाणो, शुओ लोभेथी पिंड लेवाणो; कोण कहेशे साधु तेने शाणो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोभ केवो, एनो दाखलो अवलोक्या जेवो, सारा

साधुने लक्षमां लेवो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ टले पूजाथी तेर टंटाला, मले मुक्ति महेले शिव वाला; भावे भेटी वरो वरमाला रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रीजी पूजानी त्रीजी समिति, ऋषि ढंढणे ढूंढी सुरीति; पूरी 'धनचन्द्रसूरि' ने प्रीति रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातसुखाकरं, चरणसंवरसूनुगुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो-रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

४ आदाननिक्षेपणसमितिपूजा, दोहा

समिति शुभ निक्षेपणा, निरखे मुनिवर नीत ।
जिनवर पूजा धूपनी, रूड़ी श्रावक रीत ॥ १ ॥

ढाल १०, छो जगजीवन जयकारी, ए राह

करे पडिलेहण जे प्यारी, ते मुनिवरनी वलिहारी ॥ टेर ॥ उपधि जोवी अणगारे, प्रीतेथी द्वितीय प्रकारे । ते उत्तराध्ययन अधिकारे—अणगार, वात विचार, सुणी ले सार, खलकं छे स्वारी ॥ ते० ॥ १ ॥ उपग्रहिक ओघादिक

विचारो, ओधिक पण गएवो प्यारो । दंडादिक धार विचारो—मन धार, चौद आगार, पलेवे प्यार, धीरजने धारी ॥ ते० ॥ २ ॥ उपगरण उठावे रीते, देखे शुभ दृष्टे नित्ये । पूजे ओघाथी प्रीते-छे सार, मुनि अवतार, नमो नर नार, विषयने वारी ॥ ते० ॥ ३ ॥ पडिलेहण पचवीस प्यारी, निग्रंथे नित्य निवारी । ते पूज्य परिग्रह धारी-खरे खात, व्याकरण वात, प्रश्न प्रख्यात, गौतम गणधारी ॥ ते० ॥ ॥ ४ ॥ 'धनचन्द्रसूरि' सुखकारी, विधि पडिलेहण धारी । नेहे निरखो नर नारी—आचार, मुनिनो सार, करी निर्धार, वरे शिवनारी ॥ ते० ॥ ५ ॥

ढाल ११, जय जय वंदन त्रिजग०, ए राह

जयकर जिनवर सुखकर मुनिवर, पडिलेहण गणिये गुणकार ॥ टेर ॥ पडिलेहण करे सांज सवारी, मौनपणे मुनिवर मद मारी । उत्तराध्ययनथी उर उतारी, अनुसरशे ठरशे अणगार ॥ ज० ॥ १ ॥ काम पडचे काइ वस्तु एवी, उपयोगे लेवी ने देवी । अर्हंतनी आणा गण एवी, संभारे संयम सुखकार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रेणिकराजा समक्ति धारी, संप्रतिराये घात विचारी । कुमारपाले उर उतारी, जिनपूजा जनने जयकार ॥ ज० ॥ ३ ॥ आ पडिलेहण पूजा एवी, पदवी सुणवी सुरतरु जेवी । संयम

साधी शिववधु लेवी, 'सूरिधनचन्द्र' महा मनुहार ॥ ज० ॥ ४ ॥

ढाल १२, लींबडो ऊग्यो चुँ घाला, ए राह

भावथी पूजा भणावता, श्रावको सुणे सूरीश्वर वारता । गुरुना गुण गणावता, श्राविका सुणे संसार असारता ॥ भा० ॥ सूरिने सूत्र व्यवहारमां, राखवा वस्त्रो वधारे वारता । वापरे वस्त्र अधिक जो, दंड देइ सूरि शिष्योने सुधारता ॥ भा० ॥ २ ॥ प्रीतथी गुप्त पलेवता, क्रोध मान माया मुनि मद मारता । कुमति दूरे करावता, सुमति सहुने सूरिजी वरावता ॥ भा० ॥ ३ ॥ आदानभंडसुमति सुणावता, श्रावको वीरवचन भावता । गुणी मुनि ग्रंथे गणावता, भावथी भवि भितर भिंजावता ॥ भा० ॥ ४ ॥ दांडिया रास रमाडता, चूंपथी चोथी पूजाए संभारता । दाखलो साधु सोमिलनो, ध्यानमां 'धनचन्द्रसूरिजी' धारता ॥ भा० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातगुणाकरं, चरणसंवरसनुगुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो−रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

५ पारिस्थापनिकासमितिपूजा, दोहा

समिति पारिठावणी, परठो परठन योग्य ।
दीपकपूजा जिन कही, करवी श्रावक योग्य ॥ १ ॥

ढाल १३, सुणो अलवेली आ वाणी, ए राह

निरखो निर्मथो नर नार, एतो आलमना आधार । पेखी पांचे समिति सार, प्रीते पाम्या भवजल पार ॥ नि० ॥ १ ॥ पारिठावणिश जे पंचम, समिति पेखी सारी । हुं बलिहारी मुनिवर तारी, हारी कुमति नारी ॥ नि० ॥ २ ॥ दोष दाखव्या दश ठेकाणे, भणतां मुनिवर भावे । परठववानी विगते विधि, उत्तराध्ययनमां आवे ॥ नि० ॥ ३ ॥ सार विधि परठववानी, स्याद्वाद समजावे । अल्पमतिने अचरिज लागे, सुणी रहेवुं समभावे ॥ नि० ॥ ४ ॥ संसारी घर स्मशाने, निशीथमां ना कहावे । दशवैकालिक हा दाखे छे गुरुगम विरला पावे ॥ नि० ॥ ५ ॥ भणवशे भावे पूजा, भाविक भाग्य विशाला । 'सुरिधनचन्द्र' सुधारी श्र भव, वरे विजय वरमाला ॥ नि० ॥ ६ ॥

ढाल २४, गुलगेंदा बन जाऊंगी, ए राह

गुरु ज्ञानी गुण गाऊंगी, गुरु ज्ञानी गुण गाऊंगी, धर्म धोरी धारीने गुरु ज्ञानी० ॥ टेर ॥ अनापात संलोकसे आते अना०, दश दिखाया दोष परठण का में पाऊंगी ॥ गु० ॥ १ ॥ आचारांग में परठण विधि आचा०, वीरे वखाणी वांके चरणे चित लाऊंगी ॥ गु० ॥ २ ॥ सचित परठण आवश्यक पेखो सचि०, सच्चा सुनावे वांका वच्चा बन जाऊंगी ॥ गु० ॥ ३ ॥ धन्य दिवस धन्य मास मानुंगी धन्य०, मुक्ति मिलावे ऐसा मुनि जब पाऊंगी ॥ ॥ गु० ॥ ४ ॥ भवसिंधु तिर लो भवि निग्रंथ नावा भवसिं०, 'सूरिधनचन्द्र' ध्यानी तिर्या तिर जाऊंगी ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥

ढाल १५, एवा नंदकुंवरशुं नेह, ए राह

व्हाला मुनि मुख वरसे नेह, भींजे भवि जातडली। मारे निग्रंथ नरशुं नेह, रमुं दिन रातड़ली भीं० ॥ टेर ॥ चोवीस मंडल ऊपर, कथ कही छे सारी रे। सुव्रतसूरिनो क्षुल्लक मुनिवर, लेजो ध्याने धारी रे ॥ भीं० ॥ १ ॥ परठववानी पूरी रचना, पारिठावणी पेखो रे। निग्रंथनो छे पंथज न्यारो, ग्रंथज न्यारो देखो रे ॥ भीं० ॥ २ ॥ प्रवचनमाता अष्ट अनुपम, पूरण पुण्ये पामे रे। आ संसारे

सुरतरु सरिखी, विघन जन मना वामे रे ॥ भी० ॥ ३ ॥ नवे निधि ने अष्ट सिद्धि, नित्य निरोगी काया रे । केसर कस्तूरी चदन से, जे पूजे जिनराया रे ॥ भी० ॥ ४ ॥ पंचमी पूजा प्रीते भणिये, सुणिये सहु नर नारी रे । 'सुरि-धनचन्द्र' वरो शुभ शिवनी, मूरति मगलकारी रे ॥भी०॥५॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातसुखाकरं, चरणसवरसूनुगुणाकरम् । जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो–रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

६ मनोगुप्तिपूजा, दोहा

मनगुप्ति मुनिवर करे, मद्दीमडल मनुहार ।
श्रावकने जिनवर कही, अक्षतपूजा सार ॥ १ ॥

ढाल १६, आवी ओपावी छे आज, ए राह

जिनशासनना सिणगार, मुनि मदिर रहेजो । इम बोले सुमति अणगार, कुमति घर पाय न देजो ॥ टेर ॥ 'साखी'–;

सुमति साथो सर्वदा, कुमति काढो बहार । उत्तराध्य-यनमा गुप्तिना, चित चिंतवो चार प्रकार ॥ सु० ॥ १ ॥

सत् असत् सत्याऽसत, असत्यासत्य विचार । सत् असत् मन अंवचन, चोथो आदेश निर्देश सार ॥ मु० ॥ २ ॥ स्वामी रोको सर्वदा, सरंभ समारंभ सार । आरंभ कदिय न आदरो, व्हाला लागशो हैयाना हार ॥ मु० ॥ ३ ॥ त्रिभुवनने तारी तर्या, अलबेला अणगार । सुमति सती नवि छोड़शो, स्वामी शासनना सिणगार ॥ मु० ॥ ४ ॥ सेवा समति गुप्तिनी, निग्रंथ निरखे नित्त । श्रावको भावे भणावशे, पूजा धनचन्द्रसूरिसुं प्रीत ॥ मु० ॥ ५ ॥

ढाल १७, शुं शासनना सिणगार छ ? हा हा हा हा, ए राह

शुं सुमति सूरि सिणगार छे ?, हां हां हां हां, शुं, गुप्तिगुणे अणगार छे ?, हां हां हां हां ॥ टेर ॥ चोलपटो पहेरी चादर ओढी, ओघो राख्यां सुख सार छे ?, ना ना ना ना । शुं माथु मूड्ये भव पार छे ?, ना ना ना ना ॥ शुं० ॥ १ ॥

'साखी'—

मनसुं बांधी छोड़िया, दुखना दलियां देह ।
मुक्ति लीधी मुनिवरे, गुप्तिनो गुण एह ॥ २ ॥

प्रश्नचन्द्रऋषि पंडित पूरा, उपदेशमाला आधार छे ?, हां हां हां हां । शुं संजम खांडानी धार छे ?, हां हां हां हां

ना ॥ शुं० ॥ ३ ॥ विद्या भएया भले काशीमां खासी, संस्कृतथी शिवनार छे ?, ना ना ना ना। शुं प्राकृतथी बेडो पार छे ?, ना ना ना ना ॥ शुं० ॥ ४ ॥

'साखी'—

पंच महाव्रत पालवा, पंच समिति साथ ।
गर्व तजी गुप्ति ग्रहे, ए निर्ग्रंथ नरनाथ ॥ ५ ॥

निर्ग्रंथ पथनो ग्रंथ छे न्यारो, 'धनचन्द्रसूरि' आधार छे ?, हां हां हां हां। होंमीला हैयाना हार छे ?, हां हां हां हां ॥ शुं० ॥ ६ ॥

ढाल १८, वाह वाह म्हालां वरिया छे, ए राह

मुनि मैं तो तिर्यां हु तेरे लिये, तेरे लिये तेरे गुण के लिये। तात मैं तो तिर्यां हु तेरे लिये ॥ १ ॥ जिनवर वानी तेने जनाई, ग्रंथे गिनाइ गुरु मेरे लिये। तात मैं तो तिर्यां हु तेरे लिये ॥ ते० ॥ २ ॥ मेरे खातिर सच्ची समिति सुनाई, गुप्ति गिनाइ गुरु मेरे लिये ता० ॥ ते० ॥ ३ ॥ पर्व पर्युषण वाता बनाई, मुनि कोंकन कहा मेरे लिये ता० ॥ ते० ॥ ४ ॥ छट्ठी पूजा भवि भावे भनाई, नाथ नजर कर मेरे लिये ता० ॥ ते० ॥ ५ ॥ 'सूरिधनचन्द्र' ने साची सुनाई, समिति गुप्ति सवि मेरे लिये ता० ॥ ते० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुगातसुखाकरं, चरणसंवरसद्गुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो–रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

७ वचनगुप्ति पूजा, दोहा

वचनगुप्तिथी विश्वमां, वरजी वचन व्यापार ।
श्राद्ध करे नैवेद्यनी, जिनवर पूजा सार ॥ १ ॥

ढाल १९, सीयल सोभागी ने गुणना रागी, ए राह

मन मंदिरमां मुनिवर वसिया, रसिया रमजो रंगे रे । गुप्ति ग्रहीने ज्ञान तुरंगे, चढ़िया छो चित्त चंगे रे ॥ म० ॥ १ ॥ गिरुआ गणधर गुप्ति वचनना, चार प्रकार जतावे रे । सत्य वचन गुप्ति गण पहेले, बीजे असत्य बतावे रे ॥ म० ॥ २ ॥ सत्याऽसत्य वचननी वृष्टि, त्रीजे ताल लगावे रे । असत्यासत्य गुप्ति वचन ते, प्रकार चोथो कहावे रे ॥म०॥३॥ दोष दाखव्या सावद्य भाष्यां, मृषावाद सहु मेटो रे । मुनिवर मौन वरे उत्सर्गे, भावे भवगति भेटो रे ॥ म० ॥ ४ ॥ गुप्ति वचन गुरु पूजा गणिये, सुणिये सहु नर नारी रे । 'सूरिधन-चन्द्र' जिनागम साखे, समकितनी बलिहारी रे ॥ म० ॥५॥

ढाल २०, सुरिधनचन्द्र महाराजे, ए राह

सूरि वाचक सुसाधुने, नमो नेहे गुरु धारी । वचनगुप्ति विवेकी जे, वर्या तेने जाउं वारी ॥ टेर ॥ मुनि विश्वे गणया मोटा, वचन ए वीरना व्हाला । भर्यो तोफानी भव-सिंधु, तर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ १ ॥ कथ्युं आचार अंगे ए, मुनि रहे मौन आरंभे । निरंतर ध्यान नवपदना, धर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ २ ॥ वृहत्कल्प रु व्यवहारे, मुनिने मौनता दाखी । सकल संताप संसारे, हर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ ३ ॥ करी तपस्या तपाव्यां छे, सुकोमल साधुये तनडां । गुणो सगवीस सम भावे, भर्या तेने जाउं वारी ॥सू० ॥४॥ सगुणी सुमति सहचारी, ग्रही गुप्ति छतां गुणी । नगुणी कुमति नारीथी, डर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ ५ ॥ गणे नित गुप्तिना गुणो, मुनि महाभाग्य मनुहारी । ध्वजा लइ धर्मनी ध्यानी, फर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ ६ ॥ उद्धारक ज्ञानमंदिरना, सुधारक सृष्टिना साँचा । पूरा परमार्थना कामो, कर्या तेने जाउं वारी ॥ सू० ॥ ७ ॥ वचन-गुप्ति विचारीने, रह्या जे मौन महामुनि । 'सूरिधनचन्द्र' शिवसाथी, ठर्या तेने जाउं वारी ॥ स० ॥ ८ ॥

ढाल २१, आवो आवो आज मारा, ए राह

आवो आवो मुनि मन मंदिर मझार, समिति सिणगार

मारा हैयाना हार ॥ टेर ॥ मौन रहे मुनि छद्मस्थ प्यार, छद्मस्थ जिन नवि बोले लिगार ॥ आ० ॥ १ ॥ सुर कहे स्वामी करुं नाटिक लार, सावद्यभाषा न बोल्या उदार ॥ आ० ॥ २ ॥ अर्हंत आदेश आपे न यार, गुप्ति वचन वरे विश्व व्यवहार ॥ आ० ॥ ३ ॥ रायपसेणी सिद्धान्ते संभार, सुणाव्यो श्राद्धने साधु आचार ॥ आ० ॥ ४ ॥ गुरुदत्त गुरुनी गुप्ति गुणकार, निग्रंथ निरखो नयणे नर नार ॥ आ० ॥ ५ ॥ गुप्तिनी पूजा आ सप्तमी सार 'धन-चन्द्रसूरि' सुध्याने तुं धार ॥ आ० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टसुमातसुखाकरं, चरणसंवरसूनुगुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो–रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

८ कायगुप्तिपूजा, दोहा

कायगुप्ति विण कारणे, करे मुनि अहनीश ।
जिनवर फलपूजा कही, श्रावक विश्वा वीश ॥ १ ॥

ढाल २२, व्हालाजी व्हेचे वार्षिक दान, ए राह

साधुने केवी कायगुप्ति गुणकारी, सेवीने लेवी माया

मुक्ति मनुहारी ॥ टेर ॥ चेठण ऊठण ऊंघ उलंघण, नाचण कूदण रोके । इंद्रिका व्यापार वर्जे कर, उत्तराध्ययन अवलोके रे ॥ सा० ॥ १ ॥ कूर्मपरे सुसाधु गोपवे, पांचे इन्द्रि प्यारी । कथा कही छे मुनिवर माटे, ज्ञाता सूत्रे सारी रे ॥ सा० ॥ २ ॥ संरंभ समारंभ आरंभ आदे, काया से नहीं करना । आ रुप्तिमाँ सौ अणगारे, आगम से अनुसरना रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कार्य करे शुभ काय गोपवी, भावनगरमां भावे । त्यांथी आवी अमदावादे, सीधो सिद्धपुर जावे रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ 'सूरिघनचन्द्र' सुधा सम पूजा, भणावशे भवि भावे । महिमडलमा मंगलमाला, पहेरी शिवसुख पावे रे ॥ सा० ॥ ५ ॥

ढाल २३, जिस्का जानी जुदा हो जावे, ए राह

कायगुप्तिना गुन गिनावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ टेर ॥ काउस्सग्ग ध्याने सुमुनि मसाने, मोक्ष जवाने जनावे–मुनिवर मोक्ष जवाने जनावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ १ ॥ कायानी माया निवारी ते सारी, सूयगडागे वात सुनावे–जिनवर सूयगडागे वात सुनावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ २ ॥ ज्ञानी गुरु करे गुप्ति सुगोष्ठी, पहेले अंग भलि भावे–मुनिवर पहेले अगे भली भावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ ३ ॥

गुप्तिगुणे नर नारी तर्या ते, सार सिद्धांते सुनावे–जिनवर सार सिद्धांते सुनावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ अखिल आगम संत समागम, मुक्तिनी युक्ति मिलावे–मुनिवर मुक्तिनी युक्ति मिलावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ ५ ॥ 'धनचन्द्रसूरि' सुपूज्यनी पूजा, कल्पतरु सम कहावे–जिनवर कल्पतरु सम कहावे, भवि भावेथी पूजा भणावे ॥ का० ॥ ६ ॥

ढाल २४, जावादे रसीली रंभा, ए राह

'मुनिवर'

जारे जा रसीली रंभा, तारुं ते शुं काम छेजी । गुप्तिनुं आ गाम छेजी, मुनिनो मुकाम छेजी ॥ टेर ॥ आचारांग ध्याने धारी, समिति गुप्ति कीधी प्यारी । तने तो करी छे न्यारी, तारुं ते शुं काम छेजी, सोवते बदनाम छेजी ॥ जा० ॥ १ ॥

'कुमति'

आवोने छबीला छेला, सुमतिनुं शुं काम छेजी । गुप्तिने क्यां गाम छेजी, रहेवा क्यां मुकाम छेजी ॥ टेर ॥ समितिनी सोवते शाणा, मुनि थइ माथो मुंडाणा । नाथ नथी हाथ नाणा, एमाँ श्यो आराम छेजी, ठरवानुं क्यां ठाम छेजी ॥ जा० ॥ २ ॥

'मुनिवर'

समितिनी सोनते सारी, निग्रंथे नर नारी तारी। प्रीते वर्या शिव नारी, मोमो मोटो गाम छेजी, सुमतिनो मुकाम छेजी ॥ जा० ॥ ३ ॥

'कुमवि'

कंतजी करमाणी काया, मूकी द्यो मुक्तिनी माया। ओरा आवो थइने डाह्या, विषयनो विश्राम छे जी, तीजोरी तमाम छेजी ॥ आ० ॥ ४ ॥

'मुनिवर'

पंडितोने प्रीति तारी, थइ नथी नथी थनारी। दूर रहेजे दुष्टा नारी, कपाले कालो डाम छेजी, मोंढे क्याँ लगाम छेजी ॥ जा० ॥ ५ ॥

'कुमवि'

झोली लइ भिक्षु कहेवाणा, घरोघर भिक्षाए जाणा। चालवुं चरणे अलवाणा, तपस्याए तन श्याम छेजी, मुखे मोटी माम छेजी ॥ आ० ॥ ६ ॥

'मुनिवर'

अवंतिसुकुमाले एवो, उपसर्ग सह्यो छे केवो। जंबु कीनो

जोया जेवो, पयन्नामां नाम छेजी, गुप्ति घोरी धाम छेजी ॥ जा० ॥ ७ ॥

'कुमति'

तपस्याए तपाव्युं तनडुं, मदनथी मार्युं छे मनडुं । कंत नहीं कदी कनडुं, आवोने आराम छेजी, कुमति बोली भाम छेजी ॥ आ० ॥ ८ ॥

'मुनिवर'

अर्हन्नक अणगारी, कल्पसूत्रे कथासारी । ध्याने धारी जो विचारी, साधु साँचा दाम छेजी, हस्ती जेवी हाम छेजी ॥ जा० ॥ ९ ॥

'कुमति'

वेरागी माँगीने खाणा, दुबला दिले देखाणा । शरीरे सुकाणा शाणा, हवे हाड़ चाम छेजी, चेतो तो आराम छेजी ॥ आ० ॥ १० ॥

'मुनिवर'

निर्गुणी तुं कुमति नारी, भविने भमाव्या भारी । जीती बाजी वधी हारी, तारुं सुख हराम छेजी, छेटी रे सलाम छेजी ॥ जा० ॥ ११ ॥

'सुमति'

पिउजी परिश्रम वेठी, आवी हु पण हेठी वेठी । समिति गुप्ति सोडे पेठी, खेनटना सलाम छेजी, फरमावो काइ काम छेजी ॥ आ० ॥ १२ ॥

'मुनिवर'

समिति गुप्ति साथे सारी, सूरीश्वर 'धनचन्द्र' घारी । प्रवचन पूजा कर प्यारी, निग्र थोना नाम छेजी, सर्वेने प्रणाम छेजी ॥ जा० ॥ १३ ॥

अन्तिम वधावो

ढाल २५, आछी अनोपम ओढणी रे, ए राह

समिति गुप्ति सौ वधाविये रे, समिति गुप्ति वर्या वीर सूरीश्वर । प्रवचन पूजन मणाविये रे, अष्टमाता तारे तीर सूरीश्वर ॥ सुधर्म शासने आनंदे आविये, वेठा जे आसने वहाले वधाविये, समिति गुप्ति धारे धन्य सूरीश्वर ॥ १ ॥ गुप्ति गणाइ उत्सर्गमा रे, समिति सुणी अपवाद सू० । पूजे पाले भवि भावथी रे, शिवनारी करे साद सू० ॥ सुधर्म शासने आनंदे आविये, वेठा जे आसने व्हाले वधाविये, समिति गुप्ति धारे धन्य सू० ॥ २ ॥ समिति पूजन पद पामिये रे, वासु चक्री देव इन्द्र सू० । भावे पूजा ज्या

भणाय छे रे, धन्य घरा 'धनचन्द्र' सू० ॥ सुधर्म शासने आनंदे आवियें, बेठा जे आसने व्हाले वधावियें, समिति गुप्ति धारे धन्य सू० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

प्रवचनाष्टगुमातसुखाकरं, चरणसंवरसूनुगुणाकरम् ।
जिनपतेर्गणधारिमुनीन्द्रयो-रधिकभावसुपूजनमष्टधा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलाद्यष्टद्रव्यैर्यजामहे स्वाहा ।

कलश, निरखी जिन इन्द्र चन्द्र चन्द्र छवी वाह वाह, ए राह

विश्वे वीर वचन वरी, विजय कर्यो वाह वाह । समिति गुप्ति रचन करी, कलश भर्यो वाह वाह ॥ टेर ॥ राणो जगत्सिंह बोधी, सूरिजगच्चन्द्रे शोधी, तपा पदवी ग्रंथे नोंधी, सुयश वर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १ ॥ तीर्थ कर तमाम तोड़ी, हीर गया क्यां छे जोडी । जगद्गुरु चांद चोडी, मुकुट धर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ २ ॥ महाप्रतापी सूरिसेन, नृप नम्या निरखी नेन । सकल संघ सुणी वेन, पाय पर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ३ ॥ मॉँडवगढे देवसूरि, महातपा विरुद पूरी । सलीमने सुबोध भूरि, फावी फर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ४ ॥ कल्पवल्ली कामकूपी, प्रभसूरिथी न्होती छूपी । जयवंतो आ विश्वरूपी, जलधि तर्यो वाह वाह

॥ वि० ॥ ५ ॥ यतथी प्रयत्न करी, रत्नसूरि गुप्ति धरी। लोह कोह चोरी चूरी, मोह हर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ६॥ भालो क्षमा सूरि भारी, जीत रीत ध्याने धारी। अष्टकर्म साथ सारी, लडाइ लड्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ७॥ दाना ए देवेन्द्रसूरि, वाणी जेली बहु मधूरी। पामीने प्रख्याति पूरी, तुर्त तर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ८॥ सूरिकल्याण सूत्र देखी, शब्दवृष्टि सृष्टि लेखी। पंथीडाने प्यासी पेखी, झाझुं झर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ९॥ प्रमोदथी प्रमोदसूरि, आनीने आहोर पूरी। श्राद्धरीति करी सनूरी, न्यायी ठर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १०॥ पदवी सूरिराजेन्द्र पकी, मनुष्यरूपे देव नकी। कुमति ने कुलिंगी थकी, जरी न डर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ ११॥ सूरि हु धनचन्द्र धारो, विद्यमान पाट म्हारो। सोहमतपा संघ सारो, भक्ति भर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १२॥ नयन मुनि नंद शशी, पंच अर्जे उर वसी। कागदर चोमास वसी, उद्यम कर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १३॥ गुलनाजी पेराज तणी, प्रेरणाथी पूजा वणी। भाग्यवान थाव भणी, मन धर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १४॥ पूज्य पूजा हर्ष आणी, कीधी जंगम तीर्थ जाणी। सूरि हु 'धनचन्द्र' शाणी, सुमति वर्यो वाह वाह ॥ वि० ॥ १५॥

श्री सिद्धाचल नवाणुप्रकारी पूजा विधि

त्रिगड़े में श्री आदिनाथ प्रभु की पंचतीर्थी स्थापन करके, उसके सामने एक पाट पर चावल से नव स्वस्तिक वाला मंडल बनाना। उन पर एक एक अंगलूहणे श्रीफल, पान, ग्यारह ग्यारह—सुपारी, खारक, बादाम, लोंग, इलायची आदि वस्तु चढ़ा कर शुद्धजल से पंचामृत तैयार करना। बाद में स्नात्रियों को कलश और अष्टद्रव्य देकर खड़े रखना। प्रति पूजा में पूजा काव्य और मंत्र भणाए बाद कलशों से अभिशेष, केशर पुष्प से पूजा करके व धूप दीपादि चढ़ाना। अन्तिम पूजा कलश भणा के आरति मंगल दीपक उतारना यथाशक्ति प्रभावनादि करना। हरएक पूजा में पंचामृत के भरे ग्यारह ग्यारह कलशों का अभिषेक और अन्त में शुद्धजल से पखाल कराके अंगलूहणे से प्रतिमाजी को साफ पूछ कर पूजा करना चाहिये।

श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज रचित

श्रीसिद्धाचल–नवाणुप्रकारी पूजा

प्रथम पूजा, दोहा

श्रीशंखेश्वरपार्श्व प्रभु, शासनपति जिनवीर ।
सद्गुरु पदपंकज भजा, वंदुं मन करी थीर ॥ १ ॥
जिनवर वाणी शारदा, सरस वचन आशीष ।
विमलगिरि गुण गाववा, दीजो नामुं शीष ॥ २ ॥
महियल तीरथ ए वड़ो, महिमा अपरंपार ।
आया नाभिनंदजी, पूर्व नवाणुं वार ॥ ३ ॥
स्वर्ग मर्त्य पाताल में, न तीर्थ ए सम कोय ।
फरसे ए गिरिरायने, पुन्य प्रबल जो होय ॥ ४ ॥
विधिसुं यात्रा जे करे, जिम जिम चढ़ते भाव ।
अजरामर पदवी लहे, मेटे कर्म स्वभाव ॥ ५ ॥
भवि भावे पूजा रचे, नाम नवाणुं प्रकार ।
प्रतिपूजा अभिषेक नव, श्रीफल कलश श्रीकार ॥ ६ ॥
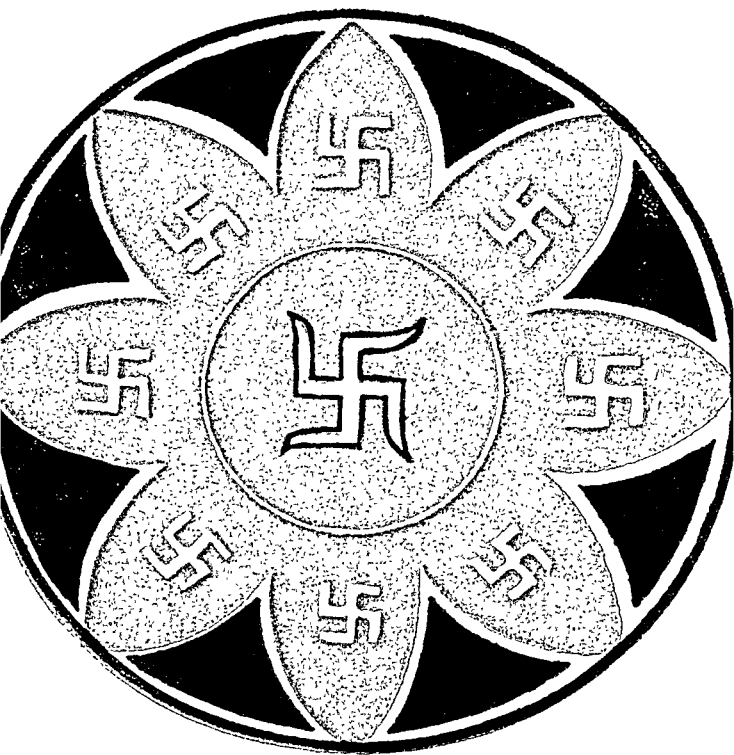
६ श्रीसिद्धाचलनवाणु'प्रकारीपूजा–मंडल.

एकादशने नव गुणा, निन्याणु अभिषेक ।
पूजी प्रथम जिणंदने, पामो सौख्य विवेक ॥ ७ ॥

ढाल १, आवो आवो गिरि गुण गावो रे, ए राह

तुम भेटो सुगुण नर नारी रे, सिद्धगिरि तीरथ सुखकारी ॥ टेर ॥ यात्रा नवाणु करी कर्म खपावो, पंच सनात्र रचो सारी रे ॥ सि० ॥ १ ॥ तप जप करी आदिनाथने पूजो, पापनी वात विसारी रे ॥ सि० ॥ २ ॥ नवकार एक लक्ष गुणनो गणिने, तेला दो छठ सत धारी रे ॥ सि० ॥ ३ ॥ दीजे प्रदक्षिणा वार निवाणु, नमि नमि देव जुहारी रे ॥ सि० ॥ ४ ॥ रूडी सजाई रथयात्रा रचाई, इन्द्रध्वजा सिणगारी रे ॥ सि० ॥ ५ ॥ अभिषेक करी सूरिराजेन्द्र[1] पूजो, 'यतीन्द्र' आनन्दकारी रे ॥ सि० ॥ ६ ॥

ढाल २, रंगरसिया रंगरसिया बन्यो, ए राह

गिरिवर गुण गावो सदा मनमोहनजी, श्रीआदीश्वर भगवंत, नित तुम ध्यावो रे म० । मरुदेवीजीना लाड़ला मनमोहनजी, सुनंदाना कंत, नित तुम ध्यावो रे म०

---

१. सूरि = आचार्य, उनके राजा = गणधर, उनके इन्द्र = तीर्थङ्कर । अथवा सूरि = गणधर, उनके राजा = सामान्य केवलि, उनके इन्द्र = तीर्थंकर हों, वे सूरिराजेन्द्र कहलाते हैं ।

॥ गि० ॥ १ ॥ अठलंतर टूंको भली मनमोहनजी, तिनमें मोटी इकवीश, नित तुम ध्यावो रे म० । नाम निराणुं तीर्थना मनमोहनजी, धरो ध्यान भवि निशदीश नि० ॥ गि० ॥ २ ॥ पहिलुं शत्रुंजयगिरि मनमोहनजी, जगमें ए नाम प्रसिद्ध, नित तुम ध्यावो रे म० । बाहुबली सिद्धा इहाँ मनमोहनजी, मुनि सहस्र अधिक अड़ सिद्ध नि० ॥ गि० ॥ ३ ॥ नाम द्वितीय बाहुबली मनमोहनजी, मरुदेवी त्रीजो नाम, नित तुम ध्यावो रे म० । मधु पूनम पंच क्रोडसुं मनमोहनजी, पाम्या पुंडरीक शिव ठाम नित० ॥ गि० ॥ ४ ॥ नाम सूर्य पुंडरीकगिरि मनमोहनजी, रैवतगिरि पंचम जाण, नित तुम ध्यावो रे म० । विमलाचल सिद्धराजने मनमोहनजी, भगीरथ सिद्धक्षेत्र प्रमाण नि० ॥ गि० ॥ ५ ॥ जन्म सफल होय जेहनो मनमोहनजी, वंदे विधिशुं गिरिराज, नित तुम ध्यावो रे म० । सूरिराजेन्द्र प्रभु ध्यानसे मनमोहनजी, 'यतीन्द्र' सरे सहु काज नि० ॥ गि० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] च कुर्वे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं [illegible] [illegible] जन्मजरा-
मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने [illegible] श्रीजिनेन्द्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय पूजा, दोहा

पगले पगले जो चढ़े, गिरि चढ़ने परिणाम ।
कर्म खपे भवकोटिना, पावे सुख अभिराम ॥ १ ॥

ढाल २, [illegible] नर नारी, ए राह

गिरि दर्शन पावे हलुकर्मा, पूजे देव युगादी रे । कई भव कर्या कर्म खपावे, मेटे दुःख अनादी रे ॥ गि० ॥ १ ॥ गिरि गुण गावे विध विध नामे, सहस्रकमल मन आणी रे । मुक्तिनिलय सिद्धाचल ध्यावे, शतकूट नामी प्रमाणी रे ॥ गि० ॥ २ ॥ ढंक कदंब गिरि नाम थपायो, तीरथ कोटीनिवासी रे । लोहित तालध्वज सुर थापे, जपतां होय शिव वासो रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ सुरतरु चिन्तावेल ए तीरथ, रसकुंपिका इहाँ भाखे रे । जड़ी बूटी जिहां खान रयण की, पुन्याई फल चाखे रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ अभागीने नजर

नहीं आवे, पुन्यसे सब ही सिद्धि रे। सूरिराजेन्द्र महिमा गिरिवर की, पावे 'यतीन्द्र' समृद्धि रे॥ गि०॥ ५॥

ढाल ४, हां केशरियो कामणगारो, ए राह

हा तीरथ की महिमा भारी, शुभ भावे भेटे नर नारी। पुन्याई है मोटी ज्यारी, छहरी पाली जातरा करे प्रेम वधारी रे॥ ती०॥ १॥ महापापी पिण इणगिरि आया, यात्रा करके कर्म खपाया। निज भगिनी भोगी फल पाया, चन्द्रशेखर गिरिराज पर करी निर्मल काया रे॥ ती०॥२॥ चार हत्या कर्त्ता परदारा, देव गुरु द्रव्य भक्षण कारा। पाप टले गिरिवर पर सारा, चैत्री कार्तिक पूनमे-तप जप करनारा रे॥ ती०॥ ३॥ ऋषभसेनादि अगणित सिद्धा, तीर्थङ्कर मुक्ति सुख लिद्धा। कर्म कठिन दल अलगा किद्धा, इण गिरिवर के ऊपरे-शिव अमृत पिद्धा रे॥ ती०॥ ४॥ पुन्य घणो सुपात्रे दाने, श्रीसघ की भक्ति सन्माने। रहे सदा आदीश्वर ध्याने, लाभ लहे अणपार-श्रीसिद्धक्षेत्र सुथाने रे॥ ती०॥ ॥५॥ अजरामर होने की करणी, यही सेवा है पार उतरणी। सूरिराजेन्द्र पूजा भव हरणी, भक्ति भवी महातीर्थ की-'यतीन्द्र' आदरणी रे॥ ती०॥ ६॥

काव्य और मत्र

जिनवर विमलाचलमस्थित, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम्।

निजहिताय वय शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पूजा, दोहा

इण गिरिवर पर आविया, तेवीश श्रीजिनराज ।
नेम चढ़े उज्जितपे, सार्या वांछित काज ॥ १ ॥

ढाल ५, प्रीति पातरनी करनार, ए राह

आवे भावे गिरि गुण गावे, धन धन जगमें उत्तम प्राणी ॥ टेर ॥ पुन्यराशि[19] महाबलगिरि[20] ने, दृढशक्ति[21] शतपत्र[22] । ध्यावे श्रीतीर्थाधिराजने, होवे जन्म पवित्र ॥ आ० ॥ १ ॥ विजयानंद[23] वखाणो भवियण, भद्रंकर[24] महापीठ[25] । पृथक् पृथक् गिरि नाम जपंता, टाले पाप प्रविष्ठ ॥ आ० ॥ २ ॥ नयने निरखे तीर्थपतिने, वंदे शुभ परिणाम । सुरगिरि[26] महागिरि[27] मिले पुन्यसे, पावे गिरि विश्राम ॥ आ० ॥ ३ ॥ दुष्षम-काल में कल्पतरु सम, मिले पुन्य के योग । प्रभु दर्शन गिरिराज फर्शना, टाले सघला सोग ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आलंबन सांचो, जगे भावना खासी । भाव

सहित कारज की सिद्धि, पामे सुख अविनाशी ॥आ०॥५॥
दान तपस्या ब्रह्मव्रतादि, विना भाव सब फोक । भाव को
निश्चय द्रव्यही कारण, माने जग सहु लोक ॥ आ० ॥ ६ ॥
निर्मल भावे तीर्थ आराधो, सूरीश्वरराजेन्द्र । माने ठवणा
निक्षेपाने, धन मुनिराज 'यतीन्द्र' ॥ आ० ॥ ७ ॥

ढाल ६, घर आवोने ढोला, ए राह

शाश्वत तीरथ एहने, जाणो भवि प्राणी । सौधर्मेन्द्रने सु
वदे, महावीरजी वाणी ॥ शा० ॥ १ ॥ न्यूनाधिक तो
होय, पिण कभी लोप न होवे । सूत्रे प्रमाण प्रत्यक्ष, बहुश्रुत
तत्त्व विलोवे ॥ शा० ॥ २ ॥ सिद्ध अनंतनो ठाम, तीर्थमें
तीर्थ है मोटो । शुद्ध हुए अभिप्राय, भाव न प्रगटे खोटो
॥ शा० ॥३॥ जोजन अस्सी प्रमाण, गिरिवर पहिले आरे ।
बीजे सित्तर तीसरे, जोजन साठ उचारे ॥ शा० ॥ ३ ॥
चोथे काल पचास, पंचम जोजन बारे । दुषमादुषमे काल
गिरि सत हत्थ सुम्मारे ॥ शा० ॥ २ ॥ दुष्षमकालना जीव,
दुर्लभ दरिसन पावे । मिले सद्गुरु संजोग, तब ही अवसर
आवे । नहीं तो वृथा ही जन्म, खोवे रहीने प्रमादे । कुगुरु
कुदेव कुधर्म, आदरी आयु वितादे ॥ शा० ॥ ६ ॥ अंतराय
कर्म के योग, गिरिवर नयणे न निरखे । निज परिवार में
लुब्ध, कृत्त अकृत्य न परखे । जाणे न धर्म को मर्म, रहे

लक्ष्मी के मद में । जालो न जाण्या काल, अब बांधे पद पद में ॥ शा० ॥ ७ ॥ निकट भविने मले, विमलगिरिवर की सेवा । आदीश्वर सुप्रसाद, लहे सुगति का मेवा ॥ शिव संपति दातार, सूरिराजेन्द्र की भक्ति । भावे तजो संसार, सांची 'यतीन्द्र' की युक्ति ॥ शा० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ पूजा, दोहा

दूजे स्वर्गना अधिपति, इहाँ उतारी गंग ।
झीली शत्रुंजय[1] नदी, प्रभु पूजो उछरंग ॥ १ ॥

ढाल ७, ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे, ए राह

डूंगर प्यारो लागे सिद्धगिरि को डं० ॥ टेर ॥ गिरि

---

१ अबोटवस्त्र से छाना हुआ जल एक घड़े, या बालटी में लेकर, उससे शुद्ध भूमि पर बैठके, जयणा पूर्वक स्नान किये बाद ही पूजा करने में महा लाभ है, विना छाने जल से नहा के पूजा करने में कुछ भी

सहित कारज की सिद्धि, पामे सुख अविनाशी ॥श्रा०॥५॥७
दान तपस्या व्रतव्रतादि, विना भाव सव फोक । भाव को निश्चय द्रव्यही कारण, माने जग सहु लोक ॥ श्रा० ॥ ६ ॥
निर्मल भावे तीर्थ आराधो, सूरीश्वरराजेन्द्र । माने ठवणा निक्षेपाने, धन मुनिराज 'यतीन्द्र' ॥ श्रा० ॥ ७ ॥

ढाल ६, घर आवोने ढोला, ए राह

शाश्वत तीरथ एहने, जाणो भवि प्राणी । सौधर्मेन्द्रने यु वदे, महावीरजी वाणी ॥ शा० ॥ १ ॥ न्यूनाधिक तो होय, पिण कमी लोप न होवे । सूत्रे प्रमाण प्रत्यक्ष, बहुश्रुत तत्त्व विलोवे ॥ शा० ॥ २ ॥ सिद्ध अनंतनो ठाम, तीर्थमें तीर्थ है मोटो । शुद्ध हुए अभिप्राय, भाव न प्रगटे खोटो ॥ शा० ॥३॥ जोजन अस्सी प्रमाण, गिरिवर पहिले आरे । बीजे सित्तर तीसरे, जोजन साठ उचारे ॥ शा० ॥ ३ ॥ ...म, पंचम जोजन बारे । दुषमादुषमे काल ...रे ॥ शा० ॥ २ ॥ दुष्षमकालना जीव, ...वे । मिले सद्गुरु संजोग, तव ही अवसर ... वृथा ही जन्म, खोवे रहीने प्रमादे । कुगुरु ...े आयु वितादे ॥ शा० ॥ ६ ॥ अंतराय ... गिरिवर नयणे न निरखे । निज परिवार में ...ल्प न परखे । जाणे न धर्म को मर्म, रहे

लखमी के मद में । जातो न जाणे काल, अघ बांधे पद पद में ॥ शा० ॥ ७ ॥ निकट भविने मले, विमलगिरिवर की सेवा । आदीश्वर सुप्रसाद, लहे मुगति का मेवा ॥ शिव संपति दातार, सूरिराजेन्द्र की भक्ति । भावे तजो संसार, सांची 'यतीन्द्र' की युक्ति ॥ शा० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् । निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ पूजा, दोहा

दूजे स्वर्गना अधिपति, इहाँ उतारी गंग ।

झीली शत्रुंजय[1] नदी, प्रभु पूजो उछरंग ॥ १ ॥

ढाल ७, ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे, ए राह

डूंगर प्यारो लागे सिद्धगिरि को डं० ॥ टेर ॥ गिरि

---

१ अवोटवस्त्र से छाना हुआ जल एक घडे, या बालटी में लेकर, उससे शुद्ध भूमि पर बैठके, जयणा पूर्वक स्नान किये बाद ही पूजा करने में महा लाभ है, विना छाने जल से नहा के पूजा करने में कुछ भी लाभ नहीं है ।

पर हुवा उद्धार अनत पिए, आ अवसर्पिणी काले। भरतजी प्रथम उद्धार करायो, निज आतम उजवाले मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ १ ॥ सूर्ययशादि सप्त पटोधर, इण गिरि मोक्ष सिधाया। अष्टम पटधर दंडवीरज नृप, द्वितीय उद्धार नीपाया मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ २ ॥ सीमधर उपदेश सुणीने, सुरपति चौजे ओपायो उद्धार तीसरो करता इन्द्रे, लाभ अखूट कमायो मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ ३ ॥ उद्धार चोथो चोथे इन्द्रे, पचम पचम इन्द्रे। छट्ठो उद्धार करायो तीर्थे, भवनपति चमरेन्द्रे मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ ४ ॥ चक्री सगर सत्तम उद्धारे, पोते मन आलोची। मूर्ति स्थापे स्वर्णगुफा मे, दुष्पमकालने सोची मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ ५ ॥ सोवन गुफा में प्रतिमा छाजे, कचनगिरि जग बोले । देव देवी सुरिराजेन्द्र पूजे, 'यतीन्द्र' वाणी अमोले मेरे प्यारे ॥ इ० ॥ ६ ॥

ढाल ८, चल मेरी सहिया पैया पैया, ए राह

सुर वर नाचे ता ता थइ थई, गुण मधुरे स्वरसे गावे ॥ टेर ॥ गुण मधुरे स्वरसे गावे रव, जय जय जय कर हुलसावे ॥ सु० ॥ १ ॥ वाजिंत्र वाजे अंबर गाजे, अप्सरा गुण गावा आवे ॥ सु० ॥ २ ॥ आठमो व्यन्तरपति गिरि

पर, उद्धार करे चढ़ते भावे ॥ सु० ॥ ३ ॥ उद्धार नवमो चन्द्रयशानो, 'यतीन्द्र' आनंद रस वरसावे ॥ सु० ॥ ४ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय, देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

पंचमी पूजा, दोहा

सुर नर किन्नर आयके, पूजे देव दयाल ।
नानाविधि भक्ति करे, गावे राग रसाल ॥ १ ॥

ढाल ९, स्वार्थदत्त स्वार्थ तो, साधवा में ठीक छे, ए राह

मोतीड़े वधावो ध्यावो सिद्धगिरिराज को, सिद्धगिरिराज को तीर्थाधिराज को ॥ मो० ॥ टेर ॥ शान्तिनाथ सुत सोभागी, चक्रायुध लगन लागी । तिणें उद्धार दशम करी, बांधी पुन्यपाज को ॥ मो० ॥ १ ॥ श्रीरामचन्द्र ग्यारमो, उद्धार पांडव बारमो । कुंता मात बूझवे, पांचों ही तारी जहाज को ॥ मो० ॥ २ ॥ वीस कोडी साधु संग, पांडव

पामी सुख अभंग । महानन्द[28] कर्मसूडन[29], ध्यान सारे काज को ॥ मो० ॥ ३ ॥ कैलाश[30] नाम पुष्पदन्त[31], जाप जपो भवि जयन्त[32] । आनन्द[33] श्रीपद[34] हस्तगिरि[35], शास्वत[36] मुक्ति साज को ॥ मो० ॥ ४ ॥ ए कह्या मोटा उद्धार, लघु उद्धार को न पार । चौथे आरे लग हुए, श्रीतीर्थ शरताज को ॥मो०॥५॥ पंचम काल को सुमार, जो हुआ उद्धार चार । भणे 'यतीन्द्र' धन्य, सूरिराजेन्द्र सुसमाज को ॥ मो० ॥ ६ ॥

ढाल १०, सरकार थांरो पचरंगो, ए राह

सुखकार आदीश्वर सिद्धगिरि के वासी म्हारा राज । गिरिराज हो मन वसिया म्हारा राज ॥ टेर ॥ जावड़शाहे करावियो रे, त्रिदशमो उद्धार । सुखकार अब्द इग्यारासो अडसोहे म्हारा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ बारासो तेरे समे रे, चउदशमो उद्धार । सुखकार वाहडदे मंत्री मन मोहे म्हारा राज ॥ सु० ॥ २ ॥ शशि[1] ऋषि[7] लोक[3] भू[1] विक्रमे रे, ओश-वंश विख्यात । सुखकार समरोशाह उद्धार सुहावे म्हारा राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुनि[7] वसु[8] महाव्रत[5] इन्दु[1] में रे, विद्यमान उद्धार । सुखकार दोसी कर्माशाहे दीपायो म्हारा राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ चरम उद्धार दशसत्तमो रे, विमलवाहन

नरनाथ । सुखकार सूरि दुप्रसह सुपसाये म्हारा राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ भविजन जिन दर्शन करे रे, [37]भव्यगिरि पण नाम । सुखकार [38]सिद्धशेखर [39]महायश गुण गाये म्हारा राज ॥ सु० ॥ ॥ ६ ॥ [40]माल्यवंत नामे भलो रे, [41]पृथ्वीपीठ मनोहार । सुखकार [42]दुखहर भव भव दुःख निवारे म्हारा राज ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ [43]मुक्तिराज दे मुक्तिना रे, अविचल सुख [44]मणिकान्त । सुखकार [45]मेरुमहीधर नाम उचारे म्हारा राज ॥ सु० ॥ ८ ॥ जिन अभिषेके सहु टले रे, रोग सोग सन्ताप । सुखकार नवनिधि ऋद्धि सिद्धि पावे म्हारा राज ॥ सु० ॥ ९ ॥ सूरिराजेन्द्र पदवी लही रे, पावे परमानन्द । सुखकार 'श्रीयतीन्द्र' जगत पूजावे म्हारा राज ॥ सु० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठ पूजा, दोहा

सिद्ध अनंता ए गिरि, अनसन करि मुनिराज ।
शिवमंदिर लीला करे, मेटी भव भव खाज ॥ १ ॥

ढाल ११, वटवा गूंथनदे रे मिजाजन, ए राह

मुरति मोहनवेल प्रभुकी, मुरति मोहनवेल । अलवेली प्रभु आदिजिनंद की मु० ॥ टेर ॥ मुक्तिनिसरणी भवदुख-हरणी; सुरतरु चित्रावेल । आधी ने व्याधी उपाधी हरे, करे शिवरमणी संग केल ॥ हां अ० ॥ १ ॥ न्हवण विलेपन पुष्प सुगंधित, पूजत श्रीजगदीश । राजा महाराजा नर नारीमा टोला, आय नमावे शीश ॥ हां अ० ॥ २ ॥ कंचनगिरि[४६] प्रभुपूजा रचावे ध्याने रहे लय लीन । आनन्दघर[४७] पुण्यकंद[४८] जयानद[४९], नाम जपे परवीन ॥ हां अ० ॥ ३ ॥ पातालमूल[५०] विभास[५१] विशाल[५२] ने, जगतारण[५३] अकलक[५४] । नामसे धाम आराम लहे रहे, सिद्ध सुथान निशंक ॥ हां अ० ॥ ॥ ४ ॥ सूरीशराजेन्द्र अरिहा की पूजा, आनद गीत संगीत । गावे, भणावे सुख संपति पावे, 'यतीन्द्र' मन परतीत ॥ हां अ० ॥ ५ ॥

ढाल १२, मा कालीमां इण अवसर, ए राह

जिनवरजी हो महेर करीने टालो भव जंजाल से ॥ टेर ॥

तुम न्हेर महेर से कई तरिया, दुःख जन्म मरण अलगा करिया। मन इच्छित कारज सहु सरिया, शिव शाश्वत सुख में अवतरिया ॥ जि० ॥ १ ॥ वे कोडी साथे नमि विनमि, अणसण कर निज काया को दमि। जाण्यो आतमस्वरूप शुभ भाव रमी, शिव लखमी पाई रही न कमी ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ अकर्मक[५५] महातीरथ[५६] जाणी, हेमगिरि[५७] तरिया कइयक प्राणी। नाम अनंतशक्ति[५८] शिव सहेलाणी, आयो शरणे हर्ष हिये आणी ॥ जि० ॥ ३ ॥ निज सुतने तार्या जिनवरजी, तिम मुझने तारो यही अरजी। करो सूरीश्वरराजेन्द्र मरजी, आदिनाथ 'यतीन्द्र' के ईश्वरजी ॥ जि० ॥ ४ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थित्तं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम्।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

सप्तम पूजा, दोहा

गिरिवर गुण गाता थकां, पूजे प्रथम जिणंद।
भ्रमण हरे गति चारनो, टले भवोभव फंद ॥ १ ॥

ढाल १३, वारी जाऊं रे सांवरिया, तुमपे०, ए राह

दादा जन मन रंजन, नाथ निरंजन तारनाजी ॥ टेर ॥
नमी पुत्री चौंसठ इहाँ आवी, प्रभु गुण गातां भावना
भावी । ताततें तार्या तिम हमको भी उद्धारनाजी ॥ दा० ॥
॥ १ ॥ पुरुषोत्तम[५६] उत्तम गुणधारी, पर्वतराजा[६०] आनन्दकारी ।
ज्योतिरूप[६१] करी भवकूप से वारनाजी ॥ दा० ॥ २ ॥
विलासभद्र[६२] सुखसंपति दाता, नाम सुभद्र[६३] जपे सुख शाता ।
तीरथपति महाराज अरज–अवधारनाजी ॥ दा० ॥ ३ ॥
युगलिकधर्म निवारक स्वामी, सूरिराजेन्द्र प्रभु अंतरयामी ।
भवदरिया से पार 'यतीन्द्र' उतारनाजी ॥ दा० ॥ ४ ॥

ढाल १४, सखी केम न आव्या नाथ हजी, ए राह

सिद्धक्षेत्र पवित्र तीरथ करिये, यात्रा कर भव पातिक
हरिये ॥ टेर ॥ भरतचक्री सागर अन्तर में, सिद्ध असंख्या
गिरिवरिये ॥ सि० ॥ चोमासो कर्यो अजितजिनेश्वर, पूजन
भक्ति आदरिये ॥ सि० ॥ १ ॥ सागर मुनि एक कोटी
संघाते, मुक्ति लही भवि तिम तरिये ॥ सि० ॥ अजरामर[६४]
कोडी पांच सुसंगे, सिद्ध भरत गुण ऊचरिये ॥ सि० ॥
॥ २ ॥ अजितसेन जिन कोडी सतरसुं, पाम्या सुख तीरथ

६५

जरिये ॥ सि० ॥ सूरिराजेन्द्र क्षेमंकर नामे, 'यतीन्द्र' ध्यान आतम ठरिये ॥ सि० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय, देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम पूजा, दोहा

सिद्धा कार्तिक पूनमे, विमलाचल सुपसाय ।
द्राविड वारिखिल्लजी, दश कोटी मुनिराय ॥ १ ॥

ढाल १५, नजरियां मिलावो रे प्रभु०, ए राह

सिद्धाचल ध्यावो रे, नर तन पायके, नर तन पायके ध्यान में लायके ॥ सि० ॥ टेर ॥ सिद्धा अनंता इण गिरिवरपे, अणसण कर शुद्ध भावना भायके ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ साधु सहस्र दश, अजितशासनना, पूनम मधु सुख लह्युं शिव जायके ॥ सि० ॥ २ ॥ भरत नन्दन एक लक्ष मुनिसुं, अमर हुए चित्त में जमाय के ॥ सि० ॥ ३ ॥

अमरकेतु[96] गुणकन्द[97] ए तीरथ, शरण में रहो भवि, नित गुण गायके ॥ सि० ॥ ४ ॥ सहस्रपत्र[98] शिवंकर[99] नामे, कर्मक्षय[100] तमःकंद[101], निशदिन ध्यायके ॥ सि० ॥ ५ ॥ राजेन्द राजराजेश्वर[102] तीरथ, 'यतीन्द्र' आनन्द लहे, सिद्धगिरि आयके ॥ सि० ॥ ६ ॥

ढाल १६, सुणो दिल्ली वस्त्र घर नार, ए राह

श्रीसिद्धाचल शिरताज, आदीश्वर जगधणी जी । जगदुद्धारक जिनराज, आदीश्वर ॥ ज० ॥ १ ॥ गिरि सिद्ध अनंतनो ठाम, आदीश्वर० । भवतारण[103] तीरथ नाम, आदीश्वर० ॥ २ ॥ कोडी तीनसुं इण गिरिराय, आदीश्वर० । सिद्धा राम भरत इहाँ आय, आदीश्वर० ॥ ३ ॥ तयाँ सोमयशा के संग, आदीश्वर० । मुनि त्रिदश कोटि उमंग, आदीश्वर० ॥ ४ ॥ वसुदेवरायनी नार, आदीश्वर जग० । सिद्ध हुई पेंतीस हजार, आदीश्वर० ॥ ५ ॥ नव लख ऊणा एक क्रोड, आदीश्वर० । नारद संग दिये कर्म तोड़, आदीश्वर० ॥ ६ ॥ गजचन्द्र[104] महोदय[105] शैल, आदीश्वर० । 'मुनियतीन्द्र' लहे शिव म्हेल, आदीश्वर० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

नवमपूजा, दोहा

यादवपति श्रीकृष्णना, साम्ब प्रद्युम्न कुमार ।
कोडी साढ़ी आठसुं, पाम्या भवजल पार ॥ १ ॥

ढाल १७, खादी का डंका आलम में देशी, ए राह

महिमा श्रीपुंडरीक गिरिवर की, तीनों ही जग में छाई है। तीनों ही जग में छाई है, तीनों ही जग में छाई है, श्रीमुख जिनवर फरमाई है ॥म०॥१॥ तीर्थङ्कर गणधर विद्या-धर, नर नारी सिद्धि पाई है । सुखदायक लायक कल्पतरु, चिंतामणि शिवसुख दाई है ॥ म० ॥ २ ॥ रहे शोलम जिनवर चोमासे, तीरथ महिमा बतलाई है । इण अवसर मुनिगण सिद्ध हुए, संख्या नीचे दरसाई है ॥ म० ॥ ३ ॥ एक क्रोड के ऊपर बावन लख, पंचावन सहस्र गणाई है । पुनि सातसो सत्योतर साधु, शिवनगरे ज्योति लगाई

है ॥ म० ॥ ४ ॥ दमितारी चउद सहस्र मुनि शिवश्री से लगन लगाई है। सुरकान्त[७६] अचल[७७] अभिनंद[७८] 'यतीन्द्र', जिनेन्द्र से प्रीत जगाई है ॥ म० ॥ ५ ॥

ढाल १८, गिरनारी जातां रोक लाजे रे, ए राह

विमलगिरि भेट लीजोजी, भविक नर उत्तम नर तन पाय ॥ वि० ॥ टेर ॥ जिणे गिरिवर फरस्यो नहीं रे हा, भविक नर दीधो जन्म गमाय। धर्मरंग में न भींजोजी ॥ ध० । म० ॥ वि० ॥ १ ॥ सहस्र मुनि परिवारसु रे हा, भविक नर थावचापुत्त गिरिराय। हुवा सिद्ध काज सीझोजी ॥ हु० ॥ म० ॥ वि० ॥ २ ॥ पाचसो सेलग साथमें रे हा, भविक नर सिद्धा पथक सुपसाय। वदन गिरि जाय कीजोजी ॥ व० ॥ म० ॥ वि० ॥ ३ ॥ सहस्र चउ पर चारसो रे हा, भविक नर प्रद्युम्नप्रिया सघात। वैदर्भिने धोग दीजोजी ॥ वै० ॥ म० ॥ वि० ॥ ४ ॥ करकडुऋषी कर्म तोडिया रे हा, भविक नर सुभद्र सतसो मुनिराय। गिरि गुण गाय रींझोजी ॥ गि० ॥ म० ॥ वि० ॥ ५ ॥ सुमति[७९] श्रेष्ठा[८०] मयकदनो[८१] रे हा, भविक नर ध्यान 'यतीन्द्र' लगाय। निश्चय लहे सुन तीजोजी ॥ नि० ॥ म० ॥ वि० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

दशमपूजा, दोहा

निर्वाणी जिनराजना, कदंब गणधर लार ।
सिद्धिपदने पामिया, एक कोटि अणगार ॥ १ ॥
गणधर जिन संप्रति तणा, सह मुनि एक हजार ।
थावच्चा सिद्धि लही, पाम्या सुख श्रीकार ॥ २ ॥

ढाल १९, आनंद वधाई केवल उपन्यो, ए राह

गिरिवर उपकारी, तीरथ सुखकारी सोरठ देश में, गिरिवर उपकारी० ॥ टेर ॥ पालीताणा शुभ धाम मनोहर, जिहाँ गिरिराज सुहाय । भवभीरु गिरि पर तप जप कर, कर्म दिया है खपायजी ॥ गि० ॥ १ ॥ देवकीना छे पुत्र सिद्ध हुए, इण गिरिवर सुपसाय । जाली मयाली ने उवयाली, कीनी निर्मल कायजी ॥ गि० ॥ २ ॥ शुकराजा आंबिल षट्मासे, कर पूजे प्रभु पाय । न्हवनसे कुर्कट

देह मिटी हुए, आभापुरी चंद्रायजी ॥ गि० ॥ ३ ॥ अतिशय धारी तीर्थ प्रभाविक, पूज्या पातिक जाय ॥ नाम थकी सहु सिद्धि प्रकटे, रोग सोग विरलायजी ॥ गि० ॥ ॥ ४ ॥ उज्जनलगिरि[८२] महापद्म[८३] गाम पुनि, विश्वानन्द[८४] कहाय। विजयभद्र[८५] सूरिराजेन्द्र भावे, 'यतीन्द्र' भेटे आयजी ॥ गि० ॥ ५ ॥

ढाल २०, छोटी मोटी सुइयाँ रे, जालीका मेरा काढ़ना, ए राह

तीरथपति सिरताज, मेरी भी नैया तारजो ॥ ती० ॥टेर॥ कंकर कंकर इण गिरि सिद्धा हा इण० । सार्यावंछित काज, चरको भी उद्धारजो ॥ ती० ॥१॥ इन्द्रप्रकाश[८६] कपर्दिकवास[८७], कपर्दि० । मुक्तिकेतन[८८] आज, ध्याउं में सुविचारजो ॥ ती० ॥ २ ॥ केवल[८९] चर्चगिरि[९०] इण नामे गिरि० । आराधुं तारो मेरी जहाज, अरज अवधारजो ॥ ती० ॥ ३ ॥ खूट नहीं प्रभु थारे खजाने, हा थारे० । राजनपति महाराज, मेरा भी अघ वारजो ॥ ती० ॥ ४ ॥ सूरिराजेन्द्र प्रभु चरण में पूजुं, हा चरण० । पाउ 'यतीन्द्र' सुसाज, भवभ्रमण निवारजो ॥ ती० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपति मघवार्चितम् ।
निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः, सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

एकादशम पूजा, दोहा

नाभिनंदन जगपति, आदीश्वर भगवान ।
प्रथम भरावच प्रणमतां, प्रकटे आत्मिक ज्ञान ॥ १ ॥

ढाल २१, यार की गलियों में कैसे, यार आना छोड़ दे,
यार आना०, ए राह

सिद्धगिरि की जातरा कर, काय निर्मल कीजिये ॥ टेर ॥
पाप की आलोचना कर, पुण्य का भंडार भर । सेवा सद्-गुरु की आदर, भक्ति सुधारस पीजीये ॥ सि० ॥१॥ जिन-राज की पूजन सदा, प्रभु भक्ति करके हो श्रदा । कुबुद्धि मत सोचो कदा, शुद्ध शांत भावे रीजीये ॥ सि० ॥ २ ॥
अष्टोत्तर शतकूट[६१] कहिये, नाम श्रीसौंदर्य[६२] लहिये । श्रीयशोधर[६३] नाम गहिये, कर्मके संग धीजिये ॥ सि० ॥ ३ ॥ प्रीति-

मदन लय लगाई, नाम कामुक[६५] भी दीपाई । भावना हृदये जमाई, पूर्ण लाहो लीजिये ॥ सि० ॥ ४ ॥ दान तो सुपात्र दीजे लाभ श्रीसिद्धक्षेत्र लीजे । कलश भर अभिषेक कीजे, 'यतीन्द्र' पद को पूजिये ॥ सि० ॥ ५ ॥

ढाल २२, माता त्रिशला झुलावे, ए राह

इण विधि भवियण भावे, करिये तीरथ आराधना । सविधि यात्रा नवाणु करिये इण गिरि आय । सघ चतुरनी भक्ति कीजे रूडा भावसे, इण भव भव भव सचित पातिक दूर पलाय ॥ इ० ॥ १ ॥ एकलहारी भूमि सथारो सथारिये, छहरी पाली चालो पालो शील सुरग । पडिक्कमणा दोय करिये देववदन नव कालना, श्रीजिनवाणी सुणिये थुणिये प्रभु गुण रंग ॥ इ० ॥ २ ॥ सूझतो आहार वहोरावो पडिलाभो मुनिराजने, साधर्मी की शक्ति भक्ति के अनुसार । वृद्धि करिये भवियण देव गुरुना द्रव्यनी, चोखे चित्ते करिये तरिये भव ससार ॥ इ० ॥ ३ ॥ चोमासे रही करिये स्तवना सहजानदनी[६६], महेन्द्रध्वज[६७] सरवारथ[६८] प्रियकर[६९] जपो नाम । आशातना जो करिये फरिये भव ससार में, भव भव दुखिया होवे न मिले सुख विश्राम ॥ इ० ॥ ४ ॥ भावे गावे पजा नाम नवाणु प्रकारनी, जस घर मगलमाला

लच्छी लीला ल्हेर । महितल महिमा महोटी सूरिराजेन्द्रनी, पभणे पाठकवर 'यतीन्द्रविजय' गुरु म्हेर ॥ इ० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनवरं विमलाचलसंस्थितं, ऋषभतीर्थपतिं मघवार्चितम् । निजहिताय वयं शुभद्रव्यतः सततमर्चनकर्म च कुर्महे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीसुरासुरनरेन्द्रमहिताय देवाधिदेवाय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय सर्वज्ञसर्वदर्शिने परमेश्वराय श्रीजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धनाश्री

गायो गायो रे महावीर जिनेश्वर गायो, ए राह

आया आया श्रीपुंडरिकगिरि हम आया ॥ टेर ॥ भावकी श्रेणी सियाणे जागी, मन उत्साह वढ़ाया । विद्या सागर शिष्याग्रहसुं, फर्सना जोग मिलाया ॥ आ० ॥ १ ॥ पाली-ताणे कूकसीवाला की, धर्मशाले चित चाया । चंपावासे चारो मासे, शाश्वतगिरि गुण गाया ॥ आ० ॥ २ ॥ जंगम स्थावर तीर्थ लाभ सुण, भविजन मन हरसाया । गुर्जर मरु-धर मालव वासी, आकर ठाम जमाया ॥ आ० ॥ ३ ॥ तप जप व्रत पोसा पडिक्कमणा, आतम रंग रंगाया । यात्रा नवाणुं पूजा प्रभावना, अठाई ओच्छव छाया ॥ आ० ॥४॥

उत्तराध्ययन चरित्र जयानंद, केवली वांच सुणाया । नर नारी सहु आनंद पामी, मंगल तूर बजाया ॥ आ० ॥ ५ ॥ सोहमवंश श्रीजगचन्द्रसूरि, भू पर भूरी दीपाया । आद्दडपुर-नृप इच्छा पूरी, पता विरुद धराया ॥ आ० ॥ ६ ॥ पाटानुपाट क्षमासूरि विबुध, देवेन्द्र कल्याण ओपाया । तस पट्ट सूरिप्रमोद प्रतापी, मरुधरे बहु जस पाया ॥ आ० ॥ ७ ॥ राजेन्द्राभिधानादि ग्रन्थ कृता, श्रीविजयराजेन्द्रसूरि राया । चीरोला जनने उद्धारी, जगमें, नाम कमाया ॥ आ० ॥ ८ ॥ अंजनशलाका प्रतिष्ठा कारक, गुणिजन के मन भाया । अतिशयधारी वाचासिद्धि, मुनि मारग दरसाया ॥ आ० ॥ ९ ॥ शिष्य सूरिधनचन्द्र गीतारथ, महियल खूब पूजाया । वाद विवादे शूरा पूरा, सुमति सुसंगी कहाया ॥ आ० ॥ १० ॥ विजयराजेन्द्रसूरीश्वर किंकर, पाठक 'यतीन्द्र' सुहाया । श्रीजिनपूजा नवाणुं प्रकारी, रचि गिरि भाव जताया ॥ आ० ॥ ११ ॥ पूरण नव निधि चन्द्र सुवरसे, कार्त्तिक पूनम ध्याया । भूप-भूपेन्द्रसूरि वर राज्ये, ए अधिकार रचाया ॥ आ० ॥ १२ ॥ सिद्धगिरि यात्रा विधिसुं करने, करिये निर्मल काया । 'यतीन्द्रविजय' सुख सम्पति पामो, दिन दिन हर्ष सवाया ॥ आ० ॥ १३ ॥

श्रीसिद्धगिरिवर की आरति

जय जय गुरुदेवा अहो जय०, ए राह

जय जय जग त्राता, प्रभु जय जय जग त्राता,
श्रीशत्रुंजयस्वामी, आदीश्वर दाता ॥ टेर ॥

दर्शन से रोग सोग सहु, संकट मिट जाता अहो सं० ।
जन्म मरण नहीं पाता, लेता सुख शाता ॥ ज० ॥ १ ॥

तीर्थों में तीर्थ शिरोमणि, शाश्वत मन भाता अ० ।
गिरिवर महिमा स्वयंमुख, महावीर फरमाता ॥ज०॥ २ ॥

पूर्वनवाणु रे वार ऋपभजी, इण गिरिवर आता अ० ।
सुरपति नरपति यतिपति, सहु मिल गुण गाता ॥ज० ॥ ३ ॥

घंटानादे रे ता ता थइ थइ, नाचत हरसाता अ० ।
धूप सुगंधित कर कर, भविजन मलकाता ॥ ज० ॥ ४ ॥

आरती रे मंगलदीवो कर, अघ सरकाता अ० ।
सूरिराजेन्द्र 'यतीन्द्र' ने, हलुकर्मी ध्याता ॥ ज० ॥ ५ ॥

श्री पंचज्ञान पूजा विधिः

एक बाजोठ पर चाँवल के ५१ साथये करके, उन पर पान १-१ रखना, उन पर सुपारी, बादाम, पैसे, फल, फूल, नैवेद्य चढ़ाना। ५१ दीपक करना। ५ नारियल रखना। घी शक्कर के ५ लड्डू रखना। त्रिगड़े में पंचतीर्थी प्रतिमाजी स्थापना। सविधि स्नात्र पूजा पढ़ा कर बाद में पूजा पढ़ाना। प्रथम पूजा के २८ साथिये, दूसरी पूजा के १४ साथिये, तीसरी पूजा के ६ साथिये, चौथी पूजा के २ साथिये, और पांचमी पूजा का १ साथिया नंदावर्त का करना, प्रति की समाप्ति पर नैवेद्यादि चढ़ाना।

❀ इति ❀

भणिए रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ चार भेदे करी सम्यजे भवि ने, उत्पातिक विनयकी बुद्धि, परिणामिकी अने कारमिकी, उपजे सघली सिद्धि हो ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सहज स्वभावे उत्पातिक उपजे, विनय सुश्रुषा गुरू करतां, कार्मिक कर्मों करतां उपजे, अवलोकन परिणामी ठरतां रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ शास्त्र तणु अवलोकन करंतां, श्रुतनिश्रित मतिज्ञान, चार प्रकारे उपजे तेहना, ते सुणजो भवि ध्यान रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ अवग्रह इहा अपाय धारणा, मूल भेदे ए चार, अवग्रह दोय प्रकारे भणिए, तेहनो एह विचार रे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ व्यंजनावग्रह प्रथम ते जाणो, अर्थावग्रह छे बीजो, इहाँ इंगित पांच मने छे, छट्ठो भेद ते पूजो रे ॥ भवि० ॥७॥ इहित वस्तु ने निश्चय गणतां, बोध करे ते इहा, तेहवुं इहा भेदने समझी, श्रुति आराधो जीहा रे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ निश्चित वस्तु अविच्युतिपणे करी, स्मृतिपणे जे वयणे, धारण करवुं ते धारणा कहिए, इन्द्रिय मन षट्गुण श्रवणे रे ॥ भवि० ॥ ९ ॥ चार भेद ने छए करी गुणिए, जेह थी चौवीस होय, व्यंजनावग्रहादिक चार संयोगे, मली ते अठवीस जोय रे ॥ भवि० ॥ १० ॥ चार भेद अवग्रहना सांथे, ते अठ्ठावीस गुणिए, त्रणसो छत्रीस भेद ने भेला, अश्रुत मिश्रित चार भणिए रे ॥ भवि० ॥ ११ ॥ त्रणसे चालीश भेद प्रमाणे मति ज्ञान तणो विस्तार, एक समय अर्थावग्रहने,

पंच स्वस्तिक पूरी करी, स्थायी ज्ञान उदार ।
उपकरण ज्ञान तणा सहु, मेलवी आगल सार ॥ ८ ॥
श्रीफल आगल मूकी ने, रूप्यक मुद्रा सार ।
मूकी आगल मोदसुं, भाव सहित नर नार ॥ ९ ॥
जल चंदन कुसुमो वली, धूप दीप मनुहार ।
अक्षत नैवेद्य फल तणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ १० ॥

प्रथम ज्ञान पूजा, दोहा

वीर वचन रस सेलडी, चाखे जेह सुजाण ।
कर्म अरि दूरे करी, पहोंचे शीवपुर ठाण ॥ १ ॥
गणधर पद ने भोगवी, पामी पंचम ज्ञान ।
आगम गुंथे ज्ञान ते, करूं हूं तास वखाण ॥ २ ॥
मतिज्ञान अति शुद्धता, निर्मल अविचल बुद्ध ।
भावे तेहनी भावना, ध्याता समकित शुद्ध ॥ ३ ॥

ढाल १, ए व्रत जग मां, दीवो मेरे०, सर्जे

श्रुतधर मति ने आराधो रे भविका, मतिज्ञान श्रुत ने आराधो ॥ टेर ॥ भेद अट्ठावीस ने ते वेदे, शास्त्रे भाख्या विशेष, ते मतिज्ञान छे महिमावंतुं, टाले सकल क्लेश हो ॥ भवि० ॥ १ ॥ दोय भेद छे एहना देखो, एक श्रुत निश्रित भखिर, अश्रुत निश्रित बीजो समजो, प्रथम ना चार भेद

काव्य और मन्त्र

नयादि निक्षेप प्रमाण सप्त, भङ्गी रहस्यस्य च मार्मिकस्य ।
प्रकाशकं मैथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ मतिविकलतमोहराय, चत्वारिंशतत्रिशतभेद समन्विताय, श्रीमतिज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय ज्ञानपूजा, दोहा

हवे श्रुतज्ञान ने वर्णवुं चौदवीश संयुत ।
भेद कह्या छे तेहनां, ध्यान तणे संयुक्त ॥ १ ॥
अक्षर श्रुत पहेलुं भणुं, वीजुं अनक्षर श्रुत ।
संज्ञीश्रुत त्रीजुं कह्युं, चौथुं असंज्ञी श्रुत ॥ २ ॥
सम्यक्श्रुत छे पाचमुं, असम्यक् श्रुत षष्ठ ।
अनादि श्रुत सप्तम भणुं, सादि श्रुत भणुं अष्ट ॥ ३ ॥
नवमुं पर्यवसित श्रुत, अपर्यवसित दिगपाल ।
गमिक श्रुत अगियारमुं, द्वादश अगमिक श्रुतमाल ॥ ४ ॥
अंग प्रविष्ठ श्रुत तेरमुं चौदमुं, अंग बाह्य श्रुत ।
सात सूत्रोक्त भेदे करी, प्रतिपक्ष सह श्रुत ॥ ५ ॥

ढाल १, निरखण दो असवारी, तर्ज

अक्षरश्रुत त्रणभेद संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर वीजो, लब्ध्यक्षर ते त्रीजुं समजी, श्रावक श्राविका पूजो रे भविका श्रुतज्ञान,

मात्र प्रमाण व्यवहार रे ॥ भवि० ॥ १२ ॥ अंतर मुहूरत काल अपाय इहा, धारणा संख्य असंख्यात, भावथकी सहु भावते जाणे, देखे नहीं प्रख्यात रे ॥ भवि० ॥ १३ ॥ द्रव्य थकी सहु द्रव्य ने जाणे, सर्व मनोगत भाव, "सूरिधनचन्द्र" पसाए करी ने, "हर्षमुनि" मन चाव रे ॥ भवि० ॥ १४ ॥

दोहा

लोक अलोके क्षेत्र थी, जाणे अरू पीछाण ।
काल थी काल विशेष में, मति ज्ञानें ते जाण ॥ १ ॥
देखे शुद्ध परिणाम से, ते मतिज्ञाने पास ।
ज्ञान थकी रसीओ सही, मतिज्ञान शुद्ध रास ॥ २ ॥

ढाल २, जिनराज पूजी लाहो लीजिए, तर्ज

मतिज्ञान में मनडुं रांची ए ॥ टेर ॥ निर्मल बुद्धि शुद्ध परिणामे, आगम अर्थ प्रकाशीए हो ॥ मति० ॥ १ ॥ मतिथकी श्रुत अवधि उपजावे, केवल ज्योति सहु भाषिए हो ॥ मति० ॥ २ ॥ भक्ति मति ज्ञान नी करतां भावे, चटी ए शीवगति रासी ए हो ॥ मति० ॥ ३ ॥ मतिज्ञान केरी पहेली पूजा, करतां भाव उल्लासीए हो ॥ मति० ॥ ४ ॥ "सूरिधनचन्द्र" शिरोमणी उत्तम, "हर्षमुनि" मन हुलासीए हो ॥ मति० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादि निक्षेप प्रमाण सप्त, भङ्गी रहस्यस्य च मार्मिकस्य ।
प्रकाशकं मेध्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ मतिविकलतमोहराय, चत्वारिंशतत्रिशतभेद समन्विताय, श्रीमतिज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय ज्ञानपूजा, दोहा

हवे श्रुतज्ञान ने वर्णवुं चौदवीश संयुत ।
भेद कह्या छे तेहनां, ध्यान तणे संयुक्त ॥ १ ॥
अक्षर श्रुत पहेलुं भणुं, बीजुं अनक्षर श्रुत ।
संज्ञीश्रुत त्रीजुं कह्युं, चोथुं असंज्ञी श्रुत ॥ २ ॥
सम्यक्श्रुत छे पाचमुं, असम्यक् श्रुत षष्ठ ।
अनादि श्रुत सप्तम भणुं, सादि श्रुत भणुं अष्ट ॥ ३ ॥
नवमुं पर्यवसित श्रुत, अपर्यवसित दिगपाल ।
गमिक श्रुत अगियारमुं, द्वादश अगमिक श्रुतमाल ॥ ४ ॥
अंग प्रविष्ठ श्रुत तेरमुं चौदमुं, अंग बाह्य श्रुत ।
सात सूत्रोक्त भेदे करी, प्रतिपक्ष सह श्रुत ॥ ५ ॥

ढाल १, निरखण दो असवारी, तर्ज

अक्षरश्रुत त्रणभेद संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर बीजो, लब्ध्यक्षर ते त्रीजुं समजी, श्रावक श्राविका पूजो रे भविका श्रुतज्ञान

पद ने सेवो, लहिए शिवपद मेवो रे ॥ भवि० ॥ १ ॥ लीपी अट्ठारहे संज्ञाक्षर, व्यजनाक्षर है बावन, ज्ञानगर्भित संज्ञाक्षर है, लब्ध्यक्षर पहिचान रे ॥ भ० ॥ २ ॥ बीजुं अनाक्षर श्रुत समस्या, करीने ते सहु जाणे, त्रीजु संज्ञाश्रुत त्रणभेदे, ज्ञानी तुरत पीछाणे रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ तीन काल की सज्ञा तेहनी, दीर्घ हेतुवादोपदेशी, दृष्टिवादोपदेशी त्रीजी, ते जाणे सज्ञाहितैषी रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ चोथु असज्ञी श्रुत मनविण जे, इन्द्रिय सहित भाखे, पाचमुं श्रुत ते सम्यक् दृष्टि, अर्हत वाणी प्रकाशे रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ जिन मिथ्यादिक वाक्य निरपक्षे, साचे साचुं बोले, छट्टे मिथ्याश्रुत प्रतिपक्षे, विषय स्वरूपन खोले रे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ सादि अनादि पर्यवसित श्रुत, अपर्यवसित ए चार, जिन आगम बोले जयवंतु , द्रव्यक्षेत्रादि विचार रे ॥ भवि० ॥ ॥ ७ ॥ समकित लही श्रुतज्ञान ने पामे, आदिश्रुत कह्युं एह, एक पुरुष आश्रित है शास्त्रे, सादि सपर्यवसित रे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ बहुल जीव आश्रित श्रुतज्ञानी, अनादि अपर्यवसीत, अनादि अनत काल प्रवाहे, द्रव्य थकी ए रीत रे ॥ भवि० ॥ ९ ॥ क्षेत्र थकी श्रुतज्ञान ते कहिए, भरत ऐरावत माहीं, तीर्थङ्कर श्रुतज्ञान दशागी, होत विच्छेद ते ज्याही रे ॥ भवि० ॥ १० ॥ विचरता प्रभु महावीदेह में, श्रुत विच्छेद न होई, सादि सपर्यवसीत विच्छेदे, अपर्यवसीत

श्रुत जोई रे ॥ भवि० ॥ ११ ॥ श्रुतनी भक्ति करंतां पाये, समकीत सखरी बुद्धि, "सुरिचनचन्द्र" पसाए करीने, "हर्ष" लहे शिव शुद्धि रे ॥ भवि० ॥ १२ ॥

दोहा

काल थकी ऐरावत भरते, सादी सपर्यवसीत ।
महाविदेह में जाणो, अनादि अपर्यवसीत ॥ १ ॥
भाव थकी भव्य सिद्धि अनादि, सादि मोक्ष अनंत ।
श्रुतज्ञान चारू भेद वखाणे, गणधरवादी तंत ॥ २ ॥
सूत्रपाठ ने देखे अवला, गमिक श्रुतना भेद ।
अगमिक श्रुत द्वादश आलावा, गमिक श्रुतना भेद ॥ ३ ॥

ढाल २, हिरण्डे हिलोने, तर्ज

अंग प्रविष्ट श्रुत तेरमुं, गणधर सूत्र गुंथायारे । अंग अगियार उपांगलही, श्रुतज्ञान सुणायारे "भवियण वंदो रे, श्रुतज्ञान थी पाय निकंदो रे" ॥ १ ॥ चौदमुं श्रुत अंगवाह्यावश्यक, दशवैकालिक जाणो रे । सूत्रसमास भांगे करी समझो, वीश भेद प्रमाणो रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ द्रव्य क्षेत्र काले करी भावे, जाणे वातां श्रुतनाणी रे । केवली समश्रुतज्ञानी प्रकाशे, भूत भविष्य नी वाणी रे ॥ भवि० ॥ ॥ ३ ॥ श्रतज्ञान भक्ति सदा सुखदाइ, करतां कर्म खपावे

रे। द्वितीय ज्ञान की भक्ति दुविधा, सहुते मिट जावे रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ "हर्ष" भणे सादर शुद्ध भावे, श्रुतज्ञानी बन जावे। केवल श्रुतभक्ति नित्य करतां, शिवपद पावे रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेप प्रमाण सप्त-भंगीरहस्यस्य च मार्मिकस्य । प्रकाशकं मैथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥

ॐ, ह्रीँ श्रीँ, सूक्ष्मनादरचराचरपदार्थप्रकाशकाय, चदुर्दश-व विंशतिभेदसयुताय, श्रीश्रुतज्ञानाय, जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय ज्ञान पूजा, दोहा

अवधिज्ञान तणी कहु, त्रीजी पूजा सार ।
भाव सहित करतां थकां, पामे भवनो पार ॥ १ ॥

पूर्वोदय पुण्य पापनुं, देखी सघलुं रहस्य ।
भक्त उद्धरिया भाव थी, ओहिनाण आदर्श ॥ २ ॥

षट् प्रकार छे तेहनां, प्रथमानुगामी तेह ।
वर्धमान बीजो कह्यो, प्रतिपाती त्रीजो लेह ॥ ३ ॥

अननुगामी चोथो भलो, पंचम छे हीयमान ।
अप्रतिपाती मानी ए, छट्ठो भेद प्रमाण ॥ ४ ॥

गुणप्रत्ययी अवधि तणा, शास्त्रे भाख्यां नाम ।
ध्याता अवधिनाण ने, पामे सुख नुं धाम ॥ ५ ॥

ढाल १, अखियन में अविकारा जिनंदा, तर्ज

अवधि ज्ञान अपारा जिनंदा तोरा अवधि ॥ टेर ॥
अनुगामी जे ज्ञान ते उपजे, देश विदेश मझारा जि० । लोचननी परे संग रहे नित्य, पलटे नहीं पलवारा, ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ बीजुं अननुगामी अवधि, उपजे देश मझारा जि० । पर भूमी में संग न चलता, उपजत ठाण रहेनारा ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ त्रीजुं वर्धमान ओहि पोते, वधते निशदिन सारा जि० । जिम तृण योगे सलगेली अग्नि, अधिक करे उजियारा ॥ जिनंदा० ॥ ३ ॥ उपजतां असंख्यात में भागे, योजन लगे विस्तारा जि० । लोकाकाशे उत्कृष्टुं वधते, असंख्यातखंडुक देखे सारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ चोथुं अवधि हीयमान ते समझे, शुभ परिणामी वसनारा जि० । अशुभ परिणामे नहीं रहेवानुं, हीयमान उन अवधि विचारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ पंचम अवधि है प्रतिपाती, संख्य असंख्य योजन सारा जि० । देखी पाछुं पडतुं कहिए, आव्युं थकी चलनारा ॥ जिनं० ॥ ६ ॥ छट्ठुं अवधि अप्रतिपाती, समग्र लोक लगे सारा, जि० । फरसे एक प्रदेश देखतां "हर्ष" भणे हितकारा ॥ जिनंदा० ॥ ७ ॥

रे । द्वितीय ज्ञान की मक्ति दुविधा, सहुते मिट जावे रे ॥ मवि० ॥ ४ ॥ "हर्ष" मणे सादर शुद्ध मावे, श्रुतज्ञानी बन जावे । केवल श्रुतमक्ति नित्य करतां, शिवपद पावे रे ॥ मवि० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेप प्रमाण सप्त-भंगीरहस्यस्य च मार्मिकार्थं ।
प्रकाशकं मैथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निममर्चयामि ॥

ॐ, ह्रीँ श्रीँ, सूक्ष्मनादरचराचरपदार्थप्रकाशकाय, चदुर्दश-व विंशतिभेदसंयुताय, श्रीश्रुतज्ञानाय, जलादिद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय ज्ञान पूजा, दोहा

अवधिज्ञान तणी कहु, त्रीजी पूजा सार ।
भाव सहित करतां थकां, पामे भवनो पार ॥ १ ॥

पूर्वोदय पुण्य पापनु, देखी सघुलु रहस्य ।
भक्त उद्धरिया भाव थी, श्रोहिनाण आदर्श ॥ २ ॥

षट प्रकार छे तेहनां, प्रथमानुगामी तेह ।
वर्धमान बीजो कह्यो, प्रतिपाती त्रीजो लेह ॥ ३ ॥

अननुगामी चोथो भलो, पंचम छे हीयमान ।
अप्रतिपाती मानी ए, छट्ठो भेद प्रमाण ॥ ४ ॥

देजो साहिबा रे, मांगुं अवधि अपार ॥ अवधि० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेपप्रमाणसत्त–भक्तीरहस्यस्य च मार्मिकस्य ।
प्रकाशकं मेथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ षड्भेदातिरिक्तासंख्यातभेदसमलङ्कृता-सुदूरवर्तिपदार्थप्रकाशकाय श्री अवधिज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थ ज्ञान पूजा, दोहा

ज्ञान तीन सह उपजे, तारक त्रिजग भाण ।
व्रत लीधे चोथु हुए, मन पर्यव तस ज्ञान ॥ १ ॥
दोय भेदे करी दाखीयो, श्रवण वीर भगवंत ।
नदी सूत्रे इणी परे, गणधर गुथ्या तंत ॥ २ ॥
तेह ज्ञाननी पूजना, करतां सवि सुख थाय ।
अष्ट द्रव्य भावे करी, पूजो श्री जिनराय ॥ ३ ॥

ढाल १, नाथ कैसे गज को बंध छुडायो, तर्ज

मनवा तुं मन पर्यव को पावे, रही घट में शान्त स्वभावे ॥ टेर ॥ पहेलु ऋजुमति है मनपर्यव, बीजुं विपुलमति भावे, यो घट है मन अध्यवसाय में, अन्तर ज्ञान उपावे रे

दोहा

अलोके स्थिरता करे, अवधि अप्रतिपाती ।
पाम्या केई पृथ्वी तले, जगत जीव विख्याती ॥ १ ॥

ढाल ७, साहिब शिव बसिया, तर्जे

शासन नायक तुं धणी रे, प्रभु त्रिशलानंदन वीर । "अवधि आपोने, तमे तारो दीन दयाल, कलिमल कापो ने," ॥ टेक ॥ तारतम्य योग भावे करी रे, अनंत द्रव्य असंख्य । द्रव्यक्षेत्रादिक जाणिए रे, चारू ही भेद समक्ष, ॥ अवधि० ॥ १ ॥ जाणे भाव उत्कृष्टने रे, अनंता रूपी जघन्य । ते श्रुतज्ञाने प्ररूपियुं रे, त्रिभुवनपति सुगण्य ॥ अवधि० ॥ २ ॥ ससंख्यात भाग क्षेत्रागुले रे, जघन्य थकी परिमाण । अलोकखंड ने जाणता रे, उत्कृष्ट पखे एहमान ॥ अवधि० ॥ ३ ॥ काल उत्कृष्टे जाणतां रे, अतीत अनागत ख्यात । कहे साचुं जिम केवली रे, भूत भविष्यनी वात ॥ अवधि० ॥ ४ ॥ असंख्यात भागे एक आवली रे, जघन्यपणा नो काल । हवे तमने साचु कहुँ रे, सामल जो उजमाल ॥ अवधि० ॥ ५ ॥ भाव थकी समभे स्वरू रे, भाव अवधि फल सर्व । अचल अवधि उपजे इणविधे रे, मूंके मन नो गर्व ॥ अवधि० ॥ ६ ॥ उद्धरिया अवधे करि रे, तरिया भवि ससार । अचल "हर्ष"

जाणते सघले लेखते, हां हां रे सघले लेखते, प्यारे लाल ते सघले लेखते ॥ टेर ॥ १ ॥ देखे भाग पल्योपम असंख्य जघन्य से, ऋजुमति काल थकी परिणाम सामान्य से ॥ हां हां रे० ॥ २ ॥ अतीत अनागत भाव विपुलमति जाणते, विशुद्धपणे उल्लेख सदा मन माणते, हां हां रे० ॥ ३ ॥ भाव थकी ते ऋजुमति भाव बतावता, सर्वभाव अनंत में भांगे, जाणी शुद्धि भावता हां हां रे० ॥ ४ ॥ तेथी अधिकुं भाव विपुलमति जाणते, विशुद्ध पणे करी तेहने, सर्व पीछानते, हां हां रे० ॥ ५ ॥ भाख्यो ज्ञान मन-पर्यव क्रियाविधि अनुसरी, एह विण मुक्ति न जाय, ॥ हर्ष ॥ केवल वरी हाँ हाँ रे० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेपप्रमाणसप्त—भङ्गीरहस्यस्य च मार्मिकस्य ।
प्रकाशकं मैथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ संज्ञीजीवमनोगतभावज्ञापकाय, चतुर्भेद-सहिताय मनःपर्यवज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

पंचम ज्ञान पूजा, दोहा

केवल ज्ञाननी पूजना, पंचमी करो नरनार ।
भावे जिन गुण गावता, पामे केवल सार ॥ १ ॥

॥ मन० ॥ १ ॥ सामान्य ग्राहिणी ऋजुमति है, ते विपुल मति न कहावे, विशेषग्राहिणी भावे भणनां, विपुलमति मन लावे रे ॥ मन० ॥ २ ॥ द्रव्य थकी यह घट सोनाको, क्षेत्र थी स्थान दिखावे । काल थकी शीत उष्णता दाखे, भावे रंग मन भावे रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ चार प्रकार छे एहना सुन्दर, द्रव्य क्षेत्र काल भावे । द्रव्य थकी मनपर्यव उपजे, ऋजुमति सरल कहावे रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ अनंत प्रदेश खंध अनंता देखे जाणे पीछाणे । तेह थी अधिक विपुलमति केरा, प्रदेश खंध प्रमाण रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ क्षेत्र थकी ऋजुमति करी नीचे, रत्नप्रभा लगे भासे । क्षुल्लकप्रतर देखे उन्नत, ज्योतिषचक्र प्रकाशे रे ॥ मन० ॥ ६ ॥ इणविध मनपर्यवज्ञान केरा, सूत्र में भाव बतावे । सुरिधनचन्द्र पसाये सुन्दर "हर्षमुनि" मन भावे रे ॥ मन० ॥ ७ ॥

दोहा

अढ़ि द्विप में तिरछु तेखे, दोय समुद्र स्थान ।
पन्दर कर्मा भूमी में, त्रीस अकर्म प्रमाण ॥ १ ॥
छप्पन अन्तर द्वीप में, देखे सवि विज्ञान ।
संज्ञी पंचेन्द्रि अपर्याप्ता, मनोगत भाव पिछाण ॥ २ ॥

ढाल २, सखरी में सखरी कोण जगत में मोहनी रे, तर्ज

विपुलमति अढ़ि अंगुल ज्यादा देखते, विशुद्ध भावना

जाणते सघले लेखते, हां हां रे सघले लेखते, प्यारे लाल ते सघले लेखते ॥ टेर ॥ १ ॥ देखे भाग पल्योपम असंख्य जघन्य से, ऋजुमति काल थकी परिणाम सामान्य से ॥ हां हां रे० ॥ २ ॥ अतीत अनागत भाव विपुलमति जाणते, विशुद्धपणे उल्लेख सदा मन माणते, हां हां रे० ॥ ३ ॥ भाव थकी ते ऋजुमति भाव वतावता, सर्वभाव अनंत में भागे, जाणी शुद्धि भावता हां हां रे० ॥ ४ ॥ तेथी अधिकुं भाव विपुलमति जाणते, विशुद्ध पणे करी तेहने, सर्व पीछानते, हां हां रे० ॥ ५ ॥ भाक्यो ज्ञान मन-पर्यव क्रियाविधि अनुसरी, एह विण मुक्ति न जाय, ॥ हर्ष ॥ केवल वरी हाँ हाँ रे० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेपप्रमाणसत्त—भङ्गीरहस्यस्य च मार्मिकस्य ।
प्रकाशकं मेथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ संज्ञीजीवमनोगतभावज्ञापकाय, चतुर्भेद-सहिताय मनःपर्यवज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

पंचम ज्ञान पूजा, दोहा

केवल ज्ञाननी पूजना, पंचमी करो नरनार ।
भावे जिन गुण गावता, पामे केवल सार ॥ १ ॥

तारा मंडल तेज में, अधिको चन्द्र प्रकाश ।
दिनकर अधिको ते थकी, केवल तणो उजाश ॥ २ ॥
चौद राजना चोकमाँ, केवल तणो उद्योत ।
देखे सघलु दरपणे, जगतभाव सुज्योत ॥ ३ ॥

ढाल २, सांभलजो मुनि संयम रागे, सर्ज

केवल ज्ञान समो नहीं कोइ, ज्योति प्रकाशक जगमाँ रे । सर्व जीवों ना भाव दिखावे, जेवु दरपण प्रसंगमाँ रे ॥ केवल० ॥ १ ॥ नरकादि कनी भीति दिखावे, स्वर्ग-सौख्य समझावे रे । वैर विरोध सकल जग जनने, केवली भावी बतावे रे ॥ केवल० ॥ २ ॥ द्वीप अनंता उदधि दृष्टि, अतीत अनागत जाणे रे । सिद्ध अनंतगतिना सघला, *गिरानी मन* सहु माने रे ॥ केवल० ॥ ३ ॥ उपजे आतम घट उजियारा, बने मुनिवर विलासी रे । केवलधारी आतम तारी, लोकालोक प्रकाशी रे ॥ केवल० ॥ ४ ॥ जे नर जग में पुण्य पनोता, ते हुआ केवलधारी रे, "हर्ष-विजय" प्रणमे पदपंकज, तातें जाउं बलिहारी रे ॥ केवल० ॥ ५ ॥

दोहा

कर्मकष्ट ने गालवा, तपिया द्वादशवर्ष ।
रंगाणु आतमरूची, केवल पाया हर्ष ॥

ढाल २, न्हवण नी पूजा रे निर्मल आतमारे, तर्ज

केवलज्ञानी रे ध्यानी आतमा रे, प्रथम प्रभु वीतराग। केवल पामी रे दीधुं मातने रे, लीधुं सकल सोभाग ॥ केवल० ॥ १ ॥ करूणा लावी रे केवल आपियुं रे, वीर गौतम गणधार। सुयश पायो रे सृष्टि माँ शोभ तारे, शासन ना सिणगार ॥ केवल० ॥ २ ॥ समवसरण में सुरनर सेवतारे, चोवीश मा जिनराय। पांत्रीश गुणे रे वाणी प्रकाशता रे, ज्ञान तणो महिगाय ॥ केवल० ॥ ३ ॥ चतुर सोभागी जग माँ जेथया रे, पाम्या अनुपम ज्ञान। माया छाँडी रे इह पर लोकनी रे, साध्युं सिद्धनुं स्थान ॥ केवल० ॥ ४ ॥ भवियण भावे रे पूजो ज्ञानने रे, टाले कर्म जंजाल। पंचमी पूजा रे "हर्ष" प्रमोद सुं रे, भणताँ मंगलमाल ॥ ॥ केवल० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

नयादिनिक्षेपप्रमाणसप्त—भङ्गीरहस्यस्य च मार्मिकस्य।
प्रकाशकं मैथ्य तमो विदूरं, ज्ञानं विवस्वन्निभमर्चयामि ॥

ॐ, ह्रीँ, श्रीँ, लोकालोकपदार्थप्रकाशकाय, सर्वज्ञानश्रेष्ठाय, श्रीकेवलज्ञानाय जलाद्यष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

कलशः

गाया गाया रे में तो ज्ञान तणा गुण गाया, श्रीमहावीर-

जिनेश्वर आगम, नंदी सूने सुणाया, मति श्रुत अवधि ने मनपर्यव, केवल पंचम ध्याया रे ॥ में तो० ॥ १ ॥ ज्ञान भक्ति करते निज शक्ते, समकित रत्न उपाया रे। बोधिबीज-मय लिला पूरण, अनुभव पुण्य उपायो रे ॥ में तो० ॥२॥ ज्ञान गुलाब खिली फूलवाड़ी, भविमधुकर लोभाया रे। सरस सुधारस तृप्त हुआ मन, आनन्द अधिक वढाया रे ॥ में तो० ॥ ३ ॥ तपागच्छ गणधार शिरोमणि, सूरि-राजेन्द्र धन पाया रे। तस पट्टे सूरिभूपेन्द्र सोभागी, सूरि-यतीन्द्र दीपाया रे ॥ में तो० ॥ ४ ॥ निधि पन्नग नव शशि संवत्सर, श्रीमाल पुर में सोहाया रे। पंचमी ज्ञान दिने यह पूजा, भाव भक्ति से मणायारे, ॥ में तो० ॥ ५ ॥ श्रीसूरीश्वर यतीन्द्र के राज्ये, महर्द्धिक भाव जगाया रे "हर्षविजय" मुनिवर शुभ चित्ते प्रभु गुण गाया रे ॥ में तो० ॥ ६ ॥

श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशव्रत पूजा विधि

पूजा जहाँ पढ़ाना हो उस पवित्र स्थान में त्रिगड़ा स्थापन कर उसमें श्री महावीर प्रभु की प्रतिमा स्थापन कर सविधि स्नात्र पूजा पढ़ाना। भगवान से डावी वाजु कल्पवृक्ष स्थापित करना। फिर सभी पूजाओं के अन्त में नैवेद्यादि अष्ट द्रव्य चढ़ाना। पर अष्ट द्रव्य के साथ पहली पूजा में जल, दूसरी में चन्दन, तीसरी में वासक्षेप, चौथी में पुष्पमाला, पांचवीं में दीपक, छट्ठी में धूप, सातवीं में पुष्प, आठवीं में अष्टमंगल, नवमी में अक्षत, दशवीं में दर्पण, ग्यारहवीं में नैवेद्य, बारहवीं में ध्वज और तेरहवीं में फल अधिक समझना। एक सौ चौवीश अतिचार दूर करने के निमित्त में एक सौ चौवीश दीपक करना।

❀ इति ❀

मुनिराज श्रीहर्ष विजयजी रचित

श्री सम्यक्त्वमूल द्वादश व्रत पूजा

—॥—

दोहा

एकादश गणधरपति, वर्द्धमान वडवीर ।
शासननायक जगधणी, उदधि सम गम्भीर ॥ १ ॥
जिनवाणी श्रुत देवि हे ?, दीजो वर आशीष ।
सद्गुरु पय पंकज नमुं, नित्य नमावी शीष ॥ २ ॥
द्वादशव्रत पूजा रचुं, दो मुझ बुद्धि रसाल ।
श्रावक व्रत भाख्या प्रभु, समकितमूल विशाल ॥ ३ ॥
प्रथम प्राणातिपात व्रत, अलिक वयण पचक्खाण ।
अदत्त मैथुन पंचम, परिग्रहतणो परिमाण ॥ ४ ॥
दिशिमर्याद भोगोपभोग, अनर्थदंड व्रत जाण ।
सामायिक व्रत आदरे, उत्तम श्राद्ध सुजाण ॥ ५ ॥
देशावगासिक पोसह, अतिथिसंविभाग ।
तरु साखा बारह तणो, समकित मूल है लाग ॥ ६ ॥

इम द्वादशव्रत भाषिया, श्रीजिनराज दयाल ।
आनन्दादिक आदरी, टाल्यो दुःखजंजाल ॥ ७ ॥
जल चन्दन वासक्षेप ने, फूल माल मनुहार ।
दीप गंध कुसुमे करी, पूजो जगदाधार ॥ ८ ॥
अड मांगलिक अक्षत तथा दर्पण सरस नैवेद्य ।
पूजा ध्वज फल आदि कर, पावो सौख्य अभेद्य ॥ ९ ॥

प्रथम समकितमूल व्रत पूजा

रायणने सहकार वाला, ए राह

वीरपटोधर आविया रे, चम्पानगरी सुथान वाल्हा । सुवर्ण कमल सुरनर रचे रे, पूर्णभद्र चैत्य उद्यान वाल्हा । ॥ वीर० ॥ १ ॥ देशना अमृत सारिखी रे, श्रवण करे नरनार वाल्हा ॥ जंबू सुधर्मास्वामीने रे, प्रश्न करे तिणवार वाल्हा ॥ वीर० ॥ २ ॥ सप्तम अङ्गे वीरजी रे, दर्शाव्यो जेह भाव वाल्हा । भाखो अनुग्रह करी विभु रे, साँभळवा मुझ चाव वाल्हा ॥ वीर० ॥ ३ ॥ आनन्दादि दश श्राद्धने रे, प्रतिबोधे महावीर वाल्हा । श्रावक व्रत ओलखावीने रे, करे श्रद्धालु धीर वाल्हा ॥ वीर० ॥ ४ ॥ विन श्रद्धा जग में भमे रे, जीव अनंत संसार वाल्हा । देवगुरु धर्म श्रद्धा

खरी रे, ते पामे भवपार वाल्हा ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अविकारी अरिहंतजी रे, दोप रहित जिनराज वाल्हा । अतिशय गुण-धारी सही रे, तारनतरन जहाज वाल्हा ॥ वीर० ॥ ६ ॥ देव निरंजन सेविये रे, गुरु सुमता भंडार वाल्हा । त्यागी कंचन कामिनी रे, निरलोमी निरहंकार वाल्हा० ॥ वीर० ॥ ॥ ७ ॥ केवली भाषित धर्मने रे, धारो तजी मिथ्यात्व वाल्हा । दृढ समकित श्रद्धा करो रे, जाणो तीनुं तत्त्व वाल्हा ॥ वीर० ॥ ८ ॥ शका तजीने आराधिये रे, तजी परमत अभिलाप वाल्हा ॥ वितिगिच्छा करवी नहीं रे, पाखंडी महिमा न भाप वाल्हा ॥ वीर० ॥ ६ ॥ कुमति परिचय छंडिये रे, तजिये पण अतिचार वाल्हा ॥ वीर जिनेश्वर पूजीये रे, जल पूजा जयकार वाल्हा ॥ वीर० ॥ १० ॥ सम्यक्त्व श्रद्धा आणिये रे, सूरिराजेन्द्र सुजाण वाल्हा । कृष्ण श्रेणिक सुलसादिना रे, करे मुनि 'हर्ष' वखाण वाल्हा ॥ वीर० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्स सूक्तं,
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ।
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्विवेमं,
व्रजति सहि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

प्रथम अणुव्रते द्वितीय चन्दन पूजा,

दोहा

अड दंसण अड नाणना, चरण आठ अतिचार ।
संलेहण पंच तप तणा, द्वादश कह्या सुविचार ॥ १ ॥
तीन है वीर्याचारना, समकित श्रद्धावन्त ।
नितिचारे नित वहे, पूजे भवि भगवन्त ॥ २ ॥

ढाल दूसरी

जिनराजा ताजा, मल्लि विराजा भोयणी गांव में, ए राह

दिलरंजन स्वामी, तीरथपति महावीरजी ॥ दि० ॥ ॥ टेक ॥ अष्ट प्रतिहारज जस छाजे, वाणी गुण पैंतीश । दिव्यध्वनि उपदेश करे प्रभु, परमानन्द जगीश हो ॥ दिल० ॥ १ ॥ सुरकृत समवसरण में बेसी, दिये देशना सार । बारह पर्षदा सुणे धर्म, दानादि चार प्रकार हो ॥ दि० ॥ ॥ २ ॥ पाणाइवाय अणुव्रत श्रावक, स्थूलथकी पच्चक्खाण । त्रस थावरनी हिंसा वरजे, दयाधर्म दिल आण हो ॥ दिल० ॥ ३ ॥ सूक्ष्म थूल दो भेद जीवका, हिंसानां

पण दोय । आरम्भने संकल्प द्विभेदे, जैनागममें जोय हो ॥ दिल० ॥ ४ ॥ भू-जल-तेउ-वाउ-वणस्सई, छेदन भेदन आदि । करे करावे नहीं अनुमोदे, सुश्रावक मर्यादि रे ॥ दिल० ॥ ५ ॥ रीश वसे द्विपद चउपद पर, नाखे अधिको भार । गाढे बन्धने बाँधे पशुने, नहीं श्रावक आचार रे ॥ दिल० ॥ ६ ॥ निर्दयपणे प्रहार करे नहीं, जीवदया त्रस पाले । शस्त्रछेद भतपाणी विछेदे, अनिचार पण टाले रे ॥ दि० ॥ ७ ॥ वात वात में घात होय नहीं, भाखे ऐसी वात । जोव दुखावे नहीं किसीको, टाले प्राणातिपात रे ॥ दिल० ॥ ८ ॥ पग पग जीवदया को पाले जयणायुत करे काम । अणगल नीर न वावरी, बाँधे चन्दरवा दश ठाम रे ॥ दिल० ॥ ९ ॥ रात्रिभोजन द्विदल भक्षण, अनुनन पहेलो खंड । भक्षाभक्ष्य विचार करे सोही, टाले पाप प्रचंड रे ॥ दि० ॥ १० ॥ इणविध वीरप्रभु की वाणी, आनन्दादिक धारे । करे सफल अवतार आपणो, निज आतम को तारे रे ॥ दिल० ॥ ११ ॥ धन त्रिशलानन्दन चन्दनसम, शीतल शांत स्वभाव । चन्दन पूजा कर नव अंगकी, तारो भवनिधि नाव रे ॥ दिल० ॥ १२ ॥ हरिबल नृप इण भवसे सुखीयो, भव संताप निवार्यो । सूरिराजेन्द्र प्रभु वीरकृपासे, हर्षविजय मन धार्यो रे ॥ दिल० ॥ १३ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सुक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दनं पमर्पयामि स्वाहा ॥

द्वितीय अणुव्रते तृतीय वासत्तेप पूजा

दोहा

तजिये मिथ्यावादने, करिये सत्य सु प्रीत ।
जग में मिथ्यावादी की, करे न को परतीत ॥१॥
सत्य सुगन्धी वीरजी, पूजे इन्द्र नरेन्द्र ।
वासक्षेप पूजा करो, पामो शिवसुख केन्द्र ॥२॥

ढाल तीसरी

गरबा—म्हारो वालोजी वसे विमलाचले रे, ए राह

प्रभु जगजीवन जिनराजजी रे, राय सिद्धारथ कुलचन्द

प्रभु अष्ट करम दल जीतीने रे, पाये अविचल परमानन्द ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ केवलज्ञान लही उपदेशीया रे, प्रभु तारनतरन जहाज । चउद सहस्र मुनिपति सेवीये रे, उपकारी गरीबनिवाज ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ लख ओगणसाठ सहस्र श्राद्धना रे, नायक जगवल्लभ जिनराज । आनन्दादिक श्रावक मोटका रे, सारधा व्रत पाली निजकाज ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ बीजो अणुव्रत प्रभुमुख उचरी रे, करे अलिक बचन पचक्खाण । मोटा झूठ तजी पच मोटका रे, पाले व्रती श्रावक जिन आण ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ कन्यालिक गोवालिक भूम्यलिक कयारे, नासावहार कूडी साक्षीना त्याग । यावज्जीव ए झूठ लवे नहीं रे, जिनधर्मसुं अति अनुराग ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ मिथ्या आल देवे कोइ जन प्रते रे, करे प्रगट बीजानो विचार । स्वस्त्रीगुह्य प्रकाश ए तीसरो रे, कूडबुद्धि कूडलेह अतिचार ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ जाणे पण अतिचार न आदरे रे, मिथ्या दुष्कृत्य जाण अजाण । लघु झूठ न बोलवा खप करे रे, श्रावक सरधाधारी सुजाण ॥ प्रभु ॥ ७ ॥ नर झूठा को नहीं आदर करे रे, जाणे लंपटी माने न वात । जो सत्य वयण कबु उचरे रे, जाणे जमजनयो मिथ्यात ॥ प्रभु ॥ ८ ॥ मिश्र वयण वसुराय भाखीयो रे, सह्यो दु ख गति नर्कनी पाम । तस्कर वकचूले व्रत पालियो रे, तिण भव सुख परभव

सुरधाम ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ राय हंस निज प्राण भी जावता रे, नवि कीनो झूठ प्रलाप। राय हरिश्चन्द्र सत्य नवि छंडीयो रे, पामी राज टल्यो संताप ॥ प्रभु० ॥ १० ॥ सत्य कथनी की जग तुलना नहीं रे, मृषावादी जग में अनेक। जिनवाणी पाप विडारणी रे, पूजी भावना भावो विवेक ॥ प्रभु० ॥ ११ ॥ प्रभु तुझ शासन शोभा घणी रे, वहेसे वर्ष इकवीश हजार। साधु साधवी श्रावक श्राविका रे, संघ चउविह जय २ कार ॥ प्रभु० ॥ १२ ॥ प्रभु तुंही जगदीश्वर साहिबो रे, सूरिराजेन्द्र साचो दयाल ॥ पूजूं वासक्षेप सुगंधसुं रे, पावुं हर्षविजय शिवमाल ॥ प्रभु० ॥ १३ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम्।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम्।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय वासः क्षेपं समर्पयामि स्वाहा ॥

तृतीय अणुव्रते चतुर्थ पुष्पमाल पूजा

दोहा

पण अतिचार अदत्तना, टालो श्रद्धावंत ।
इस भव जगकीर्ति पवे, सुखस्वर्गादि लहंत ॥

ढाल चौथी

मुलकामें चावो, वीरथ धरकाणो पारसनाथजी, ए राह

जगनिन्दक चोरी, श्रावक परिहरिये व्रत तीसरे ॥ ज० ॥ टेक ॥ परउपकारी वीरजिनेश्वर, उचरावे व्रत सार । निरतिचारपणे जे पाले, पावे सुख श्रीकार रे ॥ जग० ॥ १ ॥ चोरी जारी जगमें खोटी, जाणे जग संसार । पवे सोहि नर चतुर नहिं तो, जगजन दे धिक्कार रे ॥ जग० ॥ २ ॥ चोरी को धन रहे न घर में, दुःखी सदा रुलियार । धक्का खावे राजपुरुष का, छड़ी कोरड़ा मार रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ नहीं करे विश्वास चोर को, आणे दे नहीं द्वार । निकट न बैठे तस्कर जनके, वरो अदत्त परिहार ॥ जग० ॥ ४ ॥ जन्म विताचे दुःख से परभव, पामे कष्ट अपार । थूल अदत्त तजो व्रत तीजे, सुश्रावक निरधार रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ खात पाड़ पर गांठ खोल पर, ताले कुंजी पेमार । भूमि पड़ी वस्तु

उचके और, पथ लटे नरनार रे, ॥ जग० ॥ ६ ॥ अदत्त अणुव्रतना जिनवरजी, पंच कह्या अतिचार । जाणे पिण नहीं श्राद्ध आचरे, पामे भवनो पार रे ॥ जग० ॥ ७ ॥ चोरी वस्तु ग्रहण करे, करे चोरों से व्यवहार । राजनिरुद्ध कूडतुल कूडमाणे, तत्प्रति रूप निवार रे ॥ जग० ॥ ८ ॥ पण अतिचार कह्या संक्षेपे, सूत्रे लहो विस्तार । सप्तम अंगे महावीरजी, दश श्रावक अधिकार रे ॥ जग० ॥ ६ ॥ प्रभु पूजा सुखकारी भाषी, पूजो भाव उदार । पुष्पमाल प्रभु कंठे थापी, कर लो भव निस्तार रे ॥ जग० ॥ १० ॥ 'लखमी-पुंज' इण व्रतसु सुखीयो, गयो सुरलोक मझार । सूरिराजेन्द्र प्रभु वीरकी वाणी, सुणे 'हर्ष' अति प्यारजी ॥जग०॥११॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पमालां समर्पयामि स्वाहा ।

तृतीय अणुव्रते चतुर्थ पुष्पमाल पूजा

दोहा

पण अतिचार अदत्तना, टालो श्रद्धावंत।
इस भव जगकीर्ति वधे, सुखस्वर्गादि लहंत ॥

ढाल चौथी

मुलकामें चावो, तीरथ वरकाणां पारसनाथजी, ए देशी

जगनिन्दक चोरी, श्रावक परिहरिये व्रत तीसरे ॥ ज० ॥ टेक ॥ परउपकारी वीरजिनेश्वर, उचरावे व्रत सार। निरतिचारपणे जे पाले, पावे सुख श्रीकार रे ॥ जग० ॥ १ ॥ चोरी जारी जगमें खोटी, जाणे जग संसार। बचे सोहि नर चतुर नहिं तो, जगजन दे धिक्कार रे ॥ जग० ॥ २ ॥ चोरी को धन रहे न घर में, दुःखी सदा रुलियार। धक्का खावे राजपुरुष का, छड़ी कोरड़ा मार रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ नहीं करे विश्वास चोर को, आणे दे नहीं द्वार। निकट न बैठे तस्कर जनके, करो अदत्त परिहार ॥ जग० ॥ ४ ॥ जन्म वितावे दुःख से परभव, पामे कष्ट अपार। थूल अदत्त तजो व्रत तीजे, सुश्रावक निरधार रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ खात पाड़ पर गांठ खोल पर, ताले कुंजी वेसार। भूमि पड़ी वस्तु

उचके और, पथ लटे नरनार रे, ॥ जग० ॥ ६ ॥ अदत्त अणुव्रतना जिनवरजी, पंच कह्या अतिचार । जाणे पिण नहीं श्राद्ध आचरे, पामे भवनो पार रे ॥ जग० ॥ ७ ॥ चोरी वस्तु ग्रहण करे, करे चोरों से व्यवहार । राजनिरुद्ध कूडतुल कूडमाणे, तत्प्रति रूप निवार रे ॥ जग० ॥ ८ ॥ पण अतिचार कह्या संक्षेपे, सूत्रे लहो विस्तार । सप्तम अंगे महावीरजी, दश श्रावक अधिकार रे ॥ जग० ॥ ६ ॥ प्रभु पूजा सुखकारी भाषी, पूजो भाव उदार । पुष्पमाल प्रभु कंठे थापी, कर लो भव निस्तार रे ॥ जग० ॥ १० ॥ 'लखमी-पुंज' इण व्रतसु सुखीयो, गयो सुरलोक मझार । सूरिराजेन्द्र प्रभु वीरकी वाणी, सुणे 'हर्ष' अति प्यारजी ॥जग०॥११॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पमालां समर्पयामि स्वाहा ।

चतुर्थ मैथुन अणुव्रते पञ्चम दीपक पूजा

दोहा

तारा में शशि ओपतो, तिम व्रतमा मैथून ।
नमे हरि ब्रह्मचारीने, लहे जग शुद्ध शकून ॥ १ ॥
केवलज्ञानाभाग से, श्रुत दीपक उद्योत ।
दीपक पूजा भवि करो, हरो अज्ञान खद्योत ॥ २ ॥

ढाल पाचमी

गरबा हरि आवजो मदरिये रंग माणवा रे, ए राह

वाणी वीर प्रभुनी सोहामणी रे, भवसायर पार उतारणी रे ॥ वा० ॥ टेक ॥ मन विना रोहिणिया तस्कर सुखी रे, लही चतुराइ अभयकुनरतणी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ चंडकोशिक अहि अति क्रोधियो रे, उपदेश देइ प्रतिबोधियो रे ॥ सती चन्दनबालाने पारखी रे, कीनी प्रभु तमे निज सारिखी रे ॥ वा० ॥ २ ॥ उपदेशी दुःखीने सुखीया किया रे, विप्र दलिद्रीना दुःख भंजिया रे ॥ इम अनेक जनने उद्धरचा रे, सुम म्हेर से कारज सुधरचा रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तूर्य महाव्रत महिमा लाखिणी रे, अंग सप्तम दश श्रावक भणी रे । इत्थी जातिना त्यागी मुनीश्वरा रे, महाव्रतधारी मेहूण त्यागी खरा रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ परनारीना त्यागी प्राणीया रे,

षटदर्शने जेने वखाणीया रे । परदारा ना त्यागी व्रतधरा रे । स्वदाराभोगी अनुव्रती खरा रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ विधवा बाल-कुंवारी वैश्यादिके रे, द्रव्य देइ राखे सांकेतिके रे ॥ पर-विवाह करावे कुचेष्टा करे रे, तीव्र राग आलिंगन आदरे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ टाले श्रावक पंच अतिचारने रे, स्वस्त्री-संतोषी रहे सुविचारीने रे ॥ शीले मणिधर फूलमाला हुवे रे, विष अमृत वही जल थल कुवे रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ व्रत-पालकने सुरपति नमे रे, देवसहाय रहे आनन्द में रे ॥ हरि सीता सती ने लंकापति रे, भवि जाणो तेनी हुइ शी गति रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ इण व्रतसु सुखी मदिरावती रे, शील सुरंगी जग सोला सती रे ॥ प्रभु वीर मारग तुझ निर्मलुं रे, शील पाले ते नर जगमें भलुं रे ॥ वा० ॥ ९ ॥ जग ईशने शीश नमावसुं रे, पंचक दीपक पूजा शुद्ध भावसुं रे । प्रभु नभमणि साँचो तु धणी रे, सूरिराजेन्द्र हर्ष कीरति घणी रे ॥ वा० ॥ १० ॥

काव्य और । त्र

द्विविधविमलधर्म, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।

ओं ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

पञ्चम अणुव्रते छट्ठी धूप पूजा

दोहा

परिग्रहनी ममता तजी, करिये भवि परिमाण।
धूपे जिनवर पूजीये, हरिये दुरित अन्नाण॥ १॥

ढाल छठी

महावीर प्रभु घर आवे, ए राह

जगवल्लभ श्रीजिनराया, माता त्रिशलाराणीना जाया।
तुम सरिखो देव न दीठो, प्रभु शासन लागे मीठो रे।
"जगजीवन पर उपकारी, शमदम गुण ज्ञानकी क्यारी रे
॥ ज०" ॥ टेक ॥ १ ॥ तुझ करणी भवदुःखहरणी, जस
महिमा जावे न वरणी। हुं कर्मबंधनथी खपीयो, जन्ममरणना
दुःख में फसीयो रे ॥ जग० ॥ २ ॥ परिग्रह ममता नहीं
छोडी, लीधा व्रत पच्चक्खाणने तोडी। धन कुटुम्ब हाथ
हवेली, मोहवश जिननामने भूलो रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ आर्त
रौद्रमा मरण में लीधा, विषधर होय फुं फुं कीधो। इम
काल अनंत गमाया, नहीं शान्ति ठाण में पाया रे ॥जग०॥

॥ ४ ॥ नवविध परिग्रह परिमाण, कीधा नहीं गुरु मुख पच्चक्खाण । कंचन कामिनी अधिक वखाणी, नहीं सांभली प्रभु ! तुम वाणी रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ लखमी हेते करी नीच सेवा, थयो रसीयो हुं परधन लेवा । असंतोषथी अंते दुःखीयो, मुक्तिस्थान देइ करो सुखीयो रे ॥ जग० ॥ ६ ॥ लोभे धवल कोसंबीवासी, भयो सप्तम नरक निवासी । कीधा मम्मण नरक में वासो, चक्री सुंभूम लयो दुःख खासो रे ॥ जग० ॥ ७ ॥ आनन्दादिक व्रत लेइ पाले, परिग्रह मान दूषण सहु टाले । गुणश्रेणी चढे पुण्यवंत, तुम म्हेरसु श्रीभगवंत रे ॥ जग० ॥ ८ ॥ तिम परिग्रहपरिमाण में धारुं, संबंधी सहु दोष निवारुं । परिमाणथी अधिको न राखुं, धनसार परे सुख चाखुं रे ॥ जग० ॥ ९ ॥ परिमाणथी होवे जो अधिको, सुमारग वावरुं लछमीको । धर्म पंथ सुसतक्षेत्रादि, खरचुं तीरथयात्रादि रे ॥ जग० ॥ ॥ १० ॥ भावे धूप कृष्णाभर पूजा, नवि मानुं देव में दूजा । सूरिराजेन्द्र निज पथ साचो, मुनि हर्ष–जिनेश्वर जाचो रे ॥ जग० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥

सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्मद्दियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं समर्पयामि स्वाहा ।

पहिला गुणव्रते सप्तम पुष्प पूजा

दोहा

पहिलो गुणव्रत आदरी, दिशिपरिमाण सुजाण ।
प्रभु वधावो पुष्प सुं, हीये हर्ष अति आण ॥ १ ॥

ढाल सप्तमा

लागो प्रणाम, ए राह

जिनवर श्रीमहावीर, 'तुमको वन्दना करु' ॥ तु० ॥ ॥ टेर ॥ देशविरति ने सर्वविरति धरद्विविध धर्म भाख्या करुणाकर । आराधे जो हलुकर्मी नर, तोडे कर्म जंजीर ॥ तुमको० ॥ १ ॥ ग्यारह पडिमाधर सुश्रावक, आनन्दादिक व्रतना पालक । देइ गुणव्रत जिनराज प्रभावक, धीर-वीर-गंभीर ॥ तु० ॥ ऊर्ध्व अधो तिर्यग् दिशिमाण, व्रत लेइ पाले जिन आण । टाले पण अतिचार सुजाण, तप जप ध्याने धीर ॥ तु० ॥ ३ ॥ धन्य दिवसघड़ी सफल

वखाणु , पहिलो गुणव्रत हृदये आणु । दिशि व्रत गुणश्रेणी पहिचाणु , जिम लहुं भवोदधि तीर ॥ तु० ॥ ४ ॥ पुरुषोत्तम उत्तम गुणधारी, ठवणा थारी जन हितकारी । विरचु कुसुमपूजा जयकारी, टले कर्म की पीर ॥ तुमको० ॥ ५ ॥ गमनागमन हिंसाको टालु , क्षेत्र वृद्धि तजी व्रत उजवालुं । प्रमाद छोड़ी सीमा पालु , निर्मल गंगानीर ॥ तुमको० ॥ ॥ ६ ॥ दिशिव्रत विन जग खूब डूलायो, चारुदत्त महादुःख पायो । व्रत लेइने स्वर्ग सिधायो, तत्त्व लयो आखीर ॥ तुमको० ॥ ७ ॥ प्रभु तुझ शासन आनंदकारी, इकवीश सहस्र वर्ष जयकारी । सूरिराजेन्द्र परम उपकारी, हर्ष कहे जाहीर ॥ तुमको० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्म , श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेजिनेन्द्राय पुष्पाणि समर्पयामि स्वाहा ।

सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुपन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं समर्पयामि स्वाहा ।

पहिला गुणव्रते सप्तम पुष्प पूजा

दोहा

पहिलो गुणव्रत आदरी, दिशिपरिमाण सुजाण ।
प्रभु वधावो पुष्प सुं, हीये हर्ष अति आण ॥ १ ॥

ढाल सप्तमा

लाखों प्रणाम, ए राह

जिनवर श्रीमहावीर, 'तुमको वन्दना करु'' ॥ तु० ॥ ॥ टेर ॥ देशविरति ने सर्वविरति धरद्विविध धर्म भाख्या करुणाकर । आराधे जो हलुकर्मी नर, तोडे कर्म जंजीर ॥ तुमको० ॥ १ ॥ ग्यारह पडिमाधर सुश्रावक, आनन्दादिक व्रतना पालक । देइ गुणव्रत जिनराज प्रभावक, धीर-वीर-गंभीर ॥ तु० ॥ ऊर्ध्व अधो तिर्यग् दिशिमाण, व्रत लेइ पाले जिन आण । टाले पण अतिचार सुजाण, तप जप ध्याने धीर ॥ तु० ॥ ३ ॥ धन्य दिवसघड़ी सफल

रे–हो० जग० सप्तम० ॥ ४ ॥ इंगाल वण साडी भाडी रे, हो० । फोडी कर्म राचो अनाडी रे–हो० ॥ दंत लक्ख रस केस व्यापारे रे–हो० । विष वाणिज्य पाप न वारे रे ॥ हो० जग० ॥ सप्तम० ॥ ५ ॥ यंत्रपीलण हिंसा मोटी रे हो० जग० । निर्लांछन किरिया खोटी रे हो० । दावानल वनमें दीधा रे–हो० जग० । कूप द्रह जल शोषण कीधा रे–हो० जग० ॥ सप्तम० ॥ ६ ॥ पोपटादि पिंजर घाली रे, हो० । हिंसक जीवोने पाली रे हो० ॥ असतिपोषण अघ भारी रे हो० । कर्म्मादान पन्नर न विचारी रे–हो० ॥ सप्तम० ॥ ७ ॥ कृत्याकृत्येन में न विलोकी रे हो० । जाणो छो नाथ त्रिलोकी रे–हो० ॥ अब शरण तुम्हारे आयो रे हो० जग० । गुणव्रत बीजो मन भायो रे हो० ॥ सप्तम० ॥ ८ ॥ आनन्द परे व्रत पालूं रे–हो० । अतिचार पन्नर–पंच टालूं रे–हो० । अष्ट मंगल आगल मूकुं रे–हो । भावे पूंजुं नवि चुकुं रे ॥ हो० सप्तम० ॥ ९ ॥ व्रत लीधो धर्मकुंवारे रे हो० । व्याधी हरी कारज सारे रे–हो० । कर्म रोग लग्यो मुझ लारे रे हो० ॥ प्रभु तुम विन कोन उधारे रे ? हो० ॥ सप्तम० ॥ १० ॥ जिन शासन पुण्यप्रभावे रे हो० । सद्गुरु संजोग सुहावे रे–हो० ॥ सूरिराजेन्द्र देर न कीजे रे हो० । मुनि–हर्षने थिर सुख दीजे रे ॥ हो० ॥ सप्तम० ॥ ११ ॥

द्वितीय गुणव्रते अष्टम अष्टमङ्गल पूजा
दोहा

अष्ट कर्म हणवा भणी, भाव मङ्गल प्रभु ध्यान ।
अष्ट मंगल आगे ठवी, पूजो तजी अभिमान ॥१॥
गुणव्रत बीजे भविलहो, उपभोग परिभोग ।
पण पन्नर अतिचारने टाली हरो भव रोग ॥२॥

ढाल आठवी
सिद्धाचल शिखरे दीवो रे, ए राह

सप्तम श्रावक व्रत धारु रे, हो जगतारक जिनवरजी ।
व्रत पाली कारज सारु रे, हो जग० ॥ टेक ॥ बोधिरयण -
मति मुझ दीजो रे–हो जग० ॥ १ ॥ जग खाद्य पदारथ
विध विध रे, हो जग० । अभक्ष भक्षण में कीध रे ॥हो०॥
बावीश बत्तीसना भक्षण रे, हो० । जिनमत नवि कीधो
निरक्षण रे ॥ हो० ॥ तोपिण नहीं हुइ मुज तृप्ति रे, हो० ।
करी भोजन सारु विनति रे–हो० ॥ सप्तम० ॥२॥ उपभोगे
राचीमाचो रे, हो० । परिमाण न कीधो साचो रे–हो० ॥
परिभोग मर्यादा न लीधी रे–हो० । भोग रोग लग्यो नवि
सिद्धि रे–हो० जग० ॥ सप्तम० ॥ ३ ॥ चउद नियम नवि में -
धारया रे–हो० । धारया तो नवि संभारया रे–हो०जग० ॥
कीधो निशिभोजन रंग रे हो० । अधर्मी मित्रोनी संगे

रे—हो० जग० सप्तम० ॥ ४ ॥ इंगाल वण साडी भाडी रे, हो० । फोडी कर्मे राचो अनाडी रे—हो० ॥ दंत लक्ख रस केस व्यापारे रे—हो० । विष वाणिज्य पाप न वारे रे ॥ हो० जग० ॥ सप्तम० ॥ ५ ॥ यंत्रपीलण हिंसा मोटी रे हो० जग० । निर्लांछन किरिया खोटी रे हो० । दावानल वनमें दीधा रे—हो० जग० । कूप द्रह जल शोषण कीधा रे—हो० जग० ॥ सप्तम० ॥ ६ ॥ पोपटादि पिंजर घाली रे, हो० । हिंसक जीवोने पाली रे हो० ॥ असतिपोषण अघ भारी रे हो० । कर्म्मादान पन्नर न विचारी रे—हो० ॥ सप्तम० ॥ ७ ॥ कृत्याकृत्येन में न विलोकी रे हो० । जाणो छो नाथ त्रिलोकी रे—हो० ॥ अब शरण तुम्हारे आयो रे हो० जग० । गुणव्रत बीजो मन भायो रे हो० ॥ सप्तम० ॥ ८ ॥ आनन्द परे व्रत पालूं रे—हो० । अतिचार पन्नर—पंच टालूं रे—हो० । अष्ट मंगल आगल मूकुं रे—हो । भावे पूंजुं नवि चुकुं रे ॥ हो० सप्तम० ॥ ९ ॥ व्रत लीधो धर्मकुंवारे रे हो० । व्याधी हरी कारज सारे रे—हो० । कर्म रोग लग्यो मुझ लारे रे हो० ॥ प्रभु तुम बिन कोन उधारे रे ? हो० ॥ सप्तम० ॥ १० ॥ जिन शासन पुण्यप्रभावे रे हो० । सद्गुरु संजोग सुहावे रे—हो० ॥ सूरिराजेन्द्र देर न कीजे रे हो० । मुनि—हर्षने थिर सुख दीजे रे ॥ हो० ॥ सप्तम० ॥ ११ ॥

द्विविधविमल धर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, सुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥
ओं ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनि-
वारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अष्टमंगलं समर्पयामि स्वाहा ।

तृतीय गुणव्रते नवम अक्षत पूजा
दोहा

अनर्थदंड व्रत आठमो, स्वपर अर्थ विचार ।
गुणव्रत तीजो आदरो, पालो निरतिचार ॥ १ ॥
वँधे कर्म अकारणे, जाणो बुद्धिवन्त ।
भाषा शब्द विचारीने, तजो मिथ्यात्व एकान्त ॥

ढाल नवमी

आसावरी पूजो भवि सत्तम, ए राह

जगपति एक तुम नाम आधार, भव भटकत पायो न पार ॥ जग० ॥ टेक ॥ भव फेरी मेरी अब मेटो, करुणा धारी स्वामी । शरणागतने निज पद देइ, करदो भव विस-

रामी ॥ जग० ॥ १ ॥ विकथा ने परनिंदा करी, आर्त्त रौद्र में काल गमाया। कुतुहल करी परजीव दुखायो, वृथा योग लड़ाया ॥ जग० ॥ २ ॥ तीजो गुणव्रत उदय न आयो, नहीं धर्मध्यान सुहाया। कामभोगादि कथा करी खोटी, नहीं कुछ हस्ते आया ॥ जग० ॥ ३ ॥ अघटित वचन उचारी परस्पर, वाते वृषभ दोड़ाया। श्वान कुक्कड़ ने महिष लडाई, पापोपदेश सुनाया ॥ जग० ॥ ४ ॥ ऊंखल मूसल असि प्रमुख अधि,-करणनो संचय कीधो। धोवण न्हावण नाटक देखण, आदेश उपदेश दीधो ॥ जग० ॥ ५ ॥ अनरथदंडथी हुं नहीं डरियो, आलोया नहीं अतिचार। निरवद्य प्रभु उपदेश सुणीने, जाण्यो धर्मनो सार ॥ जग० ॥ ६ ॥ अष्टम श्रावक गुणव्रत लेइ, दोष रहित हुँ पालूं। जिनपूजा कर भावना भाउं, कीधा पाप सँभालू ॥ जग० ॥ ७ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफल सु वधाऊं, अक्षत पूजा रचाऊं। सुरसेन महासेन परे सुखभोगी, भव भव भ्रमण मिटाऊं ॥ जग० ॥ ८ ॥ प्रभुमहिमा वर्णवी सूरिराजेन्द्र, शासन शोभा वधारी। श्रीजिनवीरजी हर्ष-विजयने, दो शिव सम्पत्ति सारी ॥ जग० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं श्राद्धवर्यस्य सूक्तम्।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥

सुरतरुमिवलोके, यो धरेत्सद्वियेयम् ।
व्रजति स हि सुवन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा ।

नवम सामायिक (प्रथम शिक्षा) व्रते

दशम दर्पण पूजा

दोहा

आरिसो लही हाथमां, निर्मल प्रभु तुझ ज्ञान ।
दर्पण पूजा भावसुं, करी तजो अज्ञान ॥ १ ॥
नवमे सामायिक व्रते, जाणो आत्मस्वरूप ।
चरतो संवर भावमें, सामायिक तद्रूप ॥ २ ॥

ढाल दशमी

जीया चतुर सुजान नवपद के गुण गाय रे, ए राह

उपकारी महावीर–पूज्यां अचल सुख थाय रे ॥ टेक० ॥
आनंदादिकने उपदेशी, नवमुं व्रत समझाय रे–उप० ॥ १ ॥
शिक्षाव्रत पहिलो सामायिक, आदरे पाप पलाय रे–उप० ॥ २ ॥ दोष बत्रीश रहित सामायिक, दोय घडी चित्त लाय रे ॥ उप० ॥ ३ ॥ विधिपूर्वक गुरु वन्दन करीने, सामायिक

व्रत ठाय रे ॥ उप० ॥ सामायिक शुभ ध्यान संवरमां, अन्तर्मुहुर्त्त विताय रे ॥ उप० ॥ ५ ॥ पण अतिचार सामायिक व्रतना, टालवा बुद्धि जमाय रे ॥ उप० ॥ ६ ॥ व्रत लेइ तजे सावद्य कामा, सामायिक सुपसाय रे ॥ उप० ॥ ७ ॥ सर्वविरति होने को कारण, देशविरतिपणुं आय रे ॥ उप० ॥ ८ ॥ श्रेणिक नृप श्रावक पूणयाघर, लेवा सामायिक जाय रे ॥ उप० ॥ ९ ॥ श्रावक भणे जो जिनवर भाषे, आपो राजगृही राय रे ॥ उप० ॥ १० ॥ वाणी सुणी श्रेणिक महावीर की, मूल्य न आपी सकाय रे ॥ उप० ॥ ११ ॥ सामायिकनो फल महामोटो, भव तरवानो उपाय रे ॥ उप० ॥ १२ ॥ केशरी तस्कर संवर भावे, केवली कर्म खपाय रे ॥ उप०॥१३॥ माठूं विचार अनादर करवुं, आदि दोष हठाय रे ॥उप०॥१४॥ प्रभु आगम आदर्श विलोकी, दर्पण पूजा सुखदाय रे ॥ उप० ॥१५॥ जिनशासन सूरिराजेन्द्र सरधा, हर्षविजय गुण गाय रे ॥ उप० ॥ १५ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

सुरतरुमिवलोके, यो धरेत्सद्वियेयम् ।
मजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा ।

नवम सामायिक (प्रथम शिक्षा) व्रते

दशम दर्पण पूजा

दोहा

आरिसो लही हाथमां, निर्मल प्रभु तुझ ज्ञान ।
दर्पण पूजा भावसुं, करी तजो अज्ञान ॥ १ ॥
नवमे सामायिक व्रते, जाणो आत्मस्वरूप ।
चरतो संवर भावमें, सामायिक तद्रूप ॥ २ ॥

ढाल दशमी

जीया चतुर सुजान नवपद के गुण गाय रे, ए राह

उपकारी महावीर–पूज्यां अचल सुख थाय रे ॥ टेक० ॥
आनंदादिकने उपदेशी, नवमुं व्रत समझाय रे–उप० ॥ १ ॥
शिक्षाव्रत पहिलो सामायिक, आदरे पाप पलाय रे–उप०
॥ २ ॥ दोष बत्रीश रहित सामायिक, दोय घडी चित्त लाय
रे ॥ उप० ॥ ३ ॥ विधिपूर्वक गुरु वन्दन करीने, सामायिक

पूजो० ॥ ते दिन प्रतिऊणो करे रे, भापे जिन जयकार-
पूजो० ॥४॥ श्रावकव्रत पूर्व लिया रे, कीधा जे परिमाण ॥
चउद नियममां सर्वनो रे, करे संक्षेप सुजाण-पूजो० ॥५॥
मुहूर्त्त दिवस निशि पख तणो रे, मास वरस सांकेत पूजो०॥
पच्चक्खाण यथेच्छा करे रे, संवर निर्ज्जर हेत-पूजो० ॥६॥
शिक्षाव्रत बीजे कह्या रे, टाले पण अतिचार-पूजो० । आन
यन पेसवण तथा रे, सद्दाणुवाइ विचार-पूजो० ॥ ७ ॥
रूपानुपातिक तूर्यमो रे, पुग्गल पक्खेव निवार-पूजो० ॥
जयणायुत व्रत पालता रे, धन श्रावक अवतार ॥पूजो०॥८॥
सुमित्र मन्त्री व्रते रह्यो रे, प्रतिहारी तजी काय-पूजो० ॥
धनद लयो सुख शाश्वतो रे, आठों कर्म खपाय-पूजो० ॥
देशावगासिक व्रत ग्रह्यो रे, आनन्दादिक जेह-पूजो ॥ सूरि-
राजेन्द्रजी राखजो रे, हर्षविजय सुस्नेह ॥ पूजो० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-
रणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दर्पणं समर्पयामि स्वाहा ॥

दशम देशावगासिक (द्वितीय शिक्षाव्रते)

एकादशमी नैवेद्य पूजा

दोहा

भाँति भाँति नैवेद्य ले, उज्ज्वल भाव उदार ।
अखाद्य पद सुख थान दो, मुझ आतम आधार ॥
दश में देशावगासिके, करे नियम संक्षेप ।
करे ऊणा परिणामसु, तजे कुबुद्ध आक्षेप ॥ २ ॥

ढाल ११ मी

साहेब शिव वसीया, ए राह

सुरतरु चिंतामणि प्रभु रे, चित्रावेल समान—पूजो नर-नारी ॥ विविस प्रकारे पूजीये रे, आगममांहे विधान—पूजो नरनारी ॥ १ ॥ शासनपति महावीरजी रे, साचो देव दयाल—पूजो० । देशावगासिक व्रततणो रे, दे उपदेश रसाल—पूजो० ॥ २ ॥ गंठसी पोरसी आदिना रे, जेह करे पच्चक्खाण—पूजो० उपभोगपरिभोगादिनु रे, संक्षेप करे जे जाण—पूजो० ॥३॥ जिम [illegible] करी रे, देशथकी स्वीकार—

अहरे, संथारो संथरिये रे ॥ पोसा० ॥ ५ ॥ करे नहीं सत्कार वपुनो, रहे ब्रह्मचरिये रे । सर्वथकी व्यापारने त्यागी, आत्म उद्धिरिये रे ॥ पोसा० ॥ ६ ॥ पंच तजी अतिचार ए व्रतना, अघथी डरिये रे । उत्कृष्टो पोसो करी झीलो, सुमता दरिये रे ॥ पोसा० ॥ ७ ॥ शिवानंदापति ने श्रीमहावीर हित करिये रे । रणसुर परे व्रत पाली, सुरलोके अवतरिये रे ॥ पोसा० ॥ ८ ॥ सूरिराजेन्द्र प्रभु वीरजिणंदने, कबु न विसरिये रे । हर्षविजय शिवसम्पत्ति पामे–शिव-मन्दिरिये ॥ पोसा० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति सहि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय ध्वजं समर्पयामि स्वाहा ।

इग्यारमे पोषधव्रत (तृतीय शिक्षाव्रत)

द्वादशमी–ध्वजपूजा

दोहा

प्रधान छे सहु धर्ममां, जिनमत ध्वजा समान ।
ध्वज पूजा करो भविजना, पावो सन जगमान ॥१॥
धर्म पुष्ट पोसो करो, विकथा चार निवार ।
तजि पच अतिचारने, गुणव्रत तीजो धार ॥२॥

——

लोभी नहीं विचारी रे, ए राह

पोसानो व्रत करिये रे, जिनपूजा कर पोषधशाले पोसो उचरिये ॥ पोसा० ॥ टेक ॥ पर्वने दिवसे घर आरम्भ तज, धर्म आदरिये रे । पर्वे गतिनो प्राये बंध हो, मनमा धरिये रे ॥ पोसा० ॥ १ ॥ पोषधव्रत कह्यो चार प्रकारे, करि भव तरिये रे । आहार शरीर ब्रह्मचर्य ने अव्यावार समरिये रे॥पोसा० ॥ २ ॥ आहार पौषधना दोय भेद, आगम अनुसरिये रे । देश सर्वथकी पर्वतिथिये, व्रत आचरिये रे ॥ पोसा० ॥३॥ देशथकी त्रण आहारने त्यागी, पातिक हरिये रे । जघन्य एकासण व्रत करी, रही ध्यान सवरिबे रे ॥ पोसा० ॥४॥ सर्वथकी उपवासे असणादिक परिहरिये रे । मुनिपरे चउअठ

अहरे, संथारो संथरिये रे ॥ पोसा० ॥ ५ ॥ करे नहीं सत्कार वपुनो, रहे ब्रह्मचरिये रे । सर्वथकी व्यापारने त्यागी, आत्म उद्धिरिये रे ॥ पोसा० ॥ ६ ॥ पंच तजी अतिचार ए व्रतना, अघथी डरिये रे । उत्कृष्टो पोसो करी झीलो, सुमता दरिये रे ॥ पोसा० ॥ ७ ॥ शिवानंदापति ने श्रीमहावीर हित करिये रे । रणसुर परे व्रत पाली, सुरलोके अवतरिये रे ॥ पोसा० ॥ ८ ॥ सूरिराजेन्द्र प्रभु वीरजिणंदने, कबु न विसरिये रे । हर्षविजय शिवसम्पत्ति पामे-शिव-मन्दिरिये ॥ पोसा० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति सहि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय ध्वजं समर्पयामि स्वाहा ।

बारमे अतिथि संविभाग (चतुर्थ शिक्षाव्रत)

त्रयोदशमी—फलपूजा

दोहा

अतिथिसंविभाग व्रत, सुपात्र जिन अणगार ।
निरतिचारे दान दे, पामो फल श्रीकार ॥ १ ॥
उत्तम फल पूजा करो, सविधि श्रीजिनराज ।
फल पामो सुखशाश्वता, तारो भवोदधि जहाज ॥ २ ॥

ढाल त्रयोदशमी

वीरा ईसरजी कहवे वो हम से बोलणा रे, ए राह

भवियों ! उत्तम नरभव पामी लाहो लीजिये रे । निर्मल भावे दान सुपात्र मुनिने दीजिये रे ॥ भवियों० ॥ टेक ॥ कर जोड़ीने भावना भावो, मुनिवरने निज घर पर लावो । सुझतो आहार जल वहेरावो, लाभ अखूट कमावो आतम उज्ज्वल कीजिये रे ॥ भ० ॥ १ ॥ व्यपदेश मत्सरदान टालीजे, सचित्त निक्खेवण नवि कीजे । विहिणे सचित्त पिण नवि रीजे, कालातिक्रमदाणे अइयार पंच टालीजिये रे ॥ भ० ॥ २ ॥ अतिथिसंविभाग व्रत पालो, चोथो

शिक्षाव्रत संभालो। अतिथि पात्र पड़े सोही खालो, धारी सुमता शान्तसुधारस अमृत पीजिये रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ पोसहपारणे मुनि को जोग, नहिं तो दिशि सामुं देइ धोग। भावे भावना शुद्ध उपयोग, समपरिणामे रहिये श्रावक पण नवि खीजिये रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ उपसर्गे पण व्रत नहीं चूके, महावीर भक्त आनन्दादिके। व्रत पाली वसिया सुरलोके—आखिर विदेह क्षेत्र लइ संयम, कारज सीझिये रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ जिनदत्त दीधो मुनिने दान, सुखी होय पायो जग सन्मान। अंते लेखे अमर विमान, श्रीमन्महावीरकी वाणीसे भवि रीझिये रे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ शुभ करणी शुभ फल की देणी, सुरतरु वांछित फल गुण-श्रेणी, सूरिराजेन्द्र सुशिक्षा लेणी, उत्तम फलपूजा मुनि हर्ष जिनेश्वर पूजीये रे ॥ भवि० ॥ ७ ॥

सर्वोपरि गीत

आवो आवो यशोदाना कंत अम घर०, ए राह

प्रभु शासनपति महाराज, हर्ष वधावो रे, निज शाश्वत सुख अभिराम, चरने दिखावो रे ॥ में काल अनादिनो मित्र, प्रभु न भूलावो रे। सादि अनंत स्थिति में नाथ, मुझने बुलावो रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ शिवगति अवलोकन नाथ अतिहि उमावो रे। चउगतिहर ज्योतिमां ज्योत, नाथ

मिलावो रे ॥ शरणागतने महाराज, पार लगावो रे । प्रभु त्रिशलानन्दन वीर, मुझ घट आवो रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चोधरियण देइने नाथ, मुझ अपनावो रे । मेरी करणी सामुं न देख, पाप पलावो रे ॥ सूरिराजेन्द्र वाणीरूप, अमिय पिलावो रे । मुनि हर्ष ने शिवफल-स्वाद, नाथ चखावो रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

कलश

गाया गाया, महावीर जिनेश्वर गाया, ए राह

पाया पाया, महावीर दरस हम पाया ॥ टेक ॥ सिद्धारथ राजाना नन्दन, त्रिशलाजीना जाया । अवर देवको मैं नहीं इच्छुं, शासनपति सुखदाया ॥ पाया० ॥ ॥ १ ॥ थिरपुरमंडण महावीर छवि, निरख हरख मन भाया । थिरता कीनी चातुरमासे, आनन्दानन्द छाया ॥ पाया० ॥ २ ॥ व्याख्याने 'पन्नवणा' ऊपर, 'पार्श्व-चरित्र' सुहाया । चारित्र विजयादिक मुनि संगे, आणा धारी चाया ॥ पाया० ॥ ३ ॥ वीर-प्रभु आनन्दादिकने, श्रावक कृत्य सुनाया । सप्तम-अंगे श्रावक दशना, अधिकारे दरसाया ॥ पाया० ॥ ४ ॥ संघाग्रहे श्रावक द्वादश व्रत, पूजन भाव जताया । सरधा धारी नरनारी सहु, भक्ति प्रेम जणाया ॥ पाया० ॥ ५ ॥ सोहमवंशे सोमप्रभ मणि,

रत्नसूरीश सवाया । पट्टधर दोयना जगच्चन्द्रसूरि, हिरला पदें ओपाया ॥ पाया० ॥ ६ ॥ अभिग्रही जावज्जीव आयंबील, सूरि तपस्वी कहाया चित्रकोट राणा हरसित हो तपाविरुद धराया ॥ ७ ॥ पाटानुपाट क्षमासूरि तस पट्ट, सूरिदेवेन्द्र दीपाया । सूरिकल्याण प्रमोद प्रतापी, मरुधरी जन गुण गाया ॥ पाया० ॥ ८ ॥ तस पट्टे आबालब्रह्मचारी, भू-तले पूज्य पूजाया । सूरि-विजयराजेन्द्र प्रभावक, क्रियोद्धार कराया ॥ पाया० ॥ ९ ॥ आहोर अंजनशलाका समये, प्रगट प्रभाव बताया । नगर चीरोला जन उद्धारी, जग उपकारी गवाया ॥ पाया० ॥ १० ॥ अंजनशलाका प्रतिष्ठा-कारक, संवेग रंग रँगाया । कोषऽभिधान राजेन्द्रादिक कई, ग्रंथ सूरि निर्माया ॥ पाया० ॥ १२ ॥ तसपट्टे धनचन्द्रसूरीश्वर, धर्म पंथ समझाया । जैनागमके जाण गीतारथ, मिथ्या मति सरमाया ॥ पाया० ॥ १३ ॥ भूप भूपेन्द्रसूरि जस पटधर, शान्त दान्त मुनिराया । राजनगर मुनिसम्मेलनमें, भीनमाल से आया ॥ पाया० ॥ १४ ॥ नव प्रमाणिक सूरीश्वरमां, स्थानिक संघे ठाया ॥ सूरि स्मरण मुनि हर्षविजय व्रत, पूजन मन हुलसाया ॥ पाया० ॥ ॥ १५ ॥ सूरिराजेन्द्र गुरु हस्ते दीक्षा, चरणसु ध्यान लगाया । विजयभूपेन्द्र अतीव कृपासे, ज्ञानानन्द वरसाया ॥ पाया० ॥ १६ ॥ वेद विधि नवचन्द सुवरसे, आश्विन

शुक्ल गणाया । पंचमी थिरवासर थिरपूरमें, मगल तूर धजाया ॥ पाया० ॥ १७ ॥

काव्य और मन्त्र

द्विविधविमलधर्मं, श्राद्धवर्यस्य सूक्तम् ।
जिनवरगणभृद्भिः, शुद्धसम्यक्त्वयुक्तम् ॥
सुरतरुमिव लोके, यो धरेत्सद्धियेयम् ।
व्रजति स हि सुधन्यो, द्वादशे देवलोके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलं समर्पयामि स्वाहा ॥
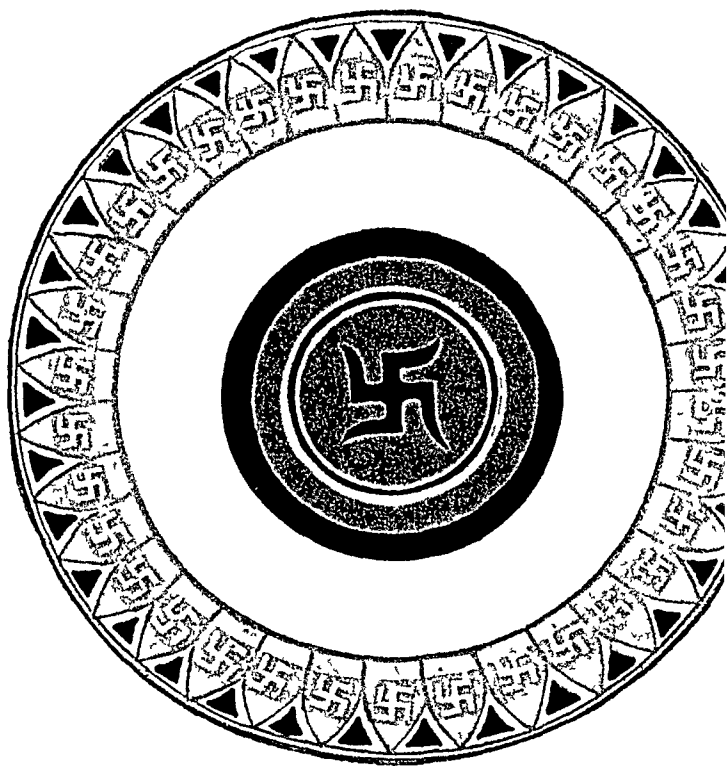
१० श्रीगुरुदेवपूजा–मंडल.

श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वराष्टप्रकारी पूजा विधि

प्रथम त्रिगड़ा रच कर उसमें श्रीसिद्धचक्रजी का धातुमय गट्टा विराजमान करना, उसके सामने एक पाट पर केसर से रंगे हुए चावलों से छत्तीस स्वस्तिक (साथिया) वाला मंडल वनाना और हरएक साथिया ऊपर श्रीफल, सोपारी, सिंगोडा, फल, लोंग, इलायची, वदाम, कोपरावाटकी; आदि वस्तु मेलना। वाद में स्नात्रपूजा भणा कर "श्रीराजेन्द्रसूरीष्टप्रकारी गुरुपूजा" शुरू करना।

प्रथमपूजा—में गंगाजल-मिश्रित सुगंधी जल के आठ कलश लेकर स्नात्रिया को खड़ा रखना और प्रथमपूजा की दोहा सहित ढाल, काव्य तथा मन्त्र भणाये वाद गुरु मूर्ति, या चरण-पादुका पर (गुरुमूर्त्ति या गुरुचरण न हों तो सिद्धचक्रगट्टाजी पर) जल-कलशों से अभिषेक करना। द्वितीयपूजा—में कपूर बरास मिश्रित चन्दन से पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये वाद पूजा करना। तृतीय-पूजा—में सुगंधमय गुलाब, मोगरा, आदि पंच वर्ण पुष्प पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये वाद चढ़ाना। चतुर्थपूजा—में दशांगधूप पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये वाद उखेवना। पंचमपूजा—में आठ बत्तीवाला घृत का दीपक पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये वाद सामने रखना। षष्ठपूजा—में पुष्प मिश्रित केसर से रंगे हुए अखंड चावल सवा सेर पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये वाद चढ़ाना। सप्तमपूजा—में

मोदक, पेड़ा, कलाकंद आदि नैवेद्य पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये बाद चढ़ाना और अष्टमपूजा—में शुद्ध पके हुए श्रीफल, नारंगी, केला, आम, खरबूजा, दाडिम आदि फल पूजा, काव्य-मन्त्र भणाये बाद चढ़ाना। अन्त में पूजाकलश भणाये बाद गुरुगुण-गर्भित-आरति गाते हुए आरति-मंगलदीपक उतार कर जयध्वनि के साथ विदा होना। पूजा भणाने वाले को यथाशक्ति श्रीफलादि प्रभावना, अथवा स्वामिवात्सल्य कराना चाहिये।

श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज रचित

श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वराष्टप्रकारी पूजा

प्रथम जल पूजा, दोहा

वर्द्धमान चौवीशमां, शासनपति शिरताज ।
सद्गुरु पयपंकज नमुं, सारो वांछित काज ॥ १ ॥

पूजा श्रीगुरुराज की, रचना मुझ अभिलाष

सूरिविजय राजेन्द्रजी, प्रगटे दुष्षम काल ।
जग में यश लीनो बहु, गुरुवर गुणमणिमाल ॥ २ ॥
गुण षट्त्रिंशे राजतां, सूरि वर गुण भंडार ।
मुनिमारग ओलखावियो, कर किरिया उद्धार ॥ ३ ॥
प्रतिबोधि नर नार ने, दीधो समकित दान ।
धारी तीनों तत्व ने, श्रद्धा धारी सुजान ॥ ४ ॥
जल[1] चन्दन[2] कुसुमे[3] करी, धूप[4] दीप[5] मनुहार ।
अक्षत[6] वली नैवेद्य[7] फल[8], पूजो अष्ट प्रकार ॥ ५ ॥

अनुक्रम से अड द्रव्य ले, भक्तिभाव उदार ।
गुरु पूजे गुरुपद लहे, पामे सुख श्रीकार ॥ ६ ॥

ढाल १, समृद्धि वृद्धि सिद्धि दे, समिंद शान्ति तुं, ए राह

सुगुरु चरण पूजो पूर्ण प्रेम धारीने, प्रेम धारीने-प्रमाद दूर वारीने ॥ सु० ॥ टेर ॥ अज्ञान अन्ध मेटवा गुरु रवी समान है, सत्य शील धारी गुरु शुद्धाचारीने ॥ सु० ॥ १ ॥ गुरु समान है नहीं उपकारी विश्व में, गुरु कल्पवृक्ष सारिखा कुगुरु निवारी ने ॥ सु० ॥ २ ॥ मू जल तरुवत् सद्गुरु परोपकारी है, शिवमार्ग के दातार ध्यावो जगदाधारी ने ॥ सु० ॥ ३ ॥ निर्मल जल समान ज्ञान ध्यान में प्रवीण, उपदेश देइ अव्रती व्रती किये विचारीने ॥ सु० ॥ ४ ॥ नहीं क्रोध मान माया लोभ विषय वासना, अदोषी गुरु सेवो बाल ब्रह्मचारीने ॥ सु० ॥ ५ ॥ वसुधापे श्रीराजेन्द्रसूरि भूरी जस लियो, दिखायो मार्ग शुद्ध बूझ्या नर रु नारीने ॥सु०॥६॥ जल कलश भरी पूजो सद्गुरु के चरण को, पावो 'यतीन्द्र' पद सौभागी आत्म तारीने ॥ सु० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान-त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्र-सूरिं भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्गुण-

समन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चन्दनपूजा, दोहा

पूजा करो नव अंगनी, घसी केशर घनसार ।
चन्दनसम शीतल गुरु, जिनशासन सिणगार ॥१॥

ढाल २, संवत एक अठलन्तरे रे, जावड़शाहनो उद्धार,
ए राह

अठारासो तिरयासी में रे, जन्म भरतपुर मांय । तिथि सप्तमी मास पोसनी रे, उज्ज्वल पक्ष सुहाय हो सुगुणा ! पूजो सुगन्धित चन्दने रे, मेटवा भव भव फन्दने रे, गुरुगुण गावो रसाल ॥ १ ॥ तात श्रीऋषभदासजी रे, गोत्र पारख ओशवाल । लाड़िला केशरबाईना रे, गुरु वर गुण मणिमाल हो–सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ २ ॥ पुत्र सुलक्षणो जाणिने रे, 'रत्नराज' दियो नाम । नाम जिस्या गुण निवड्या रे, जग जस लहि अभिराम हो–सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ३ ॥ वीश वरस घर में वस्या रे, बुद्धितणा भंडार । मात तात वृद्ध भ्रातनी रे, आणा पालनहार हो–सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ४ ॥ श्रीजिनपूजा भक्तिमां रे, नित्य रहे लयलीन । वाणी सुणे

जिनराजनी रे, विनय विचारे प्रवीन हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ५ ॥ अवगुण तज परगुण लहे रे, उपकारी रत्नराज। संगति सज्जन जन तणी रे, सुधरे सघला काज हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ६ ॥ आयु पूरण मात तातनो रे, जाणी सदानो वियोग। सार नहीं संसारमां रे, थिर नहीं रहे सुख भोग हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ७ ॥ रंग चढ्यो वैरागनो रे, झूंटा सब घर बार। सम्बन्धी सहु स्वारथी रे, स्वारथीयो संसार हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥८॥ जेम नन्दीवर्द्धन भ्रातसे रे, आदेश लह्यो महावीर। तिम माणिकचन्द भ्रातसे रे, कहे रत्नराज गम्भीर हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ९ ॥ वडिलबंधु कहे मोह वसे रे, अब मत दो मुझ छेह। मात पिताना वियोगथी रे, दाझे छे अम देह हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥१०॥ सुखीजन शिवपथ सोधतां रे, पूजो तमे महाभाग। सूरिराजेन्द्र प्रतापथी रे, 'यतीन्द्र' लहे वैराग हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानदानतपोदान-त्रिविधार्थप्रदायकम्। श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावर्त्तकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा, दोहा

पुष्प सुगन्धित मोगरा, चम्पक फूल अमूल ।
पूजो सद्गुरु प्रेमसे, पामो सुक्ख अतूल ॥ १ ॥

ढाल ३, धन धन वो जगमें नर नार, ए राह

जगमें वो नर चतुर सुजान—अथिर संसार के तजनेवाले । संसार को तजनेवाले, गुरुराज को भजनेवाले ॥ ज० ॥ टेर ॥ ॥ १ ॥ आये भरतपुर यतीराज, श्रीप्रमोदविजय महाराज । मिल सघला जैन समाज—गुणीजन गुण के समझनेवाले ॥ ज० ॥ २ ॥ बूझो बूझो नरनार, है यह संसार असार—झूंठा है सब घर बार; नहीं कोइ संग में चलनेवाले ॥ ज० ॥ ३ ॥ जावेगा अकेला आप, संग रहेगा पुन्य अरु पाप । रोवे कुटुम्ब-कबीला बाप-ताप में नहीं कोइ पड़नेवाले ॥ ज० ॥ ४ ॥ सब झूंठी माया जाल, निशि स्वप्न हुवो भूपाल । आखिर जागे तो कंगाल-काल से नहीं कोइ बचनेवाले ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुणि रत्नराज उपदेश, नहीं जग में सुखनो लेश । संबन्धिजन से लही आदेश-यतीवर होके विचरने-वाले ॥ ज० ॥६॥ उगणीसो चार[1] के साल, पंचमी वैशाख

१—कतिपय पुस्तकों में गुरुदेव का दीक्षा संवत् १९०३ और श्रीपूज्य-पद १९२३ में हुआ लिखा है, वो मरुधर—प्रचलित श्रावणादि मास गणना से जानना, क्योंकि मारवाड़ में श्रावणवदि १ को वर्ष बैठता है ।

जिनराजनी रे, विनय विचारे प्रवीन हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ५ ॥ अवगुण तज परगुण लहे रे, उपकारी रत्नराज। संगति सज्जन जन तणी रे, सुधरे सघला काज हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ६ ॥ आयु पूरण मात तातनो रे, आणी सदानो वियोग। सार नहीं संसारमां रे, थिर नहीं रहे सुख भोग हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ७ ॥ रंग चढ्यो वैरागनो रे, फूटा सब घर बार। सम्बन्धी सहु स्वारथी रे, स्वारथीयो संसार हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥८॥ जेम नन्दीवर्द्धन भ्रातसे रे, आदेश लह्यो महावीर। तिम माणिकचन्द भ्रातसे रे, कहे रत्नराज गम्भीर हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ९ ॥ वडिलबंधु कहे मोह वसे रे, अब मत दो मुझ छेह। मात पिताना वियोगथी रे, दाझे छे अम देह हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥१०॥ गुणीजन शिवपथ सोधता रे, पूजो तमे महाभाग। सूरिराजेन्द्र प्रतापथी रे, 'यतीन्द्र' लहे वैराग हो—सुगुणा० ॥ पूजो० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानदानतपोदान-त्रिविधार्थप्रदायकम्। श्रुतज्ञ राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावर्तकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

हृदये धरीया। हुए अल्प समय में ज्ञाता, जैनागम ज्ञान से भरीया रे॥ गु० ॥ १ ॥ बड़ी दीक्षा हुई उदयपुर में, पद पंन्यास के वरिया। फैली जग में प्रख्याति, नीकी हैं जिनकी चरिया रे॥ गु० ॥ २ ॥ तपागच्छ श्रीधरणेन्द्रसूरि, निज गुरु वचने अनुसरीया। श्री रत्नविजयजी पासे, लहे बोध आदेश आदरीया रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ मंत्र यंत्र ज्योतीष विद्या धर, जग में गुणी अवतरीया। बीकानेर जोधाणा नृप को, रञ्जित किये सत्य उचरिया रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ श्रीपूज्य को भेट कराये, छड़ी परवाना नजरिया। शिरोपाव दुशाला आदि, गुरु शील गुणे परिवरिया रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सद्गुरु पर उपकारी पूरा, सद्गुरु आतम ठरीया। सद्गुरु वर को पूज्यांसे कइ, भवसागर से तरिया रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ धूप सुगंधित पूजा करिये, यहि तरने का जरीया। सूरिराजेन्द्र ल्हेर महेर से, 'यतीन्द्र' का कारज सरीया रे ॥ गुरु ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान–त्रिविधार्थप्रदायकम्। श्रुतज्ञं राजेन्द्र-सूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्वितताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपर-म्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपाद-पद्माय धूपं यजामहे स्वाहा।

रसाल । सुदी पक्ष भृगु उजमाल–यति दीक्षा आदरनेवाले ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीहेमविजय गुरु पास, करे गुण को नित अभ्यास । नाम 'रत्नविजय' सुविकाश–पर के दुःख को हरनेवाले ॥ ज० ॥ ८ ॥ 'मुनियतीन्द्र' के शिरताज, सुरिराजेन्द्र गुरु महाराज । पूजो पुष्पमाल से आज–गुरु वैराग्य के धरनेवाले ॥ ज० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान–त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्र-सूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपाद-पद्माय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ–धूपपूजा, दोहा

फेली सुगन्धि विश्व में, गुरु गुण गहन गंभीर ।
पूजो सुगन्धित गन्धसुं, टालो भव भय पीर ॥ १ ॥

ढाल, महावीर गोचरी आया, चन्दनबाला०, ए राह

गुरु ज्ञान गुणना दरिया, उपकार भूतल बहु करिया रे ॥ गु० ॥ टेर ॥ निपुण न्याय अलङ्कार कोष, व्याकरण को

परन्तु चड्डपच्चाङ्क में चैत्रसुदी १ को वर्ष बैठता है, उसके हिसाब से दीक्षा, १९०४ में और श्री पूज्यपाद १९२४ में हुआ समझना चाहिये, जो ठीक है ।

पद ओपावे जी ॥ स० ॥ ७ ॥ विजयराजेन्द्रसूरि नाम थपाणो, संघ में उत्सव थावे जी । यशवंतसिंहजी आहोर ठाकुर, श्रीपूज्य महत्व वधावे जी ॥ स० ॥ ८ ॥ भेट करे छड़ी चामर पालखी, गुरु जग माहें पूजावे जी ॥ विचरे पूज्यजी देश विदेशे, मेवाड़ देश में आवे जी ॥ स० ॥ ९ ॥ शम्भुगढ़ फिर फतेहसागरजी, पाट्टोत्सव मंडावे जी ठाम ठाम पूजा गुरुवर की महिमा वरणी न जावे जी ॥ स० ॥ १० ॥ भेट करे कामेति उदयपुर, जस जग माहें गवावे जी । सूरिराजेन्द्र की दीपक पूजा, 'यतीन्द्रविजय' विरचावे जी ॥ स० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान–त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्र सूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छ परम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-पादपद्माय दीपकं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा, दोहा

अक्षत जिम उज्वल गुरु, गुण उज्वल अभिराम ।
अक्षतपूजा कीजिये, लीजिये सुखनो धाम ॥ १ ॥

पञ्चमी दीपकपूजा, दोहा

मिथ्यातमने मेटवा, श्रीगुरु दीप समान ।
तिम दीपक पूजा करो, पावो जग सन्मान ॥ १ ॥

ढाल ५, अजब आनंदी ज्ञान पद पूजा, ए राह

सद्गुरु शुद्ध मारग श्रोलखावे, मूले को पंथ बतावे जी ॥ सद्० ॥ टेर० ॥ रवी दीपक जिम तिमिर हटावे, तिम अज्ञान मिटावे जी । उपकारी गुरु मुझ घट दीपक, पातिक पुञ्ज पलावे जी ॥ स० ॥ १ ॥ पंचम दीपक पूजा करतां, पञ्चमी शिवगति पावे जी । गुरु तारक गुरु दीप समाना, दुर्गति बन्ध तुडावे जी ॥ स० ॥ २ ॥ गुरु सम जगमें नहीं हितकारी, डूलताने पार लगावे जी । चिन्तामणि गुरु परचा पूरण आप तिरे ने तिरावे जी ॥ स० ॥ ३ ॥ श्रीपूज्य श्रीधरणेन्द्रसूरिजी, शिथिलाचार, पढ़ावे जी यति किरिया तज हुए प्रमादी, तप जप मन नहीं भावे जी ॥ स० ॥ ४॥ हित शिक्षा दे रत्नविजयजी, यति-कर्तव्य बतावे जी । वाद हुवो कुछ अनर विषय में, श्रीपूज्य को छटकावे जी ॥ स० ॥ ५ ॥ प्रमोद रुचि धनविजयजी आदे, यतिगण संग सुहावे जी । आहोर आवे निज गुरु पासे, बीती सहु सुणावे जी ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रमोदसूरि श्री संघ सहमत से, सूरि मंत्र धरावे जी । शब्द चोवीश सुदि माधव पचमी, श्रीपूज्य

पद ओपावे जी ॥ स० ॥ ७ ॥ विजयराजेन्द्रसूरि नाम थपाणो, संघ में उत्सव थावे जी । यशवंतसिंहजी आहोर ठाकुर, श्रीपूज्य महत्व वधावे जी ॥ स० ॥ ८ ॥ भेट करे छड़ी चामर पालखी, गुरु जग माहें पूजावे जी ॥ विचरे पूज्यजी देश विदेशे, मेवाड़ देश में आवे जी ॥ स० ॥ ९ ॥ शम्भुगढ़ फिर फतेहसागरजी, पाट्टोत्सव मंडावे जी ठाम ठाम पूजा गुरुवर की महिमा वरणी न जावे जी ॥ स० ॥ १० ॥ भेट करे कामेति उदयपुर, जस जग माहें गवावे जी । सूरिराजेन्द्र की दीपक पूजा, 'यतीन्द्रविजय' विरचावे जी ॥ स० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान--त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्र सूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छ परम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-पादपद्माय दीपकं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा, दोहा

अक्षत जिम उज्वल गुरु, गुण उज्वल अभिराम ।
अक्षतपूजा कीजिये, लीजिये सुखनो धाम ॥ १ ॥

ढाल ६, आनन्द वधाई केवल उपनो रे वीर जिणन्दने, ए राह

उत्तम गुण धारी, जगजन उपकारी सूरिराजेन्द्रजी ॥टेर॥
यतिपणे इकवीश चौमासा, किये गुरु गामो गाम । श्रीसंघ
में बहु आनन्द वरत्या, सर्या घणाना काम जी ॥उ०॥१॥
नेत्ररोगी पण सुखिया होकर, जपे गुरु का नाम । उदररोगी
हुआ घणा निरोगी, गुरु गिरुआ अभिराम जी ॥उ०॥२॥
निर्धनियां धनवंत हुआ बहु, यशधारी सरनाम । सत्पुरुषों
की महितल महिमा, आनन्द ठामो ठाम जी ॥ उ० ॥ ३ ॥
उगणीसो चौवीश की साले, जावरा शहर कयाम । चौमासा
में भगवती वांचे, सकल संघ विसराम जी ॥ उ० ॥ ४ ॥
मान दियो नव्वाब साहब ने, जाणे जनता आम । प्रभावना
हुई जिनशासन की, संघ खरचे घणा दाम जी ॥ उ० ॥५॥
श्रीपूज्यधरणेन्द्रसूरिने, लागो जब पैगाम । मोटी चिन्ता चित
में पैठी, सोचे होय चित्राम जी ॥ उ० ॥ ६ ॥ विनयपत्र
दे दो यति भेजे, जावरे गुरु मुकाम । नव कलमें मंजूर करण
को, भाषे श्रीगुरु तामजी ॥ उ० ॥ ७ ॥ आखिर नव कल-,
में पालन को, धरणेन्द्रसूरि भरे हाम । क्रियावन्तने जग सहु
माने, करे सभी प्रणाम जी ॥ उ० ॥ ८ ॥ परिग्रह सब
जिन मन्दिर मेली, सूरिराजेन्द्र सुखाम । संगे प्रमोदरुचि
धनविजयजी, दिल के बड़े मुलाम जी ॥ उ० ॥ ९ ॥

दशमी मास आषाढ़ कृष्ण की, जावरा नगर सुधाम । संवत उगणीसो पच्चीश में, महाव्रत लिये तमाम जी ॥उ०॥१०॥ अक्षत से श्रीसंघ वधावे, उत्सव अठाइ हगाम । 'यतीन्द्र' पतिने भविजन पूजे, वन्दे नित्य गुण ग्राम जी ॥उ०॥११॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान–त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मवृहत्तपोगच्छ-परम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-पादपद्माय स्वच्छाक्षतं यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी नैवेद्यपूजा, दोहा

वयण मृदु उचरे गुरु, कटुक वचन को टाल ।
थाल भरी नैवेद्य की, पूजो परम दयाल ॥ १ ॥

ढाल ७, सांभलजो मुनि संयमरागी, ए राह

सूरिराजेन्द्र गुरुवर की पूजा, नैवेद्य द्रव्यसुं कीजे जी अबल पुन्य से अवसर पायो, नरभव लाहो लीजे जी ॥सू०॥१॥ मुनि क्रिया उत्कृष्टी पाले, धूज्या शिथिलाचारी जी । श्वेताम्बर दिग्दर्शन पामी, हरख्या नर ने नारी जी ॥सू०॥२॥ क्रिरिया उद्धार कर चातुरमासा, ओगणचालीस कीना जी । प्रति-

बोध्या घणा नर ने नारी, ठाम ठाम जस लीनाजी ॥सु०॥३॥ शब्द पचीस पचास अरु बांसठ, खाचरोद चातुरमासे जी। अट्ठाई उत्सव और प्रतिष्ठा, धर्मी जन किये खासे जी ॥सु० ॥ ४ ॥ कूकसी जन श्रीसद्गुरु वृत्ति, देखीने ललचाया जी। समकित धारी हुए नर नारी, द्रव्यानुयोग धराया जी॥ ॥ सु० ॥ ५ ॥ ओगुणतीस में पुर रतलामे, धर्मवाद हुवो भारी जी। जब सिद्धान्तप्रकाश निर्मायो, गुरु जय जग में जारी जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ जालोर चातुरमासे गुरुजी, उपदेश नीको दीधो जी। सत शत किये जिनप्रतिमा पूजन, लाभ अखूट तिहाँ लीधो जी॥ सु० ॥ ७ ॥ संवत् उगणीसो चालीशे, राजनगर शुभ धामे जी। वाद परस्पर त्रय देवाणा, गुरु कीर्त्ति जग पामे जी ॥ सु० ॥ ८ ॥ नगर निंबाड़े थानकपंथी, नन्दरामजी संगे जी। चरचा कर किये साठ घरों को, मूर्ति--पूजक रंगे जी ॥ सु० ॥ ९ ॥ इणविध जावरे तिरपन साले, थानकपंथी जनने जी। चउ निक्षापानो अर्थ बतायो, श्राद्ध नमायो तनने जी ॥ सु० ॥ १० ॥ रतलामे गुरु महिमा जाणी, उगणीसे चउपन में जी। मिथ्यावादी सत्यवादीने, देखी खींजे मन में जी ॥ सु० ॥ ११ ॥ पंचावन प्रभु अञ्जनशलाका, आहोर मरुधर कीनी जी। नवशत बिंब प्रतिष्ठित कीने, संघ शाबाशी

दीनी जी ॥ सू० ॥ १२ ॥ सूरत साठ के साल पधारें, गुरु किरिया जोइ हरखे जी । जाणे पण मतपक्ष न छंडे, हलुकर्मी जन परखे जी ॥ सू० ॥ १३ ॥ बांसठ में चीरोलापन्थी, सद्गुरु शरणे आया जी । गुरु उपकार कियो अति भारी, जग में नाम कमाया जी ॥ सू० ॥ १४ ॥ मिथ्यावादीने जग छंडे, सात्विक जग पूजावे जी । सूरिविजयराजेन्द्र सुसंगे, हर्षे 'यतीन्द्र' वधावे जी ॥सू० ॥ १५॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदान–त्रिविधार्थप्रदायकम् । श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरपाद-पद्माय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी फलपूजा, दोहा

फल पूजा गुरुरायनी, करिये भवि मन चंग ।
फलथी फल वर पामिये, लहिये सुक्ख सुरंग ॥ १ ॥

ढाल ८, ईदका झंडा आलममें, फरका दिया कमली वालेने,
ए राह

सद्धर्म का झंडा जिनमत में फरकायाराजेन्द्रसूरिवरने

॥ टेर ॥ मुनिजन किरिया उद्धार कर्यो, वीर वचन गुरु निज शरपे धर्यो । गुरु देव धर्म इन तीनों को, ओलखाया राजेन्द्र० ॥ १ ॥ पंचेन्द्रिय दाव में नहीं रमता, त्रिगुप्ति परा सुमति ममना । नवविध ब्रह्मव्रत पालन का, पन्न दिखलाया राजेन्द्र० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत पालन में सूरा, रहे कंचन कामिनी से दूरा । यानीश परिषह दीपक, दोष हटाया राजेन्द्र० ॥ ३ ॥ दोष आहार के चालीश दो टाले, सतरा भेदे संयम पाले । क्षमा आर्जव मार्दव दशविध, धर्म सुनाया राजेन्द्र० ॥ ४ ॥ अभिधानराजेन्द्र सुकोष रचा, जैन जैनेतर सनही के जचा । विद्वानी जग जाहीर हुई, यश पाया राजेन्द्र० ॥ ५ ॥ कवितज्ञ और कृतज्ञ गुरु, मैं इनके चरणे शीश धरुं । मुनि किरिया में नहीं किंचित, दोष लगाया राजेन्द्र० ॥ ६ ॥ संस्कृत प्राकृत कइ ग्रन्थ रचे, संगीत बालाबोध में भी विरचे । सद्बोध करी मिथ्या अन्धकार, घटाया राजेन्द्र० ॥ ७ ॥ दीक्षा दे कइयक शिष्य किये, श्री-संघमे नहीं विपरीत गये । श्वेत मानोपेत धारी, नहीं रंग रँगाया राजेन्द्र० ॥ ८ ॥ कइ अञ्जनशलाका प्रतिष्ठा करी, उपधान उजमणा हर्ष भरी । इण दुष्पम काल में श्रीजिन, धर्म दीपाया राजेन्द्रसूरिवर ने ॥ ९ ॥ नूतन जिनमन्दिर जीर्णोद्धार, तीर्थों के संघ निकले कइ वार । कइ गाँवों के जाती विद्वेष, मिटाया राजेन्द्र ॥ १० ॥ शुभ कार्य हुए हैं

कइ ऐसे, सद्गुरु वर के सद् उपदेशे । भख्यात गुरु आन-न्दानन्द, वरताया राजेन्द्र० ॥ ११ ॥ निज भार किसी को न देते थे, अलवाणे पग जम फिरते थे। राय रांक को एक समान गिनी, अपनाया राजेन्द्र० ॥ १२ ॥ गुरु भावी भी भुगताते थे, तप ध्यान के बल बतलाये थे। अग्नि के कोप से कुकसी संघ, बचाया राजेन्द्र० ॥ १३ ॥ गुरु के गुण का नहीं पार लहु, फल पूजा करे गुरु वर की सहु। मुनि 'यतीन्द्र' को वैराग्य दृढ़, समझाया राजेन्द्र० ॥ १४ ॥

सर्वोपरी-गीत

निशदिन जोउं थारि वाटड़ी, घर आवोने ढोला, ए राह

आनन्द हर्ष वधामणा, सद्गुरु तुम नामे। तुम नामे पातिक टले, अविचल सुख पामे ॥ टेर ॥ १ ॥ तुम नामे सुख सम्पदा, तुम नामे समृद्धि। तुम नामे सहु सहु सम्पति, मिले नव नवी ऋद्धि ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम नामे संकट टले, टले सघली व्याधी। तुम नामे वांछित फले, टल जावे उपाधी ॥ आ० ॥ ३ ॥ सत्यवादी तुम सारिखा, नहीं देख्या अनेरा। जन्म लही तुमने किया उपकार घनेरा ॥आ०॥४॥ भाग्योदयसे मैं लही, तुम चरणों की सेवा सूरिराजेन्द्र ! 'यतीन्द्र' ने, आपो शिवफल मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

ज्ञानध्यानतपोदन–भिविधार्थप्रदायकम् । श्रयज्ञ राजेन्द्र सूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्-गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय सौधर्मवृहत्तपोगच्छ परम्परावतसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद्विजराजेन्द्रसूरीश्वर-पादपद्माय फल यजामहे स्वाहा ।

कलश, माता त्रिशला मूलावे पुत्र पारणे, ए राह

गाया गाया गाया गुण गुरु सूरिराजेन्द्रना, पाया पाया पाया पाया सुख भरपूर । गुरुवर कामकुम्भ गुरु कल्पवृक्ष चितामणि, पुण्यादेय से मलिया फलिया वाछित पूर ॥गा० ॥ १ ॥ महिमा श्रीगुरुवर की जग माहे श्ख्यात है, मिथ्या-ताप विडारण तारण तरण जहाज तप जप सयम किरिया उत्कृष्टी सूरिरायनी, उत्कृष्टी सहु करणी भव दु ख हरवा काज ॥ गा० ॥ २ ॥ जन्म भरतपुर लहिने मुनिवर मारग साधीयो, श्रीजिनशासन शोभा फेली जग के माय। धर्मध्वजा फरकाई श्रद्धालु कीना घणा, गच्छपति धर्म धुरन्धर पचमकाल सुहाय ॥ गा० ॥ ३ ॥ सघ चतुर्विध थाप्या दान शील तप भावना, चउविध धर्म सुणायो वरत्या जय जयकार । आनन्द मङ्गल उत्सव महोत्सव हर्ष वधामण, श्रीसद्गुरु सुपसाये सव में मगलाचार ॥ गा० ॥ ४ ॥ साठ वरस लग सयम पाल्यों

लायो निर्मलो, अंते राजगढ़ आया तिरसट्ठा के साल। सातम पौष शुक्ल भृगुवारे गुरु शुभ ध्यान में, अस्सी वर्षनी आयु पर्ण कियो कृताल ॥ गा० ॥ ५ ॥ जग में जस पूरण लही शुभमति शुभगति पामिया, तस पट्ट धनचन्द्रसूरि वर जैनागमना जाण। कुमति कुतर्की कुवादीनो मद गालवा, सूरा पूरा सूरिवर दीपे तपे जिम भाण ॥ गा० ॥ ६ ॥ सोहमपट्ट परम्पर क्षमासूरि वर सोहता, तस पट्ट ओपे श्रीदेवेन्द्रसूरि कल्याण। पाटे प्रमोदसूरिवर मरुधर जन मन मोहता, जस पट्टधारी विजयराजेन्द्रसूरीश सुजाण ॥ गा० ॥ ७ ॥

पूजा अष्टप्रकारी ए गुण वर्णन करया जेहना, संवत् शशि निधि नव इक अक्षय तृतीया खास। दीक्षितगुरु गुण गाया भूपेन्द्रसूरि वर राज में, पाठकपदधर श्री 'यतीन्द्रविजय' हुल्लास ॥ गा० ॥ ८ ॥ जो नर नारी गुरु गुण पूजा भणशे गावशे, उस घर दिन दिन आनंद मंगल हर्ष अपार। पूजा स्व कर गाई गणधर सूरिराजेन्द्रनी, श्रीसिद्धक्षेत्रपालीताणे 'यतीन्द्रविजय' मनुहार ॥ गा० ॥ ९ ॥
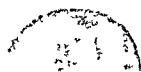
गुरुगुणगर्भित-आरति

शान्तिनाथनो समरण करने, कहुं पंचाङ्गी विस्तरी, ए राह

करो आरति भवियण प्यारे, श्रीगुरु चरणों में जाकर ।
ऋद्धि वृद्धि सुख संपति पावो, शुद्धभावना मन लाकर ॥टेर॥
कामकुम्भ चिन्तामणि गुरुजी, छोड्ं नहीं पारस पाकर ।
शरणे आयो नाथ तुम्हारे, उतारो मुझने कृपा कर ॥
तुं तारक जगजन उपकारी, तुं हितकारी करुणा कर ।
निन्दक पूजक सरिखा गिण, उपकार कियो नहीं ममता कर ॥
॥ करो आरति० ॥ १ ॥

समकित धारी किये नर नारी, तत्त्व तीनको बतला कर ।
दया धर्मका पंथ बताया, दृढधर्मी किये समझा कर ॥
भव भव में भटकायो मुझने, कुगुरु कपटी भरमा कर ।
जिम जिम नाच नचायो नाच्यो, बोल्यो नहीं कुछ सरमा कर ॥
॥ करो आरति० ॥ २ ॥

पुण्य प्रबल से सद्गुरु पायो, अर्ज करुं शरणे आकर ।
बेडा पार करो गुरु मेरा, श्रीजिनवाणी संभला कर ॥
मिथ्यातिमिर विनाशक सद्गुरु, जग में तुं द्विज दीवाकर ।
अघ वारक जग तारक गुरुवर, तुम सम नहीं कोइ वसुधा पर ॥
॥ करो आरति० ॥ ३ ॥

सूरिविजयराजेन्द्र गुरुजी, धर्मतत्व को दिखला कर ।

श्रद्धाधारी किया कइ, गुरुदेव धर्म को ओलखा कर ॥
प्रमुदित चित रहे गुरु मेरा, तुम चरणों की सेवा कर ॥
आशा पूरो शरणागत की, कहे 'यतीन्द्र' तुम गुण गा कर ॥
॥ करो आरति० ॥ ४ ॥

श्री गुरुदेव की आरती

तर्ज :—ॐ जय जगदीश हरे....

ॐ जय जय गुरूदेवा, स्वामी जय जय गुरूदेवा ॥ सूरि राजेन्द्र की आरती, कर पा शिव मेवा ॥ ॐ जय० ॥ टेक ॥ छत्तीस गुण के धारक-तारक उपकारी, गुरू तारक उपकारी । शत्रु मित्र सम जाने बालब्रह्मचारी ॥ ॐ जय० ॥ १ ॥ धन्य पिता रिषभाजी केशर महतारी । गुरू केशर महतारी ॥ धन्य भरतपुर नगरी जन्मे गुणधारी ॥ ॐ जय० ॥ २ ॥ मिथ्या तिमिर विनाशक चिन्तामणी जेवा । गुरू चिन्तामणी जेवा ॥ मन वांछित फल दाता करिये गुरू सेवा ॥ ॐ जय० ॥ ३ ॥ हुए समाधित गुरूवर श्रीमोहन खेड़ा । गुरू श्रीमोहनखेड़ा ॥ करूं भक्ति तन मन से, पार करो बेड़ा ॥ ॐ जय० ॥ ४ ॥ सूरियतीन्द्र कृपा से, पूरण हुई आशा, गुरू पूरण हुई आशा ॥ कुन्दन वन्दन करले, कटे कर्म पाशा ॥ ॐ जय० ॥ ५ ॥

मुनिराज श्री हर्षविजय जी रचित

श्रीमद् धनचन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा

दोहा

चन्दो वीर जिनेन्द ने, चोविसमा जिन चंद ।
गौतम आदि गणधरा, प्रणम्यां परमानंद ॥ १ ॥
वर्ते शासन जेहनुं, वर्ष एकवीस हजार ।
युग प्रधान तेहमां कह्यां, बे हजार ने चार ॥ २ ॥
लब्धिवत ज्ञानी भला, शासन ना सिणगार ।
वंदो पदाबुज तेहनां, गुण गीरुवा भण्डार ॥ ३ ॥
गुरू भक्ति मां गुण घणा, आवे ज्ञान अखण्ड ।
सद्‌गति पामे सम्पदा, पूरण धाम प्रचण्ड ॥ ४ ॥
ते कारण गुरुदेवनी, भक्तिभाव भरपूर ।
अष्ट द्रव्य नी पूजना, रचतां आनन्द पूर ॥ ५ ॥
जल चन्दन कुसुमे करी, धूप दीप जयकार ।
अक्षत नैवेद्य फलधरी, पूजो नित्य नर नार[1] ॥ ६ ॥

---

१ इस पूजा की विधि भी "श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी" पूजा की विधि के समान ही समझना चाहिये ।

प्रथम पूजा

ढाल १, तर्ज गरबी

सुखकर जम्बूद्वीप मझार के, दक्षिण भरत मेरे लोल ।
सुखकर साड़ा पचवीश देश के, आरज क्षेत्र मेरे लोल ॥१॥
सुखकर विचरे श्री वीतराग के, केवली संयमी रे लोल ।
सुखकर देता समकित दान के, मिथ्या सहूवमी रे लोल ॥२॥
सुखकर तप जप व्रत व्यवहार के, आणा रंग सुं रे लोल ।
सुखकर करतां भवनिस्तार के, भविक उमंग सुं रे लोल ॥३॥
सुखकर अनुपम मरुधर देश के, दिल्ली सम दीपतोरे लोल ।
सुखकर तेहमां वखत बहु तेज के, वारू वखत मेरे लोल ॥ ४ ॥ सुखकर किशनगढ़ राज्य के, राजे भूपति रे लोल ।
सुखकर न्याय नीति मतिवंत के, माले शुद्धमति रे लोल ॥ ५ ॥ सुखकर वसे व्यापारी वास के, ऋद्धि गुणे भर्या रे लोल । सुखकर जातिवंत ओसवाल के, मंत्री पदे वर्या रे लोल ॥ ६ ॥ सुखकर गुरु गुण महिमा विशाल के, गावो रंग सुं रे लोल । सुखकर हर्षविजय हितकार के, आणा अभंग सुं रे लोल ॥ ७ ॥

दोहा

साख जेओनी चोपडा, गोत्र गणो उजमाल ।
ओस वंश मां उपज्या, गुरू भला गुणमाल ॥ २ ॥

ढाल २, तर्ज—हांरे मारे ठाम धर्म नां

हांरे मारे ऋद्धिकरणजी शाह, बड़ा शिरदार जो, कुलवंती तस गृहिणी अचला ओपती रे लोल । हारे मारे शील ततु सिणगार सदा संतोष जी, पतिव्रता व्रत धरती रतिसम शोभती रे लोल ॥ १ ॥ हारे मारे अर्हन्भक्ति साधु सुपात्रे दान जो, देती समकित मतिवंती शुद्ध श्राविका रे लोल । हारे मारे पंचपरमेष्ठि धरती ध्यान विचार जो, रयणीभर निद्रा विच सूती श्राविका रे लोल ॥ २ ॥ हांरे मारे स्वप्नविलोकी जागी दयिता ताम जो, चन्द्रसुदर्शन पामी निज पति ने भणे रे लोल । हांरे मारे माखे दयिता पति ने निजमति विस्तार जो, उत्तम फल ए स्वप्न नो थकी गणे रे लोल ॥ ३ ॥ हांरे मारे लाभ अत्युत्तम थासे सुत निरधार जो, सुणतां वचन विवेकी हर्षी चित्त में रे लोल । हारे मारे खर्चे बहुलुं सुकृत पंथे वित्त जो, पुण्य खजानो पूरे निज मन हित सुं रे लोल ॥ ४ ॥ हारे मारे भोगवतां सुखपति संगे नित्य भोगजो, भाग्यवली भवि अगज उपज्यो कुख में रे लोल । हांरे मारे गणनी दयिता आप तणो अवतार जो, गर्भ तणो गुणवती गौरव मान मेरे लोल ॥ ५ ॥ हांरे मारे पूजतां जल निर्मल

गुरु ना अंग जो, भक्ति रस नी फल सुख भावे ते वहे रे लोल। हां रे मारे गुरु सेवा थी निर्मल ज्ञान प्रवाह जो, हर्षधर आंगण शुभवर्षा जेम वहे रे लोल ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुजविकाशकम् ।
विम्बं धनचन्द्रसूरिं, सद्‌द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय, चर्चाचक्रवर्तिपद-धराय, जगज्जनहितावहाय श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय: जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय पूजा

दोहा

शीतल गुण संयमधरा, शीतल गुण तनु चंग ।
शीतल चन्दन पूजना, करतां शीतल अंग ॥ १ ॥
मृगमद अम्बर गंध लई, भेली कपूर चरास ।
गुरुवर अंगे अरचतां, पामे अति उल्लास ॥ २ ॥

ढाल १, तर्ज मनमोहनजी·······

गर्भतणी प्रतिपालना मनमोहनजी, करती मात विशेष, मनडुं मोह्यु, रे मन मोहनजी । उत्तम दोहला उपने मन०,

पुन्य तणो परवेशे मनडुं० ॥ १ ॥ वर्ष अट्ठारह छन्नु मां मन०, मधु सुदि चौथ वखाण मनडुं० । नव मास उपर दिना, मन०, साड़ा सात प्रमाण मनडुं० ॥ २ ॥ अवधि गर्भावासनी मन०, शुभ पल अमृत संयोग मनडुं० । प्रसव्या माता कुंखथी मन०, अबाधा सुखकर योग मनडुं० ॥ ३ ॥ चन्द्रयोग आवे छते मन०, उंच ग्रहे अवतार मनडुं० । निर्मलकान्ति निरखिये मन०, रूपे राजकुमार मनडुं ॥ ४ ॥ करी वधाई वेग थी मन०, वाज्यां सोवन थाल मनडुं । सुन्दर भवन सिणगारिया मन०, द्वारे मोतिमाल मनडुं० ॥ ५ ॥ चन्द्र दरसन तृतीया दिने मन०, माता हर्ष अपार मनडुं० । धर्म जागरण छट्ठी निशा मन०, सूतक कर्म निवार मनडुं० ॥ ६ ॥ जन्म महोत्सव सहु करे मन०, ज्ञाति सज्जन परिवार मनडुं० । नोतर्या नगर नां लोक ने मन०, पट्रस भोजन सार मनडुं० ॥ ७ ॥ आव्या पांते एकठा मन०, सहु ते बालगोपाल मनडुं० । हर्ष भणे गुरुदेव ने मन०, जपतां मंगलमाल मनडुं० ॥ ८ ॥

दोहा

शाल दाल पकवान्न थी, तृप्त जमाड्या तेह ।
श्री फल ताम्बुल दे सयण, एणि परे भाखे एह ॥ १ ॥
आवी गर्भे उपन्यो, जेह दिवसे ए बाल ।
धण कण आदि थी वध्या, सुजस जग संभाल ॥ २ ॥

मन आशा सघली फली, फल्या मनोरथ आज ।
ते कारण आ पुत्र नुं, नाम दीधुं धनराज ॥ ३ ॥

ढाल २, तर्ज वेला मन्दिर आवजो रे.......

सहु साजण वयण संभलावजो रे, नामे धनराज कुमार बोलावजो रे, ॥ टेक ॥ कुमकुम केशर ना घोल भर्या छे, केसर ना तिलक ते भाले कर्या छे । सन्मान भूषण पटकूले सर्या छे, गीत मंगल वधावा गवरावजो रे ॥ नामे० ॥ १ ॥ वाजित्र तणा धौंकार घजाय छे, मन्दिर मां प्रभु नी पूजा भणाय छे । संघ साधर्मि घरे लहाणी फेराय छे, संघ साधुनी भक्ति भरावजो रे ॥ नामे० ॥ २ ॥ हेते हालरीयुं माता गवाय छे, प्रीते प्रालणीए, पुत्र पोढाय छे । अणियाली आंखें काजल नंखाय छे, जल निर्मल अंग न्हवरावजोरें ॥ नामे० ॥ ३ ॥ तेतर सारस मेना मयूर छे, झवलां टोपीं पहेरावे जरूर छे । खंते रमवा तणी मन मां मगरूर छे, भोला बच्चा ने रमत रमाउजो रे ॥ नामे० ॥ ४ ॥ मोहनभाई नित्य संगे रमे छे, भगिनी रूपी दोय भेला रमे छे । बुद्धि वले वल तीव्र वधे छे, वर्ष पांचनी प्रतिष्ठा पमाउजो रे ॥ नामे० ॥५॥ चंदन पूजाए चितडुं लाग्यो छे, ममता थी मनुडं दूरे भाग्यो छे । ज्ञानज्योति जड़ चेतम जाग्यो छे, हर्ष चरणों में शिस नमावजो रे ॥ नामे० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुजविकाशकम् ॥
यिम्नं धनचन्द्रसूरिं, सद्द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं आचार्यपदान्तिकाय चर्चाचक्रवर्तिपदधराय जगज्जनहितावहाय, श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय चदनं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय पूजा

दोहा

चम्पक मोगर मालती, जाइ गुलाब सुरंग ॥
मचकुन्द दामन केतकी, पंचवरण शुभ चंग ॥ १ ॥
भुजबंध नवसर सेरखा, गुंथी माल विशाल ॥
गुरू अंगे ठवता थका, पामे मंगलमाल ॥ २ ॥

ढाल १, तर्ज—हिंडा की

पांच वरसना जब हुआ कुंवरजी, मात पिता उल्लासेजी । पोशाले भणवाने नीति प्रकाशे जी, विद्याभ्यासे जी, विद्या का अभ्यास किया दुःख दरिद्य नासेजी, विद्याभ्यासे जी ॥ टेक ॥ १ ॥ शुद्ध मुहूर्त देखावी साथे, निर्मल जल न्हवरावी रे । तनुभूषण सिणगार सजी ने माले तिलक करावी रे ॥ वि० ॥ २ ॥ थालभरी सुखडी मेवा गुड़धाणी लइ आवेरे ।

पुस्तक पाटी लेखन खडियो, संग लावे रे, ॥ विद्या० ॥ ३ ॥ वार्जीभ गीत संगीत साज सुं, आप निशाले आवे रे। प्रथम भारती मात शारदा, चरणे लगावे रे ॥ विद्या० ॥ ४ ॥ उपाध्याय की आज्ञा लेकर, पुस्तक पाटी पढ़ावे रे। पूर्व पूण्य तणे अभ्यासे, विद्या उपावे रे ॥ विद्या० ॥ ५ ॥ प्रथम अंक गणतरी पाटी, तेम सुख कागल हुण्डी रे। गुणाभाग हिसाब व्यापारी, विद्या रूडी रे ॥ विद्या० ॥ ६ ॥ पडिक्कमणादि प्रकरणग्रंथनो, भेदाभेद ते जाणे रे। आठ वर्ष नी थई अवस्था, हर्ष वखाणे रे ॥ ७ ॥

दोहा

श्रद्धा श्रीजिनधर्मनी, पूरण थई प्रमाण ।
उत्तम श्रीजिन राजनी, सांचवे भक्ति सुजाण ॥ १ ॥
मुनिगण संगत मनवसी, तप जप नियम विशेष ।
प्रतिक्रमण वंदनविधि, करता कार्य हमेंश ॥ २ ॥

ढाल २, तर्ज :—केशरियो कामणगारो····

श्री जिनधर्म करो सुखदायी, जन्म मरण दुःख दूरे जाई। समकित पारमे निर्मलो, मिथ्या मिट जाइरे। सुणो साजन सुखदाई ॥ टेक ॥ १ ॥ दृढ़ श्रद्धा धनराज धरावे, गुरू संगत में ही लय लावे। शास्त्रश्रवण भक्ति मन चावे, वांचे सूम सिद्धान्त, रहस्य गुरुज्ञान बतावे ॥ सु० ॥ २ ॥

इम करता वर्ते दिनसारा, वतन धानेरा वसनारा, लक्ष्मीविजय ज्ञानी गुरू प्यारा । आये किशनगढ धाम, रह्या चोमासे सारा रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ विनयवत बालक ते जाणी, गुरू भक्ति मे प्रीति पीछाणी, भाखे मुख अमृत समवाणी । कर रेखा तसु देख गुरू वदते इम वाणी रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ उत्तम नर थासे आ काले, सयम समतामय शोभावे, ज्ञान दृष्टि करी गुप्तिपाले । पदवीधर अणगार नाम जग मा उजवाले ॥ सु० ॥ ५ ॥ अनित्य ससारभाव उद्देशी, वैरागीव्रतधीरग-वेषी, जयणा युत जिनधर्म कहेसी । थाशे एह कुमार वीर शुद्धपथ दीपावशे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ लक्ष्मीविजय तस लायक देखी, पुन्यधर धनराज को पेखी, लायक लई जावा मन लेखी । देता यह उपदेश, ज्ञानघट अतर उवेखी रे ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ पुष्प पूजा करवा गुरूभक्ति, करता वाघे हर्ष ने कीर्ति । देवे निर्मल ज्ञाननी मुक्ति भावे नित्य नरनार । करो अपनी शुभ शक्ति ॥ सु० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञ भव्याम्बुजविकाशकम् ।
विघ्न धनचन्द्रसूरिं, सद् द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय चर्चाचक्रवर्तिपद-धराय जगज्जन हितावहाय, श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय कुसुमानि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ पूजा

दोहा

अगर तगर कृष्णागुरू, सिलारस संयुत ।
धूप घटा गुरू आगले, करीए मंगल नीत ॥ १ ॥
चोथी पूजा गुरू तणी, करतां शुभ कल्याण ।
होवे घर मंगल वली, दिन दिन अधिक प्रमाण ॥२॥

ढाल १, तर्ज.....ए व्रत जग मां दीवो.......

श्री संयम पद प्यारो हो भवियां, श्रीसंयम पद० ॥टेक॥ परम वैरागी अंतर लयलागी, जाणी संसार अटारो । मदमत्सर माया में डुली, मानव जनम मति हारो ॥ हो भवि० ॥ १ ॥ योवन वय जाणी बालक ने, चन्द्रादेवी नी साथे । जोडी सनातन सरखो जाणी, ऋद्धिकरण निज हाथे हो ॥ भवि० ॥ २ ॥ व्रत लेवानी वृत्ति जणावी, मात पिता नी पास । ते जाणी चित तेह नुं विलखाणुं, पाम्या बहुलो भास ॥ हो० भवि० ॥ ३ ॥ पाणी ग्रहण नो सुख सब देख्यो, थावुं छे अणगारी । नारी विषनी वेल कहावे, डुबावे संसारी ॥ हो भवि० ॥ ४ ॥ विरह विलाप माता ने वचने, चल चित्त थयो न लगारे । युक्ति थी सहु ने समझावी, लक्ष्मीं विजय ने लारे हो ॥ भवि० ॥ ५ ॥ यती दीक्षा में योग

धरायो, तजी संसार । विलास । महाव्रत में मलपंता मुनिवर, समता धर उदास हो ॥ म० ॥ ६ ॥ रागद्वेष रिपु टाली रंगे, पाले षट् निकाय । अष्टप्रवचन धर्या निज अंगे, हर्ष शील वखणाय हो ॥ मवि० ॥ ७ ॥

दोहा

मद मत्सर माया तजी, मिथ्या मोह हटाय ॥
कर्म अरिदिल कापवा, अनुपम लह्यो उपाय ॥ १ ॥
गुरु आणा में वीचरे, यतिपणा में जोर ॥
मंत्र तंत्र विद्या पढ़ी, वैद्यक ज्योतिष और ॥ २ ॥

ढाल २, तर्ज · सनेही संत ए गिरि सेवो

गुरु आज्ञा लइ चोमासुं रे, रह्याव्रतीपणा में उल्लासेरे । वृद्धवैयावृत्य के प्यासे, "सनेही संयम छे सुखदाया रे तेथी निग्रंथ नाम दीपाया" ॥ सने० ॥ मेदपाटधरा मुनि आया रे, नाथ धुलेवा नगर मां ध्याया रे । वली नाभीनंदन ने वधाया ॥ सने० ॥ २ ॥ उदयपुर प्रथम चोमासो रे, करी विचर्या जयपुर वासो रे । कर्यो जेसलमेर में वासो, ॥ सने० ॥ ३ ॥ तपोगच्छाधिप पटधारी रे धरणेन्द्र सूरि सुखकारी रे । संगे विचर्या धन अणगारी ॥ सने० ॥ ४ ॥ देख्या दफ्तरी पदे पन्यास रे रूड़ा रत्नविजयजी खास रे ॥ सने० ॥ ५ ॥

जैनागमी ज्योतिषी सारा रे, न्याय तर्क आदि उपचारा रे। सभी विद्या ना जाण ते प्यारा रे॥सने०॥६॥ राय राणा शीष नमावेरे,उपदेश मधुर दरशावे रे। संघ श्रीपूजा गादी शोभावे॥ सने०॥ ७॥ श्रीगुरु आगल धूप धरीजे रे, मिथ्या दुर्गंधी दूर हरी जे रे। हर्ष उंचगति ने लहि जे ॥ सने०॥ ८॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुजविकाशकम्।
विम्बं धनचन्द्रसूरिं, सद्द्रव्येण समर्चयेत्॥ १॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय, चर्चाचक्रवर्तिपद-धराय, जगज्जनहितावहाय, श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय धूपं यजामहे स्वाहा।

पंचमी पूजा

दोहा

गुरुवर मूर्ति आगले, झगमग ज्योति प्रकाश।
करीए शुद्ध मनभाव सुं, प्रगटे ज्ञान उजास॥ १॥
नष्ट होत अज्ञानता, जाणे सघला भाव।
दीपक पूजा कीजिए, निर्मल सहज स्वभाव॥ २॥

ढाल १, तर्ज···दीपक दीपतो रे···

राज्यो रंगसुं रे मनड़ो परम वैराग्य, परिग्रह कारमो रे करीए

तेह नो त्याग ॥ टेक ॥ यतिपणा नो योग लियो पण, परिग्रह योग नो पाश। काम क्रोध मद ममता मांहीं, अन्तर छे उपाश ॥ रा० ॥ १ ॥ ते कारण मन त्यागी थावा, घट में अन्तर ज्ञान। मति पन्यास प्रमोदरूचिनी, धनविजय ने ध्यान ॥ रा० ॥ २ ॥ त्रण तत्व धखा त्रिपुटीमलो ते, धरणेन्द्रसूरि संघात। अंतर काजे आंटी पडतां वधी वधारे वात ॥ रा० ॥ ३ ॥ आखर ओगणीश वर्ष पचीशे, जावरा नगर मझार। संघ महोत्सव सानंद साथे, कर्यो क्रियाउद्धार ॥ रा० ॥ ४ ॥ सूरिपद राजेन्द्र सूरीश्वर, धन मुनि पाठक धार। प्रमोदरूची पण साथे मुनिवर, चाल्या उग्र विहार ॥ रा० ॥ ५ ॥ निर्ग्रन्थ आणा वीर प्रभुनी, धारी समता ध्यान। मेदपाट मालव मरुधर में, सभी जगे सन्मान ॥ रा० ॥ ६ ॥ झंडा जैन धर्म का जग में, फरकाया फुलवास। हर्ष मुनि कहे दश दिशी प्रसर्यो, जय जय सुयशवास ॥ रा० ॥ ७ ॥

दोहा

पाठक पद में विचर्या, धन धनमुनिवर राय।
चतुर चोमासा जे कीया, अगल ते कहेवाय ॥ १ ॥
उदयपुर चौंदे तणो, पहेलो चातुर्मास।
पन्द्रह कलकत्ते रह्या, सोलें करांची खास ॥ २ ॥
सत्तर मां मद्रास में, जोधपुरे अट्ठार।

ओगणीशे बीकानेर में, जेसलमेर विहार ॥ ३ ॥
वीसे वासर त्यां वसी, एकवीशे अजमेर ।
बावीशे जालंधरे, घाणेराव महेर ॥ ४ ॥
तेवीशे तिहां रह्या, चोवीश जावरे जाण ।
पचवीशे खाचरोद में, निर्ग्रंथ पंथ वखाण ॥ ५ ॥

ढाल २, तर्जः—सरकार थारो पंचरंग बाघो भीजे⋯

गुरूराज ज्ञानी गुणवंत, गुणना दरिया महाराज, महाराज हो मन वसिया । गुरूराज हो दिल वसिया ॥टेक॥ छव्वीसे रतलाम में, सतवीशे बीकानेर । गुरूराज० अठवीश पुर नागोरे, महाराज गुरू० ॥ १ ॥ ओगणतीश रहे रतलाम में, तीस जावरा नाम । गुरूराज० एकतीश जालंधर मनवसिया महाराज ॥ गुरू० ॥ २ ॥ आहोर बत्तीश-तेंतीश मां, शिवगंजपुर चोमास । गुरूराज० चोमासु चौतीश कुक्षी सोहे महाराज ॥ गुरू० ॥ ३ ॥ पेंतीश पुर रतलाम में, छत्तीसे भीनमाल । गुरूराज० सेंतीसे पालनपुर में, ठाया महाराज ॥ गुरू०॥ ४ ॥ अड़तीसा में अमदावाद मां, रहेता चातुर्मास, गुरू० ओगण-चालीश कुक्षी सोहाया, महाराज गुरू० ॥ ५ ॥ चालीश में पुर जावरे, एकतालीशे अमदावाद । गुरूराज० बयालीशे चाणोद में सुखपाया, महाराज गुरू० ॥ ६ ॥ तरियालीश चम्मालीशे, थीरपुर नगर चोमास, गुरू० पिस्तालीस अमदावाद ओपाया,

महाराज गुरू० ॥ ७ ॥ छियालीमे रतलाम में, सुधी सैंतालीसे, गुरू० राजगढ अडतालीश मे, आया महाराज गुरू० ॥ ८ ॥ ओगणपचास के वर्ष में, थडनगर में वास, गुरूा० पचास का खाचरोद में, ठाया महाराज गुरू० ॥ ६ ॥ एकावन राजगढ में विराजे, बावन में जालोर, गुरू० तेपन ने थिरपुर में वसिया महाराज ॥ गुरू० ॥ १० ॥ चोपन रहे सांचोर में, पंचावन भीनमाल, गुरू० भाबुक जन ने दीक्षा दीधी, महाराज ॥ गुरू० ॥ ११ ॥ भगमग दीपक पूजना, करीए गुरूपद सार, गुरू० विनति हर्षमुनि नित्य गावे, महाराज गुरू० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञ, भव्याम्बुजविकाशकम् ।
बिम्ब धनचन्द्रसूरि, सद्द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय, चर्चा चक्रवर्तिपद-धराय, जगज्जनहितावहाय, श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय दीपक यजामहे स्वाहा ॥

षष्ठी पूजा

दोहा

छट्ठी पूजा गुरुतणी, अक्षत शुद्ध अखड ।
चार गति ने चुरा, स्वस्तिक चिह्न खड ॥ १ ॥

स्तवना श्री गुरुदेवनी, करतां कर्म कटाय ॥
ते कारण भावे करी, अक्षत पूजा थाय ॥ २ ॥

ढाल १, तर्ज···अखियन में अविकारा०····

वाणी विमल वसुधारा, गुरूराज तोरी, वाणी० ॥ टेक ॥
गुरूमुख सेती अमीरस वरसे, दृष्टि पीवे नर सारा । हो गुण-ज्ञानी समकित दानी, भविजन को हितकारा ॥ गुरू० ॥१॥ वाचक पद में आप विहारी उत्तम है अवतारा । छप्पन हरजी साल चोमासु, सत्तावन अट्ठावन दोयसारा ॥ गुरू० ॥ २ ॥ थिरपुर नगर में आप विराजो, भीनमाल गुण साठे धारा । साठे सायला सीयाणा एकसठ, मंडवारिये बांसठ प्यारा ॥ गुरू० ॥ ३ ॥ त्रेसठ काणोदर चोंसठ गुड़ा में, विचर्या मालव मझारी । सूरिपद पांसट शहर जावरा, भाव सहित नरनारी ॥ गुरू० ॥ ४ ॥ महोदय महोत्सव मंडप सुन्दर, आनन्द अधिक अपारा । राजेन्द्र सूरि के पट्ट प्रभावक, आप हर्ष आधारा ॥ गुरू० ॥ ५ ॥

दोहा

मालव मरूधर आदि लइ, संघ सहु परिवार ॥
भाव सहित वंदन करे, जय बोले नरनार ॥ १ ॥

मेवाड़ मेरे, गुणी गुर्जर देश गंभीर ॥ रूड़ा० ॥ ६ ॥ उपदेशी नर नारी ने, दीधुं समकित दान, अंजन शलाका आदि लई; अट्ठाई उपधान, ज्ञानभंडार भराव्या गुरूजी ए घणा रे, रचाव्या पोषधशाल विश्राम ॥ रूड़ा० ॥ ७ ॥ केई प्रतिष्ठा काज में, वर्त्या आनन्दपूर, हेते हर्ष मुनि भणे, निर्मल तेनों नूर, राखा गुरू ने वधावी, मिली गोरियां रे, छट्ठी पूजाए चोक पुराय ॥ रूडा० ॥ ८ ॥

काव्य और मंत्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुज विकाशकम् ॥
बिम्बं धनचन्द्रसूरिं सद्द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय, चर्चाचक्रवर्तिपदधराय, जगज्जनहितावहाय श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी पूजा

दोहा

सातमी पूजा गुरू तणी, करीए भक्ति विशाल ॥
पंच जाती पकवान्न थी, भरिये हाटक थाल ॥ १ ॥
शाल दाल आदि सकल, सरस पूर घृत गोल ॥
गुरू आगल भावे ठवी, शुभकर ते रंगरोल ॥ २ ॥

ढाल १, तर्जे वणझारा

गुरूपूजा प्रतिष्ठाकारी, ते भावे सुणो नरनारी ॥ टेक ॥ अगवरी आहोर कचनारा, काणोदरे प्रभु प्यारा। खाचरोद नगर में मझारी, ते भावे० ॥ १ ॥ जसवंतपूरा जावाले, पूरजावरा, दोय निम्बाले रे। थराद त्रयी करी भारी ॥ ते भावे० ॥ २ ॥ नवागाम धाका निम्बाडा चलटट अने बिजवाडा। मीनमाल भादोडा भारी ॥ ते भावे० ॥ ३ ॥ भूति भेंसवाड़ा मलादर में, मडवारिया दोय मन्दिर में। राणापुर रेवतडे सारी ॥ ते भावे० ॥ ४ ॥ वाडीगाम बागरा सवणा, और सायला, सियाणा। हुचली हुमक से सारी ॥ ते भावे० ॥ ५ ॥ रथ घोड़ा मोटर साथे, अति हर्षे ओछव मनातो रे, पूज्ये करी प्रतिष्ठा सारी ॥ ते० ॥ ६ ॥

दोहा

दीक्षा दीधी दीपति, निज हाथे निरधार ॥
उदयविजय गुलाब ने, हंस विजय अणगार ॥ १ ॥
फते विजय बोधिमुनि, गंभीर विजय रंग ॥
इत्यादिक मुनिवर सहु, विचरे संयम संग ॥ २ ॥

ढाल २, तर्ज प्रभु पास नुं मुखडुं जोवा

हवे ग्रन्थ रच्या गुरूभावे, पातालसुन्दरी रास बनावे।

घन सार श्रेष्ठि श्रेष्ठि नुं वृतांत शंकोद्धार स्तुति रच्यो तंत । गुणवंता गुरू गुणध्यावो, तेथी वांछित कमला पावो रे । ॥ गुण० ॥ टेक ॥ १ ॥ रची पूजा अष्टप्रकारी, सतसठ भेदी सुविचारी । वीशस्थानक पूजा रंगे, बार भावना राग उमंगे ॥ गुण० ॥ २ ॥ कर्यो आतम बोध प्रकाश, प्रश्नोत्तर तरंग उल्लास । प्रश्नोत्तर रत्नमालिका, पंचकल्याणक पूजनिका रे ॥ गुण० ॥ ३ ॥ देववंदन आदु अनुसरता, परशुराम पत्रिका करता । रचि समवसरण की पूजा, आदि ग्रन्थ कीया वली दूजा रे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ संघ उज्वलगिरी संघाते, अरबुद धुलेव उमाते । भेट्या जिनवर करी भली यात्र, कीधु पावन निर्मल गात्ररे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ वली संघ चतुर्विध हर्षे । राय राणा प्रणमें उत्कर्षे, केई सूत्रों का योग कराया, उत्सव अट्ठाइ मन भाया रे ॥ गुण० ॥ ६ ॥ संवत ओगणी सतो तर, पुरवागरा नगर के अन्दर । वीर जन्म दिवस व्याख्यान, मुनिहर्ष गुरू निरवाण रे ॥ गुण० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुजविकाशकम् ॥
बिम्बं धनचन्द्रसूरिं, सद्द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय, चर्चाचक्रवर्तिपदधराय, जगज्जनहितावहाय श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टमी पूजा

दोहा

प्रभुताई पूरण प्रगट, दशदिशि में दरशाय ॥
फल पूजा गुरुराजनी, करता फल शुभपाय ॥ १ ॥

ढाल १, तर्ज गरबी

शमदम गुण मे शोभता रे लोल, वारिसूरि हुवा सम्राट रे । "हु तो जाउंरे गुरुजी तोरे भामणे रे लोल" ॥टेक॥ पहोत्या ते पूज्य परलोक में रे लोल, आपे दीपावी वीर नी पाट रे ॥ हुंतो० ॥ १ ॥ मुज शिशना छो आप सेहरा रे लोल, मारा मस्तक ना हो मोड रे ॥ हुतो० ॥ मारू मनड़ु उमायो भेटवा रे लोल, वंदु नितप्रति बे कर जोड रे ॥ हुतो० ॥२॥ उपकारी जीत्या जग केवडा रे लोल, थया शासना सिणगार रे हु । तुझ नामे सकट दूरे टले रे लोल, भागे भूत अने प्रेत विकार रे ॥ हुतो० ॥ ३ ॥ अरि अगे कोइ न आभडे रे लोल, रोग शोग झोटिंग जजाल रे हु । भय डाकिनी शाकिनी ना न लगे रे लोल, पामे आनन्द मगल माल रे ॥ हुतो० ॥ ४ ॥ छल छिद्र कामण न रचे कदी रे लोल, वली दारिद्र दु ख पलाय रे हु । अपुत्र ते पामे पुत्र ने लोल, वली रक टली थाय राय रे ॥ हुतो० ॥ ५ ॥ निर्धन धन

पामे सदा रे लोल, अंध लोचन उज्वल दीपाय रे हुं। पादहीन ते पामे पाद ने रे लोल, तुझ नामे हर्ष सुख थाय रे ॥ हुंतो० ॥ ६ ॥

दोहा

परलोके पहोंत्या जीहां, कर्यो अग्नि संस्कार ।
निपजाव्यो संघ चागरा, समाधिभवन श्रीकार ॥ १ ॥
मनहर मूर्ति गुरूतणी, स्थापी संघ समाज ।
पूजा भक्ति भाव थी, करतां सारे काज ॥ २ ॥

ढाल २,...तर्ज...माढ़....

मनमोहन स्वामी, अन्तरयामी, धनचन्द्रसूरि गणधार । जेहनी सेवा सुधामी पुण्ये पामी, वंदो नित नर नार ॥ टेक ॥ मन मन आय वस्या गुरूदेवा, जिम पय नीर मिलाय । चंदा कुमुदिनी प्रीतड़ी साथे, रागे दिल रंगाय ॥ मन मो० ॥ ॥ १ ॥ करूणा कर्ता कृपालु देवा, देजो दरशन देव । लली लली तुझ चरणों में लागु, करू सदा तुम सेव रे ॥मन मो० ॥ २ ॥ आप गुणों ना सागर हो गुरू, प्रमुदित पुण्य पंडूर । मुझ अवगुणी नी आतमा तारो, हित धरी ने हजूर रे ॥ मन मो०॥३॥ देव दयानिधी छो स्वामी गुरूदानी, ध्यानी धर्म सुधीर । भले जन्म्या चोपड़ा कुल मांही वंश उजागर

वीर रे ॥ मनमो० ॥ ४ ॥ गच्छ शिरोमणी आप कहेवाया, सुयश चारों ही खंड । जय जय सहु जनता मुख बोले, अनुपम प्रेम अखंड रे ॥ मन मो० ॥ ५ ॥ तुझ गुण गावा मुझमन उल्लसित, विकसित प्रेम अंकूर । साहिब शिष्य नी विनति सुणजो, हर्ष विजय है हजूर रे ॥ मन मो० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सर्वागमरहस्यज्ञं, भव्याम्बुजविकाशकम् ।
बिम्बं धनचन्द्रसूरिं, सद्द्रव्येण समर्चयेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ आचार्यपदान्तिकाय चर्चाचक्रवर्तिपदधराय, जगज्जीवहितावहाय, श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिपादपद्माय विविध-फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

गायो गायो रे, धनचन्द्रसूरि गुण गायो ॥टेक॥ तपोगच्छ वर बिरुद सवायो, जगचन्द्र सूरिरायो । पट्टप्रभावकतास परंपर दिनकर तेज दीपायो रे ॥ धन० ॥ १ ॥ क्षमा कल्याण प्रमोद सूरिवर, झलहल कीरति जगायो । सूरिराजेन्द्र शिरो-मणी जग में, सुयश पड़ह बजायो रे ॥ धन० ॥ २ ॥ तसु पट्टे धनचन्द्रसूरिवर, कविजन गुण तस गायो । बागरा नगर चौवीश कुलिका, महोत्सव ठाठ मचायो रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ गजरथ घोड़ा मोटर गाड़ी, साज सोनेरी सजायो । इन्द्रसुवन

मंडप रची सुन्दर विविध वाजित्र बजायो रे ।। धन० ।। ४ ।। नित नवली आंगी प्रभुभक्ति, ज्ञुगने संघ जीमायो । आठ दिवस लगे अनुपम लीला, रचना थी रंग रचायो रे ।। धन० ।। ५ ।। पार्श्वप्रभु की पूरजना पूरण, श्री संघ वध्यो सवायो । लक्षद्रव्य व्यय निज निज शक्ति, भक्तिराग धरायो रे ।। धन० ।। ६ ।। संवत अट्ठाणु, ओगणीशे, विक्रम मगसर मास सोहायो । उज्वल दशमी अती उमंगे, शिखरे कलश चढ़ायो रे ।। धन० ।। ७ ।। तसु पाटे भूपेन्द्र वड़भागी, शांत दान्त मन भायो रे । भारत जन्म लही भवितव्ये, स्वर्गे जेह सिधायो रे ।। धन० ।। ८ ।। पट्ट प्रभावक भगमग ज्योति उदयाचल चढ़ आयो रे । फेडन दल अज्ञान तिमिर को, ज्ञानरवि प्रगटायो रे ।। धन० ।। ९ ।। श्रद्धव्रत नियम व्रतदानी, मिथ्या मेल हटायो । विजय यतीन्द्रसूरि वरदाता, विश्वविजयी पद पायो रे ।। धन० ।। १० ।। शुभ भक्ति सानिध सुख संपत्ति महोत्सव रंग मंडायो रे । शतविम्ब अंजनशलाका प्रभुनी, क्रियाविधि करवायो रे ।। धन० ।। ११ ।। निर्विघ्ने निर्माण थयो ते, श्री संघ काज सवायो । मुनिवर हर्ष विजय गुरू चरणो, गुण यश कीर्ति गायो रे ।। धन० ।। १२ ।। गावो बजावो अष्ट प्रकारे, पूजा प्रेम लगायो । अर्पण गीत आप गुरू चरणे, पूरण हर्ष भरायो रे ।। धन० ।। १३ ।।

मुनिराज श्री हर्षविजय जी रचित

श्री भूपेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा

दोहा

परमेश्वर परमातमा,[1] परमानन्द दातार ।
वर्द्धमान चौवीशमा, शासनपति सुखकार ॥ १ ॥
श्रीजिनवाणी शारदा, दो मुझ वचन विलास ।
श्रीसूरि—गुण पूजा रचूं, पूरो मनकी आस ॥ २ ॥
शिष्य सूरिराजेन्द्रना, शान्त स्वभावी सुजाण ।
पट्टधर धनचन्द्रसूरिना, जगवल्लभ गुणगान ॥ ३ ॥
मुनिपति अति सोहामणा, जयजय सूरिभूपेन्द्र ।
जग में यश लीनो वहु, पचमकाल मुनीन्द्र ॥ ४ ॥
विचारी देशविदेश में, कीनो वहु उपकार ।
दान–शील–तप–भावना, श्रीजिनधर्म प्रचार ॥ ५ ॥

---

१ इस पूजा की विधी श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा के समान ही समझना ।

ओलखाव्या त्रिहुँ तत्वने, प्रतिबोधी नर नार ।
दीनदयाल दया करी, कीनो धर्मप्रसार ॥ ६ ॥

लघुवय में दीक्षालई, निजगुरू आणा पाल ।
बाल ब्रह्मचारी सूरि, शील संयम उजमाल ॥ ७ ॥

स्वर्गीय सूरिवरने नमुं, मुझ आतम आधार ।
भावे जन–गुण वर्णवुं, पूजा अष्ट–प्रकार ॥ ८ ॥

जल चन्दन कुसुमें करी, धूप दीप मनुहार ।
अक्षत और नैवेद्य फल, निर्मल भाव उदार ॥ ९ ॥

प्रथम जल–पूजा

ढाल पहेली

सरदार बनो आयो, ए राह

देश मालवा में सूरि, भोपाल जन्म पाये । भोपाल जन्म पाये सूरि, विश्व में पूजाये ॥ देश० ॥ टेक ॥ उगणीसो पेताली अब्द, आखा तीज सोहे । पुत्र जन्म परमानन्द, मंगल गीत गाये ॥ देश० ॥ १ ॥ तात भगवानजी के, नन्द भाग्यशाली । उत्तम कुसुम–धारिणी, सरस्वतीके जाये ॥ देश० ॥ २ ॥ जन्म नाम देवीचन्द्र, थापे मात प्रेमे । सज्जन कुटुंबीजनो ए खूब हुलराये ॥ देश० ॥ ३ ॥ उच्चग्रह

मुनिराज श्री हर्षविजय जी रचित

श्री भूपेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा

दोहा

परमेश्वर परमातमा,[1] परमानन्द दातार ।
वर्द्धमान चौवीशमा, शासनपति सुखकार ॥ १ ॥
श्रीजिनवाणी शारदा, दो मुझ वचन विलास ।
श्रीसूरि—गुण पूजा रचूं, पूरो मनकी आस ॥ २ ॥
शिष्य सूरिराजेन्द्रना, शान्त स्वभावी सुजाण ।
पट्टधर धनचन्द्रसूरिना, जगवल्लभ गुणगान ॥ ३ ॥
मुनिपति अति सोहामणा, जयजय सूरिभूपेन्द्र ।
जग में यश लीनो बहु, पचमकाल मुनीन्द्र ॥ ४ ॥
विचारी देशविदेश में, कीनो बहु उपकार ।
दान–शील–तप–भावना, श्रीजिनधर्म प्रचार ॥ ५ ॥

---

[1] इस पूजा की विधी श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा के समान ही समझना ।

परमपवित्र चारित्र आनन्दा, हर्षविजय धरे ध्यान–करो० ॥ गंगो० ॥ ५ ॥

सुमतिधारक तारक सद्गुरु,
अघनिवारक धर्म धुरंधरु।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा,
परमसिद्धि लहुँ सुख–संपदा ॥

ॐ ह्रीँ षट्–त्रिंशद्गुणसमन्वितायविश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्रीविजय–भूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

द्वितीय चन्दनपूजा

दोहा

कर्म से सुख सम्पति लहे, हो संयोग वियोग। कर्मे जगमें जस लहे, मान दिये सब लोग ॥ १ ॥ चन्दन सम शीतल हुए, श्रीसूरिवर गुणमाल। सोल कषाय तजि मुनि, महाव्रत धारी दयाल ॥ २ ॥

ढाल तीसरी

वाजी वाजी वाजी भूल्यो वाजी, ए राह

किम हुए जिनमत रागी रागी रागी। सद्गुरु मिले बड़ भागी जिन० ॥ टेक ॥ होनहार बलवान है निश्चय, भोगी

हस्तरेख, लक्षण व्यञ्जन–वन्त । विस्तीर्ण भाग्यवंत पुण्यवंत कहलाये ॥ देश० ॥ ४ ॥ काका धर्मचन्द काळी, सीता सत्यवन्ती । भ्रात कुशलचन्द भगिनी, गंगाये रमाये ॥ देश० ॥ ५ ॥ बीज–कला चन्द ज्यों देवीचन्द वृद्धि पामे, मात तात भणवा निज पुत्रको चिठाये ॥ देश० ॥ ६ ॥ सूरिभूपेन्द्रकी पुण्याइ, पूर्व पूण्य जोगे, बाल वय कलाप्रवीण, हर्ष के मन भाये ॥ देश० ॥ ७ ॥

ढाल दूसरी

लाखों प्रणाम की राह

गंगोदक गुणखान, करो भवि भावे प्रणाम ॥ टेक ॥ जल ज्युं निर्मल पर उपकारी, वाणी मिथ्या तम हरनारी । धोवे पाप परम हितकारी, मिले शाश्वतो स्थान–करो० ॥ गंगो० ॥ १ ॥ जल उपकारी ज्युं जग–जनमें, जल बिन सुखे तरुवर वनमें । अकुलावे सहु जतु मनमें, मिले सुजलको पान–करो० ॥ गंगो० ॥ २ ॥ जल भरी कलश सूरीश्वर पूजो, भव तरणे को मार्ग न दूजो, पूर्व पुन्य पावे सद्गुरुजी, टले मिथ्या अज्ञान–करो० ॥ गंगो० ॥ ३ ॥ पहली पूजा जलसुं कीजे, सूरि–जन्म गुण हृदय धरीजे । चरणे पंचामृत सींचीजे, करी धर्म पहिचान–करो० ॥ गंगो० ॥ ४ ॥ सूरिराजेन्द्र सुशिष्य सूरीन्दा, धनचन्द्र पट्टधर विजयभूपीन्दा ।

परमपवित्र चारित्र आनन्दा, हर्षविजय धरे ध्यान—करो० ॥ गंगो० ॥ ५ ॥

सुमतिधारक तारक सद्गुरु,
अघनिवारक धर्म धुरंधरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा,
परमसिद्धि लहुँ सुख—संपदा ॥

ॐ ह्रीँ षट्—त्रिंशद्गुणसमन्वितायविश्वजनहितावहाय सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्रीविजय-भूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

द्वितीय चन्दनपूजा

दोहा

कर्म से सुख सम्पति लहे, हो संयोग वियोग । कर्मे जगमें जस लहे, मान दिये सब लोग ॥ १ ॥ चन्दन सम शीतल हुए, श्रीसूरिवर गुणमाल । सोल कषाय तजि मुनि, महाव्रत धारी दयाल ॥ २ ॥

ढाल तीसरी

वाजी वाजी वाजी भूल्यो वाजी, ए राह

किम हुए जिनमत रागी रागी रागी । सद्गुरु मिले बड़ भागी जिन० ॥ टेक ॥ होनहार बलवान है निश्चय, भोगी

होवे त्यागी । रंक-राय-धनी-अधनी होवे, पावे न सुपथ अभागी जिनमत० ॥ किम० ॥ १ ॥ मात अरु तात परलोक सिधावे, देवीचन्द्र वैरागी । अनित्य संसार स्वरूप विचारी, सुमति हिये बीच जागी जिन० ॥ २ ॥ पारख केशरीमलजी प्रसङ्गे मिले गुरुवर सौभागी । राजगढ़े राजेन्द्रसूरीश्वर, देखी लगना लागी जिन० ॥ किम० ॥ ३ ॥ सदुपदेश श्रवण करी गुरुनो, शकासघली भागी । सप्त सप्तमत अली-राजपूरे गुरु, दीक्षा दे वीतरागी जिन० ॥ किम० ॥ ४ ॥ आदीश्वर ज्युं जन्मतिथि को हुए संयमी अनुरागी । अब्द बावनमें "दीपविजयमुनि", नामकी जय बोलागी ॥ जिन० ॥ किम० ॥ ५ ॥ गच्छपति विजयराजेन्द्रसूरीश्वर, निर्लोभी अरु निरागी । हर्षविजय जस महिमा जगमें, आपोआप फेलागी जिन० ॥ किम० ॥ ६ ॥

ढाल चौथी

चल मोरी संहिया पैया पैया, प्रभु पूजन को, ए राह

चन्दन-पूजा करो भवि प्राणी, सूरिभूपेन्द्र की चित्तचंगे ॥ चन्दन० ॥ टेक ॥ मलयागिर चन्दन-सम शीतल, पूजो प्रमोद धरी अंगे ॥ चन्दन० ॥ १ ॥ शान्त स्वभावी मृदु भाषी मुनि, गुणगावो अति उछरंगे ॥ चन्दन० ॥ २ ॥ बुद्धि प्रबल हुई ज्ञानकी वृद्धि, सद्गुरुवर सुप्रसंगे ॥ चन्दन०

॥ ३ ॥ विहार करे मुनि मान प्रमाणे, गामोगाम गुरुवर संगे ॥ चन्दन० ॥ ४ ॥ पंचमहाव्रत पाले खंते, सुमति गुपति संयम रंगे ॥ चन्दन० ॥ ५ ॥ तप जप ध्याने वरते मुनिवर, टाळी दोष रहे ढंगे ॥ चन्दन० ॥ ६ ॥ सूरिराजेन्द्र सुशिष्यके गुणनित, हर्षभरो अति अंतरंगे ॥ चन्दन० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्म धुरंधरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख-सम्पदा ॥

ॐ ह्रीँ षट्-त्रिंषद्गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्रीविजय-भूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय पुष्प-पूजा

दोहा

वरते निजगुरु आण में, उपकारी अवतार ।
महिमा फेली-पुष्पवत्, फूल सुगंधीदार ॥
सूरीश्वर कंठे ठवुं, गूंथी पुष्पनी माल ।
दुरमति दुर्गंधी तजि, सूरिभूपेन्द्र दयाल ॥ १ ॥

ढाल पांचमीं

आवो आवो यशोदाना कंत, ए राह

धन जगमें जिण अणगार, करुणा धारीरे । प्रभुशासन ना

होवे त्यागी । रंक-राय-धनी-अधनी होवे, पावे न सुपथ अभागी जिनमत० ॥ किम० ॥ १ ॥ मात अरु तात परलोक सिधावे, देवीचन्द्र वैरागी । अनित्य संसार स्वरूप विचारी, सुमति हिये बीच जागी जिन० ॥ २ ॥ पारख केशरीमलजी प्रसङ्गे मिले गुरुवर सौभागी । राजगढ़े राजेन्द्रसूरीश्वर, देखी लगना लागी जिन० ॥ किम० ॥ ३ ॥ सदुपदेश श्रवण करी गुरुनो, शकासवली भागी । संघ सहमत अली-राजपूरे गुरु, दीक्षा दे वीतरागी जिन० ॥ किम० ॥ ४ ॥ आदीश्वर ज्युं जन्मतिथि को हुए संयमी अनुरागी । अब्द बावनमें "दीपविजयमुनि", नामकी जय बोलागी ॥ जिन० ॥ किम० ॥ ५ ॥ गच्छपति विजयराजेन्द्रसूरीश्वर, निर्लोभी अरु निरागी । हर्षविजय जस महिमा जगमें, आपोआप फेलागी जिन० ॥ किम० ॥ ६ ॥

ढाल चौथी

चल मोरी संहिया पैया पैया, प्रभु पूजन को, ए राह

चन्दन-पूजा करो भवि प्राणी, सूरिभूपेन्द्र की चित्तचंगे ॥ चन्दन० ॥ टेक ॥ मलयागिर चन्दन-सम शीतल, पूजो प्रमोद धरी अंगे ॥ चन्दन० ॥ १ ॥ शान्त स्वभावी मृदु भाषी मुनि, गुणगावो अति उछरंगे ॥ चन्दन० ॥ २ ॥ बुद्धि प्रबल हुई ज्ञानकी वृद्धि, सद्गुरुवर सुप्रसंगे ॥ चन्दन०

ढाल छठी

स्वार्थदत्त स्वार्थ तुं तो साधवा मा ठीक छे, ए राह

कुसुम पूजा श्री भूपेन्द्र सूरि दयालकी, सूरि दयालकी, सरस्वतीके लालकी । सरस्वतीके लालकी भगवानजीके बाल की ॥ कुसुम० ॥ टेक ॥ दुर्गति कुगंध वारी, सुमति कुपति हृदये धारी । काम क्रोध मोह निवारी, जंतुके ऋच्छपालकी ॥ कुसुम० ॥ १ ॥ एक श्री जिनराज भजी, तत्वकी सिणगार सजी । दुनियादिवानी तजी जो, है वो माया जालकी ॥ कुसुम० ॥ २ ॥ निर्मल चारित्र पाली, परीसह बावीश-टाली । दूषण व्यसन गंध वाली, जय जय कृपालकी ॥ कुसुम० ॥ ३ ॥ देशने विदेश फरी, श्रद्धाधारी जीव करी, ध्यान दोय परहरी जीव-मात्रके प्रतिपालकी ॥ कुसुम० ॥४॥ हिम उष्ण ताप सही, परोपकार बुद्धि रही । शास्त्रे भाषी सोही कही, बात नहीं धमालकी ॥ कुसुम० ॥ ५ ॥ जाणी खरी वीर वाणी, एक पक्ष कबू न ताणी । चारों धर्म मर्म छाणी प्ररुपणा कमालकी ॥ कुसुम० ॥ ६ ॥ सुरभिगंध कुसुम फेली, दूरभिगंध दूर ठेली । हर्ष—सूरिराजेन्द्र प्रभु, भूपेन्द्र मोक्ष मालकी ॥ कुसुम० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्म धुरंधरु ॥

सिणगार निरऽहंकारीरे ॥ धन० ॥ टेक ॥ विचरता निजगुरु लार, आहोर आयेरे। सघमें आनन्दानन्द जन-मन भायेरे ॥ प्रभु पूजा प्रभावना ठाठ, तत्र जप करतेरे। सुणी सद्गुरुवर उपदेश, हृदये धरतेरे ॥ धन० ॥ १ ॥ वेद महाव्रत नव एक वर्ष, माघ सुमासेरे। सुदि पचमी परमानद सघ हुलासेरे ॥ योग्य जाणी निज-गुरुराय, समय विचारीरे। स्थूल दीक्षा दे विधियुक्त आनन्दकारीरे ॥ धन० ॥ २ ॥ गरुसगे चौमासा कीध, क्रमसे गणियेरे ॥ राजगढ[१] जावरा[२] रतलाम[३], आहोर[४] भणियेरे ॥ शिवगज[५] सीयाणा[६] आहोर[७], जालोर[८] रहिनेरे। सूरत[९] कुकसी[१०] खाचरौद[११], विनय ग्रहिनेरे. ॥ धन० ॥ ३ ॥ सूरिराजेन्द्र चरम चौमास, तिरसठ सालेरे। बडनगर[१२] रहे गुण खान, दूषण टालेरे ॥ इणि वर्षे गुरुनो वियोग, नयणे निहालेरे। राजगढ गुरु अतिमभक्ति, गुण सभालेरे ॥ धन० ॥ ४ ॥ इम द्वादश वर्ष पर्यंत, स्वगुरु सगेरे। नानाविध ज्ञानाभ्यास, सुगुरु प्रसङ्गेरे ॥ मागधी सस्कृत कोष न्याय, तर्कादि ज्ञातारे। कवीतज्ञ कुशल महाभाग, सद्बोध दातारे। ॥ धन० ॥ ५ ॥ मुनि समय विचक्षण "दीप", ज्ञानना दरियारे। जग-जनवल्लभ जयवत, गुण आदरियारे ॥ सूरिराजेन्द्र धनचन्द्र, पट्ट-प्रभावीरे। मुनि हर्षविजय आधार, शान्तस्वभावीरे ॥ धन० ॥ ६ ॥

ढाल छठी

स्वार्थदत्त स्वार्थ तुं तो साधवा मा ठीक छे, ए राह

कुसुम पूजा श्री भूपेन्द्र सूरि दयालकी, सूरि दयालकी, सरस्वतीके लालकी । सरस्वतीके लालकी भगवानजीके वालकी ॥ कुसुम० ॥ टेक ॥ दुर्गति कुगंध वारी, सुमति कुपति हृदये धारी । काम क्रोध मोह निवारी, जंतुके ऋच्छपालकी ॥ कुसुम० ॥ १ ॥ एक श्री जिनराज भजी, तत्वकी सिणगार सजी । दुनियादिवानी तजी जो, है वो माया जालकी ॥ कुसुम० ॥ २ ॥ निर्मल चारित्र पाली, परीसह बावीश टाली । दूपण व्यसन गंध चाली, जय जय कृपालकी ॥ कुसुम० ॥ ३ ॥ देशने विदेश फरी, श्रद्धाधारी जीव करी, ध्यान दोय परहरी जीव-मात्रके प्रतिपालकी ॥ कुसुम० ॥४॥ हिम उष्ण ताप सही, परोपकार बुद्धि रही । शास्त्रे भाषी सोही कही, बात नहीं धमालकी ॥ कुसुम० ॥ ५ ॥ जाणी खरी वीर वाणी, एक पक्ष कबू न ताणी । चारों धर्म मर्म छाणी प्ररुपणा कमालकी ॥ कुसुम० ॥ ६ ॥ सुरभिगंध कुसुम फेली, दूरभिगंध दूर ठेली । हर्ष—सूरिराजेन्द्र प्रभु, भूपेन्द्र मोक्ष मालकी ॥ कुसुम० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्‌गुरु, अघनिवारक धर्म धुरंधरु ॥

विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख संपदा ॥

ॐ ह्रीँ पट्-त्रिपद्गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्री विजय-भूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूप-पूजा

दोहा

सूरिराजेन्द्र धनचन्द्रजी, आणके पालनहार ।
पाठक मोहनविजयजी, शान्तवृत्ति अणगार ॥
चतुर चौमासा दश करे, वाचकवर के साथ ।
जस आणा में वर्तता, वन्दे जोडी हाथ ॥

ढाल सातमी

तुम हो किण चेनड़ भइया, ए राह

मिले भूखाने घेवरीया, जिम प्यासा ने जल दरिया; जिम जलधी में बुड़ताने मिले द्वीप हो मुनिवरजी ॥ टेक ॥ मिथ्यातिमिर निवारतारे, दीप जगमें महिमा-वंत हो-मुनि० । कहेणी करणी सारिखीरे, दयावंत महापुण्यवंत हो—मुनि० ॥ मिले भूखाने० ॥ १ ॥ दर्शन करता भावनारे, शुद्ध होवे जास विचार हो—मु० अतिशयधारी गुणनिधिरे, जस गुण

को आवे न पार हो मु० ॥ मिले० ॥ २ ॥ हर्ष मुखी पुण्यातमारे, वाल-वृद्ध के होय जवान हो-मु० ॥ नीरमिले जिम दुग्धमें रे, तद्रूप हुवे गुणखान हो–मु० मिले० ॥ ३ ॥ विजयसूरिधनचन्द्रनारे, जेह पट्ट दीपावनहार हो–मु० ॥ मानीता श्रीसंवनारे, सुबुद्धिना दातार हो–मु० ॥ मिले० ॥ ४ ॥ उद्योतक जिनधर्मनारे, प्रभु शासन में धीर वीर हो० मु० अडग मेरुपर्वत समोरे, गुणी सागर जिम गंभीर हो० मु० ॥ मिले० ॥ ५ ॥ सूरराजेन्द्र शिक्षा लहीरे, जाण्यो जिनधर्मनो सारहो–मु० ॥ अगुणी पण होय महागुणीरे, नहीं संशय हर्ष लगार हो–मु० ॥ ६ ॥

ढाल आठमी

वींछुड़ाकी काटी पीयर चाली हो०, ए राह

धूप पूजा सूरिवरकी कर अघ वारो हो नरनारी । विजय-भूपेन्द्रसूरीश्वर शुद्धाचारो हो नरनारी ॥ "चिंतामणि सुरतरु चेलड़ी, मृदुवाणी जैसी सेलड़ी" धूप० ॥ १ ॥ धूपधूम्र ज्युं ऊर्ध्वगति सुखसारो हो नरनारी । टलें अधोगति दुःख वन्दन मन धारो हो नरनारी चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ २ ॥ धूपदहन ज्युं कर्मदहन हो थारो हो नरनारी । धूप पूजन कर मेटो कर्मको चारो हो नरनारी ॥ चिंता० मृदु० ॥ ३ ॥ गुणवर्णनकर भवभव दुःख निवारो हो नरनारी । गुरु सम

दूजो जगमें नहीं आधारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ ४ ॥ गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु शब्द उचारो हो नरनारी । तत्वत्रय ओलखाय, कियो उपकारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ५ ॥ पुराय प्रनलसे मिले सुगुरुको सहारो हो नरनारी । सूरिराजेन्द्र धनचन्द्र सुपथ स्वीकारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ६ ॥ स्वर्गीय सूरिभूपेन्द्र सुगुण अवधारो हो नरनारी । हर्षविजय नर जन्म सफल संसारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्म धुरन्धरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख-सपदा ॥

ॐ ह्रीँ षट्त्रिंषद्गुणसमन्वितःय विश्वजनहितावहाय श्री स धर्मवृद्दत्तपोगच्छपरम्परावतसकाय परमपूज्याय श्री विजयभूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय धूप यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपक पूजा

दोहा

पट्टधर सूरिराजेन्द्रना, धनचन्द्रसूरिअणगार ।
पाट [illegible] गी, स्वर्गीय दोय गणधार ॥ १ ॥

सूरिसूर्याभावसे, जिम दीपकनी ज्योत ।
दीपमुनीश्वर तिम करे, जिनशासन उद्योत ॥ २ ॥

ढाल नवमी

हींडा

आचारिज पद थापन करवा, संघ चतुर्विध जावेरे । जग-दीपक सम दीपमुनि जिनधर्म दीपावेरे ॥ "सुमतिधारीरे, सुमतिधारी-शुद्धाचारी छे हितकारीरे ॥ सुमति०" ॥ टेक ॥ जावरा संघ श्रीसंघसहमतसे, पट्टोत्सव मंडावेरे । आमन्त्रण दे संघ बुलावे, महत्व वढावेरे ॥ सुमति० ॥ १ ॥ सकल संघ सम्मेलन हर्षे, उत्सव अठाई छाजेरे । नरनारी हुवा सहस्रों भेला, जैन समाजेरे ॥ सु० ॥ २ ॥ यतीन्द्र आदि मुनिमंडल जिन, आगम ने अनुसारेरे । संघ सहु वासक्षेप करे, हर्ष नाना प्रकारेरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ दीपविजय भूपेन्द्रसूरि हुवे, मंगल तूर बजायेरे । घरघर आनन्द आदीश्वर प्रभु, सुगुरु पसायेरे । सु० ॥ ४ ॥ पूरण वसु नव-चन्द्र वरस जेठ, अधिक मास सुदि वरतेरे । अष्टमी भृगुवासर जय जय नरनारी करतेरे ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ सूरिराजेन्द्र प्रभुशासनोन्नति, विजयभूपेन्द्रनी आणारे । हर्षविजय श्री संघसमक्षे, सूरि थपाणारे ॥ सुमति० ॥ ६ ॥

दूजो जगमें नहीं आधारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ ४ ॥ गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु शब्द उचारो हो नरनारी। तत्त्वत्रय ओलखाय, कियो उपकारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ५ ॥ पुण्य प्रबलसे मिले सुगुरुको सहारो हो नरनारी। सूरिराजेन्द्र धनचन्द्र सुपथ स्वीकारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ६ ॥ स्वर्गीय सूरिभूपेन्द्र सुगुण अवधारो हो नरनारी। हर्षविजय नर जन्म सफल संसारो हो नरनारी ॥ चिंता० ॥ मृदु० ॥ धूप० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्म धुरन्धरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख-संपदा ॥
ॐ ह्रीं षट्त्रिंपद्गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय श्री स धर्मवृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्री विजय-भूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपक पूजा

दोहा

पट्टधर सूरिराजेन्द्रना, धनचन्द्रसूरिअणगार ।
पाठक मोहनविजयजी, स्वर्गीय दोय गणधार ॥ १ ॥

सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्रीविजयभूपे-न्द्रसूरीश्वरपादब्जाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

छठी अक्षत पूजा

दोहा

अलवाणे पग जग फिरे उपधी मान प्रमाण ।
देशकालको देखके, वरते चतुर सुजाण ॥ १ ॥

ढाल अग्यारमी

सरकार थारो पंचरंग लहरयो भींजे महाराज, ए राह

सूरिराज वाणी जगजीवन हितकारी महाराराज मुनिराज हो उपकारी महाराराज ॥ टेक ॥ विचरेदेश विदेशमेंरे, देवा सद्उपदेश । महाराज व्रत पच्चक्खाण करे नरनारी—म्हा० । दयामयी जिनधर्मनोरे, मारग शुद्ध बताय । महा० हलूकर्मी कइ ब्रह्मव्रत—धारी म्हा० ॥ सूरि० ॥ १ ॥ द्वादश व्रतधारी हुवारे, पुण्यवंत कइ जीव । महा० रयणीभोजनका कइ त्यागी—म्हारा० ॥ मु० ॥ जिन पूजा कइ आदरेरे, चउद नियम नितधार । म्हा० कइ हुए प्रभु दर्शनके रागी—म्हारा-राज ॥ सूरि० ॥ २ ॥ सामायिक व्रत आदरेरे, कइ सचित्त परिहार । म्हा० नानाविध व्रत नियम प्रमाणी म्हारा० मुनि०

ढाल दशमी

तुम चिद्‌घन चन्द आनन्द लाल तोरे दर्शनकी बलिहारी,

ए राह

दीपक पूजा करो सूरिराजकी, मिथ्या तम हरनारी ॥ भलां पूजा मिथ्या तम हरनारी ॥ दीपक० ॥ टेक ॥ क्रोध मानादि कषाय निवारक, तारक पर उपकारी । भ० सूरि० ॥दीपक० ॥ १ ॥ चन्द्र अभावे दीपसहायक, तरुजिम जगहितकारी भ० सू० ॥ दीपक० ॥ २ ॥ सूत्रागम दीपकना धारक, सदुपदेश दातारी भ० सू० ॥ दीपक० ॥ ३ ॥ अष्टादश दूषण तम नाशक, भावक शुद्धाचारी । भ० सू० ॥ दीपक० ॥ ४ ॥ मिथ्यामत भंजक सूरिराय । वाणीअमृत अविकारी भ० सू० ॥ दीपक० ॥ ५ ॥ हिंसा टालक संयम पालक, विकथा चार निवारी ॥ भ० सू० ॥ दीपक० ॥ ६ ॥ सूरिराजेन्द्र भूपेन्द्रप्रभाकर, हर्षविजय उरधारी भ० सू० ॥ दीपक० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्‌गुरु, अघनिवारक धर्मधुरंधरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख-संपदा ॥
ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्‌गुणसमन्वित्ताय विश्वजनहितावहाय श्री

आध्यात्मिक तत्व अनुरागी। तजि दोय ध्यान सुविचारी ॥ अक्षत० उत्त० ॥ ३ ॥ अक्षयसुखके वो अभिलाषी, अलिक तज सत्य के भाषी। तेरा बावीशको वारी ॥ अक्षत० ॥ उत्त० ॥ ४ ॥ पापाश्रवद्वार को रोकी, संवर सुमित्र की चोकी। लगादी ज्ञान गुल क्यारी ॥ अक्षत० ॥ उत्त० ॥ ५ ॥ राजेन्द्र धनचन्द्रकी वाणी। विजयमुनि–हर्ष दिल आणी भूपेन्द्र आबालब्रह्मचारी ॥ अक्षत० ॥ उत्त० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्मधुरन्धरु।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धिलहुं सुखसंपदा ॥

ॐ ह्रीँ षट्-त्रिंषद्गुणसमन्वितायविश्वजन हितावहाय श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्री विजयभूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

सप्तम नैवेद्य पूजा

दोहा

मृदुभाषी सूरीश्वर, शान्त स्वभावी संत।
वाणी अमृत सारिखी, जय जय करुणावंत ॥ १ ॥
थाल लइ नैवेद्यकी, भाँति भाँति पकवान।
भावोभावना जिम लहो अणाहारी शुभ स्थान ॥ २ ॥

सातक्षेत्रमे व्यय करेरे, कइ यक चतुर सुजाण । म्हा० सुणी सूरिवरकी मीठी वाणी म्हारा० सू० ॥ ३ ॥ गुर्जर मरुधर सोरठेरे, मालवदेश निमाड़ । म्हा० झालावाड़ मेवाड में विचारी म्हा० ॥ समकित दान देइ किया रे, जिनधर्मी नर-नार । म्हा० हुए सुपंथी कुमारग बिसरी म्हा० ॥ सू ०॥४॥ विजयभूपेन्द्रसूरि गुणीरे, संयम किरियापात्र । म्हा० पूर्ण यशस्वी महिमाशाली म्हा० । मुनिमन-रंजन साहिबारे, बाह्याभ्यन्तर शुद्ध । म्हा० निग्रन्थ पन्थ सुचारित्र पाली म्हा० ॥ सू ० ॥ ५ ॥ गुण अगाह सूरिराजनारे, कहेता न आवे पार । म्हा० मुनिपति परमपवित्र वैरागी, म्हा० । पुण्ये सुसंगति मिलीरे, हुवा मुझ जन्म पवित्र । म्हा० हर्ष की सांची प्रीति जाणी म्हा० ॥ सू० ॥ ६ ॥

ढाल बारमी

रेखवा कव्वाली

उत्तम गुण शांतता धारी, अक्षतपूजा भवि सारी । अखय सुख लेनकी किरिया, उपशम गुण ज्ञानका दरिया । निग्रंथ सुपंथ निरधारी ॥ अक्षत० ॥ उत्त० ॥ १ ॥ अखंड चारित्र को पाली, हृदयसे दुर्मति टाली । अथिर सुख जाणी संसारी ॥ अक्षत० उत्त० ॥ २ ॥ कंचन ने नारी को त्यागी,

अमृतवाणी श्रीसूरीश्वरकी, हां श्री० सू० लेइ नैवेधनो थाल-भविक० ॥ नैवेद्य० ॥ १ ॥ भूख पीडितने मोदक प्राप्ती, मो० श्रमण भूखाने शिवमाल भविक० ॥ नैवेद्य० ॥ २ ॥ छत्रीशगुणधारक सूरिराया, धा० परमपवित्र दयाल भ० ॥ नैवेद्य० ॥ ३ ॥ सारणा वारणा चोयणा ने वली, चो० पडिचोयण जिम ग्वाल भ० ॥ नैवेद्य० ॥ ४ ॥ अंग-उपांगना ज्ञायक सूरि, हां० ज्ञा० षट्कायक रूछपाल भ० ॥ नैवेद्य० ॥ ५ ॥ गच्छपति थंभ भार खमे जिम, भा० तिम गणके प्रतिपाल भ० ॥ नैवेद्य० ॥ ६ ॥ सूरिराजेन्द्र धनचन्द्रके पट्ट, ध० हर्ष भूपेन्द्रकृपाल भ० ॥ नैवेद्य०॥७॥

काव्य और मन्त्र

सुमति धारक तारक सद्गुरु, अघनिवारक धर्मधुरंधरु ।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परसिद्धि लहुँसुख संपदा ॥

ॐ ह्रीं पट्-त्रिंपद्गुणसमन्विताय विश्वजन हितावहाय श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्री विजयभूपेन्द्र सूरीश्वरपादपद्माय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फल पूजा

दोहा

फल पूजा करता भवि, लहो शिव-फल सुख धाम ।
अथिर अवर फल है सभी, ध्रुव मुक्ति विसराम ॥ १ ॥

ढाल तेरमी

वराकरा

सूरिराजेन्द्र मार्ग दीपाया, भूपेन्द्रसूरीश्वर राया ॥ टेक ॥ जैनागम पारग स्वामी, नहीं चारित्र गुणमें खामीजी । जगमें प्रभुताई पाया ॥ भू० ॥ १ ॥ उपदेशे हुए उपधान, वलि अंजनशलाका विधानजी । विधि मारगको अपनाया ॥ भू० ॥ २ ॥ जिनबिंब प्रतिष्ठाकारी, क्रिया दक्ष आगम अनुसारीजी । जनतामें हर्ष सवाया ॥ भू० ॥ ३ ॥ दानविजय कल्याण ए नामे, तत्व चारित्र इम अभिरामेजी । स्वदीक्षित शिष्य कहाया ॥ भू० ॥ ४ ॥ किये जिण जिण ठाम चौमासा, धर्मकृत्य वहां पर खासाजी । श्रीसंघमें हर्ष वधाया ॥ भू० ॥ ५ ॥ अट्ठाई उजमणा ठाठ, जिनपूजा वासर आठजी । स्थानिक संघ संघ बुलाया ॥ भू० ॥ ६ ॥ आवे वन्दन नर नारी, धर्मकृत्य करे अणपारीजी । यश गुण जग-मांहे गवाया ॥ भू० ॥ ७ ॥ वाणी प्रिय साकर जैसी सुणी हरखे देशी विदेशीजी । गुणी ठामोठाम पूजाया ॥ भू० ॥ ८ ॥ करे गुणका जगजन पूजा, गुरु सम नहीं जगमें दूजाजी । सूरिराजेन्द्र हर्ष सुहाया ॥ भू० ॥ ९ ॥

ढाल चवदमी

छोटी बड़ी सुहियांरे जाली का मेरे काढ़ना, ए राह

नैवेद्य पूजा रसाल, भविक भावो भावना ॥नैवेद्य०॥टेक॥

कीनो, चरित्रलहो विस्तार । सूरिधनचन्द्र के पट्टप्रभावी, हर्ष नमे अतिप्यारजी ॥ अति० ॥ ६ ॥

श्री रामचन्द्र महाराज सिधाये वनको, ए राह

तीरथ यात्रा करी सूरिवर निज जीवनमें । अति आनन्द-मंगल रह्या संघाती जनमें ॥ टेक ॥ श्रीसिद्धाचल गिरनार आबु तारंगे । वरकाणा भोयणी नाडलाइ चित चंगे ॥ महा-वीर पानसर पाटण मन उछरंगे । तालध्वज शंखेश्वर भांडव मांडव रंगे ॥ सेसली कोरटा नाडोला प्रभु देखनमें ॥ अति० ॥ ती० ॥ १ ॥ चारूप कुंभारिया वणथली और दयाणा । नाँदिया अजारी तीरथ भी हुवा जाणा ॥ भीलड़ीया जेसव-मेर सुमन हरखाणा । लोद्रवा ओसिया सांचोर प्रभु गुण गाणा ॥ नाकोड़ा बंभणवाड़ 'वीर' निरखनमें ॥ अति० ॥ ॥ ती० ॥ २ ॥ गोवा मकसी केसरिया आदि घणाई । फिर तीर्थ पञ्चासली संक्षेप नाम गणाई ॥ संघ साथे सामी-वच्छल पूजा भणाई । देवद्रव्यवृद्धि नहीं जूदी जूदी गणाई ॥ जिनमंदीर जीर्णोद्धार सुकृत्य सघनमें ॥ अति० ॥ ती० ॥ ३ ॥ उपदेशे कइयक ज्ञानभंडार नीमाया । कन्याशाला बालकशा-लादि थपाया ॥ जैन गुरुकुल ज्ञानवृद्धिका काम कराया । सूरिवर का सदुपदेश सहु मन भाया ॥ मुनि हर्षविजय भूपेन्द्र सूरीश शरनमें ॥ अति० ॥ ती० ॥ ४ ॥

ढाल पंदरमी

आनन्द वधाई, केवल उपनोरे, ए राह

अतिशय गुणधारी, सूरि यशवारी दुःषमकालमें। अति-शय० ॥ टेक ॥ अभिधान-राजेन्द्र-कोशके शोधक, बोधक जगदाधार। स्वगुरु कार्ये पूर्ण परिश्रम, मुदित कियो सुवि-चारजी ॥ अति० ॥ १ ॥ चौमासे और शेषकाल में, करे उपदेश प्रचार। द्रव्यसहायता करता श्री संघ, सुरि-वचन स्वीकारजी ॥ अति० ॥ २ ॥ गुर्जर अमदावाद शहरमें, संघ करे सत्कार। क्रियाधारी तत्वविचारी, धन्य धन्य अणगारजी ॥ अति० ॥ ३ ॥ भीनमाल जा करी विनती, करो सूरिजी विहार। मुनि सम्मेलन आप पधारो, सुधरे श्रमणाचारजी ॥ अति० ॥ ४ ॥ राजनगर सूरिराज पधारे, मुनिमंडलीलार। नव[६] प्रमाणिक आचार्योंमें, थापे संघ श्री कारजी ॥ अति० ॥ ५ ॥ चतुर चौमासे रहो पूज्यजी, अर्ज करे नर नार। सूरि चौमासे आनन्दमंगल वरत्या जय जयकारजी ॥ अति० ॥ ६ ॥ निमाड़ मालव मरुधर आदि, संघ सकल परिवार। थावर जंगम करे जातरा, निर्मल भाव उदारजी ॥ अति० ॥ ७ ॥ गुर्जर कतिपय तीर्थभेट पुनि -मरुधर देशमझार। विजयभूपेन्द्रसूरीश पधारे, संघ में हर्ष अपारजी ॥ अति० ॥ ८ ॥ संक्षेप सूरि-गुणवर्णन

कीनो, चरित्रेलह्यो विस्तार। सूरिधनचन्द्र के पट्टप्रभावी, हर्ष नमे अतिप्यारजी ॥ अति० ॥ ६ ॥

श्री रामचन्द्र महाराज सिधाये वनको, ए राह

तीरथ यात्रा करी सूरिवर निज जीवनमें। अति आनन्द-मंगल रह्या संघाती जनमें ॥ टेक ॥ श्रीसिद्धाचल गिरनार आबु तारंगे। वरकाणा भोयणी नाडलाइ चित चंगे ॥ महा-वीर पानसर पाटण मन उछरंगे। तालध्वज शंखेश्वर मांडव मांड़व रंगे ॥ सेसली कोरटा नाडोला प्रभु देखनमें ॥ अति० ॥ ती० ॥ १ ॥ चारूप कुंभारिया वणथली और दयाणा। नाँदिया अजारी तीरथ भी हुवा जाणा ॥ भीलड़ीया जेसव-मेर सुमन हरखाणा। लोद्रवा ओसिया सांचोर प्रभु गुण गाणा ॥ नाकोड़ा वंभणवाड़ 'वीर' निरखनमें ॥ अति० ॥ ॥ ती० ॥ २ ॥ गोघा मकसी केसरिया आदि घणाई। फिर तीर्थ पञ्चासली संक्षेप नाम गणाई ॥ संघ साथे सामी-वच्छल पूजा भणाई। देवद्रव्यवृद्धि नहीं जूदी जूदी गणाई ॥ जिनमंदीर जीर्णोद्धार सुकृत्य सघनमें ॥ अति० ॥ ती०॥३॥ उपदेशे कइयक ज्ञानभंडार नीमाया। कन्याशाला बालकशा-लादि थपाया ॥ जैन गुरुकुल ज्ञानवृद्धिका काम कराया। सूरिवर का सदुपदेश सहु मन भाया ॥ मुनि हर्षविजय भूपेन्द्र सूरीश शरनमें ॥ अति० ॥ ती० ॥ ४ ॥

ढाल सोलमी

भूलो मत भमरा तुं क्यों०, ए राह

फल पूजा सूरीराज की, सुगुणा नरनार । करिये निर्मल भावसुं, उच्चगति दातार ॥ फल० ॥ टेक ॥ अनुमोदन सूरि-गुण तणो, संवर कियानो सार । कर्मोंकी होय निर्जरा, नहीं शका लिगार ॥ फल० ॥ १ ॥ परमोपकारी महागुणी, दीनो सदुपदेश । जाति द्वेष मेटी घणा, मान नहीं लवलेस ॥फल० ॥ २ ॥ खाचरौद रतलाम जावरा, राजगढ ने थराद । पालीताणा भीनमालने, रही अमदावाद ॥ फ० ॥ ३ ॥ शिवगंज मरुधर बागरा, सीयाणा बलदूट । जोधाणा आहोर में, आनन्द अखूट ॥ फ० ॥ ४ ॥ मेंसवाडे कियो अंतमें, सूरि चातुरमास । रतना कस्तूर चदजी आदि संघ हुलास फल० ॥ ५ ॥ तप जप पोसा प्रभावना, नानाविध धर्मकाज । अट्ठाई उत्सव हर्षसुं, करे सघ समाज ॥ फल० ॥ ६ ॥ विहार करी जालोरने, तीखी सीयाणा ग्राम । चरली यात्रा प्रभुपार्श्वकी गूडे लियो विसराम ॥ फल० ॥ ७ ॥ वेदना किंचित खासकी, कर्म वेदनी जोर । विहार करी गूडा से सूरि, आये आहोर ॥ फल० ॥ ८ ॥ दिन प्रतिदिन वधे वेदना; कीधा अति उपचार । पूर्ण स्थिति आयुष्यकी, न करे औषधी कार ॥ फल० ॥ ९ ॥ नयन निधि नव चन्द्र

में, सप्तमी माघ मास । पक्ष सुदि धर्मध्यानमें, सूरि स्वर्ग-वास ॥ फल० ॥ १० ॥देखो विचित्र गति कालनी, जितनो होय संजोग । छाइ उदासी श्री संघमें, सूरिवरनो वियोग ॥ फल० ॥ ११ ॥ अग्निसंस्कारोत्सव करे, मिल संघ अनेक । गावे गुण सूरिवरतणा, नर नारी विवेक ॥ फल० ॥ १२ ॥ देववन्दन विधि सहु करे, नैने वरसे नीर । धन्य धन्य सूरि शुद्धातमा, धीर वीर गम्भीर ॥ फल० ॥ १३ ॥ सफल करे नर जन्मने, सूरिराजेन्द्र पसाय । चारित्र सुरतरु फल लहे कीनो निर्मल काय ॥ फल० ॥ १४ ॥ स्नेही स्नेह तजि तुमे, मुझने छोड़ी स्वाम । स्वर्गवासी हुवा पूज्यजी, हर्ष जपे नित नाम ॥ फल० ॥ १५ ॥

सर्वोपरि गीत

निश दिन जोउं थाँरी वाडड़ी, घर आवोनी, ए राह

शासन श्री महावीरको, जगमें जयवंतो । वर्ष इकवीश सहस्रलगे, शाश्वत दीपंतो ॥ शा० ॥ टेक ॥ संघ चतुर्विध धर्मना, प्रेरक गुणग्राही । दान शील तप भावना, मूल धर्मो-त्साही ॥ शा० ॥ १ ॥ राजेन्द्र श्री धनचन्द्रना पट्टे सूरि ओपाया । सुमतिपति भूपेन्द्रसूरि, जिनधर्म दीपाया ॥ शा० ॥ २ ॥ जन्म लियो भोपाल में, दीक्षा अली–राजपूरे ।

आचार्यपद मालव जावरे, आहोर देह से दूरे ॥शा०॥३॥ दीक्षित गुरुसंघ द्वादश, दश वाचक संगे। बीस चौमास स्वाध्यक्षमें, बेतालीस सुरंगे ॥ शा० ॥ ४ ॥ बेतालीस महावीर ज्युं, करे चातुरमासा। वाणी रस वरसाय ने, पूरी मंघ की आशा ॥ शा० ॥ ५ ॥ वर्ष सेंतालीस ऊपरे, सूर्य दिन नवमास। सप्त वरस उणा जन्म लग, पाल्यो चरण विकास शा० ॥ ६ ॥ पामी उत्तम नर जन्म ने, सार्थक सूरि कीनो। सूरिराजेन्द्र सुशिष्य मुनि-हर्ष समय लाग़ीनो ॥ शा० ॥७॥

गुल ला, ला, ला, ला, भरभर जाम०, ए राह

सूरिरा, रा, रा-जा, गुणके सागर, जैन दिवाकर, मुझ घटमें आजा ॥ टेक ॥ सद्बोध तो दिया, उपकार भी किया, यश विश्वमें लिया। करके म्हेर आय फेर-मुझको तार'जा ॥ सूरि रा० ॥ १ ॥ न रीसाते थे कभी, गम खाते थे जभी, गुण गाते हैं सभी। कृपानिधान बुद्धिखान, चर उद्धारजा सूरि० ॥ २ ॥ राजेन्द्रसूरिराय, धनचन्द्र परुं में पाय-गुण श्वासोश्वास गाय।. भूपेन्द्रसूरि, न कर देरी, हर्ष सुधारजा ॥ सूरि० ॥ ३ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमतिधारक तारक सद्‌गुरु, अघनिवारकधर्मधुरंधरु।
विजयसूरिभूपेन्द्र नमुं सदा, परमसिद्धि लहुँ सुख संपदा ॥

ॐ ह्रीँ षट् त्रिपद्‌गुणसमन्विताय विश्वजनहितावहाय श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्परावतंसकाय परमपूज्याय श्री विजयभूपेन्द्रसूरीश्वरपादपद्माय फलं यजामहे स्वाहा ।

कलश–धन्याश्री

गाया गाया महावीर जिनेश्वर गाया, ए राह

ध्याया ध्याया, गोड़ीपार्श्व–जिनेश्वर ध्याया ॥ टेक ॥ वाराणसी अश्वसेन तात, माता वामा के जाया । जगवल्लभ षट–दर्शन मांहे, पूर्ण प्रख्याती पाया ॥ ध्याया० ॥ १ ॥ कमठ निवारण अहि उद्धारन, कल्पतरु सुखदाया । बावन जिनालय बीच विराजे, आहोर दर्श दिखाया ॥ ध्याया० ॥ २ ॥ स्तवनाकर भूपेन्द्रसूरि देह, दग्धस्थाने आया । वन्दन कर करी जस गुण यादी, निश्चय मनमें ठाया ॥ ध्याया० ॥ ३ ॥ अष्टप्रकारी पूजा रचन, परिपूरण भाव जगाया । निज जीवन जिणे सफल कर, वसुधापे धर्म दीपाया ॥ ध्याया० ॥ ४ ॥ कवीतज्ञ तत्वज्ञ श्रीसूरिवर, जगमें खूब पूजाया । लघु वयमें जिणे दीक्षालीनी, भविजन के मन भाया ॥ ध्याया० ॥ ५ ॥ सोहम वंश परंपर सूरिकल्याण विबुध सवाया तसपट्टे प्रमोद–सूरि वड, तपागच्छी सुहाया ॥ ध्याया० ॥ ६ ॥ विजयराजेन्द्र सूरि जस पट्टधर, मुनि–मारग दरसाया । महाव्रत किरियोद्धारक दिनकर, मिथ्यातिमिर

हटाया ॥ ध्याया० ॥ ७ ॥ प्रभु प्रतिष्ठा कारक तारक, धर्म-धुरन्धर राया । अभिधान-राजेन्द्र-कोष रमण रचि,-जगमें महत्व वधाया ॥ ध्याया० ॥ ८ ॥ चीरोलाजनने उद्धारी, करुणाधारी कहाया । आबाल-ब्रह्मचारी गच्छनायक, गुणीजन रंगेरंगाया ॥ ध्याया० ॥ ६ ॥ सूरिविजय धनचन्द्र गीतारथ, जस पट्टधर ओपाया । कुवादी कुतर्क विभंजक, मनरंजन चित चाया ॥ ध्याया० ॥ १० ॥ विजयभूपेन्द्रसूरि तस-पट्ट जस, पूजन भाव जताया । सूरियतीन्द्र पंचानन सरिखा, जस-पट्टधारी गवाया ॥ ध्याया० ॥ ११ ॥ वर्त्तमान में वरते सूरिवर, आहोर संघे निमाया । जस राज्ये सूरि-राजेन्द्र शिष्ये, रचि पूजा गुण गाया ॥ ध्याया० ॥१२॥ हर्ष-विजय भूपेन्द्रसूरिका, अंतेवासी गणाया । उगणी पिच्चाणु वरस मधु सुदि, पंचमी गुण विरचाया ॥ ध्याया० ॥ १३ ॥ स्वर्गीय विजयभूपेन्द्र-सूरिका, गुणवर्णन प्रगटाया । आहोर संघ सुणी सहु हरख्या, मंगल—तूर वजाया ॥ध्याया०॥१४॥

मुनिराज श्री [illegible]विजय जी रचित

सद्गुरुदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी

अष्ट-प्रकारी पूजा

दोहा

मृगशालानन्दन वीर जिन, शासनपति सुखकार[1] ।
समरु सद्गुरुराय को, वन्दन वारम्वार ॥ १ ॥
पूजा सूरियतीन्द्र की, रचुं परम शुभ भाव ।
वरदे ! वरद पसार दे, दूर टले दुःख दाव ॥ २ ॥
देव सुगुरु सद्धर्म हैं, तीनों तत्व प्रकार ।
श्रद्धा पूर्वक सद्दहे, होवे भवजल पार ॥ ३ ॥
तिन में गुरुपद गुरु कहा, जो समझावे मर्म ।
देव स्वरूप दिखाय के, दूर करे दुष्कर्म ॥ ४ ॥
निष्कारण बांधव सदा, गुरुगरिमा अभिराम ।
सब संताप हटाय के, पूरे वांछित काम ॥ ५ ॥

---

१ इस पूजा की विधि भी श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट-प्रकारी पूजा की विधि के समान समझना

सूरीश्वरराजेन्द्र प्रभु, प्रगटे पंचमकाल।
जिनशासन स्वीकार के, पाये सौख्य रसाल॥ ६॥
अनुशासन नायक बने, सद्गुरु सूरियतीन्द्र।
पदपङ्कज पूजा करूं, नमें सुर नर मुनि इन्द्र॥ ७॥

ढाल १, मनडो किमही न बाजे हो कुंथुजिन राग

सेवो सद्गुरु प्यारे रे सुगुणा सेवो सद्गुरु प्यारे। गुरु-पदपङ्कज पूजा करता, मोह विभाव निवारे रे, सुगुणा सेवो० ॥ टेक ॥ भवसागर पडताने राखे, गुरुवर पर उपकारी। अज्ञानी को ज्ञान दिखाते, जग में जय जयकारी रे, सुगुणा सेवो० ॥ १ ॥ धर्म तत्व समझा कर सब को, दर्शन ज्ञान बढ़ावे। दान शील तप भाव दिखा कर, आप तिरे ने तिरावे रे, सुगुणा सेवो० ॥ २ ॥ पाप पंक से दूरे रह कर, जिनवाणी रस चाखे। बोध कराते भविजन को गुरु, वीरवचन की साखे रे, सुगुण सेवो० ॥ ३ ॥ मिथ्यातम को हरते गुरुवर, दीपक जिम अंधियारा! गुमराही को राह दिखाते, उत्तम गुण आगारा रे, सुगुणा सेवो० ॥ ४ ॥ अद्भुत शान्ति सुधारक गुरुवर, जग में ज्योतिर्धारी। द्रव्य भाव दोय भेदे निर्मल, धन धन है अवतारी रे, सुगुणा सेवो० ॥ ५ ॥ परमज्योति सम विचरी सन के, अन्तरपट उजवाले। कर्मकलंक निवा-

रण कर के, जीवदया प्रतिपाले रे, सुगुणा सेवो० ॥ ६ ॥ बोधिबीज को आतम क्षेत्रे, दे उपदेश लगावे ॥ ज्ञानामृत का सिंचन कर के, चरितांकुर उपगावे रे, सुगुणा सेवो० ॥ ७ ॥ सद्गुरु–सूरियतीन्द्र की कीजे, जलपूजा हितकारी । 'जयन्त' को जय ज्योति प्रदाता, जस शुभ कीर्ति प्रसारी रे, सुगुणा सेवो० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे ।
प्रगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम् , गुरुवरं विधिना सम पूजयेत् ।

ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवंनिवारकाय, षट्-त्रिंशद्गुणपरिमण्डनाय, श्रीसौधर्मवृहत्तपोगच्छीय पट्टपरम्पराय श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चन्दनपूजा

दोहा

शीतलता चन्दन जिसी, सद्गुरु गुण में होय ।
तिस कारण चन्दन थकी, पूजो विधियुत जोय ॥

ढाल २, रसिला राजकुमार रे प्यारा पोठ्या⋯राग०

पायो नरभव सार रे, पूजो गुरुचरण को । विक्रम उन्नीससो चालीस में, कार्तिक उगते चन्द रे, पूजो० धवल–

पुर में जन्म है लीनो, चपा वृज के नन्द रे, पूज्यो० पायो० ॥ १ ॥ मात पिता परिवार सकल मिल, रामरतन दियो नाम रे, पूज्यो० पुत्र सुलक्षण पालणे में, दिखत गुण के धाम रे, पूज्यो० पायो० ॥ २ ॥ गुणवत होकर निज सुत चमके तेजे जलामल भाण रे, पूज्यो० ऐसा सोच कर मात पिता भी, देवे नित सद्ज्ञान रे, पूज्यो० पायो० ॥ ३ ॥ उत्तम नर की सगति पाकर, पवित्र हो सस्कार रे, पूज्यो० देते शिक्षा मात पिता वह, रामरतन उर धार रे, पूज्यो० पायो० ॥ ४ ॥ चन्द्र बढे ज्यों दूजा का रे, दिन दिन बढत प्रमाण रे, पूज्यो० रामरतन भी बढते त्योंहीं, पाकर योग महान रे, पूज्यो० पायो० ॥ ५ ॥ हृदयगम कर आवश्यक का, बाह्याभ्यन्तर नाण रे, पूज्यो० तत्वार्थादिक सूत्र समझ कर, नय निक्षेप सुजाण रे, पूज्यो० पायो० ॥ ६ ॥ दस दो वरस की आयु हुई जब, सुखमय दिन अभिराम रे, पूज्यो० मात पिता ने स्वर्गलोक में रे, पाया सौख्य ललाम रे, पूज्यो० पायो० ॥ ७ ॥ मामा ठाकुरदासजी रे, ताल–भोपाल निवास रे, पूज्यो० रामरतन की बुद्धि परख कर, ले जावे निज पास रे, पूज्यो० पायो० ॥ ८ ॥ बालक थे पर बुद्धि अनोखी, काम किये सुविचार रे, पूज्यो० साहस कर के तस्कर पकडे, काली रात मझार रे, पूज्यो० पायो० ॥ ९ ॥ सत्वशील नित रहते निर्भय, तजे–न

सद्व्यवहार रे, पूजो० स्वावलम्बी शुभ भावना से, खोल्हा मातुल द्वार रे, पूजो० पायो० ॥ १० ॥ पुगय पुरुष पद पद पर पावे, नव नव नित्य निधान रे, पूजो० सूरि यतीन्द्र की चन्दन पूजा, 'मुनि जयन्त' सुविधान रे, पूजो० ॥ पायो० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे ।
अगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवरं विधिना सम पूजयेत् ॥

ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवंनिवारकाय, षट्-त्रिंशद्गुणपरिमण्डनाय श्रीसौधर्मवृहत्तपोगच्छपरम्पराय श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो चन्दनं यजामेह स्वाहा ।

तृतीय पुष्प-पूजा

दोहा

पुष्पार्चन गुरुदेव का, कीजे धर उल्लास ।
फैलावे श्रीसंघ में, सद्गुण रूप सुवास ॥

ढाल ३, हींडा की, भवियण पूजो रे…राग०

पुष्पपूजा श्रीगुरुवरजी की, भक्ति भाव से कीजे

रे। पुरायोदय से अवसर आयो, अनुपम ल्हाशो लीजे रे, पूजा कीजे रे, पूजा कीजे भवियण भावे, पापपुन्य सन छीजे रे, पूजा कीजे रे। यात्रा करते रामरतनजी, नगर महिद-पुर आये रे, पुरयवन्त के पैर पड़े शुभ, योग सभी मिल जाये रे, पूजा० ॥ १ ॥ क्रियोद्धारकर पुरय प्रतापी, सूरि राजेन्द्रजी छाजे रे। भव्यजनों को देशना देता, आतम-भावे राजे रे, पूजा० ॥ २ ॥ दुःखमय है संसार सर्वथा, संकटमय सब माया रे। निज स्वारथ से कहते मेरा, मात तात सुत माया रे, पूजा कीजे० ॥ ३ ॥ परभावे रह जनम गवाये, एक नहीं लख केई रे। योग मिला अब कर निज भावे, मनुज जनम फल लेई रे, पूजा० ॥ ४ ॥ नित्य निगोद से आया चेतन, लाख चोराशी फिरता रे। जब तक परमानंद न पावे, तब तक काल से घिरता रे, पूजा० ॥ ५ ॥ वाणी सुन वैराग्य भावना, रामरतन दिल जागी रे, गुरुवर से कहा अंजलियुत मुझ संयम से लय लागी रे, पूजा० ॥ ६ ॥ योगीश्वर राजेन्द्रसूरिवर, आत्मार्थी जन देखे रे, योग्य समझ वैराग्य सुवासित, होगा लाख में लेखे रे, पूजा० ॥ ७ ॥ उन्नीससो चोपन आषाढी, बीज लग्न शुभ भावे रे। खाचरौद में दीक्षा देकर नाम 'यतीन्द्र' धपावे रे, पूजा० ॥ ८ ॥ गुणीजन को गुणगान की संगति, दिन दिन हर्ष बढाये रे। सद्गुरु की संगति से 'मुनि--

'यतीन्द्रविजय' हर्षाये रे, पूजा कीजे रे ॥ ६ ॥ ज्ञान ध्यान से काव्य कौमुदी, न्याय तर्क वर भाषा रे। किरिया चरिया उत्तम जिन की, कोई नहीं अभिलाषा रे, पूजा० ॥ १० ॥ उच्चप्रकारी शिक्षा दीक्षा, ब्रह्मचर्यव्रत भारी रे। लघुवय में भी दिव्य तेज लख, चमके सब नरनारी रे, पूजा० ॥११॥ सार्थक नाम तथा गुण धारक, गुरु आज्ञा अनुसरता रे। 'जयन्त' सूरियतीन्द्र' राज की, पूजा भाव से करता रे, पूजा० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे ।
अगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवरं विधिना सम पूजयेत् ॥

ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवंनिवारकाय, षट्-त्रिंशद्गुणपरिमण्डनाय श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छपट्टपरम्पराय, श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूप-पूजा

दोहा

दूर करे दुर्गंध को, श्रेय सुगंधप्रसार ।
धूपपूजा गुरुराज की, कीजे शिव सुखकार ॥

ढाल ४, धीरा मेरयाना यारी " " राग माढ

गुरु निज गुण रमता, तज कर ममता, समता धर सुखकार । पंच समिति कर सखियाँ प्यारी, षड्रिपु दूर निवार । सात भायों को तज कर रहते, अष्ट महामद टाल रे, गुरु० ॥ १ ॥ नव विध ब्रह्मचर्यव्रत पाले, दशविध धर्म आचार । चार कषाय निवारक गुरुवर, भवि जन सुख हितकार रे, गुरु० ॥ २ ॥ मिथ्यातम तज समकित धारी स्वानन्दी सुविचार । पुर्णानन्द सुधारस के दाता, पंचाश्रव परिहार रे, गुरु० ॥ ३ ॥ तीन करण त्रय योग से भावे, निज जीवन की सिद्धि, परमेष्टीराधन से पाई, जग में परम प्रसिद्धि रे, गुरु० ॥ ४ ॥ उन्नीसो बहोत्तर आगरा नगरे, सुरीश्वर धनचन्द्र । व्याख्यान–वाचस्पति पद दीनो, संघ सकल आनन्द रे, गुरु० ॥ ५ ॥ सद्गुण की बहु फैली सुगधी, दुर्गुण हो गये दूर । इन्द्रियां पांचे कर ली वश में, ज्यों रणक्षेत्र में शूर रे, गुरु० ॥ ६ ॥ दिव्य प्रभावी मुद्रा जिन की, अष्टमीशशि सम भाल । सद्गुरुवर की पूजा कर के, पाओ सुख उजमाल रे, गुरु० ॥ ७ ॥ चौथी धूप पूजा करो प्यारे, धन जीवन बन जाय । सूरियतीन्द्र 'जयन्त' के तारक, वन्दत शीष झुकाय रे गुरु० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे ।
प्रगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवरं विधिना सम पूजयेत् ॥

ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवं निवारकाय, षट्त्रिंषद्गुणपरिमण्डनाय, श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्पराय श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपक पूजा

दोहा

दीप शिखा घनघोर तम, करती है ज्यों दूर ।
दीप पूजा कर गुरुतणी, हो प्रकाश भरपूर ॥

ढाल ५, है आनन्द वधाई, केवल……राग

शमदम गुणधारी, भविजन सुखकारी सूरियतीन्द्रजी !
सद्गुरु संगे दस चौमासा, किये गुरु धर उल्लास । अनुपम अनुभव रस को पाया, पाया ज्ञान प्रकाशजी, शमदम०॥१॥ समकित सुन्दर शोभा निरखन, गुरुवर दीप समान । भव्य कमलदल विकसित करने, दिनकर दिव्य प्रमाणजी, शमदम० ॥ २ ॥ पुर रतलामे उन्नीस अस्सी, पीताम्बर पट धार । सागरानंदजी साथे चर्चा, की आगम अनुसारजी, शमदम

॥ ३ ॥ आखिर विजय पताका पाई, फैली यश की रेप। 'पीताम्बर–विजेता' बन कर, विचरे देश विदेश जी, शम-दम० ॥ ४ ॥ अस्सी ज्येष्ठ सुदि आठम दिन उत्तम पद उवज्भाय। सघ सकलने मिल कर दीनो, जावरानगर सुहायजी ॥ शमदम० ॥ ५ ॥ बाह्याभ्यन्तर तप को करते वाचकवर मुनिराय! शिक्षा दीक्षा सब को देकर, दम्भी दूर हटायजी शमदम० ॥ ६ ॥ आलीराजपुर किया चौमासा, चौराणु के साल। लक्ष्मणी तीर्थोद्धार करायो, घर घर मंगलमालजी ॥ शमदम० ॥ ७ ॥ पुर प्रतिपालक प्रतापसिंह सर, सुन कर गुरु गुरुवत। गुरुवर चरणे शीप भुकाया, वाणी सुण विरतन्तजी शमदम० ॥ ८ ॥ वैशाख सुदि दशमी पीचाणु, आहोर नगर मभार। गच्छपतिपद दे कर कीनो, सूरियतीन्द्र जयकारजी ॥ शमदम० ॥ ९ ॥ मोह तिमिर को दूर करण हित, दीपक सम गुरु जाण! तिण कारण गुरु दीपक पूजा, करत 'जयन्त' गुणगानजी ॥ शम-दम० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे।
प्रगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवर विधिना सम पूजयेत् ॥

ॐ ह्रीँ भव्यजनदु:खाङ्कुरोद्भव निवारकाय, पट्-

त्रिशद्गुणपरिमण्डनाय, श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्पराय श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षत पूजा

दोहा

अक्षत नाम यथा–तथा, पावे सौख्य रसाल ।
अक्षत पूजा गुरु तणी, कीजे भाव विशाल ॥

ढाल ६, जग में वो नर चतुर सुजाण...राग

धन धन यतीन्द्रसूरि गुरुराज, ज्ञान के कोश को धरनेवाले । गुरु आज्ञा में विचरनेवाले ॥धन०॥टेर॥ गुरु चौसठ वर्षावास, किये जीवन में चोमास । सद्ज्ञान का दिया प्रकाश, आश नहीं अवर की रखनेवाले ॥ धन० ॥ १ ॥ गुरु लिखे ग्रन्थ अनेक, रखी जिनशासन की टेक । रख कर हरदम भावना नेक, एक तन मन वच करनेवाले ॥ धन० ॥ २ ॥ अभिधानराजेन्द्रसुकोश, जिस से सब को है संतोष । कर संशोधन तज कर दोष, कोश साहित्य का भरनेवाले ॥ धन० ॥ ३ ॥ रचे यतीन्द्र प्रवचन दो भाग, समाधान–प्रदीप त्रिभाग । रख कर सब बातों की लाग, राग रु रोष को तजनेवाले ॥ धन० ॥ ४ ॥ किये जीवन

में उपकार, तज कर के शिथिलाचार। पाले शुद्ध ही पंचाचार, धार तलवार की चलनेवाले ॥ धन० ॥ ५ ॥ गुरु अद्भुत शक्ति धारी, नहीं कबहु हिम्मत हारी। थे पुण्यवन्त अवतारी, गुरुवर ज्ञान बतानेवाले ॥ धन० ॥ ६ ॥ थे परमानन्द में रमते, नहीं कुमत पक्ष में पडते। नहीं विषय वासना धरते, सम्यक् बोध दिखानेवाले ॥ धन० ॥ ७ ॥ श्रीज्ञानमन्दिर कराये, गुड़ा रत्नपुरी में सुहाये। जिनशासन रंग लगाये, अमरपुर गेह बतानेवाले ॥ धन० ॥ ८ ॥ अक्षत सम गुरु अक्षय–सुखदाता गुरु निर्भय। करो पूजा है सुखमय 'जयन्त' को पार लगानेवाले ॥ धन० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे।
प्रगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवरं विधिना सम पूजयेत् ॥
ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवनिवारकाय, षट्-त्रिंशद्गुणपरिमण्डनाय, श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीयपरम्पराय ...तीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो अक्षतं यजामहे स्वाहा।

अखिलसौख्यसु...

प्रगुणशुद्धनिधेर्वरम...

...सम नैवेद्य पूजा

दोहा

ॐ ह्रीँ भव्यगुरु... ...पाँसत्था नेह।
... ...पजा पद ॥

ढाल ७, पुण्यदशा जो जागे हमारी⋯राग

सद्गुरुवर पद पूजो भावे, भाव से भव दुःख जावेजी
टेर ॥ उपकारी गुरु मेघ समाना, प्यासे को पान करा-
ी ॥ सद्गुरु० ॥ १ ॥ भाण्डवपुर और मोहनखेड़ा,
र्थोद्धार करावेजी । लक्ष्मणी कोर्टा तीर्थ अनेक जग
प्रसिद्ध करावेजी ॥ सद्गुरुवर० ॥ २ ॥ अंजनशलाका
तेष्ठा कीनी, सतावन गुरु भावेजी । सैंकड़ों बिम्ब प्रति-
ष्ठत कर के, भविजन भाव बढावेजी ॥ सद्गुरुवर० ॥
३ ॥ उद्यापन उपधान कराये, उत्सव सर्वत्र थावेजी ।
घ चतुर्विध आनंद वरत्या, गुणियल गुरुजी पूजावेजी ॥
द्गुरुवर० ॥ ४ ॥ राजगढ संघ की विनती सुन कर,
ालव देश में आवेजी । दो हजार बारा राजगढ़ में,
ातुर्मास करावेजी ॥ सद्गुरुवर० ॥ ५ ॥ अट्ठाइ उत्सव
ूजा प्रभावना, चातुर्मास में थावेजी । चातुर्मासा कर के
ुरुवर जावरानगर में आवेजी ॥ सद्गुरुवर० ॥ ६ ॥
ोग[३] शशि[१] पूरण दो[२] वर्षे पीपलोदा पंथी आवेजी । गुरुवर
चरणे शीष झुका कर, बीती बात सुनावेजी ॥ सद्गुरुवर०
॥ ७ ॥ उपदेश देकर गुरुजी संघ को, संप महत्त्व बता-
येजी । सुनकर के गुरुवाणी संघने विछुड़े भाई मिला-
येजी ॥ सद्गुरुवर० ॥ ८ ॥ खाचरौद चौमासा कर के,

मोहनखेडा में आवेजी। निज गुरु श्री राजेन्द्रसूरी
अर्धशताब्दी मनावेजी ॥ सद्गुरु० ॥ ६ ॥ सवत् वी
चौदह वर्ष, श्रीसघ हर्षे वधावेजी। विविध विधान से
शासन की, प्रभावना करवावेजी ॥ सद्गुरुवर० ॥ १०
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव को, लख कर चरण चढावे
सूरि यतीन्द्र की नैवेद्य पूजा, 'जयन्त' भाव जगावे
सद्गुरुवर० ॥ ११ ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे
प्रगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम्, गुरुवर विधिना सम पूजयेत

ॐ ह्रीँ भव्यजनदु खाङ्कुरोद्भव निवारकाय, प
त्रिंशद्गुणपरिमण्डनाय, श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छपरम्पर
श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नैवेद्य यजामहे स्वाहा

अष्टम फल पूजा

दोहा

फल पूजा करो प्रेम से, निर्मल भाव उदार।
शिव भव फल वर पामीए, हैं सब के हितकार ॥

ढाल ८, सद्धर्म का झंडा जिनमत में फरकाया...राग

सन्मार्ग दिखाया सब जन को गुरुदेव यतीन्द्रसूरीश्वरने ।। गुरुदेव यतीन्द्रसूरीश्वरने, गुरुदेव यतीन्द्रसूरीश्वरने ।। सन्मार्ग० ।। टेर ।। गुरु जैनागम के ज्ञाता थे, षट् कायिक जीव के त्राता थे । ले जन्म जगत उपकार किये, गुरुदेव० ।। १ ।। गूर्जर मरुधर मालव भूमि, मेवाड़ निमाड़ में भी घूमि । श्रीवीरवचन समझाय दिया, गुरुदेव० ।। २ ।। नहीं शिथिलाचार पसंद किया, नहीं अनुचित बात में भाग लिया । नित दोष रहित उपदेश दिया, गुरुदेव० ।। ३ ।। त्यागी थे जग में वे पूरे, रहे कंचन कामिनी से दूरे । ब्रह्मचारी निर्मल बोध दिया, गुरुदेव० ।। ४ ।। उपदेश दिया था थरादनगर, वागोडा गाँव के डगर डगर । श्रीसंघ की फूट हटाइ थी, गुरुदेव० ।। ५ ।। परिवार जाति के द्वन्द्व मिटे, गुरुचरण प्रसादे फंद हटे । निष्पक्षी न्याय सदैव दिया, गुरूदेव० ।। ६ ।। निज गुरूवर के पथ पर चल कर, निज पर कल्याण ही मन धर कर, जय जय का डंका बजाय दिया, गुरूदेव० ।। ७ ।। गुरू की महिमा अद्भुत भारी, करो फल पूजा सब नरनारी ! 'मुनि जयन्त' का उद्धार किया, गुरूदेव० ।। ८ ।।

बधाई संगीत

निशदिन जोऊं थारी वाटडी, घर आवोने ढोला राग

धन्य धन्य दिन आज का, गुरुवर गुण गाया । कर्म मैल को दूर करण, उपशम जल न्हाया ॥ धन्य० ॥ टेर गुरू नामे सुख संपजे, गुरू नामे वधाई । गुरू नामे ज्ञान मिले, जग में यश पाई ॥ धन्य० ॥ चिन्तामणी सरी गुरु, गुरु कल्प की वेली । गुरुपद या कीनी, आपने, उपव की हेली ॥ धन्य० ॥ गुरु नामे जय जय हुए, गुरुन सब सिद्धि । गुरु नामे दुर्भाग्य टले, मिले नव नवी ऋ ॥ धन्य० ॥ ब्रह्मचारी गुरु तुम सम नहीं देख्या कोई उज्ज्वल पूनमचन्द्र सम, जग में सब जोई ॥ धन्य० पुण्य उदय हुआ माहरा सेवा आप की पाई ! सूरियती 'जयन्त' की, ध्रुव धर्म सगाई ॥ धन्य० ॥

काव्य और मन्त्र

अखिलसौख्यसुधारसलब्धये, दुरिततापकुदाहनिवारणे
अगुणशुद्धनिधेर्वरमीप्सितुम् , गुरुवरं विधिना सम पूजयेत्

ॐ ह्रीँ भव्यजनदुःखाङ्कुरोद्भवनिवारकाय, षट्त्रिंपद्गुणपरिमण्डनाय श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीयपट्टपरम्परा श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो फलं यजामहे स्वाहा

कलश

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे······राग

गाया गाया गाया गाया गुण गुरुराज का, पाया पाया पाया उपशम रस का पूर। पूजा अष्ट प्रकारी विरची सूरि-यतीन्द्र की, भाया भाया भाया तेजे दीपे सूर ॥ गाया० ॥ गुरूवर जन्म लिया और जिनशासन उजवालियो, जय जय जय जय जय जय सूरि राजेन्द्र के शीष। गुरूवर दीक्षा ले कर निर्मल चारित्र पालता, साधता निज पर हित ले कर के गुरू आशीष ॥ गाया० ॥ २ ॥ सुखकर मुद्रा सोहत मोहत भविमन भृङ्ग को, निर्दोषी गुरूवर मन वाणी काय व्यापार। विचरी ग्राम नगर पुर प्रतिबोधो नरनारने, कर के जीवन में अति उन्नत कार्य उदार ॥ गाया० ॥ ३ ॥ विचरंता श्रीगुरूवर मालव देशे आविया, प्रसरी कीर्ति मानों पुष्प सुगंध पराग। मोहनखेड़ा तीरथ कीनी गुरूवर थीरता, धारी देव गुरू और धर्म प्रत्ये अनुराग ॥ गाया० ॥ ४ ॥ वर्ष सीत्योत्तर पूरा कीना श्रीगुरूराजने, आया दो हजारने सत्तरा का था साल। वार तिथि पोष शुक्ल की तीज बुध वार भला, वरिया सुरपुर पदवी धन्य धन्य उजमाल ॥ गाया० ॥५॥ अंतिम तीरथपति शासनमां सुन्दर सोहता, पट्टपरम्पर दीपत, पूर्व दिशा ज्यों भाण। सूरीश्वरजयचन्द्रजी

तपाविरुद से राजता, उज्ज्वल नाम किया थे जैनागम के जाण ।। गाया० ।। ६ ।। सोहमवंश दिवाकर क्षमासूरीश्वर छाजता, पट्टाभूषण प्रगटे सूरिदेवेन्द्र कल्याण । मरुधर भूमि में यश पाया सूरि प्रमोदने, वरते जिन आणा में तज कर के अभिमान ।। गाया० ।। ७ ।। क्रियोद्धारक राजे सूरीश्वर-राजेन्द्रजी, पंचमकाले मिलिया चिन्तामणी गुरु जाण । उत्कृष्टी किरिया से आतम साधन साधियो, ज्ञानी ध्यानी प्रखर प्रतापी गुरु गुणवान ।। गाया० ।। ८ ।। पाटे सोहे सुन्दर सूरीश्वर धनचन्द्रजी, वादे शूरा पूरा शासन सूर्य समान । पट्ट पटोधर पूरण चन्द्र सरीखे शान्त थे, जग में सूरिश्वर भूपेन्द्र थे भूप महान ।। गाया० ।। ६ ।। पट्ट प्रभावक प्यारे ज्योतिः पुञ्ज समान थे, संवर धारक आश्रव आवागमन निवार । सद्गुरु सूरियतीन्द्र सुनाम परम विख्यात है, विरची पूजा जिन की धार सुभाव उदार ।। गाया० ।। १० ।। जिनवाणी सेवा की साहित्य सिद्धहस्ते करी, संघ चतुर्विध सह की यात्रा बहु श्रीकार । इन्द्रिय विधु पूरण दो वर्ष पुर खाचरोद में, हीरक जयन्ति मनाई, सघने गुरू की रसाल ।। गाया० ।। ११ ।। संघ सहित मिल हर्षे 'मुनिवर बिंदा' राज में, सौभाग देवेन्द्र जयप्रभ मुनि पुण्याग्रह सार । तत्त्व शशि पूरण दो फाल्गुन सुदि तृतीया दिने, रचना राजगढे की 'जयन्तविजय' गुण माख।। गाया० ।। १२ ।।

गुरु आरति

ॐ जय जय गुरुराया, स्वामी जय जय गुरुराया ।
सूरियतीन्द्र की आरति, मनवांछित पाया, ॐ जय० ॥

जन्म धवलपुर नगरी लीनो, गुरुवर उपकारी स्वामी०
तात भला बृजलालजी, चम्पा मां प्यारी, ॐ जय० ॥

पंचमहाव्रत धारण कर के, निश्चल अविकारी, स्वामी०
मुद्रा सुन्दर सोहे, मोहे नरनारी, ॐ जय० ॥

जैन जगत में सूरज सम थे, अचरज बहु भारी, स्वामी०
गुण छत्तीसे धारक, दर्शन सुखकारी, ॐ जय० ॥

जीवनभर उपकार किये गुरु, श्वेताम्बर धारी, स्वामी०
गुरुराजेन्द्र के पथ चल, महिमा विस्तारी, ॐ जय० ॥

समाधिस्थ हुए मोहनखेड़ा, तीरथ गुरुराई, स्वामी०
'मुनि जयन्त' को गुरु की, पूजा मन भाई, ॐ जय० ॥

❀ इति प्रथम खण्ड ❀

श्री विविध पूजा संग्रह

[द्वितीय खण्ड]

श्री चोसठ प्रकारी पूजा विधि

श्री जिनालय में, शुभ समय तीर्थ जल लाकर, आठ कर्म का आठ पांखड़ी का मण्डल चांवल रंग कर भरना, रेखाए पंच वर्णी करना। बाद में गुलाल से क्रम से नीचे लिखे मन्त्र लिखना :—

१. ॐ ह्रीँ अनंतज्ञानात्मकेभ्यो नमः।

२. ॐ ह्रीँ अनंतदर्शनात्मकेभ्यो नमः।

३. ॐ ह्रीँ अनंतसुखात्मकेभ्यो नमः।

४. ॐ ह्रीँ अनंतचरणात्मकेभ्यो नमः।

५. ॐ ह्रीँ अक्षयस्थितये नमः।

६. ॐ ह्रीँ अमूर्तये नमः।

७. ॐ ह्रीँ अगुरुलघवे नमः।

८. ॐ ह्रीँ अनंतवीर्येभ्यो नमः।

इस प्रकार मन्त्र पद लिख कर मध्य में वृत्त तथा ज्ञान पधराना। वृत्त के मूल में कुहाड़ा रखना। अखंड दीप करना। चोसठ लड्डुओं के थाल भरके चढ़ाना। श्रीजिनप्रतिमाजी के अभिषेक करना। उत्कृष्ट से ६४-६४ और सामान्य से ८।८ बालक बालिकाओं को स्नात्रिये करना। इस प्रकार अष्ट प्रकारी पूजन आठ दिन तक नित्य पढ़ाना। प्रति दिन नैवेद्य और फल ताजे चढ़ाना। इस तरह आठ दिन में चोसठ पूजा पूर्ण होती है। नित्य यथाशक्ति स्वामिवात्सल्य, गुरु भक्ति, ज्ञानोपकरण एवं रात्री जागरण करना। प्रभावना करना। इत्यादिक विधि पूर्ण होने पर वृत्त को जिनालय में पधराना।

पंडित श्री वीरविजयजी रचित

श्री चोसठ प्रकारी पूजा

प्रथम दिवसेऽध्यायनीय—ज्ञानावरणीय कर्मसूदनार्थ

प्रथमं पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ जल। २ केशर। ३ केतकी तथा जई के फूल। ४ धूप ५ पांच वत्ती का दीपक। ६ अखंड चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा

दोहा

श्री शंखेश्वर साहिबो, समरी सरसती माय।
श्री शुभविजय सुगुरु नमी, कहुँ तप फल सुखदाय ॥ १ ॥
ज्ञान थकी सवि जाणता, ते भव मुक्ति जिणंद।
व्रत धरी भूतल तप तप्या, तपथी पद महानंद ॥ २ ॥
दान शक्ति जो नवि हुवे, तो तनु शक्ति विचार।
तप तपीए थइ योग्यता, अल्प कषाय आहार ॥ ३ ॥
पर निंदा छंडी कपट, विधि गीतारथ पास।
आचार दिनकरे [illegible], ते तप कर्म विनाश ॥ ४ ॥

विविध प्रकारे तप कह्यां, आगम रयणनी खाण ।
तेहमा कर्मसूदन तप, दिन चउसट्ठि प्रमाण ॥ ५ ॥
ज्ञानावरणी कर्म अड, पच्चक्खाणे छेदाय ।
उपवासादिक अड कवल, अंतिम तिम अंतराय ॥ ६ ॥
उजमणुं तप पूरणे, शक्ति तणे अनुसार ।
तरुवर रूपानो करो, घातियां शाखा चार ॥ ७ ॥
चार प्रशाखा पातली, कर्मनो भाग विचार ।
इग सय अडवन पत्र तस, कापवा कनक कुठार ॥ ८ ॥
चोसठ मोदक मूकीए, पुस्तक आगल सार ।
चोसठ कलशा नामीए, जिन पडिमा जयकार ॥ ९ ॥
पूजा सामग्री रची, भरी फल नैवेद्य थाल ।
ज्ञानोपगरण मेलवी, ज्ञान भक्ति मनोहार ॥१०॥
जल कलशा चोसठ भरी, धरीए पुरुषने हाथ ।
तीर्थोदक कलशा भरी, चोसठ कुमरी हाथ ॥११॥
चोसठ वस्तु मेलवी, मंडल रचिये सार ।
मंगल दीवो राखीये, पुस्तक मध्य विचार ॥१२॥
स्नात्र महोत्सव कीजिये, पूजा अष्ट प्रकार ।
ज्ञानावरण हठाववा, अड अभिषेक उदार ॥१३॥

ढाल—

राग जोगीओ आशावरी । मोतीवाला भमरजी—ए देशी

प्रभु मुख चंद्रमा, सखि ! देखण दीजे ।

हाथ आरिसा बिंब रे, सखि ! मुने देखण दीजे ॥
छप्पन दिगकुमरी कहे स०, विकसित मेघ कदंब रे ॥स०॥१॥
भव मंडलमें न देखीयो स०, प्रभुजीनो देदार रे ।स०।
कृत्य करी घर जावती स०, खेलत बाल कुमार रे ॥स०॥२॥
यौवन वय सुख भोगवे स०, श्री महावीर कुमार रे ।स०।
ज्ञानथी काल गवेषियो स०, आप हुवा अणगार रे ॥स०॥३॥
गुणठाणु लही बारमुं स०, ज्ञानावरणी हण्युं जेम रे ।स०।
केवल लही मुगते गया स०, अमे पण करशुं तेम रे ॥स०॥४॥
स्वामिसेवाथी लहे स०, सेवक स्वामिभाव रे ।स०।
सालंबन निरालंबने स०, करशुं एहवो बनाव रे ॥स०॥५॥
त्रीश कोडाकोडी सागरु स०, स्थिति अंतर्मुहुर्त लघीश रे।स०।
बंध चतुर्विध चेतशुं स०, पगइ ठिइ रस देश रे ॥स०॥६॥
सूक्ष्म बंध उदय वली स०, उदीरण सत्ता खीण रे ।स०।
स्नातक स्नान मिषे हुवे स०, ज्ञान पडल मल हीण रे॥स०॥७॥
सर्वांगे स्नातक थइ स०, करशुं साहेली रंग रे ।स०।
सहजानंद घरे रमो स०, श्री शुभ वीरने संग रे ॥स०॥८॥

काव्यम्—उपजाति वृत्तम्

तीर्थोदकैर्मिश्रित-चन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जरा-जनि-प्रांत-रजोभिशान्त्यै, तत्कर्म-दाहार्थमजं यजेऽहम् ॥१॥

द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

सुरनदी—जल-पूर्णघटैर्घनै,—घुसृण—मिश्रित-वारिभृतैः परैः।
स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं, विमलता क्रियतां च निजात्मनः॥१॥
जन-मनो-मणिभाजन-मारया, शम-रसैक-सुधारस धारया।
सकलबोध कला-रमणीयकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥२॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अज्ञानोच्छेदकाय जलं यजामहे स्वाहा।

द्वितीय चन्दन पूजा—पूजाष्टक प्रथम

दोहा

मूल प्रकृति एक छे, उत्तर प्रकृति पांच।
मोह शमे पण नवि शमे, विण खायकनी आंच॥१॥
तिणे तेहिज विधि साधवा, पूजो अरिहा अंग।
सिद्ध स्वरूप हृदय धरी, घोली केसर रंग॥२॥

ढाल दूसरी—कुंबखडानी देशी

बीजी चंदन पूजना रे, केसरनो करी घोल।

प्रभु पद पूजीये

बाहिर रंग गवेषीने रे, रंग अभ्यंतर चोल ॥ प्र० ॥
पूजीये जिन पूजीये रे, आनंद रस कल्लोल ॥ प्र० ॥ १ ॥
धुर पगइ धुर कर्मनी रे, बंध त्रिभंग प्रकार ॥ प्र० ॥
क्षय उपशम गुण नीपजे रे, अडवीश उपर चार ॥ प्र० ॥ २ ॥
त्रणसें चालीश उत्तरु रे, बह्वादिक पद वार ॥ प्र० ॥
पूज्य विशेपावश्यके रे, नंदीसूत्र मोझार ॥ प्र० ॥ ३ ॥
बंध हेतु छते पामीये रे, मतिआवरण बलेण ॥ प्र० ॥
ध्रुवबंधी प्रकृति टले रे, जब लहे क्षपक श्रेण ॥ प्र० ॥ ४ ॥
जिम रोहे नृप रीझव्यो रे, रीझववो एक सांय ॥ प्र० ॥
श्री शुभ वीरने आशरे रे, नासे कर्म बलाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥

काव्यम्-द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

जिनपतेर्वर-गन्ध-सुपूजनं, जनि-जरा-मरणोद्भव-भीतिहृत् ।
सकलरोग-वियोग-विपद्धरं, कुरु करेण सदा निज-पावनम् ॥१॥
सहज-कर्म कलंक-विनाशनै,-रमलभाव-सुवासन-चन्दनैः ।
अनुपमान-गुणावलि-दायकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय मतिज्ञानावरणनिवारणाय चंदनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक प्रथम

दोहा

श्रुत ज्ञानावरणी तणो, तुं प्रभु टालणहार ।
क्षणमें श्रुत केवली कर्या, देइ त्रिपदी गणधार ॥ १ ॥
सुमनस वृष्टि तेणे समे, समवसरण मोझार ।
करता सुमनस सुमनसा, प्रभु पूजा दिल धार ॥ २ ॥

ढाल, द्वेष न धरिये लालन, द्वेष न धरिये, ए देशी

समवसरणे श्रुतज्ञान प्रकाशे, पूजे सुरवर फूलनी राशे ।
स्वामी ! फूलनी राशे ॥
केतकी जाइनां फूल मंगावो,
भेद त्रिके करी पूजा रचावो ॥ स्वामी० ॥ १ ॥
प्रभु पद प्रणमी श्री श्रुत मागो,
श्रुत ज्ञानावरण ते जेम जाय भागो ॥ स्वामी० ॥
क्षय उपशम गुण जिम जिम थावे,
तिम तिम आतम गुण प्रगटावे ॥ स्वामी० ॥ २ ॥
मति विण श्रुत न लहे कोइ प्राणी,
'समकितवंतनी एह निशानी ॥ स्वामी० ॥
'क्रुत्यादिक श्रुत नाण जणावे,
खीर नीर जिम हंस चतावे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

गीतारथ विण उग्र विहारी,
तपिया पण मुनि बहुल संसारी ॥ स्वामी० ॥
अल्पागम तप क्लेश ते जाणो,
धर्मदास गणी वचन प्रमाणो ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥
भेद चतुर्दश वीश वखाणो,
ओर रीत मतिज्ञान समाणो ॥ स्वामी० ॥
मति श्रुत नाणे चउ शिव जावे,
श्रुतकेवली शुभवीर वधावे ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥

काव्यम्–द्रुतविलम्बित–वृत्तद्वयम्

सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसा सुमनो-गुण-संगिना, जन ! विधेहि निधेहि मनोर्चने ॥ १ ॥
समय–सार–सुपुष्प–सुमालया, सहज–कर्मकरेण विशोधया ।
परम-योग-बलेन वशीकृतं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु–निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय श्रुतज्ञानावरणनिवारणाय कुसुमानि यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थ धूपपूजा–पूजाष्टक प्रथम

दोहा

अवधि ज्ञानावरणना, क्षयथी थया चिद्रूप ।
ते आवरण दहन भणी ऊर्ध्व गति रूप धूप ॥ १ ॥

ढाल, जिनवर जगत दयाल, भवियां ! जिनवर जगत दयाल-
ए देशी

ए गुण ज्ञान रसाल, भवियां ! ए गुण ज्ञान रसाल ॥
धूप घटा करी ज्ञान छटा वरी, अवधि आवरण प्रजाल ।भ०।
षट् भेदांतर वृद्धिनी रचना, जाणे क्षेत्र ने काल ॥भ०॥१॥
अंगुल आवली संखमसंखे, परणे किंचुण काल ॥भ०॥
पूर्णावली अंगुल पुहुत्ते, हस्ते मुहूर्त्त विचाल ॥भ०॥२॥
कोश दिनांतर योजन दिन नव, द्रव्य पर्याय विशाल ॥भ०॥
पणवीश योजन पक्ष अधुरे, पक्षे भरत निहाल ॥भ०॥३॥
जंबू द्वीप ते मास अधिके, वरसे अढी द्वीप भाल ॥भ०॥
रुचक द्वीप ते वर्ष पुहुत्ते, संख्याते संख्यातो काल ॥भ०॥४॥
काल असंख्ये द्वीप असंख्या, ज्ञान प्रत्यक्ष त्रिकाल ॥भ०॥
एक समे अठ अधिक शत सीझे, टाली भव जजाल ॥भ०॥५॥
शिव राजऋषि विभंगने टाली, वरिया शिव वरमाल ॥भ०॥
सायर द्वीप असख्य दिखावे, श्री शुभवीर दयाल ॥भ०॥६॥

काव्यम्-द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

अगरु मुख्यमनोहर-वस्तुना, स्वनिरुपाधि गुणौघ-विधायिना ।
प्रभु-शरीर-सुगंध-सुहेतुना, रचय धूपन-पूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निज-गुणाक्षयरूप-सुधूपनं, स्वगुण-घात-मल-प्रविकर्षणम् ।
[illegible]-बोधमनंत-सुखात्मकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अवधिज्ञानावरण-निवारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥

पंचमी दीपक पूजा—पूजाष्टक प्रथम

दोहा

मनपज्जव आवरण तम, हरवा दीपक माल ।
ज्योतसें ज्योत मिलाइए, ज्ञान विशेष विशाल ॥ १ ॥

ढाल, गोपी विनवे रे—ए देशी

ज्योति झगमगे रे, अढी द्वीप प्रमाण ।
दो भेदे करी रे, अढी अंगुलनो तरतम जाण ॥
जेह विपुलमति रे, तेहने ते भव पद निर्वाण ।
मुनि वेष ज विना रे, नवि उपजे दो भेदे नाण ॥ज्योति०॥१॥
विमला तमा दिशा रे, जाणे ज्योतिष व्यंतर ठाण ।
तिर्छा लोकमां रे, भाख्युं एह ज प्रमाण ॥
अधो लोकमां रे, योजन सो अधिकेरा जाण ।
संज्ञी जीवनां रे, जाणे मन चिंतन मंडाण ॥ज्योति०॥२॥
ऋजुमति द्रव्यथी रे, अनंत अनंत प्रदेश विचार ।
असंखित [illegible] ॥

-सवि पर्यायनो रे, भाग अनंतमो मनथी सार।
चारे भावथी रे, अधिका विपुलमति अणगार ॥ज्योति०॥३॥
मति श्रुत नाणगुं रे, मनपज्जव पाम्या मुनिराय।
क्षायक भावथी रे, एक समय दश मुक्ति जाय॥
क्षय उपशम पदे रे, मुनिवरने साते गुणठाण।
श्री शुभ वीरथी रे, जंबुस्वामी लगे ए नाण ॥ज्योति०॥४॥

काव्यम्-द्रुतविलंबित-वृत्तद्वयम्

भवति दीपशिखा-परिमोचनं, त्रिभुवनेश्वर-सद्मनि शोभनम्।
स्वतनु-कांतिकरं तिमिर हरं, जगति मंगल कारणमान्तरम्।१।
शुचि मनात्म चिदुज्ज्वल-दीपकै-र्ज्वलित पापपतंग-समूहकैः॥
स्वक पदं विमलं परिलेभिरे, सहज सिद्धमहं परिपूजये॥२॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय मनपर्यवावरणोच्छेदाय दीपं -यजामहे स्वाहा॥

षष्ठी अक्षतपूजा-पूजाष्टक प्रथम

दोहा

घनघाती घाते करी, जेह थया मुनिभूप।
बहिरातम उच्छेदीने, अंतर आतम रूप॥ १॥

ढाल, साहेलडीयां, ए देशी

अक्षत पद वरवा भणी, सुणो संता जी,
अक्षत पूजा सार, गुणवंता जी।
अक्षत उज्वल तंदुला सु०, उज्वल ज्ञान उदार ॥ गु० ॥१॥
पंचम पगइ टालवा सु०, वरवा पंचम ज्ञान ॥ गु० ॥
त्रिशलानंद निहालीये सु०, बार वरस एक ध्यान ॥गु०॥२॥
निंद शयन जागर दशा सु०, ते सवि दूरे होय ॥गु०॥
देखे उजागर दशा सु०, उज्वल पाया दोय ॥गु०॥३॥
लही गुणठाणु तेरमु सु०, धुर समये साकार ॥गु०॥
भाव जिनेश्वर वंदीये सु०, नाठा दोष अढार ॥गु०॥४॥
छती पर्याये ज्ञानथी सु०, जाणे ज्ञेन अनंत ॥गु०॥
श्री शुभ वीरनी सेवना सु०, आपे पद अरिहंत ॥गु०॥५॥

काव्यम्-द्रुतविलंवित-वृत्तद्वयम्

क्षितितलेऽक्षत शर्म निदानकं, गणिवरस्य पुरोऽक्षत-मंडलम्।
क्षत-विनिर्मित-देह-निवारणं, भव-पयोधि-समुद्धरणोद्यतम् ॥१॥
सहज-भाव-सुनिर्मल तंदुले,-र्विपुल-दोष-विशोधक-मंगलैः।
अनुपरोध-सुबोध-विधायकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-

रणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय केवल-ज्ञानावरण निवारणाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक प्रथम

दोहा

बाह्य रूप आहारे वधे, रूपांतर अणाहार ।
अणाहारी पद पामवा, ठवो नैवेद्य रसाल ॥ १ ॥

ढाल—राग विलावल

नैवेद्य प्रभु आगल धरी, बहु छंदी वाजे ।
ज्ञानावरण निवारीये, रुचकांतर भांजे ॥
हां हां रे तव सांइ निवाजे, हां हां रे जिनशासन राजे ॥
नैवेद्य प्रभु आगल धरी० ॥ १ ॥
अज्ञानी पुण्य पापनो, नवि भेद ते जाणे ।
नय सम भंग प्ररूपणा, हठवादे ताणे ॥
हांहां रे एक आप वखाणे, हांहां रे बंध उदय न जाणे॥नै०॥२॥
आशातना करे ज्ञाननी, जयणा नवि पाले ।
सुगुरु वचन नवि सद्दहे, पडयो मोहनी जाले ॥
हांहां रे ते अनंते काले, हांहां रे नरभव न निहाले ॥नै०॥३॥
रोहित मत्स्यनी उपमा, सिद्धांते लगावे ।
ज्ञान दशा शुभ वीरनुं, जो दर्शन पावे ॥

हांहां रे अज्ञान हठावे, हांहां रे ज्योति नयन जगावे ॥नै०॥४॥

काव्यम्—द्रुतविलंबित-वृत्तद्वयम्

अनशनं तु ममास्त्विति-बुद्धिना, रुचिर-भोजन-संचित-भोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमंदिरे, शुभमते बत ढौकय चेतसा ॥१॥
कुमत-बोध-विरोध-निवेदकै,—र्विहित-जाति-जरा-मरणान्तकैः ।
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहज—सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मंत्रः

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय, अज्ञानोच्छेदकाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा—पूजाष्टक प्रथम

दोहा

बंधोदय सत्ता ध्रुवा, पांचे पयडि जोय ।
देश घातिनी चार छे, केवल सर्वथी होय ॥ १ ॥
ज्ञानाचारे वरततां, फल प्रगटे निरधार ।
तेणे फलपूजा प्रभु तणी, करिये विविध प्रकार ॥ २ ॥

ढाल आठमी, राग-फाग, सुरती महिनानी देशी,

ए पांचे आवरणनो, बंध दशम गुणठाण ।
उदय उदीरण सत्ता, खीण कहे जगभाण ॥ १ ॥

ज्ञानथी श्वासोश्वासमां, कठिन करम क्षय जाय ।
फल बंधकता तस टले, जोगावंचक भाय ॥ २ ॥
अरिहा पण तप करता, एकाकी रही राण ।
अणहुंता सुर कोडि, सेवे पूरण नाण ॥ ३ ॥
ज्ञानदशा विणु तप जप, किरिया करत अनेक ।
फल नवि पामे राऊ ते, रणमां रोल्यो एक ॥ ४ ॥
तेली धलद परे कष्ट करे, जीउ विण श्रुत लहेर ।
निशदिन नयन मिंचाणे, फरतो घेरनो घेर ॥ ५ ॥
ज्ञान प्रथम पछी जयणा, दशवैकालिक वाण ।
ज्ञानने सुरतरु उपमा, ज्ञानथी फल निर्वाण ॥ ६ ॥
कर्मसूदन तप पूरण, फलपूजा फल सार ।
श्री शुभ वीरना ज्ञानने, वंदिये वार हजार ॥ ७ ॥

काव्यम्—द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

शिवतरोः फलदान-परैर्नवै,-र्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथ-नत क्रम पंकजं, निहत-मोह-महीधर मंडलं ॥१॥
शमरसैक सुधारस माधुरै,-रनुभवाख्य फलैरभय-प्रदैः ।
अहित-दुःखहरं विभवप्रदं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय प्रथमकर्मोच्छेदनाय फलं यजामहे स्वाहा ।

कलश—राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो, त्रिशला माता पुत्र नगीनो जगनो तात कहायो । तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ रयण सिंहासन बेसी चउमुख, कर्म सूदन तप गायो । आचारदिनकरे वर्द्ध-मानसूरि, भवि उपकार रचायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ प्रवचन-सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ उजमणा थी तप फल वांधे, इम भाखे जिनरायो । ज्ञान गुरू उप-करण करावो, गुरूगम विधि विरचायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मली चौसठ पूजा, नव नव भाव बनायो । नर-भवपामी लाहो लीजे, पुण्य शासन पावो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्रसूरीश्वरराज्ये, तपगच्छ केरो रायो । खुशाल विजय मान विजय विबुधना आग्रह थी विरचायो रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ वड़ ओसवाल गुमानचंद सुत, शासनराग सवायो । गुरूभक्ति शा० भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ मृग वालदेवमुनि रथकारक, त्रण हुआ इक ठायो । करण करावणने अनुमोदन, सरिखा फल निप-जायो रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ श्री विजयसिंहसूरीश्वर केरा, सत्य विजयबुध ठायो । कपूरविजय तस, खिमा विजय

जस, परघर ध्यायो रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरू शुभ, पामीता स पसायो । तास शिष्य धीर विजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥ महा० ॥ १० ॥ तस लघु बांधव राजनगर में, मिथ्यात्व पूंज जलायो । पंडित वीर विजय कवि रचना, सघ सकल सुखदायो रे ॥ महा० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, सघ मली समुदायो । करता जिम नदीसर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ महा० ॥ १२ ॥

कलश

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मदिर, बजावत घटा करी ।
तम मोह पुंज समूह जलते, भांगते सग ठीकरी ॥
इल राजते जग गायते दिन, अक्षय तृतीया आज थें ।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र वर्ष विराजते ॥१॥

द्वितीय दिवसेऽध्यापनीय-दर्शनावरणीय कर्मसूदनार्थ

द्वितीयं पूजाष्टकम्
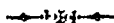
(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ नदी का जल । २ चंदन और केशर । ३ मरुए के फूल ।।४।। धूप ।५-१ नव बत्ती का दीपक और १ दो बत्ती का दीपक ।। ६ ।। अखंड चांवल । ७ नैवेद्य । ८ फल ।

प्रथम जलपूजा

दोहा

दर्शनावरण ते वरणवुं, नव पगइ दुरदंत ।
दरिसण निद्रा भेदथी, चउ पण कहे अरिहंत ।। १ ।।
बंधोदय सत्ता ध्रुवा, पयडि नव तिम पंच ।
निद्रा अध्रुवोदय कही, सर्वघाती पण पंच ।। २ ।।
दंसण तिग देशघातियाँ, केवल दंसण एक ।
सर्वघाति ए दाखियो, बादल मेघ विवेक ।। ३ ।।
विकट निकट घट पट लहे, जिम आवरण वियोग ।
ज्ञानांतर क्षणथी सहु, सामान्ये उपयोग ।। ४ ।।

ए आवरण चले करी, न लह्यु दर्शन नाथ ! ।
नैगम दर्शन मटकियो, पाणी वलोव्युं हाथ ॥ ५ ॥
पूरण दर्शन पामवा, भजिये भवि भगवंत ।
दूर करे आवरणने, जिम जलथी जलकांत ॥ ६ ॥

ढाल, नमो रे नमो श्री शेत्रुंजा गिरिवर, ए देशी

मागध ने वरदाम प्रभासह, गंगा नीर विवेक रे ।
दर्शनावरण निवारण कारण, अरिहाने अभिषेक रे ॥
नमो रे नमो दर्शन दायकने ॥ १ ॥
दर्शन दायक श्री जिनवर तुं, लायकताने लाग रे ।
प्रीत पटतर दोय न छाजे, जो होय साचो राग रे ॥न०॥२॥
राग विना नवि रीझे साई, निरागी वीतराग रे ।
ज्ञान नयन करी दर्शन देखे, ते प्राणी वडभाग रे ॥न०॥३॥
चउ दसण प्रति सूक्ष्म बंधे, उदयादिक खीण अंत रे ।
ते आवरण कठिन मल खाली, स्नातक संत प्रसंत रे ॥न०॥४॥
ग्रन्थि विकट जे पोलियो, रोके दर्शन भूप रे ।
श्री शुभ वीर जो नयन निहाले, सेवक साधन रूप रे ॥न०॥५॥

काव्य और मन्त्र

तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जराजनिप्रान्तरजोभिशान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् । १॥

सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै–र्घु सृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं,विमलता क्रियतां च निजात्मनः॥२॥
जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दर्शनावरणबंधोदयसत्ता निवारणाय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा-पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

उपदेशक नव तत्त्वना, प्रभु नव अंग उदार ।
नव तिलके उत्तर नव, पगइ टालणहार ॥ १ ॥

ढाल, राम काफी नायकी, रसिया दिल दीठी ज्योति झगीरी,-
ए देशी

तुज मूरित मोहनगारी, रसिया तुज मूरित मोहनगारी ।
द्रव्यह गुण परजाय ने मुद्रा, चउगुण पडिमा प्यारी । रसिया०
नय गम भंग प्रमाणे न निरखी,
कुमति कदाग्रह धारी ॥ रसिया तुज० ॥ १ ॥
जिनवर तीरथ सुविहित आगम, दर्शन नयण निवारी ॥रसि०॥
चक्षुदर्शनावरण कर्म ते, बाँधे मूढ गमारी ॥रसिया तुज०॥२॥

काणा निशदिन जात्यधापणु, दुखिया दीन अवतारी ॥रसि०॥
दर्शनावरण-प्रथम उदयेथी, परभव एह विचारी ॥रसि०॥३॥
अल्पतेज नयना तप देखी, जुए आडो कर धारी ॥रसि०॥
जाणु पूरव भव कुमतिनी, हजीय न टेव विसारी ॥रसि०॥४॥
जयणा श्रुत गुरु आगम पूजो, जिन पडिमा जयकारी ॥रसि०॥
श्री शुभ वीरनु शासन वरते,

एकवीश वरस हजारी ॥ रसिया तुज० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनपतेर्वरगंधसुपूजन, जनिजरामरणोद्भवभीतिहृत् ॥
सकलरोगवियोगविपद्धर, कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१ ॥
सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ॥
अनुपमानगुणावलिदायकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीर जिनेन्द्राय चक्षुर्दर्शनावरणनिवारणाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

फूल अमूलक पूजना, त्रिशलानंदन पाय ।
सुरभि दुरभि नासा प्रमुख, अचक्षु आवरण हठाय ॥ १ ॥

ढाल, राज ! पधारो मेरे मंदिर, ए देशी

डमणो मरुओ केतकी फूले, पूजा फल प्रकाश्यां जी ।
भोगी निवासा संयुत आशा, लक्षणवंती नासा ॥
भव भव ठरीये जी ॥
जिनगुण माल रसाल, कंठे धरिये जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
गुण वहुमान जिनागम वाणी, काने धरी वहुमाने जी ।
द्रव्य भाव वहिरातम टाली, परभव समजे साने ॥भव०॥२॥
प्रभुगुण गावे ध्यान मल्हावे, आगम शुद्ध प्ररूपे जी ।
मूरख मूंग न लहे परभव, न पडे वली भवकूपे ॥भव०॥३॥
परमेष्ठीने शीष नमावे, फरसे तीरथ भावे जी ।
विनय वैयावच्चादिक करतां, भरतेश्वर सुख पावे ॥भव०॥४॥
जिम जिम क्षय उपशम आवरणां, तिम गुण अविर्भावे जी ।
श्री शुभवीर वचन रस लब्धे, संभिन्नश्रोत जणावे ॥भ०॥५॥

काव्य और मन्त्र

सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसांनिकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसा सुमनोगुणसङ्गिना, जन? विधेहि निधेहि मनोऽर्चने ।१।
समयसार सुपुष्पसुमालया, सहज कर्मकरेण विशोधया ॥
परमयोग बलेन वशीकृतं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय पमेश्वराय जन्मजरामृत्यु–

निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अचक्षुर्दर्शनावरणनिवारणाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा-पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

अवधि दर्शनावरण क्षय, उपशम चउगति माहि ।
क्षायकभावे केवली, नमो नमो सिद्ध उच्छाही ॥ १ ॥

ढाल, चन्द्रशेखर राजा भयो, ए देशी

अवधि रूपी ग्राहको, षट भेद विशेषे ।
अवधि दर्शन तेहनु, सामान्ये देखे ॥ १ ॥
ए गुण लेह उपन्या, पर भवथी स्वामी ।
आ भवमा सुखीया अमे, तुम दर्श पामी ॥ ए आंकणी॥
देव निरय गतिथी लहे, गुणथी नर तिरिया ।
काउसग्गमा मुनि हासथी, हेठा ऊतरिया ॥ ए गुण० ॥२॥
परिणामे चढती दशा, रूपी द्रव्य अनंता ।
जघन्यथी उत्कृष्टथी, सवि द्रव्य मुणता ॥ ए गुण० ॥३॥
क्षेत्र असख्य अंगुल लघु, गुरु लोक असख्या ।
भाग असख्य लघु आवलि, उत्सर्पिणी असख्या ॥ए गुण०॥४॥
चार भाव द्रव्य एकमा, लघु भाव विशेषे ।

असंख्य पर्यव द्रव्यने, गुरुदर्शन देखे ॥ ए गुण० ॥ ५ ॥
नंदीसूत्रे एणी परे, कह्यु अवधि नाण ।
निराकार उपयोगथी, दर्शन परिमाण ॥ ए गुण० ॥ ६ ॥
विभंगे पण दीखीयुं, दर्शन सिद्धांते ।
तत्त्वारथ टीका कहे, समकित एकांते ॥ ए गुण० ॥ ७ ॥
तस आवरण दहन भणी, धूप पूजा करीए ।
श्री शुभ वीर शरण लही, भवसागर तरीये ॥ ए गुण० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

अगरूमुख्यमनोहरवस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधानिया ।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणाघातकमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनन्तसुखात्मकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अवधिदर्शनावरणनिवारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपपूजा—पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

केवल दर्शनावरणनो, तुं प्रभु टालणहार ।
ज्ञान दीपकथी देखीये, मोटो तुज आधार ॥ १ ॥

ढाल, रागणी—आशावरी, गरबानी देशी

दीपक दीपतो रे, लोकालोक प्रमाण ।
दर्शन दीवडो रे, इणी आवरण लहे निर्वाण ॥दीपक०॥१॥
क्षायक भाव अनादि चेतन, आठ प्रदेश उघाडा रे ।
अवरनुं दर्शन देखण ममियो, पण आवरण ते आडां ।दी०।२।
तुम मेरे ते तुम सम होवे, शक्ति अपूरव योगे रे ।
क्षपकश्रेणि आरोही अरिहा, ध्यान शुक्ल संयोगे ॥दी०॥३॥
घनघातीनो घात करीने, प्रथम समय सकारे रे ।
समयांतर दर्शन उपयोगे, दर्शनावरण विदारे ॥दी०॥४॥
मूल एक बंध चार सत्तोदय, उत्तर पण एक बांधे रे ।
बेंतालीश उदये पंचाशी, सत्ता हणी शिव साधे ॥दी०॥५॥
झगमग झाझा दीपक पूजा, करतां कोडी दिवाळा रे ।
श्री शुभ वीर जिनेश्वर राजा, राज्ये रैयत ताजा ॥दी०॥६॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिरं तिमिरं हरं, जगति मङ्गलकरणमान्तरम् ॥ १॥
शुचिमनात्मचिदुज्जवलदीपकैर्ज्वलितपापपतङ्गसमूहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय केवलदर्शनावरणनिवारणाय-दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा—पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

निद्रा दुग दल छेदवा, करवा निर्मल जात।
अक्षत निर्मल पूजना, पूजो श्री जगतात ॥ १ ॥

ढाल, स्थूलभद्र कहे सुण बाला रे, ए देशी

हवे निद्रा पांचने फेटी रे, मोहराय तणी ए चेटी रे।
सर्वघाती पयडि मोटी रे, निद्रा दुग व्हेनो छोटी रे॥
ए व्हेनो जगत पितराणी रे, नाना महोटा मुंझव्या प्राणी रे।
भानुदत्त पूर्वधर पडिया रे, दीप ज्योते जोतां नवि जडिया रे॥
ए व्हेनो जगत पितराणी रे ॥ १ ॥

सुखे जागे आलस मेटी रे, ते निद्रा बाल वधूटी रे।
ऊभां बेठां नयणां घुंटी रे, जव लागे वयणनी सोटी रे॥
॥ ए व्हेनो० ॥ २ ॥

तव नयणथी निंद वछुटी रे, प्रचला लक्षण गति खोटी रे।
द्वादशांगी गणिरूप पेटी रे,मुनि नयणे निद्रा पलेटी रे॥ए०॥३॥
पूरबधर पण श्रुत मेटी रे, रह्या निगोदमां दुःख वेंटी रे।
अपूर्व बंधेथी छूटी रे, सत्ता उदये बारमे खूटी रे॥ए०॥४॥
मुनिराज मलीने लंटी रे, अप्रमत्तने दंडे कूटी रे।

छल जोती ने रोती वसूटी रे, ध्यान सुंदर घगाडे चूटी रे
॥ ए स्देनो० ॥ ५ ॥

शुभ वीर समा नहीं माटी रे, निद्रानी वनकूटी काटी रे ।
थइ सादि अनंतनी छेटी रे, शिवसुदरी सहेजे भेटी रे ॥ए०॥६॥

काव्य और मन्त्र

शितिनलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिनरस्य पुरोऽक्षतमण्डलम् ।
स्नविनिर्मितदेहनिवारणं, भवपयोधिसमुद्धरणायनम् ॥ १ ॥
सहजमानमुनिर्मलतन्दुलैर्विपुलदोपविशोधकमङ्गलैः । ॥
अनुपरोधमुबोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमतेवीरजिनेन्द्राय निद्राप्रचलाविच्छेदनाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

आहारे उघ वधे घणी, निद्रा दु ख भंडार ।
नैवेद्य धरी प्रभु आगले, वरिये पद अणाहार ॥ १ ॥

ढाल, राग गोडी वीरजी आइ क्यु चले रे, ए देशी

थीणद्धि त्रिक सामलो रे, निद्रा जे दु खदाय सलुणा ।

जिम जिम जिनवर पूजीये रे, तिम तिम भ्रूजे कर्म सलुणा ॥१॥
संप करी सत्ता रहे रे, नवमाने एक भागे सलुणा ।
निद्रानिद्रा तेहमां रे, कष्टे करी जे जागे ॥स०॥जिम०॥२॥
प्रचलाप्रचला चालतां रे, नयणे निंद तुखार सलुणा ।
जागे रण संग्राममां रे, विजली ज्युं झबकार ॥स०॥जिम०॥३॥
दिन चिंतत रात्रे करे रे, करणी जे नर नार सलुणा ।
बलदेवनुं बल ते समे रे, नरक गति अवतार ॥स०॥जिम०॥४॥
एम विशेषावश्यके रे, वरणावियो अधिकार सलुणा ।
साधुमंडलीमां रहे रे, एक लघु अणगार ॥स०॥जिम०॥ ५ ॥
थीणद्धि निद्रा वशे रे, हणियो हस्ती महंत सलुणा ।
सूतो भरनिद्रा वशे रे, भूतलिये दोय दंत ॥स०॥जिम०॥६॥
अंग अशुचि शिष्यनुं रे, संशय भरिया साथ सलुणा ।
ज्ञानी वयणे काढीयो रे, हंस वनेथी व्याध ॥स०॥जिम॥७॥
षट मासे निद्रा लहे रे, शेठवधू दृष्टांत सलुणा ।
निंद वियोगे केवली रे, श्री शुभ वीर भणंत ॥स०॥जिम०॥८॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्विति बुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ॥
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते वत ढोकय चेतसा॥१॥
कुमतबोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ॥
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमसं परिपूजिये॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय विघ्नद्विकदहनाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा—पूजाष्टक द्वितीय

दोहा

विविध फले प्रभु पूजतां, फल प्रगटे निर्वाण ।
दर्शनावरण विलय हुवे, विघटे बंधनां ठाण ॥ १ ॥

ढाल, राग फाग दीपचंदीनी चाल

होरी खेलावत कनैया, नेमीसर संगे ले भइया, ए देशी

होरी खेलुं मेरे साहेबिया, संगे रंगे गुण हो भइया ।।होरी०।।
अबिल गुलाल सुगंध बिखरीया, कनक कचोली केसरिया ।।
होरी खेलुं मेरे साहेबीया ।। १ ।।
खारेक बीजोरां फल ढेरी, पूजे फल थाले भरियां ।
फाग गान गुण तान वजैयां, दर्शनावरण भये डरियां हो०।।२।।
ए प्रभु दर्शन विण भव फरिया, कुदेव कुतीर्थ वर्णविया ।
कुगुरु कुशास्त्र प्रशंसा करिया, मिथ्यात्व धर्म हइये धरिया ।।
।। होरी० ।। ३ ।।

बहतो दुःखे बहु शोके भरियां, समकित दूषण आचरियां ।
कुव्रत पाले ने चाले अनइया, परमेष्ठी गुरु ओलविया ॥
॥ होरी० ॥ ४ ॥
पडणिया गुरु अपच्चक्खाणिया, भगवई भाखे गणधरिया ।
दर्शनावरणी कर्म घेरैया, तीस कोडा कोडि सागरिया ॥होरी० ५॥
ऐसे बंधको धंध घटैया, सांयुकी आणा शिर धरिया ।
अंगी लवण मधुरी लहेरिया, श्री शुभ वीर प्रभु मलिया ॥
॥ होरी० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ।
अहितदुःखरं विभवप्रदं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीर जीनेन्द्राय द्वितीयदर्शनावरणीय कर्मदहनाय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग धन्या श्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो । त्रिशला मातः

पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो । तप तप ता केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ म० ॥ १ ॥ रयण-सिंहासन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो आचार दिनकरे वर्धमान सूरि, भवि उपगार रचायो रे ॥ म० ॥ २ ॥ प्रवचन सारोद्धार कहवे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ उजमणा थी तपफल वाधे, इम भाखे जिनरायो रे । ज्ञान गुरु उप-करण करावो, गुरुगम विधि विरचायो रे ॥ म० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मली चौसठ पूजा, नव नव भाव बनायो । नर भव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे ॥ म० ॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ के रो रायो । खुशाल विजय मान विजय विबुधना, आग्रह थी विरचायो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ वड ओसवाल गुमानचद सुत, शासन राग सवायो । गुरू भक्ति शा भवानचद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥ म० ॥ ७ ॥ मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रण हुआ एक ठायो । करण करावण ने अनुमोदन, सरिखो फल निपजायो रे ॥ म० ॥ ८ ॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्य विजय बुध गायो । कपूरविजय तम खिमाविजय जस विजय परंपर ध्यायोरे ॥ म० ॥ ६ ॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरु मुझ, पामी तास पसायो । तास शिष्य धीर विजय सलुणा, आगम राग सवायो रे ॥ म० ॥ १० ॥ तस लघु बांधव राजनगर

में, मिथ्यात्व पुंज जलायो । पंडित वीर विजय कवि रचना, संघ सकल सुखदायो रे ॥ म० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो । करतां जेम नंदीश्वर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ म० ॥ १२ ॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, बजावत घण्टा करी ।
तव मोह पुंज समुह जलते, भांगते संग ठींकरी ॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें ।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र(१८७४)वर्ष विराजते॥१॥

तृतीयदिवसेऽध्यापनीय—वेदनीयकर्मनिवारणार्थ

तृतीय पूजाष्टकम्

(इस पूजा योग्य वस्तुओं के नाम)

१ कस्तुरी, बरास वाला जल। २ केशर और बरास। ३ फूल। ४ धूप। ५ दो बाट वाला दीप। ६ आखे चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा

दोहा

त्रीजुं अघाती वेदनी, जाव लहे शिवशर्म ।
संसारे सवि जीव ने, तव लगे एहिज कर्म ॥ १ ॥
बंधोदय अध्रुव कही, भव सत्ताए होय ।
पयडी अघाती जाणी ए, शाता अशाता दोय ॥ २ ॥
कर्म विनाशी ने हुआ, सिद्ध बुद्ध भगवान ।
ते कारण जिनराजनी, पूजा अष्ट विधान ॥ ३ ॥
न्हवण विलेपन कुसुमनी, जिन पुर धूप प्रदीप ।
अक्षत नैवेद्य फल तणी, करो जिनराज समीप ॥ ४ ॥

ढाल—रूडी ने रढियाली रे वालहा, ए देशी

न्हवणनी पूजा रे निर्मल आतमा रे ।
तीर्थादिकनां जल मेलाय, मनोहर गंधे ते भेलाय ॥
न्हवणनी पूजा रे० ॥ १ ॥
सुरगिरि देवा रे, सेवा जिन तणी रे,
करता न्हवण ते निर्मल थाय,
कनक रजत मणि कलश ढलाय ॥ न्हवणनी० ॥ २ ॥
सुरवहु नाचे रे, माचे वेगशुं रे ।
गायक देव ते जिनगुण गाय,
वैशालिक मुख दर्शन थाय ॥ न्हवणनी० ॥ ३ ॥
चिहुं गति मांहे रे, चेतन रोलीयो रे ।
सुर नर जे सुखिया संसार,
नरक तिरि दुःखनो भंडार ॥ न्हवणनी० ॥ ४ ॥
शे वश सुखमां रे, स्वामी न सांभर्या रे ।
तेणे हुं रझल्यो काल अनन्त,
मलिन रतन नवि तेज झगंत ॥ न्हवणनी० ॥ ५ ॥
प्रभु नवरावी रे, मेल निवारशुं रे ।
वेदनी विघटे मणि झलकंत,
श्री शभ वीर मले एकांत ॥ न्हवणनी० ॥ ६ ॥

तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघैः, ससारतापाहसये सुशीतैः ॥
जराजनिप्रांतरजोभि शान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥१॥
सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै–र्घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ॥
स्नपय तीर्थकृत गुणवारिधिं, विमलता क्रियता च निजात्मन.॥२॥
जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ॥
सकलबोधकलारमणीयकं सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वेदनीय कर्मनिवारणाय जल यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चदनपूजा–पूजाष्टक तृतीय

वेदनी कर्म तणी कहु, उत्तर पयडि दोय ।
जास विवश मत्र चोकमा, मुझाणा सहु कोय ॥ १ ॥

ढाल, राग आशावरी, साहिब सहसफण, ए देशी

तन विकसे मन उल्लसे रे, देखी प्रभुनी रीत ।
दायक दिल वसिया ॥

झूरण लागी जीभडी रे, पूरण बाँधी प्रीत ॥ दा० ॥ १ ॥
नयन ज्योति सम प्रीतडी रे, एक सूरत दोय कान । दा० ।
वेदनी हरी धनतंतरि रे, करीए आप समान ॥ दा० ॥ २ ॥

वेदनी घर वासो वस्यो रे, नडिया नाथ कुनाथ । दा० ।
पाणी वलोव्युं एकलुं रे, चतुर न चडियो हाथ ॥दा०॥३॥
खडग धार मधु लेपशुं रे, तेहवो ए संसार । दा० ।
लक्षण वेदनी कर्मनुं रे, फल किंपाक विचार ॥ दा०॥ ४ ॥

तुज शासन पाम्ये थके रे, लाध्यो कर्मनो मर्म । दा०।
कोडि कपट कोइ दाखवे रे, पण न तजुं तुज धर्म ॥दा०॥५॥
पूज्य मल्ये पूजा रचुं रे, केसर घोली हाथ । दा० ।
श्री शुभ वीरविजय प्रभु रे, मलियो अविहड साथ ॥दा०॥६॥

काव्य और मन्त्र

जिनपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवभीतिहृत् ।
सकलरोगवियोगविपद्धरं कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥ १ ॥
सहज कर्मकलङ्कविनाशनैरमलभाव सुवाशनचन्दनैः ।
अनुपमानगुलावलिदायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वेदनीय लक्षणकर्म निवारणाय-चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

चलियो साथ भले थके, चोर तणुं नहिं जोर ।
जिनपद फूले पूजतां, नासे कर्म कठोर ॥ १ ॥

ढाल, राग सारंग, हो धन्ना, ए देशी

कर्म कठोर दूरे करो रे मित्ता !, पामी श्री जिनराज ।
फूल पगर पूजा रचो रे मित्ता !, पामी नरभव आज रे ॥
रंगीला मित्ता !, ए प्रभु सेवोने ॥
ए प्रभु सेवो सानमां रे मित्ता !, पामो जेम शिव राज रे ।
रंगीला मित्ता !, ए प्रभु सेवोने ॥ १ ॥
वेदनी वश तुमे कां पडो रे मित्ता !, जेहने प्रभुसुं वेर ।
साहिब वेरि न वीससो रे मित्ता !, तो होय साहिब महेर रे ॥
रंगीला मित्ता !, ए प्रभु सेवोने ॥ २ ॥
छट्ठा गुणठाणा लगे रे मित्ता !, बंध अशाता जाए ।
शाता बाँधे केवली रे मित्ता !, तेरमे पण गुणठाए रे ॥
॥ रंगीला० ॥ ३ ॥
शाता अशाता एक प मत्ता !, चरम गुणे परिहार ।
सत्ता उदयथी केवली रे मित्ता !, सहे परिसह अभिचार रे ॥
॥ रंगीला० ॥ ४ ॥

तीश कोडाकोडि सागरु रे मित्ता !, लघु सातैया त्रिभाग ।
बंध अशाता वेदनी रे मित्ता !, हवे शाता सुविभाग रे ॥
रंगीला० ॥ ५ ॥

पनर कोडाकोडि सागरु रे मित्ता !, लघु दोय समय ते थिर ।
गोयम संशय टालियो रे मित्ता !, भगवईमाँ शुभ वीर रे॥रंगी०६॥

काव्य और मन्त्र

सुमनसांगतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः परिपूजनम् ॥
सुमनसा सुमनोगुणसंङ्गिना, जन ? विधेहि मनोर्चने ॥ १ ॥
समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ॥
परमयोगवलेनवशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वेदनीयबन्धननिवारणाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा-पूजाष्टक तृतीय

दोहा

उत्तराध्ययने स्थिति लघु, अंतरमुहूर्त कहाय ।
पन्नवणामां बार ते, शाता बंध संपराय ॥१॥
शाता वेदनी बंधनं. ठाण प्रभु पुर धूप ।

मिच्छत्त दुर्गन्ध दूर टले, प्रगटे आत्म स्वरूप ॥ २ ॥

ढाल, विमलाचल वेगे वधावो–ए देशी

चउमासी पारणुं आवे, करी विनति निज घर जावे ।
प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकुल जरी पथरावे रे ॥
महावीर प्रभु घरे आवे ॥
जीरण शेठजी भावना भावे रे, महावीर प्रभु० ॥ १ ॥
ऊभी शेरीये जल छंटकावे, जाइ केतकी फूल बिछावे ।
निज घर तोरण वधावे, मेवा मीठाई थाल भरावे रे॥महा०॥२॥
अरिहाने दानज दीजे, देतां देखी जे रीझे ।
पटमासी रोग हरीजे, सीझे दायक भव त्रीजे रे ॥महा०॥३॥
ते जिनवर सनमुख लावुं, मुज मंदिरिये पधरावुं ।
पारणुं भली भाँती करावुं, जुगतेजिनपूजा रचावुं रे॥महा०॥४॥
पछी प्रभुने वोलावा जइशुं, कर जोडी सामा रहीशुं ।
नमी वंदी पावन थइशुं, विरति अति रंगे वहीशुं रे॥महा०॥५॥
दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं ।
सत्य ज्ञान दशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥म०॥६॥
एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारे चढंता ।
श्रावकनी सीमे ठरंता, देव दुंदुभि नाद सुणंता रे ॥म०॥७॥
करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोक अच्युते जावे ।

शात वेदनी सुख पावे, शुभ वीर वचन रस गावे रे ॥म०॥८॥

काव्य और मन्त्र

अगरुमुख्यमनोहरवस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना ॥
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु—निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय शातावन्धायहाय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

शाता बंधक प्राणिया, दीपे एणे संसार ।
तेणे दीपक पूजा करी, हरीए दुःख अंधार ॥ १ ॥

ढाल, चतुरो चेतो चेतनावली—ए देशी

सांभलजो मुनि संयम रागे, उपशम श्रेणे चडिया रे ।
शाता वेदनी बंध करीने, श्रेणी थकी ते पडिया रे ।
सांभलजो मुनि संयम रागे० ॥ १ ॥

भाखे भगवई छठ्ठ तप बाकी, सात लवायुं थोड़े रे ।
सर्वारथसिद्धे मुनि पहोता, पूर्णायु नवि छोड़े रे ॥सां०॥२॥
शय्यामां पोढ्या नित्य रहेवे, शिव मारग विसामो रे ।
निर्मल अवधि ज्ञाने जाणे, केवली मन परिणामो रे ॥सां०॥३॥
ते शय्या उपर चंदरूवे, झुंबखडे छे मोती रे ।
वचलुं मोती चोसठ मणानुं, झगमग जालिम ज्योति रे॥सां०॥४॥
बत्रीश मणना चउ पासलिया, सोलमणा अड सुणिया रे ।
आठ मणां षोडश मुक्ताफल, तिम बत्रीश चउ मणियां रे ॥
सांभलजो मुनि संयम रागे० ॥ ५ ॥

दो मण केरां चोसठ मोती, इगसय अडवीश मणियां रे ।
दो सय ने वली त्रेपन मोती, सर्वे थइने मलियां रे ॥सां०॥६॥
ए सघलां विचला मोतीशुं, आफले वायु योगे रे ।
राग रागिणी नाटक प्रगटे, लव सत्तम सुरभोगे रे ॥सां०॥७॥
भूख तरस छीपे रस लीना, सुर सागर तेत्रीश रे ।
शाता लहेरमा क्षण क्षण समरे, वीरविजय जगदीश रे॥सां०॥८॥

काव्य और मन्त्र

भवतिदीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिकरं तिमिरं हरं, जगतिमङ्गलकारणमान्तरम् ॥१॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतंगसमूहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहस सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय ज्ञानोत्तरसुखप्रापणाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

पञ्चम अक्षतपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

अक्षत पूजाए करी, पूजो जगत दयाल ।
हवे अशाता वेदनी, बंधनां ठाण निहाल ॥ १ ॥

ढाल, बटाउनी देशी

प्रभु ! तुज शासन मीठडुं रे, समता साधन सार ।
योग नालिका रूअडी, ते तो ज्ञानीने घरबार रे ॥
रोल्यो एणे संसार रे, गुण अवगुण सरिखा धार रे ।
हीरो हाथ खोल्यो अंधार रे,
न करी ज्ञानीशुं गोठडी मेरे लाल ॥ १ ॥

शोक कर्यो संसारमां रे, परने पीडा दीध ।
त्रास पडाव्या जीवने, जीव बंदीखाने लीध रे ॥
मुनिराजनी निंदा कीध रे, मुनि संताप्या बहुविध रे ।
राजा देवसेनाभिध रे, एक सरियशतक परसिद्ध रे ॥
न करी ज्ञानीशं गोठडी मेरे लाल ॥ २ ॥

माणसना वध आचर्या रे, छेदन भेदन तास ।
थापण राखी ओलवी, करी चाडी पडाव्या त्रास रे ॥
दमिया पर क्रोध निवास रे, केइ भूभविया रही पास रे ।
केइ जीवनी मांगी आश रे, थयो करपी कपिला दास रे ॥न०॥३॥
एम अशाता वेदनी रे, बांधे प्राणी अनंत ।
सूत्र विपाके सांभलो, मृगापुत्र तणो दृष्टांत रे ॥
सुणी कपे समकितवंत रे, सुख अक्षय पामे एकांत रे ।
करो अक्षतपूजा संत रे, शुभ वीर भजो भगवंत रे ॥न०॥४॥

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोक्षतमंडलम् ।
क्षतविनिर्मितदेहनिवारणं, भव पयोधिसमुद्धरणोधतम् ॥ १ ॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैर्विपुलं दोषविशोधकमङ्गलैः ।
अनुपरावसुबोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अशातावन्धस्थान निवारणाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

न करी नैवेद्य पूजना, न धरी गुरुनी शीख ।
लहे अशाता परभवे, घर घर मागे भीख ॥ १ ॥

ढाल, इमन-रागिणी, महारी सही रे समाणी, ए देशी

तुज शासन रस अमृत मीठुं, संसारमां नवि दीठुं रे ।
मन मोहन स्वामी ।
दीठुं पण नवि लाग्युं मीठुं, नरक दुःख तेणे दीठुं रे ॥म०॥१॥
दशविध वेदन अतुल ते पावे, दुःखमां काल गमावे रे ॥म०॥
परमाधामी दुःख उपजावे, भवभावनाए भावे रे ॥म०॥ २ ॥
जेम विषभुक्ति तलवार अवाजा, एक नगरे एक राजा रे ॥म०।
शत्रुसैन्य समागम पहेलुं, गाम गाम विष भेलयुं रे ॥म०॥३॥
धान्य मिठाइ मीठा जलमां, गोल खांड तरु फलमां रे ॥म०।
पडहो वजावी एम उपदेशे, जे मीठां जल पीशे रे ॥म०॥४॥
भक्ष्य भोज्य रस लीना, खाशे, ते यम मंदिर जाशे रे ॥म०।
दूर देशान्तत भोजन करशे, खारां पाणी पीशे रे ॥म०॥५॥
चिरं जीव लहे सुख शाता, कदीय न होय अशाता रे ।म०।
नृप आणा करी ते रह्या सुखीया, बीजा मरण लहे दुःखीया रे ॥
मन मोहन स्वामी० ॥ ६ ॥
विष मिश्रित विषयारस जुत्ता, ब्रह्मदत्त नरक पहुत्ता रे ॥म०।
मेघकुमार धन्नो सुखभाजा, श्री शुभ वीर ते राजारे ॥म०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्वतिबुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे. शभमते बत ढौक्य चेतमा॥१॥

कुमतबोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ॥
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अशातोदयनिवारणायनैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी फलपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

आत्मिक फल प्रगटावियुं, टाली शात अशात ।
त्रिशलानंदन आगले, फल पूजा परभात ॥ १ ॥

ढाल, आठमी राग वसत

नंदकुंवर केडे पड्यो, केम जल अमे भरीए, ए देशी

वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये, केने कहीये रे केने कहीये ।
नवि मंदिर बेसी रहिये, सुकुमाल शरीर ॥
॥ वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये ॥
बालपणाथी लाडको नृप भाव्यो, मली चोसठ इन्द्रे मल्हाव्यो ।
इन्द्राणी मली हुलराव्यो, गयो रमवा काज ॥ वीर० ॥१॥
छोरु उछांछलां लोकनां केम रहिये, एनी मावडीने शुं कहिये ।

कहिये तो अदेखा थइये, नासी आव्यां बाल ॥ वीर० ॥२॥
आमलकी क्रीडा वशे वींटाणो, मोटो भोरिंग रोषे भराणो ।
हाथे झाली वीरे ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वीर० ॥३॥
रूप पिशाचनुं देवता करी चलियो, मुझ पुत्रने लेइ उछलियो ।
वीर मुष्टि प्रहारे वलियो, सांभलीये एम ॥ वीर० ॥ ४ ॥
त्रिशला माता मोजमां एम कहेता, सखीओने ओलंभा देता ।
क्षण क्षण प्रभु नामज लेता, तेडावे बाल ॥ वीर० ॥ ५ ॥
वाट जोवंतां वीरजी घरे आव्या, खोले बेसाडी हुलराव्या ।
माता त्रिशलाए नवराव्या, आलिंगन देत ॥ वीर० ॥ ६ ॥
यौवन वय प्रभु पामतां परणावे, पछी संयमशुं दिल लावे ।
उपसर्गनी फौज हठावे, लीधुं केवलनाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥
कर्मसूदन तप भाखीयुं जिनराजे, त्रण लोकनी ठकुराई छाजे ।
फल पूजा कही शिव काजे, भविने उपगार ॥ वीर० ॥ ८ ॥
शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, आपे अक्षय पद लीधुं ।
शुभ वीरनुं कारज सीध्युं, भांगे सादि अनंत ॥ वीर० ॥९॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ॥
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ॥
अहितदुःखहरं विभवप्रदं, समजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

कुमतबोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ॥
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अशातोदयनिवारणायनैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी फलपूजा—पूजाष्टक तृतीय

दोहा

आत्मिक फल प्रगटावियुं, टाली शात अशात ।
त्रिशलानंदन आगले, फल पूजा परभात ॥ १ ॥

ढाल, आठमी राग वसंत

नंदकुंवर चेडे पड्यो, केम जल अमे भरीए, ए देशी

वीर कुंवरनी बातडी केने कहीये, केने कहीये रे केने कहीये ।
नवि मंदिर बेसी रहिये, सुकुमाल शरीर ॥
॥ वीर कुंवरनी बातडी केने कहीये ॥
बालपणाथी लाडको नृप भाव्यो, मली चोसठइन्द्रे मल्हाव्यो ।
इन्द्राणी मली हुलराव्यो, गयो रमवा काज ॥ वीर० ॥१॥
छोरु उछांछलां लोकनां केम रहिये, एनी मावडीने शुं कहिये ।

कहिये तो अदेखा थइये, नासी आव्यां बाल ॥ वीर० ॥२॥
आमलकी क्रीडा वशे वींटाणो, मोटो भोरिंग रोपे भराणो ।
हाथे झाली वीरे ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वीर० ॥३॥
रूप पिशाचनुं देवता करी चलियो, मुझ पुत्रने लेइ उछलियो ।
वीर मुष्टि प्रहारे वलियो, सांभलीये एम ॥ वीर० ॥ ४ ॥
त्रिशला माता मोजमां एम कहेता, सखीओने ओलंभा देता ।
क्षण क्षण प्रभु नामज लेता, तेडावे बाल ॥ वीर० ॥ ५ ॥
वाट जोवंतां वीरजी घरे आव्या, खोले बेसाडी हुलराव्या ।
माता त्रिशलाए नवराव्या, आलिंगन देत ॥ वीर० ॥ ६ ॥
यौवन वय प्रभु पामतां परणावे, पछी संयमशुं दिल लावे ।
उपसर्गनी फौज हठावे, लीधुं केवलनाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥
कर्मसूदन तप भाखीयुं जिनराजे, त्रण लोकनी ठकुराई छाजे ।
फल पूजा कही शिव काजे, भविने उपगार ॥ वीर० ॥ ८ ॥
शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, आपे अक्षय पद लीधुं ।
शुभ वीरनुं कारज सीध्युं, भांगे सादि अनंत ॥ वीर० ॥९॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ॥
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ॥
अहितदुःखहरं विभवप्रदं, समजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय,-परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वेदनीयकर्मदहनाय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग धन्या श्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो । त्रिशला माता पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो । तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ म० ॥ १ ॥ रयणसिंहासन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो । आचार दिनकरे वर्धमानसूरि, भवि उपगार रचायो रे ॥म०॥२॥ प्रवचन सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे एतप, उजमणे निरमायो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ उजमणा थी तपफल वाधे, इम भाखे जिनरायो । ज्ञान गुरु उपकरण करावो, गुरुगम विधि विरचायो रे ॥ म० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मली चोसठ पूजा, नव नव भाव बनायो । नरभव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे ॥ म० ॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ केरो रायो । खुशालविजय मानविजय विबुधना, आग्रह थी विरचायो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ वड ओसवाल गुमानचंद सुत, शासन राग सवायो । गुरुभक्ति शा भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥ म० ॥ ७ ॥

मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रण हुआ एक ठायो। करण करावण ने अनुमोदन, सरिखां फल निपजायो रे ॥म०॥८॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध गायो। कपूर-विजय तस खिमाविजय जस,—विजय परंपर ध्यायो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरु मुझ, पामी तास पसायो। तास शिष्यधीरविजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥ म० ॥ १० ॥ तस लघु बांधव राजनगर में, मिथ्यात्व पुंज जलायो। पंडित वीरविजय कवि रचना, संघ सकल सुख दायो रे ॥ म० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राज-नगर में, संघ मली समुदायो। करता जेम नंदीश्वर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ म० ॥ १२ ॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, बजावत घंटाकरी।
तव माहे पुंज समुह जलते, भांगते संग ठींकरी॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थे।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र वर्ष विराजते॥ १ ॥

चतुर्थदिवसेऽध्यायनीय-मोहनीयकर्मसूदनार्थ

चतुर्थ पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

---

१ दाख का पानी। २ चंदन। ३ जाई के, केवड़ा और जासूद के फूल। ४ धूप। ५ दो बाट का दीपक। ६ अखंड चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

श्री शुभविजय सुगुरु नमी, मात पिता सम जेह ।
बालपणे बतलावियो, आगम निधि गुण गेह ॥ १ ॥

गुरु दीवो गुरु देवता, गुरुथी लहीए नाण ।
नाण थकी जग जाणीए, मोहनीनां अहिठाण ॥ २ ॥

कष्ट ते करवुं सोहलुं, अज्ञानी पशु खेल ।
जाणपणुं जग दोहलुं, ज्ञानी मोहन वेल ॥ ३ ॥

अज्ञानी अविधे करे, तप जप किरिया जेह ।
विराधक षट्कायनो, आवश्यकमां तेह ॥ ४ ॥

मूरख मुख आगम सुणी, पडिया मोहनी पाश ।
आगम लोपे चिहुँ जणा, नरक निगोदे वास ॥ ५ ॥
मूरख संग अति मले, तो वसिये वनवास ।
पंडितसुं वासो वसी, छेदो मोहनो पाश ॥ ६ ॥
कुच्छा मिच्छ कषाय सवि, भय ध्रुवबंधी एह ।
शेष अध्रुवबंधी कही, मिच्छ ध्रुवोदय गेह ॥ ७ ॥
सगवीस अध्रुवोदय कही, हवे अध्रुव सम मीस ।
सत्ताथी दूरे करो, ध्रुवसत्ता छवीश ॥ ८ ॥
मोहनी दूर थये थके, नासे कर्म संभार ।
कारणथी कारज सधे, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ९ ॥

ढाल, ओधव ! माधवने कहेजो, ए देशी

जलपूजा जुगते करीए, मोहनी बंध ठाणा हरीए ।
विनतडी प्रभुने करीए रे, चेतन चतुर थइ चूक्यो ॥
निज गुण मोह वशे मूक्योरे, चेतन चतुर थइ चूक्यो ॥ १ ॥
जीव हणया त्रस जल भेटी, दई फांसो मोघर कूटी ।
सुख दाबी वाधर वींटी रे ॥ चेतन चतुर० ॥ २ ॥
क्लेश शम्या उदीरणीया, अरिहा अवगुण सुख भणीया ।
वहु प्रतिपालक ने हणीया रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥
धर्मी धर्म थी चूकवीया, सूरि पाठक अवगुण लवीया ।
श्रुत दायक गुरु हेलवीया रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥

निमित्त वशीकरणे मरीयो तपसी नाम वृथा धरीयो ।
पंडित विनय नवि करीयो रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥
गाम देश घर परजाल्यां, पाप करी अन्य शिर डाल्यां ।
कपट करी बहु जन बाल्या रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥
ब्रह्मचारी थइ गवराणो, परदाराशुं मुंभाणो ।
पर धन देखी दुहवाणो रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥
परद्रोही मिथ्याभाषी, विश्वासघाती· कूडशाखी ।
मुनि छंडी सेव्या खाखी रे ॥ चेतन० ॥ ८ ॥
मोहनी बंध करी फरियो, सित्तेर कोडाकोडी सागरियो ।
हवे तुम शासन अवतरियो रे ॥ चेतन० ॥ ९ ॥
श्री शुभ वीर मया कीचे, जिन सेवक कारज सीझे ।
वांक गुनो बखसी दीजे रे, चेतन चतुर थइ चूक्यो ॥१०॥

काव्य और मन्त्र

तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जराजनिप्रांतरजोभि शान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेहम् ॥१॥
सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,-र्घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं, विमलताभियतां च निजात्मनः॥२॥
जनमनोमणिभाजनभासा, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय मोहनीयबन्धस्थाननिवारणाय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा–पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

बीजी चंदन पूजना, पूजो भेली कपूर ।
अठवीस पयडि मांहिथी, चारित्रमोहनी दूर ॥ १ ॥

ढाल, राग-विहाग विलावर

घडी घडी सांभरो सांइ सलुणा-ए देशी

चंदन पूजा चतुर रचावे, मोह महीपति महेल खणावे ।
चंदन पूजा चतुर रचावे ।
चारित्रमोहनी मूल जलावे,
जिनगुण ध्यान अनल सलगावे ॥ चंदन पूजा० ॥ १ ॥
चार अनंतानुबंधी विषधर, सुर वसुदत्त मुनिरूप धरावे ॥चं०॥
त्रण नाग एक नागणी महोटी,
पडिबोहण नागदत्त डसावे ॥ चंदन० ॥ २ ॥
जावजीव चारनुं विष रहेवे, सज्जनने एणी परे समजावे ॥चं०॥
नरक लहे समकित गुण घाते,

आते समाधिपथं नवि पावे ॥ चंदन० ॥ ३ ॥
चालीश सागर कोडाकोडी, बंध उदय सास्वादन भावे ॥चं०॥
आठमे गुणठाणे विष सत्ता,
पर्वत रेखा क्रोध कहावे ॥ चंदन० ॥ ४ ॥
आठ फणालो मान मणिधर, पत्थर थंभने कोण नमावे ॥चं०॥
घनवंशी मूल माया नागणी,
लोभ किरमज रंग कोण हठावे ॥ चंदन० ॥ ५ ॥
में वश कीधा मुनि किरियाथी, मंत्र मणि महोरे वश नावे ॥चं०॥
जांगुलि वादीने पाणी मरावे,
नागदत्त वासुदत्त जगावे ॥ चंदन० ॥ ६ ॥
सामायिक दंडक उच्चरावे, ए समो मंत्र न को जग आवे ॥चं०॥
श्री शुभवीर ना शासन मांहे,
नागदत्त अक्षय पद पावे ॥ चंदन पूजा० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

जितपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवभीतिहृत् ।
सकलरोगवियोगविपद्धरं, कुरु करेण सदा निज पावनम् ॥ १ ॥
सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिदायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अनन्तानुबन्धिदहनाय चंदनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

अपच्चक्खाणी चोकडी, टाली अनादिनी भूल ।
परमातम पद पूजीए, केतकी जाइने फूल ॥ १ ॥

ढाल, रणीओ रूए रंग महेलमां रे, ए देशी

फूल पूजा जिनराजनी रे, विरतिने घरबार रे ॥ सनेहा ॥
ते गुण लोपक अपच्चक्खाणी रे, जे क्रोधादिक चार रे ॥स०॥
चार-चतुर चित्त चोरटा रे, मोह महीपति घेर रे ॥ सनेहा ॥
चार चतुर चित्त चोरटा रे० ॥ १ ॥
चालीश सागर कोडाकोडि रे, बंध थिति अनुसार रे ॥स०॥
उदय विपाक अबाधा काले रे, वर्ष ते चार हजार रे ॥
सनेहा, चार चतुर चित्त चोरटा रे ॥ २ ॥
बंध उदय चोथे गुणे रे, नवमे सत्ता टाल रे ॥ सनेहा ॥
वर्ष लगे ते पापे करी रे, न खमावे गुरु बाल रे ॥स०॥चा०॥३॥
तिर्यंचनी गति एहथी रे, पुढवी रेखा क्रोध रे ॥ स० ।
अस्थि नमाव्युं वरसे नमे रे, बाहुबलि नरयोध रे ॥स०॥चा०॥४॥
माया मेंढासिंग सारिखी रे, लोभ छे कर्दम रंग रे ॥ स० ।
अनीतिपुरे व्यवहारियो रे, रणघंटाने संग रे ॥स०॥चा०॥५॥

चार धूतारा वाणीया रे, पासेथी वाल्युं वित्त रे ॥ स० ।
रत्नचूड परे शुभ विरतिशुं रे, लागे चतुरनुं चित्त रे ॥
॥ सनेहा, चार चतुर चित्त चोरटा रे ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमनमागतिदायि विधायिना, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसा सुमन।गुणसङ्गिना, जन ? विधेहि निधेहि मनोर्चने॥१॥

समय सारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगबलनेवशीकृत, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अप्रत्याख्यानि निवारणाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा—पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

प्रत्याख्यानी चोकडी, दहन करेवा धूप ।
पूजक ऊर्ध्व गति लहे, वली न पडे भव कूप ॥ ३ ॥

ढाल, अनि हां रे व्हालोजी वाय छे वांसली रे, ए देशी

अनि हां रे धूप घरो जिन आगले रे, कृष्णागरु धूप दशांग;
श्रेणि भली गुणठाणनी रे ।

अनि हां रे धूपधाणुं रयणे जड्युं रे,
घड्युं जात्यमयी कनकांग ॥ श्रेणि० ॥ १ ॥
अ० मुनिवर रूप न दाखवे रे, थिति बंध पूरवनी रीत ॥श्रे०॥
अनि हां रे बंधोदय गुणठाणे पांचमे रे,
हवे क्षपक श्रेणि वदित्त ॥ श्रेणि० ॥ २ ॥
अ०सोल सामंतने भोलवी रे,वच्चे घेरी हणया लइ लाग॥श्रे०॥
अनि हां रे नाठा आठे सेनापति रे,
नवमाने त्रीजे भाग ॥ श्रेणि० ॥ ३ ॥
अ० चउ मासा लगे ए रहे रे, मरणे नरनी गति जाण ॥श्रे०॥
अनि हां रे रज रेखा सम क्रोध छे रे,
काष्ठ थंभ समाणी मान ॥ श्रेणि० ॥ ४ ॥
अ० माया गोमूत्र सारखी रे, छे लोभ ते खंजन रंग ॥श्रे०॥
अनि हां रे मुनिवर मोहने नासवे रे,
रही श्री शुभ वीरने संग ॥ श्रेणि० ॥ अ० धूप० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र.

अगरूमुख्यमनोहरवस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना ।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वरायजन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय प्रत्याख्यानिदहनाय धूप यजामहे स्वाहा ।

पचम दीपकपूजा—पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

संज्वलननी चोकडी, जर जावे तर गेह ।
ज्ञान दीवो परगट हुवे, दीपक पूजा तेह ॥ १ ॥

ढाल, चद्रप्रभु जिन चद्रमा रे, ए देशी

जग दीपकनी आगले रे, दीपकनो उद्योत ।
सज्वलनो ज्वलते थके रे, भाव दीपकनी ज्योत ॥
हो जिनजी, तेजे तरणिथी वडो रे,
दोय शिखानो दीवडो रे, प्रगटे केवल ज्योत ॥ १ ॥
बध स्थिति पूरव परे रे, सज्वलनो तिग जाण ।
बध उदय सत्ता रहे रे, अनियट्टि गुणठाण ॥
हो जिनजी, तेजे तरणिथी० ॥ २ ॥
लोभ दशा अति आकरी रे, नवमे बध पलाय ।
उदय ने सत्ता जाणीए रे, जे सूक्ष्म सपराय ॥
हो जिनजी, तेजे तरणिथी० ॥ ३ ॥

साहिब श्रेणि संचर्या रे, लोभनो खंड प्रचंड ।
गुणठाणा सरिखो करी रे, खेरव्यो खंडोखंड ॥
हो जिनजी, तेजे० ॥ ४ ॥

पक्ष लगे गति देवनी रे, जलरेखा सम क्रोध ।
नेत्र लता सम मानथी रे, चरम चरणनो रोध ॥
हो जिनजी, तेजे० ॥ ५ ॥

माया अवलेही समी रे, लोभ हरिद्रा रंग ।
क्षायक भावे केवलो रे, श्री शुभ वीर प्रसंग ॥
हो जिनजी, तेजे तरणिथी० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनु कान्तिकरं तिमिरं हरं, जगतिमङ्गलकारणमान्तरम् ॥१॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतङ्गसमुहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय संज्वलनज्वलनाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

पष्ठम् अक्षतपूजा–पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

नव नोकषाय ते चरणमां, राग द्वेष परिणाम ।
कारण जेह कषायनां, तिणे नोकषाय ते नाम ॥ १ ॥

ढाल, सहसावन जइ वसियो चालोने सखि ए देशी

वीर कने जइ वसिये, चालोने सखि ! वीर कने जइ वसिये ॥
अक्षत पूजा जिननी करतां, अक्षय मंदिर वसिये ।
हास्यादिक षट् खटपटकारी, तास वदन नवि पसिये ॥
चालोने सखि ! वीर कने जइ वसिये ॥ १ ॥
हास्य रति दश कोडाकोडि, सागर बंधन कसिये ।
अरति ने भय शोक दुगंछा वीश कोडाकोडि खसिये ॥
चालोने सखि ! वीर कने जइ वसिये ॥ २ ॥
भय रति हास दुगंछा अपूरव, शेष प्रमत्त बंध घसिये ।
उदय अपूरव सत्ता नवमे, पचम भागे वसिये ॥ चा० ॥ ३ ॥
काउस उद्धरतां मुनि देखे, सोहमपति मोह वसिये ।
मोहे नडिया नाणयो पडिया ,काउस्सग्गमां मुनि हसियो चा०।४।
मोहनी हास्य विनादे वमना , जेम तेम मुखथी भसिये ।
कोइ दिन रति कोइ दिन अरतिमां,शोक मयी लेइ घसिये ॥
चालोने सखि० ॥ ५ ॥
ससारे सुख लेश न दीठु , भयमें हनी रिहुँ दिशिये ।
चरण दुगंछा फल चडाले, जन्म मेतारज ऋषिये ॥ चा० ॥६॥
मोह महोपति महा तोफाने, मुझाणा अहोनिशिये ।
श्री शुभ वीर हजुरे रहेतां, आनंद लहेर दिलसिये ॥ चा० ॥

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानक, गणिवरस्य पुरोक्षतमण्डलम् ॥

क्षतविनिर्मितदेहनिवारणं, भवपयोधिसमुद्धरणोद्यतम् ॥ १॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैर्विपुलदोषविशोधकमङ्गलैः ॥
अनुपरोधसुबोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय हास्यषट्कनिवारणाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

आहारे वेद उदय वधे, जेहथी बहु जंजाल ।
निर्वेदी आगल ठवो, भरी नैवेद्यनो थाल ॥ १ ॥

ढाल, राग मारु परजीयानो चाल आने जाणी तुमारी वात रे,
ए देशी

मलीने विछडशो नहीं को रे, मन मान्या मोहनने !
मलीने विछडशो नहि कोइ रे ॥
वेदे वाह्यो जीव, विषयी थयो,
भव मांहे घणुं भटकाय रे ॥ मन मान्या० ॥
मोहनी घर वस्यो, मोहनी खोलतो,
मले मोहन न ओलखाय रे ॥ मन० ॥ १ ॥
जे गुणश्रेणे चड्या, वेद उदये पड्या,

आषाढभूति मुनिराय रे ॥ मन० ॥
एम अनेक ते चूक्या, तप वल वने मूक्या,
शक्या नहिं वेद छुपाय रे मन० ॥ २ ॥
महानिशिथे कह्या, भव बहुल लह्या,
वेद उदयरूपी राय रे ॥ मन० ॥
वेद विलुद्धा प्राणी, करे संपत हाणि,
रावण नमे सीताना पाय रे ॥ मन० ॥ ३ ॥
देव अच्युत निवासी, पूरव प्रिया पासी,
मणुअ नारीशुं लपटाय रे ॥ मन० ॥
पन्नवणाए कह्या, वेद विवश रह्या,
घर छडी विदेशे जाय रे ॥ मन० ॥ ४ ॥
गले फांसो धरे, भंपापात करे,
मात पिताशुं न लजाय रे ॥ मन० ॥
वेद निहुं उदयाणे, नवमे गुणठाणे,
मिथ्याते नपुं बंधाय रे ॥ मन० ॥ ५ ॥
नवम दुजा सुधी, पुरुष प्रिया बंधी,
हवे सत्ताथी छेदाय रे ॥ मन० ॥
नर नपुंसक नारी, नवमेथी हारी,
पट् त्रण चोथाने भाय रे ॥ मन० ॥ ६ ॥
नरित्थी नपु जोडी, सागर कोडाकोडी,

दश पंदर वीश कहाय रे ॥ मन० ।
वेदे नड्यो जड्यो, संसारी थड्यो,
निर्वेदी चड्यो नहीं छांय रे ॥ मन० ॥ ७ ॥
अब तुं स्वामी मलयो, नर भव फल्यो,
नैवेद्य पूजा फलदाय रे, ॥ मन० ।
श्री शुभ वीर हजूरे, रहो आनंद पूरे,
भव वेदन विसरी जाय रे ॥ मन० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्वतिवुद्धिना, रुचिरभोजनसंचितभोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते वत ढौकय चेतसा ॥१॥
कुमत वोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ॥
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीर जिनेन्द्राय वेदत्रिकसूदनाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टमी फलपूजा—पूजाष्टक चतुर्थ

दोहा

मोह महा भट केसरी, नामे ते मिथ्यात ।
फल पूजा प्रभुनी करी, करशुं तेहनो घात ॥ १ ॥

ढाल, राग वसत धुमाल—अहो मेरे ललना, ए देशी

मोह महीपति महेलमे बेठे, देखे आयो वसत ललना।
वीर जिणद रहे वनवासे, मोहसें न्यारो भगवंत॥
चतुराके चित्त चद्रमा हो॥ १॥
मजरी पिंजरी कोयल टहुके, फूली फली वनराय ललना।
धर्मराज जिनराजजी खेले, होरी गोरी अनवी काय॥
चतुराके चित्त चद्रमा हो॥ २॥
सतोष मत्री वडो मुख आगे, समकित मंडली भूप ललना।
सामत पच महाव्रत छाजे, गाजे मार्दव गजरूप॥च०॥३॥
चरण करण गुण पायदल चाले, सेनानी श्रुतबोध ललना।
शीलाग रथ शिर साइ सुहावे, अध्यवसाय जस योध॥च०॥४॥
मोहराय पण इणे समे आयो, माया प्रिया सुत काम ललना।
मत्री लोभ भट दुर्धर क्रोधा, हाम्यादि षट रथ नाम॥च०॥५॥
मिथ्यात मडलिक राय अटारो, बध उदय निजठाण ललना।
समकित मिश्र मोहनी लघु भाइ, उदय सत्तम सम जाण॥
चतुराके चित्त चद्रमा हो॥ ६॥
सित्तेर सागर कोडाकोडी, मिथ्यात्वनो स्थितिबध ललना।
सत्ता त्रणनी अड गुणठाणे, मान हस्तीए चाहे बध॥च०। ७॥
तस रक्षक मन जिन पलटायो, मोह ते भाग्यो जाय ललना।
ध्यान केसरिया केवल वरिया, वसत अनंत गुण गाय॥च०॥८॥

ते शुभ वीर जिणंदे दाख्यो, कर्मसूदन तप एह ललना ।
तप फल फलपूजा करी दाचो,साचो सांइशुं करोनेह ॥च०॥६॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैनयप्रदैः ।
अहितदुःखहरं विभवप्रदं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दर्शनमोहनीय निवारणाय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश—राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो, त्रिशला माता पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो । तप तपतां केवल प्रगटाया, समवसरण विरचायो रे महावीर जिनेश्वर गायो॥म०॥१॥ रयण सिंहासन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो । आचार दिनकरे वर्द्धमानसूरि, भवि उपकार रचायो रे ॥म० ॥ २ ॥ प्रवचन-सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे

ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ उजमणा थी तप फल वाधे, इम भाखे जिनरायो। ज्ञान गुरू उप-करण करावो, गुरूगम विधि विरचायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मली चौसठ पूजा, नर नव भाव घनायो। नर-भव पामी लाहो लीजे, पुण्य शासन पायो रे ॥ महा०॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्र सूरीश्वरराज्ये, तपगच्छ केरो रायो। खुशाल विजय मानविजय विबुधना आग्रह थी विरचायो रे ॥ महा० ॥६॥ वड ओसवाल गुमानचद सुत, शासन राग सवायो। गुरुभक्ति शा भवानचद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ मृग बालदेव मुनि रथकारक, त्रण हुआ एक ठायो। करण करावण ने अनुमोदन, सरिखा फल निप-जायो रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ श्री विजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध गायो। कपूरविजय तस खिमाविजय जसविजय परपर ध्यायो रे ॥ म० ॥ ९ ॥ पडित श्री शुभविजय सुगुरु मुझ, पामी तास पसायो। तास शिष्यधीर विजय सलुणा, आगम राग सवायो रे ॥ म० ॥ १० ॥ तस लघु बाधव राजनगर में, मिथ्यात्व पु ज जलायो। पडित वीरविजय कवि रचना, सघ सकल सुख दायो रे ॥ म० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो। करता जेम नंदीश्वर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ म० ॥ १२ ॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, बजावत घंटाकरी ।
तव मोह पुंज समुह जलते, भागते संग ठींकरी ॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें ।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र(१८७४)वर्ष विराजते॥१॥

पंचम दिवसेऽध्यापनीय—आयुष्यकर्मसूदनार्थं

पंचमं पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ शक्कर का पानी। २ केशर। ३ जाई और चमेली के फूल। ४ किंदरु या दशांगधूप। ५ चार बत्ती का दीपक। ६ अखंड चावल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा—पूजाष्टक पंचम

दोहा

पंचम कर्म तणी कहु, पूजा अष्ट प्रकार।
मोहराय दरबारमां, जीविन कारागार ॥ १ ॥
चार अघाती आउखा, वघोदय सुविचार।
सत्ताए पण जोडीए अध्रुव पद निरधार ॥ २ ॥
चार गतिमां जीवडो, आयु कर्मने योग।
बंध उदयथी अनुभवे, सुख दुःख केरा भोग ॥ ३ ॥
चरम शरीरी विण जिके, जीव इणे संसार।
समय समय बांधे सही, कर्म ते सात प्रकार ॥ ४ ॥
अंतर्मुहूर्त आउखु, भवमां एक ज वार।
बांधी अबाधा अनुभवी, संचरिया गति चार ॥ ५ ॥

एम पुद्गल परावर्त्तना, करी संसारे अनंत ।
निर्भय दायक नाथजी, मलियो तुं भगवंत ॥ ६ ॥

जलपूजा जुगते करी, धरी प्रभु चरणे शीष ।
चार पयडिमां सुरगति, दायक ठाण कहीश ॥ ७ ॥

ढाल, शीतल जिन सहजानंदी, ए देशी

तीर्थोदक कलशा भरिये, अभिषेक प्रभुने करिये ।
प्रातिहारज शोभा धरिये, लघु गुरु आशातना हरिये ॥
सलूणा संत ! ए रीत कीजे,
देव आयु लहे भव बीजे, सलूणा संत० ॥१॥
परमातम पूजा रचावे, समता रस ध्यान धरावे ।
शोक संताप अल्प करावे, साधु साधवीने वहोरावे ॥स०॥२॥
गुणी राग धरे व्रत पाले, समकित गुणने अजुवाले ।
जयणा अनुकंपा ढाले, करे गुरुवंदन त्रण काले ॥स०॥३॥
पंचाग्नि ताप सहंता, ब्रह्मचारी वनमां वसंता ।
कष्टे करी देह दमंता, बाल तपसी नाम धरंता ॥स०॥४॥
बंध करतो सातमे जाणो, उदये चोथो गुणठाणो ।
ओघे सुर आयु प्रमाणो, सत्ता उपशम गुणठाणो ॥स०॥५॥
लोक लोकोत्तर गुणधारी, अंते परिमाण समारी ।
देवलोक मांहे अवतारी, शुभ वीर वचन बलिहारी ॥स०॥६॥

तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जराजनिप्रांतरजोभि शान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेहम् ॥१॥

सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,—र्घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपयतीर्थकृतं गुणवारिधि, विमलता क्रियता च निजात्मन;॥२॥

जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकला रमणीयक, सहजसिद्धमह परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय देवायुर्वन्धस्थान
निवारणाय जल यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा—पूजाष्टक पचम

दोहा

पर्याप्ति पूरी करी, समकित दृष्टि देव ।
न्हवण विलेपन केसरे, पूजे जिन ततखेव ॥ १ ॥

ढाल

कोशा वेश्या वहे रागीजी, मनोहर मन गमता, ए देशी

दुनियामा देव न दूजा जी, जिनवर जयकारी ।
करु अंग विलेपन पूजा जी, जिनवर जयकारी ॥

तेम समकिती सुर पूजे जी ॥ जिनवर० ।
मिथ्यात्वी पण केइ बूझे जी ॥ जिनवर० ॥ १ ॥
तिहां पहेली भवन निकाय जी ॥ जिनवर० ।
एक सागर अधिकुं आय जी ॥ जिनवर० ॥
उत्तरथी दक्षिण हीना जी ॥ जिनवर० ।
नवमां दो पलिय ते ऊणा जी ॥ जिनवर० ॥ २ ॥
व्यंतर एक पलियनुं आय जी ॥ जिनवर० ।
सुण साहिब त्रीजी निकाय जी ॥ जिनवर० ॥
सहस लक्ष वरस अधिकेरे जी ॥ जिनवर० ।
रवि चंद्र पल्योपम पूरे जी ॥ जिनवर० ॥ ३ ॥
ग्रह रिख तारक जोडाय जी ॥ जिनवर० ।
पल्य अर्ध ने चोथे पाय जी ॥ जिनवर० ॥
सौधर्मे सागर दोय जी ॥ जिनवर० ।
बीजे अधिकेरां होय जी ॥ जिनवर० ॥ ४ ॥
दोय कल्पे सगहिय जाणो जी ॥ जिनवर० ।
ए परमायु परिमाणो जी ॥ जिनवर० ॥
दश चउदश सत्तर दीजे जी ॥ जिनवर० ।
महाशुक्र लगे ते लीजे जी ॥ जिनवर० ॥ ५ ॥
हवे कीजे अधिक एक एक जी ॥ जिनवर० ॥
एकत्रीश नवमे ग्रैवेके जी ॥ जिनवर० ॥

तेत्रीश ते पंच विमाने जी ॥ जिनवर० ।
समकित दृष्टि तिहां माने जी ॥ जिनवर० ॥ ६ ॥
शिव साधक धाधक टाणे जी ॥ जिनवर० ।
सुर सुख ते दुःख करी जाणे जी ॥ जिनवर० ॥
कल्याणक रंगे भीना जी ॥ जिनवर० ।
शुभवीर वचन रस लीना जी ॥ जिनवर जयकारी ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

जिनपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवमीतिहृत् ॥
सकलरोगवियोगविपद्धरं, कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१॥
सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ॥
अनुपमानगुणावलिदायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय सुरासुरनिगउभञ्जनाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा–पूजाष्टक पञ्चम

दोहा

त्रीजी कुसुमनी पूजना, मूझे नित्य जिनराय ।
पंडित संग करे सदा, शास्त्र भणे धरे न्याय ॥ १ ॥

न्याये उपार्जन करे, जयणा युत मुनि दान ।
भद्रक भावे नवि करे, आरम्भ निंदा ठाण ॥ २ ॥
पर उपकारादिक गुणे, बांधे मणुअनुं आय ।
तुज शासन रसिया थइ, शिव मारग केइ जाय ॥ ३ ॥

ढाल, त्रीजी आसणरा योगी—ए देशी

कुसुमनी पूजा कर्म नसावे, नागकेतु परे भावे रे ।
सुणजो जग स्वामी ।
आयु निकाचित छे पण तेहथी, कर्मनुं जोर हठावे रे॥सु०॥१॥
श्रेणिक सरिखा तुज गुणरागी, कर्मनी बेडी न भांगी रे॥सु०॥
सुकुमालिका उपनय इहां भावो, सार्थवाह घर लागी रे ॥
सुणजो जग स्वामी० ॥२॥
व्याशी लाख पूरव घरवासे, जिनवर विरति न आवे रे ॥सु०॥
बंध तुरीय सत्ता उदयेथी, केवली अन्ते खपावे रे ॥सु०॥३॥
त्रण पल्योपम युगलिक आयु, कल्पतरु फल लीना रे ॥सु०॥
संख्यायु नर शिव अधिकारी, जय ते भव व्रत हीना रे॥सु०॥४॥
पूरव कोडी चरण फल हारे, मुनि अधिकेरे आय रे ॥सु०॥
श्री शुभवीर अचल सुख पावे, चरम चोमासुं जाय रे॥सु०॥५॥

काव्य और मन्त्र

सुमनसां गतिदायिविधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसा सुमनोगुणसंगिना, जन! विधेहि निधेहि मनोऽर्चने॥१॥

समयसारसुपुष्पमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ॥
परमयोगनलेनवशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नरायुर्निवारणायपुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा–पूजाष्टक पंचम

दोहा

कर्म समिध दाहन भणी, धूप घटा जिन गेह ।
कनक हुताशन योगथी, जात्यमथी निज देह ॥ १ ॥
जिनगुण रंग सुगंगमें, ढलकत झलकत हंस ।
आयु कलंक उतारतां, शोभे निर्मल वंश ॥ २ ॥
निर्मल वंश निहालीने, कुलवंती घर नार ।
'पर घर रमती देखीने, समजावे भरतार ॥ ३ ॥

ढाल, राग–आशावरी

ऊढ भमरा कंकणी पर बेठा, नयणीसे ललकारंगी-ए देशी

जिन गुण धूपघटा वासंती, कुलवंती परदारंगी ।
मत जा रे पिया तुज वारुंगी ।
बाल खेलमें नवि घतलायो, अब नयने ललकारुंगी ॥म०॥१॥

मात पिता सयणा लजवाते, लाजत दश दोष डारु'गी ॥मत०।
ए तुज ख्याल बूरो दुनियामें,क्या में मुख देखारु'गी ॥मत०॥२॥
रयणी घोरमें चोर फिरत है, पियु हररोज पोकारु'गी ॥मत०।
इतने दिन ओभलमें रहेती,सहेती दुनिया गारु'गी ॥मत०॥३॥
तीन लोक साहिबकी आज्ञा, में तेरे शिर धारु'गी ॥मत०।
दीपकी ज्योतमें मंदिर रहेना, पर घर चार विसारु'गी॥म०॥४॥
चार सज्जाये फूल बिछाउं, छतियां से वि लगारु'गी ॥मत०।
रंग महेलमें सहेल करंता, गोदमें पुत्त रमारु'गी ॥म०॥५॥
गंगा नीर से अंग पखारु', नाथ सगासें तारु'गी ॥मत०।
नवल वधूसें पुत्त सगाइ, मंगल तूर वजारु'गी ॥म०॥६॥
नाथसें होती पुत्त पनोती, सखियां गीत उचारु'गी ॥मत०।
श्री शुभ वीर चतुर चेरीसें, शिर पर लूण उतारु'गी॥म०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अगरुमुख्यमनोहर वस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना ।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणाधातमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनन्तसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नरायुर्विगमाद् अन्तरंगकुटुम्बप्राप्तये धूपं यजामहे स्वाहा ।

पचम दीपकपूजा–पूजाष्टक पंचम

दोहा

मन मंदिर दीपक जिसो, दीपे जास विवेक ।
तस तिरिआयु नहिं कदा, थानक बंध अनेक ॥ १ ॥

ढाल, चोरी व्यसन निवारी ए, ए देशी

दीपक पूजा जिनतणी, नित करतां हो अविवेक ते जाय के।
अविवेके करी अतमा, बंध पाडे हो तिरियंचनुं आय के ॥
'अज्ञानी पशु आतमा ॥ १ ॥
शील रहित पर वंचका, उपदेशे हो पोपे मिथ्यात के।
वणिज करे कूड तोलशुं, मुख भाखे हो कुकर्मनी वात के ॥
अज्ञानी पशु आतमा० ॥ २ ॥
वस्तु उत्तम हीन जातिशुं, भेलवीने हो वेचे नादान के।
माया कपट कूड शाखीओ,करे चोरी हो नित्य आरत ध्यान के।
अज्ञानी पशु आतमा० ॥ ३ ॥
थइ धीरोली साधवी, शेठ सुंदर हो नंदन मणियार के।
अविवेके परभव लहे,गोह जाति हो डेडक अवतार के ॥अ.॥४॥
कूड कलंक चढावतां, नील कपोत हो लेश्या परिणाम के।
श्री शुभवीर ना निंदकी, तिरिआयु हो बांधे एणे ठाम के।
अज्ञानी पशु० आतमा०.॥५॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिकरं तिमिरं हरं, जगति मङ्गलकारणमान्तरम् ॥१॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतंङ्गसमुहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय तिर्यगायुर्बन्धस्थाननिवारणाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा—पूजाष्टक पंचम

दोहा

अक्षत पूजा कीजीए, अक्षय पद दातार ।
पशुआं रूप निवारीने, निज रूपे करनार ॥ १ ॥

ढाल, मन मोहन मेरे, ए देशी

तुम अम पहेले एकठा, मन मोहन मेरे ।
मलीया वार अनंत, मन मोहन मेरे ॥
शीघ्रपणे केम साहिबा म०, आप हुवा भगवंत ॥म०॥१॥
आलसु मंद पराधीने म०, अंतर पडियो जाय ॥ म० ।
एकलडा में आचर्या म०, तिरिय गतिनां आय ॥म०॥२॥

एकेन्द्रिय मांहे रह्यो म०, बावीश वरस हजार ॥ म० ।
क्षुल्लक भव सत्तर कर्या म०, श्वासोश्वास मोझार ॥म०॥३॥
बेइन्द्रिय गुरु आयुथी म०, जीवे वरस ते बार ॥ म० ।
ओगणपचास वासरा म०, तेइन्द्रिय अवतार ॥ म० ॥ ४ ॥
छमासी चउरिंद्रिये म०, पल्म पणिंदी तीन ॥ म० ।
बंध कह्यो सास्वादने म०, उदये पंचम लीन ॥ म० ॥ ५ ॥
सत्ता खसी गइ सातमे म०, पूज्य हुवा शुभ वीर ॥ म० ।
हुं पण मलियो अवसरे म०, पूजुं अक्षते थइ थिर ॥म०॥६॥

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोऽक्षतमण्डलम् ।
क्षतविनिर्मितदेहनिवारणं, भवपयोधिसमुद्धरणोद्यतम् ॥ १ ॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैर्विपुल दोषविशोधकमङ्गलैः ।
अनुपरोधसुबोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्यु निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय तिर्यगायुनिवारणाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक पंचम

दोहा

अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइय अनंत ।
नैवेद्य पूजा फल दियो, अणाहारी पद संत ॥ १ ॥

ढाल, माता यशोदाजी हुलराव्यो, भाव्यो मन गोपाल
वालपणे वाह्यो—ए देशी

आहार करंता अहोनिश माच्यो, नाच्यो इणे संसार ।
सांभल विशरामी ॥
नैवेद्य थाल ठवी जिन आगे, मागुं पद अणाहार ॥ सां० ।
देतां नहीं तुज वार सां०, तुज सरिखो दातार ॥ सां० ॥
नहिं कोइ आ संसार सां०, त्रिशला मात मल्हार ॥ सां० ।
मुज अवगुण न विचार सांभल विशरामी ॥ १ ॥
मद मत्सर लोभी आति विषयी, जीव तणो हणनार ॥ सां० ।
महारंभी मिथ्याती ने रौद्री, चोरीनो करनार ॥ सां० ॥
घातक जिन अणगार सां०, व्रतनो भंजणहार ॥ सां० ।
मदिरा मांस आहार सां, भोजन निशि अंधार ॥ सां० ॥
गुणी निंदानो ढाल सां०, लेश्या धुर अधिकार ॥ सां० ।
नारकीमां अवतार सां०, इणे लक्षण निरधार ॥ सां० ॥
अवगुणनो नहीं पार सां०, पण आव्यो तुज दरबार ॥ सां० ॥
निज रूप दियो एक वार सां०,जेम विद्याधर उपगार ॥ सां० ॥
संजीवनी बूटी चार सां०, साजो कीधो भरतार ॥ सां० ।
शुभ वीर वडो आधार, सांभल विशरामो ॥ २ ॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्वतिबुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ॥

प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते यत ढौकय चेतसा ॥१॥
कुमनसोपविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ॥
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालय, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नरकायुर्बन्धस्थाननिवारणाय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फल पूजा-पूजाष्टक पंचम

दोहा

बधनी वेडी भंजवा, जिन गुण ध्यान कुठार ।
फल पूजाथी ते हुवे, फलथी फल निर्धार ॥ १ ॥

ढाल, परिग्रह ममता परिहरो-ए देशी

फल पूजा वीतरागनी, करता दुःख पलाय ॥ सलूणे ।
अरिहा पूजा अरोचका, जीव ते नरके जाय ॥ सलूणे ॥१॥
बंध समय चित्त चेतीए, शो उदये संताप ॥ सलूणे ।
शोक वधे संतापथी, शोक नरकनी छाप ॥ सलूणे ॥
बंध समय चित्त चेतीए० ॥२॥
इग तिग सग दश सत्तरु, बावीश ने तेत्रीश ॥ सलूणे ॥
सागर साते नरकमां, नारकी पाडे चीस ॥स०॥ बंध० ॥३॥
दशविध दाहक वेदना, वैतरणीनां दुःख ॥ सलूणे ।

परमाधामी वश पड्या घडीय न पामे सुख ॥स०॥बंध०॥४॥
जाति स्मरणे जाणता, अनुभविया अवदात ॥स० ।
तो पण रावण भूभतो, लक्ष्मणशुं करी घात ॥स०॥बंध०॥५॥
परमाधामी देखीने, नाखे अग्नि मझार ॥ सलूणे ।
चोथी नरके वूझव्या, सीतेंद्रे तेणी वार ॥स०॥बंध०॥६॥
राय वसु नरके पड्या, सुभूम सरिखा वीर ॥ सलूणे ।
सांभली हड्डां कमकमे, भुज वक्रूटे शरीर ॥स०॥बंध०॥७॥
आदि तुरिय बंध उदयथी, सत्ता सातमे टाल ॥ सलूणे ।
कर्मसूदन तप फल दीयो, श्री शुभवीर दयाल॥स०॥बंध०॥८॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ।
अहितदुःखरं विभवप्रदं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नरकायुर्निगड विफलत्वाय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो । त्रिशला माता

पुन नगीनो, जगनो तात कहायो। तब तरतां केवल प्रग-टायो, समवसरण विरचायो रे॥ महा०॥ १॥ रयणसिंहा-सन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो। आचारदिनकरे वर्धमानसूरि, भवि उपगार रचायो रे॥ महा०॥ २॥ प्रवचन सारोद्धार कहावे, सिद्धसेनसूरि रायो। दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उजमणे निरमायो रे॥ महा०॥ ३॥ उजमणा थी तपफल वाधे, इम भाखे जिनरायो। ज्ञान गुरु उपकरण करावो, गुरुगम विधि निरचायो रे॥ म०॥ ४॥ आठ दिवस मली चोसठ पूजा, नव नर भाव घनायो। नरभव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे॥ महा०॥ ॥ ५॥ विजय जिनेन्द्रसूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ केरो रायो। खुशालविजय मानविजय विबुधना, आग्रह थी विरचायो रे ॥ महा०॥ ६॥ वड ओसवाल गुमानचंद सुत, शासन राग सवायो। गुरुभक्ति शा भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे॥ महा०॥ ७॥ मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रण हुआ एक ठायो। करण करावण ने अनुमोदन, सरिखां फल निपजायो रे॥ महा०॥ ८॥ श्री विजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध गायो। कपूरविजय तस खिमा-विजय जसविजय परंपर ध्यायो रे॥ महा०॥ ९॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरु मुझ, पामी तास पसायो। तास शिष्य धीरविजय सलूणा, आगम राग सवायो रे॥ महा०

॥१०॥ तस लघु बांधव राजनगर में मित्थात्व पुंज जलायो। पंडित वीरविजय कवि रचना, संघ सकल सुखदायो रे ॥महा०॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो। करता देव नंदीश्वर देवा, पुरण हर्ष सवायो रे ॥ महा० ॥ १२ ॥

कवित्त

ुत ज्ञान अनुभव तान मंदीर, वजावत घंटा करी।
ाव मोह पुंज समुह जलते, भांगते संग ठींकरी ॥
ुम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चंद्र (१८७४) वर्ष विराजते ॥

षष्ठ दिवसे अध्यापनीय—नामकर्मसूदनार्थं

षष्ठं पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ दूध। २ सुवर्ण वरख, केशर। ३ पांचवर्णे फूल। ४ धूप। ५ दो दो बत्ती के एक सौ तीन दीपक। ६ अखंड चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा—पूजाष्टक षष्ठं

दोहा

प्रणमुं श्री शंखेश्वरो, साहिब सुगुण पवित्त।
मुज गुरु उपकारे करी, क्षण क्षण आवे चित्त॥ १॥
नाम कर्म सवे दाखवुं, चित्रक सरिखुं जेह।
नट जेम बहु रूपो करे, तेम शुभ अशुभ तेह॥ २॥
ऊंच नीच देहाकृति, खंपण देहे होय।
कृष्ण नील जाडो घणुं, अशुभ नाम ते जोय॥ ३॥
रूपे हरि बल सारिखा, ते शुभ नाम वखाण।
मध्य तनु पीत उजलो, सुन्दर रातो वान॥ ४॥

जैनधर्म रातो रहे, गाय गुणी गुणग्राम ।
तेणे शुभ नाम ते संपजे, इतर अशुभ ते नाम ॥ ५ ॥
नाम कर्म दूरे करी, पाम्या भवनो पार ।
सिद्ध अरूपी पद भणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ६ ॥

ढाल, सुतारीना वेटा तुंने विनवुं रे लोल, ए देशी

पिंड पयडि चौद पखालवा रे लोल,
अभिषेक करु अरिहंत जो ।
जस ज्ञान दशा रलियामणी रे लोल,
करे ज्ञानी करमनो अंत जो ॥
ज्ञानीनी गोठडी मीठडी रे लोल ॥ १ ॥
नर देव निरय तिरिया गइ रे लोल,
इग विगल पणिंदि जात जो ।
तरु कीडो कीडी माखी थयो रे लोल,
शुं वखाणु आपणी बुनियाद जो ॥ज्ञानीनी०॥२॥
तनु उरल विउव्वाहारगा रे लोल,
तेज कर्म अनादिनां साथ जो ।
त्रण आदि उपांगने टालवा रे लोल,
तुज सरिखो न मलियो नाथ जो ॥ज्ञानीनी०॥३॥
इणे नामे वंधन संघातनां रे लोल,
पण वंधन ग्राहक पांच जो ।
षट् संघयण आदि केवली रे लोल,

जो वज्रऋषभनाराच जो ॥ज्ञा०॥ ४ ॥
संसारे ऋषभनाराच छे रे लोल,
नाराच अरधनाराच जो ।
किलि छेवट्ठुं पचम कालमां रे लोल,
गयां रत्न रह्यां तनु काच जो ॥ज्ञा०॥ ५ ॥
सम चउरस निगोह सादिए रे लोल,
कुबडुं वामण संठाए जो ।
हुडवालानुं एके न पामरुं रे लोल,
हवे वर्णादि वीश प्रमाए जो ॥ज्ञा०॥ ६ ॥
गंध वर्ण फरस रस पुग्गला रे लोल,
वीश मोल घोले अहवाय जो ।
जीव योग्य अहए अड वर्गणा रे लोल,
राग द्वेषनो रस घोलाय जो ॥ज्ञा०॥ ७ ॥
अनुपूर्वी कही गति चारनो रे लोल,
जाय तारयो ऋषभ घर नाय जो ।
शुभ अशुभ चाल छडी करी रे लोल,
शुभवीर ने वलगो हाथ जो ॥ज्ञा०॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

-तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जराजनिप्रांतरजोभिशान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेहम् ॥१॥

सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,-र्घुसृणामिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं,विमलता क्रियतां च निजात्मनः॥२॥
जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय पिण्डप्रकृतिविच्छेदनाय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चदनपूजा—पूजाष्टक षष्ठ

दोहा

दश तिग जिनघर साचवी, पूजीशुं अरिहंत ।
दश यतिधर्म आराधीने, करु थावर दश अंत ॥ १ ॥

ढाल, व्रजना व्हालाने विनति रे, ए देशी

साते शुद्धि समाचारी रे, पूजीशुं अमे रंगे लाल ।
केसर चंदनशुं घसी रे, स्वामी विलेपन अंगे लाल ॥
लाल सुरंगी साहिबो रे ॥ १ ॥
भू जल जलण अनिल तरु रे, थावर पंच प्रकारो लाल ।
सूक्ष्म नाम करम थकी रे, भरिया लोक मोझारो लाल ॥
लाल सुरंगी साहिबो रे ॥ २ ॥

निज पर्याप्ति पूर्या विना रे, मरता ते अपजत्ता लाल ।
साधारण तरु जातिमां रे, जीव शरीरे अनंता लाल ।ला०॥३॥
अंग उपांग जे थिर नहिं रे, नाम अथिर ते दीठो लाल ।
नाभि हेठे अशुभाकृतिरे, दुर्भग लोक अनिठो लाल ॥ल०॥४॥
न गमे जे स्वर लोकमां रे, दुःस्वर खेदनुं धामो लाल ।
साचुं लोकने नवि गमे रे, वचन अनादेय नामो लाल ॥ला०५॥
अपजश नामथी निंदता रे, खेद विना लोक अनेको लाल ।
श्रीशुभवीरने नवि होवे रे,ए दश मांहेनी एको लाल ॥ला०६॥

काव्य और मन्त्र

जिनपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवभीतिहृत् ।
सकलरोगवियोगविपद्धरं,कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१॥
सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिदायकं, सहज सिद्धमहं परिपूजिये ॥२॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय स्थावरदशकनिवारणाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक षष्ठं

दोहा

ए दश पयडि पापनी, पापे बंध करंत ।
त्रस दश पामे जीवडो, जिम अंशे पुण्यवंत ॥ १ ॥

ढाल, रहो रहो रे जादव दो घडियां, देशी

रहो रहो रे रसभर दो घडियां, दो घडियां दिलसें अडियां ।
रहो रहो रे रसभर दो घडियां ॥

कुसुमनी पूजा करी फल मागुं, परमातम पाउं पडियां ।रहो।
पुण्य उदय त्रस नाम धरायो, अब तुम वार नहिं घडियां
॥ रहो० ॥ १ ॥

विगलेन्द्रि पंचेन्द्रि कहायो, प्रभु ओलखाण हवे पडियां ।रहो।
बादर नाम जे नजरे देखे, उवेखे केम नजरे चडियां ॥रहो०॥२॥
थइ पर्याप्तो लब्धि करणे, चरणे आयो न विछडियां ।रहो।
एक तनु एक जीव कहावे, प्रत्येकमां पण अमे वडियां ॥
॥ रहो० ॥ ३ ॥

दंतादिक तनु थिर थिरनामे, तहवि मन अमे थिर करियां ।रहो।
नाभि उपर तनु शुभ सहु देखे, तिणे तुम हृदय कमल धरियां
॥ रहो० ॥ ४ ॥

सर्वने वहालो सुभगथी लागुं, जब अम घर तुम पावडियां ।रहो।
सुस्वर सुणतां लागे मीठो, तुज गुण आंबा मंजरियां ॥
॥ रहो० ॥ ५ ॥

आदेय नाम वचन जग माने, श्री शुभवीर मुखे चडियां ।रहो।
जस गुण गावे लोक बनावे, ते सनाम ते तुम वडियां ॥
॥ रहो० ॥ ६ ॥

सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम्।
सुमनसां सुमनोगुणसंज्ञिना, जन ! विधेहि निधेहि मनोऽर्चने॥१॥
समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोगबलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥ २॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय त्रसदशकनिवारणाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा।

चतुर्थ धूपपूजा-पूजाष्टक पद्य

दोहा

धूपे जिनवर पूजिये, प्रत्येक दाहनहार।
पयडि न जाये मूलथी, जब लग ए संसार॥ १॥

ढाल, वीर जिणंद जगत उपकारी, ए देशी

आज गइ मन केरी शंका, जब तुम दर्शन दीठ जी।
दूर गइ लोकसन्ना छारी, आगम अमिय ते मीठ जी॥
आज गइ मन केरी शंका॥ १॥
गुरु लघु अंगे एक न होवे, अगुरुलघु ते जाण जी।

सास ऊसास लीए पज्जत्तो, सासोसास प्रमाण जी ॥
आज० ॥ २ ॥

लंब गात्र मुखमां पडजीभी, पयडि उदय उपघात जी।
वलियो पण नवि मुख पर आवे, नाम उदय पराघात जी ॥
आज० ॥ ३ ॥

ताप करे रविबिंब जे जीवा, आतम नाम कहाय जी
अंग उपांग सुतार पुतलियां, निर्माण घाट घडाय जी ॥
आज० ॥ ४ ॥

वैक्रिय सुर खजुओ शशिबिंबे, ताप विना परकाश जी।
उद्योत नामकर्म में जाणयुं, आगम नयन उजास जी ॥
आज० ॥ ५ ॥

केवल उपजे त्रिभुवन पूजे, वर अतिशय गंभीर जी।
जिननाम उदये समवसरणनां, बेठा श्री शुभवीर जी ॥
आज० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

अगरूमुख्यमनोर वस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलप्रविकर्षणम्।
विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-रणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय प्रत्येकाष्टप्रकृतिनिवारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकपूजा-पूजाष्टक षष्ठं

दोहा

वीश कोडाकोडि सागरु, मूल गुरु थिति बंधाय ।
उत्तर पयडि निहालवा, दीपक पूजा रचाय ॥ १ ॥

ढाल, साहिबा मोती घो हमारा, ए देशी

दीपक पूजा ज्योति जगावुं, उत्तर पयडि तिमिर हरावुं ।
साहिब तें थितिबंध खपाव्यो, सेवकनो हवे लाग ते फाव्यो ॥
साहिबा संसार अटारो, मोहना मुज तारो ॥ १ ॥
सुहुम विगल तिग बंध अढार, मणुअ दुगे पन्नर अवधार ।
संधयणागिइ जुगल करीश,
दश उपर दुग वुड्ढि ने वीश ॥ साहिबा० ॥ २ ॥
सुरभि मधुर शीत शुभ चउ फासा,
थिर छ सुगइ सुर दुग दश खासा ।
पीताम्ले वली रक्त कषाये,

नील कटुक वळी कृष्ण तीखाये साहिबा० ॥ ३ ॥
साडाचार पन्नर युग एके, साडासत्तर वीश ठविये विवेके ।
वैक्रिय निरय तिरि उरल दुगका,
तेत्र पण अथिर छ तस सास चउका ॥ साहिबा० ॥ ४ ॥
थावर कुखगइ जाति पणिदि, पाप फरस दुरगंध एगिंदि ।
छत्तीस पयडिने वीशशुं जोडी, सबले सागर कोडाकोडि॥सा ॥५॥
आहारक दुग जिननाम करंतो, सागर एक कोडाकोडि अंतो ।
जो जिननाम निकाचित कीजे,
तो शुभ वीर हुवे भव त्रीजे ॥ साहिबा० ॥ ६ ॥
॥ काव्यम् ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमनात्म० ॥ २ ॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिकरं तिमिरं हरं, जगतिमङ्गलकारणमान्तरम् ॥१॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतंगसमुहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहस सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ रपमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरामृत्यु-निवारणाय श्रीमतेवीरजिनेन्द्राय नामकर्मस्थितिबन्धनिवारणाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

पञ्चम अक्षतपूजा—पूजाष्टक पद्य

दोहा

वन्न चउ तेअ कम्मण, अगुरुलघु निर्माण।
उपघात नव भुववंधी छे, अडवन अभुवा जाण ॥ १ ॥

ढाल, त्रीजे भव वर थानक तप करी, ए देशी

अक्षत पूजा जिननी करतां, नाम कर्म क्षय जावे।
नामनी सर्वे अघाती पयडि, वरते निज निज भावे रे॥
प्राणी ! अरूपी गुण निपजावो।
पूज्यनी पूजा रचावो रे प्राणी ! अरूपी गुण निपजावो ॥१॥
थावर चउ आतप छेवठ्ठुं, हुंड निरय दुग जाणुं।
इग दुति जाति जीउ बांधे, पामी प्रथम गुणठाणुं रे।
प्राणी ! अरूपी० ॥ २ ॥
मज्झागिइ संघयण तिरि दुग, दोहग तिग उद्योत।
अशुभ विहायोगति सास्वादन, बंध कहे भगवंत रे ॥प्राणी०॥३॥
मणुअ उरल दुग धुर संघयण, चोथे बंध कहावे।
अजस अथिर दुग छठ्ठे बंधे, दशमे जस बंधावे रे ॥प्रा०॥४॥
अगुरुलघु चउ जिन निरमाण, सुर दुग सुहगइ कहीए रे।
तस नव उरल विणु तणु अंगा, वर्णादिक चउ लहीए रे।
प्राणी ! अरूपी० ॥ ५ ॥

सम चउरस पणिंदि जाति चांधे अड गुणठाणे ।
चंघहेतु शुभ वीर खपावे, उज्वल ध्यानने टाणे रे ॥प्रा०वी॥६॥

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोक्षतमंडलम् ।
क्षतविनिर्मितदेहनिवारणं, भव पयोधिसमुद्धरणोद्यतम् ॥ १ ॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलेर्विपुलंदोषविशोधकमङ्गलेः ।
अनुपरोधसुवोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नामकर्मबन्धनिवारणाय
अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक षष्ठं

दोहा

चउ वन्ना तेअ कम्मण, निमिण अथिर थिर दोय ।
अगुरु लघु ध्रुव उदयिनी, शेष अध्रुव ते जोय ॥ १ ॥

ढाल, देखो गति दैवनी रे—ए देशी.

नैवेद्य पूजा भाविये रे, पुद्गल आहार ग्रहंत ।
भाग असंखे आहारता रे, निर्जरे भाग अनंत ॥
जगत गुरु आपजो रे, आपजो पद अणाहार ॥जगत०॥१॥

एह रीते दूरे हुवे रे, नाम उदय जप जाय ।
सुहुम तिगायव धुर गुणे रे, उदय कहे जिनराय ॥ज०॥२॥
बीजे विगल इग थावरु रे, चोथे अणाइज्ज दोय ।
पूर्वी दुहग वैक्रिय दुगे रे, देव निरय गति जोय ॥ज०॥३॥
तिरि गई उद्योत पांचमे रे, छट्ठे आहारक दोय ।
चरम संहयण तिग सातमे रे, ऋषभ दुग उपशमे होय ॥ज०॥४॥
उरल अथिर खगइ दुगा रे, पतेय तिग च संठाण ।
तेअ कम्म धुर संघयणने रे, अगुरुलघु चउ जाण ॥ज०॥५॥
दुसर सुसर चउ वन्ना रे, निर्माण उदय सयोगी ।
सुभगाइज्ज जस तस तिगो रे, नरगइ पणिंदि अयोगी ॥ज०॥६॥
जो जिननाम उदय हुवे रे, तो तीर्थंकर लीध ।
योग निरोध करी हुआ रे, श्री शुभवीर ते सिद्ध ॥ज०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्वतिबुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते बत ढौकय चेतसा॥१॥
कुमत बोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ।
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नामकर्मोदयविच्छेदनाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा—पूजाष्टक षष्ठ

दोहा

आहारक सग जिण नरदुग, वैक्रियनी अगीयार ।
ए अध्रुव सत्ता कही, बीजी ध्रुव संसार ॥ १ ॥

ढाल, प्रभाते ऊठीने माता मुखडुं जोवे–ए देशी

आवी रूडी भगति में पहेलां न जाणी ।
पहेलां न जाणी रे स्वामी, पहेलां न जाणी ।
संसारनी मायामां में वलोव्युं पाणी ॥ आवी० रूडी० ॥१॥
कल्पतरुनां फल लावीने, जे जिनवर पूजे ।
काल अनादि कर्म ते संचित, सत्ताथी ध्रुजे ॥ आवी० ॥२॥
थावर तिरि निरयायव ए दुग, इग विगला लीजे ।
साधारण नवमे गुणठाणे, धुर भागे छीजे ॥ आवी० ॥३॥
केवल पामी शिवगति गामी, शैलेशी ठाणे ।
चरम समय दो मांहे स्वामी, अंतिम गुणठाणे ॥ आवी० ॥४॥
बाकी नाम करमनी पयडि, सघली तिहां जावे ।
अजरामर निकलंक स्वरूपे, निष्कर्मा थावे ॥ आवी० ॥५॥
ते सिद्ध केरी पडिमा पूजे, सिद्धमयी होवे ।
नाही धोइ निर्मल चित्ते, आरिसो जोवे ॥ आवी० ॥६॥

कर्मसूदन तप केरी पूजा, फल ते नर पावे ।
श्री शुभवीर स्वरूपविलो की, शिववहू घर आवे ॥
॥ आवी रूडी भगति० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाधनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥ १ ॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ।
अहितदुःखहरं विभवप्रदं, समजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नामकर्मसत्ताविच्छेदनाय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो । त्रिशला माता पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो । तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ रयणसिंहसन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो । आचार दिनकरे वर्धमानसूरि, भवि उपगार रचायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ प्रवचन सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उज-

मणे निरमायो रे ॥महा०॥३॥ उजमणा थी तपफल वाधे,इम भाखे जिनरायो । ज्ञान गुरु उपकरण करावो, गुरुगम विधि विरचायो रे ॥महा०॥४॥ आठ दिवस मली चोसठ पूजा, नव नव भाव चनायो । नरभव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ केरो रायो । खुशालविजय गुमानविजय विबुधना, आग्रह थी विरचायो रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ वड़ ओसवाल गुमानचंद सुत, शासन राग सवायो । गुरुभक्ति शा भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥महा०॥७॥ मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रणें हुआ एक ठायो । करण करावण ने अनुमोदन, सरिखा फल निपजायो रे ॥महा०॥८॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध ठायो । कपूरविजय तस खिमाविजय जसविजय परंपर ध्यायो रे ॥महा०॥९॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरु मुझ, पामी तास पसायो । तास शिष्य धीरविजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥महा०॥१०॥ तस लघु बांधव राजनगर में, मिथ्यात्व पुंज जलायो । पंडित वीरविजय कवि रचना, संघ सकल सुख दायो रे ॥महा०॥११॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो । करता जेम नंदीश्वर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥मह०॥१२॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, पजावत घंटा करी ।
तव मोह पुंज समुह जलते, मांगते संग ठींकरी ॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें ।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र(१८७४)वर्ष विराजते ॥१॥

सप्तमं दिवसेऽध्यायनीय—गौत्रकर्मसूदनार्थं

सप्तमं पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ शक्कर का जल। २ चंदन और केशर। ३ फूल। ४ धूप। ५ दो वत्ती का दीपक। ६ गेहूँ और चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा—पूजाष्टक सप्तमं

दोहा

गोत्र कर्म हवे सातमुं, व्याप्युं इणे संसार।
गोत्र कर्म छेद्या विना, नवि पामे भव पार ॥ १ ॥
चक्र दंड संयोगथी, घडतो घट कुंभार।
घी भरियो घट एक में, बीजे मदिरा छार ॥ २ ॥
ऊंच नीच गोत्रे करी, भरियो आ संसार।
कर्म दहन करवा भणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल, राग—अलैयो—बिलावल में कीनो नहिं,
प्रभु विना ओरशुंराग, ए देशी

केसर वासित कनक कलशशुं, जलपूजा अभिषेक।
समकित रंगे सद्गुरु संगे, धरतो विनय विवेक ॥

में कीनो सही, या रीत गोतको बंध ।
या रीत गोतको बंध, में कीनो सही या रीत० ॥१॥
बहुश्रुत भक्ति करतां सघला, पूज्या युग परधान ।
गीतारथ एकाकी रहेता, पामे जग बहुमान ।में की०॥२॥
अज्ञानी टोले पण भोले, बोले पत्थर नाव ।
अलोयण देतो भद्रकने, पामे विराधक भाव ।में की०॥३॥
चौदगुरुने वाणे हणतो, पग अणफरसी राय ।
अज्ञानी मुनि उग्रविहारी, बाजीगरनो न्याय ।में की०॥४॥
मंडुआ श्रावक ने कहे स्वामी, होय जिनधर्म आशात ।
अणजाण्यो श्रुत अर्थ वदंतां, साची गुरुगम वात ।में की०॥५॥
ज्ञानी गुरुनी सेवा करतां, आराधे जिनधर्म ।
अणुव्रत धरतो तप अनुसरतो, निर्मल गुण ग्रहे धर्म ।में की०।६।
भणे भणावे वली जिन आगम, आशातन वरजंत ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर भक्ते, उत्तम गोत्र बाधंत ।में की०॥७॥

काव्य और मन्त्र

तीर्थोदकैर्मिश्रित चन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशीतै ।
जराजनिप्रांतरजोभि शान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥१॥
सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,-घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपयतीर्थकृत गुणवारिधिं,विमलता क्रियतां च निजात्मनः॥२॥
जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकला रमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय गोत्रकर्मबंध निवारणाय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा—पूजाष्टक सप्तमं

दोहा

ज्ञानादिक गुण नवि हणे, बंध उदयमां कोय ।
तिणे अघाती ते कही, गोत्रनी पयडि दोय ॥१॥

ढाल

प्रतिमा लोपे पापिया, योगवहन उपधान जिनजी—देशी

जिनतनु चंदन पूजतां, उत्तम कुल अवतार जिनजी ।
गोत्र वडे प्राणी वडो, मान लहे संसार जिनजी ॥
तुं सुखियो संसारमां ॥तुं०॥१॥
उत्तम कुलन उपन्या, सूत्रे कह्या अणगार जिनजी ।
वाचक सूरि पदवी लहे, उच्चगोत्र अवतार जिनजी ॥तुं०॥२॥
उग्र भोग वली राजवी, हरिवंशे जिनदेव जिनजी ।
वासव कल्पे आवता, चक्री हरि बलदेव जिनजी ॥तुं०॥३॥
नीच गोत्र थावर समा, मणि हीरा झलकंत जिनजी ।
गंगा क्षीरसमुद्रनां, यमुना जल वदंत जिनजी ॥तुं०॥४॥

कल्पतरु सहकारनां, केतकी पत्र ने फूल जिनजी ।
मंगल कारण शिर धरे, मंद पवन अनुकूल जिनजी ॥तुं०॥५॥
एम संसारे प्राणिया, उत्तम गोत्र विशेष जिनजी ।
मान लहे मघवा वली, बाहुबलि भरतेश जिनजी ॥तुं०॥६॥
धर्म रयणनी योग्यता, ऊंच गोत्रे कहाय जिनजी ।
श्री शुभवीर जिनेश्वरु, सिद्धारथ कुल जाय जिनजी ॥तुं०॥७॥

काव्य और मन्त्र

जिनपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवमीतिहृत् ।
सकलरोगवियोगविपद्धरं, कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१॥
सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिदायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय उच्चगोत्रातीताय, चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक सप्तम

दोहा

जिनवर फूले पूजतां, उच्च गोत्र बंधाय ।
उत्तम कुलमां अवतरी, कर्म रहित ते थाय ॥१॥

ढाल, सुण गोवालणी, गोरसडां, ए देशी

सुण दयानिधि !, उत्तम कुल अवतरतां पार न आव्यो ।
सद्गुरु मलये, तुल आगम अजवाले मुज समजाव्यो ॥
समकित संयुत व्रत आचरता, जिनपूजा फूल पगर भरता ।
श्रावक मुनि दशमुं गुण धरता, ऊंच गोत्र तणो बंधज करता ॥
॥ सुण दयानिधि० ॥ १ ॥

तुमे सत्ता उदये अनुभवियो, शैलेशीकरण करी खवियो ।
ते रस चखवी मुज हेलवियो, एक स्वामी जे नवि भेलवियो ॥
॥ सुण० ॥ २ ॥

एक समये एकज बंधाये, तेणे ए अध्रुवबंधी थाये ।
सत्तोदय अध्रुव कहेवाये, सुखिया थइये जब ए जाये ॥
॥ सुण० ॥ ३ ॥

लघुबंधे अड मुहुरत करियो, ऊंच गोत्रे गुरु ठिई आचरियो ।
दश कोडाकोडि सागरियो, दशसें वरसे भोगवी फरियो ॥
॥ सुण० ॥ ४ ॥

हवे में तुज आणा शिर धरियो, थइ अंत कोडाकोडि सागरियो ।
मोटो दरियो पण में तरियो, श्री शुभवीर प्रभु सेवन फलियो ॥
॥ सुण० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसा सुमनोगुणसङ्गिना, जन ! विधेहि निधेहि मनोऽर्चने॥ १॥

समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगबलेनवशीकृत, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय उच्चगोत्रस्थितिविच्छेदनाय, पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा—पूजाष्टक सप्तम

दोहा

पयडि दोय अघातिनी, गोत्र कर्मनी एह ।
नीच गोत्र कारण कहुँ, जे अनुभवियां तेह ॥ १ ॥

ढाल, गायो गौतम गोत्र मुणींद, रस वैराग्य घणो आयो,
ए देशी

जिनवर आगे पूजा धूप, धूप गति ऊंचे मात्री ।
पामी पंचेन्द्रियां रूप, नीच गति मुज केम आवी ॥१॥
कहीए कारण सुणजो देव, तुज आगम रस नवि माव्यो ।
न करी बहुश्रुत केरी सेव, अरुचिपणुं अंतर लाव्यो ॥२॥
भणे भणावे मुनिवर जेह, निंदा तेह तणी भाखी ।
परगुण ढांकी अवगुण लेह, कूडी वात तणो साखी ॥३॥
विण दीठी अणसांभली वात, लोक वच्चे चलवे पापी ।

चाडी करतां पाडी जाति, वाडी कुण तणी कापी ॥ ४ ॥
गुण अवगुण में सरिखां कीध, अरिहा भक्ति नवि कीधी ।
उत्तम कुल जाति प्रसिद्ध, वाह्यो मद गौरव गिद्ध ॥ ५ ॥
नीच ठाण सेवंतां नाथ, वंधे नीच गोत्र करीयो ।
श्री शुभवीर नो झेल्यो हाथ, सहेजे भव सागर तरियो ॥६॥

काव्य और मन्त्र

अगरुमुख्यमनोहर वस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना ।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नीचगोत्रबन्धस्थानोच्छेदनाय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकपूजा—पूजाष्टक सप्तम

दोहा

काग प्रसंगे हंस नृप, बाण प्राण परिहार ।
गंगाजल जलधि मले, नीच ठाण सुविचार ॥ १ ॥

ढाल, जुगटुं कोई रमशो नहिं रे, ए देशी

फानस दीपक ज्योति धरी रे, पूजा रचुं मनोहार ।
प्रभुजी ! नीच कुले हवे नहिं रहुं रे ॥
पूजा अरुचि भावे करी रे, नीच कुले अवतार ॥प्रभुजी०॥१॥
तुज आगल नवि दीप धर्यो रे, नापित हाथ मशाल ॥प्र०।
मातंग जुंगित जाति कही रे, काढे अशुचि खाल ॥प्र०॥२॥
माली गावालो कोली तेली रे, मोची ने शुचिकार ॥ प्र० ।
त्रण वनेचर पापीया रे, होय अफास विचार ॥ प्र० ॥ ३ ॥
वणीमग माहण रांक कुली रे, भिक्षुक कुल अवतार ॥ प्र० ।
जिन दर्शन नवि शिर नमे रे, ते शिर वहेता भार ॥प्र०॥४॥
गर्दभ जंबुक नीच तिरि रे, किल्विषिया जे देव ॥ प्र० ।
अड्ड दिये सुर आगले रे, परभव निंदक टेव ॥ प्र० ॥ ५ ॥
जीव मरीचि कुल मदथी रे, विप्र त्रिदंडिक थाय ॥ प्र० ।
श्री शुभ वीर जिनेश्वरु रे, देवानंदा घर जाय ॥ प्र० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिकरं तिमिरहरं जगति मङ्गलकारणमान्तरम् ॥ १ ॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतंगसमूहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नीचगोत्रोदयनिवारणाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा—पूजाष्टक सप्तम

दोहा

नीच कुलोदय जिनमति, दूर थकी दरवार ।
तुज मुख दर्शन देखतां, लोक वडो व्यवहार ॥ १ ॥

ढाल, वंदो वीर जिनेश्वर राया, ए देशी

अक्षत पूजा गोधूम केरी, नीच गोत्र विखेरी रे ।
तुज आगम पुर सुंदर शेरी, वक्र नहीं भव फेरी रे ॥
अक्षत पूजा गोधूम केरी ॥ अ० ॥ १ ॥

सासायण लगे वंध कहावे, पांचमे उदये लावे रे ।
गुणठाणु जब छठ्ठं आवे, उदयथी नीच खपावे रे ॥अ०॥२॥

हरिकेशी चंडाले जाया, संयमवर मुनिराया रे ।
नीच गोत्र उदयेथी पलाया, ऊंच कुले श्रुत गाया रे ॥अ०॥३॥

समय अयोगी उपांते आवे, सत्ता नीच खपावे रे ।
अध्रुवबंधी उदय कहावे, ध्रुवसत्ता तिरिभावे रे ॥अ०॥ ४ ॥

सातइया दोय भाग लघेरी, जीव विपाकी वडेरी रे ।

कोडाकोडि सागर केरी, ए थितिबंध घणेरी रे ॥अ०॥ ५ ॥
ए थितिबंध करतां स्वामी, तुम सेवा नवि पामी रे ।
श्री शुभ वीर मल्या विशरामी,हवे केम राखुं स्वामी रे ॥अ०६॥

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोऽक्षतमंडलम् ।
क्षतविनिमितदेहनिवारणं, भवपयोधिसमुद्धरणोद्यतम् ॥ १॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैर्विपुलदोषविशोधकमङ्गलैः ।
अनुपरोधसुबोधविधायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नीचगोत्रसत्तास्थितिबन्ध निवारणाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥

सप्तम नैवेद्यपूजा–पूजाष्टक सप्तम

दोहा

नैवेद्य पूजा सातमी, सात गति अपमान ।
करवा वरवा शिवगति, विविध जाति पकवान ॥ १ ॥

ढाल, राग सारंग, हम मगन भये प्रभु ध्यानमें, ए देशी

मीठाइ मेवा जिनपद धरतां, अणाहारी पद लीजिये ।
जिनराजनी पूजा कीजिये ॥

विग्रह गतिमां वार अनंती, पामे पण नवि रीझीये ॥जिन०॥१॥
ऊंच नीच गोत्रे ते होवे, कारण दूर करीजीए ॥जिन०।
अरिहा आगे रागे मागो, सेवकने शिव दीजीए ॥जिन०॥२॥
अगुरुलघु पद गोत्र विनाशी, पाम्वा बंधन छीजीए ॥जिन०।
योगी वियोगी रहत आयोगी, चरम तिभाग घटीजीए॥जिन० ३॥
आत्म प्रदेशमयी अवगाहन, शिवक्षेत्रे ते रहीजीए ॥जिन०।
बत्रीश अंगुल लघु अवगाहन, क्षेत्र समी गुरु लीजीए ॥जि०४॥
मस्तक सम सघले लोकांते, गुरुगम भाव पतीजीए ।जिन०।
अगुरुलघु अवगाहना एके, सिद्ध अनंत नमीजीए ॥जिन०५॥
फरसित देश प्रदेश असंखह, गुण अनंत ठवीजीए ॥जिन०।
श्री शुभ वीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीए ॥जिन०६॥

काव्य और मन्त्र

अनशनं तु ममास्त्वितिबुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते बत ढौकय चेतसा ॥१॥
कुमतबोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ।
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अगुरुलघुगुणप्रापणाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा—पूजाष्टक सप्तम

दोहा

गोत्र कर्म नाशे करी, सिद्ध हुआ महाराज ।
फल पूजा तेहनी करी, मागो अविचल राज ॥ १ ॥

ढाल, केरवानी देशी

में भी सेवक तेरे पायका,
दुनिया के सांइ ! में भी सेवक तेरे पायका ।
सेवक हम केइ कालका, दुनिया के सांइ ! में भी सेवक० ॥
सुणिये देवाधिदेवा, फलपूजाकी सेवा,
दीजीये शिवफल राजीए ।।दुनियां के सांइ ! में भी० ।
परिशाटन थइ, अपुनमाण गइ,
जीत्यो जगत केरी बाजीये ।।दुनिया के सांइ ! ॥१॥
गोत्र करम हरी, ज्योतसें ज्योत मली,
आप विराजो रंग महेलमें ।।दुनिया के सांइ ! में भी० ।
सुख अनंत लहे, सेवक दूर रहे,
लाजिये अमो सारा शहेरमें ।।दुनिया के सांइ ! में भी०।।२।।
संसार सुख लीयो, कग अनंत कीयो,
तो भी न एक प्रदेशमें ।।दुनिया के सांइ ! में भी० ।

सिद्ध को सुख लीयो, ताका एकांश कीनो,
मावे न लोकाकाशसे ।।दुनियाके सांइ ! में वी०।।३।।
चाको जो अंश देवे, तामें क्या हानि होवे,
साहिब गरीब नीवाजीये ।।दुनियाके सांइ ! में वी० ।
महेर नजर जोवे, सेवक काम होवे,
लोक लोकोत्तर छाजीये ।।दुनियाके सांइ ! में वी०।।४।।
कर्म कठिन जड्यो, सांयुंके मुख चड्यो,
वात करत हम लाजीये ।।दुनियाके सांइ ! में वी० ।
आप ही तेजे गायो, कर्म पडल छायो,
इतनो अंतर भांजिये ।।दुनियाके सांइ ! में वी०।।५।।
श्रेणिक आदे नवा, ओ वी सांयुकी सेवा,
जिनपद लेत विराजिये ।।दुनियाके सांइ ! में वी० ।
साची भगति कही, कारण योग सही,
कारज कोडी दीवाजिये ।।दुनियाके सांइ ! में वी०।।६।।
कर्मसूदन तपे, नाम प्रभुको जपे,
जागीये ज्ञान अवाजिये ।।दुनियाके सांइ ! में वी० ।
कोइ न नाम लेवे, स्वामी आशिष देवे,
श्री शुभवीर बले गाजियें ।।दुनियाके सांइ ! में वी०।।७।।

काव्य और मन्त्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ।। १ ।।

शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवास्यफ़नैरभयप्रदैः ।
अहितदुःखहर विभवप्रदं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय गौवातीताय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश—राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो । त्रिशला माता पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो । तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ रयणसिंहासन वेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो । आचारदिनकरे वर्धमान सुरि, भवि उपगार रचायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ प्रवचन सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो । दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ उजमणा थी तप फल वाधे, इम भाखे जिनरायो । ज्ञान गुरु उपगरण करावो, गुरूगमविधि विरचायो रे ॥महा० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मली चोसठ पुजा, नव नव भाव बनायो । नरभव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे ॥ महा० ॥ ॥ ५ ॥ विजय जिनेन्द्रसूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ केरो रायो । खुशालविजय मानविजय विबुधना, आग्रह थी विरचायो रे

॥ महा० ॥ ६ ॥ वड़ ओसवाल गुमानचंद सुत, शासन राग सवायो । गुरुभक्ति शा भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रण हुआ एक ठायो । करण करावण ने अनुमोदन, सरिखा फल निपजायो रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ श्री विजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध ठायो । कपूरविजय तस खिमा-विजय जसविजय परंपरध्यायो रे ॥ महा० ॥ ९ ॥ पंडित श्री शुभविजय सुगुरू मुझ, पामी तास पसायो । तास शिष्य धीरविजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥ महा० ॥१०॥ तस लघु बांधव राजनगर में मिथ्यात्व पुंज जलायो । पंडित वीरविजय कवि रचना, संघ सकल सुखदायो रे ॥ महा० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो । करता जेम नंदीसर देवा, पुरण हर्ष सवायो रे ॥ महा० ॥ १२ ॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, बजावत घंटा करी ।
तव मोह पुंज समूल जलते, भागते संग ठींकरी ॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें ।
शुभ वीर विक्रम वेद मुनि वसु, चन्द्र(१८७४)वर्ष विराजते॥१॥

अष्टमदिवसेऽध्यापनीय—अंतरायकर्मसूदनार्थं

अष्टम पूजाष्टकम्

(इस पूजा में आवश्यक वस्तुओं के नाम)

१ पंचामृत। २ केशर। ३ मालती और जाई के फूल। ४ धूप। ५ दो बत्ती का दीपक एक एक दीपक १५८ बत्ती का। ६ चांवल। ७ नैवेद्य। ८ फल।

प्रथम जलपूजा

पूजाष्टक अष्टम

दोहा

श्री शंखेश्वर शिर धरी, प्रणमी श्री गुरु पाय ।
वंछित पद वरवा भणी, टालीशुं अंतराय ॥ १ ॥
जेम राजा रीझ्यो थको, देतां दान अपार ।
भंडारी खीज्यो थको, वारंतो तेणी वार ॥ २ ॥
तेम ए कर्म उदय थकी, संसारी कहेवाय ।
धर्म करम साधन भणी, विघन करे अंतराय ॥ ३ ॥
अरिहाने अवलंबने, तरिये इणे संसार ।
अंतराय उच्छेदवा, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ४ ॥

ढाल, मारी अवाना वडला हेठ, भर्यां सरोवर लहेर्यां छेरे,

ए देशी

जल पूजा करी जिनराज, आगल वात वीती कहो रे ।
कहेतां नविआणो लाज, कर जोडीने आगल रहो रे ॥ज०॥१॥
जिनपूजानो अंतराय, आगम लोपी निंदा भजी रे ।
विपरीत प्ररूपणा थाय, दीन तणी करुणा तजी रे ॥ज०॥२॥
तपसी न नम्या अणगार, जीव तणी में हिंसा सजी रे ।
नवि मलियो आ संसार, तुम सरिखो श्री नाथजीरे ॥ज०॥३॥
रांक उपर कीधो कोप, माठां कर्म प्रकाशियां रे ।
धर्म मारगनो लोप, परमारथ केतां हांसियां रे ॥ज०॥४॥
भणताने कर्यो अंतराय, दान दीयंतां में वारिया रे ।
गीतारथने हेलाय, जूठ बोली धन चोरियां रे ॥ज०॥५॥
नर पशुआं बालक दीन, भूख्या राखी आपे जम्यो रे ।
धर्म वेलाए बलहीन, परदाराशुं रंगे रम्यो रे ॥ज०॥६॥
कूडे कागलिये व्यापार, थापण राखीने ओलवी रे ।
वेच्यां परदेश मोझार, बाल कुमारिका भोलवी रे ॥जल०॥७॥
पंजरिये पोट दीध, केती वात कहुं घणी रे ।
अंतराय करम एम कीध, ते सवि जाणो छो जग धणी रे ॥ज०॥८॥
जले पूजंती द्विजनारी, सोमसिरी मुगति वरी रे ।
शुभवीर जगत आधार, आणा में पण शिर धरी रे ॥ज०॥९॥

तीर्थोदकैर्मिश्रितचन्दनौघः, संसारतापाहतये सुशीतैः ।
जराजनिप्रातरजोभि शान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥१॥

सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,—र्घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ।
स्नपयतीर्थकृतां गुणवारिधिं,विमलता क्रियतां च निजात्मनः॥२॥

जनमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय विघ्नस्थानोच्छेदनाय
जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

शीतल गुण जेमा रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग ।
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग ॥ १ ॥

अंग विलेपन पूजना, पूजो धरी घनसार ।
उत्तर पयडि पचमां, दान विघन परिहार ॥ २ ॥

ढाल, कामणगारो ए कूकडो रे—ए देशी

करपी भुंडो संसारमां रे, जेम कपिला नार ।
दान न दीधुं मुनिराजने रे, श्रेणिकने दरबार ॥करपी०॥१॥
करपी शास्त्र न सांभले रे, तेणे नवि पामे धर्म ।
धर्म विना पशु प्राणीया रे, छंडे नहिं कुकर्म ॥करपी०॥२॥
दान तणा अंतरायथी रे, दान तणो परिणाम ।
नवि पामे उपदेशथी रे, लोक न ले तस नाम ॥करपी०॥३॥
कृपणता अति सांभली रे, नावे घर अणगार ।
विश्वासी घर आवता रे, कल्पे मुनि आचार ॥करपी०॥४॥
करपी लक्ष्मीवंतने रे, मित्र सज्जन रहे दूर ।
अल्पधनी गुण दानथी रे, वंछे लोक पंडुर ॥करपी०॥५॥
कल्पतरु कनकाचले रे, नवि करता उपकार ।
तेथी मरुधर रूडो केरडो रे, पंथग छांय लगार ॥करपी०॥६॥
चंदन पूजा धन वावरे, क्षग उपशम अंतराय ।
जिम जयसुर ने शुभमति रे, क्षायिक गुण प्रगटाय ॥क०॥७॥
श्रावक दान गुणे करी रे, तुंगीया भंग दुवार ।
श्री शुभवीरे वखाणीयारे, पंचम अंग मझार ॥करपी०॥८॥

काव्य और मंत्र

जिनपतेर्वरगन्धसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवभीतिहृत् ।
सकलरोगवियोगविपद्धरं, कुरु करेण सदा निज पावनम्॥१॥

सहज कर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासनचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिदायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय दानान्तरायनिवारणाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

हवे त्रीजी सुमनस तणी, सुमनस करण स्वभाव ।
भाव सुगंध करण भणी, द्रव्य कुसुम प्रस्ताव ॥ १ ॥
मालती फूले पूजती, लाभ विघन करी हाण ।
वणिक सुता लीलावती, पामी पद निरवाण ॥ २ ॥

ढाल

ओरा ओरा जी आवो रे, कहुं एक वातलडी—ए देशी

मन मंदिर आवो रे, कहुं एक वातलडी ।
अज्ञानीनी संगे रे, रमियो रातलडी ॥ मन० ॥ १ ॥
व्यापार करेवा रे, देश विदेश चले ।
पर सेवा हेवा रे, कोडी न एक मले ॥ मन० ॥ २ ॥
राजगृही नगरे रे, द्रुमक एक फ ।
भिक्षाचर वृत्तिए रे, दुःखे पेट भरे ॥ मन० ॥ ३ ॥

लाभ अंतराये रे, लोक न तास दीये ।
शिला पाडंतो रे, पोहोतो सातमीये ॥ मन० ॥ ४ ॥
ढंढण अणगारो रे, गोचरी नित्य फरे ।
पशुआं अंतराये रे, आहार विना विचरे ॥ मन० ॥ ५ ॥
आदीश्वर साहिब रे, संयम भाव धरे ।
वरसीतप पारणुं रे, श्रेयांस राय घरे ॥ मन० ॥ ६ ॥
मिथ्यात्वे वाह्यो रे, आरत ध्यान करे ।
तुज आगम वाणी रे, समकिती चित्त धरे ॥ मन० ॥ ७ ॥
जेम पुणियो श्रावक रे, संतोष भाव धरी ।
नित्य जिनवर पूजे रे, फूलना पगर भरी ॥ मन० ॥ ८ ॥
संसारे भमतां रे, हुं पण आवी भल्यो ।
अंतराय निवारक रे, श्री शुभवीर मल्यो ॥ मन० ॥ ९ ॥

काव्य और मंत्र

सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रभुपूजनम् ।
सुमनसां सुमनोगुणसङ्गिना, जन ! विधेहि निधेहि मनोर्चने ॥१॥
समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगबलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय लाभान्तरायनिवारणाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

कर्म कठिन कठ दाहवा, ध्यान हुताशन योग ।
धूपे जिन पूजी दहो, अंतराय जे भोग ॥ १ ॥
एक वार जे भोगमा, आवे वस्तु अनेक ।
अशन पान विलेपने, भोग कहे जिन छेक ॥ २ ॥

ढाल, राग—आशावरी, छडो नाजी—ए देशी

वाजी वाजी वाजी भूल्यो वाजी,
भोग विघन घन गाजी, भूल्यो वाजी ।
आगम ज्योत न ताजी भूल्यो०, कर्म कुटिल वश काजी ॥भू०॥
साहिब ! सुण थइ राजी ॥ भूल्यो वाजी०॥

काल अनादि चेतन रझले, एके बात न साजी ।
मयणा मइणी न रहे छानी, मलिया मात पिताजी ॥भू०॥१॥
अंतराय थानक सेवनथी, निर्धन गति उपराजी ।
छाकूपनी या कूप समावे, इच्छा तेम सवि भागी ॥भू०॥२॥
नैगम एक नारी धूती पण, घेवर मूख न भागी ।
जमी जमाइ पाछो वलियो, ज्ञानदशा तव जागी ॥भू०॥३॥
कम्ही कष्टे धनपति थावे, अंतराय फल आवे ।

रोगी परवश अन्न अरुचि, उत्तम धान्य न भावे ॥भू०॥४॥
क्षायिक भावे भोगनी लब्धि, पूजा धूप विशाला ।
वीर कहे भव सातमे सिध्या, विनयंधर भूपाला ॥भू०॥५॥

काव्य और मन्त्र

अगरुमुख्यमनोहरवस्तुना, स्वनिरूपाधिगुणौघविधायिना ।
प्रभुशरीरसुगन्धसुहेतुना, रचयधूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥
निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलप्रविकर्षणम् ।
विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते वीरजिनेन्द्राय भोगान्तरायदहनाय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

उपभोग विघन पतंगीयो, पडत जगत जोउ ज्योत ।
त्रिशलानंदन आगले, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥
भोगवी वस्तु भोगवे, ते कहिये उपभोग ।
भूषण चीवर वल्लभा, गेहादिक संयोग ॥ २ ॥

ढाल, राग फाफी, अरनाथकुं सदा मेरी वंदना, ए देशी

जिनराजकुं सदा मेरी वंदना ।
वंदना वंदना वंदना रे, जिनराजकुं सदा० ॥
उपभोग अंतराय हठावी, भोगी पद महानंदना रे ।जि०।
अतराय उदये संसारी, निर्धन ने परछंदना रे ॥जि०॥१॥
देश विदेशे घर घर सेवा, भीमसेन नरिंदना रे ।जि०।
सुणिय विपाक सुखी गिरनारे, हेलक तेह मुणिंदना रे ॥जि०॥२॥
बावीश वरस वियोगे रहेती, पवनप्रिया सती अंजना रे ।जि०।
नल दमयंती सती सीताजी, पद्मासी आक्रंदना रे ॥जि०॥३॥
मुनिवरने मोदक पडिलाभी, पछी करी घणी निंदना रे ।जि०।
श्रेणिक देखे पाउस निशिये, मम्मण शेठ विडंबना रे ॥जि०॥४॥
एम संसार विडंबन देखी, चाहुं चरण जिनचंदना रे ।जि०।
चकवी चाहे चित्त तिमिरारि, भोगी भ्रमर अरविंदना रे ॥जि०॥५॥
जिनमति धनसिरि दोय साहेली, दीपक पूजा अखंडना रे ।जि०।
शिव पामी तेम भवि पद पूजो, श्रीशुभवीर जिणंदना रे ॥जि०॥६॥

काव्य और मन्त्र

भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनम् ।
स्वतनुकान्तिकरं तिमिरं हरं, जगतिमङ्गलकारणमान्तरम् ॥१॥
शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकैर्ज्वलितपापपतङ्गसमूहकैः ।
स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमतेवीरजिनेन्द्राय तुर्यबन्धनोच्छेदनाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठम अक्षतपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

वीर्य विघन घन पडलसें, अवराणु रवि तेज ।
काल ग्रीष्म सम ज्ञानथी, दीपे आतम सतेज ॥ १ ॥
अक्षत शुद्ध अखंडशुं नंदावर्त विशाल ।
पूरी प्रभु सन्मुख रही, सुणीये जगत दयाल ॥ २ ॥

ढाल, सफल भई मेरी आजुकी घडियां–ए देशी

जिणंदा प्यारा मुणिंदा प्यारा, देखोरी जिणंदा भगवान ।
देखोरी जिणंदा प्यारा ॥
चरम पयडिको मूल विखरियां, चरम तीरथ सुलतान ।दे०।
दर्शन देखत मगन भये है, मांगत क्षायिक दान ॥दे०॥१॥
पंचम विघनका क्षय उपशमसें, होवत हम नहीं लीन ।दे०।
पागल बलहीणा दुनियामें, वीरो सालवी दीन ॥दे०॥२॥
हरि बल चक्री शक्र ज्युं बली ए, निर्बल कुल अवतार ।दे०।
बाहुबलि बल अक्षय कीनो, धन धन वालीकुमार ॥दे०॥३॥

सफल भयो नर जन्म हमेरो, देखत जिन देदार ।दे०।
लोहचमकज्युं भगतिसें हलिये, पारस सांइ विचार ।।दे०।।४।।
कीर युगल ब्रीहि चंचुमें घरते, जिन पूजत भये देव ।दे०।
अक्षतसें अक्षत पद देवे, श्री शुभवीर की सेव ।।दे०।।५।।

काव्य और मन्त्र

क्षितितलेऽक्षतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोऽक्षतमण्डलम् ।
क्षतविनिर्मितदेहनिवारणं, भवपयोधिसमुद्धरणोद्यतम् ॥ १ ॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैर्विपुलदोषविशोधकमङ्गलैः ।
अनुपरोधसुबोधविधायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय वीर्यान्तरायदहनाय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्यपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

निर्वेदी आगल धरो, शुचि नैवेद्यनो थाल ।
विविध जाति पकवानशुं, शालि अमूलक दाल ॥ १ ॥
अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइअ अनंत ।
दूर करी एम कीजीए, दियो अणाहारी भदंत ॥ २ ॥

ढाल, राग काफी अखियनमें गुलकारा—ए देशी

अखियनमें अविकारा, जिनंदा तेरी अखियनमें अविकारा ॥

राग द्वेष परमाणु निपाया, संसारी सविकारा ।जि०।
शांतरुचि परमाणु निपाया, तुज मुद्रा मनोहारा ॥जि०॥१॥
द्रव्य गुण पर्याय ने मुद्रा, चउगुण चैत्य उदारा ।जि०।
पंच विघन घन पडल पलाया, दीपत किरण हजारा ॥जि०॥२॥
कर्म विनाशी सिद्ध स्वरूपी, इगतीस गुण उपचारा ।जि०।
वरणादिक वीश दूर पलाया, आगइ पंच निवारा ॥जि०॥३॥
तीन वेदका छेद कराया, संग रहित संसारा ।जि०।
अशरीरी भव बीज दहाया, अंग कहे आचारा ॥जि०॥४॥
अरूपी पण रूपारोपणसें, ठवणा अनुयोगद्वारा ।जि०।
विषम काल जिनबिंब जिनागम, भवियणकुं आधारा ॥जि०॥५॥
मेवा मिठाई थाल भरीने, पट्रस भोजन सारा ।जि०।
मंगल तूर बजावत आवो, नर नारी कर थारा ॥जि०॥६॥
नैवेद्य ठवी जिन आगे मागो, हलि नृप सुर अवतारा ।जि०।
टाली अनादि आहार विकारा, सातमे भव अणाहारा ॥जि०॥७॥
सगविह शुद्धि सातमी पूजा, सग गइ सग भय हारा ।जि०।
श्री शुभवीर विजय प्रभु प्यारा, जिन आगम जयकारा॥जि०॥८॥

काव्य और मंत्र

अनशनं तु ममास्त्वतिबुद्धिना, रुचिकरभोजनसंचितभोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे, शुभमते वत ढौकय चेतसा ॥१॥

कुमत बोधविरोधनिवेदकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ।
निरशनैः प्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय सिद्धपदप्रापणाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा—पूजाष्टक अष्टम

दोहा

अष्ट कर्म दल चूरवा, आठमी पूजा सार ।
प्रभु आगल फल पूजतां, फलथी फल निरधार ॥१॥

इंद्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग ।
पुरुषोत्तम पूजा करी, मागे शिवफल त्याग ॥२॥

ढाल, राग धन्याश्री गिरुआ रे गुण तुम तणा—ए देशी

प्रभु तुज शासन अति भलुं, माने सुर नर राणो रे ।
मिच्छ अभव्य न ओलखे, एक अंधो एक काणो रे ॥प्र०॥१॥

आगम वयणे जाणीए, कर्म तणी गति खोटी रे ।
तीस कोडाकोडि सागरु, अंतराय थिति मोटी रे ॥प्र०॥२॥

ध्रुव बंधी उदयी तथा, ए पांचे ध्रुव सत्ता रे ।
देशघातिनी ए सही, पांचे अपरियत्ता रे ॥प्र०॥३॥

संपराय बंधे कही, सत्ता उदये थाकी रे।
गुणठाणुं लही बारमुं, नाठी जीव विपाकी रे ॥प्रभु०॥४॥
ज्ञान महोदय तें वर्यो, ऋद्धि अनंत विलासी रे।
फलपूजा फल आपीए, अमे पण तेहना आशी रे ॥प्रभु०॥५॥
कीर युगलशुं दुर्गता, नारी जेम शिव पामी रे।
अमे पण करशुं तेहवी, भक्ति न राखुं खामी रे ॥प्रभु०॥६॥
साची भक्ते रीझवी, साहिब दिलमां धरशुं रे।
उत्सव रंग वधामणां, मनवांछित सवि करशुं रे ॥प्रभु०॥७॥
कर्मसूदन तप तरु फले, ज्ञान अमृत रस धारा रे।
श्री शुभवीर ने आशरे, जगमां जय जयकारा रे ॥प्रभु०॥८॥

काव्य और मंत्र

शिवतरोः फलदानपरैर्नवैर्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम्।
त्रिदशनाथनतक्रमपङ्कजं, निहतमोहमहीधरमण्डलम् ॥१॥
शमरसैकसुधारसमाधुरैरनुभवाख्यफलैरभयप्रदैः ।
अहितदुःखहरं विभवप्रदं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अष्टमकर्मोच्छेदनाय फलानि

कलश

राग धन्याश्री, तुठो तुठो रे-ए देशी

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥

त्रिशला माता पुन नगीनो, जगनो तात कहायो ।
तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥१॥

रमण सिंहासन बेसी चउमुख, कर्मसूदन तप गायो ।
आचार दिनकरे वर्धमान सूरि, भवि उपगार रचायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥२॥

प्रवचन सारोद्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो ।
दिन चउसट्ठि प्रमाणे ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥३॥

उजमणाथी तपफल वाधे, इम भाखे जिनरायो ।
ज्ञान गुरु उपकरण करावो, गुरुगम विधि विरचायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥४॥

आठ दिवस मली चोसठ पूजा, नव नव भाव बनायो ।
नरभव पामी लाहो लीजे, पुण्ये शासन पायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥५॥

विजयजिनेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, तपगच्छ केरो रायो ।

खुशालविजय मानविजय विबुधना, आग्रहथी विरचायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ ६ ॥

वड ओसवाल गुमानचंद सुत, शासन राग सवायो ।
गुरुभक्ति शा भवानचंद नित्य, अनुमोदन फल पायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ ७ ॥

मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रणे हुआ एक ठायो रे ।
करण करावण ने अनुमोदन, सरिखां फल निपजायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ ८ ॥

श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध गायो ।
कपूरविजय तस खिमाविजय जसविजय परंपर ध्यायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ ९ ॥

पंडित श्री शुभविजय सुगुरु मुज, पामी तास पसायो ।
तास शिष्य धीरविजय सलुणा, आगम राग सवायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ १० ॥

तस लघु बांधव राजनगर में, मिथ्यात्व पुंज जलायो ।
पंडित वीरविजय कवि रचना, संघ सकल सुख दायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ ११ ॥

पहेलो उत्सव राजनगर में, संघ मली समुदायो ।
करता जेम नंदीश्वर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥
॥ महावीर जिनेश्वर गायो ॥ १२ ॥

कवित्त

श्रुत ज्ञान अनुभव तान मन्दिर, चत्रावत घंटा करी।
तव मोह पुंज समुह जलते, मांगते संग ठोंकरी ॥
हम राजते जग गाजते दिन, अक्षय तृतीया आज थें।
शुभवीर विक्रम वेद मुनि वसु,चन्द्र(१८७४)वर्षविराजते ॥१॥

श्री पंचकल्याणक पूजा

च्यवन कल्याणक प्रथम पुष्पपूजा[1]

दोहा

श्री शंखेश्वर साहिबो, सुरतरु सम अवदात ।
पुरिसादाणी पासजी, षडदर्शन विख्यात ॥ १ ॥
पंचमे आरे प्राणिया, समरे ऊठी सवार ।
वांछित पूरे दुःख हरे, वंदुं वार हजार ॥ २ ॥
अवसर्पिणी त्रेवीशमा, पार्श्वनाथ जब हुंत ।
तस गणधर पद पामीने, थाशो शिववधू कंत ॥ ३ ॥
दामोदर जिन मुख सुणी, निज आतम उद्धार ।
तदा आषाढी श्रावके, मूर्ति भरावी सार ॥ ४ ॥
सुविहित आचारज कने, अंजनशलाका कीध ।
पंच कल्याणक उत्सवे, मानुं वचन ज लीध ॥ ५ ॥
सिद्ध स्वरूप रमण भणी, नौतमपडिमा जेह ।
थापी पंचकल्याण के, पूजे धन्य नर तेह ॥ ६ ॥
कल्याणक उत्सव करी, पूरण हर्ष निमित्त ।
नंदीश्वर जइ देवता, पूजे शाश्वत चैत्य ॥ ७ ॥
कल्याणक पूजन सहित, रचना रचशुं तेम ।

---

१ इस पूजा की विधि पृष्ट-७८ पर लिखी है ।

दुर्जन विषधर डोलशे, सज्जन मनशुं प्रेम ॥ ८ ॥
कुसुम फल अक्षत तणी, जल चंदन मनोहार ।
धूप दीप नैवेद्यशुं, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ६ ॥

ढाल, प्रथम पूरव दिशे, ए देशी

प्रथम एक पीठिका, झगमगे दीपिका;
थापी प्रभु पास ते ऊपरे ए ।
रजत रकेबीओ, विविध कुसुमे भरी;
हाथ नर नारी धरी उच्चरे ए ॥ १ ॥
कनकबाहु भवे, बध जिननामनो;
करिय दशमे देवलोक वासी ।
सकल सुरथी घणी, तेज कान्ति भणी;
वीश सागर सुख ते विलासी ॥ २ ॥
क्षेत्र दश जिनवरा, कल्याणक पांचसें;
उत्सव करत सुर साथशुं ए ।
थईय अग्रेसरी, सासय जिन तणी;
रजत पूजा निज हाथशुं ए ॥ ३ ॥
योगशास्त्रे मता, मास षट् थाकतां;
देवने दुःख बहु जातिनुं ए ।
ते नवि नीपजे, देव जिनजीवने;
जीवतां ठाण उतपातनुं ए ॥ ४ ॥

मुक्तिपुर मारगे, शीतल छांयडी;
तीर्थनी भूमि गंगाजले ए।
चैत्य अभिषेकता, सुकृत तरु सिंचता;
भक्ते घहुला भवि भव तरे ए ॥ ५ ॥
वारण ने असी, दोय वचमां वसी;
काशी वाराणसी नयरीये ए।
अश्वसेन भूपति, वामा राणी सती;
जैनमति रति अनुसारीये ए ॥ ६ ॥
चार गति चोपडा, च्यवनना चूकवी;
शिव गया तास घर नमन जावे।
बालरूपे सुर तिहां, जननी मुख जोवतां;
श्री शुभवीर आनंद पावे ॥

काव्यम्-उपजाति वृत्तम्

भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पातालपदे नियोगी।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः स पार्श्वः ॥१॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥

च्यवन कल्याणक द्वितीय फलपूजा

दोहा

कृष्ण चतुर्थी चैत्रनी, पूर्णायु सुर तेह ।
वामा मात उदर निशि, अवतरिया गुणगेह ॥ १ ॥
सुपन चतुर्दश मोटकां, देखे माता ताम ।
रमणी समे निज मंदिरे, सुखशय्या विश्राम ॥ २ ॥

ढाल, मिथ्यात्व वामीने कोइया समकित पामी रे, ए देशी

रूडो मास वसंत फली वनराजी रे, रायण ने सहकार वाला ।
केतकी जाइ ने मालती रे, भ्रमर करे झंकार वाला ॥
कोयल मदहर टहुकती रे, बेठी आंबाडाल वाला ।
हंस युगल जल झीलतां रे, विमल सरोवर पाल वाला ॥
मंद पवननी लहेरमां रे, माता सुपन निहाल वाला ।
(ए आंकणी)
दीठो प्रथम गज उज्वलो रे, बीजे वृषभ गुणवंत वाला ।
त्रीजे सिंह ज केसरी रे, चोथे श्रीदेवी महंत वाला ॥
मालयुगल फूल पांचमे रे, छट्ठे रोहिणीकंत वाला ।
ऊगतो सूरज सातमे रे, आठमे ध्वज लहकंत वाला ॥रु०॥१॥
नवमे कलश रूपा तणो रे, दशमे पद्मसर जाण वाला ।
अग्यारमे रत्नाकर रे, बारमे देवविमान वाला ॥

गंज रत्ननो तेरमे रे, चउदमे वह्नि वखाण वाला ।
ऊतरतां आकाशथी रे, पेखतां वदन प्रमाण वाला ॥रु०॥१॥
माता सुपन लही जागीया रे, अवधि जुवे सुरराज वाला ।
शक्रस्तव करी वंदीया रे, जननी उदर जिनराज वाला ॥
एणे समे इन्द्र ते आवीया रे, मा आगल धरी लाज वाला ।
पुण्यवती तुमे पामीयुं रे, त्रण भुवननुं राज्य वाला ॥रु०॥३॥
चौद सुपनना अर्थ कही रे, इंद्र गया निज ठाम वाला ।
चउसठ इन्द्र मली गया रे, नंदीश्वर जिनधाम वाला ॥
च्यवन कल्याणक उत्सवे रे, श्रीफल पूजा ठाम वाला ।
श्री शुभवीर तेणे समे रे, जगत जीव विश्राम वाला ॥रु०॥४॥

काव्य और मन्त्र

योगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूवपातालपदेनियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारीवरदः सपार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ।

जन्म कल्याणक तृतीय अक्षतपूजा

दोहा

रवि उदये नृप तेडिया, सुपन पाठक निज गेह ।
चउद सुपन फल सांभली, वलीय विसर्ज्या तेह ॥ १ ॥

त्रण ज्ञानशुं ऊपन्या, त्रेवीशमा अरिहंत।
चामा उर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥ २ ॥
दोहला पूरे भूपति, सखीओ वृंद समेत।
जिन पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

ढाल, चित्त चोखे चोरी नवि करीए, ए देशी

रमती गमनी हमुने साहेली, बिहु मली लीजीए एक ताली।
सखि आज अनोपम दीवाली ॥
लील विलासे पूरण मासे,पोष दशम निशि रढियाली॥स०॥१॥
पशु पंखी वसीयां वनवासी, ते पण सुखियां समकाली ।स०
इण राते घर घर उत्सवसें, सुखीयां जगतमें नरनारी ॥स०॥२॥
उत्तम ग्रह विशाखा योगे, जन्म्या प्रभुजी जयकारी ।स०
साते नरके थयां अजुवालां, थावरने पण सुखकारी ॥स०॥३॥
मात नमी आठे दिक्कुमारी, अधोलोकनी वसनारी ।स०
सूति घर ईशाने करती, योजन एक अशुचि टाली ॥स०॥४॥
ऊर्ध्वलोकनी आठ कुमारी, वरसावे जल कुसुमाली ।स०
पूर्वरुचक अठ्ठ दर्पण धरती,दक्षिणनी अड कलशाली॥स०॥५॥
अड पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर अठ्ठ चामरधारी ।स०
विदिशिनी चउदीप धरंती,रुचकद्वीपनी चउ वाली ॥स०॥६॥
केल तणा घर त्रण करीने, मर्दन स्नान अलंकारी ।स०
रक्षा पोटली बांधी बिहुने, मंदिर मेल्या शणगारी ॥स०॥७॥

प्रभु मुखकमले अमरी भमरी, रास रमंती लटकाली ।स०।
प्रभुमाता तुं जगतनी माता, जगदीपकनी धरनारी ॥स०॥८॥
माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपकारी ।स०।
छप्पन दिक्कुमारी गुण गाती, श्रीशुभवीर वचनशाली॥स०॥९॥

काव्य और मन्त्र

भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पाताल पदे नियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः स पार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ।

जन्म कल्याणक चतुर्थ जलपूजा

चलितासन सोहमपति, रची वैमान विशाल ।
प्रभु जन्मोत्सव कारणे, आवंता तत्काल ॥ १ ॥

ढाल, काज सीध्यां सकल हवे सार, ए देशी

हवे शक्र सुघोषा बजावे, देव देवी सर्व मिलावे ।
करे पालक सुर अभिधान, तेणे पालक नामे विमान ॥१॥
प्रभु पासनुं मुखडुं जोवा, भव भवनां पातिक खोवा ।
चाले सुर निज निज टोले, मुख मंगलिक माला बोले ॥प्र०॥२॥

'सिंहासन बेठा चलिया, हरि बहु देवे परिवरिया ।
नारी मित्रना प्रेर्या आवे, केइक पोताने भावे ॥प्रभु०॥३॥
हुकमे केइ भक्ति मरेवा, वली केइक कौतुक जोवा ।
हय कामर केसरी नाग, फणी गरुड चड्या केइ छाग ॥४॥
वाहन वैमान निवास, संकीर्ण थयुं आकाश ।
केइ बोले करता ताडा, मांकडा माई पर्वना दहाडा ॥प्रभु०॥५॥
इहां आव्या सर्व आणंदे, जिनजननीने हरि वंदे ।
पांच रूपे हरि प्रभु हाथ, एक छत्र धरे शिर नाथ ॥प्रभु०॥६॥
बे बाजु चामर ढाले, एक आगल वज्र उछाले ।
जइ मेरु धरी उत्सगे, इंद्र चोसठ मलीया रंगे ॥प्रभु०॥७॥
क्षीरोदक गंगा वाणी, मागध वरदामनां पाणी ।
जाति आठना कलश भरीने,अडोसें अभिषेक करीने ॥प्रभु०॥८॥
दीवो मगल आरति कीजे, चदन कुसुमे करी पूजे ।
गीत वाजित्रना बहु ठाठ, आलेखे मंगल आठ ॥प्रभु०॥६॥
इत्यादिक उत्सव करता, जइ माता पासे धरता ।
कुंडलयुगवस्त्र ओशीके,दडो गेडी रतनमयी मूके ॥प्रभु०॥१०॥
कोडी बत्रीश रत्न रूपैया, वरसावी इंद्र उचारीया ।
'जिन माताशुं जे धरे खेद, तस मस्तक थाशे छेद ॥प्रभु०॥११॥
अंगुठे अमृत वाही, नंदीश्वर करे अठ्ठाइ ।
देइ राजा पुत्र वधाइ, घर घर तोरण विरचाइ ॥प्रभु०॥१२॥

दश दिन ओच्छव मंडावे, बारमे दिन नात जिमावे ।
नाम थापे पार्श्वकुमार, शुभवीरविजय जयकार ॥प्रभु०॥१३॥

काव्य और मन्त्र

भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पातालपदे नियोगी।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः स पार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

जन्म कल्याणक पंचम चंदनपूजा

दोहा

अमृतपाने उछर्या, रमता पार्श्व कुमार ।
अहि लंछन नव कर तनु, वरते अतिशय चार ॥ १ ॥
यौवन वय प्रभु पामता, मात पितादिक जेह ।
परणावे नृपपुत्रिका, प्रभावती गुणगेह ॥ २ ॥
चंदन घसी घनसारशुं, निज घर चैत्य विशाल ।
पूजोकरण मेलवी, पूजे जगत् दयाल ॥ ३ ॥

ढाल, बालपणे योगी हुआ, माई भिक्षा द्योने, ए देशी

सोना रूपाके सोगठे, सायां खेलत बाजी ।
इंद्राणी मुख देखते, हरि होत हे राजी ॥ १ ॥

एक दिन गंगाके बिचे, सुर साथ बहोरा ।
नारी चकोरा अप्सरा, बहोत करत निहोरा ॥ २ ॥
गंगाके जल झीलते, छांहि बादलियां ।
खायन खेल खेलायके, सवि मंदिर वलियां ॥ ३ ॥
बैठे मंदिर मालिये, सारी आलम देखे ।
हाथ पूजाया ले चले, खानपान विशेषे ॥ ४ ॥
पूछ्या पडुत्तर देत हे, सुनो मोहन मेरे ।
तापसकुं वंदन चले, उठी लोक सवेरे ॥ ५ ॥
कमठ योगी तप करे, पंच अग्निकी ज्वाला ।
हाथे लालक दामणी, गले मोहन माला ॥ ६ ॥
पास कुंवर देखण चले, तपसीपे आया ।
मोहि नाणे देखके, पीछे योगी बोलाया ॥ ७ ॥
सुण तपसी सुख लेनकुं, जपे फोगट माले ।
अज्ञानसें अग्नि विचे, योगकुं परजाले ॥ ८ ॥
कमठ कहे सुण राजवी, तुमे अश्व खेलाओ ।
योगीके घर हे बडे, मत को बतलाओ ॥ ९ ॥
तेरा गुरु कोन हे वडा, जिने योग धराया ।
नहिं ओलखाया धर्मकुं, तनु कष्ट बताया ॥ १० ॥
हम गुरु धर्म पिछानते, नहिं कवडी पासे ।
भूल गये दुनिया दिशा, रहते वनवासे ॥ ११ ॥

वनवासी पशु पंखीया, ऐसे तुम योगी ।
योगी नहिं पण भोगीया, संसार के संगी ॥ १२ ॥
संसार बूरा छोडके, सुण हो लघु राजा ।
योगी जंगल सेवते, लेई धर्म अवाजा ॥ १३ ॥
दया धर्मको मूल है, क्या कान फुंकाया ।
जीवदया नहु जानते, तप फोगट माया ॥ १४ ॥
बात दयाकी देखीये, भूल चूक हमारा ।
वेर वेर क्या बोलणां, ऐसा डाक डमाला ॥ १५ ॥
सांई हुकमसें सेवके, वडा काष्ठ चिराया ।
नाग निकाला एकिला, परजलती काया ॥ १६ ॥
सेवक मुख नवकारसें, धरणेन्द्र बनाया ।
नागकुमारे देवता, बहु ऋद्धि पाया ॥ १७ ॥
राणी साथ वसंतमें, वन भीतर पेठे ।
प्रासाद सुन्दर देखके, वहां जा कर बेठे ॥ १८ ॥
राजमतीकुं छोडके, नेमि संजम लीना ।
चित्रामण जिन जोवते, वैरागे भीना ॥ १९ ॥
लोकांतिक सुर ते समे, बोले कर जोडी ।
अवसर संजम लेनका, अब देर हे थोडी ॥ २० ॥
निज घर आये नाथजी, पिया खिण खिण रोवे ।
मात पिता समजा्के, दान वरसी देवे ॥ २१ ॥

दीन दुःखी सुखीया किया, दारिद्रकुं चूरे ।
श्री शुभवीर हरि तिहा, धन सघलो पूरे ॥ २२ ॥

काव्य और मन्त्र

भोगी यदालोकनतोऽपी योगी, बभूव पातालपदे नियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः स पार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-
-रणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दन यजामहे स्वाहा ।

दीक्षा कल्याणके षष्ठ धूपपूजा

दोहा

वरसी दानने अवसरे, दान लीए भव्य तेह ।
रोग हरे षट् मासनो, पामे सुन्दर देह ॥१॥
धूप घटा धरी हाथमा, दीक्षा अवसर जाए ।
देव असख्य मलया तिहा, मानु सजम ठाए ॥२॥

ढाल, देखो गति दैवनी रे, ए देशी

त्रीश वरस घरमां वस्या रे, सुरनर वामानद ।
सयम रसिया जाणीने रे, मलिया चोसठ इद्र ॥
नमो नित्य नाथजी रे, निरखत नयनानंद ॥नमो०॥१॥
तीर्थोदक वर औषधि रे, मेलवता बहु ठाठ ।
आठ जाति कलशा भरी रे, एक सहस ने आठ ॥नमो०॥२॥
अश्वसेन राजा धुरे रे, पाछल सुर अभिषेक ।

सुरतरु पेरे अलंकर्या रे, देव न भूले विवेक ॥नमो०॥३॥
विशाला नृप शिबिका रे, बेठा सिंहासन नाथ ।
बेठी वडेरी दक्षिणे रे, पट शाटक लेइ हाथ ॥नमो०॥४॥
वाम दिशे अंब धातरी रे, पाछल धरी शणगार ।
छत्र धरे एक यौवना रे, ईशान फल कर नार ॥नमो०॥५॥
अग्नि कोणे एक यौवना रे, रमणमय पंखो हाथ ।
चलत शिबिका गावती रे, सर्व सहेली साथ ॥नमो०॥६॥
शक्र ईशान चामर धरे रे, वाजित्रनो नहिं पार ।
आठ मंगल आगल चले रे, इंद्रध्वजा झलकार ॥नमो०॥७॥
देव देवी नर नारीओ रे, जोई करे प्रणाम ।
कुलमां वडेरा सज्जना रे, बोले प्रभुने ताम ॥नमो०॥८॥
जित निशान चडावजो रे, मोहनी करी चकचूर ।
जेम संवत्सर दानथी रे, दारिद्र काढ्युं दूर ॥नमो०॥९॥
वरघोडेथी ऊतर्या रे, काशी नयरनी बहार ।
आश्रमपद उद्यानमां रे, वृक्ष अशोक रसाल ॥नमो०१०॥
अट्ठम तप भूषण तजी रे, उच्चरे महाव्रत चार ।
पोष बहुल एकादशी रे, त्रण सयां परिवार ॥नमो०॥११॥
मनःपर्यव तव ऊपन्युं रे, खंध धरे जगदीश ।
देवदूष्य इन्द्रे दियुं रे, रहेशे वरस चउतीस ॥नमो०॥१२॥
काउस्सग्ग मुद्राए रह्या रे, सुर नंदीश्वर जात ।
माता पिता वंदी [illegible]ऱ्यां रे, श्री शुभवीर प्रभात ॥नमो०१३॥

काव्य और मन्त्र

भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पातालपदे नियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः स पार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

केवलज्ञान कल्याणक सप्तम दीपकपूजा

दोहा

सारथ धन घेरे पारणुं, प्रथम प्रभुए कीध ।
पंच दिव्य प्रगटावीने, तास मुक्तिसुख दीध ॥ १ ॥
जग दीपक प्रगटाववा, तप तपता रही राण ।
तेणे दीपकनी पूजना, करतां केवलनाण ॥ २ ॥

ढाल, महावीर प्रभु घेर आवे, ए देशी

प्रभु पारसनाथ सिधाव्या, कादंबरी अटवी आव्या ।
कुंड नामे सरोवर तीरे, भर्युं पंकज निर्मल नीरे रे ॥
मन मोहन सुंदर मेला, धन्य लोक नगर धन्य वेला रे ।
॥ मन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
काउस्सग्ग मुद्रा प्रभु ठावे, वन हाथी तिहां एक आवे ।
जल शुंढ भरी नवरावे, जिन आगे कमल चढावे रे॥मन०॥२॥
कलिकुंड तीरथ तिहां थावे, हस्ती गति देवनी पावे ।

चली कौत्सुभवन आणंदे, धरणेंद्र विनय धरी वंदे रे॥म०॥३॥
त्रण दिन फणी छत्र धरावे, अहिछत्रा नगरी वसावे।
चालता तपास घर पुंठे, निशि आवी वस्या वडहेठे रे॥म०॥४॥
थयो कमठ मरी मेघमाली, आव्यो विभंगे निहाली।
उपसर्ग कर्या वहु जाति, निश्चल दीठी जिन छाती रे॥म०॥५॥
गगने जल भरी वादलीओ, वरसे गाजे विजलीओ।
प्रभु नासा उपर जल जावे, धरणेंद्र प्रिया सह आवे रे॥म०॥६॥
उपसर्ग हरी प्रभु पूजी, मेघमाली पापथी ध्रूजी।
जिनभक्ते समकित पावे, वेहु जण स्वर्ग सीधावे रे॥म०॥७॥
आव्या काशी उद्याने, रह्या स्वामी काउस्सग्ग ध्याने।
अपूरव वीर्य उल्लासे, घनघाती चार विनाशे रे॥मन०॥८॥
चोराशी गया दिन आखा, वदि चैतर चोथ विशाखा।
अठ्ठम तरु घातकी वासी, थया लोकालोक प्रकाशी रे॥म०॥९॥
मले चोसठ इन्द्र ते वार, रचे समवसरण मनोहार।
सिंहासन स्वामी सुहावे, शिर चामर छत्र धरावे रे॥म०॥१०॥
चोत्रीश अतिशय थावे, वनपाल वधामणी लावे।
अश्वसेन ने वामा राणी, प्रभावती हर्ष भराणी रे॥म०॥११॥
सामैयुं सजी सहु वंदे, जिनवाणी सुणी आणंदे।
ससरो सासु वहु साथे, दीक्षा लीधी प्रभु हाथे रे॥म०॥१२॥
संघ साथे गणी पद धरता, सुर ज्ञान महोत्सव करता।
स्वामी देवछंदे सोहावे, शुभवीर वचन रस गावे रे॥म०॥१३॥

अर्घ्य और मन्त्र

सोमी यदालोकनतोऽपि योगी, अमुत्र पातालपदे नियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदःस पार्श्वः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय भोगान्तरायदहनाय दीपं यजामहे स्वाहा ।

निर्वाण कल्याणक अष्टम नैवेद्यपूजा

दोहा

शुभ आदे दश गणधरा, साधु सोल हजार ।
अडतीस सहस ते साधवी, चार महाव्रत धार ॥ १ ॥
एक लख चउसठ सहस छे, श्रावकनो परिवार ।
सगवीश सहस ते श्राविका, तिग लख ऊपर धार ॥ २ ॥
देश विरतिधर ए सहु पूजे जिन त्रण काल ।
प्रभु पडिमा आगल धरे, नित्य नैवेद्यनो थाल ॥ ३ ॥

ढाल, एक समे शामलीयाजी, वृंदावनमां, ए देशी

रंग रसीया रंग रस बन्यो, मन मोहनजी ।
कोइ आगल नवि कहेवाय, मनडुं मोह्युं रे, मन मोहनजी ।

वेधकता वेधक लहे, मन मोहनजी ।
वीजा वेठा वा खाय ॥ मनडुं० ॥ १ ॥
लोकोत्तर फल नीपजे ॥ मन० ॥
महोटो प्रभुनो उपकार ॥ मनडुं० ॥
केवलनाण दिवाकरु ॥ मन० ॥
विचरंता सुर परिवार ॥ मनडुं० ॥ २ ॥
कनक कमल पगलां ठवे ॥ मन० ॥
जलबुंद कुसुम वरसात ॥ मनडुं० ॥
शिर छत्र वली चामर ढले ॥ मन० ॥
तरु नमतां मारग जात ॥ मनडुं० ॥३॥
उपदेशी केइ तारिया ॥ मन० ॥
गुण पांत्रीश वाणी रसाल ॥ मनडुं० ॥
नर नारी सुर अप्सरा ॥ मन० ॥
प्रभु आगल नाटकशाल ॥मनडुं० ॥४॥
अवनीतल पावन करी ॥ मन० ॥
अंतिम चोमासुं जाण ॥ मनडुं० ॥
समेतशिखर गिरि आवीया ॥ मन० ॥
चडता शिवघर सोपान ॥ मनडुं०॥५॥
श्रावण शुदि आठम दिने ॥ मन० ॥
विशाखाए जगदीश ॥ मनडुं० ॥
अणसण करी एक मासनुं ॥ मन० ॥

साथे मुनिवर तेत्रीश ॥ मनड्ं०॥ ६ ॥
काउस्सग्गमा मुक्ति वर्या ॥ मन० ॥
सुख पाम्या सादि अनंत ॥ मनड्ं० ॥
एक समय समश्रेणिथी ॥ मन० ॥
निष्कर्मा चउ दृष्टांत ॥ मनड्ं० ॥ ७ ॥
सुरपति सघला तिहां मले ॥ मन० ॥
क्षीरोदधि आणे नीर ॥ मनड्ं० ॥
स्नान विलेपन भूषणे ॥ मन० ॥
देवदूष्ये स्वामी शरीर ॥ मनड्ं० ॥८॥
शोभावी धरी शिबिका ॥ मन० ॥
वाजित्र ने नाटक गीत ॥ मनड्ं० ॥
चंदन चय परजालता ॥ मन० ॥
सुर भक्ति शोक सहित ॥ मनड्ं० ॥९॥
स्तूप करे ते उपरे ॥ मन० ॥
दाढादिक स्वर्गे सेव ॥ मनड्ं० ॥
भाव उद्योत गये थके ॥ मन० ॥
दीवाली करता देव ॥ मनड्ं० ॥१०॥
नंदीश्वर उत्सव करे ॥ मन० ॥
कल्याणक मोक्षानद ॥ मनड्ं० ॥
वर्ष अढीसें आंतरुं ॥ मन० ॥
शुभवीर ने पार्श्व जिणंद ॥मगड्ं०॥११॥

अथ गीतं, घरे आवो ढोला, ए देशी

उत्सव रंग वधामणां, प्रभु पार्श्वने नामे ।
कल्याणक उत्सव कियो, चडते परिणामे ॥ उत्सव० ॥ १ ॥
शत वर्षायु जीवीने, अक्षय सुख स्वामी ।
तुम पद सेवा भक्तिमां, नवि राखुं खामी ॥ उत्सव० ॥ २ ॥
साची भक्ते साहेबा, रीझो एक वेला ।
श्री शुभवीर हुवे सदा, मनवांछित मेला ॥ उत्सव० ॥ ३ ॥

कलश

गायो गायो रे, शंखेश्वर साहेब गायो ॥
यादव लोकनी जरा निवारी, जिनजी जगत गवायो ॥
पंच कल्याणक उत्सव करतां,अम घर रंग वधायो रे ॥शं॥१॥
तपागच्छ श्री सिंहसूरिना, सत्यविजय बुध ठायो ।
कपूरविजय गुरु खिमाविजय तस,जसविजयो मुनिरायो रे।शं०२।
तास शिष्य संवेगी गीतारथ, शांत सुधारस नाह्यो ।
श्री शुभविजय सुगुरु सुपसाये,जयकमला जग पायो रे॥शं०॥३॥
राजनगरमां रही चोमासुं, कुमति कुतर्क हठायो ।
विजयदेवेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार बनायो रे ॥शं०॥४॥
अढारसें नेव्याशी अक्षय त्रीज, अक्षत पुण्य उपायो ।
पंडित वीरविजय पद्मावती, वांछितदाय सुहायो रे ॥शं०॥५॥

काव्य और मन्त्र

भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पातालपदे नियोगी ।
कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी वरदः सपार्श्वं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

श्री अष्टप्रकारी पूजा विधि

इस पूजा में फल, नैवेद्य आदि वस्तुएँ आठ आठ लाना। आठ स्वात्रिये करना। पंचामृत के आठ कलश भरना। आठ दीपक करना। फूल अक्षतादि लाना। अंग लूंछने भी आठ लाना।

पहली पूजा में जल। दूसरी पूजा में चंदन।

तीसरी पूजा में फूल। चौथी पूजा में धूप।

पांचवीं पूजा में दीप। छट्ठी पूजा में अक्षत।

सातवीं पूजा में नैवेद्य। आठवीं पूजा में फल चढ़ाना।

अंत में पूजा का कलश कहने के बाद आरती करना।

पंडित श्री वीरविजयजी रचित

अष्टप्रकारी पूजा

प्रथम जलपूजा

दोहा

सरस वचन रस वरसती, धंमी, प्रणमी जेह ।
भगवई धुर वसुधासुते, हुं पण प्रणमुं तेह ॥ १ ॥
श्री शंखेश्वर शिर नमी, पभणुं पूजा विचार ।
अंगादिक त्रिक पूजना, उत्तर अष्ट प्रकार ॥ २ ॥
न्हवण विलेपन कुसुमनी, जिन पुर धूप प्रदीप ।
अक्षत नैवेद्य फल तणी, करो जिनराज समीप ॥ ३ ॥
क्षीरोदक चीवर धरी, तन मन वच संतोष ।
उत्तरासंग सुविधि करो, आठपडो मुखकोश ॥ ४ ॥
प्रथम सुगंध जले भरी, कनक कलशनी श्रेणि ।
नर नारी कर संपुटे, धरिये हर्ष भरेण ॥ ५ ॥

ढाल, राग देशाख

विशद गंधोदके, वासित कुसुमादिके ।
वलीय सुवासना महमहे ए ॥ ईयो महमहे ए ॥ १ ॥
जडित मणि माणिके, कलश सोवन तणा ।
भरीए धरी हाथने सुर रहे ए ॥ ईयो सुर रहे ए ॥ २ ॥

मेरुगिरि उपरे, मेघवाहन करे,
हर्षभर हियडले जल तणी ए ॥ ईयो जल तणी ए ॥ ३ ॥
जिन तणी पूजना, दुरित दुःख भंजना ।
द्रव्य ने भाव भेदे भणी ए ॥ ईयो भेदे भणी ए ॥ ४ ॥

दोहा

जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश ।
जलपूजा फल मुज हजो, मागो एम प्रभु पास ॥ १ ॥

अथ गीत, अने होजी रे, ए देशी

सुरराज ज्युं भवि, जलपूजा जुगते करो रे ।
सुरराज ज्युं भवि, मागध ने वरदाम सनेहा ॥
सुर० देवनई परभासना रे ।
सुर० क्षीरोदधि शुचि ठाम सनेहा ॥
सुर० जलपूजा जुगते करो रे ॥ १ ॥ (ए आंकणी०)
सुर० अडविध कलशा जले भरी रे ।
सुर० न्हवण करे जेम देव सनेहा ॥
सुर० तेम तीर्थोदक मेलीने रे ।
सुर० अरिहा न्हवण करेव सनेहा ॥२॥
सुर० मिश्रित केसर ओषधि रे ।
सुर० कर्मपडल दूर जाय सनेहा ॥

सुर० आतम विमल केवल लहे रे ।
सुर० कारणे काज थाय सनेहा ॥३॥
सुर० विप्रवधू जलपूजथी रे ।
सुर० सोमेसरी तम नाम सनेहा ॥
सुर० जग जश शुभ सुख संपदा रे ।
सुर० पामी अविचल ठाम सनेहा ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चंदनपूजा

दोहा

आतम गुण वासन भणी, चंदन पूजा सार ।
जेम मघवा अपछर करे, तेम करीये नर नार ॥१॥

ढाल, रामश्री रागेण गीयते

हर्ष ऊलट धरी, सुरभि जस विस्तरी,
भावना चंदन सरस लीजे ॥ १ ॥
घसिय ओरस परी, मांहि केसर धरी,
मन वचन काय थिरता करीजे ॥ २ ॥

कनक मंदिर धरी, रंग कचोलडी,
मांहे भरी केसर निरखे हर्षीने ॥ ३ ॥
चरण जानु करे, अंस शिर भाल गले ।
उर उदर प्रभु नव तिलक कीजे ॥ ४ ॥

दोहा

शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभुमुख रंग ।
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग ॥ १ ॥

[illegible]-मुंजखलानी देशी

हरिचंदन घनसारशुं रे, द्रव्य तिलक नव अंग । जिनेश्वर पूजीये ॥
शिवसुंदरी शिर सोहतुं रे, भाव तिलक मन रंग, जिने० ॥१॥
प्रथम चउ निज थानके रे, तिलक विमल सुखकार, जिने० ।
गात्र विलेपन पूजना रे, जगतगुरु जयकार, जिने० ॥ २ ॥
क्रोध अनल शीतल थये रे, रीझ घनी तुज गुज, जिने० ।
क्षण क्षण पुलक प्रमोदशुं रे, अजब गति प्रभु पूज । जिने० ।३।
जिम जयसूर ने शुभमति रे, दंपति पद निर्वाण । जिने० ।
चंदन पूजा जिन [illegible] रे, करतां शुभ कल्याण ॥ जिने० ॥४॥

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा

दोहा

हवे त्रीजी सुमनसतणी, सुमनस करण स्वभाव ।
भाव सुगंध करण भणी, द्रव्य कुसुम प्रस्ताव ॥ १ ॥

मोरी माय रे मुने जान दे, ए देशी

सुरनाथ ज्युं भविलोक पूजो, जिनप दूजो नहिं मले ।
सौगंधी कुसुम विविध जातिशुं, मेलवी घन मोकले ।सु०।१।
मोगरो चंपक मालती सुम, केतकी वरजासु ले ।
प्रियंगु ने पुन्नाग नागं, दाउडी वर पाडले ॥ सुर० ॥२॥
सदा सोहागण जाई जुई, बोलसिरी सेवंत रे ।
मचकुंद ने चबेली वेली, ऊगियां शुचि जल थले ॥सु०॥३॥
लेई सुरभि सुम जिनचरण पूजो, पूजिया आखंडले ।
शिवसुंदरी वरमालिका सुम, थापीये पारग गले ॥सु०॥४॥

दोहा

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गतसंताप ।
सुमजंतु भव्यज परे, करीये समकित छाप ॥ १ ॥

गीत राग काफी अरनाथकुं सदा मेरी वंदना—ए देशी

पूजो श्री जिनचंदने रे, भवि श्री जिनचंदने ।
शिव वरिये दुरित निकंदीने रे, ॥भवि०॥ए टेक०॥
सरस सुगंध कुसुम वर जाति, पद्म मल्लिका कुंदने रे ।भ०।
दमणो मरुओ वर सहकारो,लावो वली मचकुंदने रे ॥भ०॥१॥
लाल गुलाब वकुल कोरंटो, केवडो कुसुम अखंडने रे ।भ०।
पूजो भवि तेम परम प्रमोदे, पूज्या जेम शक्रेन्द्रने रे ॥भ०॥२॥
धतूरे पूजत शिव विषयी, नर वायस पिचुमंदने रे ।भ०।
निरीहकुं कुसुमे सुर सेवत, परपुष्टा माकंदने रे ॥भ०॥३॥
शुभ त्रिक योगे वीर कहे जिन, पूजी हरो भव फंदने रे ।भ०।
वणिगधुआ लीलावती पूजत,पामी पद महानंद रे ॥भ०॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ धूपपूजा

दोहा

कर्म समिध दाहन भणी, ध्यानानल सलगाय ।
द्रव्य धूप करी आतमा, सहज सुगंधित थाय ॥१॥

ढाल, राग-मालवी गुडो

अब मय चूरणो, कृष्ण अगरु तणो, चूरण करी सुरभि मने ए ।१।
अगर तगरना, शुचितर अगरना, वलो घनसार बरासने ए ।२।
कुंदरु तुरुकनो, कस्तुरी कपूरनो, भेलीये मेलवी चंदने ए ।३।
नव नव रंगनो, शुद्ध दशांगनो, धूप सुगंध जिणंदने ए ।४।
धूपधाणुं मणयुं, कंचन रयणनुं, पावक निर्धूम परजले ए ।५।
जिनप मंदिर जना, धूप उखेवना, दश दिशि महमहे परिमलेए।६।

दोहा

ध्यान घटा प्रगटावीये, वाम नयन जिन धूप ।
मिच्छत दुर्गंध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप ॥१॥

गीत, सबाब रागिणी-जाति फाग

जिनवर जगत दयाल, भविया, जिनवर जगत दयाल ।
जिनपद सेवन धूप उखेवत, सुरवर नयन हजार, ॥भ०॥जि०॥
तेम भवि शुद्ध दशाग उखेवो, माहे साकर घनसार ॥भ०॥१॥
परिमल वदने धूप कहत है, सुणजो बुद्धि विशाल ।भ०।
जिनपद सेवतऊर्ध्वगति हम,तेम भवि शिव सुखमाल ॥भ०॥२॥
सिद्धस्वरूपी अरूपी विमलता, वेदी समय त्रिकाल ।भ०।
एहवा प्रभु पडिमा वामांगे, धरिये धूप रसाल ॥भ०॥३॥

चोथी पूजा चिहुँ गति हारी, वारी कर्मकी जाल ।भ०।
वीर कहे भव सातमे सीध्या, विनयंधर भूपाल ॥भवि०॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकपूजा

दोहा

पंचमी गति वरवा भणी पंचमी पूजा रसाल ।
केवलज्ञान गवेषवा, धरिये दीपक माल ॥१॥

ढाल, राग पूर्वी

दीपक ज्योति घनी नवरंगा
दीन दयालके दाहिण अंगा ॥दीप०॥
रयण जडित वर्तुल भाजनमें
धेनु हविष भरिये उछरंगा ॥दीप०॥१॥
प्राणी उगारण कारण फानस,
करिये ज्युं नवि आय पतंगा ॥दीप०॥
झगमग ज्योतिशुं दीपक धरिये,
अनुभव दीपक समकित संगा ॥दीप०॥२॥

जिनमंदिर जइ दीप प्रगट धरी,
आशय शुद्ध विमल जल गंगा ॥दीप०॥
ध्यान विमल करतां भवि नासे,
दीप विराजथी मोह भुजंगा ॥दीप०॥३॥
तिम मिथ्यात्व तिमिरकुं हरिये,
शार्वर तमहर व्योम पतंगा ॥दीप०॥
गोईन देखत नासत तस्कर,
ज्युं जिनदर्शन जात अनंगा ॥दीप०॥४॥

दोहा

द्रव्य दीप सुविवेकथी करतां दुःख होय फोक ।
भाव प्रदीप प्रगट हुवे, भासित लोकालोक ॥१॥

गीत राग, आशावरी गरबानी—प देशी

शुद्ध दीपतो रे, लोकालोक प्रमाण ।
एहवो दीवडो रे, प्रगटे पद निरवाण ॥दीपक०॥
द्रव्य थकी दीपकनी पूजा, करतां दो गति रोको रे ।
प्रभुपडिमा आदर्श करीने, आतमरूप विलोको ॥दीपक०॥
॥एहवो०॥१॥
शुद्ध दशा चेतनकुं प्रगटे, विघटे भव भव कूपो रे ।
चिदानंद भकभोल घटाशुं, केवल दीप अनूपो ॥दी०॥२॥

पडत पतंग न धूमकी रेखा, नहि चंचल मारुते रे ।
घृत विण पूरे पात्र न तापे, वली नवि मेल प्रसूते ॥दी०॥३॥
पाप पतंग पडत तेम दीपक, करती दो साहेली रे ।
जिनमति धनसिरी वरी शिवसुखने, वीर कहे रंगरेली॥दी०॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपमाला यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी अक्षतपूजा

दोहा

अक्षय पद साधन भणी, अक्षत पूजा सार ।
जिनप्रतिमा आगल मुदा, वरिये भवि नर नार ॥ १ ॥

ढाल, राग बिलावल

जगत प्रभु आगल भवि, वर अक्षत धरिये ।
मणि मुक्ताफल लेईने, वली स्वस्तिक करीये ॥
हां हांरे वली स्वस्तिक करीये ॥ हां हांरे करी पातक हरीये ।
हां हांरे छट्ठी पूजा समरीये ॥ हां हांरे प्रवहण भर दरिये ॥
हां हांरे भवसायर तरिये ॥ हां हांरे पद अक्षय वरिये ।जगत०।२।
अथवा उज्वल तंदुला, भरी थालने लावो ।

स्वस्तिक चिहुं गति चूरणो, वच्चे रत्नने ठावो ॥
हां हांरे वच्चे रत्नने ठावो ॥ हां हांरे घनसार वसावो ।
हां हांरे गोधूमादि अणावो ॥ हां हांरे तस पुंज बनावो ॥
हां हांरे अनुभव लय लावो ॥ हां हांरे जो हीये शिवपुर जावो ॥
॥ जगत० ॥ २ ॥

दोहा

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल ।
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल ॥ १ ॥

गीत राग सोहागडो

शिवनारी मुज प्यारी, दिलभर देखाव हो शिवनारी ।
हांरे प्रभु तुं तेहनो अधिकारी, दिलभर देखाव हो शिवनारी ॥
शालि व्रीहि गोधूमको ढगलो, प्रभु सन्मुख नरनारी ॥दि०॥
नहीं अक्षत अक्षयपद वरिये, आधि व्याधि भव हारी ॥दि०॥१॥
शंभु स्वयंभु जगतको नायक, नायक जगदाधारी ॥दिल०॥
तीर्थपति सुलतान जिनेश्वर, अविचल पद दातारी ॥दि०॥२॥
दर्व्वह गुण पज्जाय ने मुद्दा, छउगुरु पडिमा प्यारी ॥दिल०॥
द्रव्याक्षत धरतां इह लोके, राजऋद्धि भंडारी ॥दिल०॥३॥
मरुदेवा नंदन पद पूजन, द्रव्य भाव सुखकारी ॥दिल०॥
अनुभव अमरालय शुभसुखने, कीर युगल भवपारी ॥दिल०॥४॥

मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा।

सप्तम नैवेद्य पूजा

दोहा

निर्वेदी आगल ठवो, शुचि नैवेद्य रसाल।
विविध जाति पकवान्नशुं, भरी अष्टापद थाल॥ १॥

ढाल, राग काफी

पुरुषोत्तम गुणखाणी हो, पारग पुरुषोत्तम गुणखाणी॥ए टेक॥
हवे नैवेद्य रसाल ठवीजे, प्रभु आगल भवि प्राणी।
घरकी अमृतपाक पतासां, फेणी सरस सोहाणी हो॥पा०॥१॥
लाखणसाइ मगदल साटा, घेवर थाल भराणी।
सेव कंसार ने सक्करपारा, पेडा बरफी आणी हो॥पा०॥२॥
खाजां खुरमा खीर खांड घृत, पापड पुरी वखाणी।
मोतैया कलीशार ने सोठां, एम पकवान्न मिलाणी हो॥पा०॥३॥
प्रभु पुर ढोई करो दुःखहाणि, मागो जोडी पाणी।
पतितपावन जिन मुजने दीजे, अणाहारी शिवराणी हो॥पा०॥४॥

दोहा

अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइय अणंत।
दूर करी ते दीजिये अणाहारी शियसंत॥ १॥

गीत, वृन्दावनमां एकज गोपी—ए देशी

हाटक थाल भरी पकवन्ने, शाल दाल शाक पाक रे ।
अनुभव रस संचित भवि लहिये, अमृत पदवी नाक रे ॥हा॥१॥
ताल कंसाल मृदंग बजावत, देता अढलक दान रे ।
नर नारी गुण गावत आवो, जिनमंदिर बहु मान रे ॥हा॥२॥
प्रभु आगे नैवेद्य ठवीने, अणाहारी पद मागो रे ।
पुद्गल भाव अनादिनी ईहा, टाली भजो प्रभु रागो रे॥हा॥३॥
सग भय वारक सातमी पूजा, करतां गइ सग वारी रे ।
वीर कहे इली नृप सुरसुखथी, सातमे भव शिवनारी रे ॥हा॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनि-वारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फल पूजा

दोहा

अष्टमी गति वरवा भणी, आठमी पूजा सार ।
तरु सिंचत फल पामीये, फलथी फल निरधार ॥ १ ॥

ढाल, राग गोडी मारुणी

सुगति फली रे, फली रे फली; अहो भवियां हो सुगति फली ।

कुमति टली, सुमती भली, एम नर नारी मली रे मली ॥
॥ अहो भ० ॥ मुगति० ॥ ए टेक ॥
फलपूजा करीए फलकामी, निर्मल श्रीफल लाय ॥ अहो० ॥
दाडिम द्राख अखोड बदामो, पूंगीफल समुदाय ॥
॥ अहो भ० ॥ मुग० ॥ कुम० ॥ सु० ॥ एम० ॥१॥
मिष्टांग लींबु खारेक कदली, सीताफल अभिराम । अहो० ।
जमरुख तरबूज नीमजां कोहलां, समरी समरी जिननाम ॥
॥ अहो भ० ॥ मुग० ॥ कुम० ॥ सुम० ॥ एम० ॥२॥
सुअफल नारंगी पिस्ता खरबूज, फणस अंगुर जंबीर ।अहो०।
शुभ चामीकर थाल भरीजे, सिंगोडा अंजीर ॥
॥ अहो भ० ॥ मुग० ॥ कुम० ॥ सुम० ॥ एम० ॥३॥

दोहा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग ।
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवफल त्याग ॥ १ ॥

गीत, इमनरागिणी, मारी सही रे समाणी, ए देशी

हरि परें फव मांगो भवि लोका, फलथी शिवफल रोका रे ॥
धन धन जिनराया ॥
रायण बीजोरां फल टेटी, पूजत शिववहु भेटीरे ॥धन०॥१॥
इत्यादिक शुचि फल भवि लावो, थाल विशाल भरावो रे ।ध०।
हर्ष भरे जिन मंदिर आवो, जिनवर आगल ठावो रे ॥ध०॥२॥

एम फलपूजा जे भवि करशे, ते शिवरमणी वरशे रे ।धन०।
पूजो भवियण निर्मल बुद्धि, पण करी सगविह शुद्धिरे ।।ध०।।३।।
कीर युगलसुं दुर्गता नारी, पूज्या जिन जयकारी रे ।धन०।
कहे शुभवीर अचल सुख लीधो, अंत करमनो कीधोरे ।।ध०।।४।।

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग-धन्याश्री वामानंदन जग०, ए देशी

इणविध अष्टप्रकारी पूजा, करशे तस नित्य सुख शाता ।
सिद्धि बुद्धि दिट्ठि अड भविजन, पामी अड पवयण माता ।।
हरि परें भक्ति करो प्रभु केरी ।। १ ।।
राग द्वेष टाली जिन पूजत, अष्टमी गति अनुक्रमे लहे ।
अष्ट कर्म समताये घाली, नीलतरु वन हिम दहे ।।हरि०।।२।।
तपगच्छ श्री विजयसिंह सूरीश्वर, सत्यविजय पंन्यास वरो ।
कपूर समुज्वल क्षमाविजय जस–विजय सदा सौभाग्य करो ।।
।। हरि० ।। ३ ।।
तास शिष्य शुभविजय सोभागी, तस अनुमति जिनराय सही ।
गावत हर्ष कल्लोल भराया, राजनगर चोमासु रही ।।हरि०।।४।।

संवत् अढार अट्ठावन वरसे, भाद्रपदे सित पक्ष भलो ।
द्वादशी दिन गुरुवार मनोहर, ए अभ्यास भयो सफलो॥हरि०॥५॥
सुरगुरु पण न शके करी वर्णन, जिन थुणिया में मंदमति ।
जलधि मान कहे जेम बालक, निज शक्ते पंखी वदति ॥ हरि०॥६॥
शक्ति विना पण तेम प्रभु गाया, गुणमाला भवि कंते धरो ।
वीरविजय कहे संघ सकल भवि, जइ शिवमंदिर लील करो ॥
॥ हरिपरे० ॥ ७ ॥

एम फलपूजा जे भवि करशे, ते शिवरमणी वरशे रे ।धन०।
पूजो भवियण निर्मल बुद्धि, पण करी सगविह शुद्धि रे ।।घ०।।३।।
कीर युगलशुं दुर्गता नारी, पूज्या जिन जयकारी रे ।धन०।
कहे शुभवीर अचल सुख लीधो, अंत करमनो कीधो रे ।।घ०।।४।।

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ।

कलश

राग-धन्याश्री वामानंदन जग०, ए देशी

इणविध अष्टप्रकारी पूजा, करशे तस नित्य सुख शाता ।
सिद्धि बुद्धि दिद्धि अड भविजन, पामी अड पवयण माता ।।
हरि परें भक्ति करो प्रभु केरी ।। १ ।।
राग द्वेष टाली जिन पूजत, अष्टमी गति अनुक्रमे लहे ।
अष्ट कर्म समताये गाली, नीलतरु वन हिम दहे ।।हरि०।।२।।
तपगच्छ श्री विजयसिंह सूरीश्वर, सत्यविजय पंन्यास वरो ।
कपूर समुज्वल क्षमाविजय जस-विजय सदा सौभाग्य करो ।।
।। हरि० ।। ३ ।।
तास शिष्य शुभविजय सोभागी, तस अनुमति जिनराय सही ।
गावत हर्ष कल्लोल भराया, राजनगर चोमासु रही ।।हरि०।।४।।

श्री शत्रुंजय महिमागर्भित

श्री नवाणुं प्रकारी पूजा

प्रथम पूजा

दोहा

श्री शंखेश्वर पासजी, प्रणमी शुभगुरु पाय ।
विमलाचल गुण गाइशुं, समरी शारद माय ॥ १ ॥
प्राये ए गिरि शाश्वतो, महिमानो नहीं पार ।
प्रथम जिणंद समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ २ ॥
अढीय द्वीपमां ए समो, तीर्थ नहीं फलदाय ।
कलियुग कल्पतरु वडो, मुक्ताफलशुं वधाय ॥ ३ ॥
यात्रा नवाणुं जे करे, उत्कृष्टे परिणाम ।
पूजा नवाणुं प्रकारनी, रचतां अविचल धाम ॥ ४ ॥
नव कलशे अभिषेक नव, एम एकादश वार ।
पूजा दीठ श्रीफल प्रमुख, एम नवाणुं प्रकार ॥ ५ ॥

ढाल, झुमखडानी, देशी

यात्रा नवाणुं करीये सलुणा, करिये पंच सनात ।
सुनंदानो कंत नमो ॥
गणणुं लाख नवकार गणीजे, दोय अट्ठम छठ्ठ सात ॥सु०॥१॥

द्वितीय पूजा

दोहा

अकेकुं डगलु भरे, गिरि सन्मुख उजमाल ।
कोडी सहस भवनां कर्या, पाप खपे तत्काल ॥१॥

ढाल

राग पूर्वी, घड़ी घड़ी सांभरो शान्ति सलुणा, ए देशी

गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरव संचित कर्म खपावे ।गि०।
ऋषभ जिनेश्वर पूजा रचावे, नवनवे नामे गिरिगुण गावे ॥
॥ गिरिवर० ॥ १ ॥ ए आंकणीं ॥
सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल शतकूट कहावे ।गि०।
ढंक कदंब ने कीडी निवासो, लोहित तालध्वज सुर गावे ।।गि०।।२।।
ढंकादिक पंच कूट सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ।गि०।
रयण खाण जडी बूटी गुफाओ, रस कूंपिका गुरु इहां बतावे।।३।।
पण पुन्यवंता प्राणी पावे, पुन्य कारण प्रभु पूजा रचावे ।गि०।
दशकोटी श्रावकने जमाडे, जैन तीर्थ यात्रा करी आवे ।।गि०।।४।।
तेथी एक मुनि दान दीयंतां, लाभ घणो सिद्धाचल थावे ।गि०।
चंद्रशेखर निज भगिनी भोगी, ते पण ए गिरि मोक्षे जावे।।गि०।।५।।
चार हत्यारा नर परदारा, देव गुरु द्रव्य चोरी खावे ।गि०।
चैत्री कार्तिकी पुनम यात्रा, तप जप ध्यान थी पाप जलावे।।गि०६।।

रथयात्रा प्रदक्षिणा दीजे, पूजा नवाणुं प्रकार ।सु०।
धूप दीप फल नैवेद्य मूकी, नमीये नाम हजार ॥सु०॥२॥
आठ अधिक शत टुंक भलेरी, महोटी तिहां एकवीश ।सु०।
शत्रुंजयगिरि टुंक ए पहेलुं, नाम नमो निशदिश ॥सु०॥३॥
सहस्र अधिक अठ्ठ मुनिवर साथे, बाहुबलि शिव ठाम ।सु०।
बाहुबलि टुंक नाम ए बीजुं, त्रीजुं मरुदेवी नाम ॥सु०॥४॥
पुंडरीक गिरि नाम ए चोथुं, पंचकोडी मुनि सिद्ध ।सु०।
पांचमी टुंक रैवतगिरि कहीये, तेणे ए नाम प्रसिद्ध ॥सु॥०५॥
विमलाचल सिद्धराज भगीरथ, प्रणमीजे सिद्धक्षेत्र ।सु०।
श्रद्दरी पाली एणे गिरि आवी, करीये जन्म पवित्र ॥सु॥०६॥
पूजाए प्रभु रीझवुं रे, साधुं कार्य अनेक ।सु०।
श्री शुभवीर हृदयमां वसजो, अलबेला घडी एक ॥सु०॥७॥

काव्यम्–द्रुतविलम्बित वृत्तम्

गिरिवरं विमलाचलनामकम् ।
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ॥
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं ।
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

अथ मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति प्रथम पूजाभिषेके उत्तरपूजा १ संपूर्णा]

द्वितीय पूजा

दोहा

अकेकुं डगलु भरे, गिरि सन्मुख उजमाल ।
कोडी सहस भवनां कर्यां, पाप खपे तत्काल ॥१॥

ढाल

राग पूर्वी, घड़ी घड़ी सांभरो शान्ति सलुणा, ए देशी

गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरव संचित कर्म खपावे ।गि०।
ऋषभ जिनेश्वर पूजा रचावे, नवनवे नामे गिरिगुण गावे ॥
॥ गिरिवर० ॥ १ ॥ ए आंकणीं ॥
सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल शतकूट कहावे ।गि०।
ढंककदंब ने कीडी निवासो, लोहित तालध्वज सुर गावे ॥गि०॥२॥
ढंकादिक पंच कूट सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ।गि०।
रयण खाण जडी बूटी गुफाओ, रस कूंपिका गुरु इहां बतावे॥३॥
पण पुन्यवंता प्राणी पावे, पुन्य कारण प्रभु पूजा रचावे ।गि०।
दशकोटी श्रावकने जमाडे, जैन तीर्थ यात्रा करी आवे ॥गि०॥४॥
तेथी एक मुनि दान दीयंतां, लाभ घणो सिद्धाचल थावे ।गि०।
चंद्रशेखर निज भगिनी भोगी, ते पण ए गिरि मोक्षे जावे॥गि०॥५॥
चार हत्यारा नर परदारा, देव गुरु द्रव्य चोरी खावे ।गि०।
चैत्री कार्तिकी पुनम यात्रा, तप जप ध्यान थी पाप जलावे॥गि०६॥

ऋषभसेन जिन आदे असंख्या, तीर्थंकर मुक्तिसुख पावे ।गि०।
शिववहु वरवा मंडप ए गिरि, श्री शुभवीर वचन रस गावे
॥ गिरिवर० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवर विमलाचलनामक, ऋषभमुख्यजिनाङ्घ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजन, विमलमाप्य करोमि निजात्मकम्॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

[इति द्वितीय अभिषेके उत्तरपूजा १८ समाप्त]

तृतीय पूजा

दोहा

नेमि विना त्रेवीश प्रभु, आव्या विमल गिरिंद ।
भावी चोवीशी आवशे, पद्मनाभादि जिणंद ॥ १ ॥

ढाल, मन मोहन मेरे, ए देशी

धन धन ते जग प्राणीया; मन मोहन मेरे ।
करता भक्ति पवित्र, मन मोहन मेरे ॥
पुण्यराशि महाबल गिरि म०, दृढशक्ति शतपत्र ॥म० ॥ १ ॥
विजयानंद वखाणीए म०, भद्रंकर महापीठ ।म० ।

सुरगिरि महागिरि पुण्यथी म०,आज में नजरे दीठ ||म०||२||
एंशी योजना प्रथमारके म०, सित्तेर साठ पचास |म०|
बार योजन सात हाथनो म०,छठ्ठ पहलो प्रकाश ||म०||३||
पंचम काले पामवो म०, दुलहो प्रभु देदार |म०|
एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिमां म०, काढ्यो अनंतो काल ||म०||४||
पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां म०, नहिं सुखनो लवलेश |म०|
घुणाक्षर न्याये लह्यो म०,नरभव गुरु उपदेश || म० || ५ ||
बहुश्रुत वयणनी सेवना म०, वस्तुधर्म ओलखाण |म०|
आत्म स्वरूप रमणे रमे म०, न करे जूठ डफाण ||म०|| ६ ||
कारणे कारज नीपजे म०, द्रव्य ते भाव निमित्त |म०|
निमित्तवासी आतमा म०, बावना चंदन शीत || म० || ७ ||
अन्वय व्यतिरेके करी म०, जिनमुख दर्शन रंग |म०|
श्री शुभवीर सुखी सदा म०, साधक किरया असंग ||म०||८||

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ||

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-रणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति तृतीयाभिषेके उत्तरपूजा २७ समाप्त]

चतुर्थ पूजा

दोहा

शेत्रुंजी नदी न्हाइने, मुखां बांधी मुखकोश ।
देव युगादि पूजीये, आणी मन संतोष ॥ १ ॥

ढाल, अने हांरे व्हालोजी वाये छे वांसलीरे, ए देशी

अने हांरे व्हालो वसे विमलाचले रे ।
जिहां हुआ उद्धार अनंत ॥ व्हालो० ॥
अने हांरे व्हालाथी नहिं वेगला रे ।
मुने व्हालो सुनंदानो कंत ॥ व्हालो वसे ॥
अ०आ अवसर्पिणी कालमां रे; करे भरत प्रथम उद्धार ।व्हा०।
अ०बीजो उद्धार पाट आठमे रे,करे दंडवीरज भूपाल॥व्हा॥२॥
अ०सीमंधर वयणां सुणी रे, त्रीजो करे ईशानेन्द्र ।व्हा०।
अ०सागर एक कोडी अंतरे रे,चोथो उद्धार महेन्द्र ॥व्हा०॥३॥
अ०दश कोडी वली सागरे रे, करे पंचम पंचम इन्द्र ।व्हा०।
अ०एक लाख कोडी सागरे रे;उद्धार करे चमरेन्द्र ॥व्हा०॥४॥
अ०चक्री सगर उद्धार ते सातमो रे,आठमो व्यंतरेन्द्रनो सार ।
अ०ते अभिनंदन चंद्रप्रभु समे रे,करे चंद्रजशा उद्धार॥व्हा०॥५॥
अ०नंदन शांति जिणंदना रे, चक्रायुध दशम उद्धार ।व्हा०।
अ०अगियारमो रामचन्द्रनो रे,बारमो पांडवनो उद्धार॥व्हा०॥६॥

अ०वीशकोडी मुनि साथे पांडवा रे, इहां वरिया पद महानंद ।
अ०महानंदक मंसूदन कैलास छे रे, पुष्पदंत जयंत आनंद॥७॥
अ०श्री पदह स्तगिरि शाश्वतो रे, ए नाम ते परम निधान ।न्हा०।
अ०श्री शुभवीरनी वाणीये रे, धरी कान करो वहुमान॥न्हा०॥८॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य बलैर्जिन पूजनम् , विमलमाप्य करोमि निजात्मकं ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति चतुर्थ अभिषेके उत्तरपूजा ३६ समाप्त]

पंचम पूजा

दोहा

चोथे आरे ए थया, सवि महोटा उद्धार ।
सूक्ष्म उद्धार वच्चे थया; कहेतां नावे पार ॥ १ ॥

ढाल, तेजे तरणिथी वडो रे, ए देशी

संवत एक अठलंतरे, जावडशानो उद्धार ।
उद्धारजो मुज साहिवा रे, नावे फरी संसार हो जिनजी ॥
भक्ति हृद्यमां धारजो रे, अंतर वैरि वारजो रे,

तारजो दीन दयाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ।
बाहड मंत्रीए चौदमो रे, तीर्थे कर्यो उद्धार ।
बार तेरोत्तर वर्षमां रे, वंश श्रीमाली सार हो जिनजी ॥भ०॥२॥
संवत तेर एकोत्तरे रे, समरोशा ओसवाल ।
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता रे,पन्नरमो उद्धार हो जिनजी॥भ०॥३॥
पन्नरसें सत्याशीये रे, सोलमो ए उद्धार ।
कर्माशाए करावीयो रे,वरते छे जय जयकार हो जिनजी॥भ०॥४॥
सूरि दुप्पसह उपदेशथी रे, विमलवाहन भूपाल ।
छेलो उद्धार करावशे रे,सासयगिरि उजमाल हो जिनजी॥भ०॥५॥
भव्यगिरि सिद्धशेखरो रे, महाजश ने माल्यवंत ।
पृथ्वीपीठ दुःखहर गिरि रे,मुक्तिराज मणिकंत हो जिनजी॥भ०॥६॥
मेरु महीधर ए गिरि रे, नामे सदा सुख थाय ।
श्री शुभवीर ने चित्तथी रे, घडीय न महेलण जाय हो
जिनजी ॥ भक्ति०॥७॥

॥ काव्य और मन्त्र ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनाङ्घ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति श्री पचमाभिषेके वत्तर पूजा ४५ समाप्त]

षष्ठ पूजा

दोहा

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, ग्रही मुनि लिंग अनंत ।
आगे अनंता सीझशे, पूजो भवि भगवंत ॥ १ ॥

ढाल, चतुरेमें चतुरी कोण जगतकी मोहनी, ए देशी

सखरेमें सखरी कोण, जगतकी मोहनी ।
ऋषभ जिनंद की पडिमा, जगत की मोहनी ॥
रयणमय मूर्ति भराई, जगत की मोहनी ॥ हां हां रे जग० ॥
प्यारे लाल जगत की मोहनी ॥ ए आंकणी ॥
भरते भराइ सोय, प्रमाना ले करी ।
कंचनगिरिए बेठाइ, देखत दुनिया ठरी ॥
हां हां रे देखत० ॥ प्या० ॥ देख० ॥ सखरे० ॥ १ ॥
सातमोद्धारमें चक्री सगर, सुर चिंतवी ।
दुःषम काल विचार, गुफा में जा ठवी ॥
हां हां रे गुफामें० ॥ प्या० ॥ गु० ॥
देव देवी हररोज, पूजनकुं जावते ।
पूजाको ठाठ बनाय, सांयुं गुण गावते ॥
हां हां रे सांयुं० ॥ प्या० ॥ सांयुं० ॥ सखरे० ॥ २ ॥
अप्सरा घुंघट खोलके, आगे नाचते ।

गीत गान और तान, खडा हरि देखते ॥
हां हां रे खडा० ॥ प्या० ॥ खडा० ॥
जिन गुण अमृत पानसें, सफल भई घडी ।
ठम ठम ठमके पाउं, घलैयां ले खडी ॥
हां हां रे घलै० ॥ प्या० ॥ च० ॥ सखरे० ॥ ३ ॥
या रीत भक्ति मगन्नसें, सुर सेवा करे ।
सुर सान्निध्य नर दर्शन, मव श्रीजे तरे ॥
हां हां रे भव० ॥ प्या० ॥ भव० ॥
पश्चिम दिशि सोवन, गुफामें म्हालते ।
तीर्थे कंचनगिरि नाम, के दुनिया बोलते ॥
हा हां रे दुनि० ॥ प्या० ॥ दु० ॥ सखरे० ॥ ४ ॥
आनंदघर पुण्यकंद, जयानंद जाणीये ।
पातालमूल विमास, विशाल वखाणीये ॥
हां हां रे विशाल० ॥ प्या० ॥ वि० ॥
जगतारण अकलंक, ए तीरथ मानीये ।
श्री शुभवीर विवेक, प्रभुकु पीछानीये ॥
हां हां रे प्रभु० ॥ प्या० ॥ प्रभु० ॥ सखरे० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनम्, विमलमाप्य करोमिनिजात्मकम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

[इति पट्टाभिषेके उत्तरपूजा ५४ समाप्त]

सप्तम पूजा

दोहा

नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडी मुनिराय ।
साधे सिद्धिवधू वर्या, शत्रुंजय सुपसाय ॥ १ ॥

ढाल, सहसावनमां एक दिन स्वामी, ए देशी

आव्यां छुं आश भर्यां रे, वालाली अमे आव्यां रे—
आश भर्यां ॥ ए आंकणी ॥
नमिपुत्री चोसठ मलीने, ऋषभ पाउं पर्यां ।
कर जोडी विनये प्रभु आगे, एम वयणां उच्चर्यां रे ॥वा०॥१॥
नमि विनमि जे पुत्र तमारा, राज्यभाग विसर्यां ।
दीन दयाले दीधो पामी, आज लगे विचर्यां रे ॥वा०॥२॥
पाम्य राज्य उभगी प्रभु पासे, आवे काज सर्यां ।
अमे पण तातजी कारज साधुं, सान्निध्य आप कर्यां रे ॥वा०॥३॥
एम वदंती पागे चढंती, अणसण ध्यान धर्यां ।
केवल पायी कर्मने वामी, ज्योतिसें ज्योति मल्यां रे ॥वा०॥४॥

एक अवगाहने सिद्ध अनंता, दुग उपयोग वर्यां ।
फरसित देश प्रदेश असंखिन, गुणाकार कर्या रे ॥वा०॥५॥
अकर्मक महातीरथ हेमगिरि, अनंत शक्ति भर्यां ।
पुरुषोत्तम ने पर्वतराजा, ज्योतिस रूप धर्यां रे ॥वा०॥६॥
विलासभद्र सुभद्र ए नामे, सुणतां चित्त ठर्यां ।
श्री शुभवीर प्रभु अभिषेके, पातक दूर हर्यां रे ॥वा०॥७॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकम्॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति सप्तम अभिषेके सचरपूजा ६३ समाप्त]

अष्टम पूजा

दोहा

द्राविड ने वारिखिल्लजी, दश कोडी अणगार ।
साथे सिद्धिवधू वर्यां, वंदुं वारंवार ॥ १ ॥

ढाल, तोरण आइ क्युं चले रे—ए देशी

भरतने पाटे भूपति रे, सिद्धि वर्या एणे ठाय सलुणा ।
असंख्याता तिहां लगे रे, हुआ अजित जिनराय सलुणा ॥१॥

जेम जेम ए गिरि भेटीए रे, तेम तेम पाप पलाय स० ।
अजित जिनेश्वर साहिबो रे, चोमासुं रही जाय स०॥जे०॥२॥
सागरमुनि एक कोडिशुं रे, तोढ्या कर्मना पाश स० ।
पांच कोडि मुनिराजशुं रे, भरत लह्या शिववास स० ॥जे०॥३॥
आदीश्वर उपकारथी रे, सत्तर कोडी साथ सलुणा ।
अजितसेन सिद्धाचले रे, झाल्यो शिववहु हाथ स० ॥जे०॥४॥
अजितनाथ मुनि चैत्रनी रे, पूनमे दश हजार सलुणा ।
आदित्ययशा मुक्ति वर्या रे, एक लाख अणगार स० ॥जे०॥५॥
अजरामर क्षेमंकरु रे, अमरकेतु गुणकंद सलुणा ।
सहस्रपत्र शिवंकरु रे, कर्मक्षय तमोकंद स० ॥ जे० ॥६॥
राजराजेश्वर ए गिरि रे, नाम छे मंगलरूप सलुणा ।
गिरिवर रज तरुमंजरी रे, शीष चढावे भूप स० ॥ जे० ॥७॥
देव युगादि पूजतां रे, कर्म होये चकचुर सलुणा ।
श्री शुभवीरने साहिबो रे, रहेजो हइडा हजुर स०॥जे०॥८॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकं ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति अष्टमाभिषेके उत्तरपूजा ७२ समाप्त]

नवम पूजा

दोहा

राम भरत त्रण कोडीशुं, कोडी मुनि श्रीसार ।
कोडी साडीआठ शिव वर्या, शांब प्रद्युम्न कुमार ॥ १ ॥

ढाल, ऊँचा ने अलबेलो रे, कामणगारो कानुडो, ए देशी

सिद्धाचल शिखरे दीवो रे आदीश्वर अलबेलो छे ।
जाणे दर्शन अमृत पीवो रे ॥ आ० ॥
शिव सोमयशानी लारे रे ॥ आ० ॥
तेरे कोडी मुनि परिवारे रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ १ ॥
करे शिवसुन्दरीनुं आणुं रे ॥ आ० ॥
नारदजी लाख एकाणुं रे ॥ आ० ॥
वसुदेवनी नारी प्रसिद्धि रे ॥ आ० ॥
पांत्रीश हजार ते सिद्धि रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ २ ॥
लाख बावन ने एक कोडी रे ॥ आ० ॥
पंचावन सहसने जोडी रे ॥ आ० ॥
सातसें सत्योतेर साधु रे ॥ आ० ॥
प्रभु शान्ति चोमासुं कीधुं रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ३ ॥
तव ए वरिया शिवनारी रे ॥ आ० ॥
चौद सहस मुनि दमितारि रे ॥ आ० ॥

प्रद्युम्न प्रिया अचंभी रे ॥ आ० ॥
चौंआलीशसें वैदर्भी रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ४ ॥
थावच्चा पुत्र हजारे रे ॥ आ० ॥
शुक परिव्राजक ए धारे रे ॥ आ० ॥
सेलग पणसय विख्याते रे ॥ आ० ॥
सुभद्र मुनि सय साते रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ५ ॥
भव तरिया तेणे भव तारण रे ॥ आ० ॥
गजचंद्र महोदय कारण रे ॥ आ० ॥
सुरकांत अचल अभिनंदो रे ॥ आ० ॥
सुमति श्रेष्ठाभय कंदो रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ६ ॥
इहां मोक्ष गया केइ कोटी रे ॥ आ० ॥
अमने पण आशा मोटी रे ॥ आ० ॥
श्रद्धा संवेगे भरियो रे ॥ आ० ॥
में मोटो दरियो तरियो रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ७ ॥
श्रद्धा विण कुण ईहां आवे रे आ. लघु जलमां केम ते नावे रे आ.
तेणे हाथ हवे प्रभु झालो रे आ., शुभवीरने हईडे वहालो रे आ.
सिद्धाचल शिखरे दीवो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥

काव्य और मंत्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनाद्रि पवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति नवमाभिषेके छत्तरपूजा ८१ समाप्त]

दशम पूजा

दोहा

कदंब गणधर कोडिशुं, वली संप्रति जिनराज ।
थावचा तस गणधरु, सहसशुं सीध्यां काज ॥ १ ॥

ढाल, धन्य धन्य जिनवाणी, ए देशी

एम केई सिद्धि वर्या मुनिराया, नामथी निर्मल काया रे ।
ए तीरथ तारु ।
जाली मयाली ने उवयाली, सीध्या अनशन पाली रे ए० ॥१॥
देवकी पट् नंदन इहा सीध्या, आतम उज्वल कीधा रे ए० ।
उज्वलगिरि महापद्म प्रमाणो, विश्वानंद वखाणो रे ए० ॥२॥
विजयभद्र ने इद्रप्रकाशो, कहीये कपर्दिवासो रे ए० ।
मुक्तिनिकेतन केवलदायक, चर्चगिरि गुणलायक रे ए० ॥३॥
ए नामे भय सघला नासे, जयकमला घर वासे रे ए० ।
शुकराजा निज राज्यविलासी, ध्यान धरे पट्मासी रे ए० ॥४॥
द्रव्य सेवनथी साजा ताजा, जेम कुकडो चंदराजा रे ए० ।
ध्याता ध्येय ध्यानपद एके, भावथी शिवफल टेके रे ए० ॥५॥

डालने छंडी अडने वलगो, जाण न थाये अलगो रे ए० ।
मूल ऊर्ध्व अव शाखा चारे, छंद पुराणे विचारे रे ए० ॥६॥
इंद्रिय डालां विषय प्रवालां, जाणंता पण वाला रे ए० ।
अनुभव अमृत ज्ञाननी धारा, जिनशासन जयकारा रे ए० ॥७॥
चार दोष किरिया छंडाणी, योगावंचक प्राणी रे ए० ।
गिरिवर दर्शन फरसन योगे, संवेदनने वियोगे रे ए० ॥८॥
निर्जरतो गुणश्रेणे चडतो, ध्यानांतर जइ अडतो रे ए० ।
श्री शुभवीर वसे सुख मोजे, शिवसुंदरीनी सेजे रे ए० ॥९॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्य जिनाद्रिअपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

[इति दशमाभिषेके उत्तरपूजा १० समाप्त]

एकादश पूजा

दोहा

शत्रुंजय गिरि मंडणो, मरुदेवानो नंद ।
युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद ॥ १ ॥

ढाल, वीरकुंवरनी वातडी केने कहीए, ए देशी

तीरथनी आशातना नवि करीए, नवि करीए रे नवि करीए ।
धूप ध्यानघटा अनुसरीए, तरीए ससार ॥ तीरथ० ॥१॥
आशातना करतां थकां धनहाणि, मूल्या न मले अन्न पाणी ।
काया वली रोगे भराणी, आ भवमां एम ॥ तीरथ० ॥२॥
परभव परमाधामीने वश पडशे, वैतरणी नदीमां भलशे ।
अग्निने कुंडे बलशे, नहीं शरणुं कोय ॥ तीरथ० ॥३॥
पूर्व नवाणुं नाथजी इहां आव्या, साधु केइ मोक्ष सिधाव्या ।
श्रावक पण सिद्धि सुहाव्या, जपतां गिरि नाम ॥तीरथ० ॥४॥
अष्टोत्तर शत कूट ए गिरि ठामे, सौन्दर्य यशोधर नामे ।
प्रीतिमडण कामुक कामे, वली सहजानंद ॥ तीरथ० ॥५॥
महेन्द्रध्वज सरवारथ सिद्ध कहीए, प्रियकर नाम ए लहीए ।
गिरि शीतल छांये रहीए, नित्य धरीए ध्यान ॥ तीरथ० ॥६॥
पूजा नवाणुं प्रकारनी एम कीजे, नरभवनो लाहो लीजे ।
वली दान सुपात्रे दीजे, चढते परिणाम ॥ तीरथ० ॥७॥
सेवज फल संसारमां करे लीला, रमणी घन सुन्दर बाला ।
शुभवीर विनोद विशाला मंगल शिवमाल ॥ तीरथ० ॥८॥

[इति एकादशाभिषेके उत्तरपूजा ९९ समाप्त]

कलश, धन्याश्री रागेण गीयते

गायो गायो रे, विमलाचल तीरथ गायो ।

पर्वतमां जेम मेरु महीधर, मुनि मंडल जिनरायो ।
तरुगणमां जेम कल्पतरु वर, तेम ए तीरथ सवायो रे ॥वि०॥१॥
यात्रा नवाणुं इहां अमे कीधी, रंग तरंग भरायो ।
तीरथगुण मुक्ताफल माला, संघने कंठे ठवायो रे ॥वि०॥२॥
शेठ हेमाभाई हुकम लईने, पालीताणा शिर ठायो ।
मोतीचंद मलुकचंद राज्ये, संघ सकल हरखायो रे ॥वि०॥३॥
तपगच्छ सिंहसूरीश्वर केरा, सत्यविजय सत्य पायो ।
कपूरविजय गुरु खीमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायोरे॥वि॥४॥
श्री शुभविजय सुगुरु सुपसांये, श्रुत चिंतामणि पायो ।
विजयदेवेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, पूजा अधिकार रचायोरे ॥वि०॥५॥
पूजा नवाणुं प्रकारी रचावो, गावो ए गिरिरायो ।
विधियोगे फल पूरण प्रगटे, तव हठवाद हठायो रे ॥वि०॥६॥
वेद[४] वसु[८] गज[८] चंद्र[१] संवत्सर, चैत्री पूनम दिन ध्यायो ।
पंडित वीरविजय प्रभु ध्याने, आतम आप ठरायो रे ॥वि०॥७॥

काव्य और मन्त्र

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्यजिनाङ्घ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

श्री द्वादश व्रत पूजा विधि

जिनालय में त्रिगड़ा स्थापनकर उसकी वाम (डावी) दिशा में कल्पवृक्ष स्थापना। प्रतिमाजी के सामने जो जो वस्तु प्रभु को चढ़ती है, वे चढ़ाना। दर्पण, अष्टमंगल और ध्वजादि चढ़ाना। सामान्य से तेरह तेरह पुरुष और स्त्रियों को स्नात्रिये बनना।

शेष विधि अष्ट प्रकारी पूजा के समान जानना। एकसौ चौवीस अतिचार टालने के निमित्त एकसौ और चौवीस दीपक करना।

श्री द्वादश व्रत पूजा

प्रथम श्रावकगुणवर्णनकाव्यम्

उच्चैर्गुणैर्यस्य निबद्धमूलं, सत्कीर्तिशाखा विनयादिपत्रः ।
दानं फलं मार्गणपक्षिभोजि, जीयाच्चिरं श्रावककल्पवृक्षः ॥१॥

सम्यक्त्वारोपणे प्रथम जलपूजा

दोहा

सुखकर शंखेश्वर प्रभु, प्रणमी शुभगुरु पाय ।
शासननायक गायशुं, वर्धमान जिनराय ॥ १ ॥
समवसरण सुरवर रचे, वन महसेन मोझार ।
संघ चतुर्विध थापीने, भूतल करत विहार ॥ २ ॥
एक लख श्रावक व्रतधरा, ओगणसाठ हजार ।
सूत्र उपासके वर्णव्या, दश श्रावक सिरदार ॥ ३ ॥
प्रभु हाथे व्रत उच्चारी, चार तजी अतिचार ।
गुरु वंदी जिननी करे, पूजा विविध प्रकार ॥ ४ ॥
मुनि मारग चिंतामणि, श्रावक सुरतरु साज ।
बेहु बांधव गुणठाणमें, राजा ने युवराज ॥ ५ ॥
शिव मारग व्रतनो विधि, सातमा अंग मोझार ।
पंचम आरे [illegible] सुणतां होय उपकार ॥ ६ ॥

तेणे कारण पूजा रचुं, अनुपम तेर प्रकार ।
उतरवा भव जलनिधि, ए छे आरा धार ॥ ७ ॥
सुरतरु रूपानो करी, नील वरणमें पान ।
रक्त वरण फल राजतां, चाय दिशे तस ठाण ॥ ८ ॥
तेर तेर वस्तु शुचि, मेलवीए नव रंग ।
नर नारी कलश भरी, तेर ठवो जिन अंग ॥ ९ ॥
न्हवण विलेपन वासनी, माल दीप धूप फूल ।
मंगल अक्षत दर्पणे, नैवेद्य ध्वज फलपूर ॥ १० ॥

ढाल, रत्नमालानी प्रथम पूरव दिशे, ए दशी

चतुर चंपापुरी, वनमांहे उतरी,
सोहम जंबुने एम कहे ए ।
वीरजिन विचरता, नवपुर आवता,
वचन कुसुमे मन महमहे ए ॥ १ ॥
शांत संवेगता, वसुमती योग्यता,
समकित वीज आरोप कीजे ।
सृष्टि ब्रह्मा तणी, विष्णु शंकर धणी,
एक राखे एक संहरीजे ॥ २ ॥
गौरूप चाटणी, वाव अमृत तणी,
त्रिपुरने केशवा त्रण हणीजे ।
जूठ मंडाणनी, वाणी पुराणनी,
कुगुरु मुख डाकिणी दूर कीजे ॥ ३ ॥

हरि हर वंभने, देवी अचंभन,
पामी समकित नवि चित्त धरीजे ।
दोषथी वेगला, देव तीर्थंकरा,
उठी प्रभाते तस नाम लीजे ॥ ४ ॥
अतिशये शोभता, अन्य मत थोपता,
वाणी गुण पांत्रीश जाणीये ए ।
नाथ शिव सार्थवा, जगतना बांधवा,
देव वीतराग ते मानीये ए ॥ ५ ॥
जोग आचारने, सुगुरु अणगारने,
धर्म जयणायुत आदरो ए ।
समकित सारने, छंडी अतिचारने,
सिद्ध पडिमा नति नित्य करो ए ॥ ६ ॥
श्रेणिक क्षायके, क्षीर गंगोदके,
जिन अभिषेक नित्य ते करे ए ।
सिंची अनुकूलने कल्पतरु मूलने,
श्री शुभवीर पद अनुसरे ए ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र—शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोमि स्वयम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

प्रथम व्रते द्वितीय चंदनपूजा

दोहा

दंसण नाण चरण तणा, आठ आठ अतिचार ।
अणसण वीर्याचारना, पण तिग तपना बार ॥ १ ॥
सुंदर समकित उचरी, लही चोथुं गुणठाण ।
चढी पंचम पगथालीये, थूल थकी पच्चक्खाण ॥ २ ॥

ढाल, वाल्हे अमृत पाइ उछेर्यो, वाल्हाजीए अमने रे, ए देशी

आवो आवो जशोदाना कंत, अम घर आवो रे ।
भक्त वत्सल भगवंत, नाथ शे नावो रे ॥
एम चंदनबालाने बोलडे, प्रभु आवी रे ।
मुठी बाकुला माटे पाछा, वलीने बोलावी रे ॥ आ०॥१॥
संकेत करीने स्वामी, गया तुमे वनमां रे ।
थइ केवली केवली कीध, धरी जो मनमां रे ॥
अमे केसर केरा कीच, करीने पूजुं रे ।
तोहे पहेले व्रत अतिचार, थकी हुं ध्रुजुं रे ॥ आ०॥२॥

जीवहिंसानां पच्चक्खाण, थूलथी करीये रे ।
दुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनुसरीये रे ॥
वासी घोलो विदल निशि भक्ष, हिंसा टालु रे ।
सवा विश्वा केरी जीव-दया नित्य पालु रे ॥ आ०॥३॥
दश चंदरुआ दश ठाम, बांधीने रहिये रे ।
जीव जाये एहवी वात, केहने न कहिये रे ॥
वध बंधन ते छविच्छेद, भार न भरिये रे ।
भात पाणीनो विच्छेद, पशुने न करिये रे ॥ आ०॥४॥
लौकिक देव गुरु मिथ्यात्व, त्याशी भेदे रे ।
तुज आगम सुणतां आज, होय विच्छेदे रे ॥
चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ।
पगले पगले महाराज, व्रत अजवालुं रे ॥ आ०॥५॥
एक श्वास मांहे सो वार, समरुं तमने रे ।
चंदनबाला ज्युं सार, आपो अमने रे ॥
माळी हरिबल फलदाय, ए व्रत पाली रे ।
शुभवीर चरण सुपसाय, नित्य दिवाली रे ॥ आ०॥६॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः, श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभव त्यक्त्वागमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय व्रते तृतीय वास पूजा

दोहा

चूर्ण सरस कुसुमे करी, घसी केसर घनसार ।
बहुल सुगंधी वासथी, पूजो जगत दयाल ॥ १ ॥

ढाल, राग भैरवी यमुनामां जइ पडयो रे बालक, ए देशी

मुक्तिमें जाइ मलयो रे, मोहन मेरी मुक्तिमें जाइ मलयो ।
मोहमें क्युं न डर्यो रे ॥मोहन०॥
नाम करम निर्जरणा हेते, भक्तको भाव भर्यो रे ॥ मो० ॥
उपदेशी शिवमंदिर पहोते, तोसे बनाव ठर्यो रे ॥ मो० ॥१॥
आनंदादिक दश युं बोली, तुम कने व्रत उचर्यो रे ॥ मो० ॥
पांच मोटकां जूठ न बोले, में बी आश भर्यो रे ॥ मो० ॥२॥
बीजुं व्रत धरी जूठ न बोलुं, पण अतिचारे डर्यो रे ॥ मो० ॥
वसुराजा आसनसें पडीयो, नरकावास ठर्यो रे ॥ मो० ॥३॥
मांसाहारी मातंगी[1] बोले, भानु प्रश्न धर्यो रे ॥ मो० ॥
जूठा नर पग भूमि शोधन, जल छंटकाव कर्यो रे ॥ मो० ॥४॥

१; चण्डालणी ।

ंत्रभेद रह नारी न कीजे, अछती आल द्दर्यो रे ॥मो०॥
कूट लेख मिथ्या उपदेशे, व्रतको पाणी भर्यो रे ॥मो०॥५॥

कमलशेठ ए व्रतसें सुखियो, जूठसें नंद कलयो[२] रे ॥मो०॥
श्री शुभवीर वचन परतीते, कल्पवृक्ष फल्यो रे ॥मो०॥६॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पयादवकलास्वादं करोषि स्वयम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय वासं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय व्रते चतुर्थ पुष्पमाल पूजा

दोहा

सुरतरु जाई ने केतकी, गुंथी फुलनी माल ।
त्रिशलानंदन पूजीये, वरिये शिव वरमाल ॥ १ ॥

ढाल, हुँ ने अमारो हरजीवनजी, ए देशी

प्रभु कंठे ठवी फूलनी माला, थूल थकी व्रत उच्चरिये रे ।
चित्त चोखे चोरी नवि करीए ॥

---

२. दुःखी थयो ।

स्वामी अदत्त कदापि न लीजे, भेद अढार परिहरिये रे ॥चि०॥
नवि करीये तो भवजल तरिये रे ॥ चि० ॥ १ ॥
सात प्रकारे चोर कह्यो छे, तृण तुष मात्र न कर धरिये रे ॥चि०॥
राजदंड उपजे ते चोरी, नाठुं पडयुं वली विसरीये रे ॥चि०॥२॥
कूडे तोले कूडे मापे, अतिचारे नवि अतिचरिये रे ॥चि०॥
आ भव परभव चोरी करतां, वध बंधन जीवित हरिये रे ॥
॥ चि० ॥ ३ ॥
चोरीनुं धन न ठरे घरमां, चोर सदा भूखे मरीये रे ॥चि०॥
चोरनो कोइ धणी नवि होवे, पासे बेठां पण डरिये रे ॥
॥ चि० ॥ ४ ॥
परधन लेता प्राण जवीधा, पचेन्द्रिय हत्या वरिये रे ॥चि०॥
व्रत धरता जगमां जश उज्वल, सुरलोके जइ अवतरिये रे ॥
॥ चि० ॥ ५ ॥
तिहां पण सासय पडिमा पूजी, पुण्य तणी पोठी भरिये रे ॥चि०॥
जल कलशा भरी जिन अभिषेके, कल्पतरु रूडो फलिये रे ॥
॥ चि० ॥ ६ ॥
धनदत्त शेठ गयो सुरलोके, ए व्रत शाखा विस्तरिये रे ॥चि०॥
श्री शुभवीर जिनेश्वर भक्ते, सासय सुख शिव मंदिरिये रे ॥
॥ चित्त चोखे० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।

आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पमाला यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ व्रते पंचम दीपकपूजा

दोहा

चोथुं व्रत हवे वरणवुं, दीपक सम जस ज्योत ।
केवल दीपक कारणे, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥

ढाल, वृन्दावनना वासी रे, विठला तें मुजने विसारी, ए देशी

ए व्रत जगमां दीवो, मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो ॥
परमातम पूजीने विधिशुं, गुरु आगल व्रत लीजे ।
अतिचार पण दूर करीने, परदारा दूर कीजे ॥ मेरे० ॥
निज नारी संतोषी श्रावक, अणुव्रत चोथुं पाले ।
देव तिरी नर नारी नजरे, रूप रंग नवि धारे ॥ मेरे० ॥ १ ॥
स्तने पीडा कामनी क्रीडा दुरगंधा जे वाली ।
नासा विण नारी पण रागे, पंचाशकमां टाली ॥ मेरे० ॥
विधवा नारी बाल कुमारी, वेश्या पण परजाति ।
रंगे राती दुर्बल छाती, नर मारण ए काती ॥ मेरे० ॥ २ ॥

परनारी हेते श्रावकने, नव वाड्यो निरधारी ।
नारायण चेडा महाराजे, कन्यादान निवारी ॥ मेरे०॥
भरत रायने राज्य भलावी, राम रह्या वनवासे ।
खरदूषण नारी सविकारी, देखी न पड्या पाशे ॥ मेरे०॥३॥
देश शिर रावण रणमां रोल्यो, सीता सतीमां मोटी ।
सर्व थकी जो ब्रह्मव्रत पाले, नावे दान हेम कोटी ॥ मेरे०॥
वैतरणीनी वेदना मांहे, व्रत मांगे ते पेसे ।
विरतिने प्रणाम करीने, इन्द्र सभामां बेसे ॥ मेरे०॥४॥
मदिरा मांसथी वेद पुराणे, पाप घणु परदारा ।
विषकन्या रंडा पण धंधा, व्रतभंजक अवतारा ॥ मेरे०॥
व्रत संभाले पाप पखाले, सुर तस वांछित सावे ।
कल्पतरु फल दायक ए व्रत, जग जश कीरति वाधे ॥ मेरे०॥५॥
दशमे अंगे बत्रीश [१]ओपम, शीलवती व्रत पाली ।
नाथ निहाली चरणे आयो, नेह नजर तुम भाली ॥ मेरे०॥
हाथी मुखसें दाणो निकसे, कीडी कुटुम्ब सहु खावे ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर साहेब, शोभा अम शिर पावे ॥ मेरे०॥६॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधाराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥

[१] उपमा ।

मोक्ष तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम व्रते षष्ठ धूपपूजा

दोहा

अणुव्रत पंचम आदरी, पांच तजी अतिचार ।
जिनवर धूपे पूजीये, त्रिशला मात मल्हार ॥ १ ॥

ढाल, मारी अंबाना मांडवडा हेठ, ए देशी

मन मोहनजी जग तात, वात सुणो जिनराजजी रे ।
नवि मलियो आ संसार, तुम सरिखो श्री नाथजी रे ॥
कृष्णागरु धूप दशांग, उखेवी करुं विनति रे ।
तृष्णा तरुणी रस लीन, हुं रझल्यो रे चारे गति रे ॥
तिर्यंच तरुनां मूल, राखी रह्यो धन उपरे रे ।
पंचेन्द्रि फणीधर रूप, धन देखी ममता करे रे ॥मन०॥१॥
सुर लोभी छे संसार, संसारी धन संहरे रे ।
त्रीजे भव समरादित्य, साधु चरित्रने सांभले रे ॥
नरभव मांहे धन काज, जहाज चड्यो रणमां रड्यो रे ।
नीच सेवा मूकी लाज, राज्यरसे रणमां पड्यो रे ॥मन०॥२॥

संसार मांहे एक सार, जाणी कंचन कामिनी रे ।
न गणी जपमाला एक, नाथ निरंजन नामनी रे ॥
मागे मलीया भगवत, अवसर पामी व्रत आदरुं रे ।
गयो नरके मम्मण शेठ, सांभली लोभथी ओसरुं रे ॥मन०॥३॥
नवविध परिग्रह परिमाण, आणंदादिकनी परे रे ।
अथवा इच्छा परिमाण, घणा धन्नादिक उच्चरे रे ॥
वली सामान्ये षट् भेद, उत्तर चोसठ दाखिया रे ।
दशवैकालिक निर्युक्ति, भद्रबाहु गुरु भाखिया रे ॥मन०॥४॥
परिमाणथी अधिकुं होय, तो तीरथे जइ वावरो रे ।
रोकाये मवनुं पाप, छाप खरी जिननी धरो रे ॥
धन शेठ धरी धनमान, चित्रावेलीने परिहरी रे ।
शुभवीर प्रभुने ध्यान, संतोषे शिवसुन्दरी रे ॥मन०॥५॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं भद्र व्रतमाचरस्व सुमते-चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठ व्रते सप्तम पुष्पपूजा

दोहा

फूल अमूलक मेघ ज्युं, वरसावी जिन अंग ।
गुणव्रत त्रण्ये तेहमां, दिशि परिमाणने रंग ॥ १ ॥

ढाल, राग-सारंग दायक दिल वसिया-ए देशी

समवसरण सुरवर रचे रे, पूजा फूल अशेष ।
साहिब शिव वसिया ।
रायपसेणी सूत्रमां रे, करे सुरियाभ विशेष ॥ सा० ॥ १ ॥
पूज्यनी पूजा तेम करी रे, करुं आशा परिमाण । सा० ।
चार दिशा विमलातमा रे, हिंसाये पच्चक्खाण ॥ सा० ॥ २ ॥
आशा करुं अरिहा तणी रे, पच तजी अतिचार । सा० ।
तुम सरिखो दीठो नहीं रे, जगमां देव दयाल ॥ सा० ॥ ३ ॥
वरसी वरस्या ते समे रे, विप्र गयो परदेश । सा० ।
संयम लेइ सुखियो कर्यो रे, लाखिणो देइ खेस ॥सा०॥४॥
हुं पण ते दिन केइ गति रे, केवली जब जिनराज । सा० ।
शासन देखी ताहरुं रे, आव्यो तुम शिर लाज ॥सा०॥५॥
ए व्रत थी शिवसुख लह्युं रे, जेम महानंद कुमार । सा० ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर रे, अमने पण आधार ॥ सा० ॥ ६ ॥

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनदादयदिग्मिताः सुरभव स्यक्त्वागमिष्यन्ति वै ॥
मोक्ष तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोपि स्वयं ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।

सप्तम व्रते अष्टम अष्टमांगलिकपूजा

दोहा

अष्ट मंगलनी पूजना, करिये करी प्रणाम ।
आठमी पूजाए नमो, भाव मंगल जिननाम ॥ १ ॥
उपभोगे परिभोगथी, सप्तम व्रत उच्चार ।
बीजुं गुणव्रत एहना, वीश तजो अतिचार ॥ २ ॥

ढाल, सुतारीना वेटा तुने विनवुं रे लोल, ए दशी

अब सातमे विरति आदरु रे लोल,
करो साहेब चो मुज महेर जो ।
तुम आगम आरिसो जोवतां रे लोल,
दूर दीठुं छे शिवपुर शहेर जो ॥ ॥

मने संसार सेरी विसरी रे लोल,
जिहां वार पाडोशी चाड जो।
नित्य रहेवुं ने नित्य वढवाड जो ॥ मने० ॥
फल तंबोल अन्न उपभोगमां रे लोल,
घर नारी चीवर परिभोग जो।
करी मान नमुं नित्य नाथने रे लोल,
जेथी जाये भवोभव शोक जो ॥ मने० ॥२॥
प्रभु पूजा रचुं अष्ट मंगले रे लोल,
पर हांसी तजी अति रोष जो।
अति उद्भट वेष न पहेरीय रे लोल,
नवि धरीये मलिनता वेष जो ॥ मने० ॥३॥
चार मोटी विगय करी वेगली रे लोल,
दश चार अभक्ष्य निवार जो।
तिहां रात्रि भोजन करतां थकां रे लोल,
मंजार घुवड अवतार जो ॥ मने० ॥४॥
छले राक्षस व्यंतर भूतडां रे लोल,
केश कंटक जूनो विकार जो।
अण मित्र चरित्रने सांभली रे लोल,
करो रात्रि भोजन चोविहार जो ॥ मने० ॥५॥
गांडां वहेल वेचे भाडां करे रे लोल,
अंगार स्म वनकर्म जो।

सर कूप उपल खणतां थकां रे लोल,
नवि रहे श्रावकनो धर्म जो ॥ मने० ॥६॥
विष शस्त्र वेपार दांत लाखनो रे लोल,
रस केश निर्लांछन कर्म जो ।
शुक मेना न पालीये पांजरे रे लोल,
वनदाहे दहे शिवशर्म जो ॥ मने० ॥७॥
यंत्र पीलण रस नवि शोषीए रे लाल,
तेणे करजो मया महाराज जो ।
नहिं खोट खजाने दीजीए रे लोल,
शिवराज वधारी लाज जो ॥ मने० ॥८॥
राजमन्त्री सुता फल पामती रे लोल,
व्रत साधक बाधक टाल जो ।
शुभवीर प्रभुना नामथी रे लोल,
नित्य पामीए मंगल माल जो ॥ मने० ॥९॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वदशव्रतपराः श्रद्धाः श्रुते वर्णिता,
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षंतद् व्रतमाचक्ष सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्युनि- वारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अष्टमंगलामि यजामहे स्वाहा ।

अष्टम व्रते नवम अक्षतपूजा

दोहा

दंडाये विण हेतुये, वलगे पाप प्रचंड ।
प्रभु पूजी व्रत कारणे, ते कहुं अनर्थदंड ॥ १ ॥
स्वजन शरीरने कारणे, पापे पेट भराय ।
ते नवि अनरथ दंड छे, एम खाखे जिनराय ॥ ॥

ढाल, वेलगो रहे वरणागीया, ए देशी

नेक नजर करो नाथजी, जेम जाये दालिद्र आजथी जीहो ने ।
अमे अक्षत उज्वल तंदुले, करी पूजा कहुं जिन आगले जीहो ने ॥
आवी पहोतो छु पंचम कालमां, संसार दावानल झालमां जीहो
नेक नजर करो नाथजी ॥१॥
ध्यान आरत रौद्र मंडीयो, ठाम ठाम अनर्थे दंडीयो जीहो ने ।
उपदेश में पापनो दाखियो, कूडी वाते थयो हुं साखियो जीहो ॥२॥
आरंभ कर्या घणी भातिना, में युद्ध कर्या केइ जातिनां जीहो ने ।
रथ मूशल माग्यां आपियां, जतां पंथे ते तरुवर चांपीया जीहो ॥३॥
वली वादे ते वृषभ दोडावीया, करी वातोने लोक लडावीया जीहो ।
[illegible] जेमअनीतिपुरेव्यवहारियोजीहो॥४॥

तिहां चार धूतारा वाणीया, भरे पेट ते पापे प्राणीया जीहो ने।
रणघंटा वचन जो पालीयुं तो रत्नचूडे धन वालीयुं जीहो ॥५॥
तेम अरिहानी आणा पालशुं, व्रत लेइने पाप पखालशुं जीहो ने।
अतिचार ते पांच निवारशुं, गुरुशिक्षा ते दिलमां धारसुं जीहो॥६॥
वीरसेन कुसुमसिरि दो जणां, व्रत पालीथयां सुखीयां घणां जीहो।
अमे पामीए लीला विलासने, शुभवीर प्रभुने शासने जीहो ने॥७॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवंत्यक्त्वा गमिष्यंति वै॥
मोक्षं तद्‌ व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं॥

॥ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा॥

नवम व्रते दशम दर्पणपूजा

दोहा

दशमी दर्पण पूजना, धरी जिन आगल सार।
आदर्शरूप निहालवा, कहुं शिक्षाव्रत चार॥ १ ॥

ढाल, सुण गोवालणी, ए देशी

हुं सुखकारी ! आ संसार थकी जो मुजने उद्धरे।

हे उपकारी ! ए उपकार तुमारो कदिय न वीसरे ॥
नवमे सामायिक उच्चरिये, अमे दर्पणनी पूजा करिये ।
निज आतमरूप अनुसरिये,समता सामायक संवरिये ॥हे०॥१॥
सामान्ये जिहां मुनिवर भाले, अतिचार पांच एहना टाले ।
साधु परे जीवदया पाले, निज घर चैत्ये पौशधशाले॥हे०॥२॥
राजा मंत्री ने व्यवहारी, घोडा रथ हाथी शणगारी ।
वाजित्र गीत आगल पाला, परशंसे षट्दर्शनवाला ॥हे०॥३॥
एणी रीते गुरु पासे आवी, करे सामायिक समता लावी ।
घडीवेसामायिक उच्चरिये,वली बत्रीश दोषने परिहरिये॥हे०॥४॥
लाख ओगणसाठ वाणु कोडी,पचवीश सहस नवसें जोडी।
पचवीश पल्योपम झाझेरु, ते बांधे आयु सुर केरु ॥हे०॥५॥
सामायिक व्रत पाली जुगते, ते भव धनमित्र गयो मुगते ।
आगम रीते व्रत हुं पालुं, पंचम गुणठाणु अजुवालुं॥हे०॥६॥
तुमे ध्येयरूप ध्याने आवो, शुभ वीर प्रभु करुणा लावो ।
इहिवार अचल सुख साधंते,घडी दोय मलो जोएकांते॥हे०॥७॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वैं ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय दर्पणं यजामहे स्वाहा ।

दशम व्रते एकादश नैवेद्यपूजा

दोहा

विग्रह गति दूरे करी, आपो प अणाहार ।
इम कही जिनवर पूजीए, ठवी नैवेद्य रसाल ॥ १ ॥

ढाल, तेजे तरणिथी वड़ो रे, ए देशी

दशमे देशावकाशिके रे, चउद नियम संक्षेप ।
विस्तारे प्रभु पूजता रे, न रहे कर्मनो लेश हो जिनजी ॥
भक्ति सुधारस घोलनो रे, रग घन्यो हे चोलनो रे,
पलक न छोड्यो जाय ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
एक मुहूरत दिन रातनु रे, पक्ष मास परिणाम ।
संवत्सर इच्छा लगे रे, ते रीते पच्चक्खाण हो जिनजी ॥भ०॥२॥
बारे व्रतना नियमनो रे, संक्षेप एहमा थाय ।
मंत्र बले जेम वींछीनुं रे, झेर ते डखे जाय हो जिनजी ॥भ०॥३॥
गंठसी घरसी दीपसी रे, एहमा सर्व समाय ।
दीपक ज्योते देखतां रे, चदविड़सग राय हो जिनजी ॥भ०॥४॥
पण अतिचार निवारीने रे, धनद गयो शिवगेह ।
श्री शुभवीरसुं माहरे रे, साचो धर्म सनेह हो जिनजी ॥भ०॥५॥

काव्य और मंत्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुतेः वर्णिताः ।
आनंदादयदिग्मिताः सुरभवंत्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय यजामहे नैवेद्यं स्वाहा ।

एकादश व्रते द्वादश ध्वजपूजा

दोहा

पडह वजावी अमारीनो, ध्वज बांधो शुभ ध्यान ।
पोसह व्रत अगियारमे, ध्वज पूजा सुविधान ॥ १ ॥

ढाल, वगडानो वासी रे मोर शीद मारीयो, ए देशी

प्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीये रे
वातने विसारी रे विकथा चारनी ।
प्राये सुरगति साधे पर्वने दिवसे रे,
धर्मनी छाया रे तरु सहकारनी
शीतल नहिं छाया रे आ संसारनी,
[illegible] रे आ संसारनी ।

काचनी काया रे छेवट छारनी,
साची एक माया रे जिन अणगारनी ॥१॥
॥ ए आंकणी ॥

एंशी भांगे देश थकी जे पोसह रे,
एकासण कह्युं रे श्री सिद्धांतमां।
निज घर जईने जयणा मंगल बोली रे,
भाजन मुख पुंजी रे शब्द विना जमे ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥ २ ॥

सर्वथी आठ पहोरनो चउविहार रे,
संथारो निशि रे कंवल डाभनो।
सांचे परवी गौतम गणधर बोल्या रे,
पूरव आंक तीस गुणो छे लाभनो ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥ ३ ॥

कार्तिक शेठे पाम्यो हरि अवतार रे,
श्रावक दश वीस वरसे स्वर्गे गया।
प्रेतकुमार विराधक भावने पाम्यो रे,
देवकुमार व्रत रे आराधक थया ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥ ४ ॥

पण अतिचार तजी जिनजी व्रत पालुं रे,
तारक नाम सांचुं रे जो मुज तारशो।
नाम धरावो निर्यामक जो नाथ रे,

भवोदधि पार रे तो उतारशो ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥ ५ ॥

सुलसादिक नव जणने जिनपद दीधां रे,
करमे ते वेला रे वसिवो वेगलो ।
शासन दीठुं ने वली लाग्युं मीठुं रे,
आशाभर आव्यो रे स्वामी एकलो ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥ ६ ॥

दायक नाम धराओ तो सुख आपो रे,
सुरतरुनी आगे रे शी बहु मागणी ।
श्री शुभवीर प्रभुजी मोंघे काले रे,
दीयंता दान रे सावाशी घणी ॥
॥ शी० ॥ कू० ॥ का ॥ सा० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिता ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्तवा गमिष्यन्ति वै ॥
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व, सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलस्वादं करोषि स्वयं ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय ध्वजं यजामहे स्वाहा ।

द्वादश व्रते त्रयोदश फलपूजा

दोहा

अतिथि कह्या अणगारने, संविभाग व्रत तास ।
फलपूजा करी तेरमी, मांगो फल प्रभु पास ॥ १ ॥

ढाल, भमरा ! भूधर शें नाव्या, ए देशी

उत्तम फलपूजा कीजे, मुनिने दान सदा दीजे ।
बारमे व्रत लाहो लीजे रे, श्रावक व्रत सुरतरु फलीयो ।
मनमोहन मेलो मलीयो रे ॥ श्रावक० ॥ १ ॥
देश काल श्रद्धा क्रमिये, उत्तर पारणे दान दिये ।
तेहमां पण नवि अतिचरिये रे ॥ श्रा० ॥ २ ॥
विनति करी मुनिने लावे, मुनि बेसण आसण ठावे ।
पडिलाभे पोते भावे रे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥
दश डगला पुंठे जावे, मुनिदाने जे नवि आवे ।
व्रतधारी ते नवि खावे रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥
मुनि अछते जमे दिशि देखी, पोसह पारणविधि भाखी ।
धर्मदास गणी छे साखी रे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥
एकादश पडिमा वहिया, सुर उपसर्गे नवि पडिया ।
कामदेव प्रभुमुख चडिया रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥
गुणकर शेठ गया मुक्ते, हुं पण पालुं ए युक्ते ।
श्री शुभवीर प्रभु भक्ते रे ॥ श्रा० ॥ ७ ॥

अथ सर्वोपरि गीत

निशदिन जोउं वाटडी, घरे आवो ढोला-ए देशी

विरतिपणे हुं विनवुं, प्रभु अम घर आवो ।
सेवक स्वामी भावथी, नथी कोइनो दावो ॥ वि० ॥१॥
खील विलासी मुक्तिना, मुज तेह देखावो ।
मन मेलो मेली करी, फोगट ललचावो ॥ वि० ॥२॥
रंग रसीला रीझीने, त्रिशला सुत आवो ।
थाये सेवक तुम आवते, चौद राजमा चावो ॥ वि० ॥३॥
पंथ वच्चे प्रभुजी मलया, हजु अरधे जावो ।
निर्भय निजपुर पामवा, प्रभु पाको वोलावो ॥ वि० ॥४॥
श्रेणी चढी शैलेशीए, परिशाटन भावो ।
एक समय शिवमंदिरे, ज्योते ज्योत मिलावो ॥ वि० ॥५॥
नाटक दुनिया देखते, नवि होय अभावो ।
श्री शुभवीरने पूजतां घेर घेर वधावो ॥ वि० ॥६॥

काव्य और मन्त्र

श्रद्धासंयुतद्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिता ।
आनंदादय दिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यन्ति वै ।
मोक्षं तद् व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु ।
येन त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोपि स्वयं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥

कलश–राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥
वीर मुखे व्रत उच्चरिया जेम, नर नारी समुदायो ।
एकसो चोवीश अतिचार प्रमाणे, गाथाए भाव बनायो रे ॥म॥१॥
व्रतधारीने पूजानो विधि, गणधर सूत्र गुंथायो ।
निर्भय दावे शिवपुर जावे, जेम जग माल छपायो रे ॥म॥२॥
तपगच्छ श्री विजयसिंहसूरि ना, सत्यविजय सत्य पायो ।
कपूरविजय गुरु खीमाविजय तस जसविजयो मुनिरायो रे ॥म॥३॥
श्री शुभविजय सुगुरु सुपसाये, श्रुत चिंतामणि पायो ।
विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार रचायो रे ॥म॥४॥
कष्ट निवारे वाञ्छित सारे, मधुरे कंठे मिलायो ।
राजनगरमा पूजा मणावि, घर घर उत्सव थायो रे ॥म॥५॥
मुनि॰ वसु॰ नाग॰ शशि॰ संवत्सर, दीवाली दिन गायो ।
पंडित वीरविजय प्रभुध्याने, जग जश पडह वजायो रे ॥म॥६॥

श्री पैंतालीस आगम पूजा

[यह पूजा अष्ट प्रकारी पूजा की विधि के अनुसार ही पढ़ाई जाती है। अतः इस पूजा की विधि अष्ट प्रकारी पूजा की विधि के अनुसार ही है।]

प्रथम जलपूजा

दोहा

श्री शंखेश्वर पासजी, साहेब सुगुण गरिठ्ठ ।
शुभगुरु चरण पसायथी, श्रुतनिधि नगरे दीठ ॥ १ ॥
शासन नायक वंदिये, त्रिशला मात मल्हार ।
जस मुखथी त्रिपदी लही, सूत्र रचे गणधार ॥ २ ॥
सुधर्मा गणधर तणी, रचना वरते सोय ।
द्वादश अंग थकी अधिक, सूत्र नहीं जग कोय ॥ ३ ॥
आगे आगम बहु हतां, अर्थ विदित जगदीश ।
काल वशे संप्रति रह्यां, आगम पीस्तालीश ॥ ४ ॥
आथमते केवल रवि, मन्दिर दीपक ज्योत ।
पंचम आरे प्राणीने, आगमनो उद्योत ॥ ५ ॥
प्रथम ज्ञान पछी दया, दशवैकालिक वाण ।
वस्तु तत्त्व सवि जाणीए, ज्ञानथी पद निर्वाण ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥

कलश–राग धन्याश्री

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥
वीर मुखे व्रत उच्चरियां जेम, नर नारी समुदायो ।
एकसो चोवीश अतिचार प्रमाणे, गाथाए भाव बनायो रे ॥म॥१॥
व्रतधारीने पूजानो विधि, गणधर सूत्र गुंथायो ।
निर्भय दावे शिवपुर जावे, जेम जग माल छपायो रे ॥म॥२॥
तपगच्छ श्री विजयसिंहसूरि ना, सत्यविजय सत्य पायो ।
कपूरविजय गुरु खीमाविजय तस जसविजयो मुनिरायोरे ॥म॥३॥
श्री शुभविजय सुगुरु सुपसाये, श्रुत चिंतामणि पायो ।
विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार रचायो रे ॥म॥४॥
कष्ट निवारे वांछित सारे, मधुरे कंठे मिलायो ।
राजनगरमां पूजा भणावि, घर घर उत्सव थायो रे ॥म॥५॥
मुनि॰वसु॰नाग॰शशि॰ संवत्सर, दीवाली दिन गायो ।
पंडित वीरविजय प्रभुध्याने, जग जश पडह वजायो रे ॥म॥६॥

—

श्री पैंतालीस आगम पूजा

[यह पूजा अष्ट प्रकारी पूजा की विधि के अनुसार ही पढ़ाई जाती है। अतः इस पूजा की विधि अष्ट प्रकारी पूजा की विधि के अनुसार ही है।]

प्रथम जलपूजा

दोहा

श्री शंखेश्वर पासजी, साहेब सुगुण गरिठ्ठ ।
शुभगुरु चरण पसायथी, श्रुतनिधि नगरे दीठ ॥ १ ॥
शासन नायक वंदिये, त्रिशला मात मल्हार ।
जस मुखथी त्रिपदी लही, सूत्र रचे गणधार ॥ २ ॥
सुधर्मा गणधर तणी, रचना वरते सोय ।
द्वादश अंग थकी अधिक, सूत्र नहीं जग कोय ॥ ३ ॥
आगे आगम बहु हतां, अर्थ विदित जगदीश ।
काल वशे संप्रति रह्यां, आगम पीस्तालीश ॥ ४ ॥
आथमते केवल रवि, मन्दिर दीपक ज्योत ।
पंचम आरे प्राणीने, आगमनो उद्योत ॥ ५ ॥
प्रथम ज्ञान पछी दया, दशवैकालिक वाण ।
वस्तु तत्त्व सवि जाणीए, ज्ञानथी पद निर्वाण ॥ ६ ॥

ज्ञानभक्ति करतां थकां, पूज्या जिन अणगार ।
ते कारण आगम तणी, पूजा भक्ति विशाल ॥ ७ ॥
ज्ञानोपकरण मेलीये, पुस्तक आगल सार ।
पीठ रची जिनबिंबने, थापीजे मनोहर ॥ ८ ॥
ज्ञान उदय अरिहा तणी, सांभली देशना सार ।
देव देवी नन्दीश्वरे, पूजा विविध प्रकार ॥ ९ ॥
तेम आगम हैडे धरी, पूजो श्री जिनचन्द ।
ध्येय ध्यान पद एकथी, पामो पद महानन्द ॥ १० ॥
न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूप दीप झलकार ।
अक्षत नैवेद्य फल तणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ११ ॥

ढाल, अने हांरे वहालोजी वाये छे वांसली—ए देशी

अने हां रे गंगा क्षीरसमुद्रना रे, जल कलशा भरी नर नार ।
ज्ञाने वडा श्रुतकेवली रे ॥
अ. न्हवण करो प्रभु वीरने रे, दृष्टिवादना भाषणहार ।ज्ञा०॥१॥
अ. पांच भेद छे तेहना रे, सांभलतां विकसे नाण ।ज्ञा०।
अ. परिकरमे सात श्रेणीओ रे, अठ्याशी सूत्र वखाण ।ज्ञा०॥२॥
अ. पूर्व गते चौद पूर्व छे रे, महामन्त्र ने विद्या मरेल ।ज्ञा०।
अ. जम्बूद्वेलंधर देवता रे, धरे पूर्व समुद्रनी वेल ।ज्ञा०॥३॥
अ. दश वस्तु विनयी भएया रे, पहेले पूरव उत्पाद ।ज्ञा०।
अ. वस्तु चौद अग्रायणी रे, अड वस्तु वीर्यप्रवाद ॥ज्ञा०॥४॥

अ. अस्तिप्रवादे अढार छे रे, चार वस्तु ज्ञानप्रवाद ।ज्ञा०।
अ. सत्यप्रवादे दोय वस्तु छे रे, सोल वस्तु आत्मप्रवाद ।ज्ञा०।५।
अ. कर्मप्रवादे त्रीश धारिये रे, वीश वस्तु पूरव पच्चक्खाण ।ज्ञा०।
अ. पन्नर विद्याप्रवादमां रे, चार वस्तु कही कल्याण ।ज्ञा०।६।
अ. प्राणावायमां तेर छे रे, तेर वस्तु क्रियाविशाल ।ज्ञा०।
अ. पणत्रीशे करी सोहतुं रे, चौदमुं लोकबिंदु सार ।ज्ञा०।७।
अ. पुंज मषी लखे त्रण दर्से रे, त्यासी गज सोल हजार ।ज्ञा०।
अ. श्री शुभवीरनां गणधररे, रचता त्रीजो अधिकार ।ज्ञा०।८।

दोहा

दश पूरव पूरण भणे, लब्धि क्षीराश्रव होय ।
तेणे जिनकल्प निवारियो, ज्ञान समो नहिं कोय ॥ १ ॥

गीत—मन मोहन मेरे, ए देशी

भेद चोथो हवे सांभलो, मन मोहन मेरे ।
दृष्टिवाद अनुयोग, मन मोहन मेरे ॥
दोय भेदे करी शीखियो म०, जंबू गुरु संयोग ।म०॥१॥
पंच भेदे चूलिका म०, पहेले पूर्वे चार ।म०।
चार ने आठ दश चूलिका म०, चोथा पूरव लगे सार ।म०॥२॥
दश पूरवे नथी चूलिका म०, नंदीसूत्र विचार ।म०।
दृष्टिवाद ए बारमुं म०, अंग हतुं सुखकार ।म०॥३॥

बार वरस दुकालिये म०, वारमुं अंग ते लीध ।म०।
संप्रति काले नवि पडे म०, एहनो काल प्रसिद्ध ॥म०॥४॥
मंदमति परमादथी म०, पूर्व गयां अविलंब ।म०।
श्री शुभवीर ने शासने म०, पूजो आगम जिनबिंब ॥म०॥५॥

काव्यम् उपजातिवृत्तम्

तीर्थोदकैर्मिश्रित चन्दनौघैः,
संसार–तापाहतये सुशीतैः ।
जरा–जनि–प्रान्त–रजोभिशान्त्यै,
तत्कर्म–दाहार्थमजं यजेऽहम् ॥१॥

द्रुतविलम्बित–वृत्तद्वयम्

सुरनदी–जलपूर्ण–घटैर्घनै–
र्घुसृण–मिश्रित–वारि–भृतैः परैः ।
स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं,
विमलता क्रियतां च निजात्मनः ॥२॥
जन–मनो–मणि–भाजन–भारया,
शमरसैक–सुधारस–धारया ।
सकल–बोध–कला–रमणीयकं,
सहज–सिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु–निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय चंदनपूजा

दोहा

हवे पीस्तालीश वरणवुं, कलियुगमां आधार।
आगम अगम अरथ भर्यां, तेहमां अंग अग्यार ॥ १ ॥

ढाल, इमनरागिणी—धन धन जिनवाणी, ए देशी

चंदन पूजा चतुर रचावो, नागकेतु परे भावो रे।
धन धन जिनवाणी ॥
राय उदायी प्रभुगुण गावे, पद्मावतीने रचावे रे ॥ध०॥१॥
काल सदा जे अरिहा थावे, केवल नाण उपावे रे ।ध०।
आचारांग प्रथम उपदेशे, नामनी भजना शेषे रे ॥ध०॥२॥
आचार रथ वहेता मुनि धोरी, बहुश्रुत हाथमां दोरी रे ।ध०।
पंच प्रकारे आचार वखाणे, गलिया बलन केम ताणे रे? ।ध०।३॥
दो श्रुतखंध आचारांग केरा, संखित अनुयोग द्वारा रे ।ध०।
संख्याती निर्युक्ति कहीश, अज्झयणा पणवीश रे ॥ध०॥४॥
पदनी संख्या सहस अढार, नित्य गणता अणगार रे ।ध०।
सुत्रकृतांगे भावजीवादी, त्रणसें त्रेसठ वादी रे ॥ध०॥५॥
अध्ययन ते त्रेवीश छे बीजे, अवर पूरव परे लीजे रे ।ध०।
दुगुणां पद हवे सघले अंगे, दश ठाणा ठाणांगे रे ॥ध०॥६॥

दश अध्ययने श्रुतखंध एको, इवे समवायांगे छेको रे ।धन०।
शत समवाय श्रुतखध एके, धारिये अर्थ विवेके रे ॥धन०॥७॥
भगवती पंचमुं अंग विशेषा, दस हजार उद्देशा रे ।धन०।
एकतालीश शतके शुभ वीरे, गौतम प्रश्न हजुरे रे ॥धन०॥८॥

दोहा

निर्युक्ति प्रतिपत्तिओ, सघले ते सम भाव ।
बीजी अर्थ प्ररूपणा, ते सवि जुजुआ भाव ॥ १ ॥

गीत—मुंबखडानी देशी

ज्ञाताधर्म वखाणीये रे; दश बोल्या तिहां वर्ग ।
प्रभु उपदेशिया ।

उंठ ते कोडी कथा कही रे, सांभलतां अपवर्ग ॥प्रभु०॥१॥
ओगणीश अध्ययने करी रे, बे श्रुतखंध सुभाव ।प्रभु०।
उपासक दशांगमां रे, दश श्रावकना भाव ॥प्रभु०॥२॥
अंतगडे अड वर्ग छे रे, अणुत्तरोववाइ त्रण वर्ग ।प्रभु०।
एक सूत्रे मुक्ति वर्या रे, बीजे गया जे सर्ग ॥प्रभु०॥३॥
प्रश्नव्याकरण सूत्रमां रे, दश अध्ययन वखाण ।प्रभु०।
सूत्र विपाके सांभले रे, वीश अध्ययन प्रमाण ॥प्रभु०॥४॥

वे श्रुतखंधे भाखिया रे, दुःख सुख केरा भोग ।प्रभु०।
एम एकादश अंगनी रे, भक्ति करो गुरुयोग ।।प्रभु०।।५।।
आगमने अवलंबतां रे, ओलखिये अरिहंत ।प्रभु०।
श्री शुभवीरने पूजतां रे, पामो सुख अनंत ।।प्रभु०।।६।।

काव्यम्–द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

जिनपतेर्वरगन्ध–सुपूजनं,
जनि–जरा–मरणोद्भव–भीतिहृत् ।
सकल–रोग–वियोग–विपद्धरं,
कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१॥
सहज–कर्म–कलङ्क–विनाशनै-
रमलभाव–सुवासन–चन्दनैः ।
अनुपमान–गुणावलि–दायकं,
सनज–सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु–निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्पपूजा

दोहा

अंग तणां उपांग जे, बार कह्यां भगवंत ।
गणधर पूरवधर तणी, रचना सुणिये संत ॥ १ ॥

ढाल, राग-सारग, हो धन्ना-ए देशी

ज्ञानावरण दूरे करो रे मित्ता, पामी अंग उपांग ।
फूल पगर पूजा रचो रे मित्ता, वीर जिनेश्वर अंग रे ॥
रंगीला मित्ता, ए प्रभु सेवोने ॥
ए प्रभु सेवो सानमां रे मित्ता, ज्ञान लहो भरपूर रे ।
रंगीरा मित्ता, ए प्रभु सेवोने ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
सामैयुं उववाइमां रे मित्ता, करतो कोणिक भूप ।
अंबड शिष्यने वरणव्या रे मित्ता, प्रश्न ते सिद्ध स्वरूप रे ॥
रंगीला मित्ता, ए प्रभु० ॥ २ ॥
रायपसेणी सूत्रमां रे मित्ता, सूर्याभनो अधिकार ।
जीवाभिगम त्रीजुं सुणो रे मित्ता, दश अध्ययन विचार रे ॥
रंगीला मित्ता; ए प्रभु० ॥ ३ ॥
श्यामसूरि रचना करी रे यित्ता, पन्नवणा महासूत्र ।
छत्रीश पद गुरु पासथी रे मित्ता, धारो अर्थ विचित्र रे ॥
रंगीला मित्ता, ए प्रभु० ॥ ४ ॥
जंबूदीव पन्नत्तिए रे मित्ता, जंबूद्वीप विचार
छट्ठा सूरपन्नतिमां रे मित्ता, रविमंडल ग्रह चार रे ॥
रंगीला मित्ता, ए प्रभु० ॥ ५ ॥
चंदपन्नत्ति पाहुडे रे मित्ता, ज्योतिष चक्र विशेष ।
आगम पूजो प्राणीया रे मित्ता, कहे शुभ वीर जिनेश रे ॥
रंगीला मित्ता, ए प्रभु० ॥ ६ ॥

दोहा

भव मंडलमें न देखीयो, प्रभुजीनो देदार ।
आगम पंथ लह्या विना, रझल्यो हुँ संसार ॥ १ ॥

गीत, वीर जिणंद जगत उपकारी–ए देशी

केतकी जाईनां फुल मंगावी, पूजो अंग उपांग जी ।
चंभी लीपी श्री गणधर देवे, प्रणमी भगवई अंग जी ॥के०॥१॥
आठमुं निरयावलि उपांगे, देवादिक अधिकार जी ।
कप्पवडंसग नवम उपांगे, दश अध्ययन उदार जी ॥के०॥२॥
पुप्फिया नामे उपांग छे दशमुं वली पुप्फचूलिया जाणजी ।
चारमुं वह्निदशा ए सघले, दश अध्ययन प्रमाण जी ॥के०॥३॥
गीतारथ मुख अमीय झरंतुं, आगम लाग्युं मीठ जी ।
दूर थइ लोकसन्ना छारी, तव प्रभु दर्शन दीठ जी ॥के०॥४॥
दर्शन थी जो दर्शन प्रगटे, विघटे भवजल पूर जी ।
भाव कुटुंबमें मंदिर महालुं, श्री शुभ वीर हजुर जी ॥के०॥५॥

काव्यम्–द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

सुमनसां गतिदायि विधायिनां,
सुमनसां निकरैः प्रभु–पूजनम् ।
सुमनसां सुमनो–गण–संगिना,
जन विधेहि निधेहि मनोऽर्चने ॥ १ ॥

समय–सार–सुपुष्प–सुमालया,
सहज–कर्म–करेण विशोधया
परम–योग–बलेन वशीकृतं,
सहज–सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु–
निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय कुसुमानि यजामहे स्वाहा

चतुर्थ धूप पूजा

दोहा

आज पयन्ना छे घणा, पण लही एक अधिकार ।
दश पयन्ना तिणे गण्या, पीस्तालीश मझार ॥१॥

ढाल, साचुं बोलो शामलीया–ए देशी

एक जन श्रुत रसियो बोले रे, हो मन मान्या मोहनजी ।
प्रभु ताहरे नहिं कोइ तोले रे, हो मन मान्या मोहनजी ॥
अमे धूपनी पूजा करीए रे हो०,
दुर्गंध अनादिनी हरीए रे हो० ॥ १ ॥
तुम दर्शन लागे प्यारुं रे हो०,
अंते छे शरण तुमारुं रे हो० ।

चउसरण पयन्नुं पहेलुं रे हो०,
सामे शरण करुं के पहेलुं रे हो० ॥ २ ॥
वळी धर्म अनोपम वीजुं रे हो०,
आउर पच्चक्खाण ते त्रीजुं रे हो० ।
चोथुं तो भक्तपरिज्ञा रे हो,
परिहर शुं चारे संज्ञा रे हो० ॥ ३ ॥
संथारा पयन्नो सीधो रे हो०,
सुकोशल मुनिए कीधो रे हो० ।
भाखी तंदुलवियाली रे हो०,
तुमे गर्भनी वेदना टाली रे हो० ॥ ४ ॥
अमने पण दुःख ए महोटुं रे हो०,
सन्मुख न जुओ ते खोटुं रे हो० ।
कांइ महेर नजरथी देखो रे हो०,
शुं रागीने उवेखो रे हो० ॥ ५ ॥
रंग लाग्यो चोल मजीठे रे हो०,
नवि जाये दावरण दीठे रे हो० ।
आमे रागी थइने कहीशुं रे हो०,
शुभ वीर ने चरणे रहीशुं रे हो ०॥ ६ ॥

दोहा

प्रभु चरणे रहेतां भजे, ज्ञान सुधारस कंद ।
जिनवाणी रसिया मुनि, पामे परमानंद ॥ १ ॥

गीत, राग मालवी, वंदो वीर जिनेश्वर राया, ए देशी

त्रिशलानंदन वंदन कीजे, ज्ञान अमृतरस पीजे रे।
छठ्ठो चंदाविज्झ पयन्नो, विनये वडो मुनि धन्नो रे॥
॥ त्रिशला० ॥ १ ॥

गुरुविनये सुकलाए वाधे, राधावेध ते साधे रे।
देविन्द थइ पयन्ने रसिया, संथारे मुनि वसिया रे॥
॥ त्रिशला० ॥ २ ॥

मरण समाधि पयन्ने भावे, प्रभु साथे लय लावे रे।
महापच्चक्खाण पयन्नो गावे, पाप सकल वोसिरावे रे॥
॥ त्रिशला० ॥ ३ ॥

गणिविज्जाए भाव घणेरा, जाणे मुनि गंभीरा रे।
साधे कार्य लगननी होरा, श्री शुभवीर चकोरा रे॥
॥ त्रिशला० ॥ ४ ॥

काव्यम्
द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

अगरु-मुख्य-मनोहर-वस्तु,
स्वनिरुपाधि-गुणौघ-विधायिना।
प्रभु-शरीर-सुगन्ध-सुहेतुना,
रचय धूपन-पूजन-मर्हतः ॥ १ ॥
निज-गुणाक्षयरूप-सुधूपनं,
स्वगुण-घात-मल-प्रविकर्षणम्।

विशद्–बोधमनन्त–सुखात्मकं,
सहज–सिद्धमहं परिपूजये ।

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम दीपकमाल पूजा

दोहा

ज्ञानावरणी तिमिरने, हरवा दीपक माल ।
ज्योतसे ज्योति मिलाइए, ज्ञान विशेष विशाल ॥ १ ॥

ढाल, चन्द्रप्रभु जिन चन्द्रमा रे, ए देशी

जगदीपकनी आगले रे, दीपक नो उद्योत ।
करतां पूजा पांचमी रे, भाव दीपक नी ज्योत हो जिनजी ॥
तेजे तरणिथी वडो रे, दोय शिखानी दीवडो रे,
झलके केवल ज्योत ॥१॥

छेदसूत्र जिन भाखियां रे, निशीथ धुर सिद्धांत ।
आलोयण मुनिराजने रे, धारे गंभीरवंत हो जिनजी ॥
ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥२॥

जीतकल्पमां सेवता रे, चरण करण अणगार ।
पंचकल्प छेदे भण्यां रे, पंच भला व्यवहार हो जिनजी ॥
ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥३॥

व्यवहार छेदे दाखिया रे, उत्सर्ग ने अपवाद ।
दशाकल्पमा दश दशा रे, उपदेश्यो अप्रमाद हो जिनजी ॥
ते० ॥ दो० ॥ भ० ॥४॥

छेद महानिशीथमां रे, भाखे जगनो नाथ ।
उपधानादि आचारनी रे, वात गीतारथ हाथ हो जिनजी ॥
ते० ॥ दो० ॥ भ० ॥५॥

धर्म तीर्थ मुनि वंदना रे, वरते श्रुत आधार ।
शासन श्री शुभ वीरनु रे, एकवीश वरस हजार हो जिनजी ॥
ते० ॥ दो० ॥ भ० ॥६॥

दोहा

श्रुतज्ञानावरणी तणे, तुं प्रभु टालणहार ।
क्षणमें श्रुतकेवली कार्या, देइ त्रिपदी गणधार ॥ १ ॥

गीत, तोरण आइ क्युं चले रे, ए देशी

धन धन श्री अरिहंत ने रे, जेणे ओलखाव्यो लोक सलुणा ।
ते प्रभुनी पूजा विना रे, जन्म गुमाव्यो फोक सलुणा ॥जेम०॥१॥

जेम जेम अरिहा सेवीये रे, तेम तेम प्रगटे ज्ञान स० ।
ज्ञानीना बहु मानथी रे, ज्ञान तणां बहु मान स० ॥जेम०॥२॥

ज्ञान विना आडंबरी रे, पामे जग अपमान स० ।
कपट क्रिया जन रजने रे, मौनवृत्ति बग ध्यान स० ॥जेम०॥३॥

ढाल, राग-सारंग हम मगन भये प्रभु ध्यानमें-ए देशी

जिनराजनी पूजा कीजीये ॥ ए टेक ॥
जिन पडिमा आगे प्रभुरागे, अक्षत पूजा कीजीये ।
अक्षत पद अभिलाष धरीने, आगमनो रस पीजीये ॥जि०॥१॥

प्रभु पडिमा देखी प्रतिबुद्धा, पूरव थी उद्धरीजीये ।
दशवैकालिक दश अध्ययने, मनक मुनि हित कीजीये ॥जि०॥२॥

उत्तराध्ययन ते बीजुं आगम, मूल सूत्रमा गणीजीये।
अध्ययनो छत्रीश रसालां, सद्गुरु संगे सुणीजीये ॥जि०॥३॥

सोल प्रहर नी देशना देता, चतुर चकोरा रीझीये ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीये ॥जि०॥४॥

दोहा

ज्ञान उदय करवा भणी, तप करता जिनदेव ।
ज्ञाननिधि प्रगटे तदा, समवरण सुर सेव ॥ १ ॥

राग काफी, अरियनमें गुलभारा-ए देशी

आगम छे अविकारा, जिणंदा तेरा आगम छे अविकारा ।
ज्ञान ज्योति प्रगटे घट मांहे, जेम रविकिरण हजारा जि० ।
मिथ्यात्वी दुर्नय सविकारा, तगतगता नहिं तारा ॥जि०॥१॥

त्रीजुं ओघनिर्युक्ति वखाणुं, मुनिवरना आचारा। जि०।
चोथुं आवश्यक अनुसरतां, केवली चंदनबाला ॥जि०॥२॥
अल्पागम तप क्लेश ते जाणो, बोले उपदेशमाला। जि०।
ज्ञानभक्ति जिनपद निपजावे; नामे जयंत भूपाला ॥जि०॥३॥
सायरमां मीठी मेहेरावल, शृंगी मत्स्य आहारा । जि०।
शरण विहीना दीना मीना, ओर ते सायर खारा ॥जि०॥४॥
पंचम काल फणी विषज्वाला, मन्त्र मणि विषहारा। जि०।
श्री शुभवीर जिनेश्वर आगम, जिनपडिमा जयकारा ॥जि०॥५॥

काव्यम्-द्रुतविलम्बित-वृत्तद्वयम्

क्षितितलेऽक्षत-शर्म-निदानं,
गणिवरस्य पुरोऽक्षत-मंडलम्।
क्षत-विनिर्मित-देह-निवारण,
भव-पयोधि-समुद्धरणोद्यतम् ॥ १ ॥
सहज-भाव-सुनिर्मल-तंदुलै-
र्विपुल-दोषविशोधक-मंगलैः।
अनुपरोध-सुबोध-विधायकं,
सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

ढाल, राग-सारंग हम मगन भये प्रभु ध्यानमें-ए देशी

जिनराजनी पूजा कीजीये ॥ ए टेक ॥
जिन पडिमा आगे प्रभुरागे, अक्षत पूजा कीजीये ।
अक्षत पद अभिलाष धरीने, आगमनो रस पीजीये ॥जि०॥१॥

प्रभु पडिमा देखी प्रतिबुद्धा, पूरव थी उद्धरीजीये ।
दशवैकालिक दश अध्ययने, मनकमुनि हित कीजीये ॥जि०॥२॥

उत्तराध्ययन ते बीजुं आगम, मूल सूत्रमां गणीजीये।
अध्ययनो छत्रीश रसालां, सद्गुरु संगे सुणीजीये ॥जि०॥३॥

सोल प्रहर नी देशना देतां, चतुर चकोरा रीझीये ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीये ॥जि०॥४॥

दोहा

ज्ञान उदय करवा भणी, तप करता जिनदेव ।
ज्ञाननिधि प्रगटे तदा, समवरण सुर सेव ॥ १ ॥

राग काफी, अखियनमें गुलझारा-ए देशी

आगम छे अविकारा, जिणंदा तेरा आगम छे अविकारा ।
ज्ञान ज्योति प्रगटे घट मांहे, जेम रविकिरण हजारा जि० ।
मिथ्यात्वी दुर्नय सविकारा, तगतगता नहिं तारा ॥जि०॥१॥

दोहा

ए पीस्तालीश वर्णव्या, आगम जिनमत मांहि ।
मणुआ जन्म पामी करी, भक्ति करो उत्साही ॥ १ ॥

गीत, राग-वसंत फाग—वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये-ए देशी

आगमनी आशातना नवि करीये, नवि करीये रे नवि करीये ।
श्रुतभक्ति सदा अनुसरीये, शक्ति अनुसार ॥ आ० ॥ १ ॥
ज्ञान विराधक प्राणीया मतिहीना, ते तो परभव दुःखिया दीना ।
भरे पेट ते पर आधीना, नीच कुल अवतार ॥ आ० ॥ २ ॥
अंधा लूला पांगुला पिंडरोगी, जनम्या ने मात वियोगी ।
संताप घणो ने जोगी, योगी अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥
मूंगा ने वली बोबडा धनहीना, प्रिया पुत्र वियोगे लीना ।
मूरख अविवेके भीना, जाणे रणनुं रोझ ॥ आ० ॥ ४ ॥
ज्ञान तणी आशातना करी दूरे, जिन भक्ति करो भरपूरे ।
रहो श्री शुभ वीर हजुरे, सुख मांहे मगन्न ॥ आ० ॥ ५ ॥

काव्यम्—द्रुतविलम्बित—वृत्तद्वयम्

अनशनं तु ममास्त्विति–बुद्धिना,
रुचिकरभोजन–संचित–भोजनम् ।
प्रतिदिनं विधिना जिनमन्दिरे,
शुभमते बत ढौकय चेतसा ॥ १ ॥

सप्तम नैवेद्य पूजा

दोहा

नैवेद्य पूजा सातमी, सात गति अपहार।
सात राज ऊरध जइ, वरीए पद अणाहार ॥ १ ॥

ढाल, विमलाचल वेगे वधावो--ए देशी

नित्य जिनवर मंदिर जइये, मेवा मीठाई थाल में लहीये।
नैवेद्य नी पूजा करीये, तेम ज्ञाननी आगल धरीये रे।
श्रुत आगम सुंदर सेवो, मन मंदिर आगम दीवो रे॥

श्रुत० ॥ १ ॥

पहेलुं अनुयोग दुवारे, साते नय भंग प्रकारे।
निक्षेपानी रचना सारी, गीतारथ वचने धारी रे ॥

श्रुत० ॥ मन० ॥ २ ॥

बीजुं श्रुत वंदी वंदी, सुणतां दिल होय आनंदी।
सवि सूत्र तणो सरवालो, जल्पे त्रिशलानो जायो रे ॥

श्रुत० ॥ मन० ॥ ३ ॥

मति आदि पंच प्रकार, भाख्या छे ज्ञान अधिकार।
बहुलां दृष्टांत देखाडी, शुभ वीरे रीत ओलखाडी रे ॥

श्रुत० ॥ मन० ॥ ४ ॥

तिहां राज्य ऋद्धि परिकर रंगे; आगम सुणता सद्गुरु संगे ।
आगम शुं रागवली घरता, जिन आगम जिनपूजा करता ॥हो०।४॥
सिद्धांत लखावीने पूजे, तेथी कर्म सकल दूरे ध्रूजे ।
लहे केवल चरण धर्म पामी, शुभ वीर मले जी विश्रामी।।हो०॥५॥

दोहा

केवल नाण लही करी, पामी अंतर झाण ।
शैलेशीकरणे करी, पामो अविचल ठाण ॥ १ ॥

गीत, राग पूर्वी—घडी घडी सांभरे सांइ सलुणा—ए देशी

नित नित सिद्ध भजो भवि भावे,
रूपातीत जे सहज स्वभावे नित नित सिद्ध०।
ज्ञान ने दर्शन दोय विलासी,
साकार उपयोगे शिव जावे । नि० ॥ १ ॥
कर्म वियोगी अयोगी केरे,
चरमसमय एक समय सिधावे । नि० ।
निश्चय नयवादी एम बोले,
व्यवहारे समयांतर लावे । नि० ॥ २ ॥
अगुरु लघु अवगाहना रूपे,
एक अवगाह अनंत वसावे । नि० ।

कुमत-बोध-विरोध-निवेदकै-
विहित-जाति-जरा-मरणांतकैः ।
निरशनैः प्रचुरात्म-गुणालयं,
सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फलपूजा

दोहा

ज्ञानाचारे वरततां, ज्ञान लहे नर नार ।
जिन आगमने पूजतां, फलथी फल निरधार ।

ढाल, सुण गोवालणी—ए देशी

हो साहिबजी, परमातम पूजानुं फल मुज आपो ।
हो साहिबजी, लाखेणी पूजा रे ए फल नापो ॥
उत्तम उत्तम फल हुं लावुं, अरिहानी आगल मूकावुं ।
आगमविधि पूजा विरचावुं, ऊभो रहीने भावना भावुं ॥हो०॥१॥
जिनवर जिन-आगम एक रूपे, सेवंतां न पडो भवकूपे ।
आराधन फल एहनां कहीये, आ भवमांहे सुखीया थईये॥हो०॥२॥
परभव:सुरलोके ते जावे, इन्द्रादिक आस्त्दर सुख पावे ।
निहां परा जिनपूजा विरचावे, उत्तमफलमां जइ उपजावे॥हो०॥३॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्म-जरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते वीरजिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

फलश

गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ।
आगम वाणी अमीय सरोवर, झीलत रोग घटायो ।
मिथ्यात्व मेल उतारी शिर पर, आणा मुकुट धरायो रे ॥
॥ महा० ॥१॥
तपागच्छ श्री सिंहसूरि ना, सत्यविजय बुध गायो ।
कपुरविजय शिष्य खिमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥
॥ महा० ॥२॥
तास शिष्य संवेगी गीतारथ, श्री शुभविजय सवायो ।
तास शिष्य श्री वीरविजय कवि, ए अधिकार बनायो रे ॥
॥ महा० ॥३॥
राजनगरमें रहिय चोमासुं अज्ञान हीम हठायो ।
सूत्र अर्थ पीस्तालीश आगम, संघ सुणी हरखायो रे ॥
॥ महा० ॥४॥
अढारशें एकाशी मागशिर, मौन एकादशी ध्यायो ।
श्री शुभ वीर जिनेश्वर आगम, संघने तिलक करायो रे ॥
॥ महा० ॥५॥

फरसित देश प्रदेश असखा,
सुदर ज्योतसे ज्योत मिलावे । नि० ॥ ३ ॥
आधि व्याधि विघटी भव केरी,
गर्भावास तणा दुःख नावे । नि० ।
एक प्रदेशमा सुख अनंतु,
ते पण लोकाकाशे न मावे । नि० ॥ ४ ॥
परमातम रमणीनो भोगी,
योगीश्वर पण जेहने ध्यावे । नि० ।
फल पूजार्थी ए फल पावे,
श्री शुभ वीर वचन रस गावे । नि० ॥ ५ ॥

काव्यम्—द्रुतविलम्बित—वृत्तद्वयम्

शिवतरो फलदान-परैर्नरै-
र्वर-फलैः किल पूजय तीर्थपम् ।
त्रिदशनाथ-नत-क्रम-पङ्कज,
निहत-मोह-महीधर-मण्डलम् ॥ १ ॥

शम-रसैक-सुधारस-माधुरै-
रनुभवाख्य-फलैरभय-प्रदैः ।
अहित-दुःखहरं विभव-प्रदं,
सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

सदा आठ महा पाडिहारे समेता,
सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥३॥
कर्या घातियां कर्म चारे अलग्गां,
भवोपग्रही चार जे छे विलग्गां।
जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे,
नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामे ॥४॥

ढाल, उलालानी देशी

तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी।
देशना अमृत वरसाता, निज वीरज वड वीरो जी ॥१॥

उलालो

वर अक्षय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता।
निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरण थिरता वासता ॥
जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता।
जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक जनने थोभता ॥२॥

ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

त्रीजे भव वर स्थानक तप करी, जेणे बांध्युं जिन नाम।
चोसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे।

श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय रचित

श्री नवपद पूजा

प्रथम श्री अरिहंत पद पूजा

काव्यम्, उपजातिवृत्तम्

उप्पन्नसण्ण-महोमयाणं, सप्पाडिहेरासण-संठियाणं ।
सद्देसणा-णंदियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

नमोऽनंत संत प्रमोद प्रदान-
प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ।
थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा,
सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥१॥
कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे,
भलां भव्य नवपद ध्यानेन तेणे ।
करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले,
सदा वासियो आतमा तेणे काले ॥२॥
जीके तीर्थंकर कर्म उदये करीने,
दिये देशना भव्यने हित धरीने ।

---

१. इस पूजा की विधि पृष्ठ ५३-५४ पर लिखी है ।

सदा आठ महा पाडिहारे समेता,
सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥३॥
कर्या घातियां कर्म चारे अलग्गां,
भवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ।
जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे,
नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामे ॥४॥

ढाल, उलालानी देशी

तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी ।
देशना अमृत वरसाता, निज वीरज वड वीरो जी ॥१॥

उलालो

वर अक्षय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ।
निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरण थिरता वासता ॥
जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ।
जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक जनने थोभता ॥२॥

ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

त्रीजे भव वर स्थानक तप करी, जेणे बांध्युं जिन नाम ।
चोसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ।

भविका सिद्धचक्र पद वंदो, जेम चिरकाले नंदो रे ॥
भविका, सिद्धचक्र० ॥१॥

जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवालुं ।
सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टालुं रे ॥
भविका, सिद्धचक्र ॥२॥

जे तिहुं नाण समग्ग उप्पन्ना, भोगकरम क्षीण जाणी ।
लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जनने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥
भविका, सिद्धचक्र० ॥३॥

महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सत्थवाह ।
उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उत्साह रे ॥
भविका, सिद्धचक्र० ॥४॥

आठ प्रातिहारज जस छाजे, पांत्रीश गुणयुत वाणी ।
जे प्रतिबोध करे जग जनने, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥
भविका, सिद्धचक्र० ॥५॥

ढाल

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ।
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे ॥१॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइ रे ।
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥ वीर० ॥२॥

श्री अरिहंत पद काव्यम्—इन्द्रवज्रा वृत्तम्

जिणंतरंगारि-गणे सुनाणे, सप्पाडिहेराइसय-प्पहाणे।
संदेह-संदोह-रयं हरंते, झाएह निच्चंपि जिणेरहंते ॥१॥

नीचे नुं काव्य तथा पाठ प्रत्येक पूजा दीठ कहेवो, त्यार पछी ते ते पूजानो मंत्र भणवो।

काव्यम—द्रुतविलम्बित-वृत्तम्

विमलकेवल-भासन-भास्करं, जगति जन्तु-महोदयकारणं।
जिनवरं बहुमान-जलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ।१।
स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलशनीरे।
आपणां कर्ममल दूर कीधां, तेणे ते विबुध ग्रथे प्रसिद्धा ।२।
हर्ष धरी अप्सरा वृंद आवे, स्नात्र करी एम आशिष पावे।
जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ।३।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते अर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा।

द्वितीय श्री सिद्धपद पूजा

काव्यम्—इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

सिद्धाणमाणंद-रमा-लयाणं, नमो नमोऽणंत चउक्कयाणं।

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

करी आठ कर्म क्षये पार पाम्या
जरा जन्म मरणादि भय जेणे वाम्या।
निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा,
थया पार पामी सदा सिद्ध बुधा ॥ १ ॥
त्रिभागोन--देहावगाहात्मदेशा,
रह्या ज्ञानमय जातवर्णादि लेश्या।
सदानंद सौख्यश्रिता ज्योतिरूपा,
अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

ढाल, उलालानी देशी

सकल करम मल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी।
अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्ति भूपो जी ॥१॥

उलालो

जे भूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्तपणे करी।
स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनंता आदरी ॥ १ ॥
सुस्वभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्ध साधन पर भणी।
मुनिराज मानस हंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ २ ॥

ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

समय पएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग वशेष।

अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥१॥

पूर्व प्रयोग ने गति परिणामे, बन्धन छेद असंग।
समय एक ऊर्ध्व गति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥

निर्मल सिद्धशिलानी उपरे, जोयण एक लोगंत।
सादि अनन्त तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥३॥

जाणे पण न शके कही पुरगुण, प्राकृत तेम गुण जास।
उपमा विण नाणी भव मांहे, ते सिद्ध दियो उल्लासे रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥

ज्योतिशुं ज्योति मली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि।
आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥५॥

ढाल

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणी रे।
ते ध्यातां निज आतमा, होये सिद्ध गुण खाणी रे ॥
वीर जिनेश्वर उपदेशे ॥१॥

काव्यम् श्री सिद्धपद

दुट्ठट्ठ-कम्मावरण-प्पमुक्के, अनन्त-नाणाइ-सिरीचउक्के।

समग्ग-लोगग्ग-पयत्थसिद्धे, झाएह निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥१॥
विमलकेवलभासनभास्करं जगति जन्तुमहोदकारणं ।
जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करंताजगद्‌गुरुशरीरे, सकलदेवे विमल कलशनी रे ।
आयणां कर्ममल दूर कीधां, तेणेते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धां ॥३॥
हर्षधरी अप्सरा वृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरी जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते सिद्धाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय श्री आचार्यपद पूजा

काव्यम्—इन्द्रवज्रावृत्तम्

सूरीण दूरीकय--कुग्गहाणं, नमो नमो सूर—समप्पहाणं

भुजंगप्रयात–वृत्तम्

नमं सूरिराजा सदा तत्त्व ताजा,
जिनेन्द्रागमे प्रौढ़ साम्राज्य भाजा ।
षड्‌वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना,
पंचाचारने पालवे सावधाना ॥१॥
भवि प्राणीने देशना देश काले,
सदा अप्रमत्ता यथासूत्र आले ।

जीके शासनाधारदिग्दंति कल्पा,
जगे ते चिरं जीवजो शुद्ध जल्पा ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

आचारज मुनिपति गणि, गुण छत्रीशी धामो जी ।
चिदानंद रस स्वादता, परभावे निष्कामो जी ॥१॥

उलालो

निष्काम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ।
निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ।
भविजीव बोधक तत्त्व शोधक, सयल गुण संपत्तिधरा ।
संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥२॥

पूजा—ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ।
ते आचारज नमिये तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥१॥

वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ।
जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥

नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहिं विकथा न कषाय ।

समग्ग-लोगग्ग-पयत्थसिद्धे, भाएह निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥१॥
विमलकेवलभासनभास्करं जगति जन्तुमहोदकारणं।
जिनवरं वहुमान जलौधतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करंताजगद्गुरुशरीरे, सकलदेवे विमल कलशनी रे।
आयणां कर्ममल दूर कीधां, तेणेते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धां ॥३॥
हर्षधरी अप्सरा वृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे।
जिहां लगे सुरगिरी जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते सिद्धाय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

तृतीय श्री आचार्यपद पूजा

काव्यम्—इन्द्रवज्रावृत्तम्

सूरीण दूरीकय-कुग्गहाणं, नमो नमो सूर-समप्पहाणं

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

नमं सूरिराजा सदा तत्त्व ताजा,
जिनेन्द्रागमे प्रौढ़ साम्राज्य भाजा।
षट्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना,
पंचाचारने पालवे सावधाना ॥१॥
भवि प्राणीने देशना देश काले,
सदा अप्रमत्ता यथासूत्र आले।

जीके शासनाधारदिग्दंति कल्पा,
जगे ते चिरं जीवजो शुद्ध जल्पा ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

आचारज मुनिपति गणि, गुण छत्रीशी धामो जी ।
चिदानंद रस स्वादता, परभावे निष्कामो जी ॥१॥

उलालो

निष्काम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ।
निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ।
भविजीव बोधक तत्त्व शोधक, सयल गुण संपत्तिधरा ।
संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥२॥

पूजा—ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ।
ते आचारज नमिये तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥१॥

वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ।
जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥

नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहिं विकथा न कषाय ।

जेहने ते आचारज नमिये, अकलुप अमंल अमाय रे ॥
मविका, सिद्ध० ॥३॥
जे दिये सारण वारण चोयण, पिडचोयण वली जनने ।
पटधारी गच्छ थम आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥
अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजे जग दीवो ।
भुवन पदारथ प्रकटन पटु ते, आचारज चिर जीवो रे ॥
भाविका सिद्ध० ॥५॥

ढाल

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ।
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥वीर०॥१॥

श्री आचार्यपद काव्यम्

नूणं सुहं नहि पिया न माया, जे दिंति जीवाणिह सूरिपाया ।
तम्हा हु ते चेव सया भजेह, जं मुक्खसुक्खाइ लहु लहेइ ॥१॥
विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तुम होदयकारणम् ।
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपदामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलश नीरे ।
आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्ध ॥३॥
हर्षधरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीश भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणनाथ देवाधि देवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ श्री उपाध्ययापद पूजा

काव्यं इन्द्रवज्रावृत्तम्

सुत्तत्थ-वित्थारण-तप्पराणं, नमो नमो वायग-कुंजराणं ॥

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

नहि सूरि पण सूरिगणने सहाया,
नमुं वाचक त्यक्त मद मोह माया ।
वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने,
जिके सावधाना निरुद्धाभिमाने ॥१॥
धरे पंचने वर्ग वर्गित गुणौघा,
प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा ।
गुणी गच्छ संधारणे स्तंभ भूता,
उपाध्याय ते वंदिये चित्-प्रभूता ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

खंति जुआ मुत्ति जुआ, अज्जव अद्दव जुत्ता जी ।
सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ता जी ॥१॥

उल्लालो

जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ।
स्याद्वाद वादे तत्त्व वादक, आत्म पर विभजनकरा ॥
भवभीरु साधन धीर शासन, वहन धोरी मुनिवरा ।
सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥२॥

पूजा-ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारग तास ।
सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥
भविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥

अर्थ सूत्रने दान विभागे, आचारज उवज्झाय ।
भव त्रीजे जे लहे शिव संपद, नमिये ते सुपसाय रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥

मूरख शिष्य निपाइ जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आणे ।
ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥३॥

राजकुमार सरिखा गणचिंतक, आचारज पद योग ।
जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥

बावना चंदन रस सम वयणे, अहित ताप सवि टाले ।

ते उवज्झाय नमीजे जे वली, जिनशासन अजुवाले रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥५॥

ढाल

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ।
उपाध्याय ते आतमा, जग बन्धव जग भ्राता रे ॥ वीर० ॥१॥

श्री उपाध्याय पद काव्यं

सुत्तत्थ-संवेगमयं सुएणं, संनीर-खीरामय-विस्सुएणं ।
पीणन्ति जे ते उवज्झाय-राए, झाएइ निच्चंपि कयप्पसाए ॥१॥
विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तु महोदय कारणम् ।
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करता जगद्गुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलश नीरे ।
आपणां कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्ध ॥३॥
हर्ष धरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधि देवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते पाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

पंचम श्री मुनिपद पूजा

काव्यं इन्द्रवज्रा वृत्तम्

साहूण संसाहिअ-सजमाणं, नमो नमो सुद्ध-दया-दमाणं।

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

करे सेवना सूरि वायग गणिनी,
करुं वर्णना तेहनी श्री मुनिनी।
समेत सदा पच समिति त्रिगुप्ता,
त्रिगुप्ते नहिं काम-भोगेषु लिप्ता ॥१॥
वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली,
होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली।
शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली,
नमुं साधु ने तेह निज पाप टाली ॥२॥

ढाल उलालानी देशी

सकल विषय विष वारीने, निष्कामी निःसंगी जी।
भव दव ताप शमावता, आतम साधन रंगी जी ॥१॥

उलालो

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा।
काउसग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥
तप तेज दीपे कर्म झोपे, नैव छीपे पर भणी।
मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥२॥

पूजा ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

जेम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस नउ पावे।
लेइ रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥
पंच इन्द्रियने जे नित्य झीपे, षट्कायक प्रतिपाल।
संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥भ०॥सि०॥२॥
अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चारित्र।
मुनि महंत जयणायुत वंदी, कीजे जन्म पवित्र रे ॥भ०॥सि०॥३॥
नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा।
एहवा मुनि नमिये जो प्रयटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥भ०॥सि०॥४॥
सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने।
संजम खप करतां मुनि नमिये, देश काल अनुमाने रे॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥५॥

ढाल

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे।
साधु सूधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचे रे॥ वीर० ॥१॥

श्री साधुपद काव्यम्

खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते मुत्ते य संते गुणजोग-जुत्ते।
गयप्पमाए गय-मोहमाए, झाएह निच्चं मुणिराय-पाए ॥१॥

पंचम श्री मुनिपद पूजा

काव्यं इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

साहूण संसाहिअ-सजमाणं, नमो नमो सुद्ध-दया-दमाणं ।

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

करे सेवना सूरि वायग गणिनी,
करुं वर्णना तेहनी शी मुनिनी ।
समेत सदा पच समिति त्रिगुप्ता,
त्रिगुप्ते नहिं काम-भोगेषु लिप्ता ॥१॥
वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली,
होये मुक्ति ने योग्य चारित्र पाली ।
शुभाष्टाग योगे रमे चित्त वाली,
नमुं साधु ने तेह निज पाप टाली ॥२॥

ढाल उलालानी देशी

सकल विषय विष वारीने, निष्कामी निःसंगी जी ।
भव दव ताप शमावता, आतम साधन रगी जी ॥१॥

उलालो

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा ।
काउस्सग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥
तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव छीपे पर भणी ।
मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन, बधु प्रणमुं हित भणी ॥२॥

पूजा ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

जेम तरुफूले भमरो वेसे, पीडा तस नउ पावे ।
लेइ रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥
पंच इन्द्रियने जे नित्य झीपे, पट्कायक प्रतिपाल ।
संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥भ०॥सि०॥२॥
अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चारित्र ।
मुनि महंत जयणायुत वंदी, कीजे जन्म पवित्र रे ॥भ०॥सि०॥३॥
नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा ।
एहवा मुनि नमिये जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥भ०॥सि०॥४॥
सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ।
संजम खप करता मुनि नमिये, देश काल अनुमाने रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥५॥

ढाल

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे ।
साधु सूधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचे रे ॥ वीर० ॥१॥

श्री साधुपद काव्यम्

खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते मुत्ते य संते गुणजोग–जुत्ते ।
चयप्पमाए गय–मोहमाए, झाएह निच्चं मुणिराय–पाए ॥१॥

विमल केवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणम् ।
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥

स्नात्र करतां जगद्गुरुशरीरे, सकलदेवें विमलकलशनीरे ।
आपणां कर्ममल दूर कीधां, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥३॥

हर्षधरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्रकरी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जबूदीवो, अमतणा नाथ देवाधिदेवों ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुपाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

पद्म श्री सम्यग्-दर्शनपद पूजा

काव्यम् इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥

भुजगप्रयात-वृत्तम्

विपर्यास हठ वासनारूप मिथ्या,
टले जे अनादि अच्छे जेम पथ्या ।
जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं,
कहिये दर्शनं तेह परमं निधानं ॥१॥

विना जेहथी ज्ञान अज्ञान रूपं,
चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ।
प्रकृत्ति सातने उपशमे क्षय ते होवे,
तिहां आप रूपे सदा आप जोवे ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

सम्यग्-दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी ।
जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपो जी ॥१॥

उलालो

जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर ईहा टले ।
निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करण रुचिता उछले ॥१॥
बहुमान परिणति वस्तु तत्त्वे, अहव तसु कारणपणे ।
निज साध्य दृष्टि सर्व करणी, तत्त्वता संपत्ति गणे ॥२॥

पूजा—ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ।
जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥
मल उपशम क्षय उपशमक्षयथी, जे होय त्रिविध अभंग ।
सम्यग् दर्शन तेह नमीजे, जिन धर्म दृढ रंग रे
भविका, सिद्ध०॥२॥

पंच वार उपशमिय लहीजे, क्षयउपशमिय असंख ।
एक वार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमिये असंख रे ॥
मविका, सिद्ध० ॥३॥

जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फलियो ।
सुख निर्वाण न जे विण लहीये, समकित दर्शन वलियो रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥

सडसठ बोले जे अलंकारियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ।
समकित दर्शन ते नित्य प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥
मविका, सिद्ध० ॥५॥

ढाल

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवे रे ।
दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥वीर०॥१॥

सम्यग्-दर्शनपद काव्याम्

जं दव्वत्थिकाएसु सद्दहाणं, तं दंसणं सव्वगुण प्पहाणं ।
कुग्गाह-वाही उवयन्ति जेणं, जहा विसुद्धेण रसायणेणं ॥१॥
विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणम् ।
जिनवरंबहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देवे विमलकलशनीरे ।
आपणां कर्ममलदूरकीधां, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥३॥

हर्षधरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जम्बूदीवो, अमतणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते सम्यग्दर्शनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

सप्तम श्री सम्यग्-ज्ञानपद पूजा

काव्यम् इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

अन्नाण-संमोह-तमोहरस्स, नमो नमो नाण-दिवायरस्स ।

भुजंगप्रयात-वृत्तम्

होय जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे,
यथावर्ण नासे विचित्रावबोधे ।
तेणे जाणिये वस्तु षड् द्रव्य भावा,
न होये वितत्था निजेच्छा स्वभावा ॥१॥
होय पंच मत्यादि सुज्ञान भेदे,
गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ।
वली ज्ञेय हेय उपादेय रूपे,
लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्व पर प्रकाशक भावे जी ।
पर्याय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥१॥

उलालो

जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोधभाव विलच्छना ।
मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना ॥१॥
स्याद्वाद संमी तत्त्व रंगी, प्रथम भेदाभेदता ।
सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥२॥

पूजा—ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ।
कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधारा रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥

प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, श्री सिद्धांते भाख्युं ।
ज्ञानने वंदो ज्ञान न निंदो, ज्ञानीए शिवसुख चाख्युं रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥

सकल क्रियानुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहीये ।
तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, ते विण कहो केम रहीये रे ॥
भविका, सिद्ध ॥३॥

पंच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ।
दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वली जेम रवि शशी मेह रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥

लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ।

लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञान मुज शुद्ध रे ।
॥ भविका, सिद्ध० ॥५॥

ढाल

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे ।
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥वीर० ॥१॥

श्री सम्यग्-ज्ञानपद काव्यम्

नाणं पहाणं नयचक्क-सिद्धं, तत्तावबोहिक्कमयं पसिद्धं ।
धरेह चित्तावसहे फुरंतं, माणिक्कदीवं व तमो हरंतं ॥१॥
विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणम् ।
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करतांजगद्गुरु शरीरे, सकलदेवे विमलकलशनीरे ।
आपणां कर्ममल दूरकीधां, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥३॥
हर्षधरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्रकरी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते सम्यग्ज्ञानाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम श्री चारित्रपद पूजा
काव्यं-इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

भुजंगप्रयात–वृत्तम्

वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे,
निराशंसता द्वार रोध संगे।
भवांभोधि संतारणे यानतुल्यं,
धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥१॥
होय जास महिमा थकी रंक राजा,
वली द्वादशांगी भणी होय ताजा।
वली पापरूपोऽपि निष्पाप थाय,
थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥२॥

ढाल, उलालानी देशी

चारित्र गुण वली वली नमो, तत्त्व रमण जसु मूलो जी।
पर रमणीयपणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलो जी ॥१॥

उलालो

प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी।
शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥१॥
सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता।
अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥२॥

पूजा–ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

देशविरति ने सर्वविरति जे, गृह–यतिने अभिराम।

ते चारित्र जगत जयवंतु, कीजे तास प्रणाम रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥
तृण परे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्ती पण वरियो ।
ते चारित्र अक्षय सुख कारण, ते में मन मांहे धरियो रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥२॥
हुआ रांक पण जे आदरी, पूजित इंद्र नरिंदे ।
अशरण शरण चरण ते वंदु, पूर्यू ज्ञान आनंदे रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥३॥
बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ।
शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमिये रे ॥
भविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥४॥
चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ।
चारित्र नाम निरुत्ते भाख्युं, ते वंदु गुणगेह रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥५॥

ढाल

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ।
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नवि भमतो रे ॥ वीर० ॥१॥

श्री चारित्रपद काव्यम्

सुसंवरं मोह-निरोह-सारं, पंचप्पयारं विगमाइयारं ।
मूलोत्तराणेग-गुणं पवित्तं, पालेह निच्चंपि हु सच्चरित्तं ॥१॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तु महोदयकारणम् ।१।
जिनवर बहुमान जलौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥२॥
स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देवे विमलकल शनीरे ।
आयणा कर्ममल दूरकीधां, तेणे ते विबुद्ध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥३॥
हर्ष धरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते सम्यक्-चारित्राय जलादिक यजामहे स्वाहा ।

नवम श्री तपपद पूजा

काव्यम् इन्द्रवज्रा-वृत्तम्

कम्म-द्दुमोम्मूलण-कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवो-भरस्स ।

मालिनी-वृत्तम्

इय-नवपय-सिद्ध, लद्धि-विज्जा-समिद्ध ।
पयडिय-सुरवग्ग ह्रीँ तिरेहा-समग्ग ॥
दिसवइ-सुर-सारं,-खोणि-पीढावयार ।
तिजय-विजय-चक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ १ ॥

भुजगप्रयात-वृत्तम्

त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले,
निकाचितपणे बांधीयां तेह बाले ।
कह्यं तेह तप बाह्य अंतर दुभेदे,
क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥१॥
होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि,
अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ।
तपो तेह तप जे महानंद हेते,
होय सिद्धि सीमंतिनी जिमं संकेते ॥२॥
इस्या नवपद ध्यानने जेह ध्यावे,
सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ।
वली ज्ञान विमलादि गुणरत्न धामा,
नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥३॥

मालिनी-वृत्तम्

इम नवपद ध्यावे, परम आनंद पावे ।
नवमे भव शिव जावे, देव नर भव पावे ॥
ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रभावे ।
सवि दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥४॥

ढाल, उलालानी देशी

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी ।
आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥१॥

उलालो

उच्छेद कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं वरे ।
योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ॥
अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ।
निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥२॥

ढाल

एम नवपद गुण मंडल, चउ निक्षेप प्रमाणे जी ।
सात नये जे आदरे, सम्यग् ज्ञानने जाणे जी ॥३॥

उलालो

निर्धार सेती गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए ।
तसु करण ईहा तत्त्वरमणे, थाय निर्मल ध्यान ए ॥
एम शुद्ध सत्ता भल्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसारे ।
अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥४॥

कलश

इय सयल सुखकर गुण पुरंदर, सिद्धचक्र पदावलि ।

सवि लद्धि विद्या सिद्धि मंदिर, भविक पूजो मन रुली ।
उवज्झाय वर श्री राजसागर, ज्ञान धर्मशुं राजता ।
गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद्र सुशोभता ॥१॥

पूजा—ढाल, श्रीपालना रासनी देशी

जाणंता त्रिहुँ ज्ञाने संयुत, ते भव मुक्ति जिणंद ।
जेह आदरे कर्म खपेवा, ते त१ शिवतरु कंद रे ॥
भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥१॥
कर्म निकाचित पण क्षय जाये, क्षमा सहित ते करतां ।
ते तप नमिये जेह दीपावे, जिनशासन उजमंतां रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥२॥
आमोसहि पमुहा वहु लद्धि, होवे जास प्रभावे ।
अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटे, नमिये ते तप भावे रे ॥
भविका सिद्ध० ॥३॥
फल शिवसुख महोटुं सुर नर वर, संपत्ति जेहनुं फूल ।
ते तप सुरतरु सरिखो वंदु, सम मकरंद अमूल रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥४॥
सर्व मंगलमां पहेलुं मंगल, वरणवीये जे ग्रन्थे ।
त तप पद त्रिहुँ काल नमीजे, वर सहाय शिव पन्थे रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥५॥
एम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाल ।

सुजश विलासे चोथे खंडे, एहा अग्यारमी ढाल रे ॥
भविका, सिद्ध० ॥६॥

ढाल

इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ।
तप ते एहिज आत्मा, वर्त्ते निज गुण भोगे रे ॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे ॥१॥

आगम नो आगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे ।
आतम भावे थिर होजो, पर भावे मत राचो रे ॥वीर०॥२॥

अष्टक सकल समृद्धिघनी, घट माहे ऋद्धि दाखी रे ।
तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥वीर०॥३॥

योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे ।
एह तणे अवलंबने, आत्म ध्यान प्रमाणो रे ॥वीर०॥४॥

ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ।
वाणी वाचक जस तणी, कोई नये न अधूरी रे ॥वीर०॥५॥

श्री तपपद काव्याम्

चउक्कं तहामितर-भेयमेयं, कसायं,-दुब्भेज्ज-कुकम्म-भेयं ।
दुक्ख-क्खयत्तं कय-पावनासं, तवं तवेहागमियं निरासं ॥१॥
विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणं ।
जिनवरं बहुमान जलौघतः,शुचिमनाःस्नपयामि विशद्धये॥२॥

स्नात्रकरतांजगद्‌गुरुशरीरे, सकलदेवे विमल कलश नीरे ।
आपणां कर्ममल दूर कीधां, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥३॥
हर्षधरी अप्सरा वृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ।
जिहां लगे सुरगिरी जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥४॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनि-वारणाय श्रीमते सम्यक-तपसे जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

श्री विजय लक्ष्मीसूरि रचित

श्री वीश स्थानक तप पूजा

प्रथम श्री अरिहंतपद पूजा[1]

दोहा

श्री शंखेश्वर पासजी, सकल जंतु हितकार ।
प्रणमी पदयुग तेहना, स्तवन पूजा रचुं सार ॥ १ ॥
बहुविध तप जप दाखिया, लोक लोकोत्तर सत्थ ।
वीश स्थानक सम को नहिं, सद्गुरु वदे पसत्थ ॥ २ ॥
अरिहंतादिक पद तणुं, कारण ए तप सत्य ।
त्रिक योगे प्रभु पूजीये, भावशुं जेहवी शक्ति ॥ ३ ॥
निर्मल पीठ त्रिकोपरि, स्थापी जिनवर वीश ।
पूजोपकरण मेलवी, पूजिये विश्वावीश ॥ ४ ॥
एक एक पद वर्णन करी, पूजा पंच प्रकार ।
अडविध एकत्रीश जाणिये, सेवो सत्तर उदार ॥ ५ ॥
सजल कलश अड जातिना, जिन आणा शिर धार ।
पूजे स्थानक वीशने, तस नहीं दुरित प्रचार ॥ ६ ॥
परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान ।
चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिनभाण ॥ ७ ॥

१. इस पूजा की विधि पृष्ठ ५३-५४ पर लिखी है।

ढाल, आदि जिणंद मया करो, ए देशी

श्री अरिहंत पद ध्याइए, चोत्रीश अतिशयवंता रे ।
पांत्रीश वाणी गुणे भर्या, चार गुणे गुणवंता रे ॥श्री०॥१॥
अडहिय सहज लक्षण देहे, इंद्र असंख्य करे सेवा रे ।
त्रिहुं कालना जिन वांदवा, देव पंचम महा देवा रे ॥श्री०॥२॥
पंच कल्याणक वासरे, त्रिभुवन थाय उद्योत रे ।
दोष अढार रहित प्रभु, तरण तारण जग पोत रे ॥श्री०॥३॥
षट्काय गोकुल पालवा, महागोप कहेवाय रे ।
दया पडह वजडाववा, महामाहण जग ताय रे ॥श्री०॥४॥
भवोदधि पार पमाडता, चोथो वर्ग देखावे रे ।
भाव निर्यामक भाविया, महा सत्थवाह सोहावे रे ॥श्री०॥५॥
असंख्य प्रदेश निर्मल थया, छति पर्याय अनन्ता रे ।
नव नवा ज्ञेयनी वर्त्तना, अनंत अनंती जाणंता रे ॥श्री०॥६॥
पिंड पदस्थ रूपस्थमां, द्रव्य गुण पर्याये ध्याया रे ।
देवपालादि सुखी थया, सौभाग्य लक्ष्मी पद पाया रे ॥श्री०॥७॥

काव्यम् द्रुतविलम्बित-वृत्तम्

अतिशयादि–गुणाब्धि–वदान्यकं,
जिनवरेन्द्र–पदस्य निदानकम् ।
निखिल–कर्म–शिलोच्चय–सूदनं,
जिनपति–संपद–पजनम ॥ १ ॥

बंध उदय उदीरणा रे, सत्ता कर्म अभाव रे । शिव० ।
ऊर्ध्व गति करे सिद्धजी रे, पूर्व प्रयोग सद्भाव रे ॥शि०॥४॥

गति पारिणामिक भावथी रे, बंधन छेदन योग रे ।शिव०।
असंग क्रिया चले निर्मलो रे, सिद्धगतिनो उद्योग रे॥शि०५॥

परसंतर अणफरसता रे, एक समयमां सिद्ध रे ।शिव०।
चरम त्रिभाग विशेषथी रे, अवगाहन घन कीध रे ॥शि०॥६॥

सिद्धशिलानी उपरे रे, ज्योतिमां ज्योति निवास रे ।शिव०।
हस्तिपाल परे सेवतां रे, सौभाग्य लक्ष्मी प्रकाश रे ॥शि०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादि गुणाब्धि, वदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकं ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं कुरुत विंशतिसपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्म-जरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते सिद्धाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षत, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय श्री प्रवचनपद पूजा

दोहा

भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि ।
त्रिभुवन जीवने सुखकरी, जय जय प्रवचन दृष्टि ॥ १ ॥

ढाल ३, मैं कीनो नहिं प्रभु विन ओरशुं राग, ए देशी

प्रवचन पदने सेवीये रे, जैन दर्शन संघरूप ।
अरिहा पण नमे तीर्थने रे, समवसरणना भूप ॥
मैं कीनो सही, प्रवचन पदशुं राग ।
प्रवचन पदशुं राग, मैं कीनो सही, प्रवचन० ॥ १ ॥
प्रवचन भक्ति रागथी रे, थया संभव जिनराय ।
सघलां धर्म कारज तणां रे, एहमां पुण्य समाय ॥मैं०॥२॥
पाप क्षेत्र सात वारिये रे, पुण्य क्षेत्र सात ठाम ।
सवा लाख जिनमंदिरां रे, जिनमडित पुर ग्राम ॥मैं०॥३॥
सवा कोडि जिन बिंबने रे, भरावे संप्रति राय ।
ज्ञानभंडार एकवीश कर्या रे,कुमर नरिंद शुभ ठाय ॥मैं०॥४॥
यथोचित चउविह संघनी रे, भरतादिक परे भक्ति ।
द्रव्य भावथी आदरो रे, योग अवंचक शक्ति ॥मैं०॥५॥
पदस्थ ध्याने करी आत्मने रे, तन्मय करण प्रकार ।
सहजानंद विलासता रे, सौभाग्य लक्ष्मी पद धार ॥मैं०॥६॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते प्रवचनाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ श्री आचार्यपद पूजा

दोहा

छत्रीश छत्रीशी गुण, युगप्रधान मुणींद ।
जिनम परमत जाणता, नमो तेह सूरींद ॥ १ ॥

ढाल ४, आवो आवो रे सयण भगवती सूत्रने सुणिये, ए देशी

सरस्वती त्रिभुवन स्वामिनी देवी, सिरिदेवी यक्षराया।
मन्त्रराज ए पंच प्रस्थाने, सेवे नित्य सुखदाया ॥
भवि तुमे वंदो रे, सूरीश्वर गच्छराया ॥ १ ॥
त्रण कालना जिनवंदन होये, मन्त्रराज समरणथी ।
युगप्रधान सम भावाचारज, पचाचार चरणथी ॥भवि०॥२॥
पडिरूवादिक चौद गुण धारी, क्षांति प्रमुख दश धर्म ।
चार भावना भावित निज आतम,ए छत्रीश गुण वर्म॥भ०॥३॥
आठ प्रमाद तजी उपदेशे, विकथा सात निवारे ।
चार शिक्षा करी जन पडिबोहे, चउ अनुयोग संभारे ॥भ०॥४॥
चारसें छन्नुं गुणे गुणवंता, सोहम जंबू महंता ।
[illegible] ॥भ०॥५॥

युगप्रधान सूरि नेवीश उदये, दोय हजार ने चार ।
समयागम अनुभव अभ्यासी, थाशे जगजन मनोहार॥म०॥६॥
ए पद सेवतो पुरुषोत्तम नृप, जिनवर पदवी लहिया ।
सौभाग्यलक्ष्मीसूरि भावे भजतां, भविक जीव गहगहिया॥म०॥७॥

काव्य और मंत्र

अतिशयादिगुणाब्धियदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदकंतु कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरये जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

पंचम श्री स्थविरपद पूजा

दोहा

तजी पर परिणति रमणता, लहे निज भाव स्वरूप ।
स्थिर करता भवि लोकने, जय जय स्थविर अनूप ॥ १ ॥

ढाल ५, तपशुं रंग लाग्यो, ए देशी

पंचम पदने गाइये रे, भाव थविर अधिकार रे ।
लौकिक मात पिता कह्या रे, लोकोत्तर व्रतधार ॥
गुणी जन वंदो रे ॥

चंदो वंदो रे थविर महाराज, दुरित निकंदो रे ॥ १ ॥
संयम योगे सीदता रे, बाल ग्लानादि साधु रे।
यथोचित सहाय देवे करी रे, टाले सर्व उपाधि ॥गु०॥२॥
वीश वर्ष पर्यायेथी रे, साठ वर्ष वय हुंत रे।
चोथा अंग उपर भरणया रे, श्रुत थविरा ए भणंत ॥गु०॥३॥
मेघ अइमत्ता थिर कर्या रे, त्रिशलानंदन देव रे।
पचास सहस साधु साधवी रे, संबंध कही कामदेव ॥गु०॥४॥
ठाणांगे दश थविर भह्या रे, रत्नत्रयना निधान रे।
ते इहां प्रशस्त भावे ग्रह्या रे, द्रव्यादिक अनुमान ॥गु०॥५॥
तप श्रुत धीरज ध्यानथी रे, द्रव्य गुण पर्याय ज्ञाता रे।
स्वरूप रमण थविरा भला रे, नहिं पलितांकुर त्राता ॥गु०॥६॥
ए पद साधतो भावथी रे, पद्मोत्तर महाराय रे।
तीर्थंकर पदवी लही रे, सौभाग्यलक्ष्मी सुखदाय ॥गु०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम्।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म-जरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते स्थविराय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा।

युगप्रधान सूरि नेवीश उदये, दोय हजार ने चार ।
समयागम अनुभव अभ्यासी, थाशे जगजन मनोहार॥म०॥६॥
ए पद सेवतो पुरुषोत्तम नृप, जिनवर पदवी लहिया ।
सौभाग्यलक्ष्मीसूरि भावे भजतां, भविकजीव गहगहिया॥म०॥७॥

काव्य और मंत्र

अतिशयादिगुणान्वियदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोचयसूदकं तु कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरये जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

पंचम श्री स्थविरपद पूजा

दोहा

तजी पर परिणति रमणता, लहे निज भाव स्वरूप ।
स्थिर करता भवि लोकने, जय जय स्थविर अनूप ॥ १ ॥

ढाल ५, तपशुं रंग लाग्यो, ए देशी

पंचम पदने गाइये रे, भाव थविर अधिकार रे ।
लौकिक मात पिता कह्या रे, लोकोत्तर व्रतधार ॥
गुणी जन वंदो रे ॥

चंदो वंदो रे थविर महाराज, दुरित निकंदो रे ॥ १ ॥
संयम योगे सीदता रे, बाल ग्लानादि साधु रे।
यथोचित सहाय देवे करी रे, टाले सर्व उपाधि ॥गु०॥२॥
वीश वर्ष पर्यायेथी रे, साठ वर्ष वय हुंत रे।
चोथा अंग उपर भण्या रे, श्रुत थविरा ए भणंत ॥गु०॥३॥
मेघ अइमत्ता थिर कर्या रे, त्रिशलानंदन देव रे।
पचास सहस साधु साधवी रे, संबंध कही कामदेव ॥गु०॥४॥
ठाणांगे दश थविर मह्या रे, रत्नत्रयना निधान रे।
ते इहां प्रशस्त भावे ग्रह्या रे, द्रव्यादिक अनुमान ॥गु०॥५॥
तप श्रुत धीरज ध्यानथी रे, द्रव्य गुण पर्याय ज्ञाता रे।
स्वरूप रमण थविरा भला रे, नहिं पलितांकुर त्राता ॥गु०॥६॥
ए पद साधतो भावथी रे, पद्मोत्तर महाराय रे।
तीर्थंकर पदवी लही रे, सौभाग्यलक्ष्मी सुखदाय ॥गु०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम्।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म-जरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते स्थविराय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठ श्री उपाध्यायपद पूजा

दोहा

बोध सूक्ष्म विण जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत ।
भणे भणावे सूत्रने, जय जय पाठक गीत ॥ १ ॥

ढाल ६, रसियानी देशी

श्री उवज्झाय बहुश्रुत नमो भावशुं, अंग उपांगना जाण मुणींदा ।
भणे भणावे शिष्यने हित करी, करे नवपल्लव पहाण विनीता॥श्री॥१॥
अर्थ सूत्र कहेवाना विभागथी, सूरीश्वर पाठक सार सोहंता ।
भव त्रीजे अविनाशी सुख लहे, युवराज परे अणगार महंता ॥
॥ श्री० ॥ २ ॥
चौद दोष भर्या अविनीत शिष्यने, करे पन्नर गुणवंत विदिता ।
ग्रहण आसेवन शिक्षा दानथी, समय जाणे अनेकांत सुज्ञानी ॥
॥ श्री० ॥ ३ ॥
आवश्यक पचवीश शीखवे वांदणे,
पचवीश क्रियानो त्याग विचारी ।
पचवीश भावना भावे महाव्रती,
शुभ पचवीशी गुणराग सुधारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥

पयभर्यो दक्षिणावर्त्त शंख शोभीये, तेम नयाभाव प्रमाण प्रवीण ।
हय गय वृषभ पंचानन सारिखा, टाले परवादी अभिमान अदीना ।
॥ श्री० ॥ ५ ॥

वासुदेव नरदेव सुरपति उपमा, रवि शशी भंडारीरूप दीपंता ।
जंबू सीतानदी मेरु महीधरो, स्वयंभू उदधि रयणभूप भणंता ॥
॥ श्री० ॥ ६ ॥

ए सोल उपमा बहुश्रुतने कही, उत्तराध्ययने रसाल जिणंदा ।
महीन्द्रपाल वाचक पद सेवतो,
सौभाग्य लक्ष्मी सुविशाल सूरींदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्यनिदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय, श्रीमते उपाध्याय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीप, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

सप्तम श्री साधुपदपूजा

दोहा

स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग ।
साधे शुद्धानंदता, नमो नमो साधु शुभ रंग ॥ १ ॥

ढाल ७, कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे, ए देशी

मुनिवर तपसी ऋषि अणगारजी रे, वाचंयम वती साध ।
गुण सत्तावीशे जेह अलंकर्या रे, विरमी सकल उपाध ॥
भवियण वंदो रे, सातमुं पद भलुं रे ॥ १ ॥
नवविध भाव लोच करे संयमी रे, दशमो केशनो लोच ।
श्रोगणत्रीश पासत्था भेद छे रे, वारे तस नहि जग शोच ॥
॥ भवियण वंदो रे० ॥ २ ॥
दोष सुडतालीश आहारना वारता रे, अतिक्रम न करे चार ।
मुनिने अर्थे समारे मंदिरा रे, परिहरे एह आचार ॥
॥ भ० ॥ ३ ॥
चरना दोष अढार निवारीने रे, दीक्षा शिक्षा दिये सार ।
पुण्य पाप पुद्गल हेयरूपता रे, समभावे मुक्ति ससार ॥
॥ भ० ॥ ४ ॥
सत्य हेतु भव अटवी मुकवा रे, फरस्युं छठुं गुणठाण ।
योग अध्यातम ग्रंथनी चिंतना रे, किरिया: नाण पहाण ॥
॥ भ० ॥ ५ ॥
पूरव व्रत विराधक योगथी रे, कूट लिंगीपणुं थाय ।
दंभ जाल जंजाल सवि परिहरे रे, चरण रसिक कहेवाय ॥
॥ भ० ॥ ६ ॥
कोडि सहस नव साधु सयमी रे, स्तविये गीतारथ जेह ।

वीरभद्र परे तीर्थपति हुवे रे, सौभाग्य लक्ष्मी गुण गेह ॥
॥ भ० ॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्यनिदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चय सूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते साधवे जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ।

अष्टम श्री ज्ञानपद पूजा

दोहा

अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भव भ्रम भीति ।
सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञानन्नी रीति ॥ १ ॥

ढाल ८, अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, ए देशी

ज्ञानपद भजीये रे जगत सुहंकरु, पांच एकावन भेदे रे ।
सम्यग्ज्ञान जे जिनवरे भाखियुं, जडता जननी उच्छेदे रे ॥
॥ ज्ञा० ॥१॥
भक्ष्याभक्ष्य विवेचन परगडो, खीर नीर जेम हंसो रे ।
भाग अनंतमो रे अक्षरनो सदा, अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे ॥
॥ ज्ञा० ॥२॥

मनथी न जाणे रे कुंभ करण विधि, तेहथी कुंभ केम थाशे रे।
ज्ञान दयाथी रे प्रथम छे नियमा, सदसद्भाव विकाशे रे ॥
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥
कंचन नाणुं रे लोचनवंत लहे, अंधो अंध पलाय रे।
एकांतवादी रे तत्त्व पामे नहीं, स्याद्वाद रस समुदाय रे।
॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥
ज्ञान भर्या भरतादिक भव तर्या, ज्ञान सकल गुण मूल रे।
ज्ञानी ज्ञान तणी परिणति थकी, पामे भवजल कूल रे ॥
॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥
अल्पागम जइ उग्र विहार करे, विचरे उधमवंत रे।
उपदेशमालामां किरिया तेहनी, काय क्लेश तस हुंत रे ॥
॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥
जयंत नरेश्वर ज्ञान आराधतो, तीर्थंकर पद पामे रे।
रवि शशि मेह परे ज्ञान अनन्त गुणी,
सौभाग्य लक्ष्मी हित कामे रे ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणान्विवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम्।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदकं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते ज्ञानाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं,
अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा।

नवम श्री सम्यक्त्व-दर्शनपद पूजा

दोहा

लोकालोकना भाव जे, केवलि भाषित जेह ।
सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥ १ ॥

ढाल ९, नमो रे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर, ए देशी

श्री दर्शन पद पामे प्राणी, दर्शनमोहनी दूर रे ।
केवली दीठुं ते मीठुं माने, श्रद्धा सकल गुण भूर रे ॥
प्रभुजी सुखकर समकित दीजे, दर्शन मोहनी दूर रे ॥प्र०॥१॥
विघटे मिथ्या पुद्गल आतमथी, तेज समकित वस्त रे ।
जिनप्रतिमा दर्शन तस होवे, पामीने समकित दस्त रे ॥प्र०॥२॥
दोविध दर्शन शास्त्रे भाख्युं, द्रव्य भाव अनुसार रे ।
जे निज नयणे धर्मने जोवे, ते द्रव्य दर्शन धार रे ॥प्र०॥३॥
जिन वंदन पूजन नमनादिक, धर्मबीज निरधार रे ।
योगदृष्टि समुच्चय मांहे, एक कह्यो अधिकार रे ॥प्र०॥४॥
यद्यपि अवल अछे तोहि पण, आयति हितकर सोय रे ।
सिज्भ भव परे एहथी पामे, भाव दर्शन पण कोय रे ॥प्र०॥५॥
समकित सकल धर्मनो आश्रय, एहनां षट् उपमान रे ।
चारित्र नाण नहिं विण समकित, उत्तराध्ययन वखाण रे ॥प्र०॥६॥

दर्शन विण किरिया नवि लेखे, बिंदु यथा विण अंक रे ।
दश मांहे नव अंक अभेद छे, तेम कुसंगे निष्कलंक रे ॥प्र०॥७॥

अन्तर्मुहूर्त पण जे जीव, पाम्युं दर्शन सार रे ।
अर्धा पुद्गल परियट मांहे, निश्चय तस संसार रे ॥प्र०॥८॥

गत समकित पूरव बद्धायुष, दो विनु समकितवंत रे ।
विण वैमानिक आयु न बांधे विशेषावश्यक कहत रे ॥प्र०॥९॥

भेद अनेक छे दर्शन केरा, सडसठ भेद उदार रे ।
सेवतो हरिविक्रम जिन थाये, सौभाग्य लक्ष्मी विस्तार रे ॥प्र०॥१०॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धि वदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशति सम्पद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये, जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते दर्शनाय, जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

दशमं श्री विनयपद पूजा

दोहा

शौच मूलथी महागुणी, सर्व धर्मनो सार ।
गुण अनंतनो कंद ए, नमो नमो विनय आचार ॥ १ ॥

ढाल १०, माला किहां छे रे, ए देशी

विनय पद दशमुं प्रकास्युं, पंच भेद सामान्ये रे ।
दशविह तेर प्रकारे जाणो, बावन भेद विधाने रे ॥
विनय पद सेवो रे, अरिहंता जिहां मुख्य ।
विनय पद सेवो रे ॥ १ ॥

छासठ भेद सिद्धांते गाया, सघला गुणनो आधार रे ।
शम दमादिक गुण सवि साचा, राच्या जे विनय विचार रे ॥
॥ वि० ॥ २ ॥

अरिहादिकनो भाव प्रशस्ते, विधिये विनय करंतो रे ।
आहारी पण उपवास तणुं फल, निरंतर अनुसरतो रे ॥
॥ वि० ॥ ३ ॥

दोय हजार ने बोल चिहुंत्तर, देववंदन विधि धारो रे ।
चारशें बाणुं बोल विचारी, गुरुवंदन अवधारो रे ॥
॥ वि० ॥ ४ ॥

गुरुविनये रत्नत्रय पामे, संवर तप निज्जरणा रे ।
कर्म क्षये केवल गुण तेहथी, मोक्ष अनंत सुख वरणा रे ॥
॥ वि० ॥ ५ ॥

पांच वंदनमां भाव वंदन ते, उपयोगे शुभ लहिये रे ।
अरिहादिकनो विनय भवतो, चेतन तद्रूप कहिये रे ॥
॥ वि० ॥ ६ ॥

द्रव्य भाव दोय नय विशुद्धो, धन्नो ए पद सेवंतो रे।
श्रद्धा भासन तत्त्व रमण लही, सौभाग्य लक्ष्मी दीपंतो रे।
॥ वि० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यक, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम्।
निखिलकर्मशिलाक्षयसूदकं, कुरुत विंशति सम्पद् पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय, श्रीमते विनयाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा।

एकादश श्री चारित्रपद पूजा

दोहा

रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल कही सदीव।
भाव रयणनुं निधान छे, जय जय संयम जीव ॥ १ ॥

ढाल ११, अजित जिणंदशुं प्रीतडी, ए देशी

चारित्र पद शुभ चित्त वस्युं, जेह सफला हो नयनो उद्धार।
आठ करम चय रिक्त करे, निरुत्ते हो चारित्र उदार॥
चारित्र पद शुभ चित्त वस्युं ॥ १ ॥
चारित्रमोह अभावथी, देश संयम हो सर्व संयम थाय।

आठ कषाय मिटावीने, देशविरति हो मनमां ठहराय ।
॥ चा० ॥ २ ॥

चार कषाय मनथी मटे, सर्वविरति हो प्रगटे गुणराशि ।
देशथी सर्वसंयम विषे, अनंत गुणी हो विशुद्धि समास ॥
॥ चा० ॥ ३ ॥

संयम गुणठाण फरस्या विना, तत्त्व रमणता हो केम नाम कहेवाय ।
गज पाखर खर नवि वहे, एहनी गुरुता हो आतममां समाय ॥
॥ चा० ॥ ४ ॥

वर्ष संयमना पर्यायमां, अनुत्तरनां हो सुख अतिक्रम होय ।
शुक्ल शुक्ल परिणामथी, सयमथी हो क्षणमां सिद्धि जोय ॥
॥ चा० ॥ ५ ॥

सर्वसंवर चारित्र लही, पामे अरिहा हो सहि मुक्तिनुं राज ।
अनंतर कारण चरण छे, शिवपदनुं हो निश्चय मुनिराज ॥
॥ चा० ॥ ६ ॥

सत्तर भेद संयम तणा, चरण सित्तरि हो कही आगम मांहि ।
वरुणदेव जिनवर थयो, विजय लक्ष्मी हो प्रगटे उत्साही ॥
॥ चा० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्यनिदानकम् ।
[illegible] ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते चारित्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

द्वादश श्री ब्रह्मचर्यपद पूजा

दोहा

जिनप्रतिमा जिनमंदिरां, कंचन नां करे जेह ।
ब्रह्मव्रतथी बहु फल लहे, नमो नमो शियल सुदेह ॥१॥

ढाल १२, क्युं जाणु क्युं बनि आवही, ए देशी

ब्रह्मचर्य पद पूजीये, व्रतमां मुकुट समान हो विनीत ।
शियल सुरतरु राखवा, कही नव वाड भगवान हो विनीत ॥
नमो नमो बमवम धारीणं ॥ १ ॥

कृत कारित अनुमति तजे, दिव्य औदारिक काम हो विनीत ।
त्रिकरण योगे ए परिहरे, भेद अढार गुणधाम हो विनीत ॥
॥ नमो० ॥ २ ॥

दश अवस्था कामनी, त्रेवीश विषय हरंत हो विनीत ।
अढार सहस शीलांग रथे, बेठा मुनि विचरंत हो विनीत ॥
॥ नमो० ॥ ३ ॥

द्रव्यथी चार दारा तजे, भावे पर परिणतित्याग हो विनीत ।

दश समाहि ठाण सेवतां, त्रीश अबंभ नाम याग हो विनीत ॥
॥नमो०॥४॥
दिये दान सोवन कोडीनुं, कंचन चैत्य कराय हो विनीत ।
तेहथी ब्रह्मव्रत धारतां, अगणित पुण्य समुदाय हो विनीत ॥
॥नमो०॥५॥
चोराशी सहस मुनि दाननुं, गृहस्थभक्ति फल जोय हो विनीय ।
क्रिया गुणठाणे मुनि वडा, भाव तुल्य नहि कोय हो विनीत ॥
॥नमो०॥६॥
दशमे अंगे वखाणीयो, चंद्रवर्मा नरिंद हो विनीत ।
तेम अपराधी प्रभुता वर्यो, सौभाग्य लक्ष्मी सूरिंद हो विनीत ॥
॥नमो०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ श्री ह्रीँ परमात्मने अनंतानंज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते ब्रह्मचर्याय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं; फलं, यजामहे स्वाहा ।

त्रयोदश श्री क्रियापद पूजा

दोहा

आतमबोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल ।
तत्त्वारथथी धरिये, नमो क्रिया सुविशाल ॥१॥

ढाल १३, सुण बहेनी पियुडो परदेशी—ए देशी

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे, धर्म शुक्ल ध्यायीजे रे ।
आर्त्त रौद्रनां कारण किरिया, पचवीशने वारीजे रे ॥
ध्यान क्रिया भज निशदिन प्राणी ॥१॥

पंचनकान्ति परमेष्ठिरूपे, लोकालोक प्रमाण रे ।
सर्व शांतिक भाल ठेकाणे, ध्यावो प्रणव गुणखाण रे ॥
॥ध्यान क्रिया०॥२॥

तेर किया ठाण तेर काठिया तजी, करण सित्तरी भजीये रे ।
योग अडदिट्ठि सम्यक्त्व किरिया, आतम सुखकर जजीये रे ॥
॥ध्यान०॥३॥

पहेली चउ दिट्ठि ज्ञानाधारे, रत्नत्रयाधारे चार रे ॥
अड कर्म क्षये उपशये विचित्रा, ओघदृष्टि बहु प्रकार रे ॥
॥ध्यान०॥४॥

विष गरल हीनादिक वारो, तद्हेतु अमृत धारो रे ॥
प्रीति भक्ति वचन असंगे, शुभ परिणति सुधारो रे ॥
॥ध्यान०॥५॥

अतर तत्त्व विषय प्रतीते, ए ज्ञान किरिया सांची रे ।
अक्रियावादी कृष्णपक्षियो, शुक्लपक्षियो किरियावादी रे ॥
॥ध्यान०॥६॥

अशुभ ध्यान ठाण त्रेसठ वारी, ध्यान शतक मन धारी रे ।

हरिवाहन तीर्थं हुओ, सौभग्य लक्ष्मी दिल धारी रे ॥
॥ध्यान०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्यनिदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमत्यै क्रियायैः जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्दश श्री तपपद पूजा

दोहा

कर्म तपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण ।
पचास लब्धि उपजे, जय जय तप गुणखाण ॥१॥

ढाल १४,अलगी रहेने रहेने रहेने, अलगी रहेने—ए देशी

तप पदने पूजीजे हो प्राणी, तप पदने पूजीजे ।
सर्व मंगलमां पहेलुं मंगल, कर्म निकाचित टाले ॥
क्षमा सहित जे आहार निरीहता,
आतम ऋद्धि निहाले हो प्राणी ॥तप०॥१॥

ते भव मुक्ति जाणे जिनवर, त्रण चउ ज्ञाने नियमा ।
तोये तप आचरण न मूके, अनतगुणो तप महिमा हो प्राणी ॥
॥तप०॥२॥
पीठ अने महापीठ मुनीश्वर, पूरव भव मल्लि जिननो ।
साधवी लखमणा तप नवि फलियुं,
दभ गयो नहि मननो हो प्राणी ॥तप०॥३॥
अग्यार लाख ने एशी हजार, पाचसो पाच दिन ऊणा ।
नदन ऋषिए मासखमण करी,
कीधा काम सपुन्ना हो प्राणी ॥तप०॥४॥
तप तपिया गुणरत्न सवत्सर, खधक क्षमाना दरिया ।
चौद हजार साधुमा अधिका,
धन्ना तपगुण भरिया हो प्राणी ॥तप०॥५॥
षड् भेद बाहिर तपना प्रकाश्या, अभ्यतर षड् भेद ।
धार भेदे तप तपता निर्मल,
सफल अनेक उभेद हो प्राणी ॥तप०॥६॥
कनककेतु एह पदने आराधी, साधी आतम काज ।
तीर्थंकर पद अनुभव उत्तम,
सौभाग्य लक्ष्मी महाराज हो प्राणी ॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणान्विदान्यक, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदन, कुरुत विंशति सपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते तपसे जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

पंचदश श्री गोयमपद पूजा

दोहा

छठ छठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणधाम ।
ए सम शुभ पात्र को नहिं, नमो नमो गोयम स्वाम ॥१॥

ढाल १५, दादाजी मोहे दर्शन दीजे हो, ए देशी

दान सुपात्रे दीजे हो भवियां, दान सुपात्रे दीजे ।
लब्धि अठ्यावीश ज्ञानी गोयम, उत्तम पात्र कहीजे हो ॥भ०॥१॥

मुहूर्तमां चौद पूरव रचियां, त्रिपदी वीरथी पामी ।
चौदसें बावन गणधर वांदा, ए पद अंतरजामी हो ॥भ०॥२॥

गणेश गणपति महामंगल पद, गोयम विण नवि दूजो ।
सहस्र कमलदल सोवन पंकज, बेठा सुर नर पूजो हो ॥भ०॥३॥

क्षीणमोही मुनि रत्नपात्र सम, बीजा कंचन सम पात्र ।
रजतनां श्रावक समकितत्रंबा, अविरति लोह मट्टि पत्ता हो॥भ०।४॥

मिथ्यात्वी सहसथी एक अणुव्रती, अणुव्रती सहसथी साधु ।
साधु सहसथी गणधर जिनवर, अधिका टाले उपाधि हो ।भ०॥५॥

पांच दान दश दानमां महोटां, अभय सुपात्र विदिता ।
एहथी हरिवाहन हुआ जिनवर, सौभाग्य लक्ष्मी गुण गीता हो ॥
॥म०॥६॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणान्विवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोचयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते गौतमाय जलं, चन्दन, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं नैवेद्यं, यजामहे स्वाहा ॥

षोडश श्री जिनपद पूजा

दोहा

दोष अढारे क्षय गया, उपमा गुण जस अग ।
वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिनपद संग ॥१॥

ढाल १६, चौद लोकके पार कहावे—ए देशी

जिनपद जगमां जाचुं जाणो, स्वरूप रमण सुविलासी ।
सोल कषाय जीते ते जिनजी, गुणगण अनंत उजासी ॥
जिनपद जपिये, जिनपद भजिये, जिनपद अति सुखदायी ॥१॥
श्रुत ओहि मनपर्यव जिनजी, छउमत्था वीतरागी ।
केवली जिननो वचन अगोचर, महिमा जिन वडभागी ॥२॥

जिनवर सूरि वाचक साधु, बाल स्थविर गिलाणी ।
तपसी चैत्य संघ केरी, वैयावच्च गुणखाणी ॥ जि० ॥ ३ ॥
गुणिजन दशनुं वैयावच्च कीजे, सहुमां जिनवर मुख्य ।
वैयावच्च गुण अप्पडिवाइ, जिनआगम हित शिख्य ॥जि०॥४॥
नीच गोत्र बांधे नर्मि कबहु, करे उंच गोत्रनो बंध ।
गाढ कर्मबंध शिदिल होवे, उत्तराध्ययने प्रबंध ॥जि०॥५॥
महशुद्धे ए पदने आराधी, जिमूतकेतु जिन होवे ।
विजय सौभाग्य लक्ष्मीसूरि संपद, परमानंद पद जोरे ॥
॥ जि० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकं ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्म-जरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

सप्तदश श्री संयमपद पूजा

दोहा

सुद्धातम गुणमें रमे, तजी इन्द्रिय आशंस ।
थिर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश ॥ १ ॥

ढाल १७, कुंवर गभारो नजरे देखतां जी, ए देशी

समाधि गुणमय चारित्र पद भलुं जी, सत्तरमुं सुखकार रे।
वीश असमाधि दोष निवारीने जी, उपन्यो गुण संतोष श्रीकार रे
नमो नमो सयम पदने मुनिवरा जी, ए आंकणी ॥ १ ॥
अनुकपा दीनादिकनी जे करे जी, ते कहीए द्रव्य समाधि रे।
सारणादिक कही धर्म माहे स्थिर करे जी, ते लहीए भाव ॥
समाधि रे ॥ नमो० ॥ २ ॥
व्रत श्रावकना बार भेदे कह्यां जी, मुनिनां महाव्रत पंच रे।
सत्तर ए द्रव्य–भावथी जाणी ने जी,
यथोचित करे सयम संच रे ॥ नमो० ॥ ३ ॥
चार निक्षेपे सात नये करी जी, कारण पांच संभार रे।
त्रिपदी साते भागे करी धारीये जी,
ज्ञेयादिक त्रिक अवधार रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥
चार प्रमाणे षड् द्रव्ये करी जी, नव तत्वे दिल लाव रे।
सामायिक नव द्वारे विचारिये जी,
एम षड् आवश्यक भाव रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥
चार सामायिक आगममां कह्यां जी, सर्वविरति अविरुद्ध रे।
पाच भेद छे संयम धर्मना जी,
निर्मल परिणामे सवि शुद्ध रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥

समाधि वर गणधरजी जाचियो जी,
चोवीश जिनने करी प्रणाम रे ।
पुरंदर तीर्थंकर थया एहथी जी,
सौभाग्य लक्ष्मी गुणधाम रे ॥नमो०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणान्विवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदन, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये, जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते संयमाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्य, फलं यजामहे स्वाहा ।

अष्टादश श्री अभिनव ज्ञानपद पूजा

दोहा

ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल ।
अजर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥१॥

ढाल १८, कोइलो पर्वत धुंधलो रे लाल, ए देशी

अभिनव ज्ञान भणो मुदा रे लाल,
मूकी प्रमाद विभाव रे ॥ हुं वारी लाल ॥

सुदिधना आठ गुण धारीये रे लाल, आठ दोपनो अभाव रे।
हुँ वारी लाल, प्रणमो पद अढारमुं रे लाल ॥ १ ॥
देशाराधक किरिया कही रे लाल, सर्वाराधक ज्ञान रे ॥हुं०॥
मुहूर्तादिक किरिया करे रे लाल,
निरंतर अनुभव ज्ञान रे ॥ हुं वारी लाल, प्रणमो० ॥ २ ॥
ज्ञान रहित किरिया करे रे लाल, किरिया रहित जे ज्ञान रे ॥हुं०॥
अन्तर खजुआ रवि जिस्यो रे लाल,
पोडशकनी ए वाण रे ॥ हुं० ॥ प्र० ॥ ३ ॥
छठ अठ्ठमादि तपे करी रे लाल, अज्ञानी जे शुद्ध रे ॥हुं०॥
तेहथी अनंतगुणी शुद्धता रे लाल,
ज्ञानी प्रगटपणे लद्ध रे ॥ हुं०॥ प्र० ॥ ४ ॥
राचे न जूठ किरिया करी रे लाल, ज्ञानवंत जुवो युक्ति रे ॥हुं०॥
जूठ साँच आतम ज्ञानथी रे लाल,
परखे निज निज व्यक्ति रे ॥ हुं० ॥ प्र० ॥ ५ ॥
पांच भेद छे ज्ञानना रे लाल, तेह आराधे जेह रे ॥ हुं० ॥
सागरचंद्र परे प्रभु हुवे रे लाल,
सौभाग्य लक्ष्मी गुण गेह रे ॥ हुं वारी लाल, प्रणमो० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोचयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय, श्रीमते अभिनवज्ञानाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ।

एकोनविंशति श्री श्रुतपद पूजा

दोहा

वक्ता श्रोता योग्यथी, श्रुत अनुभव रस पीन ।
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुतसुख लीन ॥ १ ॥

ढाल १९, अविनाशीनी सेजडीयो रंग, लाग्यो मोरी सजनी जी,
ए देशी

श्रुतपद नमिये भावे भविया, श्रुत छे जगत आधार जी ।
दुषम रजनी समये साचो, श्रुत दीपक व्यवहार ॥
श्रुतपद नमिये जी ॥१॥

बत्रीश दोष रहित प्रभु आगम, आठ गुणे करी भरियुं जी ।
अर्थथी अरिहंतजीए प्रकाश्युं, सूत्रथी गणधर रचियुं ॥श्रु०॥२॥

गणधर प्रत्येकबुद्धे गुंथ्युं, श्रुतकेवली दशपूर्वी जी ।
सूत्र राजा सम अर्थ प्रधान छे, अनुयोग चारनी उर्वी ॥श्रु०॥३॥

जेटला अक्षर श्रुतना भणावे, तेटलां वर्ष हजार जी ।
स्वर्गनां सुख अनंतां विलसे, पामे भवजल पार ॥श्रु०॥४॥

केवलथी वाचकना माटे, छे सुअनाण समत्थ जी ।
श्रुतज्ञानी श्रुतज्ञाने जाणे, केवली जेम पयत्थ ॥श्रु०॥५॥
काल विनयप्रमुख छे अडविध, सूत्रे ज्ञानाचार जी ।
श्रुतज्ञानीनो विनय न सेवे, तो थाये अतिचार ॥श्रु०॥६॥
चउद भेदे श्रुत वीश भेदे छे, सूत्र पीस्तालीश भेदे जी ।
रत्नचूड आराधतो अरिहा, सौभाग्य लक्ष्मी सुख वेदे ॥श्रु०॥७॥
काव्यम् ॥ अतिशयादि० ॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाग्निमदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्य निदानकम् ।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनतानतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते श्रुताय जल, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षत, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा ।

विंशतितम श्री तीर्थपद पूजा

दोहा

तीरथ यात्रा प्रभाव दे, शासन उन्नति काज ।
परमानन्द विलासना, जय जय तीर्थ जहाज ॥ १ ॥

ढाल २०, गिरुआ रे गुण तुम तणा, ए देशी

श्री तीरथ पद पूजो गुणिजन, जेहथी तरिये ते तीरथ रे।
अरिहंत गणधर नियमा तीरथ, चउविह संघ महातीरथ रे॥
श्री तीरथ पद पूजो गुणिजन० ॥ १ ॥
लौकिक अडसठ तीर्थने तजिये, लोकोत्तर ने भजिये रे।
लोकोत्तर द्रव्य–भाव दु भेदे, थावर जंगम जजिये रे॥श्री०॥२॥
पुंडरीकादिक पांचे तीरथ, चैत्यना पांच प्रकार रे।
थावर तीरथ एह भणीजे, तीर्थयात्रा मनोहार रे॥श्री०॥३॥
विहरमान वीश जंगम तीरथ, बे कोडी केवली साथ रे।
विचरतां दुःख दोहग टाले जंगम तीरथ नाथ रे॥श्री०॥४॥
संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, शासनने शोभावे रे।
अडतालीश गुणे गुणवंता, तीर्थपति नमे भावे रे॥श्री०॥५॥
तीरथ पद ध्यावो गुण गावो, पंचरंगी रयण मेलावो रे।
थाल भरी भरी तीर्थ वधावो, गुण अनंत दिल लावो रे॥श्री०॥६॥
मेरुप्रभ परमेश्वर हुओ, ए तीरथने प्रभावे रे।
विजय सौभाग्य लक्ष्मीसूरि संपद, परम महोदय पावे रे॥श्री०॥७॥

काव्य और मन्त्र

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं, जिनवरेन्द्रपदस्यनिदानकम्।
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशति संपद पूजनम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते तीर्थाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा ।

ढाल २१, घणुं जीव तुं जीव, जिनराज जीवो घणुं, ए देशी

घणुं पूज तुं पूज, स्थानक पद पूज तुं,
सम्यग् भाव गुण चित्त आणी ।
जिनवर पद तणुं, हेतु छे ए भलुं,
को नहीं एह समुं समय वाणी ॥ घणुं० ॥१॥
वीश वीश वस्तु, मेलवी करी उजवो,
नरभव पामीने लाहो लीजे ।
तप फल वाधशे, उजमणा थकी,
जिनवर गणधर एम वदीजे ॥ घणुं०
खंभायत बंदिरे, सुन्दर भाविया,
श्रावक श्राविका पुण्यवंता
वीश थानक तणी, भक्ति करे भावथी,
शासन उन्नति अति करंता ॥ घणुं०
तास तणे आग्रहे, स्तवन पूजा रची,
शुद्ध करो श्रुतधरा पुण्य ...
विजय आनन्द गणी, विजय सौभाग्यसूरि,
विजय लक्ष्मीसूरि जैनवाणी ॥ घणु

कलश

एम वीशस्थानक स्तवन कुसुमे, पूजियो शंखेश्वरो ।
संवत [5]समिति [4]वेद [8]वसु [1]शशि (१८४५),
विजय दशमी मन धरो ॥
तपगच्छ विजयानन्द पटधर, श्री विजयसौभाग्य सूरीश्वरो ।
श्री विजयलक्ष्मी सूरि पमणे, सयल संघ मंगल करो ॥१॥

श्री धर्मचन्द्रजी रचित

श्री नंदीश्वर द्वीप पूजा

प्रथम पूजा, प्रथम अभिषेक

दोहा

प्रणमुं शांति जिणंदने, चउद रयण पति जेह ।
कचन वर्णे सोहता, लक्षण लक्षित देह ॥ १ ॥

सुरगिरि अष्टापद गिरि, गिरिनार आबू तेम ।
समेतशिखर ए पांचमो, वंदु बहु धरी प्रेम ॥ २ ॥

समरी शारद मातने, रचुं पूजा हुं रसाल ।
जेम सुणतां भवि प्राणिने, हर्ष वधे तत्काल ॥ ३ ॥

विस्तीर्ण जिनभवनमां, रची नंदीश्वर द्वीप ।
तदनंतर प्रभु थापीने, करो अभिषेक प्रदीप ॥ ४ ॥

एकादश अभिषेक इहां, सामान्ये धरो चित्त ।
आठ अधिक शत तो करो, होये विशेषे प्रीत ॥ ५ ॥

सकल सामग्री मेलवी, श्रद्धावंत नर नार ।
जल कलशा निज कर धरो, पामवा भवजल पार ॥ ६ ॥

रही समश्रेणि तिहुं दिशे, वाजते मंगल तूर ।
पूजा प्रभुनी भणाविये, करवा अघ चकचूर ॥ ७ ॥

ढाल १, अने हांरे वहालो वसे विमलाचले रे, ए देशी

अने हांरे शासन नायक जग विभु रे, स्याद्वादना भाषणहार ॥
ज्ञान वडो, गुण प्रभु कहे रे ॥
श्रीत्रिशलानंदन वीर, ज्ञान वडो गुण प्रभु कहे रे ॥
अने हांरे पांच प्रकारे ते ज्ञान छे रे,
मति श्रुत अवधि श्रीकार ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥
अने० मनःपर्यव केवल भलुं रे, जे प्रगटे दुःख नहिं कोय
॥ ज्ञान० ।
अने० ऊर्ध्व अधो तिर्च्छा लोकनुं रे, जे निश्चे ज्ञानथी होय ॥
॥ ज्ञान० ॥ २ ॥
अने हांरे सुरलोक गेविज्ज अणुत्तरे रे,
जिन प्रतिमा पूजे जे देव ॥ ज्ञान० ।
अने० जाणे ते केवलज्ञानथी रे, ऊर्ध्व लोके रह्या सिद्धदेव
॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥
अने० भुवनपति अधोलोकमां रे, प्रभुनी करे भक्ति रसाल
॥ ज्ञान० ॥

अने हांरे तिर्च्छालोक व्यंतर ज्योतिषी रे, जिनपूजा करे त्रण काल
॥ ज्ञान० ॥ ४ ॥

अने० जंबू धातकी खंडमां रे, पुष्करार्द्ध द्वीप मोझार ॥ज्ञान०॥
अने० करी न करी प्रतिमा तणी रे, करे पूजा सुर नर नार
॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥

अने० दश क्षेत्रे दश चोवीशी रे, पांच विदेहे वीश विहरमान
॥ ज्ञान० ॥

अने० तेह प्रभुनी वाणी सुणे रे, भवि पामवा निश्चय ज्ञान
॥ ज्ञान० ॥ ६ ॥

अने० हांरे ते माटे श्रावक भावशुं रे, प्रभु पूजो थइ उजमाल
॥ ज्ञान० ॥

अने० हांरे कहे धर्मचंद्र जिन ध्यानथी रे, लहे केवल विशाल
॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥

दोहा

सहु प्रभुने कल्याणके, चलितासन हरि होय ।
आवीने उत्सव करी, जाय नंदीसर सोय ॥ १ ॥
एक गिरि निश्राये कह्या, गिरि दधिमुख जे चार ।
गिरि रतिकर अड जाणवा, चैत्य तेर सुविचार ॥ २ ॥
एम चउ दिशिनां मेलव्यां, बावन चैत्य ते होय ।
बिंब छ सहस्स चारशें, अडतालीशने जोय ॥ ३ ॥

हरि आदे सुर बहु मली, मुक्ताफल लेइ हाथ ।
हर्ष वधावे नाथने, जाचे अनंती आथ ॥ ४ ॥
पूर्व दिशे अंजनगिरे, सोहम इंद्र मन रंग ।
आवी तिहां उत्सव करे, तजवा चउगति संग ॥ ५ ॥

ढाल २, भरतने पाटे भूपति रे, ए देशी

हवे नंदीसर द्वीपनी रे, देखी रचना सार ॥ सलुणा ।
सुर मन मधुकर जइ वस्या रे, प्रभु पद कमले अपार ॥स०॥
हवे नंदीसर द्वीपनी रे० ॥ १ ॥
सो कोडी ने त्रेसठ वली रे, जोयण चोराशी लाख ॥स० ।
पहोलपणे द्वीप आठमो रे,सूत्रमां जेहनी शाख॥स०॥हवे०॥२॥
पूर्व दिशे मध्य भागमां रे, गिरि अंजन देव रमण ॥ स० ।
चोराशी सहस्स ते जोयणा रे,छे उंचो कहे श्रमण॥स०॥हवे०३॥
हजार दश नीचे उपरे रे, जाडपणु एक सहस्स ॥ स० ।
सहस्स जोयण कंद छे रे, लहिये गुरुथी रहस्य ॥स०॥हवे॥४॥
छसें एकत्रीश सहस्सं छे रे, उपर त्रेवीश जाण ॥ स० ।
अधो परिधिना ए जोयणा रे, अंजनगिरिनां प्रमाण ॥स०॥
हवे नंदीसर द्वीपनी रे० ॥ ५ ॥
त्रण सहस्स एकसो बासठ रे, जे ऊर्ध्व परिधिना होय॥स०।
जग तारक अरिहा विना रे, कही न शके ते कोय ॥स०॥हवे०६॥

जे देवरमणे चैत्य छे रे, उंचुं बहोंतेर जोयण ॥ सलुणा ।
सो जोयण लांबुं पहोलुं रे, पचास ए प्रभु वयण ॥स०॥ह०७॥
चउ बारो मणि रत्नना रे, सूत्रमां कहे भगवंत ॥ स० ।
देव नामे पूर्व द्वार छे रे, तिहां देव गुणवंत ॥स०॥हवे०॥८॥
दक्षिणे असुर देवता रे, पश्चिम उत्तर जाण ॥ स० ।
नाग ने सोवन्न सोहतां रे, ए नामे द्वार वखाण ॥स०॥हवे०६॥
चैत्य मध्ये मणि पीठिका रे, लांबी पहोली सोल ॥स० ।
जोयण आठ उंची कही रे, लोकप्रकाशे ए बोल ॥स०॥हवे०१०
लांबो पहोलो पीठिका समो रे, देवछंदो अभिराम ॥ स० ।
जोयण सोल अधिक उंचो रे, सोहे पीठिका ठाम ॥स०॥ह०११
ते मध्ये सिंहासने रे, जिन प्रतिमा जयकार ॥ स० ।
सगवीश सगवीश चिहुं दिशे रे, शाश्वती नामे चार ॥स०ह०१२
ते जिन प्रतिमा वंदीने रे, छांडी प्रमादने छेक ॥ स० ।
तीर्थजले कलशा भरी रे, देव करे अभिषेक ॥स०॥हवे०१३॥
केसरे पूजी गुण स्तवे रे, देव देवी धरी नेह ॥ स० ।
धर्मचंद्र जिन पूजतां रे, वरसे मोतीना मेह ॥स०॥हवे०॥१४॥

काव्यं, शार्दूलविक्रीडित-वृत्तम्

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

द्वितीय पूजा (द्वितीयो अभिषेक:)

दोहा

करुं वर्णन बहु भावथी, शेष रह्यो अधिकार।
सुणो भविजन एक चित्तथी, न रहे पाप लगार ॥१॥
दक्षिणे अंजनगिरि तिहां, चमर नामे सुरनाथ।
करे महोच्छव अट्ठाइनो, वरवा शिववधू हाथ ॥२॥

ढाल २, ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे—ए देशी

दक्षिण दिशिए अंजनगिरि जे, नामे ते नित्योद्योत।
भ्रमर सम जे श्याम रतन, तेहनी छे बहु ज्योत ॥
मेरे प्यारे, वंदो बे कर जोडी।
श्री नंदीश्वर चैत्यने पूज्यां, नाखे कर्मने त्रोडी ॥
मेरे प्यारे, वंदो बे कर जोडी ॥१॥
तिहां प्रासाद द्व चार जे, उंचां जोयण सोल।
आठ जोयण विस्तारे छे तेम, प्रवेश जोयण आठ बोल ॥
मेरे प्यारे, वंदो बे कर जोडी ॥२॥

द्वार दीठ एक एक मुखमंडप, ते वली पडसाल सरिखा ।
ते आगल प्रेक्षामंडप जे, घर सम ज्ञानीये निरख्या ॥मेरे०॥३॥
ए मंडप जोयण सो लांबा, पहोला जोयण पचास ।
सोल जोयणना उंचा माख्या, सुणतां होय उल्लास ॥मेरे०॥४॥
बेहु मंडपे त्रण त्रण द्वार, ते वली कह्या चार चार ।
हवे प्रेक्षामंडप मध्ये, वज्रा अक्षाटक सार ॥मेरे०॥५॥
ते मध्ये मणिपीठिका एक पहोली, लांबी जोयण आठ ।
चार जोयणनी उंची जाणो, जीवाभिगमे ए पाठ ॥मेरे०॥६॥
ते उपर हरि योग्य सिंहासन, चंद्रुवे झकझमाल ।
वच्चे वज्रने आंकडे वलगी, मुक्ताफलनी जे माल ॥मेरे०॥७॥
ते प्रेक्षामंडपनी आगल, मणिपीठिका एक सोहे ।
सोल जोयण लांबी ने पहोली, देखतां सुर मन मोहे ॥मेरे०॥८॥
आठ जोयण उंची ते उपर, चैत्य थूम कहे नाणी ।
ते सोल जोयण लांबी पहोली, सोल अधिक उंची जाणी ।
॥मेरे०॥९॥
ते उपर आठ मंगल दीपे, तेथी चार दिशे चार ।
छे मणिपीठिका लांबी पहोली, आठ जोयण चित्त धार ॥
॥मेरे०॥१०॥
चार जोयणनी छे ते उंची, ते पीठ उपर गुणधाम ।
थूभ सन्मुख अरिहंतनी प्रतिमा, बेठी तस कीजे प्रणाम ॥
॥मेरे०॥११॥

देवी देवी ते अरिहा पूजे, मनमां आणी विवेक।
कहे धर्मचंद्र भविजन प्रेमे, करो जिनने अभिषेक ॥मेरे०॥१२॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे।
रूपालोकन विस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

तृतीय पूजा (तृतीयो अभिषेकः)

दोहा

वली इन्द्र ओच्छव करे, पश्चिम गिरिए सार।
तेहनुं वर्णन हवे करुं, बुद्धि तणे अनुसार ॥१॥

ढाल ४, सांभल रे तुं सजनी मोरी—ए देशी

पश्चिम दिशे अंजनगिरि जे, चैत्य एक तिहां लहिये जी रे।
ते चैत्यनां द्वार चारथी, मुखमंडप प्रेक्षा कहीये ॥
जिनवर नमिये जी रे।

जिनवर नमिये भावे भविजन, जिन छे जगत् आधार ॥
।जिनवर नमिये जी रे ॥१॥ ए आंकणी ॥
ते आगल चैत्य थूभ धारो, वारो मनथी अज्ञान जी रे ।
मणिपीठ ते आगल सोहे, जेथूभ पीठिका समान ॥जिन०॥२॥
चैत्यतरु ते उपर दीपे, ते चैत्यवृक्षने आगे जी रे ।
एक मणिपीठिका लांबी पहोली, चंद्रकलाने अर्ध भागे
॥जिन०॥३॥
चार जोयण उंची ते उपर, महेन्द्रध्वज जे रूडो जी रे ।
साठ जोयण ते ऊंचो सोहे, जोयण एक पहोलो उंडो॥जि०॥४॥
नंदा पुष्करिणी ते आगे, जोयण सो ने पच्चास जी रे ।
लांबी पहोली उंडी दश जे, देखनां होवे उल्लास ॥जि०॥५॥
तिहांथी चार दिशे वन चार वली, ते नंदीश्वर द्वीपे जी रे ।
ऋषभानन चंद्रानन स्वामि, वारिषेण वर्द्धमान दीपे ॥जि०॥६॥
ते प्रभुजी पूजा सुर सारे, करवा भवभय दूरे जी रे ।
कहे धर्मचंद्र जिन अभिषेक, भवि करो वाजते तूर ॥जि०॥७॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकन विस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुपा ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभा धवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥

---

१ आठ योजन ।

काव्य और मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥१॥

चतुर्थ पूजा (चतुर्थो अभिषेकः)

दोहा

ईशान वज्री उत्तर दिशे, अंजनगिरिये आय।
करे उत्सव अट्ठाइना, जिनगुण रंगे गाय॥ १ ॥

ढाल ५, महारी सही रे समाणी, ए देशी

उत्तर दिशे अंजनगिरि नाम, कह्यो रमणिक अभिराम रे।
धन धन जिनवाणी ॥
जेमां सर्वनी संख्या वखाणी रे, धन धन जिनवाणी ॥
तिहां चैत्ये एकसो ने आठ, पडिमा ए सूत्रमां पाठ रे
॥ धन० ॥ १ ॥
नाग भूत यक्ष ने आशाधर, ए दो दो प्रभु दीठ अमर रे
॥ धन० ॥
प्रतिमा आठ ए विनय करंती, प्रतिमा दोय अमर विभ्रंती रे
॥ धन० ॥ २ ॥
प्रभु पूंठे एक छत्रधर जाणो, ए सासय भावे वखाणो रे
॥ धन० ॥
हवे पूजा उपकरण कहिये, आठे अधिक सो लहिये रे
॥ धन० ॥ ३ ॥
जे अष्ट मंगल फूलनी दाम, कुंभ ध्वज दर्पण अभिराम रे
॥ धन० ॥

पुष्प चंगेरी छत्र भृङ्गार, घंट धूपघटी श्रीकार रे
॥ धन० ॥ ४ ॥

ए आदि उपकरण घणेरां, रजत मणिनां भलेरां रे
॥ धन० ॥

प्रासाद भूमिये वेल ने बूटा, ठाम ठाम सोनाना छूटा रे
॥ धन० ॥ ५ ॥

मूल प्रासाद मध्ये शत आठ, सोल जिनेनो द्वारे ठाठ रे
॥ धन० ॥

सर्व ए पडिमा एकसो चोवीश, सुर प्रणमे नमावी शीष रे
॥ धन० ॥ ६ ॥

कर धरी कलशा रजत मणिना, सुर गुण गावे जगत धणीना रे
॥ धन० ॥

वीणा मृदंग तालने भमरी, वजावे जे रागने समरी रे
॥ धन० ॥ ७ ॥

करे जिन स्नात्र विधिये एम, चंदने पूजे धरी प्रेम रे
॥ धन० ॥

प्रभुगुण गावानी नित्यमेव, धर्मचन्द्र मुनिने ए टेव रे
॥ धन० ॥ ८ ॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितक्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥

काव्य और मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेश्वराय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥१॥

पंचमी पूजा (पंचमो अभिषेकः)

दोहा

लोकपालनो दधिमुखे, उत्सवतो अधिकार।
कहिशुं भविजन सांभलो, जेम सुख लहो अपार॥ १ ॥

ढाल ६, रंग रसीया रंग रस बन्यो, ए देशी

प्रभु शिव रसिया वसिया दिले, मन मोहनजी।
विधि विष्णु शंकर न सोहाय, मनडुं मोह्यु रे मन मोहनजी॥
पूजतां पडिमा जिनराजनी, मन मोहनजी॥
भवभवतां दुरति पलाय, मनडुं मोह्यु रे मनमोहनजी॥ १ ॥
अंजनगिरिए चारथी मन०, चार दिशाए लाख लाख ॥मनडुं॥
जोयण गये जे वाव्य छे मन०, लाख जोयणनी ते भाष्य ॥
॥ मनडुं० ॥ २ ॥
जोयण दश ऊंडी कही मन०,मत्स्य विनानुं जल सोम ॥मनडुं०॥
वाव्य एकने चार दिशे मन०, त्रण त्रण सोपान ते होय ॥
॥ मनडुं० ॥ ३ ॥
रत्न तोरण चारे दिशे मन०, ते झलके तेजे अपार ॥मनडुं०॥
पणसय जोयण दूर वाव्यथी मन०, चउ दिशाए वन चार ॥
॥ मनडुं० ॥ ४ ॥
पहोलपणे शत पांचना मन०,लांबा पुष्करिणी प्रमाण ॥मनडुं०॥

वाव्य मध्ये एक दधिमुख मन०, स्फटिक रत्ननो जाए ॥
॥ मनडुं० ॥ ५ ॥
चोसठ सहस्स जोयण उंचा मन०, नीचे उपर दश हजार ॥ मनडुं० ॥
जाडपणे ते जाणवो मन०, सहस्स जोयण, कंद विचार ॥
॥ मनडुं० ॥ ६ ॥
एम सोले दधिमुख जाणजो मन०, सर्व प्यालाने आकार ॥ मनडुं० ॥
सोल उपर सोल चैत्य छे मन०, अंजनगिरि सरखा धार ॥
॥ मनडुं० ॥ ७ ॥
एकमो चौवीस चैत्य दीठ मन०, अरिहंतनी प्रतिमा सार
॥ मनडुं० ॥
लोकपाल सघला तिहां मली मन०, करे अभिषेक कहे तार ॥
॥ मनडुं० ॥ ८ ॥
तेम श्रावक मन रंगशुं मन०, जिनवरने करो अभिषेक ॥ मनडं० ॥
कहे धर्मचन्द्र जिन पूजतां मन०, पामिये शिवगति ने एक ॥
॥ मनडुं० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ १ ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

षष्ठी पूजा (षष्ठो अभिषेक:)

दोहा

चन्द्रकला वमणी करथां, होय रतिकर मान ।
तिहां जिनचैत्ये मूरति, पांचसें धनुष्य प्रमाण ॥ १ ॥
भुवनपति व्यंतर तणा, ज्योतिषीना वली देव ।
वैमानिक सुरवर इहां, करे जिनवरी सेव ॥ २ ॥

ढाल ७, राग सारंग

जिनराज पूजी लाहो लीजीये ॥ ए आंकणी ॥
शिव सुखनो अभिलाष करो तो, जिन आणा शिर वहीजीये
जिनराज पूजी लाहो लीजीये ।
वाव्य वाव्यना अंतर वच्चे, रतिकर दो दो लहीजीये ॥जि०॥१॥
दश सहस्स जोयण लांबा पहोला, एक सहस्स उंचा कहीजीये
॥ जिनराज० ॥
पद्मराग मणिना जे दीपे, झलरी संठाण सुणीजीये ॥जि०॥२॥
बत्रीश रतिकरे बत्रीश चैत्ये, प्रभु वंदी सुर हर्षीजीये ।जि०।
तीर्थोदकना कलश भरीने, जिन अभिषेक करीजीये ॥जि०॥३॥
केसर चंदने अरिहा पूजी, फूल टोडर कंठे ठवीजीये ।जि०।
कनकपत्र कोरणी करीने, वच्चे वच्चे रत्न जडीजीये ॥जि०॥४॥
सुर परे भविजन पूजा रचावी, लखमीनो लाहो लीजीये।जि०।
कहे धर्मचंद्र जिनेश्वर सा। ह हवे शिवसुख मुजदीजीये॥जि०॥५॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभो शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥१॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमी पूजा (सप्तमो अभिषेकः)

दोहा

सोहम ईशानेन्द्रनी, अग्र महिषी आठ आठ ।
तेहना भद्र जे सोलमां, प्रभु चैत्यनो ठाठ ॥ १ ॥

ढाल ८, राग-मुमरखडानी देशी

ए द्वीपना मध्य भागमां रे,चार विदिशे जे चार प्रभु उपदेशियां।
रतिकर सर्व रतनमयी रे, सहस्सना उचा धार ॥ प्रभु० ॥१॥
दश सहस्स लांबा पहोला रे, अढीसें जोयण कंद । प्रभु०।
एकवीश सहस उपर छसें रे, नेवीश कहे जिनचद ।।प्रभु०।२।
परिधिना जोयण धारीये रे, नाखीये अज्ञान चूर । प्रभु० ।
रतिकरथी चारे दिशे रे, लाख जोयण जइये दूर ।।प्रभु०॥३॥
राजधानी चारे तिहां रे, गिरि चार मलीने सोल । प्रभु० ।
अग्नि नैऋतना गिरि पूंठे रे,धुर हरि ललनानी बोल।।प्र०॥४॥

चाव्य ईशानना गिरि पूंठे रे, ईशान इंद्रनी आठ। प्रभु०।
राजधानी अग्र महिषीनी रे, छे सिद्धांते ए पाठ॥प्रभु०॥५॥
जोयण एक लाख लाखनी रे, नगरी सोहे ए सोल। प्रभु०।
ए प्रभु वाणी ते सद्दहे रे, जेने धर्मशुं रंग चोल॥प्रभु०॥६॥
जिहां सोल चैत्य दीठ छे रे, प्रतिमा एकसो वीश।प्रभु०।
तिहां अग्रमहिषी आवीने रे, स्नात्र करे वसा वीश॥प्रभु०॥७॥
तेम तुम भविजन भावशुं रे, पूजो श्री अरिहंत। प्रभु०।
धर्म कहे जिन सेवतां रे, पामीये सुख अनंत॥ प्रभु० ॥८॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या, विभोः शैशवे।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा॥ १॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्रीवर्धमानो जिनः॥ २॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा॥१॥

अष्टमी पूजा (अष्टमो अभिषेकः)

दोहा

तिर्च्छा लोके देहरां, बत्रीशसें मन आण।
ओगणसाठ उपर कह्यां, हवे करुं बिंब वखाण॥ १॥

त्रण लाख एकाणुं सहस्स, त्रणसें वली वीश।
शाश्वती पडिमा एटली, हुं प्रणमुं निशदिश ॥ २ ॥

ढाल ९, मन मोहना रे—ए देशी

कुंडल द्वीप सोहामणो, मन मोहन मेरे ।
चार तिहां जिनगेह, मन मोहन मेरे ॥
जिन पडिमा चारसछन्नुं म०, वंदुं हुं धरी नेह ॥म०॥१॥
रुचक द्वीपे चार चैत्य छे म०, चारसें छन्नुं जिनराज ।म० ।
मेरु वने एंशी देहरां म०, छन्नुंसें जिन वदुं आज॥म०॥२॥
पांच मेरु चूलिकाये म०, प्रासादे छमें जिनराय ।म० ।
गजदंते वीश देहरां म०, बिंब चोवीशसें समुदाय ॥म०॥३॥
देव उत्तर कुरु क्षेत्रमां म०, जिनघर दश विशाल ।म० ।
बारसेंबिंबने पूजता म०, पाप जाये पायाल ॥ म० ॥ ४ ॥
एंशी वक्खारा गिरिये म०, प्रासाद एंशी धार । म० ।
छन्नुं अधिक जिन शाश्वता म०, पूजीये नव हजार॥म०॥५॥
कुलगिरिये त्रीश देहरां म०, छत्रीशसें जिनवर जाण । म०
चैत्य चालीश दिग्गजे म०, अडतालीश शत जिनमाण॥म०॥६॥
दीर्घ वैताढ्ये देहरां म०, एकसो सित्तेर प्रमाण । म० ।
वीश हजार बिंब चारसें म०, भविजन पूजो सुजाण ॥म०॥७॥
जंबु प्रमुख तरुए वली म०, चैत्य अग्यारसें सित्तेर । म० ।
चालीश हजार ने चारसें म०,सात पूजी स्यो जिन शहेर॥म०॥८॥

चैत्य हजार कंचनगिरिये०, बिंब लाख ने वीश हजार ।म०।
एंशी द्रहे एंशी देहरां म०, छन्नुं सें जुहार ॥म०॥९॥
चैत्य कुंडे त्रणसें एंशी म०, बिंब पीस्तालीश हजार ।म० ।
उपर छसें जिनवरा म०, समरो ऊठी सवार ॥म०॥१०॥
महानदीये सित्तेर कह्या म०, चौराशीसें अरिहंत ।म० ।
वीश प्रासाद यमकगिरे म०, चोवीशसें भगवंत ॥म०॥११॥
वृत्त वैताढ्ये वीश छे म०, शाश्वता जिनगेह ।म० ।
बिंब चोवीशसें पूजतां म०, थाये निर्मल देह ॥म०॥१२॥
इखुकारे चार देहरां म०, चारसें एंशी जिनबिंब ।म० ।
ते जिनवरने पूजतां म०, पाप जाये अविलंब ॥म०॥१३॥
मनुष्योत्तर चार देहरां म०, चारसें एंसी भगवान ।म० ।
व्यंतर मांहे असंख्य छे म०, जिनघर बिंबनुं मान ॥म०॥१४॥
असंख्य ज्योतिषीमां कह्यां म०,जिनघर ने जिनराय ।म० ।
धर्म कहे प्रभु पूजतां म०, शिवसुख वहेलुं थाय ॥म०॥१५॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥१॥
उन्मृष्टं नयन प्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं मस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥१॥

नवम् पूजा (नवमो अभिषेक)

दोहा

सात कोडी वहोत्तेर लाख, अवोलोके जिनगेह ।
तेरस नेव्याशी कोडी, सात लाख थिर एह ॥१॥

ढाल १०, काज सिध्या सकल हवे सार—ए देशी

हवे असुर कुमारे देहरा, कह्यां चोसठ लाख मलेरा ।
एकसो पत्तर कोडी जाणु, पडिमा वीश लाख वखाणु ॥
सासय जिनवरने पूजीजे, नर भवनो लाहो लीजे ॥१॥

वली नाग कुमारे कहिये, चैत्य लाख चोराशी लहीये ।
एकसो ने एकावन कोडी, वीश लाख नमु कर जोडी ॥२॥

चैत्य वहोत्तेर लाख विचार, सुवर्ण कुमारे श्रीकार ।
एकसो ने ओगणत्रीश कोड, साठ लाख उपर जिन जोडा ॥३॥

विद्युतग्नि य द्वीप कुमार, उदधि दिग स्तनित सार ।
चैत्य षट् निकाये वखाणो, लाख छोंतेर छोंतेर जाणो ॥४॥

कोडी एकसो ने छत्रीश, लाख एशी नमो निशदिश ।
एक निकाये एटला होय, तेम पाच निकाये जोय ॥५॥

जिन प्रासाद छन्नु लाख, वायुकुमार माहे भाख ।
कोड एकसो वहोत्तेर जिनराय, एंशी लाख पूजे दु ख जाय ॥
सासय जिनवरने पूजीजे ॥६॥

अधोलोकना जिनवर गाया, जग सुजश पडह वजाया ।
कहे धर्म भवि उजमाल, थइ पूजो जगत् दयाल ॥सा०॥७॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्याविभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥१॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये, जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यामहे स्वाहा ।

दशमी पूजा (दशमो अभिषेकः)

दोहा

ऊर्ध्वलोके जिनवर घर, लाख चोराशी जाण ।
सहस सत्ताणु उपरे, त्रेवशनुं परिमाण ॥१॥
एकसो बावन कोडी जिन, लाख चोराणु सार ।
सहस चुम्मालीश वंदिये, सात सें साठ उदार ॥२॥

ढाल ११, सिद्धाचल शिखरे दीवो रे, आदीश्वर—ए देशी

सौधर्मे चैत्यज कहिये रे, अरिहा अलबेला ।
लाख बत्रीश संख्या लहिये रे, अरिहा पूजो अलबेला ।

लाख साठ सत्तावन कोडी रे । अरिहा० ।
पडिमा वंदो कर जोडी रे ॥अरिहा०॥१॥
चैत्य अडवीश लाख जाणो रे । अरिहा० ।
ईशान स्वर्गे वखाणो रे ॥अरिहा०॥
कोडो पचास ने लाखो चाली रे । अरिहा० ।
वदो प्रतिमा रढियाली रे ॥अरिहा०॥२॥
जिनवरना बार लाख देहरा रे । अरिहा० ।
सनतकुमारे भलेरा रे ॥अरिहा०॥
साठ लाख ने कोडी एकवीश रे । अरिहा० ।
पडिमा कहे त्रिजग ईश रे ॥अरिहा०॥३॥
माहेन्द्र चोथु चित्त धारी रे । अरिहा० ।
प्रासाद आठलाख सभारो रे ॥अरिहा०॥
कोडी चौद ने लाख चाल रे । अरिहा० ।
प्रभु ध्याने सदा दीवाली रे ॥अरिहा०॥४॥
पाचमे प्रासाद लाख चार रे । अरिहा० ।
सातकोडी वीश लाख जिन धार रे ॥अरिहा०॥
लांतके सहस्स पचास रे ।अरिहा० ।
नेवु लाख जिन नमिये उल्लास रे ॥अरिहा०॥५॥
सातमे शुक्र देवलोके रे ।अरिहा० ।
प्रासाद चालीश सहस्स थोके रे ॥अरिहा०॥

पडिमा बहोत्तेर लाख मान रे । अरिहा० ।
सदा धरिये एहनुं ध्यान रे ॥ अरिहा० ॥ ६ ॥
आठमुं सहस्रार ते कहिये रे । अरिहा० ।
घिर हजार छ लहिये रे ॥जनशअरिहा०, ।
दश लाख ने अेंशी हजार रे । अरिहा० ।
हुँ प्रणमुं उठी सवार रे ॥ अरिहा० ॥ ७ ॥
आनत प्राणते जिनगेह रे । अरिहा० ।
भाखे चारसें अरिहा तेह रे ॥ अरिहा० ।
बहोत्तेर हजार जिनराय रे । अरिहा० ।
जस प्रणम्या पातक जाय रे ॥ अरिहा० ॥ ८ ॥
आरण अच्युते वंदो रे । अरिहा० ।
चैत्य त्रणसें सुणी आनंदो रे ॥ अरिहा० ।
चोपन सहस्स देवाधिदेवा रे । अरिहा०।
जस सारे सुरपति सेवा रे ॥ अरिहा० ॥ ९ ॥
एकसो अग्यार धुर त्रिके रे । अरिहा० ।
जिनचैत्य धारो सुविवेके रे ॥ अरिहा ।
त्रणसें वीश तेर हजार रे । अरिहा० ।
पूजतां पामे भव पार रे ॥ अरिहा० ॥ १० ॥
त्रिक बीजीये एकसो सात रे । अरिहा०।
पडिमा चार सहस्स विख्यात रे ॥ अरिहा० ॥

आठसें अधिक नमो वाली रे । अरिहा० ।
सुर पूजे भावे निहाली रे ॥ अरिहा० ॥११॥
त्रिक त्रीजीये एकसो सार रे । अरिहा० ।
णमो विंब पार हजार रे ॥ अरिहा० ।
अनुत्तरे पांच चैत्य विशाल रे । अरिहा० ।
छसें जिन नमो थइ उजमाल रे ॥अरिहा०॥१२॥
एक कल्प कल्पातीत देवा रे । अरिहा० ।
द्रव्य भावे करे जिन सेवा रे॥अरिहा०।
कहे धर्म भवि नित्य पूजा रे । अरिहा० ।
जग तारक देव न दूजो रे ॥ अरिहा० ॥१३॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे,शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमचक्षुषा ॥ १ ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभांधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥१॥

एकादशी पूजा, (एक दशो अभिषेक:)

दोहा

पन्नर क्षेत्रे प्रभु तणी, पडिमा असासय जेह ।
तेहनां पद पंकज नमुं, करवा पापनो छेह ॥ १ ॥

ढाल १२, चोवीश चोकनी देशी

हे साहेबजी ! नेक नजर करी नाथ सेवकने तारो ।
हे साहेबजी ! महेरकरी पूजानु फल मुज आलो ॥एआंकणी॥
प्रभु तुज मूरति मोहन वेली, पूजे सुर अपछरा अलवेली ।
वर घनसार केसरशुं भेली ॥ हे साहेबजी० ॥१॥
सिद्धाचल तीर्थ भवि सेवो, चउद क्षेत्रे तीर्थ नहीं एहवो ।
एम बोले देवाधिदेवो ॥ हे साहेबजी० ॥२॥
गिरनारे जइये नेम पासेः इहा भावी जिन सिद्धि जाशे ।
जस ध्याने पातकडां नासे ॥ हे साहेबजी० ॥३॥
आबूगढ़े आदि जिनराया, नेमनाथ शिवादेवी जाया ।
जस चोसठ इन्द्रे गुण गाया ॥ हे साहेबजी० ॥४॥
वली समेतशिखरे जगाना ईश, गया मोक्षे जिनराया वीश ।
ध्येय ध्यावो भविजन निशदिश ॥ हे साहेबजी० ॥५॥
अष्टापदे सकल करम टाली, प्रभु वरिया शिववधू लटकाली ।
आदीश्वर पूजतां दीवाली ॥ हे साहेबजी० ॥६॥
ए आदे तीर्थ प्रणमो मन रंगे, वली पूजो प्रभुने वन अंगे ।
कहे धर्मचन्द्र अति उमंगे ॥ हे साहेबजी० ॥७॥

काव्य और मन्त्र

स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षषा ॥ १ ॥

उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-
निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

कलश, राग धन्याश्री

गायो गायो रे, नंदीश्वर तीर्थ में गायो ।
जंघा विद्याचारण मुनिवर, जिहां सुरनो समुदायो ।
किन्नर किन्नरी खेचर आवे, तेम चोसठ सुररायो रे ॥नंदी०॥१॥
अपछरा इन्द्राणी मन रंगे, स्नात्र करे सुखदायो ।
करे नृत्य सुकंठे गावे, जिन पूजा मोह घटायो रे ॥नंदी०॥२॥
तपगच्छपति श्री दयासूरिना, खुशालविजय उवज्झायो ।
तास बंधव सुगुण गीतारथ, कल्याणचन्द्र सवायो रे ॥
नंदीश्वर तीर्थ में गायो ॥३॥
विजयदेवेन्द्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार रचायो ।
दमण बंदरे रही चोमासु, ऋषभदेव सुपसायो रे ॥नंदी०॥४॥
अढारसें छन्नुं भाद्रपद मासे, संवच्छरी दिन गायो ।
प्रभु समुदाय कवि धर्मचन्द्रे, संघ सकल हरखायो रे ॥
॥ नंदी० ॥५॥

पं० श्रीधुरंधरविजयजी रचित

श्री आदिजिन पंचकल्याणक पूजा

प्रथम कल्याण प्रथम पूजा

दोहा

स्वस्ति श्री भगवंत ने, प्रणमी प्रथम जिणंद ।
लोक लोकोत्तर धर्मना, शासक भुवन दिणंद ॥ १ ॥
आकाले आ भरत मां, प्रथम प्रभु गुणगेह ।
पंच कल्याणक तेहनां, गाशु शुभ सस्नेह ॥ २ ॥
श्री धनसार्थ पति भवे, पाम्या समकित रत्न ।
पामी प्रभुता मेलवी, करी धर्म मां यत्न ॥ ३ ॥
बांध्युं श्री जिन नाम ने, आराधी वीश स्थान ।
वज्रनाभ चक्री भवे, पछे सर्वार्थ विमान ॥ ४ ॥
तेंत्रिस सागर त्यां रही, विलसी लील विलास ।
अन्ते अवधे जोततां, च्यवन क्षेत्र शुभ वास ॥ ५ ॥

मंगल गीत

देशी....यमन....कल्याण....

वंदो ऋषभ जिणंद–प्रेम धरी (२) मंगल कमला

केवी निकेतन, चेतन कैरव चन्द ॥ प्रेम० ॥ कल्याणक कल्याण करे जस, मले मुक्ति आनंद ॥ प्रेम० ॥ नंदीश्वर जई ओच्छव करतां, जास कल्याण इन्द ॥ प्रेम० ॥ पंच कल्याणक गातां सुणतां, तूटे भव भय फंद ॥ प्रेम० ॥ धर्म "धुरंधर" धुर जिनवर ए, सुखकर सुखनां कंद ॥ प्रेम० ॥

ढाल देशी भैरव राग

वाजे मंगल तूर आज नाभिराज द्वारे, मरुदेवी साथ, करे क्रीड़ा नाभिनाथ ॥ काम राग मंद आय, कर्मना उद्धारे ॥ वाजे० ॥ १ ॥ पुण्य ने प्रताप ताप, अन्य थी अधिक आप ॥ नाहिं काई करे पाप, मैत्री भाव धारे ॥ वाजे० ॥ ॥ २ ॥ अवसर्पिणी नां दोय आर, वीत्या चाले तीजो सार ॥ ते पण बहु पूर्ण पार, धर्मनी सवारे ॥ वाजे० ॥ ३ ॥ कल्पवृक्ष ना प्रभाव घट्यां पण पूर्ण भाव ॥ जिनकुल मां जिन प्रभाव, सत्य ने वधारे ॥ वाजे० ॥ ४ ॥ तुर्यांग वाजे बहु मधुर, नाद मूर्च्छना थी पूर ॥ सारेगम पधनी सुर, ताल ने इसारे ॥ वाजे० ॥ ५ ॥ लाख चउराशी पूरव, अधिक पक्ष ऐंसी नव ॥ बाकी त्रीजो आरो जव, व्याव्या जिन त्यारे ॥ वाजे० ॥ ६ ॥ कांई नहीं तेजोहाण, त्यजी सर्वारथ विमान ॥ प्रभुजी युक्त त्रण ज्ञान, गर्भमां पधारे ॥ वाजे०

॥ ७ ॥ चलितासन शक्र आय, सन्मुख सात आठ पाय ॥ शक्र स्तव प्रेमे गाय, भक्तिभाव धारे ॥ वाजे० ॥ ८ ॥ आषाढ़ कृष्ण चोथ दिन, चन्द्र उत्तराषाढ़ लीन ॥ मरुदेवी मात सुमीण, चौद त्यां निहारे ॥ वाजे० ॥ ९ ॥ सांमली ने स्वप्नसार, नाभिराय फल विचार कहे पुत्र कुलधार, थासे पूर्ण काले ॥ वाजे० ॥ १० ॥ शक्र समझी नीजाचार, आवे शीघ्र सपरिवार ॥ कहे स्वप्न फल विस्तार हर्ष ने विस्तारे ॥ वाजे० ॥ ११ ॥ पोषण गर्भ तणु मात, करे शुभ दिवस रात ॥ थाय सहुसारी वात, "धुरंधर" ने प्यारे ॥ वाजे० ॥ १२ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुज गीर्वाणमहिते ।
वतारे जन्मासौ, विरति-वरणे केवलदिने ॥ १ ॥

तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवन जने सौख्यमतुलम् ।
तमादीशं वन्दे प्रशमशमदं मंगलहितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते परमेष्ठिने जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

प्रथम कल्याण दूसरी पूजा

दोहा

साड़ा सात दिवस अधिक, नव महिना जब जाय ।
चैत्र वदि आठम दिने, उत्तराषाढ़ सुहाय ॥ १ ॥
धन राशी मां चन्द्रमा, उच्च स्थले ग्रह सर्व ।
त्रणे जगत ना जन्तु नुं, जाणे आव्यों पर्व ॥ २ ॥
आनन्द मंगल विश्वमां, वर्ते जय जय जयकार ।
मरु देवानी, कुक्षिए, जिन जन्म्या हितकार ॥ ३ ॥

ढाल, राग आशावरी

जन्म्या जग हितकार–जिनवर, जन्म्या जग हितकार ॥
त्रणलोक मां प्रकाश थयो ने, दूर गयो अंधकार ॥
गन्धोदक नी वृष्टि थई ने, करे पंखी जयकार ॥ जि० ॥ १ ॥
समीरण वहे तो धीरे धीरे, पृथ्वी बनी मनोहार ॥
गाजे गगने देव दुंदुभि, घंटा ना रणकार ॥ जि० ॥ २ ॥
छप्पन दिक्कुमरी ना आसन, कम्प्या पण ते वार ॥
सूतिकर्म करण झट आवे, हीलमील निज परिवार ॥जि०॥३॥
जिन जननी ने देई प्रदक्षिणा, निज निज कार्य प्रकार ॥
करती हरती पापपुंज ने, तरवा भव जल पार ॥ जि० ॥ ४ ॥
अधोलोकनी आठ कुमारी, ईशान कोण मोझार ॥

रचे पूर्वमुख प्रसुतिघर ने, जेमा स्तंभ हजार ॥ जि० ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वलोकनी कुसुम वरसावे, भँवरानां झकार ॥ पूर्व रूचक थी आवे गाती, दर्पणनी धरनार ॥ जि० ॥ ६ ॥ कलश-धरी रही दक्षिण दिशीना, रुचक नी रहेनार ॥ पश्चिमनी पंखा ने धारे, चामर उत्तर धार ॥ जि० ॥ ७ ॥ दीप धरी ने उभी रहेती, चार खूणानी चार ॥ द्वीप रुचक नी चार आवी ने, स्थापे प्रभुनी नाल ॥ जि० ॥ ८ ॥ अभ्यंग अने स्नान करावी, चन्दन चर्चे सार ॥ वस्त्राभूषण पहेरावी ने, भक्ति करे सुप्रकार ॥ जि० ॥ ९ ॥ रक्षा पोटली बांधी बोले, आशीष अपरंपार ॥ पर्वत आयु हो जो स्वामी, त्रण जगत आधार ॥ जि० ॥ १० ॥ ए ओच्छव ने करती धरती, है ये हर्ष अपार ॥ धर्म "धुरन्धर" जिन थी जग मां, थाशे जय जयकार ॥ जि० ॥ ११ ॥

गीत राग संयम रंग लाग्यो....

मरु देवा नो लाड़लो रे, नाभिराम कुल चन्द जिनवर घणु जीवो ॥ आसन कंपे इन्द्रनु रे, श्री जिन पुण्य प्रभाव ॥ जि० ॥ ज्ञाने जाणी नमी स्तवी रे, इन्द्र रचे प्रस्ताव ॥ जि० ॥ १ ॥ घंट सुघोषा वगाड़तां रे, हरिणिगमेषी देव ॥ जि० ॥ जन्म महोत्सव कारणे रे, आव्या सर्व देव ॥ जि० ॥ २ ॥ मरुदेवा माता ने वंदिने रे इन्द्र स्तवे वट

वार ॥ जि० ॥ स्नात्र कारण हु आवियो रे, मीति न लहो लगार ॥ जि० ॥ ३ ॥ अवस्वापिनी आपी ने रे, पासे मुके प्रतिबिम्ब ॥ जि० ॥ प्रभु ने लेई पाच रूप धरी रे, पहोंच्या श्री मेरु शृङ्ग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अतिपांडुकमला शिला रे, पांडुक वन मोझार ॥ जि० ॥ पूर्व मुख बेशी खोले धरी रे, कलशा आठ प्रकार ॥ जि० ॥ ५ ॥ गगा मागध ना शुभ जले रे, नवरावे जिनराय ॥ जि० ॥ एक क्रोड साठ लाख स्नात्र थी रे, हैये हर्ष न माय ॥ जि० ॥ ६ ॥ पूजि अर्ची प्रेम सु रे, मूके मात नी पास ॥ जि० ॥ अगूठे अमृत ठवी रे, नदीश्वर उलास ॥ जि० ॥ ७ ॥ विविध ओच्छवराय करे रे, देश काले अनुसार ॥ जि० ॥ जेयो ए उत्सव उजव्यो रे, ते लहे से भव पार ॥ जि० ॥ ८ ॥ दिवसे दिवसे दीपतां रे, सूर्य शशि नी जेम ॥ जि० ॥ धर्म "धुरन्धर" नाथ थी रे, सर्व वाते योग क्षेम ॥ जि० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुज गीर्वाणमहिते ।
वतारे जन्माधौ विरति वरणे केवलदिने ॥ १ ॥
तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवन जने सौख्यमतुलम् ।
तमादीशं वदे प्रशमशमदं मङ्गलहितम् ॥ २ ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते अर्हते जिनेन्द्राय चन्दनं,यजामहे स्वाहा ॥१॥

द्वितीय कल्याण तृतीय पूजा

दोहा

प्रथम स्वप्न शुभ वृषभ नु, लह्यु हतु अभिराम ।
शोभे लंछन वृषभ नु, जमणी जंघे स्वाम ॥ १ ॥
एम विचारी नाभिराय, प्रभु नु "ऋषभ कुमार" ।
नाम करे सुन्दर शुचि, सार्थक गुण अनुसार ॥ २ ॥
इक्षु लइ-ने हाथ मां, आवे सुर ना स्वाम ।
प्रभु इच्छाए वंश नु, इक्ष्वाकु कर्यु नाम ॥ ३ ॥
स्थापी काश्यप गोत्र ने, इन्द्र गया निज वास ।
देवो बालक रूप लई, करे प्रभु शु विलास ॥ ४ ॥
अनक्रमे यौवन पामीयां, धनुष पांचशे काय ।
कनक वर्ण एक सहस आठ, लक्षण शुभ सोहाय ॥५॥

ढाल,राग सारंग, हो साहेबजी परमातम पूजा नो फल मने...

श्री ऋषभ प्रभु ? देखी दिल हरखाय अतिशय माहरु,
श्री आदि प्रभु ! रति-पति थी पण अधिकु रूप छे ताहरु ।

उत्तर कुरुथी फल लई आवे सुर, आपे प्रभु ने बहु भावे। प्रभु तोले जग वां कोई नावे, ए अनुपम अद्भुत सोहावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ एक ताड़ तले हतु' युगलियु', फल पड्यु' शिशुक नु' स्वर्ग थयु' । कन्या पालन नामीराय कर्यु, थशे ऋषभपत्नि एम उच्चरीयु' ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रभु विवाह अवसर विचारी करे नामीराज तैयारी, आवे सुरपति निज आचारी । परिवार सहित उत्सव भारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सुनंदा सुमंगला ना प्यारे, वस्त्राभूषण पण बहु भारे। देवीओ बन्ने ने शणगारे, मधुरां मधुरां गीत उचारे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ प्रभु ने पण इन्द्रे शणगार्या, चोरी मां लई जई बेसार्या। करी थै थै वाजां वजड़ाव्या, विधिपूर्वक प्रेमे परणाव्या ॥ श्री० ॥ ५ ॥ युगलिया एक बीजा झगड़े, नाभी राय कने फरियाद करे। एक राजा नी पड़ जरूर पड़े, हो ऋषभजी राजा उचित खरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चलितासन इन्द्र आवी ने करे, राज्याभिषेक शिर मुकुट धरे। जल लावी युगलिया विचार करे। करे चरण अभिषेक विनय वडे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुरपति नी आज्ञा लही भारी,-वैश्रमणे किधी तैयारी। बारने नव जोजन विस्तारी, वसी "विनीता" नगरी बहु सारी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ प्रभु प्रथम नरेश्वर कहेवाया, भोग भोगविया आदिराया। वे युगल छ लाख पूर्व जोया, प्रभु धर्म "धुरंधर गुण गाया ॥ श्री० ॥ ९ ॥

गीत राग तप पद ने पूजीने हो प्राणी....

ज्ञान दीपक प्रगटावो हो प्रभुजी, ज्ञान दीपक प्रगटायो। ज्ञान दीपक विण महा अंधारे, आथडिये संसारे॥ शिक्षण दइ सुखीया करो स्वामी, रह्या छीये तुम आधारे॥ हो० ॥ १ ॥ नथी पचतुं आ अन्न अमो ने, वधुशुं कहिये तमने? अमे युगलियां अभण ने भोलां, समझ न कांइ ए अमने ॥ हो० ॥ २ ॥ मसली पलाली कांखे राखी, खावा नु कहे स्वामि। काल प्रभावे ए पण न जरे, अग्निनी छे खामी ॥ हो० ॥ ३ ॥ झाड़े झाड़े घसाया अतिशे, शुष्क थई ने पवने। झगमग झगमग ज्योति जाग्यो, लाग्यो यम युगलिक ने ॥ हो० ॥ ४ ॥ प्रभु पासे सहु दोडी आव्या, माटी प्रभु ए मंगावी। हस्तिकुंभे कुंभ भाग करावी, कुलाल कला ने बतावी॥ हो० ॥ ५ ॥ पांच शिल्प मूल वीश वीश भेदे, शिखवी अज्ञता छेदे। प्रथम प्रभुनो धर्म गृहिपणे लौकिक नीति उपदेशे ॥ हो० ॥ ६ ॥ त्याशी लाख पूरव एम वीत्यां, गृहवासे प्रभु वसीया ॥ धर्म "धुरंधर" जिन जग जीत्या, सुख विलस्या बहु रसीया ॥ हो० ॥ ७ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुजगीर्वाणमहिते।
ऽवतारे जन्मासौ विरती वरणे केवलदिने ॥१॥

तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवन जने सौख्यमतुलम् ।
तमादीशं वन्दे प्रशमशमदं मङ्गलहितम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय, श्रीमते अर्हते जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

तृतीये कल्याण चतुर्थ पूजा

दोहा

सौ पुत्रो बे पुत्रिओ, गुण गण ना भंडार।
प्रभु ए पोते केलव्या, अर्पी कला अपार ॥ १ ॥
लीपी शिखवी ब्राह्मीने, गणित सुन्दरी सार।
भरत बाहुबली ने दीधां, बहोतेर कला विचार ॥ २ ॥
सौ पुत्रों ने सोंपी ने, जुदा जुदा राज्य।
पोते लेवा नीकल्या, आत्मा नु साम्राज्य ॥ ३ ॥
लौकान्तिक सुर विनवे, शासन स्थापो नाथ।
दान संवत्सरी आपी ने, साधो शिवपुर साथ ॥ ४ ॥
समभावी परिवार ने, माता ने बहु वार।
तैयारी करी स्वामिए, लेवा संयममार ॥ ५ ॥

ढाल, राग धन्याश्री—मुनिवर परम दयाल

संयम ले सुखकार, ऋषभजी (२) । दीक्षा महोत्सव

नो वर घोड़ो, सुन्दर ने श्रीकार ॥ ऋष० ॥ स्वामी सुदर्शन शिबिका शोभे, देव देवी नर नार ॥ ऋ० ॥ १ ॥ सिद्धारथ उद्याने पहोंच्या, वृक्ष अशोक रसाल ॥ ऋ० ॥ अलंकार उतारी सर्वे, लोच करे मुट्ठी चार ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कनक कलश पर नील कमलशी शोभी रही केशवाल ॥ ऋ० ॥ सुरपतिनी विनति थी राखी, भक्तवत्सल अणगार ॥ ऋ० ॥ ॥ ३ ॥ निर्जल छट्ठ तपे चैत्र वदिनी, अष्टमी तिथि मनोहार ॥ ऋ० ॥ 'करेमि सामाइय' जब उच्चरे, चोथुं ज्ञान विशाल ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ साथे कच्छ महाकच्छा दिक, राजवी चार हजार ॥ ऋ० ॥ धर्म "धुरंधर" ए मुनिवर थी, होशे मंगल माल ॥ ऋ० ॥ ५ ॥

गीत, राग भैरवी-आवो आवो हे वीर स्वामी मारा अन्तर मां

ल्योने ल्योने आ भिक्षा भावे, ऋषभ देव भगवान । शिख्युं नहिं स्वामी ए पहेलां, पूछ्युं नहीं ते वार । निरुपाये ए तापस थइ ने, रहेतां चार हजार ॥ ल्यो० ॥ १ ॥ राज्य भाग लेवाने आवे, नमि विनमि बे कुमार । पुष्प बिछावी जल छंटकावी, करे सेवा असिधार ॥ ल्यो० ॥ २ ॥ धरण इन्द्र प्रभु वंदन आवे, जोवे भक्तिभाव । गौरी आदि विद्या आपी, वैताढ्ये नगर वसाव ॥ ल्यो० ॥ ३ ॥ पूर्व जन्मना प्रभु अंतराये, विचरे विण आहार । अधिक वर्ष वीत्युं

ए रीते करे कुरु देश विहार ॥ स्यो० ॥४॥ कोई कनक ना भूषण आपे, आपे कन्या कोय। भिक्षा नो व्यवहार न जाणे, एमा ते शु होय ॥ स्यो० ॥ ५ ॥ कांइ नथी लेता शु करीए ?, श्लोक करे पोकर। हस्तिनाग पुरना युवराज, श्री श्रेयासकुमार ॥ स्यो० ॥ ६ ॥ शब्द सांभली प्रभु ने देखी, जातिसमरण उपन्यु। प्रासुक ईक्षुरस वहोराव्यो, स्वप्न सर्व नु फलियु ॥ स्यो० ॥ ७ ॥ अक्षय तृतीया ने शुभ दिवसे, पारणु प्रभुए कीधु। पच दिव्य प्रगट्या श्रेयांसे, दान प्रथम त्या दीधु ॥ स्यो० ॥ ८ ॥ एक हजार वरस जिन विचर्या, देश नगर पुर गाम। विण प्रतिबधे धर्म "धुरधर", जगद जीव विश्राम ॥ स्यो० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुजगीर्वाणमहिते।
वतारे जन्माप्तौ विरति वरणे केवलदिने ॥ १ ॥
तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवन जने सौख्यमतुलम।
तमादीश वन्दे प्रशमशमद मङ्गलहितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुपाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते नाथाय जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ॥१॥

पाले प्रवचन मात ने, टाले चार कषाय ।
चाले कर्म ना मर्म ने, गाले कोमल काय ॥ १ ॥
वहली देशे विचरी, पाछा फर्या तत्काल ।
बाहुबल पोंकारता, दादा आदम नार ॥ २ ॥
अनुक्रमे जिनजी आविया, अयोध्या नगरी बहार ।
उत्तर दिशी राजे परुं, पुरिमताल मनोहार ॥ ३ ॥
शकाटानन उद्यान मां, वड़नुं सुन्दर झाड़ ।
फागण वदि एकादशी, नक्षत्र उत्तराषाढ ॥ ४ ॥
कमल समा निर्लेप ने, गगन समा निःसंग ।
उज्वल यश विस्तारतां, गंगतरंग शुं रंग ॥ ५ ॥
क्षपक श्रेणी आरोही ने, ध्याता उज्वल ध्यान ।
घाती कर्म नो क्षय करी, पाम्या केवलज्ञान ॥ ६ ॥

ढाल, राग.....व्रत सातमे विरति आदरु रेलो

शुभ समवसरण इन्द्रे रच्युं रे लो, गढ़ प्रथम रजत नो विशाल जो । कोट कांचन नो वचमां विराजतो रे लो, त्रीजो राजे रतन नो शाल जो । "चालो जईये प्रभुने वांदवा रे लो" ॥ १ ॥ जिहाँ वृक्ष अशोक शोक दूरे करे रे लो, पुष्पवृष्टि होय जानुं प्रमाण जो । दिव्य ध्वनि सुभव्य गाजी

रह्यो रे लो, चारु चामर विंझाय सुजाण जो ॥ चा० ॥२॥ प्रभु बैठा मणिमय आसने रे लो, प्रभा मंडल जिनदर्शन काज जो। देवदुंदुभी नाद गंभीर घणो रे लो, त्रण छत्रे त्रिभुवन राज जो ॥ चा० ॥ ३ ॥ प्रभु चौत्रीश अतिशय शोभता रे लो, गुण पांत्रीश वाणी रसाल जो। देवी क्रोडो सदैव सेवा करे रे लो, प्रेमे पूजे ने बूझे पृथ्वीपाल जो ॥ चा० ॥ ४ ॥ राय भरत ने आपी वधामणी रे लो, साथे चक्र रत्न नो वृत्तान्त जो। शुं करवुं ? क्षण एक विचारतां रे लो, मोह सतावे सन्त ने महन्त जो ॥ चा० ॥ ५ ॥ मात पासे आवी ने विनवे रे लो, तुम पुत्र पधार्या पुर बहार जो। चालो वन्दन जुओ तुम नन्दने रे लो, ऋद्धि सिद्धि ठकुराई अपार जो ॥ चा० ॥ ६ ॥ सजी साज शणगारे गज राज ने रे लो, स्कन्धे बेसार्यां मरुदेवा मात जो। धीरे धीरे पधार्यां प्रभु सन्मुखे रे लो, जिहां खील्युं छे धर्म प्रभात जो ॥चा०॥७॥ महा ऋषि स्वामीनी श्रवणे सुणी रे लो, उर आनन्द अति उभराय जो। हर्ष सागर ऊलट्यो ने उछल्यो रे लो, कोई रीते ने हृदये समाय जो ॥ चा० ॥ ८ ॥ खोली नाख्यां नयण ना धारणा रे लो, हता अन्ध ने अन्ध दिन रात जो। करी दर्शन "धुरंधर" नाथ ना रे लो, भावे अन्यत्व भावना मात जो ॥ चा० ॥ ६ ॥

दोहा

वन वन विचरी दुःख सहे, रहे भुख्यो दिनरात ।
अन्य कोई साथे नंहीं, लोक करे छे वात ॥ १ ॥
कोमल एनी काय छे, अंगो छे सुकुमाल ।
सुख ने दुःख मां एहनी, कोण करे संभाल ॥ २ ॥
सीयाले ठंडी घणी, उनाले लु वाय ।
चोमासु अति दोहीलु, दुःखमां दिवसो जाय ॥ ३ ॥
ए मुझ नानो बालुड़ो, एकज मुझ संतान ।
विकट पंथ एणे गह्यो, त्यजी ममत ने मान ॥ ४ ॥
नजरे आजे निरखु, ऋद्धि एनी अपार ।
दुःख मां ए न्यारो रह्यो, सुख मां पण अविकार ॥ ५ ॥

गीत, राग पन्थीडा संदेशो कहेजे.......

आ संसार असार सगु कोई अे नथी, स्वारथनी शीकवी ाग मां वात जो । पोत-पोता ने माटे चाहे अन्य ने, स्वार्थ रे पछी कोण तात ने मात जो । "चेतन चितां परनी शाने ु करे ? ॥ १ ॥ रात दिवस रोती हुँ सुत संताप थी, देती पको भरत ने मारोभार जो । रुदन करी करी आंखो पण ोछी करी, पलपल पूछु तेना ही समाचार जो ॥चे०॥२॥ अने दुःखे दुःखी थई शोके रही, वर्षों थी करती अति शे लोपात जो । मारो नन्दन मारो स्नेही पुत्र ए, मारो रिख-

चो एमज करती वात जो ॥ चे० ॥ ३ ॥ जोयुं आजे अनुभव करी हुँ न्हावरी, धनी हती आ पुत्र नी पाछल व्यर्थ जो । सुख विलशे ए आजे अधिकुं सर्व थी, नथी पडी मुझ एणे जोयो स्वार्थ जो ॥ चे० ॥ ४ ॥ आत्मा मारो एकज मुझ साथे थशे, शुद्ध बुद्ध सच्चिदानंद स्वरूप जो । बाह्य उपाधी वलगी ते अलगी करुं, तो मुझ ने मलशे मुझ स्वरूप जो ॥ चे० ॥ ५ ॥ हाथी नी अंबाड़ी उपर स्थिर थई, वधते भावे वरिया केवल ज्ञान जो । धर्म "धुरन्धर" पुत्र वधु मुख देखवा, पाम्या जिनजननी निर्वाण जो ॥ चे० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुज गीर्वाणमहिते ।

वतारे जन्मार्घौ विरति वरणे केवलदिने ॥ १ ॥

तथा निर्वाणेऽमृत् त्रिभुवजने सौख्यमतुलम् ।

तमादीशं वंदे प्रशमशमदं मंगलहितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सर्वज्ञाय जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥१॥

चतुर्थ कल्याण षष्ट पूजा

दोहा

प्रभु ए धर्म बताविये, शीतल तप भाव ।
संघ चतुर्विध स्थापीयीं, भवजल तरवा नाव ॥ १ ॥
ऋषभसेनादिक पांचशें, भरतराय ना पुत्र ।
संयम ले सवि साथ मां, सात सें पुत्र ना पुत्र ॥ २ ॥
ब्राह्मी प्रथमा साधवी, श्रावक भरत महाराय ।
प्रथम श्राविका सुन्दरी, पूजे प्रभुना पाय ॥ ३ ॥
चौराशी गणधर थाय, त्रिपदी रचना सार ।
कच्छादिक वे बन्धु विण, तापस सवी अणगार ॥ ४ ॥
शक्रे शोक दूरे कर्यो, भरत गया निज वास ।
स्वामी विचरे सवी स्थाने, करतां धर्म प्रकाश ॥ ५ ॥

ढाल, राग प्रभु प्रतिमा पूजिने पोसह करीये रे ...

पूजी चक्रने चक्री भरत ने साधे रे, खंडे खंड फरी रे जयमाल वरे । तो पण न आयुधशाले पेसे रे, नवाणु भाई रे आणा नवी धरे ॥ १ ॥ "मोहने छोडी रे, माया दूर करो, सांची निज शुद्धि रे, संयम लई वरो । अविनाशी एक रे, शिवसुख अनुसरो" प्रभु पासे जई अट्ठाणु पूछे रे, मार्ग शुद्ध दाखो रे शुं करीए अमे ? शुद्ध करो निज आतम

अरिनी साथे रे, श्रीमुख जिन भाखे रे, सहुने ते गमे ॥ मोह० ॥ २ ॥ वैतालिक अध्यन सुणी ने समभया रे, दीक्षा ने लई रे केवल वर वर्या । श्रीजिनशासन जगजयवंतु वरते रे, पाम्या शुभ हित रे, जे ए अनुसर्या ॥ मोह० ॥ ३ ॥ सुन्दरी साठ हजार वरस तप तपती रे, काया ने गाली रे माया दूर करी । अनुमति भरती पामी प्रभु ने हाथे रे, संयम शुद्ध लेई रे भवसागर तरी ॥ मोह० ॥ ४ ॥ एम अनेक जीवो ने जिन प्रतिबोधे रे, आपे शिव सुखरे, दुःख दूर करे । धर्म "धुरन्धर" नाथ चरण जे सेवेरे, कल्पतरुनी छांया रे, मन वंछित वरे ॥ मोह० ॥ ५ ॥

गीत राग बन्दे जीवन है संग्राम

मंगलकारी प्रभुने पूजि, तजो तुमे अभिमान बन्धु सज्जन बुद्धि निधान ॥बधु०॥१॥ बाहुबली आज्ञा नवी माने, भरत करे सग्राम ॥ वंधु० ॥ चतुरंगी सेना सजी आव्या, बन्ने सामोसाम ॥ वंधु० ॥ २ ॥ अनुचित जाणी इन्द्र पधारे, समभावे शुभ रीत ॥ वंधु० ॥ दृष्टि मुष्टि गर्जन भुज वालन, दंडे साधो जीत ॥ वंधु० ॥ ३ ॥ पामे पराजय दोषधरीने, चक्री चक्र चलावे ॥ बधु० ॥ देई प्रदक्षिणा पाछु फरीयुं, एक गौत्र नवी फावे ॥ बधु० ॥ ४ ॥ क्रोध करीने बाहुबली जी, वज्र मुष्टि उगामे ॥ बधु० ॥ थर थर भ्रुजे सहु जोनारा,

चक्री पण भय पामे ॥ बंधु० ॥ ५ ॥ मुष्ठि ऊंची रही बाहुबल, चढे विशुद्ध विचारे ॥ बंधु० ॥ पिता समा मुझ बंधव पर हुँ, करु शुं आ अत्यारे ? ॥ बंधु० ॥ ६ ॥ पाछी न फरे मूठ उगामी, लोच करे ए बलिया ॥ बंधु० ॥ भाई खमावी पाछा वलिया, मुनि अभिमाने चडिया ॥ बंधु० ॥ ॥ ७ ॥ केम करूं लघु बंधव वंदन ? केवल लही ने जईशुं ॥ बंधु० ॥ प्रभु कने पछी सौनी साथे, शुद्ध पणे विचरशुं ॥ बंधु० ॥ ८ ॥ संवत्सर वीत्युं बे बेनी, आवी बोध पमाड़े ॥ बंधु० ॥ गज पर बेठा हेठा उतरो, ऊंच अनादी उडाड़े ॥ बंधु० ॥ ९ ॥ विचार करतां समझु समझ्या, दूर कर्युं अभिमान ॥ बंधु० ॥ धर्म "धुरंधर" जितना नन्दन, पाम्या केवलज्ञान ॥ बंधु० ॥ १० ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुज गीर्वाणमहिते ।
वतारे जन्मासौ विरति वरणे केवलदिने ॥ १ ॥
तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवनजने सौख्यमतुलम् ।
तमादीशं वन्दे प्रशमशमदं मंगलहितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सर्वज्ञाय जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

पचम कल्याण सप्तम नैवेद्य पूजा

दोहा

वन्दो श्री गिरीराज ने, जिहाँ युगादि जिणन्द ।
स्वामी आवी समोसर्या, साथे मुनिजग घृन्द ॥ १ ॥
कल्पतरु चिन्तामणी, काम कु भ जग जोय ।
त्रणभुवन मा एहनी, तोले नावे कोय ॥ २ ॥
ध्यान धरो गिरिराज नु , साधो सघला काज ।
राजे सिद्धाचलगिरि, गिरिवर मा शिरताज ॥ ३ ॥

ढाल, राग भैरवी

गिरिराज नु ध्यान धरो, भवि ऋद्धि ने सिद्धि वरो,
भवि गिरि पूर्व नवाणु आदि जिनेश्वर, समवसर्या ए स्मरो ॥ भवि० ॥ आठ योजन ऊचो ए गिरिवर, पचास योजन विस्तरो, ॥ भवि० ॥ दश योजन शिखरे शोभितो, नामे पातिक हरो ॥ भवि० ॥ रुडी रायण रूख छाया मा, वदे उपदेश नो भ रो ॥ भवि० ॥ अणसण पु डरिक गणधर साथे पाच क्रोड मुनिवरो ॥ भवि० ॥ चत्री पूनम दिन ए गिरिवर नु , ध्यान हृदय मा धरो ॥ भवि० ॥ त्रण लोक मा तीर्थ ए मोट , जेना महिमा खरो ॥ भवि० ॥ मगलकारी अणु ओ एना, सेवीभव ने तरो ॥ भवि० ॥ आठ अधिक शत टूक मनोहर, माने भक्ति करो ॥ भवि० ॥ धर्म 'धुरधर'' नाथ निहाली, ममतो वाछित फलो ॥ भवि० ॥

गीत, राग "सिद्धचल ना वासी जिन ने क्रोडों प्रणाम

श्रेयस्कर ए स्वामी, वन्दो आदि जिणन्द, वन्दो आदि जिणन्द अष्टापद पर प्रभु पधारे, पर्यंकासन मुद्रा धारे, ध्यावे उज्वल ध्यान ॥वंदो०॥१॥ पादपोपगमन अणसण करतां, षट् उपवासे कर्म निर्जरतां, ऋषभदेव भगवान ॥वंदो०॥२॥ साथे दश सहस मुनिराया, मुक्ति वरिया कर्म खपाया, ज्योते ज्योति मिलाया ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ अष्टाधिक शत एकज समये, उत्कृष्टा अवगाहे शिव ले, प्रथम अछेरु थाय ॥ ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ माह वदि तेरस रढियाली, वर्या प्रभु शिव बहु लट काली, अभिजित राजे चन्द ॥ वंदो०॥५॥ रुदन करे चक्री जिनविरहे, इन्द्रादिक शोके अवगाहे, पाम्या प्रभु निर्वाण ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ क्षीर नीर थी स्नान करावी, नन्दन वन थी चन्दन लावी, रची चिता त्रणे सार ॥वंदो० ॥ ७ ॥ जिन गणधार मुनिदेह प्रजाले, दाढादिक पूजी दुःख टाले, पामे मंगलमाल ॥ वंदो०॥ ८ ॥ प्रथम भूप ए प्रथम मुनिवर, प्रथम तीर्थ पति "धर्म धुरंधर" वन्दो वारंवार ॥ ॥ वंदो० ॥ ९ ॥

काव्य और मन्त्र

यदी ये कल्याणे मनुदनुजगीर्वाणमहिते ।
च तारे जन्माणे विरति वरणे केवल दिने ॥ १ ॥

तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभूवजने सौख्यमतुलम् ।
तमादीशं वदे प्रशम शमद मगल हितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते पारगताय जिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ॥१॥

——

पचम कल्याणक अष्टम पूजा

दोहा

पाच महाव्रतधर मुनि, एशी चार हजार ।
त्रण लाख शुभ साधवी, त्रण लख पाच हजार ॥ १ ॥
श्रावक द्वादश व्रतधरा, पाले शुभ आचार ।
पाच लाख चोपन सहस, शुद्ध श्राविका धार ॥ २ ॥
बीजो पण बहु ए कह्यो, प्रभुजी नो परिवार ।
जिनभक्ते ए शिव वरी, लेशे सुख अविकार ॥ ३ ॥

ढाल, राग मालकोश

प्रभु आदि जिणद वर वन्दन हो (२) लोक लोकोत्तर धर्म प्ररूपक, त्यागी वैरागी योगी जी । शोभागी बडभागी योगी, शिव रमणी ना भोगी जी ॥ प्रभु० । युगलाधर्म निवारक तारक, भव जल थी भवी प्राणी जी । रोम रोम

चेतन प्रगटावे, जेनी मधुरी वाणी जी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अष्टापद पर्वत शिवकारी, प्रभु पाम्या निर्वाण जी । राय भरत तिहाँ जिनवर भक्ते, करे मंदिर मंडाण जी ॥प्रभु०॥३॥ सोना नुं मंदिर रचाव्युं चोवीस जिननी स्थापी जी । देह प्रमाण मणिमय मूर्ति, तरिणे तेजे व्यापी जी ॥ प्रभु०॥४॥ आरीसाभवने केवल पाया, जिन कुल पुण्य प्रभावे जी । मरीचि जेवा पौत्र प्रभु ना, वीरजिन थइ शिव पावे जी । ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ प्रभु जी पट्टपरम्पर सारी, अविच्छन्न रहेनारी जी । ज्यां लगी अजित जिनेश्वर होवे, त्यां लगे शिव देनारी जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मंगल एवुं नहीं कोई जग मां, जेन मले जिन नामे जी । धर्म "धुरंधर" नाथ प्रभावे, अविचल लक्ष्मी पामे जी ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

गीत···राग···मैं किनो नहिं तुम विन ओर शुं राग···

भवि पूजो सही ऋषभदेव भगवान (२), वदन सुधाकर देखी रहखो, भरती मधुरी वाण । कामित पूरण कलपतरू ए, कोटी करे कल्याण ॥ भवि०॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाशक ए जिन, केवल ज्ञान निधान । धर्म तणां संस्थापक मधुरां, मुक्ति नां महेमान ॥ भवि० ॥ २ ॥ गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी देवी, सेवक प्रभुना जाण । शासन रक्षा करे बहु भक्ते, रात दिवस एक तान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ निर्मल दर्शन मांगो प्रभु

शुं, याचो सालु ज्ञान, शिव मंदिर सुन्दर मेलववा, एकज ए एन्धाण ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ कल्याणक ए प्रभु ना पाचे, गाया धरी बहुमान। "धुरंधर" जिन ए एकज मुझ मन शांति स्थान ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

यदीये कल्याणे मनुदनुजगीर्वाणमहिते।
यतारे जन्माप्तौ विरति वरणे केवलदिने ॥ १ ॥
तथा निर्वाणेऽभूत् त्रिभुवनजने सौख्यमतुलम्
तमादीशं वंदे प्रशमशमदं मंगलहितम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते पारंगताय् जिनेन्द्राय फलं यजामहे, स्वाहा ॥ १ ॥

कलश

राग, तपस्या करतां हो डंका जोर बजाया हो

ऋषभ जिन थुणतां हो, समकित रंग चडाया हो (२) नाभिनंदन आदि जिनेश्वर, मरुदेवी ना जाया हो। संयम धरी वरी केवल जगमां धर्म पथ दीखाया ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर, पट्ट परंपर, सिंहसूरीश्वरराया हो। क्रिया उद्धारक सत्यविजय गणी, संयम शुद्ध धराया ॥ ऋ० ॥ २ ॥ तास पाट नवमी ए सोहे मणिविजय गुरूराया हो। तास शिष्य

भद्रिक प्रभावक, बुद्धिविजय बुटेराया ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ बुद्धिविजय गुरूगुणगंभीरा, शांत दांत वखणाया हो। ए गुरुवरनी साखा सारी, वड़तरु सम फेलाया ॥ऋ०॥ ४ ॥ तास पट्ट प्रभावक शासन-दीपक जग पंकाया हो। तपोगच्छ नायक वर दायक, सूरिसम्राट् कहाया ॥ ५ ॥ श्रीमन्नेमि सूरीश्वरराजे, तेजे तप सवाया हो। विशाल शिष्य परंपर जेमा, सात सात सूरिराया ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ शास्त्र विशारद कविरत्न ने, पीयूषपाणी पाय हो। विजयामृतसूरीश्वर शासन-रागे हृदय रंगाया ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ तास विनेय विनय गुण पूरा, शूरा तपे तपाया हो। काया माया दूर करी मुनि, पुण्यविजय मुनिराया ॥ ऋ० ॥ ८ ॥ निज सुत हित करवा भव तरवा, कुटुम्ब मोह त्यजाया हो। ए अम सद्गुरू पूज्य जनक, ए मनक गुरू सम ध्याया ॥ ऋ० ॥ ९ ॥ शशि[1] मुनि[7] जिन[4] सम[2] वीर जिन वर्पे, गोयम केवल दिवसे हो। जामनगर मां रही चोमासुं, वार चैत्य ज्यां विलसे ॥ ऋ० ॥ १० ॥ भक्तिभाव धरी समकित निर्मल, करवा एह अनुपाया हो। "धुरंधर विजय" ऋषभजिन थुण तां जय मंगल वरताया ॥ ऋ० ॥ ११ ॥ पहली पूजा भावनगर मां, संघमली समुदाया हो। मूलनायक आदिजिन चैत्ये, पूरण हर्ष पढ़ाया ॥ ऋ० ॥ १२ ॥

श्री वास्तुक पूजा विधि

इस पूजा में सभी चीजें लेनी चाहिये। अष्ट प्रकारी पूजा के समान सभी वस्तुएँ चढ़ाना।

यह पूजा नूतन घर के प्रवेश के समय उस घर में श्रीशांतिनाथ या श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की पंचतीर्थी या चोवीशी ले जाना। पवित्र स्थान पर सविधि सिंहासन स्थापित करके स्नात्र पूजा पढ़ा कर बाद में पूजा प्रारम्भ करना।

श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी रचित

दोहा

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ, त्रेवीशमा जिनराया ।
धरणेन्द्र पद्मावती, पूजे जेहना पाय ॥ १ ॥
पार्श्व यक्ष जस शोभतो, सेवा करे चित लाय ।
पुरिसादाणी पार्श्वनाथ, ध्यातां शिवसुख थाय ॥ २ ॥
वास्तुक पूजा घरतणी, करतां सुख विशाल ।
ऋद्धि वृद्धि सुख संपगे, होवे मंगल मोल ॥ ३ ॥
पंच पंच वस्तु थकी, संखेश्वर प्रभु पास ।
पूजो भवि भावे करी, सफल होवे मन आस ॥ ४ ॥
चिन्तामणि सम पार्श्वनाथ, पार्श्वमणिसम नामं ।
ध्यातां गातां श्रणीमां, सिद्धे सघलां काम ॥ ५ ॥

ढाल, मल्लिजिन वंदीए भावे भावे रे, ए देशी

संखेश्वर पास प्रभु नित्य गावो रे, शाश्वत शिवकमला पावो । संखेश्वर० । काशी देश वणारसी गाय रे, अश्वसेन राजा अभिराम रे । वामा माता सुख विश्राम । संखे० ॥ १ ॥

प्रभु मात कुंखे जब आया रे, इंद्र चौंसठ सुरगिरि लाया रे । सुरासुर मन मां हरखाया सखे० ॥ २ ॥ एक लाख ने साठ हजार रे, आठ जाति कलश मनोहार रे । प्रभु न्हवण करे जयकार ॥ सखे० ॥ ३ ॥ इंद्राणीयो हमती गाती रे, जिन दर्शन करी हरखाती रे । नाटक करी मनमां माती । सखे० ॥ ४ ॥ एवा पार्श्वप्रभु घर लावो रे, शुभ सिंहासन पधरावो रे । प्रभुन्हवण करा सुख पावो । सखे० ॥ ५ ॥ रोग शोग सहु दूर नासे रे, प्रभु श्रद्धा मन मां वासे रे । शाश्वत् पद बुद्धि मासे । सखे० ॥ ६ ॥

मन्त्र

ॐ नमो भगवते श्री सखेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीँ धरणेंद्र पद्मावती सहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाय क्षुद्रोपद्रव शम नाम जल, चन्दनं, पुष्पं, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथद्वितीय पूजा आरम्भ

दोहा

स्नात्र भणावी पार्श्वनें, पूजा कीजे सार ।
पूजक पूज्यनी पूजाना, समजीजे सुखकार ॥ १ ॥
बेउं पासे वींजीए, चामर चारू तुरंग ।
दर्पण प्रभु आगल धरो, होवे जय जय रंग ॥ २ ॥

सुतारीमा वेटा तुंने विमवु रे लोल, ए देशी

प्रभु पार्श्व जिनेश्वर गाइऊ रे लोल, श्री संखेश्वर प्रभु नाम, जो। तुज नाम थी नवनिधि संपजे रे लोल, मन वंछित सिद्धे कामणी। नामं रुडुं संखेश्वर पासनुं रे लोल। मिथ्यात्वदशा दूर थाय जो, शुद्ध श्रद्धा हृदय प्रगटाय जो। नाम रुडुं ॥१॥ पूजा वास्तुक दोय प्रकारनी रे लोल, शुभ अशुभ भेद कहाय जो। द्रव्य वास्तुक पूजा ना ए कह्या रे लोल, तेह हरखे कहुं चित लाय जो। नाम० ॥ २ ॥ घर महेल करावी तेडीये रे लोल, ब्राह्मण होमादिक वास जो। वेद गायत्री मंत्र भणावीए रे लोल, ब्राह्मण जमाडी ए खास जो। नाम० ॥ ३ ॥ देव देवी ब्रह्मादिक पूजिए रे लोल, पाडा बुद्धि ए कोलु कषायजो। मरी नरक तणां दुःख भोगवे रे लोल, मिथ्या वास्तुक पूजा मां पाप जो। नाम० ॥ ४ ॥ फल श्रीफल प्रभु खने होमतां रे लोल, पंचेंद्रिय हिंसा थाय जो अपमंगल एह खरुं कह्यं रे लोल, अशुभ वास्तुक पूजा कहाय जो। नाम० ॥ ५ ॥ शुभ वास्तुक पूजा वर्णवु रे लोल, जेनुं रुडुं विशाल स्वरूप जो। वुद्धि शाश्वत संपदा पामीए रे लोल, पास नाम ते मंगल रूप जो। नाम रुडुं ॥ ६ ॥

मन्त्र

ॐ नमों भगवते श्री संखेश्वर पार्श्वनामाय ह्रीँ धरणेंद्र

प्रभु मात कुवे जन पाया रे, इंद्र चौसठ सुरगिरि लाया रे। सुरासुर मन मा हरखाया संखे० ॥ २ ॥ एक लाख ने साठ हजार रे, आठ जाति कलश मनोहार रे। प्रभु न्हवण को जयकार ॥ सखे० ॥ ३ । इंद्राणीयाँ हसती गाती रे, जिन दर्शन करी हरखाती रे। नाटक करी मनमां भाती। सखे० ॥ ४ ॥ एम पार्श्वप्रभु पर वारो रे, शुभ सिंहासन पधरावो रे। प्रभुन्हवण करा सुख पावो। सखे० ॥ ५ ॥ रोग शोग सहु दूर नासे रे, प्रभु श्रद्धा मन मां वासे रे। आतम पद बुद्धि भासे। सखे० ॥ ६ ॥

मन्त्र

ॐ नमो भगवते श्री मनेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीं परमेष्ट पमारती मनिनाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय शुद्धीश्वर गमा नाम जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अर्घदर्शन पूजा प्रारम्भ

दोहा

स्नात्र भणावी पार्श्वने, पूजा श्री जिन सार।
पूजक पूजनी पूजाना, नमजी सुखकार ॥ १ ॥
देउ पामे जीवने, पामर भाव नमंत।
दर्शन प्रभु पामता भावी, होवे तर भव अंत ॥ २ ॥

पर्यायरूप । दो भेदे जीव दाखियो रे, तस लक्षण वे चिद् रूप । श्री संखे० ॥ ४ ॥ परिणामी पुद्गल जीव दो जाणीए रे, अनादि संबंध विचार ! कर्ता कर्म नो आतमा रे, तेम भोक्ता हृद्ये धार । श्री संखे० ॥ ५ ॥ शुभा शुभ कर्म ग्रही भोगी आतमा रे, वेदे शाता अशाता दोय । देव मनुज नारक तिरि रे, चउगतिमां भटके जोय । श्री संखे० ॥ ६ ॥ जीवे कीधां पुण्य पाप ते भोगवे रे । पर पुद्गल संगे खास । राच्यों माच्यो पुद्गलमां वस्यो रे, बन्यो पुद्गलनो जीव-दास । श्री संखे० ॥ ७ ॥ प्रभु पुजा करतां प्राणीयां सुख लहे रे, नासे कर्माष्ठक पास । सामिवच्छल नवकारशी रे, हेतु सुखनां दीसे खास । श्री संखे० ॥ ८ ॥ शुभ भावें नैवेद्य थालमां मुकी ने रे, प्रभु आगल धरीए चंग । रत्नत्रयी कमला वरे रे, बुद्धि शाश्वत पद रंग । श्री संखे० ॥ ९ ॥

मन्त्र

ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीँ क्षुद्रोपद्रव पद्मावती सहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाव क्षुद्रोपद्रव शमनाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ चतुर्थ पूजा प्रारंभ

दोहा

शरीर पुद्गलमां वस्यों, पुद्गल मानी गेह ।

पद्मावती सहिताय जन्मजरा-मृत्युनिशारणाय क्षुद्रोपद्रव शमनाय जल, चन्दन, पुष्पं, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा ।

अथ तृतीय पूजा प्रारंभ

दोहा

शुभ वास्तु पूजा कहु, आणी अतिशय भाव ।
स्वर्गादिक सुख पामीए, होवे शिवसुख दाव ॥ १ ॥
देव अरिहत जाणीए, दोष रहित अढार ।
गुरू सुसाधु महाव्रती, पाले पचा चार ॥ २ ॥
जिनवर भाषित सत्य छे, जैन धर्म जग जोय ।
सुख दु ख होवे कर्म थी, अवर न कर्ता कोय ॥ ३ ॥

ढाल, अनिहा रे न्हवण करों जिनराजने रे, ए देशी

अनिहां रे वास्तुक पूजा शुभ कीजिए रे, तजी अवर देवनी आश । सुपात्रे दान दीजिये रे, सूत्र श्रवण रुचि अभिलाष । श्री सखेश्वर प्रभु पासजी रे ॥ १ ॥ भवि भावे द्रव्यार्थिक नये करी रे, शाश्वत चे लोकालोक कर्ता तेहनो को नहीं रे, किम कर्ता मनीये फोक । श्री सखे० ॥ २ ॥ उर्ध्व अधो अने तिर्च्छालोकनी रे, स्थिति चे अनादि अनत । कर्ता तेहनो को नहीं रे, ईम साखे श्री भगवत । श्री सखे० ॥ ३ ॥ नवतत्व षड्द्रव्य चे नित्य शाश्वता रे, द्रव्य गुण

पर्यायरूप । दो भेदे जीव दाखियो रे, तस लक्षण बे चिद् रूप । श्री संखे० ॥ ४ ॥ परिणामी पुद्गल जीव दो जाणीए रे, अनादि संबंध विचार ! कर्ता कर्म नो आतमा रे, तेम भोक्ता हृदये धार । श्री संखे० ॥ ५ ॥ शुभा शुभ कर्म ग्रही भोगी आतमा रे, वेदे शाता अशाता दोय । देव मनुज नारक तिरि रे, चउगतिमां भटके जोय । श्री संखे० ॥ ६ ॥ जीवे कीधां पुण्य पाप ते भोगवे रे । पर पुद्गल संगे खास । राच्यों माच्यो पुद्गलमां वस्यो रे, बन्यो पुद्गलनो जीव-दास । श्री संखे० ॥ ७ ॥ प्रभु पुजा करतां प्राणीयां सुख लहे रे, नासे कर्माष्ठक पास । सामिवच्छल नवकारशी रे, हेतु सुखनां दीसे खास । श्री संखे० ॥ ८ ॥ शुभ भावें नैवेद्य थालमां मुकी ने रे, प्रभु आगल धरीए चंग। रत्नत्रयी कमला वरे रे, बुद्धि शाश्वत पद रंग । श्री संखे० ॥ ९ ॥

मन्त्र

ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीँ क्षुद्रोपद्रव पद्मावती सहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाव क्षुद्रोपद्रव शमनाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ चतुर्थ पूजा प्रारंभ

दोहा

शरीर पुद्गलमां वश्यों, पुद्गल मानी गेह ।

परगत माथ न आवतुं, क्षणमां नाशी तेह ॥ १ ॥
देह अनंता क्षमीया, मटको आ संसार ।
लख चोराशी हु भम्यों, तार तार प्रभु तार ॥ २ ॥

ढाल, सांभलनो मुनि संयम रागे, उपशम श्रेणि चढीआ रे-ए देशी

श्री सखेस्वर पार्श्व प्रभु नित्य, मन मंदिरमां धरिए रे। ध्यानी गावी पाप गमारी, श्रद्धा समकित वरिये। श्री सखे० ॥ १ ॥ यादव लोकनी जरा निवारी, षड्दर्शन विख्यात रे। वामा नंदन जगजन वंदन, नमतां पावन गात्र रे। श्री सखे० ॥ २ ॥ परपरिणतिथी अष्ट कर्म ग्रही, पर भोगी पर कर्ता रे। अतुलबली पण कर्म पिंजरमा, वमीयो निजगुण धरता रे। श्री सखे० ॥ ३ ॥ औदारिक वैक्रिय आहारक, तैजस कार्मण पंचे रे। पंच शरीर घर मानी वमीयो, करतां कर्मनो संचे रे। श्री संखे० ॥ ४ ॥ सूरा पानी वकतो फरे वली, धत्तुर भक्षक जेम रे। अवली परिणतिथी आ आतम, स्वरूप भूल्यो तेम रे। श्री संखे० ॥ ५ ॥ भवमां भमतां पुण्योदयथी, सद्गुरु सेहेजे मलीया रे। बुद्धि शिव सुख पामे अविचल, सकल मनोरथ फलीया रे श्री संखे० ॥ ६ ॥

मन्त्र

ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वर पार्श्वनाथीय ह्रीँ धरणेंद्र पद्मावती सहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाय क्षुद्रोपद्रव

शमनाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ पंचम पूजा प्रारम्भ

दोहा

सद्गुरु पंच महाव्रती, पंच महाव्रत धार ।
भावथी वास्तुक पूजना, कहेवे अति सुखकार ॥ १ ॥
पुद्गल द्रव्यथी भिन्न छे, अचल अमल गुणवान ।
शुद्ध बुद्ध परमात्मा, चिदानंद भगवान ॥ २ ॥
घर आतमनुं ओलख्युं, जेनों रुडों महेल ।
वास खरो मुज एहमां, वसतां शिवसुख सहेल ॥ ३ ॥

ढाल, नमो नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर, ए देशी

वास्तुक भाव पूजा निज भावे, चेतननी शुद्ध दाखी रे । वास वसे चेतन जे मध्ये, तेहनी पूजा भाखी रे । श्री शंखेश्वर पास जी गावो ॥ १ ॥ असंख्य प्रदेश आतमना जाणो, शुद्ध वास जिव जोयरे । गुण पर्याय स्वभाव अनंता, अवेक प्रदेशे जोय रे । श्री शंखे० ॥ २ ॥ ज्ञाता ज्ञेयने ज्ञान त्रिभंगी, आतम मांही समाय रे । अस्ति नास्ति समकाले साधे, एवों आतमराय रे । श्री शंखे० ॥ ३ ॥ धर्मा धर्म ने पुद्गलाकाश, तेहतणा प्रदेश रे । गुण पर्याय धर्म तस केरां,

नहीं एक जिवगुण लेश रे । श्री शंखे० ॥ ४ ॥ शुद्ध बुद्ध परमात्म स्वरूप अव्याबाँध अमंग रे । अविनाशी अकलंक अमोगी, मोगी अयोगी असंग रे । श्री शंखे० ॥ ५ ॥ नित्यानित्यने एकानेक, सदगत् भाव विचार रे । वक्तव्या वक्तव्य ए आठ पक्षतणो आधार रे । श्री शंखे० ॥ ६ ॥ आत्माथकी छुटे जब कर्म, तब पामे शिवस्थान रे । शाश्वत अमल अचलपद भावे, वास्तुक पूजा मान रे । श्री शंखे० ॥ ७ ॥ एणीपरे वास्तुक पूजा करशे, ते तरशे संसार रे । बुद्धि सागर क्षायिक समकित, पामी लहे भव पार रे । श्री शंखे० ॥ ८ ॥

अथ कलश

गाई गाई रे ए वास्तुक पूजा गाई, अचल अमल अमंग महोदय, शुद्ध सता निज ध्यायी । समकित दायक हेते पूजा, करतां हर्ष वधाई रे । ए वास्तुक पूजा गाई ॥ १ ॥ मिथ्या परिणति नाशक तारक, आत्मस्वभावे सुहाई । परमातमपद प्राप्ति कारक, सुखकर समकित दाई रे । ए वास्तुक० ॥२॥ धरणेंद्र पद्मावती देवी, जेहनि सारे सेव । सुरपति यति तति भूपति पूजित, श्री शंखेश्वर देव रे । ए वास्तुक० ॥ ३ ॥ तास पसाए पूजा रचीए, हर्ष अति दिल लायी । जय जय मंगल माला कमला, अवममां प्रगटाई रे । ए वास्तुक०॥४॥

श्री पंचज्ञान पूजा विधि

सब से पहले सिंहासन स्थाप कर, उस में पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापित करना। स्नात्र पूजा पढ़ाना। सिंहासन के सामने एक पाट पर ५१ साथिये चांवलों से करना। सब ही साथियों पर पान, सुपारी, नैवेद्य नाणा और बादाम आदि चढाना। ५१ दीपक करना। ५ श्रीफल और घी शक्कर के ५ गोलक चढाना। बाद में पूजा पढाना।

पहली पूजा के २८ साथिये। दूसरी पूजा के १४ साथिये। तीसरी पूजा के ६ साथिये। चौथी पूजा के २ साथिये। पांचवीं पूजा का १ साथिया है।

मन्त्र

ॐ नमों भगवते श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावती सहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाय क्षुद्रोपद्रव शमनाय जलं, चन्दन, पुष्पं, धूपं, दीप, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

श्री पंचज्ञान पूजा विधि

सब से पहले सिंहासन स्थाप कर, उस में पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापित करना। स्नात्र पूजा पढ़ाना। सिंहासन के सामने एक पाट पर ५१ साथिये चांवलों से करना। सब ही साथियों पर पान, सुपारी, नैवेद्य नाणा और बादाम आदि चढाना। ५१ दीपक करना। ५ श्रीफल और घी शक्कर के ५ गोलक चढाना। बाद में पूजा पढाना।

पहली पूजा के २८ साथिये। दूसरी पूजा के १४ साथिये। तीसरी पूजा के ६ साथिये। चौथी पूजा के २ साथिये। पांचवीं पूजा का १ साथिया है।

श्री रूप विजयजी रचित

श्री पंचज्ञान पूजा

प्रथम ज्ञान पूजा

दोहा

सकल कुशल कमलावली, मासक भाण समान ।
श्री शंखेश्वर पासनां, चरण नमी धरी घ्यान ॥ १ ॥
करम तिमिरभर टालवा, ज्ञान ते अभिनव सूर ।
ज्ञानी ज्ञान वले लहे, स्व पर स्वभाव पडूर ॥ २ ॥
श्रद्धा मूल क्रिया कही, तेह नुं मूल ते ज्ञान ।
तेह थी शिवसुख बहु जना, पाम्या घरी एक तान ॥ ३ ॥
असख्य भेद क्रिया तणा, भाख्या श्री अरिहंत ।
ज्ञानमूल सफला सवे, पंच भेद तस तंत ॥ ४ ॥
मइ सुअ ओहि मण पज्जवा, पंचम केवल जाण ।
पूजा करतां तेहनी, लहीये पंचम नाण ॥ ५ ॥
जाणे केलवे केवली, श्रुत थी करे वखाण ।
चउ मुंगा श्रुत बोलतुं, भाखे त्रिभुवन भाण ॥ ६ ॥
पंच ज्ञान अनुक्रमे लही, जेह थया अरिहंत ।
अष्ट प्रकारे पूजतां, लहीये ज्ञान अनंत ॥ ७ ॥

ढाल १, झुमखड़ा की देशी

परम पुरुष परमातमा रे, पुरीषादाणी पास । "जिनेश्वर पूजिये" जल चंदन कुसुमे करी रे, पूजो धरी उल्लास ॥ जि० ॥ १ ॥ जास पसाये निरमलुं रे, प्रगट होवे मई नाण ॥ जि० ॥ भेद अट्ठावीस तेहना रे, समझो चतुर सुजाण ॥ जि० ॥ २ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव थी रे, चउहा छे मई नाण ॥ जि० ॥ द्रव्य थी मई नाणी लहे रे, द्रव्य छक्क परिणाम ॥ जि० ॥ ३ ॥ क्षेत्र थी लोकालोक ने रे, काल थी तिविहा काल ॥ जि० ॥ भाव थी पांचे भाव ने रे, जाणे आदेशे रसाल ॥ जि० ॥ ४ ॥ जिन उत्तम मुख पद्मनी रे, वाणी सुणी लहे बोध ॥ जि० ॥ शुद्ध चिदानंद रूप थी रे, करी निज आतम शोध ॥ जि० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

अष्टाविंशतिधा मतिश्रुतमपि प्रोक्तं मनुसंमितम् ।
षोढ़ा चावधि रूपिद्रव्यविषय ज्ञानं निदानं श्रियाः ॥ १ ॥
श्री मनःपर्यवसंज्ञकं च द्विविध कैवल्य मध्येन्तिकम् ।
ज्ञानं पञ्चविधं यजेहमनिशं, सिद्धयञ्ञनाराधकम् ॥ २ ॥

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोकप्रकाशकाय नवतत्त्वस्वरूपाय अनन्तद्रव्यगुणपर्यायमयाय मतिश्रुतावधिमनःपर्यवकेवलज्ञा-

नाय, जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा

एक जीव अंगी करी, छासठ सागर ठाण।
अंतरमुहूर्त जघन्यथी, वर्ते थिर मई नाण ॥ १ ॥

ढाल २, चंदजसा जिनराजिया मनमोहन मेरे, ए देशी

श्री जिनराजनी पूजना मनमोहन मेरे। करी थीर मन करी सार। मन०। धूप दीप अक्षत धरी। मन०। नैवेद्य फल मनोहार। मन० ॥ १ ॥ श्रुतवासित मतिज्ञानना। मन०। भेद अठावीश जोय। मन०। असुय निस्सिय मइतणा। मन०। चउहा बुद्धि होय। मन० ॥ २ ॥ श्रोतृ घ्राण रस फरसथी। मन०। व्यंजनावग्रह च्यार। मन०। अथुगइ ईहा वलि। मन०। अपाय धारणा सार। मन० ॥ ३ ॥ पंचइंद्री मन मेलतां। मन०। चोवीश भेद सुहाय। मन०। अडवीश भेद उमय मली। मन०। भाखे श्री जिनराय। मन० ॥ ४ ॥ अणसें छत्रीस पण कह्या। मन०। श्रतनिश्रित मई भेद। मन०। श्री जिनवर सेवार्थ की। मन०। पाप ताप होय छेद। मन ॥ ५ ॥ समकित मइ

सुअ संपजे । मन० । त्रणे एके काल । मन० । जिन उत्तम पद पद्मनी । मन० । सेवना रूप रसाल । मन मोहन मेरे० ॥ ६ ॥

द्वितीय श्री श्रुतज्ञान पूजा

दोहा

श्रुतअक्षर एकेकना, स्वपर भाग विचार ।
करतां पज्जनी कही, राशि अनंती सार ॥ १ ॥
शरधावंत सुसंयमी, गुरुकुल वासी साध ।
श्रुत अभ्यास करी भजे, तरे संसार अगाध ॥ २ ॥

ढाल ३, नलिनावती विजये जयकारी रे, ए देशी

जिनवर जगगुरु जग उपकारी, पूजो भावे नरनारी रे । श्रुतना अधिकारी । एटेका जिनवर भगते शरधा आवे, तेहथी श्रुतरस बहु पावे रे । श्रु० ॥ १ ॥ छासठ सागर सुअथीति जाणो, एक जीव उकिट्ठ प्रमाणे रे । श्रु० । अनादि अनंत प्रवाहथी जाणो, सेवो श्रुत अनुभव आणो रे । श्रु० ॥ २ ॥ चउभेद सुअनाणना सार, भारवे जिनवर गणधार रे । श्रु० । अहवा विश भेद पण जाणो, थिरशरधा हिअड़े आणो रे । श्रु० ॥ ३ ॥ अर्थ थी श्री अरिहंते वखाण्युं सूत्रे गणधर

विरचाए रे। श्रु०। ए श्रुत भाव धर्म दातार, पूजी लहो भवजल पार रे। श्रु० ॥ ४ ॥ श्रुतदायक जिनराजने ध्यावो, जीम अतिशय ज्ञानने पावो रे। श्रु०। श्रुत फल विरति विरति फल ध्यान, ध्याने लहे समयिक ज्ञान रे। श्रु० ॥५॥ क्षमाविजय जिन उत्तम ज्ञाने, शिव सुन्दरी वरे एकताने रे। श्रु०। श्री गुरु पद पद्म दिलराखे, चिद्रूपविजय सुख चाखे रे। श्रु० ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

अष्टविंशतिधा मति श्रुतमपि प्रोक्त मनुसमितम्।
षोढा चावधि रूपि द्रव्य विषयं ज्ञान निदानं श्रियाः ॥१॥
श्री मनः पर्यवसञ्ज्ञकं च द्विविधं कैवल्य मध्येन्तिकम्।
ज्ञानं पञ्चविध यजेद्‌मनिशं, सिद्धचक्र नाराधकम् ॥२॥

ॐ नमो ज्ञानाय लोका लोक प्रकाशकाय नवतत्व स्वरूपाय अनन्त द्रव्य गुण पर्याय मयाय मति श्रुतावधि मनःपर्यव केवल ज्ञानाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूप, दीप, अक्षतं, नैवेद्य, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा

श्रुत थी शरधा थिर रहे, शरधाथी व्रत सार।
व्रत थी शिवसुख पामीए, तिणे श्रुत जगदाधार ॥१॥

श्रुत विण जे किरिया करें, ते संसारनुं मूल ।
श्रुत उपयोगे जे क्रिया, ते शिव पद अनुकूल ॥२॥

ढाल ४, मने काइकं कामण कीधुं रे, पाछा वलजो शाम्लीया,
ए देशी

तुमे आगम पूजा करजो रे, हो मन मान्या मोहनीया । तुमे भवसागरने तरजो रे । हो० । ए आगम अमृत दरीओ रे । हो० । एतो स्याद्वाद रस भरीओ रे । हो० ॥ १ ॥ सुअ अंग अनंत प्रकारे रे । हो० । तिम बद्ध अबद्ध विचारे रे । हो० । कालिकउतकालिक जाणो रे । हो० । दोय भेद कहे जिनभाणो रे । हो० ॥ २ ॥ अग्यार अंग मन रंगे रे । हो० । श्रुत पूजो अधिक उमंगे रे । हो० । वली च्यार उपागं रसाला रे । हो० । पूजि लहो मंगलमाला रे । हो० ॥ ३ ॥ पयन्ना दश गुणखाणी रे । हो० । प्रत्येक बुद्ध मुनिवाणी रे । हो० । षट् छेद सूत्र गुण भरीया रे । हो० । एतो चरण करण गुण दरिया रे । हो० ॥ ४ ॥ मूल सूत्र च्यार अनुसरज्यो रे । हो० । संसार समुद्र ने तरज्यो रे । हो० । नंदी ने अनुयोगदारा रे । हो० । पूजि लहो भवजलपारा रे । हो० ॥ ५ ॥ भाव पूजा पंच प्रकारो रे । हो० । द्रव्यपूजा भेद अपारो रे । हो० । प्रभु वदन

पद्मनी वाणी रे । हो० । चिद्‌रूप सुधारस खाणी रे । हो० ॥ ६ ॥

अर्थ तृतीय श्री अवधिज्ञान पूजा प्रारंभ

दोहा

अवधि ज्ञान आराधतां, करजो निकरण जोग ।
भाव विशुद्धि चित धरी, टालो कर्मना रोग ॥ १ ॥
त्रण ज्ञानधर जिनवरा, त्रिभुवन ने हितकार ।
पूजी पदकज तेहना, पामो भवजल पार ॥ २ ॥

ढाल ५, घर आवो ने नेम वरणगिया रे, ए देशी

हारे वाला भवभगति मन मा धरी, जिन पूजा करो मन सवरजीरे "भावे पूजो रे मनमोहना" । हारे वाला क्षय उपशम भावे करी, परिणति करी ज्ञानरसे भरीजी रे ॥ भावे० ॥ १ ॥ त्रण ज्ञानी जिनराजिया, विलसे निज गुण सत्ता भरीजी रे ॥ भावे० ॥ अनुगामी पमुहा लह्यो, पट् भेद ओहीं ना दिल धरीजी ॥ भावे० ॥ ॥ २ ॥ जनम समे जिन राजने, चले आसन सुर ना थरहरीजी रे ॥ भावे० ॥ चौसठ सुरपति अवधिये,

जिन जनम्या लई जई सुरगिरीजी रे ॥ भावे० ॥ ३ ॥ रजत कनक ने रत्न ना कलशा क्षीरोदक थी भरीजी रे ॥ भावे० ॥ न्हवण उत्सव जिन नो करे, समकित गुण निर्मलता करीजी रे ॥ भावे० ॥ ४ ॥ मिथ्या सूर अवधि लहे, जे पूजे जिन भगते खरीजी रे ॥ भावे० ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी पूजा, चिद्रूप विजये करीजी रे ॥ भावे० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

अष्टाविंशतिधा मति श्रुतमपि प्रोक्तं मनुसंमितम् ।
षोढा चावधि रूपि द्रव्य विषयं ज्ञानं निदानं श्रियाः ॥ १ ॥
श्रीमनः पर्यवसंज्ञकं च द्विविध कैवल्यमध्येन्तिकम् ।
ज्ञान पञ्चविधं यजेहमनिशं, सिद्ध्यङ्गनाराधकम् ॥ २ ॥

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोक प्रकाश काय नवतत्व स्वरूपाय अनन्तद्रव्य गुणपर्याय मयाय, मति श्रुतावधिमनः पर्यव केवलज्ञानाय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा

द्रव्यक्षेत्र काल भावथी, उत्कृष्ट अवधिज्ञान ।
मनुजगतिमां पामीए, वधते शुचि प्रणिधान ॥ १ ॥

लोकावधि अवधि लगे, पणीवाई पण होय।
तदुपरि अवधि जे होये, अपणीवाई ते जोय ॥ २ ॥

ढाल ६, मोहनजी मोकलो रे मोमानूं, ए देशी

निर्मल करी मन वच काया, छडी सवि ममता माया, परमातम ध्यान सुहाया। ओहि जिन पूजिये मनरंगे। जिम रमीए समकित संगे। ओ० ॥१॥ क्षेत्रकालथी ओहिनाणी, चउहा लहे बुद्धि ने हाणी, इम कहें जिन केवलनाणी। । ओ० ॥ २ ॥ द्रव्यथी दुगंबुढि वरवाणी, भावथी षट् वद्धि जाणी, समुदाई चउहा कहाणी । ओ० ॥ ३ ॥ जिनवर नाणी गुणखाणी पूजो मन उलट आणी, वरीए जिम शिव पटराणी। ओ० ॥ ४ ॥ जिनवर उत्तम गुण गावो, प्रभुना पद पद्म पधाओ, जिम रूपविजय पद पावो। ओ हि०॥५॥

अथ चतुथ मनः पयवज्ञान पूजा प्रारंभ

दोहा

अप्रभत्त मुनिवर गुणी, निर्मल चारित्रवंत।
चड़ते संजमथान के लहे मनपज्जव तंत ॥ १ ॥
जिनवर जगगुरु जगधणी, जब संयम ग्रहे सार।
मण पज्जव तव उपजे, चोथुं ज्ञान उदार ॥ २ ॥

ढाल ७, मनमोहना रे लाल, ए देशी

अप्रमत गुण ठाणमां रे, मनमोहना रे लाल। वर्त्तता श्री अरितं रे। जग सोहना रे लाल। संयमवाण विशुद्धता रे। म०। लहें मनपज्जव तंत रे। ज० ॥ १ ॥ ऋजुमति विपुलमति तथा रे। म०। मणपज्जव दोय भेदे रे। ज०। द्रव्य-क्षेत्र काल भावथी रे। म०। चउहा कहे गतखेद रे। ज० ॥ २ ॥ सन्निपणिंदीना लहे रे। म०। मनन तणा परजाय रे। ज०। नरक्षेत्रे मणनाण थी रे। म०। जाणे जे गिरमाय रे। ज० ॥ ३ ॥ अढी अंगुल न्यूनाधिका रे। म०। क्षेत्र थी जाणे दोय रे। ज०। पल्प असंख्य भाग काल थी रे। म०। गति आगति लहे सोय रे। ज० ॥४॥ खमण दमण गुण सागरु रे। म०। जिन उत्तम महाराज रे। ज०। तस पद पद्मने पूजता रे। म०। लहो चिद्रूप समाज रे। जग० ॥ ५ ॥

काव्य और मन्त्र

अष्टाविंशतिधा मति श्रुतमापि प्रोक्तं मनुसंमितम्।
षोढा चावधि रूपि द्रव्य विषयं ज्ञानं निदानं श्रियाः ॥ १ ॥
श्री मनः पर्यव संज्ञकं च द्विविधं कैवल्य नध्भेन्तिकम्।
ज्ञानं पन्चेविध यजे हमनिशं सिद्धयज्ञ नाराधकम् ॥ २ ॥

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोक प्रकाशकाय नवतत्वस्वरूपाय अनन्त द्रव्य गुण पर्याय मयाय, मति श्रुतावधिमनःपर्यव-केवलज्ञानाय । जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूप, दीपं, अक्षत, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा ।

दोहा

अलख असग अभंग जस, जोगाराधन खास ।
संयम तणी विशुद्धता करी तोडे भवपास ॥ १ ॥
चरण करण गुण आगरा सरधावंत सुधीर ।
मणपज्जवनाण मुणि नमता टले भवपीर ॥ २ ॥

ढाल ८, अनेहारे गोकुल गामने गोंदरें रे, ए देशी

अनेहां रे सयम ठाण विशुद्धता रे, अप्रमत्त गुणठाण । फरसी पास प्रभु लह्या रे । मणपज्जव वरनाण ॥ १ ॥ पूजा करो जिनराजनी रे । ए टेक । अनेंहा रे संजमठाण अनंतना रे ओलधी अहिठाण । फरसता शुद्ध संयम गुणे रे ध्याये धर्मनु जांण । पू० ॥ २ ॥ अनेहां रे आणा अपाय विपा कथी रे, संठाण विचय प्रकार । ध्याता ध्यान सोहामणुं रे, साध्य पदे मनोहार । पू० ॥ ३ ॥ अनेहा रे अप्रमत्तगुण भूमिका रे आलवन ग्रही चार दशधा संयम पालता रे,

भावदया भंडार । पू० ॥ ४ ॥ अनेहा रे भावथ की मनो-द्रव्यना रे लहे परजाय अनत । गुणश्रेणी पगथालिये रे, नित चढना भगवंत । पू० ॥ ५ ॥ अनेहा रे—क्षमाविजय जिनराजना रे, उत्तम ए अवदाव । तस पद पद्म पूजा करी रे लहो चिद्रूप विख्यात । पू० ॥ ६ ॥

पंचम श्री केवलज्ञान पूजा

दोहा

सकल विभाव उपाधिना, कारक घाति चार ।
क्षय करी केवल पामिया जिनवर जगदाधार ॥ १ ॥
पूजा ध्यावो ध्यानमां सोहंपद करो जाप ।
चिदानंद पद सपंजे होय ध्येयपद आप ॥ २ ॥

ढाल ९, चक्री भरत नरेसरु रे सांभली देशना तात सलुणा,
ए देशी

वीतराग परमातमा रे, खीणमोही अरिहंत सलुणा क्षपक श्रेणि अंगीकरी रे, करी घाति चउ अंत । स०। पंचम ज्ञान ने पूजिये रे, पंचमगतिदातार । स० ॥ १ ॥ ए आंकणी केवल कमलाने वर्या रे केवल दरिसण साथ । स०॥ लोकालोक: प्रकाशता रे, जे थया त्रिभुवननाथ । स० ॥ २ ॥ चारे ज्ञानतणी प्रभा रे, एहमां सयल समाय । स० । तारा

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोक प्रकाशकाय नवतत्वस्वरूपाय अनन्त द्रव्य गुण पर्याय मयाय, मति श्रुतावधिमनःपर्यव-केवलज्ञानाय। जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूप, दीपं, अक्षत, नैवेद्य, फल यजामहे स्वाहा।

दोहा

अलख असग अभंग जस, जोगाराधन खास।
संयम तणी विशुद्धता करी तोड़े भवपास ॥ १ ॥
चरण करण गुण आगरा सरधावंत सुधीर।
मणपज्जवनाण मुणि नमता टले भवपीर ॥ २ ॥

ढाल ८, अनेहारे गोकुल गामने गोंदरें रे, ए देशी

अनेहां रे संयम ठाण विशुद्धता रे, अप्रमत्त गुणठाण। फरसी पास प्रभु लह्या रे। मणपज्जव वरनाण ॥ १ ॥ पूजा करो जिनराजनी रे। ए टेक। अनेहा रे संजमठाण अनंतना रे ओलधी अहिठाण। फरसता शुद्ध संयम गुणे रे ध्याये धर्मनुं जांण। पू० ॥ २ ॥ अनेहां रे आणा अपाय विपा कथी रे, संठाण विचय प्रकार। ध्याता ध्यान सोहामणुं रे, साध्य पदे मनोहार। पू० ॥ ३ ॥ अनेहा रे अप्रमत्तगुण भूमिका रे आलंबन ग्रही चार दशधा संयम पालता रे,

परमज्योति पावन करण, परमातमा परधान ।
केवलज्ञान पूजा करी पामो केवलज्ञान ॥ २ ॥

ढाल १०, वारी जाउं श्री अरिहंतनी, ए देशी

पूजा श्री अरिहंतनी, करीए धरीए एकतान । मोहन नागकेतुपरेनिर्मली पामो केवलज्ञान । मोहन । पूजा० ॥ १ ॥ एक पुष्पनी पूजना, करतां पुन्य ते थाय । मो०। केवलकमलापामीने अजरामर पद ठाय । मो० ।पूजा०॥२॥ बंध उदय उदीरणा, सत्ताकर्म खपाय । मो० । सिद्ध बुद्ध परमातमा अकल असंग अमाय । मो० । पूजा० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदी आतमा पामी महोदय ठाय । मो० । सादि अनंत सुख अनुभवे वाच्य अगम्य कहाय । मो० । पूजा० ॥ ४ ॥ अनंतगुणी केवली प्रभु श्री शंखेश्वर पास । मो० । तस पदपद्म पूजि करी, लहो चिद्रुप उल्लास । मोहन । । पूजो० ॥ ५ ॥

ढाल ११ कलश, राग धन्याश्री

पूजो पूजो रे भवि पंचज्ञान नित पूजो । पंचज्ञान पूजन सम घट मां और न साधन दूजो रे । मति मइसुअ ओहि ने मन पर्यवः केवल पंचम जाणो । अठावीश चउदश पद

उडुं ग्रह चंद्रनी रे प्रभा रविमांलय थाय । स० ॥ ३ ॥ एक स में श्ररिहा भुणेरे षट्द्रव्य गुण परजाय । स० । अनंत विरज नीशक्तिए रे, व्यापकता ते ठराय । स० ॥ ४ ॥ ज्ञेय प्रमाणे ज्ञानना रे श्रद्धा छे परजाय । स० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानकला मर्या रे जिन उत्तम महाराज । स० । तस पद पभनी पूजना रे, करता चिद्रुप राज सजुणा ॥ ६ ॥

काव्य और मन्त्र

श्रष्टाविंशतिधा मतिश्रुतमापि प्रोक्त मनुसंमितम् ।
षोढा चावधि रुपि द्रव्य विषय ज्ञान निदांन श्रियाः ॥१॥
श्री मनः पर्यव संज्ञकं च द्विविध कैवल्य मवेन्तिकम् ।
ज्ञान पञ्चविध यजे हमनिश सिद्धयज्ञ नाराधकम् ॥२॥

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोकप्रकाशकाय नवतत्वस्वरुपाय अनन्तद्रव्य गुण पर्याय मयाय मति श्रुतावधि मनः पर्यव केवल ज्ञानाय् । जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा

सम दम उपरित नित करे, चोथी तितिक्षा सार ।
समाधान श्रद्धा करी, लहे केवल चिद्कार ॥ १ ॥

अर्थ—मन्त्र

ॐ नमो ज्ञानाय लोकालोक प्रकाशकाय (१) जलं, (२) पुष्पं, (३) धूपं, (४) दीपं, (५) अक्षतं, (६) नैवेद्यं, (७) फलं, (८) यजामहे स्वाहा ॥१॥

दुग इग, भेद प्रमाण वखाणों रे । म० ॥२॥ ज्ञान और धन साधन सिद्धिनुं साधी कर्म खपाया। केवल कमला पामी अनती, *सिद्धिए सिद्ध सुहाया रे । म० ॥ ३ ॥* ज्ञान ज्ञानी नी सेवा करतां चिरसचित अघ जाय। पुण्य महोदय कमला विमला, घटमां पर घट थायरे । म० ॥ ४ ॥ श्री विजयदेव सुरीश्वर पाटे, विजयसिंह सूरी राया । तास शिष्य श्री सत्य *विजय गणि, संवेग मारगध्याया रे । म० ॥ ५ ॥* शिष्य कपूर खिमा जिन उत्तम, विजयपदे सोहाया । श्री गुरु पद्म विजय पद पंकज, नमतां श्रुत बहु पाया रे । म० ॥ ६ ॥ ऋषि गज दिग्गज चंद ? संवत्सरे, ज्ञान भगति मन लाया । *नेमीश्वर कल्याणक दिवसे, पंचज्ञान गुण गाया रे । म०* ॥ ७ ॥ तपगच्छ विजयजिर्णेंद्र सूरीश्वर, दीपे तेजे सवाया । तस राज्ये भविजन हितकाजे, रुपविजे गुण गाया रे । मवि० ॥ ८ ॥

काव्य

ज्ञानं स्यात् कुमतांधकारतरणि ज्ञानं जगल्लोचनं ।
ज्ञानं नीतितरंगिणी कुल गिरी ज्ञानं कषायापहं ॥ १ ॥
ज्ञानं निर्वृत्तिवश्यमंत्रकमलं ज्ञानं मनः पावनं ।
ज्ञानं पंचविध यजेहमनिशं स्वर्गापवर्गप्रदम् ॥ २ ॥

पश्यति दर्शनं, पुण्यगेहं । सिंधु गंगा दिभिस्तीर्थ-गंधोदकै-र्भरितमणिकनकमयं, कलशआली । भविक श्रावक मली, नाहत्रोपरिभली संशय मन तणा, वेगटाली ॥ १ ॥

गीत, राग नट्ट मल्हार

जिनकी ईणविधि पूजा कीजे । सुन्दर धर्म लही भविका मणुअ जनम फल लीजे । मेरे जिनकी ईणविधि पूजा कीजे ॥ १ ॥ निर्मल अंग करी अति उज्वल, अंबर ते पहरीजे । अतिहि सुगंध सुरभि द्रव्यवासित, कंचन कलश भरीजे । मेरे जिनकी० ॥ २ ॥ करी मुखकोश मोरपिच्छ पूजी, पहेली पूजा रचीजे । कहे धन वचन ललित मनोहर, नाभि मल्हार नवीजे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

शचीपतिः सप्तदशप्रकारै, र्भृत्यामरैस्संवहितोपहारैः ।
स्वर्गांगनासु क्रमगायिनीसु, पूजां प्रभोः पार्श्वजिनस्यचक्रे ॥१॥
पुरंदरः पूरितहेमकुंभैः, रदंभमम्भोभिरलं सुगंधैः ।
साकंसुरौघैर्मघवां चंसम्यक् पूजां जिनेंद्रो प्रथमां चकार ॥२॥

अथ द्वितीय विलेपन पूजा

दोहा

केसर चंदन घसी घणां, मेलवी मांहें बरास ।
नव अंगेजिन पूजतां, नव निधि आतम पास ॥ १ ॥

अथ श्री मेघराजमुनि रचित

सत्तरभेदी पूजा प्रारम्भ

अनुष्टुप वृत्तम्

सर्वज्ञ जिनमानम्य, नत्वा, सद्गुरूत्तम् ।
कुर्वे पूजाविधिं सम्यक् भव्याना सुखहेतवे ॥ १ ॥

दोहा

वंदी गोयम गणहरु, समरी सरसति एक ।
कविगण वर आपे सदा, वारे विघ्न अनेक ॥१॥
पूजा करता जिन तणी, श्रावक कहे सुवचन्न ।
ते हु भणीशु विधि करी, सांभलजो एक मन्न ॥२॥
न्हवण विलेपन वस्त्रयुग वास फूल शुभ लाम ।
वरणद्द चूरण ध्वज भलो, बहु आभरण विशाल ॥३॥
फूला फेरे घर पगर, मंगल धूप अपार ।
गीत नृत्य वाजित्र ए, सत्तर हवे विस्तार ॥४॥

अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारम्भ

ढाल १, हमना राग विभास

प्रथम जिननायक, नौमि सुखदायक, कृतशुचिपूर्वदिशि, सकलदेह । धोता तनु आवरी, एक चित्त मन करी,

पश्यति दर्शनं, पुण्यगेहं । सिंधु गंगा दिभिस्तीर्थं गंधोदकै-र्भरितमणिकनकमयं, कलशआली । भविक श्रावक मली, नाहवोपरिभली संशय मन तणा, वेगटाली ॥ १ ॥

गीत, राग नट्ट मल्हार

जिनकी ईणविधि पूजा कीजे । सुन्दर धर्म लही भविका मणुअ जनम फल लीजे । मेरे जिनकी ईणविधि पूजा कीजे ॥ १ ॥ निर्मल अंग करी अति उज्वल, अंबर ते पहरीजे । अतिहि सुगंध सुरभि द्रव्यवासित, कंचन कलश भरीजे । मेरे जिनकी० ॥ २ ॥ करी मुखकोश मोरपिच्छ पूजी, पहेली पूजा रचीजे । कहे धन वचन ललित मनोहर, नाभि मल्हार नवीजे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

शचीपतिः सप्तदशप्रकारै, भुंत्यामरैस्संघहितोपहारैः ।
स्वर्गांगनासु क्रमगायिनीषु, पूजां प्रभोः पार जिनस्यचक्रे ॥१॥
पुरंदरः पूरितहेमकुंभैः, रदंभमभोभिरलं सुगंधैः ।
साकंसुरौघैर्मघवां चंसम्यक् पूजां जिनेंद्रो प्रथमां चकार ॥२॥

अथ द्वितीय विलेपन पूजा

दोहा

केसर चंदन घसी घणां, मेलवी माहें वरास ।
नव अंगेजिन पजतां, नव निधि आतम पास ॥ १ ॥

जिन प्रतिमा विलेपता, शीतल थाये आप ।
क्रोध दावानल उपशमे, जाये भव सताप ॥ २ ॥

राग रामगिरि तथा आशावर

कुकुमसयुत, घसीय वरचदन, सरसघनसाऽशु, माहे मेली। कंचन मणितणा, भरीए बहु भानना, अगर रस कुमकुमा, तेह भेली । पूजिये नव अगमा, चरण जानू करें, अस हृदि- थाहु, बेहु अपार । कठ लिलाट शिर, विलेपता रगमर, पामीये भवतणो एम पार ॥ १ ॥

गीत, राग-देशावरी

करु हु पूजा जिनवर केरी, आगमवचन सुणया में ताथे, प्रगट भई मति मेरी । करु हुं पूजा ॥ १ ॥ केसर चदन भरिय कचोली, अरचु मुक्ति घणेरी । मणुअजन्म को लाहो लीजे, भक्ति करु अधिकेरी । करु हु पूजा ॥ २ ॥ अजवि जोरी मोरी तनु अपनो, बात कहु जु भलेरी । देई शाख शासय सुख मेरी, मुक्ति मदिरकी शेरी । करु हु पूजा०॥३॥

काव्य नपेंद्रवज्रायुग्मम्

अग प्रगृज्यांगसुगधगध,—मापायिकेनैपाम्ना येंद्रः ।
विलेपनैश्चदनकेसरायैं , पूजां जिनेंद्रोऽकरोतद्वितियां ॥१॥

अथ तृतीय वस्त्रयुगलपूजा

दोहा

त्रीजी पूजा जिनतणी, वस्त्रयुगलनी होय ।
नयनयुगल पण को कहे, परमार्थे एक जोय ॥ १ ॥
अंशयुगम अंशे ठवी, भावो भावना एम ।
निश्चय धर्मव्यवहार रूप, आदरशुं बहु प्रेम ॥ २ ॥
अथवा ज्ञान क्रिया करी, अंगीकरशुं धर्म ।
असंख्यप्रदेशी आतमा, निर्मल करवा मर्म ॥ ३ ॥
स्वपर विवेचन दृष्टिवर, प्रगटे एथी नित्य ।
अथवा क्षायिक क्षयोपशम, सम्यक् दृष्टि होय मित्त ॥४॥
वस्त्रयुगलनी पूजना, सूरियाभ सुखवेरं कीध ।
त्रीजी पूजा करीयने, रत्नत्रय वर लीध ॥ ५ ॥

राग—देशाख

सुरभि द्रव्यवासितं, वस्त्रयुगमुज्वलं, प्रभु तेणे मस्तकें मूकीये ए । भक्ति एणि परें करुं, शुद्ध समकित धरुं, पूजतां ध्यान नवि चुकिये ए । भव तणी श्रेणिना, कर्म-पातक घणां, देखतां पाप सवि छुटियें ए । दर्शन जिनरस, नयणनालें करी अमृतसम रस घंटीये ए ॥ १ ॥

गीत, राग भरव

पूजाकरणं मव्यामयहरणं, स्यादपि भवमयहरण ।पूजा०॥ कनकततुविराजितममलं सौरमिगघमुदार । भैरवकर्मविदारणशील, सुरनरजगदाधार । पूजा ॥ १ ॥ अमरयुगल मस्तकधरित, हे जिन शोभितदेह । नमसि यथा त्रिदशाधिपधनुप, राजित तव तनुगेह । पूजा० ॥ २ ॥ निजचेतसि यदि वाञ्छसि सौख्य, भवमकराकरपार । वदति मेघमुनिर्जिनपूजा, तृतीया कुरु भवसार । पूजा० । ३ ॥

काव्य उपेंद्रवज्रावृत्तम्

च्युत शशाकस्समरीचिभि किं, दिव्याशुक्द्व द्रमतीव चारु । सुक्त्या निवेश्योभयपार्श्वमिंद्र , पूजा जिनेंद्रोरक्रात्तृतीया ॥

चतुर्थ वास पूजा

दोहा

सम्यक् ज्ञानादिक गुणे, वासि थाये आप ।
करता पूजा वासनी, जाये सर्व सताप ॥ १ ॥
कुमति जवासा शोषवे, टाले मिथ्या पास ।
शिवपुरमा वासो वसे, जो जिन पूजे वास ॥ २ ॥
शुद्धातमनी वासना, भासन भास्कर ज्योत ।
अरिहत वास उपासना, भवजल तारण पोत ॥ ३ ॥

आराधे अनुशासना, वाधे जग यशवास ।
साधे मारग मोक्षनो, वासे अर्चे पास ॥ ४ ॥

राग—केदारो

सुरभि वस्तु सवि मेली, कुंकुम केसर भेली, कुसुमें वासित ए, रंगे राजित ए, वासे पूजो अंग, पामो शिवसुख-रंग, जिनवरने नमो ए, जेम जग नवि भमो ए ॥ १ ॥

गीत, राग—मालवी गोड़ी

वीतराग भावें करी पूजिला; आपणी आपे पदवी । सेवीए कहा होत है तिनकुं, निज सरखे न करे पुहवी । वीत० ॥ १ ॥ नौतम चारु फूल बहुवासित, पूजा जिन-वर वासे । चंदन पन्नग पास नीलकंठ, बोलत ही त्युं करम नासे । वीत० ॥ २ ॥ चोथी पूजा तारक केरी, कीजे मालवी रागे । भवनां अनेक कर्म भूरि संचित, टलत पाप वार न लागे । वीत० ॥ ३ ॥

काव्य—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

कपुरसौरम्यविलासीवासैः श्रीखंडवासैकिल वासवोयं विभासुरश्री—जिनभास्करेन्दोः पूजां जिनेंद्रोरकरोच्चतु-र्थीम् ॥ १ ॥

अथ पंचम छूटां फूलनी पूजा

दोहा

पंचमी पूजा फूलनी, छुटां कुसुम समुद्द ।
पूजो श्री अरिहंतजी, प्रगटे चित्त गुणव्यूह ॥ १ ॥
पच धाड पीडे नहीं, जे करे पचमी पूज ।
रत्नत्रयने ते वरे, मोह विछुटे पूज ॥ २ ॥
काल अनादिनी जीवने, लागी जड दुर्गंधि ।
ते टाले ए पूजना, धारे ज्ञान सुगंधि ॥ ३ ॥
वारे मिथ्यावासना, चूरे पुद्गल व्याधि ।
पूरे वाछित कामना, थापे पूर्ण समाधि ॥ ४ ॥
चेतनता निर्मल हुए, पामे केवल ज्ञान ।
यश सुवास जग विस्तरे, लहे निर्वाण सुथान ॥ ५ ॥

काव्य–शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्

गंधाढ्यैः कुसुमैर्नवैस्तु विरलै. पूजा करोति प्रभोः, भक्त्या योपि हरि–प्रियामिहभवे, तस्य प्रसन्नो भवेत् । सौख्यं सर्वभवान्तरेषु लभते, सान्निध्यमास्थीयते, कृत्वान्यत्रसुधा विहाय गरलं पातुक इच्छेन्नर. ॥ १ ॥

गीत, राग–वेलावल

मोकले कुसुमें करी, अरचा स्वामिनी । मिथ्यात्व शिरसि

द्रुसहदामिनी । मोकले० ॥ १ ॥ जगगुरु तव पूजा भवि-कने, मोहन कामिनी । अभिनवा कुमतिने, चकवाकुल यामिनी । मोकले० ॥ २ ॥ नरक दरद प्राचीन वहु आवत थांमिनी । पूजा पंचमी भविकने, वेलावल दायिनी । मोकले० ॥ ३ ॥

काव्य—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

मंदारकल्पद्रुमपारिजात—जातैरलिव्राततानुपातैः ।
पुष्पैः प्रभोरग्रथितैर्नवांगं, वितेने किल पंचमीसः ॥ १ ॥

दोहा

छठ्ठी पूजा स्वामिनी, पुष्पमालनी होय ।
शिववधु वरमाला ठवे, जेह करे भवि लोय ॥ १ ॥
सुरभियुक्त वर कुसुम भई, करे मनोहर माल ।
प्रभुकंठे ठवी भावीए, ज्ञानादिक गुणमाल ॥ २॥

राग—देशाख

चंपक केतनी, नागवर मालती, मोगराशोक पुन्नाग जाती । कुंद पाड़ल ग्रही, जाई जूई सही, गुंथिये सुन्दर भक्तिराती । सकल मन रंजती, भ्रमरगुणगुंजती, वासती

दहदिशि, अति रसाली । सौरभरस भरी, विविध कुसुमें करी, मस्तक पग लगे, अति विशाली ॥ १ ॥

गीत, राग—गुन्ड

सेवत्री वरजुई विउल सिरि, मालती सरम गुलाल वरे। केतकी चपक पाडल दमणो, गुंथी तिनकी माल रे ॥ १ ॥ दाम करी ने कंठे ठविये, करीए मन आणंद रे परिमल केसर भ्रमर गुंजत है, मोहे सुरनर वृंद रे । दाम० ॥ २ ॥ छठी पूजा तारक केरी, कोजें रागें गुन्ड रे । शुद्ध भाव धरि पूजत जिनवर, छुटत कर्म प्रचंड रे ॥ दाम० ॥ ३ ॥

काव्य-उपेंद्रवज्रावृत्तम्

तैरेव पुष्पैर्विरचय्यमालां, सौरम्यलोभभ्रमि भृंगमाला। आरोपयन्वाकरतिर्जिनाग्रे, पूजां पटिष्ठीं कुरुते स्पर्द्धी ॥ १ ॥

दोहा

पंचवर्णना फूलनी, पूजा सातमी एह।
पंचमज्ञान प्रकाशपर, करेप्रमादनो छेह ॥ १ ॥
ए पूजा करतां थकां, भावो भावना एम।
वर्णादिक गुण रहित तुं अलख अवर्णी तेम ॥ २ ॥
वर्णादिक पुद्गलदशा, तेशुं तुज नहीं मेल।
तु रत्नत्रयमयी सदा, भिन्न यथा जल तेल ॥ ३ ॥

चिदानंद घन आतमा, पूर्णानंद अरूप ।
शुद्धातम सत्तारसी, दर्शन ज्ञान स्वरुप ॥ ४ ॥

राग—सामरी

करुं पूजा, करुं पूजा, नमो जिनराय, पंचवर्ण आंगी रचो, विविध रंग रंगेहिं मेलो, अति अनुपम चित्राम, करी उदय, सूरवम कांति मेलो, एणी परे जिनवर पूजतां, आपे शिवपदराज । सातमी पूजा कीजिये, सीझे सघलां काज ॥ १ ॥

गीत, राग—कल्याण

पूजो मनरंगें, पूजो मनरंगें, पंच वर्ण केरी आंगी रचावो, भाखीयें अंगे । पूजो मनरंगें ॥ १ ॥ नव नव भाति अति हे मनोहर, रंगे रंग मले । पद्मराग सम कांति धरत तुं, जीवन आज मिले । पूजो० ॥ ॥ लाल गुलाल फुल विच शोभे, केतकी कुसुम धरे । सातमी पूजा करीने मागुं, जिन कल्याण करें ॥ पू० ॥ ३ ॥

काव्य—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

मंदाकिनींदीवरपीवरश्री, रक्तोत्पलैश्चपकपाटलाद्यैः ।
कुर्वन्विभोर्वर्णकवर्यशोभां, पूजां प्रतेने किलसप्तमीसः ॥ १ ॥

अष्टम चूर्ण पूजा

दोहा

अष्टमी पूजा कीजिये, लेई सुगंध बरास । ए चूरणनी पूजना, करतां पूगे आश ॥ १ ॥ ए पूजामां भावियें, आतम भावना एम । चूरु कर्माष्टक प्रतें, धरी शुद्धातम प्रेम ॥२॥ अष्ट महामद गालवा, टालवा आठे भीति । अष्ट प्रवचन मातने, पालवा अधिकी प्रीति ॥ ३ ॥ अड़दिठि अनुक्रमे वधे, लहे क्षायिक समकित । आठमी पूजा जे करे, भाव धरी भवि नित ॥ ४ ॥ श्रद्धा भासन रमणता, पामे सहजानंद । तत्त्वरमणतादिक बहु, प्रगटे निज गुण वृंद ॥ ५ ॥ भावघटा मेरी उलट्टइ, बरषे जिनपदशृंग । घनसारह धारा करी अरिहंत अंग ॥ ६ ॥

गीत, राग—सारंग

बरसेजी मेरी भाव घटा; 'जिनके चरणकमल गिरिउपर चूर्ण सुगंध पूरा । दीनदयाल कृपालकुं पूजित पुलकति अलक लटा । बरसेजी० ॥ १ ॥ मागत हुं इवे अष्टमी पूजा, तोरो मेरी कर्म जटा । मनसारंगें सेवक जपे, अक्षर ए प्रगटा । बरसेजी० ॥ २ ॥

काव्यं—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

दम्भोलिपाणिः परिमर्दसद्यः कर्पुरफालीर्वहुभक्तिशाली ।
चूर्णं मुखे न्यस्य जिनस्यतूर्णं, चक्रेष्टमं पूजानमिष्टहेतुं ॥१॥

अथ नवमी ध्वजपूजा

दोहा

नवमी पूजा ध्वजतणी, करतां शिवसुख होय ।
जिन चैत्योपरि बांधीये, महाध्वजा भवि लोय ॥१॥
धर्म ध्वजा लहेके गगन, दंड सहित उत्तुंग ।
पवन झकोरी घूघरी वाजे जिणहर शृंग ॥२॥

(गीत; राग—नट्ट नारायण)

हमें प्रभु दीजे हो वरदान, याचक भविक कहत है तुमशुं । जेम पामो जगमान । हमें० ॥ १ ॥ पूजत जिनवर दानज देतां, जोवत हो क्सुं पुंठि । नवय नंद कनकगिरी संचित, ते न गये भर मुंठि ॥ हमें० ॥ २ ॥ रूप सुवर्ण नाण वर वासण वांछित फल दीयो स्वामी । एहि अवसर मत होय अदाता, सेवक कहे शिरनामी । हमें० ॥ ३ ॥
ईति दान ॥ ६ ॥

गीत

हे मम ईश ! तेरो ध्यान धरीये, हे जगदीश ! पूजा नवमी करिये । हे मम ईश ! तेरो ध्यान धरीये, हारे, जगदीश ! पूजानवमी करीये । एक सहस्र जोयण दंड उंचो, देव मोहियें । ध्वजा गगन लहेके रंग, नाना वर्ण सोहीयें । हे मम० ॥ हारे जग० ॥ १ ॥ घूघरीना घमकार सुनिये, पवनप्रेरी । पंचरंग लागुं हरिघंटा, कनक केरी । हे मम० । हारे जग० ॥२॥ हम तुम बिच जिणंद अंतर, कर्म परदो । तें करी कृपा जिनराज । वेगे, लेह मरदो । हे मम० । हारे जग० ॥ ३ ॥

काव्यं-उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

पुलोमजामौलिनिवेशनेन, प्रदक्षिणीकृत्य जिनालयं त ।
महाध्वजं कीर्तिमिवपतस्य, पूजामकार्षीन्नवमीं बिडौजाः॥१॥

अथ दशम आभरण पूजा

दोहा

दशमी पूजा देवनी, बहु आभरणनी होय ।
अलंकार पहेरावीयें, भावन भावो सोय ॥ १ ॥
अनलंकारे सुभग ए, आत्मभाव अलंकार ।
तो पण भक्तिउल्लासने, कारणें एह विचार ॥ २ ॥

भूषणे भूषित स्वामिने, देखी हरख्यो भव्य ।
जिनमुद्रा शुद्ध तत्वमयी, वीतराग गुण सव्य ॥ ३ ॥
वीतरागना गुण श्री जिनबिंब ।
पुद्गलनां भूषण तजे, ते परिचीत बहुकाल ॥ ४ ॥
ज्ञानादिक गुणरत्नना, पहेरे ते अलंकार ॥ ५ ॥

आर्य गीत

भूदेवग्रहइंद्रा, आभरणै भूर्वषितापि द्रश्यंते ।
हे जिन ! प्रभात समये, उडुपतिबिंबं यथा भवति॥ १॥

गीत, राग—केदारो

सबकुं सोहायो हो, मस्तके मुकुट भरयो । जाकीवी ज्योति छिप गए ग्रह गण, बिचे हो रयण भरयो । सब कुं० ॥१॥ तिलक ललाट श्रवण दोय कुंडल, सुघर्यो घाट घर्यो। मोतिनको हार बाहें दोय अंगद, सब भूषण हो तार कर्यो। सबकुं० ॥ २ ॥ दशमी पूजा करी केदारे, तिनको काज सरयो । बहु आभरण करी जिन दीपे, सेवक को हो दुरित हरयो । सबकुं० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

मुक्तावलीकुंडलबाहुरक्ष, कोटीरमुख्या भरणावलीनां ।
प्रभोर्यथास्थाननिवेशनेन, पूजामकार्षद्दशमी विडौजाः॥ १॥

अथ एकादश पुष्पगृह पूजा

दोहा

फूलगेहनी पूजना, एकादशमी होय।
कुसुम घरे प्रभु थापिने, हर्ष भवियण लोय ॥ १ ॥
फूलह केरे घर विचें, सोहे श्री जिनराय।
जेम तारामां चांदलो, जोतां हर्ष न माय ॥ २ ॥

गीत

फूलघर बेठे जगत दयाल। जलथल कुसुम तणीरी परीमल, गुंजे मधुकर माल। फूलघर बेठे जगत दयाल ॥१॥ आछे.कुसुम बनाये तोरण,तामें भाति घणी। किनही सुजाण निपायोमंडप, जिनवर भक्ति भणी। फूल० ॥ २ ॥ कायकुं जाति केदारो गोडी, सुरनर भक्ति भरी। असंख्य गुण फल आगारमी पूजा, करतां एक घरी। फूलघर० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

पुष्पावलीभिः परितो वितत्य, पुरंदरः पुष्पगृहं मनोज्ञं।
पुष्पायुधाजेय जयेति जल्पन्नेकादशी मातनुतेस्म पूजां ॥ १ ॥

पुष्प पूजा

दोहा

बारमी पूजा प्रभु तणी, फूलपगरनी जाण।
फूलवृष्टि जिनें आगलें, विरचे भव्य सुजाण ॥ १ ॥

राग-श्री

अहो पंचरंगे भवि ! कुसुमनों पगर भरीए, रचीदेवता अविरल तेम करीए। तिहां अलितणी श्रेणी गुंजे रमंती, मधुर ध्वनि रणभणे जेसी वेणुतती। इस विधि जिन तणी भक्ति कीजे, अचरिज देखी पुष्पपगर भरीए ॥ १ ॥

गीत, राग-पूर्वी

सखी तुम देखन आऊंरी, मेरे प्रभु की सकलाई। सन्मुख पतंति कुसुम, मिलत नही कुमलाई। सखी तुम० ॥ नाहि नाहिं ए अचरिज, जे सन्मुख थाई। तम तव गोचर भक्तजनो के, बंधन अध जाई। सखी० ॥ १ ॥ तव मुख शशि विरह नावे, मिले तन दिखलाई। दूरथी चंद कुमुद विकसित, नेरेकी अधिकाई। सखी० ॥ २ ॥ सरस वदन वारिसिंचे, ते क्युं कुमलाई पूजा द्वादशमी कही एही, कीजें चित्त लाई। सखी० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

करात्रमुक्तैः किल पंचवर्णै—रग्रंथपुष्पैः प्रकरं पुरोस्य।
प्रपंचयन् वंचितकामवीरः, स द्वादशीमातनुतेस्म पूजां ॥ १ ॥

अथ त्रयोदश अष्टमंगल पूजा

दुहा

तेरमी पूजा स्वामिनी, रचवा मंगल आठ। अक्षतना आलेखवा, जिन सन्मुख शुभ ठाठ ॥ १ ॥ स्वस्तिक श्री वत्स कुंभवलि, भद्रासन शुभ जाण। नदावर्त्त ने मीनयुग दापर्ण ने वर्द्धमान ॥२॥ मंगल विरची भावीए, शुद्धातम मंगलिक। अष्ट सिद्ध गुणनेवरु, शाश्वसुख निर्भीक ॥३॥ अक्षय सुखने कारणे, अक्षतना करीथाप। अष्ट कर्म ने क्षय करें, गाले सकल सताप ॥ ४ ॥

गाथा—आर्याछंद

अट्ठमंगलपूजा, किज्जई भाविए जिणवराणं।
निय गेहे होइ साइ, जइ काले मेहवुठिया ॥ १ ॥

गीत—राग गुर्जरी

धनी पूजा तेरसमीनीकी, मंगल आठ छबील सोहाय, ज्युं नयनों में कीकी। धनी० ॥ १ ॥ स्वस्तिक श्री वत्स कुंभ भद्रासन, नद्यावर्त्त बनाय। वर्द्धमान मकरयुग दप्पर्ण, की नहीं भक्ति भराय। धनी० ॥ २ ॥ जे जिन आगल मंगल विरचे, मंगल तस घर होई। पूजत जिनवर आशा पूरे, भवियण जन रहे जोई। धनी० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

आदर्श भद्रासनवर्द्ध मानं, मुख्याष्टसन्मांगलि कैर्जिनाग्रे ।
स राजतप्रोज्वलतंदुलो च्चैस्त्रयोदशीमातनुते स्म. पूजा ॥१॥

अथ चतुर्दश धूप पूजा

दोहा

चौदमी पूजा धूपनी, कीजे अधिके भाव ।
ए सेवा भवि जीवने, भव जल तारण नाव ॥ १ ॥
कृष्णागरु उखेवतां, उखेवो दुष्कर्म ।
भमतां भूरि भवांतरे, लाधोहवे में मर्म ॥ २ ॥

गीत—राग कानड़ो

जिनकी पूजा अमृतवेली, जिनवर धर्म वहुत भवि पायो। रंगे भविजन खेली । जिनकी० ॥ १ ॥ कृष्णागरु लेई मलय मनोहर, मृगमदमांहे भेली । धूप उखेवी माग तु जिनपे, नरक तणी गति ठेली । जिनकी० ॥ २ ॥ भविक नरे जिनवर एम पूज्य, सवी सामग्री मेली । चौदमी पूजा एणी परे करतां, आपे शिवपद केली । जिनकी० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

कर्पूरकालागरु गंधधूप, मुत्क्षिप्य धूपच्छलदूरितैना ।
घंटानिनादेन समं सुरेन्द्र—श्चतुर्दशीमातनुते स्मपूजा ॥१॥

अथ पंचदश गीत पूजा

दोहा

पन्नरमी पूजा गीतनी, तासकथा पमणेश ।
भावपूजानो भाव ए टाले सकल कलेश ॥ १ ॥
तान मानलय ध्यानथी, आलापे सविराग ।
अति उद्‌भुत गुण कीर्तना, करीए धरी बहुराग ॥ २ ॥

राग देशाख

कमलदललोचनी, विरहदुःखमोचनी, सुन्दरी जिनतणां गीत गावे । निज सुखे गुण गहे, कोकिला स्वर कहे, श्रवण रस भणी तव, इंद्र आवे । राग सवि आलवी, जिनगुण बहु स्तवी, पालवी प्रभु तुम्हे, एक साचा । परभवे दरिसण, देयवुं जिन तुमें अछो कलियुगे, देव साचा ॥ १ ॥

गीत—श्रीरागेण गीयते

जिनगुण गावत सुरसुन्दरी, चंपकवर्ण कमलदल लोयन, शशिवदनी शृंगार भरी । जिन० ॥ १ ॥ वेणु उपांग वंश सिरिमंडल, ताल मृदंग सुछंद करी । सवि श्री राग आलापती रंगे, सुरति धरी सखी अति मधुरी । जिन० ॥ २ ॥ आगे एणी पेरे सुर नरे कीधी, ते पहोता संसारतरी । पम-

रमी पूजा एणी परे करतां, सुणी रावण जिनपदवी वरी। जिन० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

अष्टोत्तरं स्त्रोत्रशतं पठित्वा, जानुस्थितः पुष्टधरः सुरेशः।
शक्रस्तवं प्रोच्य शिरःस्थपाणि-र्नत्वा जिन संसदमालुलोक ॥१॥

अथ षोडश नृत्यपूजां

दोहा

सोलमी पूजा नृत्यनी, नाटक बत्रीश बद्ध।
सूरियाभ सुरनि परें, करीए भाव समृद्ध ॥ १ ॥
भव नाटक एहथी टले, फले मनोरथ सर्व।
सम्यग्दर्शण नाण सुख, पामे शमावे गर्व ॥ २ ॥

दोहरो

देव कुमर कुमरी मली, नाचे एक शत आठ।
संगतादिक परे करे, आलापे शुद्ध ॥ १ ॥

गीत—राग नट्ट

इंद्रादिक एम करें, पूजां तेरी। गिड़ि गिड़ि द्रुमकी मुरज घूमे, भक्ति करे अधिकेरी। इन्द्रादिक० ॥ १ ॥ नख शिख लगे वेष सजी, बहु हस्त करी कुचघनक्चे करयुग

धरी, शोभती अति फिरती । इंद्रा० ॥ २ ॥ वेणुवेण उपांगरव, ताल वाजति छंदे। कुमर कुमरी एक शत आठ, नृत्यति जिन वंदे । इंद्रा० ॥ ३ ॥ गगने जलद नाद सुणी, नाचत सुकलापी। कीजे एम सोलमी पूजा, राज नट्ट आलापी । इंद्रा० ॥ ४ ॥

काव्यं—उपेन्द्रवज्रावृत्तम्

आलोकनाकुनविदस्ततोऽस्य, गंधर्वनाट्याधिपती अमर्त्यौ ।
सूर्यनिकं सज्जयतः स्म तत्र, प्रमोनिपण्णे पुरतः सुरेन्द्रैः ॥१॥

अथ सप्तदश वाजित्र पूजा

दोहा

दुंदुभी वजभे मधुरसुर, त्रिजग सुणाने नाद ।
वतिराग पूजा करो, अंग तजीने प्रमाद ॥ १ ॥

गीत, राग-नट्ट

सुर पंचशब्दे करी विश्व जणावती, मुक्ति तणां सुख आवतीयां । भो भविका ! तुमे जिनवर पूजो, आलस तजी उल्लासनीयां । सुर० ॥ १ ॥ धर्मना लाभ जाणी वाजित्र नट्ट आणी, मधुर ध्वनि करपे जिनघरा । मन थांहिता फल

ततक्षण आपे, स्थिर राखे जो ए मनुआ । सुर० ॥ २ ॥ मेघराज मुनि वदित रंगभर, सत्तरमी पूजा ए चित्त धरूं आ । नाम ठाम द्रव्य भावथी ए जिन, सकल संघने सुख करुं आ । सुर० ॥ ३ ॥

काव्यं—उपेंद्रवज्रावृत्तम्

मृदंगभेरी वर वेणुवीणा, पड् भ्रामरीझल्लरिकिंकिणीनां ।
संभादिकानां च तदा निनादैः,क्षणं जगन्नादमयं बभूव ॥१॥
मुदा ततस्तुंबरुनारदाद्याः, प्रभोगुणालीरुपवीणयंतः ।
सुधाशनादप्यधिकं वितेरुः, सुधाशनानां हृदये प्रमोदं ॥ २ ॥
ततश्चलत्कुंडलतारहार शृंगारभारस्फुरदंगयष्टिः ।
रंभाचिरं भावयति स्मलास्यलीलां विनीलांग जनाद विद्युत् ॥३॥
साची कृताक्षत्रि ततो घृतांची, तिलोत्तमा चोत्तमनाट्यशक्तिः ।
मेने मनोज्ञाकिल मेनकापि, कलाकलापस्य फले गृहीत्वा ॥४॥

शार्दुलविक्रिडितंवृत्तम्

इत्येविधगीतवाद्यनटनैः पूजां विधाय त्रिधा, तो मूलद्विरचय्य सप्तदशधा प्रीतिस्तदाखंडलः । आचर्चेयं धनदत्त उज्वलसरिलीरैः पटीरैः पटुः, कर्पूरैः । स च मेरुनंदननीकल्पद्रुपुष्पैश्चिरं ॥ ५ ॥

गीत, राग—धन्याश्री

बोली बोली रे बोली पूजानी विधि नीकि, सत्तर भेद आगम जिन भारवी । शिवरमणि शिर टीकी रे । बोली० ॥ १ ॥ जिवामीगमे ज्ञाताधम्मे, रायपसेणी प्रसिद्धि । विजयदेव द्रौपदीए पूज्या, सुरियाभे पण कीधी रे । बोली० ॥२॥ अचलगच्छे दिन दिन दीपे, श्री धर्ममूर्ति सुरिराया । तास तणे पख महीयल विचरे, भानुलब्धि उवझाया रे । बोली० ॥ ३ ॥ तास शिष्य मेघ राज पयपे, चिरनंदोजा चंदा । ए पूजा जे भवणे गणशे, तस घर होय आणंदा रे । बोली० ॥ ४ ॥ १७

इति समाप्तम्

इति श्री विविध पूजा संग्रहे द्वितीय विभागम्